Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी का व्यावहारिक व्याकरण

[शब्द-भेदों की रूपप्रक्रिया तथा वाक्य में उनका प्रयोग]

103931

डा० धर्मपाल, कुलपति द्वारा
प्रदत्त पुस्तक संग्रह

लेखक

ओलेग गे. उलत्सिफ़ेरोव

सम्पादक-मण्डल

प्रो. रामलाल परीख — डॉ. मो. दि. पराडकर

एम. के. वेलायुधननायर — जगदीश शर्मा

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ

नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत गणराज्य को समर्पित

—ओलेग गे. उलत्सिफ़ेरोव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

हिन्दी के समग्र व्याकरण की दिशा में प्रो. ओलेग उलत्सिफ़ेरोव का व्यावहारिक व्याकरण एक महत्त्वपूर्ण कदम है। भारत से बाहर हिन्दी शिक्षण का जो कार्य पूर्व संगठित सोवियत देश में हुआ, उसकी अत्यन्त गौरवमय परम्परा है। पश्चिमी भारतविदों की सूची में रूसी विद्वानों का नाम अग्रणी है, उनमें प्रो. ओलेग उलत्सिफ़ेरोव का नाम तो अत्यन्त आदरणीय है। वे वास्तव में रूसी भारतविदों की परम्परा के एक ऐसे विद्वान हैं जिन्हें स्व. प्रो. दीपशित्स की पाँत में रखना होगा।

संप्रेष्य एवं अर्थपूर्ण भाषा प्रयोग के वैज्ञानिक नियमों का अन्वेषण भाषाविदों एवं वैयाकरणों का कार्य है—इससे मानक भाषा के गठन की प्रक्रिया स्वत: परिचालित होने लगती है। हिन्दी भाषा की विविध शैलियों, भिन्न-भिन्न भाषाई क्षेत्रों में प्रचलित है। विदेशों में भी उनकी भाषाओं की स्वजातीय व्याकरणिक स्थिति हिन्दी की प्रकृति से नितान्त भिन्न है। ऐसे परिवेश में हिन्दी के बारे में अनेक प्रश्नों का उभरना स्वाभाविक है। प्रश्नों के युक्तियुक्त समाधानों के अभाव में अनेक भ्रान्तियाँ उभरती हैं व ये भ्रान्तियाँ हिन्दी को अवैज्ञानिक, अतार्किक, अराजक भाषा घोषित कर डालती हैं। प्रो. उलत्सिफ़ेरोव ने अत्यन्त परिश्रमपूर्वक व्यवहार में उभरने वाली भ्रान्तियों का युक्तियुक्त उत्तर खोजने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। उनके इस प्रयास से हिन्दी भाषा की संरचना पर आरोपित दोषों के यथार्थ से भी परिचित हुआ जा सकता है, तथा हिन्दी में घुली-मिली बहुभाषीय जटिलताओं का सन्दर्भ भी समझा जा सकता है। द्वितीय भाषा सीखने वाले के लिए तो यह व्याकरण अत्यन्त उपयोगी है, तथापि प्रथम और तीसरी भाषा के रूप में हिन्दी का अध्ययन करने वालों के लिए इस पुस्तक की उपयोगिता स्वयंसिद्ध है।

व्यावहारिक व्याकरण द्वारा भाषा के व्यवहार के नियम तो समझ में आते हैं साथ-ही-साथ उन नियमों के गणित से भाषा के उच्चतर सोपानों तक आसानी से पहुँचा जा सकता है। हिन्दी भाषा की प्रकृति के अनुरूप किसी वैश्विक व्याकरणिक गणित की संभावना का अनुमान भी कर पाना एक दुष्कर कार्य है परन्तु भाषा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्यन्त प्रवाहमय प्रकृति होते हुए भी कुछ गणितीय सूत्रों के परिदर्शन द्वारा उन जटिलताओं का भी वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत किया जा सकता है जो भाषाविदों को चकित करती हैं। प्रो. उलत्सिफ़ेरोव ने हिन्दी की समग्र जटिलताओं के परिदृश्य में व्यावहारिकता की जो युक्तियाँ प्रस्तुत की हैं वे अत्यन्त स्वागत योग्य हैं।

व्याकरण का कोई भी कदम अन्तिम नहीं होता। भाषा की बहती नदी के लिए धीरे-धीरे तटबन्धों का जैसा विस्तार वैयाकरण परिकल्पित करता है कभी-कभी भाषा उससे भी आगे की छलांग मार ले जाती है। अपेक्षा रखनी चाहिए कि प्रो. उलत्सिफ़ेरोव एक सम्पूर्ण, भावी व्याकरण की तैयारी करेंगे। भारत रूस मैत्री को नयी परिस्थितियों में नया आलोक देने वाले इस आभास का हम सब स्वागत करते हैं।

स्वतन्त्रता दिवस 1992

—गंगाप्रसाद विमल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आभार

पिछले कुछ वर्षों से हिन्दी का स्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय होता जा रहा है। विश्व हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन, राष्ट्र संघ में हिन्दी की स्थापना का प्रयास ऐसी घटनाएँ हैं जिससे हिन्दी के विशाल स्वरूप का आभास होता है। विश्व हिन्दी सम्मेलनों में हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिलाने के लिए प्रस्ताव पारित हुआ। इसके साथ-साथ हिन्दी की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति, विश्व मानव की चेतना, भारत और हिन्दी तथा आधुनिक युग और हिन्दी की आवश्यकताएँ और उपलब्धियों आदि विषयों पर विचार गोष्ठियाँ आयोजित हुईं। इन गोष्ठियों के फलस्वरूप संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को भी अधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए और वर्धा में विश्व हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना हो। जैसे प्रस्ताव पारित किए गये।

आज भारत से बाहर 100 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन अध्यापन होता है। आज रूस, अमेरिका, कनाडा, इंगलैण्ड, जर्मनी, इटली, बेल्जियम, फ्रांस, चेकोस्लोवाकिया, रुमानिया, चीन, जापान, नार्वे, स्वीडन, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया, मौकिसको आदि देशों में हिन्दी का पठन पाठन विश्वविद्यालयों में हो रहा है। इसके अतिरिक्त ऐसे काफी देश हैं जहाँ पर भारतीय मूल के लोग बड़ी संख्या में निवास करते हैं। इन देशों में मारिशस, फिजी, गुयाना, सूरीनाम, केनिया, ट्रिनीडाड टुबैगो, बर्मा, थाईलैण्ड, नेपाल, श्रीलंका, मलेशिया, दक्षिण अफ्रीका आदि हैं जहाँ हिन्दी अध्ययन अध्यापन का कार्य हो रहा है। इन देशों में हिन्दी पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिली हैं। आज भाषा और साहित्य की भौगोलिक सीमा सीमित नहीं है। इसी कारण हिन्दी भारतीय संस्कृति 'बसुधैव कुटुम्बकम्' के लक्ष्य को ध्यान में रखकर प्रसारित हो रही है।

रूस के प्रसिद्ध साहित्यकार, ओलेग गे. उलत्सिफ़ेरोव द्वारा लिखित 'हिन्दी का व्यावहारिक व्याकरण' हिन्दी के लिए विदेशी साहित्यकारों के योगदान में एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। रूस में हिन्दी का अध्ययन और अध्यापन अन्य भारतेतर देशों की अपेक्षा अधिक है। रूस में राष्ट्रभाषा हिन्दी को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। रूस में हिन्दी के स्तरीय प्रकाशन भी हुए हैं। 'सोवियत संघ' मासिक पत्र में भारत सोवियत सम्बन्धों पर अनेक लेख प्रकाशित होते रहते हैं। 'सोवियत नारी' नाम का दूसरा हिन्दी मासिक पत्र प्रकाशित होता है। हिन्दी भाषा का व्यावहारिक व्याकरण लिखकर प्रो. उलत्सिफ़ेरोव ने भारत गणतन्त्र को समर्पित किया है। पुस्तक में शब्द-भेद, सार्वनामिक संज्ञा, विशेषण, क्रिया, विधेय-क्रिया, क्रियाविशेषण पर विस्तार से उनके व्यावहारिक स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है।

विदेशी साहित्यकारों के योगदान से हिन्दी का स्वरूप उत्तरोत्तर अन्तर्राष्ट्रीय होता जा रहा है। अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ श्री ओलेग गे. उलत्सिफ़ेरोव के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करता है और उनके इस हिन्दी योगदान के प्रति अभिवादन करता है। हिन्दी का व्यावहारिक व्याकरण प्रकाशित करने के लिए मानव संसाधन विकास मन्त्रालय ने जो आर्थिक सहयोग दिया उसके लिए संस्था संघ शिक्षा मन्त्रालय के प्रति आभार प्रकट करता है। विश्वास है कि 'हिन्दी का व्यावहारिक व्याकरण' देश और विदेश में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। हिन्दी जगत् में पुस्तक का सहर्ष स्वागत होगा।

—रामलाल परीख
अध्यक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राक्कथन

जब से भारत स्वतन्त्र हुआ है, तब से न केवल भारतवर्ष में, बल्कि समस्त संसार में हिन्दी भाषा के प्रति रुचि बढ़ गयी है। आजकल हिन्दी (आधुनिक साहित्यिक हिन्दी) पर शोध-कार्य न केवल भारत के विभिन्न संस्थानों में हो रहा है, बल्कि भारत की सीमाओं के बाहर भी हो रहा है। परन्तु यह कहना आवश्यक है कि हिन्दी के इस शोध-कार्य का इतिहास काफी लम्बा है। यह इतिहास सन् 1698 में जोहन्नम कतेलायर द्वारा लिखे गए और 1745 में प्रकाशित हुए प्रथम हिन्दी व्याकरण से शुरू हुआ होगा। इस छोटी-सी पुस्तक के बाद अंग्रेजों द्वारा लिखी गयी पुस्तकों का सिलसिला आरम्भ होता है जिसमें फ़ोर्ट विलियम कालेज में सराहनीय कार्य किया गया। इस कालेज के अध्यक्ष जॉन गिलक्राइस्ट ने अंग्रेजी में हिन्दी का पहला व्याकरण लिखा। इस पुस्तक और उसके कुछ ही समय बाद प्रकाशित हुए अन्य अंग्रेज लेखकों (जिनमें जॉन शेक्सपियर, विलियम येट्स, डंकन, फ़ोर्ब्स के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं) की पुस्तकें ऐसे बुनियादी नियमों के संग्रह मात्र थे जिनकी सहायता से ब्रिटिश अधिकारी एक स्थानीय भाषा सीख सकते हैं। उन्होंने अंग्रेजी भाषा के स्कूली व्याकरणों की प्रणाली के अनुसार ही हिन्दी का वर्णन किया। परन्तु यह भी स्वीकार करना आवश्यक है कि उस समय हिन्दी साहित्य (आधुनिक हिन्दी के माने में) शिशु अवस्था में था। शायद इसी कारण से भारतीय भाषाविदों के मतानुसार इन पुस्तकों में अनेक त्रुटियाँ थीं जिनकी चर्चा कामताप्रसाद गुरु ने अपने 'हिन्दी व्याकरण' में की (17, 6)[1]।

19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारतीय लेखकों के लिखे व्याकरण-प्रकाशित हुए। कामताप्रसाद गुरु के शब्दों में इनमें संस्कृत भाषा के व्याकरणिक नियमों की ओर अधिक ध्यान दिया गया था (17, 6)।

उसी सदी के अन्तिम दशकों में कैलाग, प्लाट्स, बीम्ज की उत्तम कृतियाँ

---

1. कोष्ठक में पहला नम्बर भाषा-वैज्ञानिक या साहित्यिक रचनाओं की सूचियों में क्रम को व्यक्त करता है, दूसरा अंक पृष्ठ की संख्या को बताता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हुई थीं जिन्हें हिन्दी तथा अन्य भारतीय आर्य भाषाओं के सौ वर्षों के अध्ययन का फल कहा जा सकता है। कैलाग की पुस्तक में 'बृहद् हिन्दी' अर्थात् साहित्यिक हिन्दी के अतिरिक्त अन्य बोलियों का एककालिक स्तर पर वर्णन किया गया। श्री कैलाग का 'हिन्दी व्याकरण' अब तक अंग्रेजी भाषा में लिखे व्याकरणों में से उत्तम है।

19वीं सदी के अन्त में और 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में अनेक छोटे-छोटे व्याकरण और लेख छपे थे जिनके लेखकों का उद्देश्य हिन्दी का वैज्ञानिक व्याकरण बनाना नहीं, वरन् निश्चित व्यावहारिक लक्ष्यों की पूर्ति ही था। परन्तु इनमें कुछ ऐसी कृतियाँ भी प्रकाशित हुईं, जिनके लेखकों ने भाषा के विभिन्न पहलुओं पर मौलिक चिन्तन करने का प्रयास किया। इनमें निस्सन्देह कामताप्रसाद गुरु कृत 'हिन्दी व्याकरण' एक विशेष स्थान पा लेता है। हिन्दी भाषा का दूसरा ऐसा व्याकरण नहीं है जिसमें उस समय की हिन्दी भाषा की स्थिति ध्यान में रखते हुए इतनी पूर्णता थी। इसी कारण से मैंने अपनी 'हिन्दी में क्रिया' नामक पुस्तक को गुरुजी को समर्पित की थी।

20वीं सदी के उत्तरार्द्ध में हिन्दी भाषा की परम्परागत रचनाओं के अलावा ऐसी रचनाएँ भी छपी थीं जो कि रचनान्तरणपरक तथा संरचनात्मक विश्लेषण के आधार लिखी गयी हैं। इनमें पूर्व निर्धारित रूपरेखा के अनुसार हिन्दी का वर्णन है। इनमें इस भाषा के आन्तरिक नियमों की अवहेलना भी होती है। आर्येन्द्र शर्मा, यमुना काचरू और कालीचन्द्र बहल इसके अपवाद हैं। इन्होंने हिन्दी भाषा के विभिन्न पहलुओं का प्रशंसनीय अध्ययन किया।

एक और नाम है जो सभी हिन्दी के भाषाविदों से अलग है, वह किशोरीदास वाजपेयी का है। इनका 'हिन्दी शब्दानुशासन' हिन्दी व्याकरणों की पुस्तकमाला में एक अनुपम रत्न है। इस पुस्तक में पहली बार हिन्दी व्याकरण का वर्णन करने के लिए सामान्य भाषा-विज्ञान की विचार-पद्धति का सहारा लिया गया। शायद हिन्दी व्याकरणों में से कोई ऐसी दूसरी पुस्तक नहीं है जिससे मैं इतना प्रभावित था।

सोवियत लेखकों ने भी हिन्दी भाषा के अध्ययन में काफी बड़ा योगदान किया है। यहाँ मैं दो नामों का उल्लेख करना चाहता हूँ। पहला नाम है अकादमीशियन अलेक्सेई बारान्निकोव का जो सोवियत संघ में आधुनिक हिन्दी भाषाओं के अध्ययन के संस्थापक थे। उन्होंने रूस देश में पहला हिन्दी-व्याकरण लिखा—'हिन्दुस्तानी (उर्दू और हिन्दी)' जो एक तरफ परम्परागत सर्वभाषा व्याकरण के आधार पर और दूसरी तरफ क्लासिकी वाङ्मीमांसा के आधार पर लिखा है।

दूसरा नाम प्रोफेसर ज़ाल्मन दीमशित्स का है जिन्होंने हिन्दी भाषा पर अनेक उत्तम पुस्तकें लिखी हैं और जिनकी असामयिक मृत्यु ने हिन्दी भाषा के अध्येताओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को काफी दुःखित किया है।

यद्यपि कुछ सिद्धान्तनिष्ठ भाषाई विषयों पर हमारे दृष्टिकोण काफी भिन्न थे, तिस पर भी अन्तिम दो दशकों में श्री दीमशित्स ने हिन्दी भाषा का जो अध्ययन एवं अध्यापन किया है वह बेमिसाल है।

प्रस्तुत 'हिन्दी भाषा का व्यावहारिक व्याकरण' वह परम्परा जारी रखता है जिसका समारम्भ मेरी 'हिन्दी में क्रिया' नामक पुस्तक में हुआ था। इस परम्परा का प्रमुख सिद्धान्त है, हिन्दी भाषा के आन्तरिक नियमों के आधार पर भाषा का अध्ययन करना।

शब्द और उसका कोशीय अर्थ शब्दकोश में रहते हैं। प्रयोग (वाक्य) में आते ही शब्द पद बन जाता है। वाक्य में शब्द अपने प्रायः सब शब्दकोशीय लक्षण खो सकते हैं। वाक्य में शब्द का अपना अलग जीवन है। "दूर गाँव में रहते हुए मैं यह नहीं समझ पाता कि वह शहर से इतना दूर है, कि इतना दूर जाना पड़ेगा, कि शहर से इसकी इतनी दूरी है।" इस वाक्य में 'दूर' विशेषण, क्रियाविशेषण या संज्ञा है और 'दूर' शब्द के ये लक्षण केवल वाक्य में स्पष्ट हो जाते हैं। ऐसे उदाहरण हिन्दी में बहुत हैं क्योंकि हिन्दी विश्लेषणप्रधान भाषा है जिसमें शब्द का अर्थ एवं दर्जा वाक्य में ही स्पष्ट होता है, शब्द की स्थिति से या शब्दों की सहस्थिति (सहसम्बन्ध) से। कारकीय विभक्तियों से रहित शब्द अपने पदीय अर्थ व्यक्त नहीं कर सकता। रूसी भाषा का कारकरूपीय शब्द 'तोपोरोम' (कुल्हाड़ी से) लीजिए। इसमें स्पष्ट करणसूचक सम्बन्ध व्यक्त है, रूसी भाषा में 'तोपोरोम' आप काट सकते हैं, मार सकते हैं इत्यादि। पर 'कुल्हाड़ी से'? हाँ, आप काट-मार भी सकते हैं, लेकिन आप 'कुल्हाड़ी' से प्रेम कर सकते हैं (क्यों नहीं?); आप इससे दूर भी हो सकते हैं, आप इसे लेकर जा सकते हैं, इससे आप और कोई चीज मिला सकते हैं, किसी लोककथा में आप कुल्हाड़ी से कुछ पूछ भी सकते हैं इत्यादि। वाक्य में 'कुल्हाड़ी से' गौण कर्म की स्थिति है, जैसे, 'कुल्हाड़ी से लकड़ी काटना', पर 'कुल्हाड़ी से शहतीर काटे नहीं कटता' के वाक्य में 'कुल्हाड़ी से' कर्त्ता का प्रकार्य करता है।

अतः हिन्दी में शब्द की वाक्यगत स्थिति मालूम करना काफी नहीं है, क्योंकि रूपबद्ध तरीके से गौण कर्म होने हुए भी शब्द, शब्द-समुदाय के स्तर पर भिन्न-भिन्न सम्बन्धों को व्यक्त करने लगता है, जैसे, कुल्हाड़ी से काटना (कर्मसूचक सम्बन्ध), कुल्हाड़ी से काटे नहीं कटना (कर्त्ताविषयक), कुल्हाड़ी से शिकार खेला जाना (संसर्गसूचक), कुल्हाड़ी से दूर रखना (स्थानवाचक-पृथकतावाचक), कुल्हाड़ी से प्रेम करना (संगमवाचक-कर्मविषयक) इत्यादि।

इस तरह शब्द का विश्लेषण तीन स्तरों पर किया जाना चाहिए: (1) रूपात्मक (शब्द के क्या सम्भव रूप हो सकते हैं, यानी शब्द की रूपावली (पराप्रिज्म), (2) वाक्यगत (शब्द वाक्य के किन-किन अंगों के रूप में प्रयुक्त हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है), (3) शब्द-समुदाय वाला (पदबन्धात्मक शब्द, शब्द-समुदाय में क्या-क्या सम्बन्ध व्यक्त कर सकता है)।

इस प्रकार्यात्मक आधार पर हिन्दी में शब्द-भेदों का वितरण हो चुका था। जो शब्द, शब्द-समुदाय के स्तर पर पदार्थवाचक सम्बन्ध व्यक्त कर सकते हैं वे अर्थपूर्ण हैं, या इसके विपरीत कहा जा सकता है कि जो शब्द अर्थपूर्ण हैं वे शब्द-समुदाय के स्तर पर पदार्थवाचक सम्बन्ध व्यक्त कर सकते हैं।

शेष शब्द न तो अर्थपूर्ण हैं, न ही वे शब्द-समुदाय के आधार पर सम्बन्ध व्यक्त कर सकते है, न ही वे वाक्य के अंग हो सकते हैं। यह सही है कि सहायक शब्द-भेदों की हैसियत से कुछ अर्थपूर्ण शब्द आ सकते हैं। तब वे अर्थपूर्ण शब्दों की तरह सभी लक्षणों से सम्पन्न होते हैं।

सो, यह भी कहा जा सकता है कि परम्परागत भाषाई प्रयोग एवं वाक्य के स्तर पर व्यक्त प्रकार्यों के आधार पर हिन्दी में निम्न शब्द-भेद हैं: (1) अर्थपूर्ण— संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, संख्यांक, क्रिया, क्रियाविशेषण और (2) सहायक— परसर्ग, समुच्चयबोधक, निपात एवं विस्मयादिबोधक।

इन शब्द-भेदों का विश्लेषण उपर्युक्त तीन स्तरों पर किया जाएगा ताकि प्रत्येक प्रकार्यात्मक इकाई का व्यावहारिक वर्णन किया जाए। विश्लेषण बीस हज़ार उदाहरणों के अध्ययन के आधार पर किया जा रहा था जो सभी प्रसिद्ध हिन्दी के लेखकों की कृतियों और केन्द्रीय पत्र-पत्रिकाओं से लिए गए हैं।

हमारे शोधकार्य का आधार भाषा-विज्ञान के आम नियम थे जो कि भाषा के व्याकरणिक तत्त्वों को समझने में सहायता देते हैं। वे उसकी आन्तरिक प्रकृति से निकले हैं न कि बाह्य जगत से लाए हुए हैं। इसलिए पुस्तक में बहुत-सी परिभाषाएँ प्रस्तुत की गयी हैं जिनकी सूची परिशिष्ट में दी गयी है।

स्वाभाविक है कि यह कृति हिन्दी व्याकरण का पूर्ण वर्णन करने का दावा नहीं करती, यह केवल शब्दभेदों की रूप-प्रक्रिया और वाक्य में इनके प्रयोगों का वर्णन करती है।

वाक्यविन्यास पर एक और पुस्तक लिखना आवश्यक है जिसमें पदों, वाक्यों और 'वाक्य-समूहों' की संरचना और उनके घटकों के प्रकार्यात्मक प्रयोग की चर्चा होगी जिसमें देखा जाएगा कि हिन्दी में वाक्य का विश्लेषण काफी गतिशील होना चाहिए क्योंकि वाक्य के मौजूदा अंगों का चौखटा वाक्य के पदों के लिए कितना तंग है। 'मुझे पुस्तक खरीदना चाहिए', इस वाक्य में 'मुझे' का क्या दर्जा है? परम्परागत विश्लेषण के अनुसार यह गौण कर्म है, पर किसका कर्म है? 'खरीदना' क्रिया का, या 'पुस्तक' संज्ञा का? कदापि नहीं। इसलिए 'मुझे' को कोई और दर्जा देना है। प्रस्तुत पुस्तक में इसे 'कर्तावाचक निर्धारक' का दर्जा दिया गया है। आनेवाली पुस्तक में 'मुझे' को कर्ता का दर्जा मिलेगा। 'पुस्तक' को वाक्यविशेष के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्देश्य का दर्जा जिससे विधेय अन्वित है। 'मुझसे पुस्तक नहीं लिखी जाती'—इस वाक्य में 'मुझसे' भी कर्त्ता है, 'पुस्तक' उद्देश्य है, पर ये दोनों 'पुस्तकें' वाक्य में कर्ता नहीं हैं। सो, आधुनिक हिन्दी में उद्देश्य कर्तावाचक हो सकता है : 'मैं पुस्तक लिखता हूँ', और कर्मवाचक भी हो सकता है : 'मुझे पुस्तक लिखनी चाहिए'। कर्ता उद्देश्य हो सकता है जब उसमें विधेय का अन्वय होता है, पर अधिकांश प्रयोगों में कर्ता परसर्गसहित आता है। इसलिए सरल वाक्य का विश्लेषण नया दृष्टिकोण अपनाकर किया जाना चाहिए। परन्तु इससे पहले यह जानना आवश्यक है कि वाक्य में विभिन्न शब्द-भेद क्या-क्या स्थितियाँ ले सकते हैं। यही प्रस्तुत पुस्तक का कार्य था।

अन्त में मैं उन सभी अध्येताओं को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिनकी कृतियों के प्रकाश ने इस पुस्तक का मार्ग आलोकित किया।

नयी दिल्ली
जनवरी, 1992

—ओलेग गे. उलत्सिफ़ेरोव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द-भेद

संज्ञा

जैसे कि ऊपर अंकित, संज्ञा की मुख्य संवर्गात्मक विशेषता यह है कि उसमें द्रव्यत्व के अर्थ को सूचित करने का शब्दार्थ विज्ञान सम्बन्धी स्वभाव निहित है जो वचन और कारक की व्याकरणिक श्रेणी और लिंग की शाब्दिक-व्याकरणिक श्रेणी में अभिव्यक्त होता है। इसके अतिरिक्त संज्ञा में कुछ विशिष्ट वाक्यात्मक विशेषताएँ हैं जो मुख्यत: संज्ञा में अभिव्यक्त हैं।

अपने शाब्दिक अर्थ और रूपात्मक विशेषताओं के अनुसार जो संज्ञा की शाब्दिक-आर्थिक प्रकृति के कारण इनमें निहित हैं वे संज्ञाएँ कुछ शाब्दिक-व्याकरणिक श्रेणियों में विभाजित हैं।

अपने विशिष्ट और सामान्य अर्थ के अनुसार संज्ञाएँ व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञाओं में विभाजित हैं। व्यक्तिवाचक संज्ञाओं में विशिष्ट संज्ञाएँ आती हैं और जातिवाचक में सामान्य संज्ञाएँ आती हैं।

व्याकरणिक रूप में व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ जातिवाचक संज्ञाओं से इसमें भिन्न हैं कि वह बहुवचन में प्रयुक्त नहीं होते। व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का बहुवचन तब सम्भव होता है जब वह अनेक एकजातीय विशिष्ट द्रव्य सूचित करती हैं [जयचन्दों से बचना (12,282) यानी गद्दारों से बचना] या एक नाम लेते हुए विशिष्ट द्रव्य सूचित करती हैं [स्वाधीन भारत में इस तरह की न जाने कितनी सीताएँ और सावित्रियाँ नाम बदलकर गली बदलती होंगी··· (111, 83), दो मिनट बाद दोनों वर्मा अन्दर आए (59, 76), मौर्यों का वंशज (2, 39)]।

व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ जातिवाचक में तभी बदल सकती हैं जब वह एकजातीय द्रव्यों के सामान्यकृत नामकरण के लिए प्रयुक्त होती हैं (सूरदास—-आदमी का नाम और 'अंधा'; रावण—एक राक्षस का नाम और 'राक्षस'; लक्ष्मी—एक औरत का नाम और 'दौलत')।

दूसरी ओर जातिवाचक संज्ञाएँ विशिष्ट प्रयोग के कारण व्यक्तिवाचक बन सकती हैं ('उषा'—-एक औरत का नाम और 'प्रभात'; 'तारा'—एक औरत का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम जो 'तारा' शब्द से बना है; 'प्रेम'—एक आदमी का नाम जो 'प्रेम' शब्द से बना है)।

व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञाओं के पुनः अर्थनिर्णय के आधार पर समध्वनि शब्द बन जाते हैं ('अमर'—एक आदमी का नाम और विशेषण जिसका अर्थ अमृत है; 'प्रकाश'—एक आदमी का नाम और संज्ञा जिसका अर्थ है रोशनी)।

जातिवाचक संज्ञाएँ उपनाम को सूचित करने के लिए प्रयुक्त हो सकती हैं ('बापू' यानी महात्मा गांधी; 'पंडित जी', 'चाचा जी' यानी जवाहरलाल नेहरू; 'राष्ट्रपिता' यानी महात्मा गांधी; 'नेता जी' यानी सुभाषचन्द्र बोस; 'सितारे-हिन्द' यानी राजा शिवप्रसाद; 'निराला' यानी सूर्यकान्त त्रिपाठी)।

वस्तुगत यथार्थता के प्रति अपने सम्बन्धों के अनुसार संज्ञाएँ पदार्थवाचक और भाववाचक में विभक्त हैं। पदार्थवाचक संज्ञाओं में वास्तव में मौजूद होनेवाले द्रव्य आ जाते हैं और भाववाचक संज्ञाओं में सब अवास्तविक द्रव्य आ जाते हैं।

हिन्दी में सजीव और निर्जीव संज्ञाओं का व्याकरणिक रूप से अभिव्यक्त विरोध नहीं है। गो कि यह कहा जा सकता है कि हिन्दी में सजीव और शेष सभी संज्ञाओं का विरोध है क्योंकि प्रधान कर्म के रूप में सजीव संज्ञाएँ परसर्ग के साथ मुख्य तौर पर प्रयुक्त होती हैं।

वचन के अनुसार सब संज्ञाएँ संख्यीय और असंख्यीय में विभक्त होती हैं। संख्यीय संज्ञाओं में एकवचन और बहुवचन का विरोध है। असंख्यीय संज्ञाओं में इस प्रकार का विरोध नियम के रूप में नहीं होता; वह केवल एकवचन में या केवल बहुवचन में प्रयुक्त होती हैं। असंख्यीय संज्ञाओं में जब कभी वचन का विरोध आ जाता है तो यह उनके अर्थ में भिन्नता आ जाने से या उनके लिए अस्वाभाविक वचन में नया अर्थ आने से सम्बद्ध हैं।

कारक के अनुसार सब संज्ञाएँ विकारी और अविकारी में विभक्त होती हैं। विकारी संज्ञाओं में वह पद आते हैं जिनमें पादरूप होते हैं। अविकारी संज्ञाओं में वह शब्द आते हैं जो सभी कारकों के लिए एक ही पादरूप अपना लेते हैं ('कोदों', 'सरसों', 'भाक्रांद', 'यूनेस्को')।

संज्ञाओं का लिंग

संज्ञाओं का लिंग संज्ञाओं की एक मुख्य विशेषता है क्योंकि बिना किसी अपवाद के सभी संज्ञाओं का, चाहे वह संख्येय और असंख्येय तथा विकारी और अविकारी हैं, अपना ही लिंग होता है।

हिन्दी में दो लिंग हैं : पुल्लिग और स्त्रीलिंग। व्यक्तिवाचक और कुछ सजीव संज्ञाओं को छोड़कर जो अपने प्राणिवाचक लिंग से निर्दिष्ट हैं शेष सभी संज्ञाओं का लिंग अर्थहीन और कारणहीन मालूम होता है जो कि रूप या अर्थ की दृष्टि से सही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है।

जैसा कि पीछे लिखा है उसका मतलब यह कतई नहीं है कि लिंगों में संज्ञाओं का विभाजन पूरी तरह से अग्राह्य है। रूप और अर्थ के कुछ लक्षणों को लेते हुए शब्दों का लिंग निर्दिष्ट किया जा सकता है मगर केवल मोटे तौर से।

इस बात पर जोर देना है कि एक शब्द में (एक शाब्दीय में) लिंगों का विभाजन नहीं होता जैसे कि यह विकारी विशेषणों में पाया जाता है: नया-नयी, बड़ा-बड़ी, खुला-खुली। प्रत्येक विशिष्ट प्रयोग में प्रत्येक संज्ञा का एक ही लिंग होता है जो संज्ञा के नियामक विकारी शब्दों से होनेवाले संयोग में अभिव्यक्त होता है यानी संज्ञा लिंगों में नहीं बदल सकता।

इस बात के बावजूद कि संज्ञाओं का लिंग सिर्फ वाक्य-विन्यास के आधार पर स्पष्ट होता है लिंग की कोटि न केवल रूपवान बल्कि अर्थवान भी है। इस व्याकरणिक कोटि की अर्थपूर्णता का विशिष्ट प्रतिबिम्ब व्यक्तिवाचक और अनेक सजीव संज्ञाओं का पुल्लिग या स्त्रीलिंग संज्ञाओं में विभाजन है क्योंकि यह विभाजन प्राकृतिक लिंग से जुड़ा हुआ है (लड़का, अध्यापक, शेर और लड़की, अध्यापिका, शेरनी)।

हिन्दी में लिंग सम्बन्धी द्वित्तक अधिकांश व्यक्तिवाचक संज्ञाओं में मौजूद हैं जो तत्सम शब्दों के लिए विशेष रूप से स्वाभाविक हैं। नियम के रूप में स्त्रीलिंग की संज्ञाएँ व्युत्पन्न होती हैं जो पुल्लिग की संज्ञाओं से शब्द-रचनात्मक प्रत्ययों से बनी होती हैं: छात्र-छात्रा, पुत्र-पुत्री, लड़का-लड़की, बूढ़ा-बुढ़िया, ग्वाला-ग्वालिन, नाई-नाइन, ठाकुर-ठकुराइन, राजपूत-राजपूतनी, सेठ-सेठानी, स्वामी-स्वामिनी, लेखक-लेखिका, क्रान्तिकारी-क्रान्तिकारिणी, वीर-वीरांगना।

लिंग सम्बन्धी द्वित्तक भिन्न धातुओं से बन सकते हैं: पिता-माता, भाई-बहिन, पुरुष-स्त्री।

कभी-कभी स्त्रीलिंग की संज्ञाएँ अंत्यलुप्त धातु से बनती हैं: श्रीमान्-श्रीमती, राजा-रानी, विद्वान-विदुषी।

बहुत कम लिंग सम्बन्धी द्वित्तक स्त्रीलिंग संज्ञाओं के आधार पर बनते हैं: भेड़-भेड़ा, भैंस-भैंसा, ननद-नन्दोई, बहन-बहनोई।

स्त्रीलिंग शब्दों के विपरीत व्यक्तिवाचक पुल्लिग शब्द, शब्द-रचना और रूप-निर्माण सम्बन्धी विशेषताओं को नहीं अपनाते। इसके कारण वह सामान्य व्यक्तियों को निर्दिष्ट कर सकते हैं जो दोनों लिंगों से सम्बद्ध हैं। इसके साथ-साथ उनके स्त्रीलिंग संज्ञाओं से लिंग सम्बन्धी द्वित्तक हो सकते हैं: मंत्री (मंत्रिणी), डॉक्टर (डॉक्टरनी), विद्यार्थी (विद्यार्थिनी), मतदाता (मतदात्री), कवि (कवयित्री) या नहीं हो सकते: ईश्वर, सेनापति, सरपंच, मुखिया, अगुआ, कमांडर, सिपाही, मेहमान, दुश्मन। यह सब संज्ञाएँ स्त्रीलिंग व्यक्तियों को निर्दिष्ट करने के लिए आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती हैं जैसे "आज हमारे देश में अनेकों नारियाँ मंत्री, उपमंत्री पद पर प्रतिष्ठित हैं" (6, 364); "क्या मैं सदन की दुश्मन हूँ···" (73, 55); "गुरु तो मुझे अब मिली हैं" (108, 158); "यह प्रथम महिला है जो उत्तर प्रदेश की गवर्नर हुई" (115, 357)।

अनेक पुल्लिग संज्ञाएँ स्त्रीलिंग व्यक्तियों को निर्दिष्ट करने के लिए प्रयुक्त नहीं हो सकतीं क्योंकि वह केवल पुल्लिग व्यक्तियों का नाम लेती हैं : पिता, भाई, पति, युवक, पुरुष, चाचा इत्यादि।

स्त्रीलिंग संज्ञाएँ नियम के रूप में पुल्लिग व्यक्तियों को निर्दिष्ट करने के लिए नहीं प्रयुक्त होतीं। केवल 'सवारी' शब्द इसका अपवाद होता है जैसे "इक्के की सवारी ने कहा : मैं भी वहीं जा रहा हूँ" (1, 487); "स्टेशन पर वही (लच्छू) अकेली सवारी उतरी थी" (1, 201)।

पशुओं को निर्दिष्ट करनेवाली संज्ञाओं के द्वित्तक भी होते हैं : शेर-शेरनी, बाघ-बाघिन, बिल्ला-बिल्ली, कुत्ता-कुतिया, सियार-सियारी, हाथी-हथिनी, हिरन-हिरनी, बकरा-बकरी, घोड़ा-घोड़ी। इसमें प्रजाति का सामान्य नाम ज्यादातर पुल्लिग होता है (शेर, हाथी, कुत्ता, हिरन, घोड़ा, बाघ), हालांकि इसमें स्त्रीलिंग शब्द भी आते हैं (बिल्ली, भैंस, बकरी)।

इसके अतिरिक्त पशुओं के कुछ ऐसे नाम हैं जो एक ही लिंग होते हैं—पुल्लिग : भेड़िया, गैंडा, खरगोश, चमगादड़; या स्त्रीलिंग : लोमड़ी, साही, नीलगाय, गोह, गौरैया, चील। किसी-न-किसी लिंग से इन संज्ञाओं का सम्बन्ध शाब्दिक वाक्य-विन्यासात्मक ढंग से निर्दिष्ट होता है—नर और मादा शब्दों को लगाने से। इसी तरह व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का लिंग-निर्देश किया जाता है यानी स्त्रीलिंग संज्ञा के साथ स्त्री या महिला शब्द लगाया जाता है।

निर्जीव संज्ञाओं के लिंग सम्बन्धी द्वित्तक नियम के अनुसार अपने अर्थ से निर्दिष्ट होते हैं जबकि वह रूप, दृष्टि और मात्रा के अनुसार भिन्न-भिन्न द्रव्यों को अभिव्यक्त करते हैं। इसमें पुल्लिग के द्रव्य मात्रा और वजन की दृष्टि से स्त्रीलिंग संज्ञाओं से अधिक होते हैं : रस्सा और रस्सी, घण्टा और घण्टी, टोकरा और टोकरी, थैला और थैली, छुरा और छुरी।

बाहरी दृष्टि से प्रतीत होनेवाले लिंग सम्बन्धी द्वित्तक वास्तव में ऐसे नहीं होते क्योंकि गुणात्मक दृष्टि से भिन्न द्रव्यों को अभिव्यक्त करते हैं जैसे अँगूठा और अँगूठी, घड़ा और घड़ी, चूहा और चूही, छड़ा और छड़ी, ताला और ताली इत्यादि।

जैसे कि ऊपर अंकित था, किसी-न-किसी शब्द का लिंग निर्णय केवल मोटे तौर से किया जा सकता है। इसमें रूप तथा अर्थ सम्बन्धी लक्षणों को प्रयोग में लिया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप सम्बन्धी लक्षण के अनुसार संज्ञा का लिंग एकवचन व प्रत्यय कारक की विभक्ति पर, धातु के अन्तिम व्यंजन या स्वर तथा शब्द-रचनात्मक प्रत्ययों पर निर्भर हो सकता है।

अपने रूप के अनुसार पुल्लिग शब्दों में निम्नलिखित शब्द आते हैं :

(1) पुल्लिग व्यक्तियों को निर्दिष्ट करनेवाली आकारांत संज्ञाएं, जैसे लड़का, पिता, राजा, नेता, योद्धा, दादा;

(2) प्रबल अधिकांश आकारांत या आकारांत पदार्थवाचक संज्ञाएँ, जैसे कपड़ा, कमरा, चमड़ा, आटा, छुरा, घण्टा, डिब्बा, कुआँ, धुआँ;

(3) पन, पा, त्व, त्य प्रत्यय वाली भावात्मक संज्ञाएँ, जैसे बचपन, बुढ़ापा, बन्धुत्व, महत्त्व, पण्डित;

(4) आक, आका, आकू, आरा, आर, आकार, कार, कुन, खोर, गीर, गार, दन, दार, नवीश, बाज, बान, वा, साज प्रत्यय वाले कर्तावाचक संज्ञाएँ जैसे तैराक, लड़ाका, कथाकार, हत्यारा, लड़ाकू, सुनार, इतिहासकार, कारकुन, सूदखोर, राहगीर, हिसाबदाँ, जमींदार, मददगार, कारीगर, स्याहीनवीस, घड़ीसाज़, बागबान, चालबाज़, मछुआ;

(5) आव, आवा, आ, आन, ना प्रत्यय वाले सब क्रियार्थक संज्ञाएँ, जैसे बचाव, बुलावा, घेरा, उठान, आना;

(6) त्र और ज धातु वाली संज्ञाएँ, जैसे चित्र, मित्र, क्षेत्र, जलज, वंशज;

(7) य मूल व व्युत्पन्न धातु वाली अधिकांश संज्ञाएँ, जैसे उपाय, समय, सौन्दर्य, सदस्य;

(8) अव धातु वाली अधिकांश संज्ञाएँ, जैसे गौरव, गाँव;

(9) करण और वाद प्रत्यय वाली सब भाववाचक संज्ञाएँ, जैसे राष्ट्रीयकरण, लेनिनवाद, बिजलीकरण, समाजवाद;

(10) दान प्रत्यय वाली सब पदार्थवाचक संज्ञाएँ, जैसे चायदान, कलमदान;

(11) व्युत्पत्ति के अनुसार इ और उ धातु वाले सब संस्कृत शब्द जो नियम के रूप में पुल्लिग व्यक्तियों को निर्दिष्ट करते हैं, जैसे ऋषि, कवि, मुनि, प्रभु, गुरु, शिशु।

रूप के अनुसार स्त्रीलिंग शब्दों में निम्नलिखित शब्द आते हैं :

(1) ई, आ, इन, इया, आइन, आनी, नी, इनी, इका, अती, न प्रत्यय वाली सब संज्ञाएँ जो स्त्रीलिंग प्राणियों को निर्दिष्ट करती हैं, जैसे पुत्री, दासी, लड़की, छात्रा, सदस्या, तेलिन, कुतिया, ठकुराइन, नौकरानी, मेहतरानी, मोरनी, स्वामिनी, गरीबिनी, लेखिका, अध्यापिका, श्रीमती, बढ़इन;

टिप्पणी : अपवाद के रूप में ई धातु वाली कुछ कर्तावाचक पुल्लिग संज्ञाएँ प्रयुक्त होती हैं, जैसे आदमी, माली, धोबी, नाई, मोची;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) ई प्रत्यय वाली सब भाववाचक संज्ञाएँ, जैसे हँसी, चोरी, गरीबी, सावधानी, बराबरी;

(3) ई धातु या प्रत्यय वाली अधिकांश पदार्थवाचक संज्ञाएँ, जैसे नदी, रोटी, रेती, चिट्ठी, टोपी, घड़ी और गाड़ी ;

टिप्पणी : ई धातु या प्रत्यय वाली कुछ पदार्थवाचक संज्ञाएँ पुल्लिग होती हैं, जैसे पानी, घी, दही, मोची;

(4) आ प्रत्यय वाली सब भाववाचक संस्कृत से व्युत्पन्न संज्ञाएँ तथा उसी धातु वाली कुछ पदार्थवाचक संस्कृत से व्युत्पन्न संज्ञाएँ, जैसे सभा, शिक्षा, लाता, माला;

(5) आ धातु वाली अधिकांश भाववाचक और पदार्थवाचक संज्ञाएँ, जो अ़रबी और फारसी भाषा से ली गयी थीं, जैसे सजा, ह्वा, दया, दुनिया;

टिप्पणी : कुछ ऐसी भाववाचक संज्ञाएँ पुल्लिग की होती हैं, जैसे गुस्सा, मज़ा, द़गा;

(6) आई, आवट, आहट, इमा, ता, ति, ती, नि, नी, ना, इश, आश प्रत्यय वाली सब भाववाचक संज्ञाएँ तथा ईस (श) धातु वाली अधिकांश संज्ञाएँ, जैसे लड़ाई, लिखावट, घबराहट, कालिमा, लालिमा, सुन्दरता, जाति, चुकौती, बढ़ती, हानि, करनी, वेदना, घटना, कोशिश, नालिश, बारिश, तलाश, लाश (इसमें दो शब्द अपवाद के रूप में आते हैं—ताश और होश जो पुल्लिग के हैं);

(7) इया प्रत्यय वाली तमाम लघुतावाची संज्ञाएँ, जैसे खटिया, डिबिया, पुड़िया;

(8) अंग्रेजी भाषा से ली गयी इंग प्रत्यय वाली सब भाववाचक संज्ञाएँ, जैसे पिकेटिंग, राशनिंग, इंजीनियरिंग;

(9) 'तफईल' के आधार पर निर्मित प्रवल अधिकांश संज्ञाएँ, जैसे तस्वीर, तहसील, तफसील, तहरील (अपवाद के रूप में यहाँ एक ही शब्द का प्रयोग होता है तावीज़ जो पुल्लिग है);

(10) क्रिया के धातु की समाकार अधिकांश भाववाचक संज्ञाएँ, जैसे भार, रोक, लूट, दौड़, समझ, छाप;

टिप्पणी : अपवाद के रूप में यहाँ कुछ पुल्लिग शब्द भी हैं, जैसे खेल, नाच, मेल, बोल, बिगाड़ और कुछ दूसरे;

(11) ऊ धातु वाली अधिकांश व्यक्तिवाचक, भाववाचक संज्ञाएँ, जैसे बहू, लू, बालू, झाड़ू, ब्यालू;

टिप्पणी : अपवाद-रूप में यहाँ भी कुछ पुल्लिग शब्द आते हैं, जैसे आलू, आँसू, रतालू, टेसू;

(12) इ व उ धातु वाली अधिकांश पदार्थवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R 70 ALE-H

जैसे निधि, विधि, अग्नि, छवि, रुचि, आयु, मृत्यु, वस्तु, धातु;

टिप्पणी : अपवाद के रूप में कुछ पुल्लिग शब्द भी होते हैं, जैसे गिरि, जलधि, वलि, मधु, अश्रु, तालू, मारू, हेतु, सेतु तथा कुछ और;

(13) आं छोड़कर नासिकीकृत स्वरांत वाली अधिकांश संज्ञाएँ, जैसे सरसों, जोखों, गऊँ और खड़ाऊँ (अपवाद के रूप में दो पुल्लिग शब्द आते हैं, कोदों और गेहूँ)।

(14) क्रिया की धातु से न प्रत्यय के सहारे से बनी अधिकांश क्रियाएँ व संज्ञाएँ तथा नकारांत क्रिया की धातु से समाप्त संज्ञाएँ, जैसे उलझन, जलन, रहन, पहचान।

103931

यहाँ पर अधिकतर सामान्य विभक्तियों, प्रत्ययों और धातुओं का ज़िक्र किया गया था जिन्हें शुद्धता के विभिन्न प्रकार से कोई-न-कोई शब्द हिन्दी में प्रयुक्त है लिंगों में सम्मिलित किया जा सकता है। जहाँ तक शेष प्रत्ययों और धातुओं का सम्बन्ध है उनसे यह निर्दिष्ट करना असम्भव होता है या काफी कठिन होता है कि कोई शब्द पुल्लिग या स्त्रीलिंग है।

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

रूप सम्बन्धी अनेक लक्षण जिनसे यह तय किया जा सकता है कि वह या यह शब्द किस लिंग का है भारतीय विद्वान् लिंग को निर्दिष्ट करने के रूप सम्बन्धी अधिकतर सामान्य लक्षणों का अन्वेषण करने पर विवश हुए। या जहाँ तक हिन्दी में प्रविष्ट संस्कृत (तत्सम्) शब्दों का सम्बन्ध है, ऐसा प्रयत्न किया गया था कि अ, इ, उ धातु वाले शब्द पुल्लिग में तथा आ, ई धातु वाले शब्द स्त्रीलिंग में सम्मिलित किए जाएँ (दे. 53, 59)। किशोरीदास वाजपेयी ने हिन्दी के आ धातु वाले सब मूल शब्द पुल्लिग में और ई धातु वाले सब मूल शब्द स्त्रीलिंग में सम्मिलित कर दिये थे (दे. 23, 190)। रामचन्द्र वर्मा जी ने लिंग को निर्दिष्ट करने के आठ नियम निकाले हैं (91, 92-97), भोलानाथ तिवारी ने लिंग निर्दिष्ट करने के चार ही नियम निकाले थे (80, 41-43)।

यह स्मरण करना चाहिए कि रूप के आधार पर बना हिन्दी में लिंग निर्णय का कोई भी वर्गीकरण सामान्य नहीं हो सकता क्योंकि उसके अन्तर्गत सही शुद्धता के साथ शब्दों की कुछ सीमित श्रेणियाँ आ सकती हैं। व्यंजन की धातु वाले अधिकांश शब्द (यहाँ स्वर की धातु वाले अनेक शब्द भी शामिल हैं) लिंग निर्णय के नियमों के अन्दर नहीं आते। इसके अतिरिक्त अनेक पूर्ण समनामों के न केवल भिन्न अर्थ बल्कि भिन्न लिंग हैं : हार, टीका, बाल, ताक—पुल्लिग के शब्द मगर हार, टीका, बाल, ताक—स्त्रीलिंग के शब्द।

ऐसे अवसरों पर शब्द की व्युत्पत्ति और उसके अर्थ से लिंग को निर्दिष्ट करने की सहायता ली जा सकती है।

यों आ धातु वाले सब भाववाचक तत्सम शब्द स्त्रीलिंग के होते हैं। लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
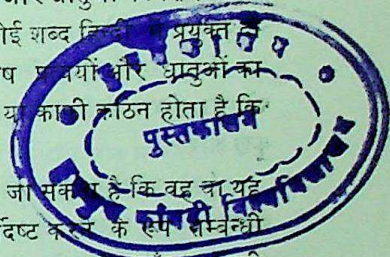
ऐसे ही धातु वाले अरबी और फारसी शब्दों के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता। त्र और ज धातु वाले सब तत्सम शब्द पुल्लिग के होते हैं और ता प्रत्यय वाले सब तत्सम शब्द स्त्रीलिंग के हैं। 'तफईल' के आधार पर बने लगभग सब अरबी शब्द स्त्रीलिंग के हैं। आ विभक्ति वाले हिन्दी के प्रबल अधिकांश पदार्थवाचक शब्द पुल्लिग हैं, उनमें अरबी और फारसी के अनेक शब्द भी सम्मिलित हैं।

अर्थ के अनुसार स्वाभाविक पुल्लिग लिंग के व्यक्तियों और पशुओं को छोड़-कर पुल्लिग में निम्नलिखित शब्द आते हैं :

(1) सप्ताह के भारतीय दिनों तथा महीनों के नाम—सोमवार, शुक्रवार, चैत्र, वैशाख, श्रावण;

(2) नक्षत्रों और ग्रहों के नाम—सूर्य, चन्द्र, तारा, केतु, मंगल, बुध (अपवाद —पृथ्वी शब्द हैं);

(3) रत्नों और खनिज पदार्थों के नाम—सोना, ताँबा, लोहा, सीसा, तेल, कोयला, हीरा, मोती, लाल, नीलम (अपवाद—चाँदी, मणि, कलई, गंधक तथा कुछ और)।

(4) भौगोलिक भागों के नाम—देश, नगर, पर्वत, समुद्र, स्थल, द्वीप, आकाश, नदी, दरिया (अपवाद—नदी, झील, घाटी तथा कुछ और)।

(5) पौधों, फूलों, फलों तथा अनाजों के नाम—देवदार, पीपल, आम, अनार, नीम, चीड़, गुलाब, गेहूँ, चना, गेंदा, नर्गिस, बाजरा, मक्का (अपवाद—इमली, चमेली, चम्पा, मकई, ज्वार, सरसों, मूँग तथा कुछ और)।

अर्थ के अनुसार स्वाभाविक स्त्रीलिंग की व्यक्तियों और पशुओं को छोड़कर स्त्रीलिंग में निम्नलिखित शब्द आते हैं :

(1) नदियों और कुछ नक्षत्रों के नाम—गंगा, कृष्णा, ताप्ती, यमुना, अश्विनी, कृत्तिका, रोहिणी (अपवाद—सिन्धु, ब्रह्मपुत्र);

(2) भाषाओं के नाम—हिन्दी, रूसी, अंग्रेजी, फ्रांसीसी;

(3) मसालों के नाम—लौंग, इलायची, मिर्च, दालचीनी, सुपारी;

(4) अनुकरणवाचक शब्द—धड़धड़, छलछल, कलकल, झकझक।

अर्थ के अनुसार लिंग निर्णय में रूप के अनुसार लिंग निर्णय की तुलना में शुद्धता और कम है। अनेक समानार्थी शब्द भिन्न लिंगों के होते हैं : नेत्र तथा नयन पुल्लिग के हैं किन्तु आँख स्त्रीलिंग का; चश्मा पुल्लिग का है किन्तु ऐनक स्त्रीलिंग का; रास्ता पुल्लिग का किन्तु राह स्त्रीलिंग का; पत्र पुल्लिग का है किन्तु चिट्ठी स्त्रीलिंग का; दरिया पुल्लिग का है किन्तु नदी स्त्रीलिंग का।

बड़ी संख्या में अन्य भाषाओं से विशेषकर संस्कृत, अरबी, फारसी, अंग्रेजी से शब्दों के ग्रहण के कारण हिन्दी में उभयलिंग के शब्द आ गए जो चाहे पुल्लिग चाहे स्त्रीलिंग में प्रयुक्त हो सकते हैं। जहाँ तक संस्कृत का सम्बन्ध है तो यह इस-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए हो जाता है कि हिन्दी में नपुंसक लिंग नहीं हैं जिससे तत्सम के अनेक शब्दों में लिंग विभेद आने लगा जो संस्कृत में नपुंसक लिंग के थे। इन शब्दों के आधार पर उभयलिंग के शब्द बन चुके हैं। दूसरी ओर पुल्लिग और स्त्रीलिंग के कुछ तत्सम शब्दों के लिंग हिन्दी में बदल गए जिससे उभयलिंग के शब्द आने लगे।

अरबी, फारसी और अंग्रेजी से जिनमें व्याकरणिक लिंग नहीं हैं हिन्दी में आए हुए शब्द अपने रूप के अनुसार लिंग अपना लेते थे (आ धातु वाले शब्द पुल्लिग बन जाते थे और ई धातु वाले शब्द स्त्रीलिंग बन जाते थे, ई धातु वाले कर्तावाचक रेफेरी जैसे पुल्लिगवाचक शब्दों को छोड़कर) या तत्सम व तद्भव के समानार्थी शब्दों के अनुसार लिंग अपना लेते थे। इसमें भी कुछ कारणों से कुछ शब्द भी उभयलिंग के बन चुके हैं।

उभयलिंग के शब्दों में निम्न शब्द आ जाते हैं: विनय, सहाय, विजय, आत्मा (विशेषकर समास में—परमात्मा), साँस—संस्कृत के; कलम, बर्फ, जंग—अरबी और फारसी के; फिल्म, स्प्रिट, पतलून, प्लायवुड—अंग्रेजी के।

उन उभयलिंग के शब्दों के साथ-साथ जो हिन्दी के अधिकांश शब्दकोशों और व्याकरणों में आ गए थे 'भटकते हुए' लिंग के कुछ शब्द भी हिन्दी में मिलते हैं। उनमें वह शब्द आते हैं जो एक निश्चित लिंग के हैं परन्तु भाषाई प्रयोग में काफी अक्सर (नियम के रूप में समानार्थी शब्दों के प्रभाव के कारण) दूसरा लिंग अपना लेते हैं, जैसे 'महीनों तक उसके चर्चे होते रहे' (1, 522), 'मुझमें उसको नींद से जगा लेने की सामर्थ्य नहीं है' (116, 47), 'देश के विभिन्न भागों की जलवायु अलग-अलग हैं' (134, 82)।

एक ही शब्द के लिंग विभेद से समनाम शब्दों के दो लिंगों को अलग करना चाहिए, क्योंकि हरएक समनाम शब्द का अपना ही लिंग है, जैसे हार और टीका—पुल्लिग के तथा हार और टीका—स्त्रीलिंग के हैं।

दोस्त, मेहमान, राजदूत, डॉक्टर के जैसे पुल्लिग के शब्द जो कि पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के व्यक्तियों को निर्देश कर सकते हैं, उभयलिंग के शब्द नहीं हैं, क्योंकि स्त्रीलिंग व्यक्तियों को निर्देश करते वक्त वह अपने रूप के अनुसार पुल्लिग शब्द रह जाते हैं (ये औरतें मेरी दोस्तें हैं जैसे वाक्य अव्याकरणिक हैं)। यही कुछ पदार्थवाचक संज्ञाओं के बारे में कहा जा सकता है जो व्यक्तिवाचक संज्ञाओं की विशेषता सूचित करती हैं, जैसे तू बड़ी पत्थर है (103, 197)।

हिन्दी में संयुक्त शब्दों का लिंग समास-रचना के अन्तिम शब्द के अनुसार निर्दिष्ट होता है। इसी अंतिम संघटक के अनुसार समास-रचना के समाकार स्वाधीन वाक्यांश का लिंग निश्चित होता है। समानार्थी पुनरुक्तियों का लिंग अन्तिम शब्द के अनुसार निश्चित होता है, उन पुनरुक्तियों को छोड़कर जिनमें अन्तिम शब्द 'शून्य' है, जैसे···अपनी दुकान-उकान भूलकर···(17, 142)। ऐसे पुनरुक्तियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का लिंग प्रथम शब्द के अनुसार निश्चित होता है।

संक्षिप्त शब्दों का लिंग भी अन्तिम संघटक के अनुसार निश्चित होता है, जैसे भाकपा (भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी) कहती है (IV, 18-2-1973); सोपा (सोशलिस्ट पार्टी) कहती है (IV, 26-2-1973); द्रमुक (द्रविड़ मुनेत्र कज़गम) चाहेगी (IV, 4-3-1973); सीटू (भारतीय ट्रेड यूनियन केन्द्र) कार्य कर रहा है (IV, 11-2-1973); एटक (अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस) चाहती है (IV, 11-2-1973)।

हिन्दी में प्रयुक्त अंग्रेजी संक्षिप्त शब्दों का लिंग अन्तिम संघटक के अनुसार निश्चित होता है जो यह संघटक हिन्दी में अपना लेता है, जैसे पहला सी. ओ. भारतीयों से नफरत करता था (119, 41); भवानी ने गत वर्ष एम. ए. कर लिया (1, 112); मैं गवर्नर का एस. डी. सी. हूँ (119, 77); राज मिस्टर शिन्दे की पी. ए. थी (151, 15)।

संज्ञाओं का वचन

हिन्दी में संज्ञाओं के दो वचन होते हैं—एकवचन और बहुवचन। संज्ञाओं का यह व्याकरणिक संवर्ग द्रव्यों के वास्तव में होनेवाले अकेलेपन (एकत्व) या बहुत्व का प्रतिबिम्ब है। एकत्व या बहुत्व के अभाव के कारण वचन में संज्ञाओं का विरोध नहीं होता। यह न केवल असंख्येय संज्ञाओं के लिए सही है बल्कि संख्येय संज्ञाओं के लिए भी जो व्याकरणिक रूप से अभिव्यक्त सिर्फ एक रूप अपना लेते हैं, उदाहरणार्थ: 'कोदों' शब्द को लीजिए।

एकत्व और बहुत्व का परस्पर सम्बन्ध पदार्थवाचक संख्येय संज्ञाओं के लिए अधिकतर स्वाभाविक है, इसमें एकवचन की संज्ञा सजातीय संज्ञाओं की श्रेणी में एक द्रव्य सूचित करती है (घर, दरवाज़ा, बहिन, बच्चा), किन्तु बहुवचन के रूप में यह संज्ञा सजातीय द्रव्यों की अनिश्चित संख्या, दो से लेकर अनन्त तक, सूचित करती है (घर, दरवाज़े, बहिनें, बच्चे)।

वचन में विरोध अपना लेनेवाले हिन्दी की सब संज्ञाएँ दो ही श्रेणियों में विभाजित होती हैं: वे संज्ञाएँ जिनमें रूप द्वारा व्यक्त एकवचन और बहुवचन का विरोध है, और वे संज्ञाएँ जिनमें रूप द्वारा ऐसा विरोध व्यक्त नहीं होता। इनमें यह विरोध सिर्फ वाक्य और वाक्यांश में व्यक्त होता है (नया मकान बनाया गया था और नये मकान बनाये गये थे)। पहले वाली संज्ञाओं में यह विरोध रूप के ज़रिये तथा वास्तव में व्यक्त होता है (मेरा लड़का जाता है और मेरे लड़के जाते हैं)।

जिन संज्ञाओं में वचन में विरोध नहीं होता वे भी दो श्रेणियों में विभाजित होती हैं: ये शब्द जिनके बहुवचन के रूप संभाव्य हैं किन्तु जो भाषाई प्रयोग में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस्तेमाल नहीं किये जाते, और वे शब्द जिनमें केवल बहुवचन के रूप होते हैं यानी Singularia tantum और Pluralia tantum के शब्द।

नियम के रूप में केवल एकवचन में प्रयुक्त संज्ञाओं में निम्नलिखित असंख्येय संज्ञाएँ आ जाती हैं :

(1) भाववाचक शब्द : (क) ज्ञापित शब्द जो संज्ञाओं से, विशेषणों से तथा क्रियाओं से बने हैं (प्रभुता, मित्रता, चोरी, दासत्व; सरलता, चतुराई, गरीबी, उपलब्धि; बहाव, घबराहट, चलन, उलझन) तथा (ख) मूल शब्द (सुख, ठण्ड, नींद, जी, प्रेम, धोखा, सम्मुख)। इसी श्रेणी में क्रियार्थक धातु के समाकार संज्ञाएं तथा क्रियार्थक संज्ञाएँ भी आती हैं (रोक, मार, देन; आना, जाना, पढ़ना)।

(2) द्रव्यवाचक शब्द (पानी, सोना, दूध, मधु, दही, इस्पात, नमक, ऊन)।

(3) समुदायवाचक शब्द (माल, सामग्री, सम्पत्ति, पूँजी, सामान, अनाज)।

इन संज्ञाओं में से कुछ संज्ञाओं का बहुवचन इनका नियमित प्रयोग नहीं है। इनका बहुवचन तब प्रयुक्त होता है जब किसी अन्य, इन संज्ञाओं से भिन्न, अर्थ को सूचित करने की आवश्यकता होती है जो आम तौर पर इनके परिमाणवाचक और अभिव्यंजनावाचक सहायक अर्थ को शुद्ध करने से सम्बद्ध हैं। कभी-कभी इसके परिणामस्वरूप एकवचन और बहुवचन के रूपों का अर्थ भिन्न हो जाता है।

कुछ भाववाचक संज्ञाओं के बहुवचन से इनका अर्थ अधिक ठोस तथा ब्योरेवार हो जाता है, जैसे आवश्यकता और प्रतिरक्षा-आवश्यकताएँ (II, 23-8-1966, 4), अनिवार्यता और श्रमिकों की अनिवार्यताएँ (II, 25-2-1970, 29), उपलब्धि तथा उपलब्धियों की कहानी (115, 387), कठिनाई और अनेक कठिनाइयों का मुकाबला करना (II, 25-8-1966, 4), असमानता और शिक्षा सम्बन्धी असमानताएँ (II, 25-2-1970, 31), कमज़ोरी और कमज़ोरियों का परिणाम (II, 23-8-1966, 12)।

कुछ भाववाचक संज्ञाओं के बहुवचन से इनका परिमाणवाचक सहायक अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाता है, जैसे तनाव और आर्थिक तनावों से बचना (II, 25-8-1966, 10), जिम्मेदारी और वे अपनी ज़िम्मेदारियों को समझें (II, 15-2-1970, 11), नीति और आर्थिक नीतियों में परिवर्तन (II, 25-8-1966, 11), जिन्दगी और दोनों···अपनी अलग-अलग ज़िन्दगियाँ शुरू कर देते (108, 149), निन्दा और···इन निन्दाओं को पढ़कर··· (II, 9-1-1972)।

दोनों वचनों के रूपों के अर्थों में भिन्नता कुछ द्रव्यवाचक और भाववाचक संज्ञाओं के एकवचन और बहुवचन के लिए विशेष रूप से स्वाभाविक हैं, जैसे तेल और भिन्न-भिन्न तेलों के गुण (146, चतुर्थ भाग, 2133), पानी और···डल के पानियों का दृश्य (28, 60), मदिरा और दोनों प्रकार की मदिराएँ (146,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सातवाँ भाग, 3763); बचत और बचतों की मात्रा (II, 10-2-1970, 15), सेवा और सेवाओं के लिए कमीशन (101, 200), उद्योग और लघु उद्योगों में काम करना (134, 163)।

Singularia tantum के शब्दों में से कुछ कालवाचक तथा कुछ अन्य संज्ञाओं को अलग करना चाहिए जिनके बहुवचन के रूप व्यक्त नहीं होते जो हिन्दी की भाषाई प्रयोग की एक विशेषता है। कालवाचक संज्ञाओं का बहुवचन कालवाचक तथा स्थानवाचक क्रियाविशेषणों में व्यक्त नहीं हो सकता, जैसे दो सौ साल तक (49, 63), दस-बारह महीने पहले (49, 51), दस-बीस वर्ष में (49, 23), चार कोस पर (49, 17)। परिमाणात्मक विशेषण शब्द समुदायों में जिनका आश्रित संघटक संख्या समेत संज्ञा है नियम के रूप में बहुवचन का प्रयोग नहीं होता, जैसे दो रुपये का जुर्माना (49, 44), चार गज की धोती (49, 41), बीस हाथ की दूरी (69, 185), तीन इंच का व्यास (94, 151), छब्बीस वर्ष की आयु (49, 22)। परसर्गरहित ऐसे शब्द समुदायों में आश्रित संघटक के रूप में प्रयुक्त आ विभक्ति वाली संज्ञा एकारान्त बन जाती हैं अगर इसके पहले दो से लेकर आगे की संख्या लगी है, इसका रूप नहीं बदलेगा अगर इसके पहले एक संख्या लगी है, जैसे पचास बीघे खेत (111, 21), तीन जोड़े कंगन (55, 95), किन्तु एक बोरा चावल में एक सेर कंकड़ (79, 87)—तुलना कीजिए : हज़ार रुपये वेतन का···(61, 319), द्वितीय स्त्रीलिंग कारक रूप की संज्ञाएँ बहुवचन के रूप में तथा अधिकृत रूप में प्रयुक्त हो जाती हैं, जैसे कई डिबिया सिगरेट (96, 46), किन्तु दो-तीन बाल्टी मेवे (61, 309)।

केवल बहुवचन में प्रयुक्त शब्दों में कोदों, सरसों, जोखों, हिज्जे, माने आते हैं। इसमें कोदों, सरसों, माने संख्येय शब्दों में आते हैं जिनके आगे निश्चित संख्यावाचक विशेषण लग सकते हैं (एक कोदों, दो कोदों, चार सरसों, एक माने में), और जोखों तथा हिज्जे असंख्येय शब्द हैं।

Singularia tantum की संख्याओं में रूप के अनुसार कुछ व्यक्तिवाचक नाम भी आ जाते हैं (दूबे, चौबे इत्यादि)।

Pluralia tantum के शब्दों से वे शब्द अलग करने चाहिए जो नियम के रूप में केवल बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं मगर जिनके एकवचन और बहुवचन के रूप मौजूद हैं। इन शब्दों में निम्न शब्द आ जाते हैं : (1) केवल बहुवचन में प्रयुक्त तथा बहुत्व का अर्थ सूचित शब्द (लोग, माँ-बाप, गण) और (2) बहुवचन में मुख्यत: प्रयुक्त शब्द जो एकवचन में भी प्रयुक्त हो सकते हैं (रूप, होश, दर्शन, बाल, हल्के, जूते, आँकड़े)।

Pluralia tantum की संज्ञाओं से विभिन्न कालवाचक संज्ञाओं को अलग करना चाहिए जो अप्रचलित ओं विभक्ति से प्रयुक्त होते हैं, जैसे अब महीनों हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये (108, 159), महीनों नहीं, वर्षों लग जाएँगे (49, 49), क्योंकि उनमें एकवचन और बहुवचन का नियमित विरोध है।

जिन संज्ञाओं में वचन का विरोध है वे एकवचन और बहुवचन में ये विरोध प्रकट करती हैं।

संज्ञाओं के एकवचन में रूप के कोई विशेष मार्कर नहीं होते। एकवचन की सभी संज्ञाओं को आकारान्त (ओकारान्त) तथा शेष सभी संज्ञाओं में विभक्त किया जा सकता है जो ज्ञापित (प्रत्यय वाले) और मूल (धातु शब्द) शब्दों में विभाजित हैं।

संज्ञाओं के बहुवचन में विशेष विभक्तियाँ लगती हैं, इसमें आकारान्त (आँकारान्त) संज्ञाओं में बहुवचन की ए (एँ) विभक्ति धातु क में लगती है जिससे एकवचन की विभक्ति बदल जाती हैं, लेकिन शेष संज्ञाओं में एँ और याँ विभक्तियाँ प्रत्यय या धातु शब्द से जुड़ती हैं जिससे शब्द का ध्वनिक आवरण बढ़ जाता है (तुलना कीजिए—लड़का और लड़के, किन्तु लड़की और लड़कियाँ, माता और माताएँ)।

इस बात पर जोर देना चाहिए कि ओकारान्त (आँकारान्त) शब्दों को छोड़ कर शेष पुल्लिग के शब्द बहुवचन में कोई भी विभक्ति नहीं अपनाते यानी बहुवचन में उनमें शून्य विभक्ति लगती हैं।

अरबी और फारसी भाषाओं से गृहीत शब्दों का बहुवचन अरबी और फारसी व्याकरण के नियमों के अनुसार बनता है, जैसे साहब-साहबान, काग़ज-काग़जात, हक-हुकूक।

निश्चित बहुत्व के अर्थ के साथ-साथ बहुवचन के रूप सामान्यकृत समुदाय-वाचक अर्थ व्यक्त कर सकते हैं, जैसे खुबानी-खुबानियाँ, सब्ज़ी-सब्जियाँ, कँसा-कँसे, जूता-जूते, मोज़ा-मोज़े, कपड़ा-कपड़े।

संज्ञाओं का कारक

हिन्दी में कारक का संवर्ग वाक्य-विन्यास में सम्मिलित हैं क्योंकि कारकीय रूपों द्वारा व्यक्त सम्बन्ध पदों की रूप-तालिका में नहीं वरन् वाक्यांश (शब्द समुदाय में) प्रकट हो जाते हैं। संज्ञा का कोई न कोई रूप (पद) किसी भी शब्द-भेद का आश्रित रूप हो सकता है और तब कारक के आश्रित रूपों के बारे में कहा जा सकता है। संज्ञा की अनाश्रित (स्वतन्त्र) और प्रधान स्थिति शब्दों के बीच के सम्बन्धों को प्रकट नहीं करती, तब कारक के अनाश्रित रूपों के बारे में कहा जा सकता है।

कारक के आश्रित और अनाश्रित रूपों के बीच के जो सम्बन्ध उत्पन्न हो जाते हैं वे आश्रित रूप की शाब्दिक-व्याकरणिक प्रकृति के, अनाश्रित रूप की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाब्दिक-व्याकरणिक प्रकृति के तथा योजक तत्त्व यानी परसर्ग की प्रकृति के परिणामस्वरूप निश्चित होते हैं।

हिन्दी में कारक के संवर्ग कारक के अनाश्रित रूपों तथा आश्रित कारकीय रूपों के विरोध से निश्चित होते हैं। अनाश्रित कारकीय रूप साधक कारक (अप्रत्यक्ष कर्तृ कारक) तथा प्रत्यक्ष (परसर्गरहित) कारक (उसके कर्ता-विषयक प्रकार्यों में) बनाते हैं। आश्रित कारकीय रूप अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक तथा (परसर्गरहित) कारक (उसके कर्मविषयक प्रकार्यों में) बनाते हैं।

हिन्दी के दोनों परसर्गीय कारक—साधक और अप्रत्यक्ष—विश्लेषणात्मक हैं क्योंकि दो अंगों से बनते हैं—परसर्गरहित द्रव्यवाचक रूप और परसर्ग से। परसर्गीय कारकों का कोई भी कारकीय रूप अर्थ की दृष्टि से शून्य प्रतीत होता है क्योंकि वह किसी भी परसर्ग के आगे अधिकृत रूप में आता है। यहाँ कारकीय अर्थों की भिन्नता परसर्गों की भिन्नता से प्रतिबन्धित है। कारकीय विभक्ति की एकरूपता और योजक तत्त्वों यानी परसर्गों की अनेकरूपता से अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक के विभिन्न अर्थ पैदा होते हैं। यह कारक असल में कई प्रत्यक्ष कारकों का सम्मिलन हैं। लेकिन हिन्दी में परसर्गों की काफी बड़ी संख्या के कारण जिसमें छ: सरल परसर्गों के साथ-साथ जटिल परसर्गों के 18 शाब्दिक गुण हैं तथा इसके साथ-साथ सरल और जटिल परसर्गों के अनेक संयोग भी हैं। सभी सम्भव कारकीय अर्थों को अलग रखना और इनका वर्णन करना असम्भव हो जाता है जो परसर्गों की सहायता से व्यक्त होते हैं। इससे सिर्फ एक ही अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक के बारे में कहना पड़ता है जिसमें अनेक अप्रत्यक्ष कारकों के प्रकार्य सम्मिलित हैं।

दूसरे विश्लेषणात्मक कारक—साधक कारक—का एक ही अर्थ होता है। साधक कारक में प्रयुक्त शब्द अपने अधीनतासूचक सम्बन्धों का अभाव सूचित करता है। साधक कारक में प्रयुक्त शब्द केवल प्रधान हो सकता है। वाक्यांश (शब्द-समुदाय) के स्तर पर यह शब्द मुख्य संघटक के रूप में तथा वाक्य के स्तर पर केवल उद्देश्य के रूप में आ सकता है। साधक कारक का शब्द वाक्य के स्तर पर होते हुए वाक्य के विधेय से भी कोई सम्बन्ध नहीं कायम करता जो साधक कारक का उद्देश्य प्रत्यक्ष कारक के उद्देश्य से अलग करता है क्योंकि प्रत्यक्ष कारक का उद्देश्य पूर्ण या आंशिक रूप से विधेय से समानाश्रित होता है। अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक के विपरीत साधक कारक द्रव्यवाचक शब्द-रूप और साधक कारक के 'ने' परसर्ग के संयोग से बनता है।

अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक की तरह प्रत्यक्ष परसर्गरहित कारक एकार्थी नहीं है क्योंकि रूसी भाषा के आधार पर उसमें कम से कम तीन कारकीय अर्थ सम्मिलित हैं यानी कर्ता, कर्म और विधेयवाचक करण कारकों के। इसके अतिरिक्त प्रत्यक्ष कारक का शब्द कारक-निरपेक्ष अर्थों में आ सकता है, उदाहरण के लिए नामबोधक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्लेषणात्मक संयुक्त क्रियाओं के अर्थपूरक अंग के रूप में।

जैसा कि पीछे लिखा जा चुका है, शब्दों के कारकीय अर्थ वाक्यांश के स्तर पर अधीनतासूचक सम्बन्धों के आधार पर उत्पन्न होते हैं। परन्तु भाषाई प्रयोग के प्रभाव के कारण कारकों के अर्थ मानो पृथक् हो जाते हैं और वह किसी न किसी कारक के स्वतन्त्र अर्थ के रूप में जाने जाने लगते हैं। इसके फलस्वरूप प्रत्येक कारक में अर्थों की एक निश्चित मात्रा है जिनमें सभी कारकों के सिलसिले में छः अर्थ सबसे अधिक सामान्य हैं। वे हैं कर्तावाचक, कर्मवाचक, पूर्णतावाचक, विधेयवाचक, विशेषणवाचक और क्रियाविशेषणवाचक।

जैसा कि पीछे कहा है, साधक कारक कोई भी सम्बन्ध प्रकट नहीं करता।

प्रत्यक्ष कारक निम्न सम्बन्ध प्रकट करता है: (1) कर्मवाचक—राम **किताब** पढ़ रहा है; (2) पूर्णतावाचक—तूने मुझे **औरत** बनाया क्यों? (103, 141), हरिकुमार अपने आपको **मालिक** न समझते थे (16, 21); (3) विधेयवाचक—राम **विद्यार्थी** है, ज़मींदार न होते हुए भी वह **ज़मींदार** कहे जाते थे (148, 105); (4) कर्तावाचक—**इच्छा** न होते हुए भी वह **बैठ** गया (17, 177), **असेम्बली** खुलते ही यह बिल पेश करूँगा (71, 29), बराबर **लड़ाई होती** रहने के कारण सिखों के तीन लाभ हुए (2, 209); (5) क्रियाविशेषणवाचक (कर्मवाचक सहायक अर्थ सहित): (क) स्थानवाचक—बूढ़ा...अपनी **राह** चल दिया (96, 46), ...मैं ऐसी **गैल** नहीं चलती...(103, 247); (ख) कालवाचक—साधु...**रात** भर रोता रहा (139, 137); (ग) परिमाणवाचक—वह **7 फुट 3 इंच** कूदे (IV, 25-8-1960), एक **कोस** चलकर हाँफने लगी (103, 100), तीन रात से वह एक क्षण भी न सोया (66, 96)।

अप्रत्यक्ष कारक निम्न सम्बन्ध प्रकट करता है: (1) कर्मवाचक—उसने **राम** को देखा, सीता **राम** से कहने लगी, मदनसिंह...**पद्मसिंह** पर कुड़बुड़ा रहे थे (72, 187); (2) कर्त्तावाचक—**विजय** के उठाए हुए तूफान से बचना मुश्किल था (120, 46), उसकी **स्त्री से** न रहा गया (69, 3), **व्यक्ति द्वारा** व्यक्ति का शोषण (116, 461); (3) पूर्णतावाचक—**बाप सरीखा** समझना (8, 51), **बेटी से बढ़कर** मानना (54, 44); (4) विधेयवाचक—सारा छप्पर आग से ऐसे ढक गया जैसे **सोने का** हो गया हो...(103, 332), ...सारा शरीर थककर **फोड़े की** तरह हो रहा है (V, जनवरी, 1963, 93); (5) कर्मवाचक-कर्तावाचक—अब **जयकिशन को** तसल्ली हुई (49, 13), पता नहीं, कितनी बातें **बाबा को** मालूम होंगी (49, 18); (6) विशेषणवाचक—**चौड़े फल** का कुठार (129, 43), **स्वाद में** खट्टा (50, 26), **नाम से** विख्यात (2, 38), **तेज धार** वाली नदियाँ (90, 13); (7) विशेषणवाचक-क्रियाविशेषणवाचक—**टोलियों में** जाना (99, 43), **आदेशों पर** चलना (116, 70), **दोस्तों के बग़ैर**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहना (66, 158); (8) क्रियाविशेषणवाचक : (क) स्थानवाचक—**पहाड़ से** आना (102, 77), **लाभ पर** चलना (116, 29); (ख) कालवाचक—**शाम तक** पहुँचना (72, 153), **आज तक** प्रचलित (2, 83), **हफ्ते में** एक दिन (27,18); (ग) परिमाणवाचक—**तीन इंच तक** लम्बा (50, 26), **आध घण्टे** में पहुँचना (15, 75); (घ) कारणवाचक—**लज्जा से** लाल (53, 71), **भूख के कारण** मृत्यु (II, 20-3-1967, 7), **लज्जा से** गड़ना (65, 251); (च) उद्देश्यवाचक—**रक्षा के लिए** भेजना (72, 131), न **खाने को** कोई चीज़ मिली, न **पीने को** चाय-काफी (99, 172) और कुछ दूसरे।

वाक्य के स्तर पर प्रत्यक्ष, अधिक और अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारकों की संज्ञाएँ विभिन्न प्रकार्यों में प्रयुक्त होती हैं।

प्रत्यक्ष कारक की संज्ञाएँ निम्न प्रकार्यों में प्रयुक्त होती हैं : (1) उद्देश्य—**राम** आया है, अभी-अभी **शाम** हुई थी (49, 5); (2) कर्त्ता (विभिन्न वाक्यांशों में)—क्षमा···एक **महीना** हुआ यहाँ आयी थी (69, 6), रुक्मिणी की **याद** आते ही सियाराम घर की ओर चला (66, 189), बराबर **लड़ाई** होती रहने के कारण सिखों के तीन लाभ हुए (2, 209); (3) विधेय—राम **विद्यार्थी** है, यह मेरा स्वामी है (69, 18); (4) गौण (अप्रधान) विधेय तथा वाक्य के दूसरे अंगों के साथ विधेयवाचक अंग—**नींद** बनकर वह वासुकि नाग के भीतर मौजूद है (84, 19), ···उन्होंने जय और विजय को **राक्षस** हो जाने का श्राप दे दिया (84, 30); (5) परसर्गरहित प्रधान कर्म—सुजान **कड़बी** काट रहा था (70, 47), वह तो वहाँ के **गीत** सुनाता और **नाच** नाचता था (116, 29); (6) पूरक—और वह फीकी-सी **हँसी** हँसी (13, 56), आपने मुझे पहले दो बार बोर्ड का **मेम्बर** चुना) 19, 79), ···वह मुझे **चोर** भी समझती है (72, 139); (7) संज्ञा से समान धातुवाली क्रियाओं का परसर्गरहित गौण कर्म—और वह फीकी-सी **हँसी** हँसी (13, 56), मेरी तरह लाखों-करोड़ों गधे प्रतिदिन इसी तरह घास की महँगाई का **रोना** रोते हैं (27, 128); (8) संज्ञा-संलग्न विशेषण—प्रेम-लालसा (73, 69), शान्ति प्रयत्न (115, 73); (9) समानाधिकरण—श्रीमती घोष, छत्रपति शिवाजी, डॉक्टर सिन्हा, सिपाही आदमी (25, 62), जमींदार बाप (49, 120)।

इसके अतिरिक्त प्रत्यक्ष कारक की संज्ञा विश्लेषणात्मक नामबोधक संयुक्त क्रियाओं में व्यापार के अर्थपूरक के रूप में आती हैं, जैसे, वह जन्म-जन्मान्तर की बात **स्मरण** कर सकता है ···(39, 81), मैंने व्यापार आरम्भ किया था (139, 139), तथा परिमाणवाचक विशेषक शब्द-समुदाय के प्रथम घटक के रूप में आती हैं, जैसे, **एक सेर** घी (47, 109), **सात अदद** बच्चे (V, दीपावली विशेषांक, 1962, 40), **पचास बीघे** खेत (111, 21), चावल के **तीन-एक पाव**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाने (49, 113), जो वाक्य के स्तर पर एक संयुक्त अंग के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

साधक कारक की संज्ञाएँ केवल उद्देश्य के रूप में प्रयुक्त होती हैं।

अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक की संज्ञाएँ निम्न प्रकार्यों में प्रयुक्त होती हैं: (1) परसर्ग सहित प्रधान कर्म—उसने **रमानाथ** को देखा (65, 8), पद्मसिंह के जलसे ने इस **अग्नि** को भड़का दिया (72, 92); (2) गौण कर्म—अमीर ने **औलिया को** ऐसे ही आश्वासन भेज दिया था (4, 49), वह नटों से अधिक कंजर के **बच्चों** में खेलती···(103, 18), सो मैं प्यारे से तेरे **पाँव** में महावर रचवा दूँगी (103, 93); (3) विशेषण—**किसान का** घर (69, 11), **मुलतान का** खरीता (4, 70), **गर्भवाली** बहू (103, 9); **स्वाद में** खट्टा (50, 26); (4) विधेय—इनका शरीर बहुत बड़ा कोई **चार कोस** का था (84, 29), ···लोग छोटे लाट की दरबारदारी में जाते तो चुस्त पायजामा, शेरवानी, पेचदार पगड़ी और दिल्ली वाले **जूतों में** हुआ करते थे (49, 41); (5) पूरक—गोपी ने एक खटिक की दुकान पर बैठना **शान के खिलाफ** समझा (65, 234), वे उन्हें **बड़े भाई** अथवा **बाप सरीखा** समझती थीं (8, 51); (6) क्रियाविशेषण: (क) स्थानवाचक—आज दूसरा खत अपने **घर को** लिखो (69, 194); (ख) कालवाचक—बस अभी आध **घण्टे में** वहाँ पहुँच जाएँगे (15, 75); (ग) रीतिवाचक—जहाँ से वह **जल्दी में** चढ़ी थी···(103, 224), उद्देश्य-वाचक—साल में दो बार लड़के कलकत्ता से **छुट्टी में** घर आते···(119, 9); (घ) कारणवाचक—**लज्जा से** गड़ा जाता था (65, 251); (7) निर्णायक: (क) कर्तावाचक—**निर्मला को** सन्देह होने लगा···(66, 53), हमारे **नेताओं को** अफसोस यही है···(121, 54), ···आप **लोगों को** दुःख हो रहा है (143, 32); (ख) क्रियाविशेषणवाचक—**क्रान्ति के पूर्व** यूक्रेन में आबादी के बड़े और छोटे 13 प्रतिशत भूपतियों के कब्ज़े में 90 प्रतिशत कृषि भूमि थी (144, 143), **पूरब की ओर** झील लहरा रही थी (49, 31), उस **ज़माने में** तेरी बस्ती की आबादी इतनी ज़्यादा नहीं थी (49, 40)।

जैसा कि ऊपर अंकित था, हिन्दी में संश्लेषणात्मक और विश्लेषणात्मक रूप संज्ञाओं की कारकीय रूप-तालिका बनाते हैं। संश्लेषणात्मक रूप में प्रत्यक्ष कारक के रूप में प्रत्यक्ष कारक के रूप आ जाते हैं तथा विश्लेषणात्मक रूप में एक-दूसरे के समाकार साधक और अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारकों के रूप में आ जाते हैं। संश्लेषणात्मक और विश्लेषणात्मक रूप विभक्तिपूरक रूप-रचना के आधार पर बनते हैं।

कारकीय प्रणाली में होनेवाले विभक्तिपूरक रूप-परिवर्तन के अनुसार हिन्दी की सब संज्ञाएँ तीन श्रेणियों में विभक्त होती हैं: (1) विभक्ति बदलनेवाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञाएँ, (2) विभक्ति जोड़नेवाली संज्ञाएँ और (3) अविकारी संज्ञाएँ। इससे संज्ञाओं में तीन प्रकार की कारक-रचनाएँ मौजूद हैं: (1) प्रथम संज्ञार्थक, (2) द्वितीय संज्ञार्थक और (3) शून्य कारक-रचना।

प्रथम संज्ञार्थक कारक-रचना में हिन्दी की मूल (तद्भव) पुल्लिग संज्ञाएँ आ जाती हैं जो एकवचन के प्रत्यक्ष कारक में आकारान्त या आँकारान्त होती हैं।

अप्रत्यक्ष (विकृत) कारकों में प्रथम कारक-रचना की संज्ञाएँ एकारान्त या एँकारान्त हो जाती हैं।

बहुवचन के प्रत्यक्ष कारक में प्रथम कारक-रचना की संज्ञाएँ भी एकारान्त या एँकारान्त हो जाती हैं और बहुवचन के अप्रत्यक्ष कारकों में यह विभक्ति 'ओं' में बदल लेती हैं।

कारक वचन	प्रत्यक्ष	साधक	अप्रत्यक्ष परसर्गीय
एकवचन	लड़का	लड़के ने	लड़के को
बहुवचन	लड़के	लड़कों ने	लड़कों को
एकवचन	कुआँ	कुएँ ने	कुएँ को
बहुवचन	कुएँ	कुओं ने	कुओं को
एकवचन	भेड़िया	भेड़िये ने	भेड़िये को
बहुवचन	भेड़िये	भेड़ियों ने	भेड़ियों को

प्रथम कारक-रचना में क्रियार्थक संज्ञा की रूप-तालिका अपूर्ण होती है क्योंकि अपनी शाब्दिक-व्याकरणिक प्रकृति के अनुसार क्रियार्थक संज्ञा के बहुवचन रूप नहीं होते।

द्वितीय संज्ञार्थक कारक-रचना में पुल्लिग और स्त्रीलिंग की सब शेष विकारी संज्ञाएँ आ जाती हैं।

एकवचन के अप्रत्यक्ष कारकों में द्वितीय कारक-रचना की संज्ञाएँ शून्य विभक्ति अपना लेती हैं यानी अविकारी रह जाते हैं।

बहुवचन के प्रत्यक्ष कारक में पुल्लिग संज्ञाएँ शून्य विभक्ति अपना लेती हैं, परन्तु स्त्रीलिंग संज्ञाएँ '(य) याँ' और 'एँ' विभक्तियाँ अपना लेती हैं। इससे द्वितीय संज्ञार्थक कारक-रचना में पुल्लिग और स्त्रीलिंग कारक-रचनाएँ निकाली जा सकती हैं।

बहुवचन के अप्रत्यक्ष कारकों में द्वितीय कारक-रचना की संज्ञाएँ 'ओं' या '(य) ओं' विभक्तियाँ अपना लेती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुंल्लिग-कारक रचना

कारक वचन	प्रत्यक्ष	साधक	अप्रत्यक्ष परसर्गीय
एकवचन	मजदूर	मज़दूर ने	मज़दूर को
बहुवचन	मजदूर	मज़दूरों ने	मज़दूरों को
एकवचन	पिता	पिता ने	पिता को
बहुवचन	पिता	पिताओं ने	पिताओं को
एकवचन	गिरि	गिरि ने	गिरि को
बहुवचन	गिरि	गिरियों ने	गिरियों को
एकवचन	आदमी	आदमी ने	आदमी को
बहुवचन	आदमी	आदमियों ने	आदमियों को
एकवचन	केतु	केतु ने	केतु को
बहुवचन	केतु	केतुओं ने	केतुओं को
एकवचन	डाकू	डाकू ने	डाकू को
बहुवचन	डाकू	डाकुओं ने	डाकुओं को
एकवचन	दूबे	दूबे ने	दूबे को
बहुवचन	दूबे	दुबेओं ने	दुबेओं को
एकवचन	रेडियो	रेडियोने	रेडियो को
बहुवचन	रेडियो	रेडियोओं ने	रेडियोओं को
एकवचन	जो	जो ने	जो को
बहुवचन	जो	जोओं ने	जोओं को

जैसे कि तालिका से स्पष्ट है बहुवचन के अप्रत्यक्ष कारकों में द्वितीय पुंल्लिग कारक-रचना की ईकारान्त और उकारान्त संज्ञाएँ दीर्घ स्वर लघु में बदल लेती हैं। इकारान्त और ईकारान्त संज्ञाओं के अप्रत्यक्ष बहुवचन कारकों में अंत्य स्वर और कारकीय विभक्ति के बीच विशेष 'य' स्वर आ जाता है। अकारान्त संस्कृत तथा अरबी-फारसी शब्द प्रथम कारक-रचना की संज्ञाओं के अनुसार अपने रूप बदल सकते हैं परन्तु ऐसी कारक-रचना अव्याकरणिक हैं, जैसे, जब आप लोगों के **देवते** सो जाते हैं···(1, 491), ये **राजों** के राजा हैं (103, 462), **बैरों-खानसामों** से मुलाकात कर आया (15, 11), **खानसामे ने** ईश्वर को सलाम किया (157, 21)—तुलना कीजिए : चौधरी ने **खानसामा की** तरफ···देखा (69, 38)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकारान्त पुरुषवाचक व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ द्वितीय कारक-रचना के प्रतिरूप के अनुसार बदलती हैं, जैसे, रम्भा से मुलाकात (65, 137), मैं···**मल्होत्रा** का मुँह ताकने लगा (142, 27), खन्ना साहब के पास (15, 15), उसने **इसीला को** देखकर कहा (103, 38), यहाँ अपवाद बहुत कम मिलते हैं जैसे **रामदित्ते ने** इस लड़के को छोड़ दिया (70, 62)।

व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ जो कि भौगोलिक नाम हैं, नियम के रूप में द्वितीय कारक-रचना में आ जाती हैं हालांकि कुछ नाम प्रथम कारक-रचना के अनुसार बदल सकते हैं, जैसे, दूजा भी **कलकत्ते** से भाइयों के साथ चली (69, 257)।

'इया' प्रत्ययवाले प्रबल अधिकांश संज्ञाएँ प्रथम कारक-रचना में आती हैं लेकिन 'मुखिया' शब्द द्वितीय कारक-रचना के अनुसार अपना रूप बदलता है, जैसे, **मुखिया ने** कहा (69, 220)।

एकारान्त संज्ञाएँ बहुवचन के अप्रत्यक्ष कारकों में प्रथम कारक-रचना के अनुसार अपने रूप बदल सकती हैं, जैसे, दूबों ने, चौबों ने।

ओकारान्त संज्ञाएँ : बहुवचन के अप्रत्यक्ष कारकों में नासिकीकरण के ज़रिये इनके रूप बना सकते हैं, जैसे, रासो-रासों, रेडियो-रेडियों। बहुवचन के अप्रत्यक्ष कारकों में फोटो शब्द का अंत्य ओ उ में बदलता है, जैसे, फोटुओं ने, फोटुओं पर।

जिन शब्दों का बहुवचन अरबी या फारसी व्याकरण के नियमों के अनुसार बनाया गया है उनमें बहुवचन के अप्रत्यक्ष कारकों के अनावश्यक रूप देखे जा सकते हैं, जैसे, तूने **जवाहरातों** का लालच किया (25, 118), क्योंकि जहाँ पर बहुत्व के दो मार्कर ('आत' और 'ओं') देखे जा सकते हैं।

स्त्रीलिंग कारक-रचना

कारक वचन	प्रत्यक्ष	साधक	अप्रत्यक्ष परसर्गीय
एकवचन	औरत	औरत ने	औरत को
बहुवचन	औरतें	औरतों ने	औरतों को
एकवचन	माता	माता ने	माता को
बहुवचन	माताएँ	माताओं ने	माताओं को
एकवचन	राशि	राशि ने	राशि को
बहुवचन	राशियाँ	राशियों ने	राशियों को
एकवचन	लड़की	लड़की ने	लड़की को
बहुवचन	लड़कियाँ	लड़कियों ने	लड़कियों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकवचन	वस्तु	वस्तु ने	वस्तु को
बहुवचन	वस्तुएँ	वस्तुओं ने	वस्तुओं को
एकवचन	बहू	बहू ने	बहू को
बहुवचन	बहुएँ	बहुओं ने	बहुओं को
एकवचन	चिड़िया	चिड़िया ने	चिड़िया को
बहुवचन	चिड़ियाँ	चिड़ियों ने	चिड़ियों को
एकवचन	गौ	गौ ने	गौ को
बहुवचन	गौएँ	गौओं ने	गौओं को

जैसे कि तालिका से स्पष्ट है द्वितीय स्त्रीलिंग कारक-रचना की ईकारान्त या उकारान्त संज्ञाएँ बहुवचन के प्रत्यक्ष कारक में तथा अप्रत्यक्ष कारकों में दीर्घ स्वर लघु में बदल लेते हैं। इकारान्त और ईकारान्त संज्ञाओं के अप्रत्यक्ष बहुवचन कारकों में अंत्य स्वर और कारकीय विभक्ति के बीच विशेष 'य' स्वर आ जाता है। 'इ या' प्रत्ययवाली संज्ञाएँ स्वर के नासिकीकरण के ज़रिये बहुवचन का प्रत्यक्ष कारक बनाती हैं, परन्तु इनके बहुवचन के अप्रत्यक्ष कारकों के रूप 'भेड़िया' जैसी प्रथम कारक-रचना की संज्ञाओं के प्रतिरूप बनते हैं।

'भौं' संज्ञा एकवचन तथा बहुवचन के अप्रत्यक्ष कारकों के रूप तथा बहुवचन के प्रत्यक्ष कारक का रूप दो तरीके से बना लेती हैं: (1) नासिकीकरण को छोड़कर—भौं-भौएँ-भौओं तथा 'व' में स्वर को बदलकर—भौं-भवें-भवों को।

ऐकारान्तक की हिन्दी की दो-एक संज्ञाएँ ('कै', 'जै') पुल्लिग कारक-रचना के अनुसार बदलती हैं क्योंकि इनके बहुवचन के प्रत्यक्ष कारक के रूप नहीं हैं।

प्रथम और द्वितीय कारक-रचना की कुछ संज्ञाओं का बहुवचन का प्रत्यक्ष कारक अप्रचलित 'ओं' विभक्ति से बन सकता है, जैसे, महीनों नहीं वर्षों लग जाएँगे (49, 49)। इन शब्द-रूपों से लुप्त परसर्ग वाले समाकार रूपों को अलग करना चाहिए। हिन्दी में परसर्ग का लोप भाषाई प्रयोग से प्रतिबन्धित है और यह लोप विकल्पी और प्रचलित हो सकता है।

विकल्पी लोप होते समय जो नियम के रूप में कालवाचक और स्थानवाचक क्रियाविशेषण वाक्यांश मिलता है। यह परसर्ग आसानी से पुनः निर्मित हो सकता है: (1) इसके आगे लगे रूपात्मक मार्कर के सहारे—**अगले साल** ऐसा हुआ कि··· (49, 22), हवा में **उन दिनों** एक अजीब सुगन्ध भर उठी थी (49, 58), स्वराज्य **हमारे दरवाज़े** खड़ा है। (49, 95); (2) तुल्यरूपता के सहारे—**महीनों** इसी का बखान चलता रहा (49, 52) और **महीनों** तक चण्डी-पाठ किये (49, 51), **दरवाज़े** आये पाहुने को (96, 55) और मैं तो **तुम्हारे कमरे पर** गया था (19, 10)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परसर्ग का प्रचलित लोप आता है: (1) विभिन्न प्रचलित मुहावरेवार रचनाओं में—**आँखों देखा** तमाशा (49, 105), आप **भूखों मरते** हैं (71, 153); (2) आश्रित घटक के रूप में प्रयुक्त निश्चित संख्यावाचक संज्ञा समेत शब्द-समुदायों में—**ढेरों रुपये** लाकर (25, 103), **कोड़ियों** शिकायतें (54, 100), बीसियों बस्तियाँ (49, 110), **सेरों** बह गया (103, 180), **हज़ारों** वर्ष पुरानी बात (49, 67); आश्रित घटक के रूप में प्रयुक्त कालवाचक या परिमाणवाचक संज्ञाओं समेत विशेषणवाचक शब्द-समुदायों में—एक **सौ साल** पुरानी शराब (143, 13), छः **फुट** तीन इंच लम्बा आदमी (16, 14); (4) प्रधान घटक के रूप में प्रयुक्त संस्कृत कृदन्तपरक विशेषण समेत विशेषणवाचक शब्द-समुदायों में—**राधाकृष्ण दास** कृत 'दुःखिनी बाला', वेश्याभक्त मित्र (72, 40); (5) 'संज्ञा+कृदन्त+संज्ञा'-रूपी तीन घटक वाले संज्ञार्थक शब्द-समुदायों में जिनमें कृदन्त से आश्रित संज्ञा परसर्गरहित आता है—रत्नों-भरी लहरें (28, 67), कोना मुड़े पन्ने (52, 17), हीरे जड़ा तख़्त (25, 81)।

शून्य विभक्ति वाली कारक-रचना

कारक वचन	प्रत्यक्ष	साधक	अप्रत्यक्ष परसर्गीय
एकवचन	कोदों	कोदों ने	कोदों को
बहुवचन	कोदों	कोदों ने	कोदों को
एकवचन	सरसों	सरसों ने	सरसों को
बहुवचन	सरसों	सरसों ने	सरसों को

इसी शून्य कारक-रचना में संक्षिप्त शब्द भी आते हैं, जैसे, प्रसोपा, संसोपा, यूनेस्को, भाकपा, सो. सं., ज. ज. ग. इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वनामिक संज्ञा

सार्वनामिक संज्ञाओं की मुख्य विशेषता इनके अर्थ का अत्यन्त सामान्यीकरण हैं, जिससे वे किसी भी पुरुष या किसी भी भाववाचक तथा अप्राणिवाचक द्रव्य को सूचित कर सकती हैं। सार्वनामिक संज्ञाओं का व्याकरणिक अर्थ वचन तथा कारक के संवर्ग में आ जाता है तथा वाक्य-विन्यास के आधार पर लिंग के शाब्दिक-व्याकरणिक संवर्ग में।

हिन्दी में सार्वनामिक संज्ञाओं के छ: भेद हैं: (1) पुरुषवाचक—मैं, तू (बहुवचन— हम, तुम) तथा आदरसूचक आप; (2) पुरुषवाचक-निश्चयवाचक—यह, वह (बहुवचन—ये, वे); (3) निजवाचक—आप; (4) प्रश्नवाचक—कौन, क्या; (5) सम्बन्धवाचक—जो; (6) अनिश्चयवाचक—कोई, क्या।

पुरुषवाचक सर्वनाम केवल व्यक्ति को सूचित करता है और इसलिए वह संज्ञा के बदले में नहीं आ सकता। व्यक्ति को सूचित करते हुए सब शेष सर्वनाम भी संज्ञा के बदले में नहीं आ सकते। किसी भी द्रव्य को सूचित करते हुए (चाहे वह अप्राणिवाचक तथा प्राणिवाचक हो परन्तु पुरुषवाचक न हो) ये सर्वनाम संज्ञा के बदले में आ सकते हैं।

इस बात पर जोर देना चाहिए कि पुरुषवाचक सर्वनाम को छोड़कर सब सर्वनाम सार्वनामिक विशेषण की श्रेणी में आ सकते हैं। तब वे द्रव्य ही नहीं वरन् द्रव्य का लक्षण सूचित करते हैं, जिसके बारे में एक विशिष्ट अध्याय में लिखा जाएगा।

वचन के साथ होनेवाले सम्बन्ध के अनुसार सार्वनामिक संज्ञाएँ दो श्रेणियों में विभक्त होती हैं: (1) वे सर्वनाम जिनके एकवचन तथा बहुवचन के तुलनात्मक रूप हैं (मैं-हम, तू-तुम, यह-ये, वह-वे) और (2) वे सर्वनाम जिनके तुलनात्मक रूप नहीं होते। वचन में सर्वनामों का विरोध संज्ञाओं के ऐसे ही विरोध से भिन्न हैं क्योंकि सर्वनामों के बहुवचन रूप एक ओर से सार्वदेशी हैं तथा दूसरी ओर हम सर्वनाम यह सूचित नहीं करता कि एक से अधिक 'मैं' (बोलने वाले) मौजूद हैं बल्कि यह सूचित करता है कि वक्ता कुछ और व्यक्ति के साथ (व्यक्तियों के साथ) मौजूद है, जैसे, और हम दोनों तूरैया और मैं···(69, 205)। इसी तरह 'तुम'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मैं', 'तू' और 'वह' आ सकते हैं। इसके अतिरिक्त चाहे हम चाहे तुम, चाहे आप एक ही व्यक्ति को सूचित करने के लिए प्रयुक्त हो सकते हैं। संज्ञाओं जैसा वचन में होनेवाला विरोध वास्तव में केवल 'यह' और 'वह' सर्वनामों में मौजूद है जिनके बहुवचन के रूप नियमित ढंग से बनते हैं और जो अनेक सजातीय व्यक्तियों या पदार्थों को सूचित करते हैं हालाँकि वे एक ही व्यक्ति तथा पदार्थ को सूचित कर सकते हैं।

शेष सर्वनाम गो कि इनका केवल एकवचन का रूप है। कुछ व्यक्तियों और पदार्थों को सूचित करते हैं जैसे, कोई रोते थे (69, 155), कुछ कहते थे (73, 26)।

कारक के साथ होनेवाले सम्बन्ध के अनुसार सर्वनाम विकारी और अविकारी में विभक्त हैं। 'कोई' सर्वनाम को छोड़कर बाकी विकारी सर्वनामों की चार कारकीय रूप-रचना हैं जिसमें प्रत्यक्ष, साधक, अप्रत्यक्ष परसर्गीय और कर्मकारक आते हैं। इसके साथ-साथ पुरुषवाचक तथा कोई सर्वनामों को छोड़कर सभी शेष सर्वनामों का बहुवचन के साधक कारक के लिए एक विशिष्ट विभक्तिपरक रूप हैं। 'कोई' सर्वनाम की तीन कारकीय रूप-रचना हैं जिसमें कर्मकारक नहीं है। 'क्या', 'कुछ' तथा 'आप' सर्वनाम अधिकारी हैं। यहाँ इस बात पर जोर देना है कि अनेक सर्वनामों के अप्रत्यक्ष कारकों के वस्तुवाचक रूप सार्वदेशी रूपों से बने हैं।

प्रथम सार्वनामिक कारक रचना

कारक वचन	प्रत्यक्ष	साधक	अप्रत्यक्ष परसर्गीय	कर्म
एकवचन	मैं	मैंने	मुझको	मुझे
बहुवचन	हम	हमने	हमको	हमें
एकवचन	तू	तूने	तुझको	तुझे
बहुवचन	तुम	तुमने	तुमको	तुम्हें
एकवचन	वह/यह	उस/इसने	उस/इसको	उसे/इसे
बहुवचन	वे/ये	उन्हों/इन्होंने	उन/इनको	उन्हें/इन्हें
एकवचन	कौन	किसने	किसको	किसे
बहुवचन	कौन	किन्होंने	किनको	किन्हें
एकवचन	जो	जिसने	जिसको	जिसे
बहुवचन	जो	जिन्होंने	जिनको	जिन्हें

जैसे कि तालिका से स्पष्ट है, पुरुषवाचक सर्वनामों का बहुवचन सार्वदेशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपों से बना है। पुरुषवाचक निश्चयवाचक सर्वनामों का बहुवचन का एक विशिष्ट रूप हैं। शेष सब सर्वनामों का एकवचन तथा बहुवचन के प्रत्यक्ष कारक का रूप एक ही हैं।

'हम' और 'तुम' बहुवचन के पुरुषवाचक सर्वनामों को छोड़कर शेष सभी सर्वनामों का अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक का परिवर्तित वस्तुवाचक रूप है, इसके साथ-साथ 'वह', 'यह', 'कौन', 'जो' सर्वनामों के रूप सार्वदेशी रूपों से बने हैं।

पुरुषवाचक सर्वनामों को छोड़कर सभी सर्वनामों के साधक कारक का बहुवचन 'ही' विभक्ति वाला विशेष रूप अपना लेता है जो इन सर्वनामों के अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक के बहुवचन के रूप से लगाते हैं: 'उन्-हों', 'इन्-हों', 'जिन्-हों'।

सर्वनामों के साधक और अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक विश्लेषणात्मक हैं जबकि कर्मकारक संश्लेषणात्मक हैं जो अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक के रूपों से एकवचन के लिए 'ए' विभक्ति तथा बहुवचन के लिए 'हम' सर्वनाम को छोड़कर 'हैं' विभक्ति जुड़ने से बनते हैं। सर्वनामों के अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक के परसर्ग संज्ञाओं के इसी कारक के विपरीत लुप्त कभी नहीं होते। सर्वनामों का कर्मकारक सदा परसर्गरहित है।

द्वितीय सार्वनामिक कारक-रचना

कारक / वचन	प्रत्यक्ष	साधक	अप्रत्यक्ष परसर्गीय
एकवचन और बहुवचन	कोई	किसी ने	किसी को

जैसा कि ऊपर लिखा है 'क्या' सर्वनाम अविकारी है। परन्तु बोलचाल की जबान में विशेष कर जन-साधारण की भाषा में व्रज से गृहीत 'काहे' रूप मिल सकता है (दे. 17, 309), जो अप्रत्यक्ष परसर्गीय में प्रयुक्त होता है, जैसे, काहे में लगेगी (रकम) (103, 422), बीमार पड़े मेरी सौत ! मैं काहे को पड़ूँ ? (103, 97), काहे से नीच है (103, 164)।

प्रत्यक्ष कारकों के सामान्य रूपों के साथ-साथ पुरुषवाचक, पुरुषवाचक निश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक 'जो' तथा प्रश्नवाचक 'कौन' सर्वनामों के एक विशिष्ट अवधारक रूप हैं जो सर्वनाम से 'ही' अवधारक निपात लगाने से बनते हैं। यह निपात नियम के अनुसार सर्वनामों के अप्रत्यक्ष कारकों के रूपों से मिलकर एक हो जाता है। अवधारक सर्वनामों के सिर्फ दो अप्रत्यक्ष कारक—साधक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रत्यक्ष परसर्गीय हैं। कर्मकारक बाकी अप्रत्यक्ष कारकों के अवधारक रूपों से अपने ध्वनिक आवरण के मिलने-जुलने के कारण यहाँ प्रकट नहीं होता।

कारक वचन	प्रत्यक्ष	साधक	अप्रत्यक्ष परसर्गीय
एकवचन	मैं ही	मैं ही ने	मुझे ही को
बहुवचन	हम ही	हमीं ने	हमीं को
एकवचन	तू ही	तू ही ने	तुझी को
बहुवचन	तुम ही	तुम्हीं ने	तुम्हीं को
एकवचन	यही	इसी ने	इसी को
बहुवचन	ये ही	इन्हीं ने	इन्हीं को
एकवचन	वही	उसी ने	उसी को
बहुवचन	वे ही	उन्हीं ने	उन्हीं को
एकवचन	कौन ही	किस ही ने	किस ही को
बहुवचन	कौन ही	किन्हीं ने	किन्हीं को
एकवचन	जो ही	जिस ही ने	जिस ही को
बहुवचन	जो ही	जिन्हीं ने	जिन्हीं को

जैसा कि तालिका से स्पष्ट है केवल 'मैं' और 'तू' सर्वनामों के साधक कारक के रूप अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक से भिन्न हैं, उनके साधक कारक के रूप प्रत्यक्ष कारक के रूपों के बराबर हैं। कुछ सर्वनामों के साथ 'हीं' या 'ई' प्रत्यय जोड़ते हैं, जैसे, 'हम-हमीं', 'यह-यही'।

सार्वजनिक संज्ञाओं के लिंग-रूप नहीं होते इसलिए वे किसी भी लिंग का अर्थ ले सकती हैं। पुरुषवाचक सर्वनामों का लिंग इनसे सूचित करने वाले व्यक्ति के लिंग से निश्चित होता है। किन्तु पूर्ण शुद्धता के साथ यह एकवचन के 'मैं' और 'तू' के बारे में कहा जा सकता है। बहुवचन के 'हम' और 'तुम' सर्वनामों में, जो एक साथ दोनों लिंगों के व्यक्तियों को सूचित करते हैं, लिंग-अस्थिरता आ जाती है। ऐसे में वे नियम के रूप में पुल्लिग बहुवचन का अर्थ व्यक्त करते हैं जैसे, काजरी काँप गयी, मैं भी डर गया···**हम भाग चले** (103, 129)। जो भी 'हम' और 'तुम' सर्वनामों के बारे में लिखा गया है वह 'आप' सर्वनाम के सम्बन्ध में सही है। पुरुषवाचक सर्वनामों के लिंग का अर्थ प्रसंग से या वाक्य में जाना जाता है। यानी अन्वित विशेषण तथा कृदंत के रूप से, जैसे, इण्टर में पढ़ने वाला मैं इस गूढ़ विषय **पर अपनी क्या** राय देता (107, 45), मैं **अकेला** उसका पीछा कर **रहा** था (69, 185), तू भूखा है न? (103, 123)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषवाचक-निश्चयवाचक सर्वनाम के लिंग-रूप भी नहीं होते। इनका लिंग दो तरीके से निश्चित किया जाता है : (क) व्यक्ति को सूचित करते समय इस व्यक्ति के लिंग से तथा (ख) पदार्थ को सूचित करते समय इससे प्रतिस्थापित संज्ञा के लिंग से। पुरुषवाचक-निश्चयवाचक सर्वनामों के लिंग का अर्थ प्रसंग से या वाक्य में जाना जाता है, जैसे···किवाड़ बन्द **करती हुई** वह भीतर **आयी**···(107, 109), **यह** वही **रमणी** थी (69, 194), **वे हीरे** ! **वे मोती** ! **वे** डाकू को विचलित कर रहे थे (103, 353), वह जो मेरे हाथ में **निशान** है **वही** बतला रहा है··· (69, 202)।

'जो' सम्बन्धवाचक सर्वनाम व्यक्ति-विशेष या पदार्थ विशेष को सूचित करते समय व्यक्ति का लिंग-भेद तथा प्रतिस्थापित पदार्थ का लिंग अपना लेता है जो प्रसंग से या वाक्य में जाना जाता है, जैसे, तुम **जो** घूस के **रुपये** खाते हो···(69, 72),···सैकड़ों **स्त्रियाँ जो** हर रोज़ बाज़ार में···दिखायी देती हैं (72, 160), उन **बैठकों** के पास से जा रहा था, **जो** बाजार में खुलती थीं···(17, 130)। शेष प्रयोगों में विशेषणों तथा कृदंतों के अन्वित रूप पुल्लिग में आते हैं, जैसे, मुझे भी **वही हुआ जो** तुम्हें **हुआ** है (69, 77), **जो** तुमने **बताया यह** तो सभी का काम है···(108, 59)।

'कौन' प्रश्नवाचक सर्वनाम किसी व्यक्ति-विशेष को सूचित करते समय इस व्यक्ति का लिंग-भेद अपना लेता है, जैसे, तू **मेरी कौन** है ? (103, 724), **कौन तेरा** बाप है और **कौन** तेरी माँ है (69, 203) ! किसी अनिश्चित व्यक्ति को सूचित करते हुए कौन पुल्लिग का अर्थ अपना लेता है, जैसे, न जाने **कौन** मेरे हृदय में **बैठा हुआ** कह **रहा था**···(69, 203), किसी ने भीड़ में से चिल्लाकर कहा···. '**कौन बोला**' खचेरा चिल्लाया (103, 702), अब तुम इस घर में नहीं रह सकतीं ···इस घर में जहाँ तुम हो, रहना ही **कौन चाहता** है माँ (59, 83)।

'क्या' प्रश्नवाचक सर्वनाम नियम के रूप में पुल्लिग का अर्थ अपना लेता है, जैसे, फिर **क्या हुआ** ? (103, 405), अगर वह ऐसा सोचता है तो **क्या बुरा** करता है ! (59, 91)।

अगर विधेय 'क्या' सर्वनाम से स्त्रीलिंग में अन्वित है तो यह स्त्रीलिंग की किसी भी संज्ञा के लोप का प्रमाण है (मुख्यत: 'बात' शब्द इसमें आता है) जैसे, दीना की बहू ने कहा : 'किस्मत की **बात** है', 'सो तो है ही', 'भला बताओ', 'अरे **क्या थी क्या** हो **गयी**', 'यों न कहेगी भाभी कि क्या हुई और फिर क्या हो गयी।' (103, 263), तो मुझे **क्या पड़ी** है कि···(66, 68)।

'कोई' अनिश्चयवाचक सर्वनाम किसी व्यक्ति विशेष को सूचित करते समय इसी का लिंग-भेद अपनाता है, जैसे, **कोई** उसका **मित्र** न **था** (65, 277), इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीड़ में काजरी और प्यारी ही थीं। क्या बात हुई, अभी तक कोई कहीं **आ सकी**? (203, 390)।

अनिश्चित व्यक्ति को सूचित करते हुए 'कोई' पुल्लिग का अर्थ अपना लेता है, जैसे, आह! करके **कोई चिल्लाया** और **गिरा** (103, 381), भय सारी बुराइयों की जड़ है, इसे मन से निकाल डालो, फिर तुम्हारा कोई कुछ नहीं कर **सकता** (71, 158), खिड़की के सामने **कोई खड़ा** था। उसने ध्यान से देखा। यह तो **औरत** है (65, 245)।

'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनाम नियम के रूप में पुल्लिग का अर्थ अपना लेता है, जैसे, वहाँ **कुछ पड़ा हुआ** है (25, 118), चाचा के पास अब कुछ न रहा (69, 212), इसमें **इसका कुछ बनता-बिगड़ता** नहीं था। (103, 425)।

'आप' निजवाचक सर्वनाम उस व्यक्ति या पदार्थ का लिंग अपना लेता है जिससे वह सम्बद्ध है।

यह भूलना नहीं चाहिए कि लिंग का वाक्यात्मक अर्थ विशेषणवाचक तथा विधेयवाचक विकारी रूपों में जाना जा सकता है, क्रिया के सिद्धान्तों, रूपों में सर्वनामों का लिंग वाक्यात्मक ढंग से स्पष्ट नहीं होता, जैसे, **मैं चलूँ**। (103, 391), वह चाहती थी कि मुझे कोई न छेड़े, कोई न बोले। (65, 297)।

सर्वनामों के प्रयोग की विशेषताएँ और वाक्य में इनके प्रकार्य

पुरुषवाचक सर्वनाम—एकवचन उत्तम पुरुष का 'मैं' सर्वनाम तब प्रयुक्त होता है जब वक्ता या लेखक अपने ही बारे में कुछ विधान करता है, जैसे, मैंने पूछा—क्या तुमको यह गाना पसन्द है? (69, 133)।

मध्यम पुरुष का एकवचन 'तू' तथा बहुवचन 'तुम' सर्वनाम तब प्रयुक्त होते हैं जब किसी व्यक्ति (व्यक्तियों) को सम्बोधन किया जाता है।

हिन्दी में 'तू' सर्वनाम का विशिष्ट प्रयोग है और यह एकवचन मध्यम पुरुष का सर्वसामान्य सर्वनाम नहीं है। वह मुख्यतः नीचे लिखे अर्थों में प्रयुक्त होता है: (क) छोटे बच्चों को सम्बोधन के लिए—नहीं, तू मेरा बेटा नहीं है (103, 16); (ख) निकट सम्बन्धियों को सम्बोधन के लिए—तू मेरा आदमी है (103, 27), तू मेरा भाई है (69, 201); (ग) चेलों को सम्बोधन के लिए—'चल बेटा'—उस्ताद ने रहीम को ललकारा,—साज़ ताँगे में रख दे। तू चलेगा न? (58, 4); (घ) सामाजिक व्यवस्था तथा अधिकार में छोटे लोगों को सम्बोधन के लिए—राजा ने कहा—'''तू मेरे कहने पर चलेगा (103, 389), रुस्तम खाँ ने कहा, 'काम कर सकेगा'?—'क्या सरकार'?—'तू कुछ दवा-दारू जानता है'? (103, 206); (च) तिरस्कार या अपमान समेत सम्बोधन के लिए—**अरे तू** राजा हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया कुत्ते (103, 106), तू कौन होता है उन्हें लिवा जाने वाला ! (83, 143); (छ) देवता को सम्बोधन के लिए—तू दुःख न कर, भगवान (83, 128); (ज) पशुओं को सम्बोधन के लिए—तू भूखा है न (घोड़ा) ? (103, 123); (झ) भावावेश की स्थिति में सम्बोधन के लिए—माता तू धन्य है ! (70, 19)। इस पर जोर देना चाहिए कि प्रायः इन सभी अर्थों में बहुवचन का मध्यम पुरुष 'तुम' सर्वनाम प्रयुक्त हो सकता है, जैसे (क) बच्चों को सम्बोधन के लिए—क्यों बेटे, तुमने ली तो नहीं ? (44, 53); (ख) निकट सम्बन्धियों को सम्बोधन के लिए—सुधा (पति से)—तुमने यह बड़ा भारी अन्याय किया है (66, 123), अब तुम इस घर में नहीं रह सकतीं···इस घर में, जहाँ तुम हो, रहना ही कौन चाहता है माँ (59, 83); (ग) सामाजिक अवस्था में छोटे लोगों को सम्बोधन के लिए—'तुम बोलो, तुम क्या चाहती हो ?' मेम ने पूछा (103, 473), 'हुजूर', —दारोगा ने झुककर कहा, 'हुक्म !'—'तुम जाओ !' (103, 472); (घ) पशुओं को सम्बोधन के लिए—बहिन, तुम बेवफाई क्यों करती हो ? सेठ को अपना दूध क्यों नहीं देती हो ? (44, 124)। यों यह कहा जा सकता है कि 'तू' का विशिष्ट प्रयोग शैली से सीमित है।

'तुम' सर्वनाम हिन्दी में मध्यम पुरुष का मुखिया शैली की दृष्टि से निरपेक्ष सर्वनाम है जिसके प्रयोग आयु, अवस्था आदि में बराबर होनेवाले सहभाषी को तथा छोटों को बड़ों के सम्बोधन के लिए होता है—(वृद्ध महापुरुष ने) कहा, 'प्रतापी सुल्तान महमूद !' तुम आजाद हो दोस्त (4, 142), हम और तुम पुराने दोस्त हैं (69, 156), गुरु जी—तुम बहुत होशियार लड़के हो (59, प्रवेशिका, 23), बच्चे ने पूछा, 'तुम्हें क्या चीज़ चाहिए ?' (25, 56), 'तुम' का प्रयोग बड़ों द्वारा छोटों के सम्बोधन के लिए भी होता है, जैसे, पण्डित महाराज ! तुम यह सब मेरे मन की कैसे जान गये ? (103, 377), नहीं राजा जी ! तुम झूठ कहते हो ! (103, 408)। जन-साधारण की भाषा में अपरिचित या कम परिचित लोगों को सम्बोधित करने के लिए 'तुम' मुख्य सर्वनाम है, जैसे, मैकू ने स्वयंसेवक से कहा—तुम उठ जाओ (69, 62), अब दारोगा ने नायक को डाँटना शुरू किया—तुम किसके हुक्म से इस गाँव में आये ? (69, 73)।

'तुम' का प्रयोग विशिष्ट शैलीगत प्रसंग में भी हो सकता है, जैसे, तुम ! तुम नये साहित्य को पढ़ते हो। लो इसे भी पढ़ो। जीवन उतना ही नहीं है जितना तुम समझते हो (103, 10), इस प्रयोग से यह अधिक स्पष्ट हो जाता है कि 'तू' और 'तुम' सर्वनाम एक दूसरे के बदले आ सकते हैं लेकिन 'तुम' का प्रयोग कहीं अधिक होता है।

जैसे कि ऊपर दिये उदाहरण से स्पष्ट है 'तुम' का प्रयोग बहुवचन के अपने मुख्य अर्थ में होता है, जैसे, तुम दोनों स्त्रियाँ नहीं जानती हो कि तुम क्या कर रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो (28, 12), तुम सब भाइयों को मैंने बहुत सताया है (69, 77)। बहुवचन के अर्थ में प्रयुक्त होते वक्त 'तुम' के साथ बहुत्व के बोध के लिए 'लोग' जुड़ते हैं, जैसे, तुम लोग हट जाओ (69, 74), तुम लोगों को आगे जाने का हुक्म नहीं है (69, 50)।

मध्यम पुरुष के रूप में निजवाचक 'आप' सर्वनाम आ सकता है जो एक या अनेक व्यक्तियों को सूचित करता है। 'आप' का प्रयोग गति आदरसूचक तथा औपचारिक सम्बोधन के लिए होता है। पहले 'आप' का प्रयोग बड़े सरकारी पदाधिकारियों को सम्बोधन करते समय होता था। अब इस सर्वनाम का प्रयोग विस्तृत हो गया है और वह सबसे ज़्यादा प्रचलित आदरसूचक तथा औपचारिक सम्बोधन हो गया है, जैसे, सरदार साहब से पूछा—क्यों, क्या आप उसे जानते हैं? (69, 187), मालिक तो सरदार आप हैं (103, 375), ज़िन्दा पति को कभी 'तुम' और कभी 'आप' कहकर सम्बोधित करती थी (75, 135), भाइयो! आपने आज हम लोगों का जो आदर-सत्कार किया···(69, 70), इतने बड़े आर्डर पर आपने विशेष कमीशन के लिए लिखा। यह तो हम आपके न लिखने पर आपको अवश्य काटते (92, 283), हे विश्वेश्वर! आप इस जगत के पिता और गुरु से भी बड़े हैं (130, 206)।

अनेक व्यक्तियों को सम्बोधित करते समय 'आप' का प्रयोग बहुत्व के बोध के लिए 'लोग' शब्द के साथ होता है, जैसे, भाइयो, महात्मा गांधी का हुक्म है कि आप लोग ताड़ी-शराब न पियें (69, 75)।

उत्तम पुरुष बहुवचन का सर्वनाम कुछ व्यक्तियों को सूचित करता है जिनमें बोलनेवाला भी आता है, जैसे, और हम दोनों तूरैया और मैं···(69, 285), हम और तुम उन महात्माओं की सन्तान हैं जिन्होंने दुनिया को सिखाया, जिन्होंने दुनिया को आदमी बनाया। हम अपना धर्म छोड़ बैठे उसी का फल है कि आज हम गुलाम हैं···(69, 35)।

'हम' में बोलनेवाले के प्रवेश से यह सम्भव हो जाता है कि उसका प्रयोग केवल अकेले बोलनेवाले ही को सूचित करने के लिए होने लगता है। ऐसा प्रयोग नीचे दिये अर्थों में होता है—(क) लेखक के कथन में···जैसे, इस ग्रन्थ में उदाहरण··· विद्वानों के लेख से लिये गए हैं। अतः हम उनके बड़े ही ऋणी हैं (136, ख), हमने कहा: 'हमको आपके ऊपर फ़ख्र है···(144, 72), (ख) राजाओं, उच्चाधिकारियों आदि के कथन में, जैसे, सुलतान फीरोज़ : 'हमने हुक्म दिया था?' (113, 36), दारोगा जी ने कहा: 'हम तो खाते हैं···' (103, 155), साहब—ओ! तुम हमको बेवकूफ बनाता है? (69, 27), (ग) जन-साधारण के कथन में, विशेषकर परिवारों तथा गाँवों के मुखियों के कथन में, जैसे, खन्ना साहब हसनदीन से बोले, 'हम तुम्हारे ही घोड़े पर आगे भी जाएँगे हसनदीन।' (15, 24),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोदई (चौधरी) ने मुस्कुराकर कहा—हम किसी से कहेंगे नहीं, सच कहते हैं, भाभी ! (69, 67); (घ) स्त्रियों के कथन में, विशेषकर अनपढ़ स्त्रियों के कथन में, जैसे, स्त्री कहती चली गयी—और देखा, हमें यहाँ अकेले छोड़े जा रहे हैं। अरे, हम घर कैसे जायेंगे ? (96, 79), 'हम नहीं मरते', उस अधेड़ औरत ने कहा : 'भैया, क्योंकि हम रोज पाप करते हैं' (103, 372), (च) उपहासात्मक या व्यंग्यपूर्ण कथन में, जैसे, बुआ ने कहा कि अच्छा बेटा, अबके जन्मदिन को तुझे भी बाइसिकल दिलवायेंगे। आशा बाबू ने कहा कि हम तो अभी लेंगे। बुआ ने कहा, 'छिः-छिः, तू कोई लड़की है ?' ज़िद तो लड़कियाँ किया करती हैं···आसुतोष बाबू ने कहा कि तो हम बाइसिकल जरूर लेंगे जन्मदिन वाले रोज़ (44, 49-50)।

अन्य बहुवचन सर्वनामों की तरह 'हम' के साथ बहुत्व के बोध के लिए 'लोग' शब्द लगा देते हैं, जैसे, सरकार चाहती है कि हम लोग खूब शराब पीयें (69, 36)।

शब्द-समुदाय के स्तर पर पुरुषवाचक सर्वनाम निम्नलिखित सम्बन्ध व्यक्त कर सकते हैं : (1) कर्मवाचक—मैं **तुम्हें** अपना सारा घर दिखाये देती हूँ (44, 57); **मुझमें** इतनी सामर्थ्य कहाँ थी कि···(72, 171), **मुझ पर** इतनी दया की है (103, 62); (2) कर्तावाचक—फिर उसका रोना **तुमसे** कैसे देखा जायेगा (28, 12), उस दिन ना **मुझसे** खाया गया न कुछ पीया ही गया (69, 193), (3) कर्तावाचक-कर्मवाचक—**तुझे** मुझसे घिन्न हो गयी है (103, 77), बड़ी मुश्किल और पशोपेश में पड़ जाना पड़ता है **मुझे** (69, 36); (4) विशेषण-वाचक—**तुझ-सा** सलाहकार पाकर मैं धन्य हो गया (143, 10), इसे **तुम-जैसों** के घर जन्म लेना था (103, 62)।

वाक्य के स्तर पर पुरुषवाचक सर्वनाम वाक्य के निम्न अंगों के रूप में प्रयुक्त होते हैं : (1) उद्देश्य—मैं चलूँ (103, 381), तू नशे में है (103, 395); (2) प्रधान कर्म—चलो बहन जी, मैं तुम्हें अपना सारा घर दिखाये देती हूँ (44, 57), स्वामी जी ने हमेशा मुझे अविश्वास की दृष्टि से देखा···(66, 214); (3) गौण कर्म—मेरी उमर तुमसे कहीं ज्यादा है···(66, 159), जानू को मुझसे प्रेम है··· (24, 70), (4) कर्तावाचक निर्णायक—तुम्हें तो चाहिए··· (69, 72), भगवान ने दिया होता, तो तुम्हें कहना न पड़ता (69, 67), (5) विशेषण—तुम जैसा चालाक प्रेमिकाओं की चिट्ठियों के अभाव में मर रहा है (143, 20), तुझ-सा सलाहकार पाकर मैं धन्य हो गया (143, 10); (6) विधेय—मालिक तो सरदार आप हैं (103, 375)।

पुरुषवाचक-निश्चयवाचक सर्वनाम : जैसा कि ऊपर अंकित था 'यह', 'वह', 'ये', 'वे' व्यक्ति तथा पदार्थ को सूचित कर सकते हैं। इसमें 'वह' तथा 'ये' का प्रयोग अधिकतर पुरुषवाचक सर्वनाम के रूप में होता है जबकि 'यह' तथा 'ये'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यादातर निश्चयवाचक सर्वनाम जैसे प्रयुक्त होते हैं। अनुमानतः चुनी हुई जैनेन्द्र कुमार की एक कहानी (दे. 44, 48-65) तथा प्रेमचन्द की ऐसी दो कहानियों में (दे. 69, 61-79) 'वह' ('वे') 189 बार पाये गए हैं जिनमें से इनका प्रयोग 163 बार पुरुषवाचक सर्वनाम के रूप में, 5 बार निश्चयवाचक सर्वनाम के रूप में तथा 11 बार 'जो' सर्वनाम के नित्य-सम्बन्धी के रूप में हुआ था। इन्हीं कहानियों में 'यह' ('वे') 43 बार पाये गए हैं जिनमें से इनका प्रयोग 30 बार निश्चयवाचक सर्वनाम के रूप में और 12 बार पुरुषवाचक सर्वनाम के रूप में हुआ था और इसमें भी कुछ उदाहरणों में पुरुषवाचक या निश्चयवाचक सर्वनामों का मिला-जुला अर्थ स्पष्ट दीख पड़ता था।

पुरुषवाचक सर्वनाम के रूप में 'यह' ('ये') का प्रयोग अधिकतर नीचे लिखे अर्थों में होता है: (क) पहले कहे हुए दो व्यक्तियों या पदार्थों का उल्लेख करते वक्त (पिछले के लिये 'यह' आता है और पहले के लिए 'वह') जैसे, मिसेज़ सक्सेना जयराम को खूब जानती थी। **उन्हें** मालूम था कि **यह** त्याग और साहस का पुतला है (69, 33)। परन्तु आगे इसी व्यक्ति तथा पिछले पदार्थ का उल्लेख करते वक्त 'वह' का प्रयोग हो सकता है, जैसे, इसके साथ वह जानती थी कि **इसमें** वह धैर्य और बर्दाश्त नहीं है, जो पिकेटिंग के लिए लाजिमी है। जेल में **उसने** दारोगा को अपशब्द कहने पर चाँटा लगाया था (69, 33), (ख) जो व्यक्ति या पदार्थ पहले 'यह' ('ये') निश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण के साथ आते थे उनका उल्लेख करते वक्त, जैसे, थानेदार ने चौधरी से पूछा—**यह** लोग तुमको धमका रहे हैं ? चौधरी ने कहा—नहीं **यह** तो हमें समझा रहे हैं (69, 35), **इन** वीरों को देखकर भी तुम्हारी छाती नहीं फूलती ? हमारा ही दुख-दर्द हरने के लिए तो **इन्होंने** यह परन ठाना है (69, 69); (ग) तीसरे व्यक्ति द्वारा दूसरे बहुधा उपस्थित व्यक्ति या दूसरे पदार्थ का उल्लेख करते वक्त, जैसे, लड़की के सिर पर हाथ फेरते हुए उसने कहा; **यह** भी पाँच बरस की हो गयी। **इसने** बाप को अभी तक नहीं देखा (96, 27), 'हमारा कोई सहारा नहीं'—काजरी ने कहा : 'भूखे हैं'—'खड्गसिंह'—डाकू ने कहा—'इन्हें आटा दे दो' (103, 242), चरणसिंह सब समझ गया था। परन्तु वह सोच रहा था कि **यह** तो मर ही गया (103, 381)।

'यह' और 'ये' का प्रयोग पुरुषवाचक और निश्चयवाचक सर्वनामों के मिले-जुले अर्थ में हो सकता है विशेषकर जब व्यक्ति अथवा पदार्थ के प्रति नकारात्मक व्यवहार व्यक्त करते हैं, जैसे, आशुतोष रुकने को उद्यत था। वह चलने में आना-कानी दिखाने लगा ! बुआ ने पूछा, 'क्या बात है ?' मैंने कहा, कोई बात नहीं, जाने दो **न उसे**। पर आशुतोष मचलने पर आ गया था। मैंने उठकर कहा—'प्रकाश, **इसे** ले क्यों नहीं जाते हो ?' (44, 64), 'यह तो देखो, दीवान जी ने कैसी झूठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोली।" 'अजी इसने बड़े माथे दुधारे हैं' (103, 387),...कल यह मर जाता है तो यह सब किसके लिए जमा किया गया (52, 31), दूसरे लड़के खुश होते हैं कि अपने दोस्तों में रहेंगे, यह उलटे रो रहा है (66, 65)।

निश्चयवाचक सर्वनाम के रूप में 'यह' और 'ये' आदेश-सर्वनाम जैसे तथा स्वतन्त्र रूप में प्रयुक्त होते हैं।

आदेश-सर्वनाम के रूप में उनका प्रयोग दूसरे वाक्य तथा मिश्रित व संयुक्त वाक्य के दूसरे अंग से लगे शब्द-विशेष तथा पूरे ही वाक्य के बदले में होता है।

शब्द-विशेष के बदले आते हुए 'यह' तथा 'ये' (क) आदेशित शब्द के आगे, जैसे, यह तो तुम्हारे कपड़े हैं (69, 197), यह कौन है जो तुझे ले जाय (103, 252) या (ख) आदेशित शब्द के पीछे लगा देते हैं, जैसे, कहीं ऐसा तो नहीं कि उसने जो ये निशान लगाकर भेजे हैं ये भी दौरे की दशा में ही लगाये हों...(52, 29), इस अवस्था में मेरी क्या दशा होती, यह मैं ही जानती हूँ (69, 87)।

पूरे वाक्यों के बदले आते हुए 'यह' तथा 'ये' (क) आदेशित वाक्य के आगे, जैसे, सबसे दुःख की बात यह थी कि वहाँ उसका प्रेम या आदर न था (72, 17), आखिर बादशाह ने यही किया कि उस मकान के कोने में चुपके जा बैठा... (24, 17) और (ख) आदेशित वाक्य के बाद लगा देते हैं, जैसे, सबके मौन होने का नेहरू जी के मन पर बुरा असर पड़ेगा, यह सोचकर श्री महावीर त्यागी उनके पास जा बैठे (II, 30-5-1965), (सराफ) इस वक्त टाला जब दयानाथ ने तीसरे दिन बाकी रकम की चीजें लौटा देने का वादा किया, और यह भी उसकी सज्जनता ही थी (65, 14), तुम लेखक हो, अच्छे लेखक हो, यह भी मानते हो... (59, 144)।

निश्चयवाचक सर्वनाम के रूप में 'यह' और 'ये' का स्वतन्त्र प्रयोग उस वाक्य के औपचारिक उद्देश्य के समान होता है जिसका विधेय विधेयात्मक अंग से जो संज्ञा है अन्वित (समानाश्रित) अथवा भाववाचक रूप में आता है जब विधेयात्मक अंग व्यक्ति या पदार्थ को सूचित न करनेवाले विशेषण एवं सर्वनाम के समान होता है, जैसे, यह वह रमणी थी ...(69, 194), यह मेरा क्लब जाने का समय था (69, 91), सरदार साहब, यह कौन है आपकी ? (69, 198), यह क्या हो रहा है ? (103, 319)। 'वह' और 'वे' सर्वनाम जो वास्तव में अन्य पुरुष एकवचन तथा बहुवचन के मुख्य पुरुषवाचक सर्वनाम हैं, बहुधा उस व्यक्ति या वस्तु के निकट आते हैं जिसको वह सूचित करते हैं। तब इनका प्रयोग बहुत अक्सर एक ही वाक्य में या संलग्न वाक्यों में होता है, जैसे, स्वयंसेवक कुछ ऐसा मुँह बना लिया, जैसे वहाँ की दशा कहना वह उचित नहीं समझता ...(69, 43), बाँके शराब के नशे में चूर था और उसने सिगरेट सुलगाकर धीरे से गुनगुनाया (103, 317), बाँके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नशे में था। उसे विश्वास नहीं हुआ (103, 318)।

'वह' और 'वे' पूर्वोक्त प्रसंग में उल्लेखित दो विभिन्न व्यक्तियों या वस्तुओं को एक साथ सूचित कर सकते हैं, जैसे, वह उसे बड़ी देर से ढूँढ़ रही थी। उसने सुन लिया था कि वह वजीर हो गया था। परन्तु वह आया नहीं था, इसका उसे खेद था। वह वजीरानी हो गयी थी। उसे बुलाना चाहिए था (103, 393), परन्तु यह मुख्यतः तब होता है जब विभिन्न लिंग-भेद के व्यक्तियों या विजातीय वस्तुओं के साथ इन सर्वनामों का प्रयोग होता है। ऐसे भी प्रयोग तब भी हो सकता है जब सर्वनाम वचन में निम्न व्यक्तियों और वस्तुओं को सूचित करते हैं, जैसे, आखिर वह पेड़ के नीचे बैठ गया और उसने पाँव फैला दिये और ऊपर देखा। पेड़ पर बेल लग रहे थे। उसे वे बहुत बड़े-बड़े से लगने लगे···वह डर गया (103, 393)।

'वह' और 'वे' का प्रयोग तब अनिवार्य हो जाता है जब वे उस व्यक्ति या वस्तु को सूचित करते हैं जो पहले सार्वनामिक विशेषण 'वह' के साथ आता था, जैसे, वह कुत्ता जा रहा है। वह क्या करेगा? (103, 386)। 'जो' के नित्य सम्बन्धी सर्वनाम के समान आने वाले 'वह' और 'वे' का प्रयोग पुरुषवाचक तथा निश्चयवाचक दोनों सर्वनामों के रूप में होता है, कभी-कभी दोनों का मिला-जुला अर्थ साथ-साथ आता है, जैसे, और वह जो गोलियाँ चल रही थीं, वे अत्याचार का वह भीषण प्रतीक थीं (103, 342), मुझे भी वही हुआ जो तुम्हें हुआ है (69, 77), जो होना था वह हो चुका (4, 39), क्यों तूरैया, मैंने जिसे आज मारा है, वह हम लोगों का बाप था? (69, 203), मुझे जो कुछ देना है, वह उन्हीं लोगों को दूँगा (69, 67), वह जो तेरे हाथ में निशान है, वही बतला रहा है··· (69, 202)।

'जो' के नित्य सम्बन्धी सर्वनाम के रूप में 'सो' सर्वनाम आता है जो अप्रत्यक्ष कारकों के सार्वदेशी रूप बनाता है (तिसने, तिस को, तिसे, तिन्होंने, तिनको, तिन्हें), जैसे, जो जिसका काम है सो करेगा ही (108, 107), जो जगे सो पाये (77, 153), जो यह कहे सो करो (108, 44)।

निश्चयवाचक सर्वनाम के समान आते हुए 'वह' और 'वे' या तो किसी शब्द के स्थान में या स्वतन्त्र प्रयोग में आते हैं, जैसे, रमा—पाँच सौ रुपये नकद थे, वह तो मैंने थैली में रखे···(65, 116), उसके मुँह से शराब की बदबू आ रही थी···वह बड़ी तेज़ बदबू थी (103, 319), लेकिन मतलब क्या है वह मैं भी जानता हूँ (108, 231), निस्सन्देह, वह मिस पाल ही थी (52, 127), मुफ्त में पायेंगे वह अलग···(69, 61)।

'सो' का ऐसा ही प्रयोग हो सकता है, जैसे, सो तो होगा नहीं,···(52, 26), बीसियों रुपये का आटा रोज़ होटल वालों को बिकता है, सो अलग (52, 30)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यह' और 'वह' जब निश्चयवाचक सर्वनाम के समान आते हैं तो वह बोलने वाले या सुनने वाले के सम्बन्ध में व्यक्ति अथवा वस्तु की विधि विभिन्न स्थिति निश्चित करते हैं। 'यह' उस व्यक्ति या वस्तु को सूचित करता है जो बोलने वाले तथा सुनने वाले के पास है और 'वह' उस व्यक्ति या वस्तु को सूचित करता है जो बोलने वाले अथवा सुनने वाले से दूर (या दूसरे व्यक्ति या वस्तु की तुलना में अधिक दूर) हैं, जैसे दोनों ही तुम दो तरह के कुत्तों के पास सोते हो। यह वाला वफादार है, वह अटकना है।

'यह' ('ये') और 'वह' ('वे') के प्रयोग में होने वाली निश्चित भिन्नता के बावजूद वह कभी-कभी समान अर्थों में आते हैं, जैसे, तुम उन्हें बदमाश कहते हो! तुम, जो घूस के रुपये पाते हो, जुआ खेलते हो···तुम इन्हें बदमाश कहते हो (69, 72)!

शब्द-समुदाय के स्तर पर पुरुषवाचक-निश्चयवाचक सर्वनाम नीचे लिखे सम्बन्ध प्रकट कर सकते हैं: (1) कर्मवाचक—तभी कजरी उसे देखा (103, 397), सारी दुनिया यही कहती है (139, 167); (2) कतृ-कर्त्तावाचक—इससे बैंक लूटा जायेगा, इससे वापसराय की ट्रेन उड़ेगी (97, 115), पर इनसे घर पर बैठे रहा नहीं जाता (65, 78); (3) कर्त्तावाचक-कर्मवाचक—उन्हें जीवन की अब कोई आशा नहीं है (69, 258), कोई कहता है, उसे डिस्टीरिया है (52, 27)।

वाक्य के स्तर पर पुरुषवाचक-निश्चयवाचक सर्वनाम वाक्य के निम्नलिखित अंगों में के रूप में आते हैं: (1) उद्देश्य—यह क्या हो रहा है? (103, 319), वह हम लोगों का बाप था (69, 203); (2) प्रधान कर्म—वह यह कर सकता है? (65, 300), वह तो मैंने थैली में रखे (65, 116); (3) गौण कर्म—अब इनसे क्या छिपा रहेगा? (52, 26), शत्रु ने उन्हीं के हथियार से उन पर वार किया···(66, 24); (4) संज्ञात्मक निर्णायक—उस बिचारी को तो कुछ होश रहता नहीं (52, 27), उसे कुछ पता है (44, 57); (5) विधेय—एक दिन वह था कि हम सारे जहाँ में फर्द थे, एक दिन यह है कि हम-सा बेहया कोई नहीं (69, 68)।

'आप' निजवाचक सर्वनाम का प्रयोग अन्य पुरुष के पुरुषवाचक सर्वनाम के समान हो सकता है, जैसे 1945 में आपने जातियों के आत्म-निर्णय के सिद्धान्त पर पाकिस्तान की माँग का समर्थन किया था (95, 339), आप आबकारी के विभाग में एक ऊँचे ओहदे पर हैं (66, 20), आपके वास्ते कुर्सी लाओ (66, 20), आपने चबूतरे पर बिस्तर जमाया···(66, 32)।

निजवाचक सर्वनाम : जैसा कि ऊपर लिखा है, 'आप' अधिकारी सर्वनाम है जिसका एक ही 'कोशीय' (अनन्वित) रूप है, जैसे, और गीदड़ हातिम को वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगह दिखाकर आप एक झाड़ी में छिपकर बैठ गया (25, 25), जिसके जैसे कर्म होंगे आप ही भुगतेगा (75, 183), कह दे आप ही उठकर पी ले (103, 147), अपना किया आप ही भुगतना पढ़ता है (142, 122)।

अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक में 'आप' के स्थान पर सम्बन्धवाचक सार्वनामिक विशेषण 'अपना' आ जाता है, जैसे, उन्हें अपने ऊपर क्रोध आया (66, 64), लेडी डाक्टर ने अपने में ही सर हिलाया (116, 7), मैं अपने लिए एक गुलुबन्द बनवा लूँ···(69, 132), अपनी उस तसल्ली को अपने तक ही मैंने रखा (116, 9)।

'आप' के रूप में विशेष्य सार्वनामिक विशेषण 'स्वयं' और 'खुद' आ सकते हैं, जैसे, डाक्टर स्वयं कभी अपनी पत्नी की चर्चा नहीं उठाते (52, 51), मैं खुद भूल गया था (103, 83), जिससे कुछ लेखक इनको सर्वनाम में सम्मिलित कर देते हैं (दे. 79, भाग-2, 210)।

'आप' सर्वनाम का रूपान्तर 'आपस' है। इसका प्रयोग बहुधा परसर्ग सहित अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक में होता है, जैसे उनकी कड़ियाँ आपस में लचक के साथ जुड़ी रहती हैं (44, 48)।

शब्द-समुदाय के स्तर पर 'आप' कोई भी सम्बन्ध व्यस्त नहीं करता। इसका रूपान्तर 'आपस' कर्मवाचक सम्बन्ध व्यक्त करता है।

वाक्य के स्तर पर 'आप' नीचे लिखे अर्थों में आता है: (1) उद्देश्य—जिसके जैसे कर्म होंगे आप ही भुगतेगा (75, 183); (2) समानाधिकरण—मैं अपनी मदद आप कर दूँगा (72, 115)।

प्रश्नवाचक सर्वनाम: 'कौन' का प्रयोग मुख्यतः व्यक्ति को और बहुत कम वस्तु को सूचित करने के लिए होता है, जैसे, यह कौन हो सकती है? (103, 178), मज़ाक उससे कौन करेगा? (52, 18), तो हम एक नियम पर बिकेंगे। वह कौन? (17, 116), मेरे सामने हड्डी का ढाँचा खड़ा था। मैंने न जाने कैसे कहा: 'तू कौन है?' (103, 119), मेरी मेमोरी कौन बड़ी तेज़ है (66, 89)।

प्रश्नवाचक वाक्यों के अतिरिक्त 'कौन' का प्रयोग प्रश्नालंकार सम्बन्धी वाक्यों में हो सकता है, जैसे, कौन जानता था कि वह अपने प्यारे लड़के के हाथों हलाल होगा (69, 203), ऐसी है कौन जो सुखराम को मेरे पास आने से रोक लेगी (103, 154), दुनिया में कौन क्या है, कोई नहीं जानता (103, 59)।

'कौन' का प्रयोग विस्मयसूचक वाक्यों में भी हो सकता है, जैसे, तुझे क्या मालूम था कि कौन तेरा बाप है और कौन तेरी माँ है! (69, 203), आज कौन बिना दहेज के पुत्र का विवाह करता है! (66, 21)।

बहुत कम 'कौन' का प्रयोग प्रश्नवाचक-सम्बन्धवाचक अर्थ में होता है, जब वह मिश्रित वाक्य में संयोजक के समान आता है, जैसे, सब जानते थे किसे कहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया (96, 73), बोलो, कौन मरा ख्वाजा ? (113, 32)।

'क्या' का प्रयोग मुख्यतः वस्तु को और काफी कम व्यक्ति को सूचित करने के लिए होता है, जैसे, पिंडली पर ज़ख्म था। 'यह क्या ?' उसने पूछा (103, 81), इस मोती का यह क्या करेगा ? (25, 125), प्यारी तू है क्या आखिर ? (103, 126), तुम्हारे बिना मैं क्या हूँ (44, 9)।

'क्या' का प्रयोग प्रश्नालंकार सम्बन्धी वाक्यों में हो सकता है, जैसे, कजरी के सुनाने में सुखराम क्या समझा क्या नहीं पर वह खुश था (103, 196), क्या करे वह, क्या नहीं करे, यों सोचते में उसके अक्ल पर चढ़कर शैतान कहता है कि··· (103, 261)।

'क्या' का प्रयोग विस्मयसूचक वाक्यों में भी हो सकता है, जैसे, नहीं, पैसे क्या ! तुम लाहौर के रहने वाले हो, तुमसे पैसे क्या (96, 27-28)।

बहुत ही कम 'क्या' 'यह' के समान वाक्य के दूसरे अंश के शब्द का सह-सम्बन्धी हो सकता है, जैसे, तब वह प्रश्नवाचक-निश्चयवाचक अर्थ में आता है, जैसे, क्या हो सकता है सो तो मैं नहीं जानती···(103, 247), रुपये का क्या है, हाथ की मैल है (139, 17), गोया मतलब यह ही है अल्लाह, तू ही इज्जत का देने वाला है (103, 272), मेरे भीतर क्या था जो खो गया (108, 33)।

बहुत ही कम 'क्या' का प्रयोग प्रश्नवाचक-सम्बन्धवाचक अर्थ में होता है, तब वह मिश्रित वाक्य में संयोजक के समान आता है, जैसे, मैं पूछती हूँ, क्या तुम सबको घर से निकाल कर अकेली ही रहना चाहती हो ? (66, 62), बोली, क्या करूँ (103, 196)।

शब्द-समुदाय के स्तर पर प्रश्नवाचक सर्वनाम नीचे लिखे सम्बन्धों को व्यक्त कर सकते हैं : (1) कर्मवाचक—किस पर सोओगे (66, 82), प्यारी करेगी क्या (103, 172); (2) कर्तावाचक—(केवल 'कौन')—किससे बैठा नहीं जाता ? (3) कर्तावाचक-कर्मवाचक (केवल 'कौन')—सन्तान किसको प्यारी नहीं होती (66, 40-41); (4) पूर्णतावाचक—आखिर यह आपको समझती क्या है (108, 56)।

वाक्य के स्तर पर प्रश्नवाचक सर्वनाम उसके नीचे लिखे अंगों के रूप में आते हैं : (1) उद्देश्य—किसने किया (103, 171), क्या हुआ ? (103, 172); (2) प्रधान कर्म—रुपये किसे काटते हैं (66, 29); मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था (103, 223); (3) गौण कर्म (केवल 'कौन')—अब अन्तःपुर किसे सौंपा जाये ? (4, 60), सब जानते थे किसे कहा गया (96, 63); (4) कर्तावाचक निर्णायक (केवल 'कौन')—सन्तान किसको प्यारी नहीं होती ? (66, 40-41), देश का प्रबन्ध किसे करना है ? (59, भाग दो, 76), यहाँ ज़रूरत किसे थी तुम्हारी ? (108, 56); (5) पूरक— आखिर यह अपने आपको समझती क्या है (108,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

56); (6) विधेय—लेकिन यह लक्ष्मी कौन है? (52, 18), यह क्या हुआ? (103, 266)।

पुरुषवाचक और पुरुषवाचक-निश्चयवाचक सर्वनामों के विपरीत प्रश्नवाचक सर्वनाम सहज हां विशेषणों से और बहुत कम (केवल 'क्या') 'का' परसर्ग समेत संज्ञाओं से सम्मिलित हो सकते हैं, जैसे, तू मेरी कौन होती है? (103, 324), मेरा क्या आता-जाता है (108, 56), यहाँ ऐसा कौन है जिसके साथ···(69, 7), मैं ऐसा क्या जानूं (103, 247), नट तो पीते हैं कजरी। इसमें बुरा क्या? (103, 277), इस मोती का यह क्या करेगा? (25, 125), धोती का क्या करोगे? (108, 130)।

प्रश्नवाचक सर्वनामों के साथ 'और' क्रियाविशेषण का प्रयोग हो सकता है, जैसे, मेरी स्त्री है, और कौन है? (69, 198), साली रो रही होगी और क्या? (103, 315), मैं न होऊँगा तो होगा और कौन? (103, 5), अरे, मन आ गया और क्या? (103, 277)।

सम्बन्धवाचक सर्वनाम : 'जो' अन्यादेशक सर्वनाम है क्योंकि नियम के रूप में अपने नित्यसम्बन्धी शब्द से जुड़ा करता है। अर्थ की दृष्टि से 'जो' निश्चयवाचक सर्वनामों से निकट है जो उसके नित्यसम्बन्धी के समान आते हैं। 'जो' समान रूप से व्यक्ति तथा वस्तु को सूचित कर सकता है। वाक्य के स्तर पर 'जो' का प्रयोग संयोजक शब्द के समान होता है। यह विशेषण उपवाक्य में आता है और प्रधान उपवाक्य में प्रयुक्त उस व्यक्ति या वस्तु को सूचित करता है जिसके बदले नित्य-सम्बन्धी निश्चयवाचक सर्वनामों का प्रयोग होता है, जैसे, तुमने जो कहा वह मैंने मान लिया (66, 26), जो तुमने बताया, यह तो सभी का काम है···(108, 59), जो होगा सो देखा जाएगा (52, 37), या अर्थपूर्ण शब्द का प्रयोग होता है, जैसे, ···सैकड़ों स्त्रियाँ जो हर रोज़ बाज़ार में झरोखे में बैठी दिखायी देती हैं, जिन्होंने अपनी लज्जा और सतीत्व को भ्रष्ट कर दिया है···(72, 160),···वह तुम्हारा तिरस्कार कर देंगी जिससे तुम कभी न भूल सकोगे (66, 123)!

बहुत कम नित्यसम्बन्धी सर्वनाम का लोप होता है, जैसे, जिसने जैसा समझा, वैसा ही मान गए (108, 86)।

शब्द-समुदाय के स्तर पर 'जो' नीचे लिखे सम्बन्धों को व्यक्त कर सकता है: (1) कर्मवाचक—आप ही एक ऐसे पुरुष हैं जिस पर मैंने अपना प्रेम, अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया है (72, 104), जिसे कम जानते हैं, उसे प्रेम नहीं कर सकते (96, 72), (2) कर्तावाचक—जिससे बैठा नहीं जाता वह जा सकता है, (3) कर्तावाचक-कर्मवाचक—कौन ऐसा पिता है जिसे अपने प्यारे पुत्र को आवारा फिरते देखकर रंज न ही (36, 70)।

वाक्य के स्तर पर 'जो' उसके नीचे लिखे अंगों के रूप में आता है:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(1) उद्देश्य—जो होना था वह हो चुका (4, 39), एक वह स्त्रियाँ हैं जो आराम से तकिये लगाये सो रही हैं···(72, 44); (2) प्रधान कर्म—जो यह कहे सो करो (108, 44), वे जिन्हें पूजते हैं···(108, 222); (3) गौण कर्म—और जो करना चाहे, कर डाले, जिससे दिल में कोई अरमान न रह जाए (66, 97), ···वे खाली दीपक हैं जिनमें अब किसी आग ने दोशिखायें जला दी थीं··· (103, 15); (4) कर्त्तावाचक निर्णायक—निमंत्रित महाशयों में से केवल वे ही लोग पधारे थे, जिन्हें जुम्मन से अपनी कुछ कसर निकालनी थी (69, 155), जिसे न खाना हो वह पहले ही कह दिया करे (66, 79)।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम : 'कोई' नियम के रूप में व्यक्तियों को सूचित करता है, जैसे, खिड़की के सामने कोई खड़ा था (65, 245), कोई आपस में गाली-गलौज़ करते और कोई रोते थे (69, 155), लड़कियों ने पहले तो भाइयों को प्रेम से रखा, किन्तु तीन महीने से ज्यादा कोई न रख सकी (69, 212)।

निषेध-निपात के साथ 'कोई' निषेधात्मक सर्वनाम का अर्थ व्यक्त करता है, जैसे, कोई उसका मित्र न था (65, 297), वह चाहता था कि मुझे कोई न छेड़े, कोई न बोले (65, 297)।

'कुछ' बहुधा अप्राणिवाचक पदार्थ को सूचित करता है, जैसे, वहाँ कुछ पड़ा हुआ है (25, 118), मैं भी कुछ कर सकती हूँ (69, 37)।

'कुछ' सर्वनाम से सार्वनामिक विशेषण 'कुछ' का संज्ञापरक प्रयोग अलग करना चाहिए क्योंकि ऐसे में 'कुछ' व्यक्तियों या वस्तुओं की अनिश्चित संख्या सूचित करता है, जैसे, कुछ कहते थे (75, 26), ···ये जवाहरात खुदा ने सिर्फ परियों के लिए बनाये हैं ···मैंने तो नमूने के लिए उठा लिए थे (25, 118), उसने उनमें से भी कुछ एक को फँसाया (75, 43)।

निषेध-निपात के साथ 'कुछ' निषेधात्मक सर्वनाम का अर्थ प्रकट करता है, जैसे, किसी ने कुछ न किया (25, 79), हीरासिंह कुछ बोल न सका (44, 117)।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम के साथ विशेषण जुड़ सकते हैं और 'कुछ' के आगे भी 'का' परसर्ग सहित संज्ञा आ सकती है, जैसे, तू मेरी कोई नहीं है ? (103, 291), मैं तेरी कोई नहीं ? (103, 252), इसमें इसका कुछ बनता-बिगड़ता नहीं था (103, 423), हातिम का कुछ बिगाड़ नहीं किया जा सकता (25, 87)। इसके अतिरिक्त अनिश्चयवाचक सर्वनाम 'और' क्रियाविशेषण से जुड़ सकते हैं, जैसे, जयराम और कुछ न पूछा (69, 43), और कोई न था (69, 61)।

शब्द-समुदाय के स्तर पर अनिश्चयवाचक सर्वनाम नीचे लिखे सम्बन्धो को व्यक्त करते हैं : (1) कर्मवाचक—कुछ आदमी किसी को घेरे खड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे (108, 160), किसी से उसकी दुश्मनी थी ? (147, 37); (2) कर्तावाचक —किसी से बैठा नहीं जाता; (3) कर्तावाचक-कर्मवाचक—किसी को रास्ता चलने की मनाही है ? (66, 16); (4) पूर्णतावाचक—रुपये को तो उन्होंने कुछ समझा ही नहीं (66, 22)।

वाक्य के स्तर पर अनिश्चयवाचक सर्वनाम उसके नीचे लिखे अंगों के रूप में आते हैं : (1) उद्देश्य—किसी ने भीड़ में से चिल्लाकर कहा···(103, 302), उससे कुछ न हुआ (25, 121); (2) प्रधान कर्म— ···लेकिन यह न हुआ कि ···किसी को कुर्सी लाने को भेज देते (66, 20), गुरु जी, मैं भी कुछ पूछना चाहता हूँ (59, प्रवेशिका, 24); (3) गौण कर्म (केवल 'कोई')—तुम्हें चोरी के बारे में किसी पर शक है ? (147, 38), मैंने किसी से कुछ नहीं कहा (66, 62); (4) कर्तावाचक निर्णायक—किसी को ऐसी क्या गरज पड़ी है···(66, 61), किसी को भी ···दखल देने का हक नहीं है (147, 48); (5) पूरक (बहुधा 'कुछ' सर्वनाम)—रुपये को उन्होंने कुछ समझा ही नहीं (66, 22); (6) विधेय—तू मेरी कोई नहीं है ? (103, 251)।

संयुक्त सर्वनाम : संयुक्त सर्वनाम दो सर्वनामों का, सर्वनाम और विशेषण का तथा सर्वनाम और निपात का योग है, जिससे एक शाब्दिक इकाई बन जाती है। संयुक्त सर्वनाम वाक्यात्मक शब्द-समुदाय नहीं बनाते क्योंकि इनके शब्दार्थक और कुछ हद तक व्याकरणिक विलय के कारण उनमें प्रधान और आश्रित घटकों का पता लगाना असम्भव है। संयुक्त सर्वनाम अविभक्त हैं, वे केवल अपना प्रधान घटक लेकर आ न सकते जबकि बनावट में समान वाक्यात्मक शब्द-समुदायों में आश्रित घटक का लोप हो सकता है, जैसे, उसने संसार में क्या-कुछ देखा है (75, 165)—संयुक्त सर्वनाम (तुलना कीजिए—उसने संसार में कुछ देखा और संसार में क्या देखा); कोई दूसरा उसे देख रहा है (139, 73)—वाक्यात्मक शब्द-समुदाय (तुलना कीजिए—कोई उसे देख रहा है और दूसरा उसे देख रहा है)।

संयुक्त सर्वनाम इस ढंग से बनते हैं : (1) 'कोई' और 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनामों और विशेषण के योग से, जैसे, 'सब कोई', 'सब कुछ'। 'सब कोई' का अर्थ वियोजक है और इसका प्रयोग बहुवचन में हो सकता है, जैसे, सब कोई मन्दिर के प्रांगण में एकत्र हुए (4, 61)। 'सब कुछ' का अर्थ इसके विपरीत संयोजक हैं और इसका प्रयोग सदा एकवचन में होता है, जैसे, सब कुछ तुम्हारी आँखों के सामने आ गया (75, 145), दरिद्रता ने सब कुछ किया ···(70, 7)।

(2) 'जो' सम्बन्धवाचक सर्वनाम और 'कोई' तथा 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनामों के योग से जिसमें 'जो कोई' व्यक्तियों को और 'जो कुछ' बहुधा अप्राणिवाचक वस्तुओं को सूचित करते हैं, जैसे, जो कोई इस राष्ट्र में रहता है वह रत्न-माता का प्यारा बेटा या बेटी है (41, 97), मैंने उस समय जो कुछ कहा था, वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल परीक्षा के लिए था (72, 130), मैं जो कुछ हूँ, माँ का बनाया हूँ (13, 28)।

(3) 'क्या' प्रश्नवाचक सर्वनाम 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनाम के योग से जैसे, उसने न जाने क्या कुछ लिखा था ···(52, 94), उसने संसार में क्या कुछ देखा है (75, 165)।

(4) 'जो' सम्बन्धवाचक सर्वनाम और 'कुछ' और 'कोई' अनिश्चयवाचक सर्वनामों तथा 'भी' निपात के योग से जो सर्वनामों को सहायक वृत्तिवाचक अर्थ प्रदान कर सकता है, जैसे, कोई भी अकेले भागने की कोशिश न करे (75, 178), कुछ भी हो कजरी, हक तो मेरा ही है (103, 249), कुछ भी जानने की इच्छा नहीं होती (108, 34), जो कुछ भी हो, मेरा तुम्हारे साथ जाना नामुमकिन है (59, 84), खैर जो भी हो अपने पुरखों को यों याद करना अच्छा नहीं लगता (108, 222)। इस बात पर जोर देना चाहिए कि 'भी' निपात से प्रयुक्त सर्वनाम नियम के रूप में प्रत्यक्ष कारक में आते हैं। इससे यह हुआ कि 'जो कुछ भी' और 'जो भी' शुद्ध समुच्चयबोधक की श्रेणी में आ घुसे।

(5) एक ही सर्वनाम की द्विरुक्ति से जिसके साथ 'न' निषेध निपात या 'का' परसर्ग जोड़े जा सकते हैं। एक ही सर्वनाम की शब्द-रचनात्मक द्विरुक्ति केवल अनिश्चयवाचक सर्वनामों में होती हैं। शेष सर्वनामों की द्विरुक्ति से बहुत्व का व्याकरणिक अर्थ ही उत्पन्न होता है, जैसे, जो-जो आदमी मर चुके थे··· (74, 36), कन्या के विवाह में हमें जो-जो वस्तु चाहिए सो-सो सब इकट्ठी करो (22, 115), सभा में कौन-कौन आए थे? (22, 117), कोई-कोई उन्हें अपना शत्रु समझने में भी संकोच न करती थी (69, 143)।

द्विरुक्ति द्वारा बने संयुक्त सर्वनामों में नीचे लिखे सर्वनाम आते हैं: 'क्या-क्या', 'कुछ-न-कुछ', 'कुछ-का-कुछ', 'कोई-न-कोई', जैसे, क्या-क्या उसने नहीं किया? (52, 29), क्या-क्या इन्होंने नहीं सहा, क्या-क्या नहीं देखा (108, 48), नहीं जी, कुछ-न-कुछ तो कहा ही होगा (108, 47), वे चाहते तो कुछ-न-कुछ लूट सकते थे (75, 178), उसकी ससुराल के लोग कहीं कुछ-का-कुछ समझ बैठे तो और मुसीबत हो जायेगी (59, 74), हम लोगों में से कोई-न-कोई उसे जरूर खोल लेता (108, 75), उसे किसी-न-किसी से कह देना चाहिए (108, 206), भावावेश में कुछ-का-कुछ लिख जाती थी (14, 9)।

'क्या-क्या' संयुक्त सर्वनाम से 'क्या' सर्वनाम की द्विरुक्ति को अलग करना चाहिए जिससे बहुत्व का अर्थ उत्पन्न होता है, जैसे, कितने ही आये, हूण आये, तुर्क आये और क्या-क्या यहाँ आये (41, 82), न जाने और भी ऐसे ही वह क्या-क्या सोचती रही कि उसे नींद आ गयी ···(103, 222)।

संयुक्त सर्वनामों का रूप-परिवर्तन इनके घटकों के रूप-परिवर्तन के नियमों के अनुसार होता है परन्तु वे बहुधा प्रत्यक्ष कारक में आते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषण

विशेषणों की मुख्य कोटिगत विशेषता यह है कि वे विशेष्य द्रव्य के लक्षण मर्यादित कर सकते हैं। ये लक्षण लिंग, वचन, कारक तथा तुलना की अवस्थाओं की व्याकरणिक कोटियों से स्पष्ट हो जाते हैं।

यह उल्लेखनीय है कि विशेषणों के कारकीय रूप वाक्यगत रूप हैं क्योंकि वे गुणात्मक अर्थों के आन्तरिक भेदों को व्यक्त नहीं करते किन्तु कथन की प्रक्रिया में संज्ञाओं के साथ विशेषणों के वाक्यगत सम्बन्धों को सूचित करते हैं।

अपने अर्थ के अनुसार (अगर कहीं ठीक कहा जाय तो मर्यादित लक्षणों को प्रकट करने के अपने तरीके के अनुसार) विशेषण गुणात्मक विशेषणों में (जो प्रत्यक्ष ढंग से द्रव्य के लक्षण प्रकट करते हैं) तथा सम्बन्धवाचक विशेषणों में (जो ये लक्षण परोक्ष विधि से द्रव्य, प्रक्रिया, परिमाण और अन्य विशेषण के साथ होने वाले सम्बन्धों के ज़रिये प्रकट करते हैं) विभक्त होते हैं।

गुणवाचक विशेषणों में वे विशेषण आते हैं जो अपने कोशीय अर्थ के ज़रिये प्रत्यक्ष ढंग से द्रव्य के उन विभिन्न गुणात्मक लक्षणों को प्रकट कर सकते हैं जिनमें विभिन्न प्रकार की अवधारण-शक्ति निहित है। गुणवाचक विशेषणों के कुछ मुख्य अर्थ ये हैं: (क) रंग—काला, पीला, नीला, भूरा, लाल, श्वेत; (ख) गुण—गर्म, ठंडा, मीठा, कड़वा, घना, उथला, गहरा, नरम, भारी; (ग) लोगों और पशुओं के बाहरी और भीतरी गुण—गंजा, बूढ़ा, अंधा, नंगा, दुबला, मोटा, लम्बा, छोटा, ज़िन्दा, मुर्दा; (घ) मानव-स्वभाव के भीतरी गुण और उसकी विशेषताएँ—अच्छा, बुरा, कड़ा, कठोर, चंचल, बहादुर, मूर्ख; (च) स्थान और काल—सीधा, टेढ़ा, तंग, चौड़ा, लम्बा, दायाँ, बायाँ, नया, पुराना, अगला, आगामी; (छ) प्रक्रिया के गुण और उसकी विशेषताएं—तेज, कम, थोड़ा, बहुत।

सम्बन्धवाचक विशेषण द्रव्य के लक्षण उन सम्बन्धों के ज़रिये मर्यादित करते हैं जो (क) **दूसरे दृश्य के साथ होते हैं**—प्राकृतिक गुण (72, 144), अखबारी कागज़ (132, 131), राष्ट्रीय भाषा (64, 85), मानसिक दुर्बलता (151, 7), आसमानी साड़ी (151, 20), ऐतिहासिक पुरुष (1, 241); (ख) **प्रक्रिया के साथ होते हैं**, जिनमें दो प्रकार के विशेषण आ जाते हैं: (1) मूल हिन्दी के जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के रूपरचनात्मक तथा शब्दरचनात्मक माडेलों के अनुसार बने हैं—खुला समुद्र (56, 890), फूटी कौड़ी (47, 7), जड़ाऊ हार (65, 56), मनचाही वस्तुएँ (123, 52), अधमुँदी आँखें (107, 41), अनहोनी बात (125, 226) तथा (2) व्युत्पत्ति से कृदंतपरक विशेषण जो संस्कृत तथा अरबी व फारसी भाषाओं से गृहीत हैं—लिखित संविधान (115, 447), विहीन गढ़ी (129, 20), विगत महानिर्वाचन (115, 349), मौजूदा हालत (78, 20), मुअत्तल सदस्या (IV, 26-2-1971); (ग) **व्यक्तिवाचक द्रव्य के साथ होते हैं**—चचेरा भाई (119, 63), टाटाई भाषा (IV, 26-11-1972), ईसाई पादरी (115, 404), सौतेली बहन (1, 126); (घ) **द्रव्यों की मात्रा के साथ होते हैं**—चालीसवाँ दरवाज़ा (24, 10), हज़ारवाँ हिस्सा (17, 459), सातवाँ दिन (96, 100), द्वितीय महानिर्वाचन (115, 395)।

कृदंतपरक सम्बन्धवाचक विशेषणों में व्युत्पत्ति के अनुसार संस्कृत कृदन्तपरक विशेषण एक विशिष्ट स्थान अपना लेते हैं। एक ओर से वे अपनी समानार्थी क्रियाओं के परसर्गीय और परसर्गरहित नियमन को सुरक्षित रखते हैं, जैसे सज़ा प्राप्त (पाया हुआ) आदमी, कमरे में प्रविष्ट होना (घुसना), कारीगर द्वारा निर्मित (बनायी गयी वस्तु), इस घटना से सम्बन्धित (जुड़ा हुआ), तथा उनमें से कुछ ऐसे हैं जो संस्कृत में कर्मणि कृदंत थे, हिन्दी में भी अपना कर्मवाच्य प्रयोग सुरक्षित रखते हैं; जैसे किप्रेंस्की द्वारा निर्मित पुस्किन का चित्र (99, 62), प्रधानमंत्री द्वारा घोषित (IV, 3-12-1972)। वरन् दूसरी ओर से ये विशेषण तुलना की व्यवस्थाएँ बनाते हैं जिससे क्रिया से आनुवंशिक (उत्पत्तिमूलक) सम्बन्ध को छोड़कर इनका सम्बन्ध विच्छेद किया जाता है, जैसे, सुखराम आज पहले से अधिक चिन्तित था (103, 8), हमारे इस युग के सबसे अधिक चर्चित राजनीतिक विषयों में से एक है सोवियत प्रणाली (145, 1)। इस तरह हिन्दी में ये शब्द पूरी तरह से विशेषणों की कोटि में आ जाते हैं, जो मूल विशेषणों तथा संस्कृत के कृदंतपरक विशेषणों के समान वाक्यगत कार्यों से और प्रमाणित हो जाता है। मूल हिन्दी के इने-गिने कृदंतपरक विशेषण इसी कारण से विशेषणों की कोटि में भी आते हैं।

गुणवाचक और सम्बन्धवाचक विशेषणों के बीच कुछ अन्तर हैं जो गुणवाचक विशेषणों की व्याकरणिक विशेषताओं पर आधारित हैं :

(1) गुणवाचक विशेषण तुलना की अवस्थाएँ बना सकते हैं, जैसे, अधिक-अधिकतर-अधिकतम, तेज़-तेज़तर-तेज़तरीन, बड़ा—से अधिक बड़ा—सबसे बड़ा—गुरुतर दोष (22, 320), अधिकतर लोग (114, 166), बेहतर कागज़ (27, 44), तेज़तर बमबारी (IV, 5-11-1972), लघुतम काल (21, 36), शोभनतम शरीर (46, 39), तेज़तरीन मिसाल (IV, 3-12-1972), बेहतरीन हिस्सा (17, 383), मेरी वेदना रजनी से भी काली है (39, 115), यही·· सबसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी विजय थी (47, 60)।

(2) विभिन्न विशेषणों और क्रियाविशेषणों के साथ प्रयुक्त गुणवाचक विशेषण कम या अधिक कोटि का गुण व्यक्त कर सकते हैं, जैसे, बड़ा गहरा पानी (143, 21), नागफनी का मन कुछ शान्त हुआ (143, 21), गहने भी उसकी देह पर बहुत कम थे (66, 118), उसके मेहराब···अधिक सुन्दर लगते हैं (2, 221)।

(3) गुणवाचक विशेषणों के साथ 'सा' विशेषक-निपात का प्रयोग हो सकता है जिससे तीव्र या समान-सा गुण के अर्थ का बोध होता है, जैसे, छोटा-सा स्टेशन (16, 149), बड़ी-सी इमारत (103, 4), मैली-सी धोती (103, 158), लाल-सा चेहरा (103, 24)।

(4) गुणवाचक विशेषण क्रिया के गुणात्मक लक्षणों का बोध कराते हैं, जैसे, ऐसा वे न कर सके (4, 73), पानी ने सारे बरामदे को गीला कर दिया है (16, 17), उन्हें अपने कर्त्तव्य के पूरा करने का सन्तोष था (72, 202), आप शायद नये आये हैं···(52, 28), अरे एक जरा अंग्रेजी अच्छी बोल लेती है··· (151, 22)।

(5) गुणवाचक विशेषण क्रियाविशेषणों की रचना का मूलाधार हो सकते हैं: (क) विशेषण की धातु से 'ए' प्रत्यय लगाकर, जैसे, वह बिचारी···अपने बाल छोटे कटाती थी (52, 131), शायद मैं अपने दिल के भीतर बहुत गहरे न उतरी थी (28, 301); (ख) विशेषणों को (विशेषकर पुल्लिग के रूप में विकारी विशेषणों को) क्रियाविशेषण में रूपान्तर के ज़रिये जिससे विशेषण-क्रियाविशेषण की एक बड़ी श्रेणी बन जाती है, जैसे, तुम अच्छा गाते हो (44, 106), ज़रा ऊँचा बोलो, मैं कम सुनता हूँ (27, 40), वह थोड़ा हँसी···(112, 14)।

(6) गुणवाचक विशेषण विपरीतार्थी जोड़ियों को बना सकते हैं, जैसे, बड़ा-छोटा, गोरा-काला, शान्त-अशान्त, साफ-बेसाफ, लायक-नालायक।

(7) गुणवाचक विशेषण संज्ञाओं की रचना के लिए मूलाधार हो सकते हैं, जैसे, अच्छा-अच्छाई, बूढ़ा-बूढ़ापा, मूर्ख-मूर्खता।

यह नोट करना है कि गुणवाचक तथा सम्बन्धवाचक विशेषणों के बीच की सीमा अस्थिर और सापेक्ष है। यह 'अस्थिरता' एक तरह की होती है क्योंकि केवल सम्बन्धवाचक विशेषण गुणवाचक प्रकृति अपना लेते हैं और इसके परिणामस्वरूप वह भी गुणवाचक विशेषणों की उपर्युक्त व्याकरणिक विशेषता अपना लेते हैं यानी (1) विश्लेषण ढंग से तुलना की अवस्थाओं को बनाने लगते हैं जैसे, उसका शरीर उन सबसे अधिक सुडौल और सुगठित था (151, 20); (2) वे ज्यादा या कम दर्जे का गुण प्रकट करने लगते हैं, जैसे, जान से भी ज्यादा प्यारी फीरोज़ी (107, 116), ···नूरुद्दीन उसके विचारों से बड़ा प्रभावित हुआ (113, 25); (3) उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ 'सा' विशेषक-निपात का प्रयोग होने लगता है जैसे, सपनीला-सा वातावरण (108, 24), असम्भव-सी बात (115, 349); (4) वे विपरीतार्थी जोड़ियों को बना सकते हैं जैसे, अगला-पिछला, स्वाभाविक-अस्वाभाविक, मानुषिक-अमानुषिक, सहाय-असहाय; (5) वे संज्ञाओं को बना सकते हैं जैसे, राष्ट्रीय-राष्ट्रीयता, स्वाभाविक-स्वाभाविकता।

गुणवाचक विशेषणों की श्रेणी में आये हुए सम्बन्धवाचक विशेषण शायद ही क्रियाविशेषण को बना सकते हैं और क्रिया को निश्चित कर सकते हैं जिससे यह जाना जा सकता है कि उनका द्रव्य, प्रक्रिया आदि के साथ अमानुषिक सम्बन्ध हैं।

गुणवाचक और सम्बन्धवाचक विशेषणों का जो अर्थपूर्ण विशेषणों की श्रेणी बनाते हैं विरोध सार्वनामिक विशेषण करते हैं जो द्रव्य की विशेषता नहीं व्यक्त करते दूसरे, द्रव्य, प्रक्रिया आदि के साथ सम्बन्ध नहीं दिखाते वरन् एक तरफ से यह सूचित करते हैं कि द्रव्य किसी और व्यक्ति का है या दूसरी तरफ से उनके द्वारा सूचित करने वाले द्रव्य का बोध कराते हैं जब वे इस द्रव्य को अनेकों की संख्या में से निकालते हैं या अन्य समान द्रव्यों से इसकी तुलना करते हैं।

अर्थपूर्ण विशेषणों की श्रेणी में आने वाले गुणवाचक तथा सम्बन्धवाचक विशेषणों के विरोध में सार्वनामिक विशेषण आते हैं जो द्रव्य की विशेषता व्यक्त नहीं करते तथा अन्य द्रव्य, प्रक्रिया आदि के साथ सम्बन्ध भी नहीं दिखाते वरन् वे एक तरफ से यह सूचित करते हैं कि द्रव्य किसी और व्यक्ति का है या दूसरी तरफ से उनके द्वारा सूचित करने वाले द्रव्य को दूसरे अनेक द्रव्यों में से निकालते हुए या अन्य समान द्रव्यों से इसकी तुलना करते हुए दिखाते हैं।

सार्वनामिक विशेषणों में आते हैं : (1) पुरुषवाचक—मेरा, तेरा, हमारा, तुम्हारा; (2) निजवाचक—अपना; (3) सम्बन्धवाचक (पोज़ेसिव)—इसका, इनका, उसका, उनका, जिसका, जिनका, किसका, किनका; (4) निश्चयवाचक—यह, वह, ऐसा, इतना, वैसा, उतना; (5) सम्बन्धसूचक (रेलेटिव)—जो, जैसा, जितना; (6) प्रश्नवाचक—कौन, कौन-सा, कैसा, कितना क्या; (7) अनिश्चयवाचक—कोई, किसी, कुछ; (8) विशेष्य—आप, स्वयं, खुद; सब लोग; सारा, समूचा, सम्पूर्ण, समस्त, तमाम; प्रति हर। संयुक्त सार्वनामिक विशेषण यहाँ भी आ जाते हैं, जैसे कि ऊपर दी गयी सूची से दिखता है सार्वनामिक विशेषण शब्दों का एक मर्यादित ग्रुप है जो अपने व्याकरणिक लक्षणों के कारण सम्बन्धवाचक सर्वनाम है।

'मेरा', 'तेरा', 'हमारा', 'तुम्हारा' सार्वनामिक विशेषणों ने संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश में से होकर विकास का कठिन और लम्बा रास्ता तय कर लिया (दे. 89, 79, भाग दो, 182-192)। कुछ समकालीन विद्वान् समझते हैं कि यह सार्वनामिक विशेषण 'मे-', 'ते-', 'हमा-', 'तुम्हा-' के पुरुषवाचक सर्वनामों के रूपों के साथ 'रा' (रे, री) विकारी परसर्ग के योग से बन चुके हैं (दे. 82,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

321; 129, 5)। पुरुषवाचक सार्वनामिक विशेषण उत्तम और मध्यम पुरुष के साथ होनेवाले सम्बन्धों को दिखाते हैं यानी वे 'क' परसर्गसहित पुरुषवाचक सर्वनामों की रचना के अभाव को पूरा करते हैं। इसके कारण सार्वनामिक विशेषण पुरुषवाचक सर्वनाम के बदले सब संयुक्त परसर्गों के साथ सम्बन्ध कायम करते हैं, इसमें वे विशेषक सम्बन्ध नहीं मगर द्रव्यवाचक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे, मेरे पास आइये (1, 47), जो कि पूरे रूप से केवल वाक्य के स्तर पर स्पष्ट होता है (तुलना कीजिए—वह हमारी ओर को मुड़े और वह हमारी ओर मुड़े)।

'अपना' निजवाचक सार्वनामिक विशेषण ने भी विकास का लम्बा-सा रास्ता तय कर लिया (दे. 79, भाग दो, 210)। कुछ समकालीन भारतीय विद्वान् ऐसा ही समझते हैं कि यह विशेषण 'आप' रूप के साथ 'ना' (ने, नी) विकारी परसर्ग के योग से बन चुके हैं (दे. 82, 321; 129, 5)। निजवाचक सार्वनामिक विशेषण यह दिखाता है कि द्रव्य किसी भी पुरुष का है और वह 'आप' अधिकारी निजवाचक सर्वनाम के बदले सब परसर्गों के साथ सम्बन्ध कायम करते हैं।

सम्बन्धसूचक (पोज़ेसिव) सार्वनामिक विशेषण 'का' (के, की) विकारी परसर्ग के साथ अनुरूप सर्वनामों के अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक के रूपों का योग है। इसी कारण वे भी संयुक्त परसर्गों के साथ सम्बन्ध कायम करते हैं, इसमें वे विशेषक सम्बन्ध नहीं वरन् द्रव्यवाचक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे, जिस मनुष्य के दर्शनों के लिए, जिसके चरणों की रज मस्तक पर लगाने के लिए···(69, 58)।

लिंग, वचन तथा कारक की विभक्तिपरक कोटियों के साथ होने वाले सम्बन्ध के अनुसार हिन्दी के सब विशेषण विकारी, आंशिक रूप से विकारी तथा अविकारी विशेषणों में विभक्त हैं।

विकारी विशेषण जिनमें आकारांत या आँकारांत विशेषण आ जाते हैं विशेष्य के लिंग के अनुसार बदलते हैं। अगर यह विशेष्य पुल्लिग का शब्द है तो लिंग के अतिरिक्त वह वचन और कारक के अनुसार भी बदलते हैं।

उल्लेखनीय है कि आकारांत या आँकारांत के सब के सब विशेषण विकारी नहीं होते। संस्कृत तथा अरबी व फारसी भाषाओं से गृहीत कुछ विशेषण संज्ञाओं के साथ अन्वित नहीं होते। वे इनका प्रयोग अविकारी, संयोजकहीन समन्वित विशेषणों के समान होता है, जैसे, बढ़िया शराब (143, 14), दूधिया गेहूँ (15, 26), घटिया बात (136, 21), दूधिया बादलों का समुद्र (144, 37), ढलवा सड़क (30, 52), सुतवा नाक (28, 45), उम्दा-सी साड़ी (30, 42), ताज़ा दवाएँ (92, 382), आला ओहदों पर (1, 526), सादा कपड़े (151, 25), ज़िन्दा लाश (60, 47), दुमंज़िला इमारत (99, 34), दुतरफा चाल (97, 146)। इन विशेषणों में 'आनाह' (आना) प्रत्ययवाले विशेषण आ जाते हैं जो या तो फारसी भाषा से गृहीत हैं संकर ढंग से बना है, जैसे, व्यापाराना कीमतें (92, 359),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़ालिमाना हरकतें (49, 121), बुज़दिलाना व्यवहार से (83, 19), सिपाहीयाना पोशाक (44, 26)।

परन्तु आधुनिक भाषाई प्रयोग के कारण ये गृहीत या संकर किये हुए विशेषण भी बदलने लगे, जैसे, ज़िन्दे आदमी की हड्डियाँ (103, 9), दोमंज़िली पंक्ति (17, 242), जनानी पोशाक (4, 42), जनाने जेल में (69, 5), मरदानी गर्दन (28, 45)।

आंशिक रूप से विकारी विशेषणों में 'यह', 'वह', 'जो', 'कौन' सार्वनामिक विशेषण आते हैं जो वचन और कारक में अन्वित होते हैं तथा 'कोई' सार्वनामिक विशेषण जो सिर्फ कारकों में अन्वित होता है।

शेष सब विशेषण अविकारी हैं जो संयोजकहीन समन्वय के ज़रिये विशेष्य शब्द से जुड़ते हैं। अपवाद के रूप में कुछ संस्कृत से गृहीत विशेषण आते हैं जो हिन्दी में स्त्रीपुंजातीय सम्बन्धी जोड़ियों में प्रयुक्त होते हैं और जो कारकों और वचनों में नहीं बदलते। इन विशेषणों में आते हैं : (1) पुल्लिग में व्यंजनांत तथा स्त्रीलिंग में आकारांत या इकारांत मूल तथा साधित विशेषण, जैसे, प्रिय-प्रिया, चतुर-चतुरा, सुशील-सुशीला, पापिन-पापिनी, सुन्दर-सुन्दरी; (2) साधित विशेषण जो पुल्लिग व स्त्रीलिंग के विभिन्न प्रत्ययों के ज़रिये पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के रूप बनाते हैं, जैसे, बुद्धिमत (बुद्धिमान)—बुद्धिमती, गुणवत (गुणवान)-गुणवती, गौरवशालिन (गौरवशाली)-गौरवशालिनी, दयामय-दयामयी।

विकारी विशेषण लिंग का विरोध एक ही शब्दिम के अन्दर करते हैं क्योंकि वे सूचित संज्ञा का लिंग अपनाते हैं। इसका अर्थ यह है कि विकारी विशेषणों का लिंग शुद्ध वाक्यविन्यासात्मक हैं। विशेषणों के लिंग का शब्दार्थक मतलब दो ही स्थानों में आता है : (1) पुरुषवाचक सर्वनामों के साथ विशेषण के प्रयोग में, जैसे, तुम इतनी भावुक नहीं हो (143, 20-21), वह बिचारी···(52, 121); जैसी तुम वैसा मैं (103, 114) तथा (2) उन संज्ञाओं के साथ विशेषणों के प्रयोग में जो स्त्रीपुंजाति में यानी स्त्रीलिंग व पुल्लिग में दोनों में आते हैं, जैसे, यही मेरी मालिक होगी (24, 113), ···मैं आपकी नौकर हूँ (116, 9), तत्याना अच्छी चित्रकार थी (99, 76)।

विकारी विशेषण वचन में विरोध केवल पुल्लिग संज्ञाओं के पूर्व दिखाते हैं। स्त्रीलिंग संज्ञाओं के पूर्व विकारी विशेषण वचन की कोटि नहीं दिखाते, वह स्त्रीलिंग के अविकारी रूप में रहती हैं।

प्रथम कारक रचना की संज्ञाओं के साथ विकारी विशेषण वचन की वाक्य-विन्यासात्मक कोटि दिखाते हैं, जैसे, अच्छा लड़का—अच्छे लड़के। द्वितीय (पुल्लिग) कारक रचना तथा शून्य कारक रचना की संज्ञाओं के साथ विशेषण इन संज्ञाओं का वचन दिखाते हुए वचन के व्याकरणिक अर्थ का बोध कराते हैं, जैसे, अच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मज़दूर—अच्छे मज़दूर, नया कोदों—नये कोदों।

आंशिक रूप से विकारी विशेषणों में केवल निश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण 'यह' तथा 'वह' वचन में विरोध व्यक्त करते हैं, जैसे, यह लड़का—ये लड़के, वह औरत—वे औरतें। बाकी सार्वनामिक विशेषण बहुवचन प्रत्यक्ष कारक में वचन न दिखाते हुए केवल अप्रत्यक्ष कारकों में वचन में विरोध व्यक्त करते हैं, जैसे, जो लड़का—जो लड़के, कौन लड़का—कौन लड़के।

कारक की कोटि सभी आंशिक रूप से विकारी विशेषणों में तथा उन विकारी विशेषणों में, जो पुल्लिग संज्ञाओं को सूचित करते हैं, होती हैं। विशेषणों की कारक रचना में तीन कारक और छः कारकीय रूप हैं जो आंशिक रूप से विकारी तथा विकारी विशेषणों से काफी भिन्न हैं।

कारक वचन	प्रत्यक्ष	साधक	अप्रत्यक्ष परसर्गीय
एकवचन	यह लड़का	इस लड़के ने	इस लड़के को
बहुवचन	ये लड़के	इन लड़कों ने	इन लड़कों को
एकवचन	वह औरत	उस औरत ने	उस औरत को
बहुवचन	वे औरतें	उन औरतों ने	उन औरतों को
एकवचन	जो कमरा	जिस कमरे ने	जिस कमरे को
बहुवचन	जो कमरे	जिन कमरों ने	जिन कमरों को
एकवचन	कौन लड़की	किस लड़की ने	किस लड़की को
बहुवचन	कौन लड़कियाँ	किन लड़कियों ने	किन लड़कियों को
एकवचन	कोई आदमी	किसी आदमी ने	किसी आदमी को
बहुवचन	कोई आदमी	किसी आदमियों ने	किसी आदमियों को
एकवचन	अच्छा मज़दूर	अच्छे मज़दूर ने	अच्छे मज़दूर को
बहुवचन	अच्छे मज़दूर	अच्छे मज़दूरों ने	अच्छे मज़दूरों को
एकवचन	खुला दरवाज़ा	खुले दरवाज़े ने	खुले दरवाज़े को
बहुवचन	खुले दरवाज़े	खुले दरवाज़ों ने	खुले दरवाज़ों को
एकवचन	मेरा बेटा	मेरे बेटे ने	मेरे बेटे को
बहुवचन	मेरे बेटे	मेरे बेटों ने	मेरे बेटों को
एकवचन	पहला कोदों	पहले कोदों ने	पहले कोदों को
बहुवचन	पहले कोदों	पहले कोदों ने	पहले कोदों को

जैसा कि तालिका से स्पष्ट है निश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषणों में छः रूपों में से दो समाकार हैं, 'जो' सम्बन्धवाचक तथा 'कौन' प्रश्नवाचक सार्वनामिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषणों में छः रूपों में से तीन समाकार हैं, 'कोई' अनिश्यवाचक सार्वनामिक विशेषण में छः रूपों में से चार समाकार हैं, सब विकारी विशेषणों में छः रूपों में से पाँच समाकार हैं।

विशेषणों की तुलना—परम्परागत दृष्टि से हिन्दी में तुलना की तीन अवस्थाएँ समझी जाती हैं : (1) मूलावस्था, (2) उत्तमावस्था तथा (3) उत्तमावस्था : मगर आधुनिक हिन्दी के नियमों के अनुसार उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था का निर्माण रूपप्रक्रिया से बाहर जाता है और शुद्ध वाक्यविन्यासात्मक रचना है। इससे ज्यादा, अगर उत्तमावस्था यानी 'सब' विभक्ति सहित संज्ञापरक सार्वनामिक विशेषण के साथ विशेषण का योग विश्लेषणात्मक रचना के रूप में समझा जा सकता है तो उत्तरावस्था 'यानी' विभक्ति सहित संज्ञा (सार्वनामिक संज्ञा) तथा मूलावस्था में विशेषण सम्बन्धी वाक्यविन्यासात्मक रचना विश्लेषणात्मक नहीं समझी जा सकती, क्योंकि यहाँ पर तुलना को सूचित करनेवाले सहायक तत्त्व का भाव है । यह स्पष्ट है कि परसर्ग सहित संज्ञा को जिससे तुलना की जाती है 'सहायक' तत्त्व नहीं समझा जा सकता। इस तरह जो रचना प्रायः सभी हिन्दी के शोधकर्ताओं द्वारा विशेषणों की तुलना समझी जाती रही असल में तुलना को प्रकट करने के लिए एक वाक्यविन्यासात्मक उपाय है।

हमारे विचार में उत्तरावस्था में अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण 'अधिक' 'ज्यादा' और 'कम' के साथ विशेषण के योग को सम्मिलित करना चाहिए, जैसे, उसकी पत्नी उससे भी अधिक सीधी थी (102, 16), मुझसे ज्यादा बदनसीब औरत संसार में नहीं है (69, 17), छाती कम चौड़ी निकली है (32, 110)।

कभी-कभी 'अधिक' तथा 'ज्यादा' के स्थान पर 'कहीं' क्रियाविशेषण का प्रयोग होता है, जैसे, वह रस्सी इससे कहीं सुन्दर, कहीं मजबूत है (33, 114), इससे यह कहीं अच्छा है कि···(69, 32)।

उत्तरावस्था के विश्लेषणात्मक रूपों से उन विशेषणों तथा क्रियाविशेषणों के साथ विशेषणों के योग को अलग करना चाहिए जिनके ज़रिये गुण का न्यूनाधिक भाव सूचित होता है, जैसे, बड़ा गहरा पानी (143, 21), कुछ कम भेद (66, 133), पानी काफी कम हो जाता है (143, 21), बहुत कम गहने (66, 118) और भी अधिक भूख (72, 117), कुछ और गहरा हो जाना (16, 87), किंचित चौड़ा शरीर (17, 36), अत्यन्त भयंकर समस्या (66, 85)। उत्तमावस्था के विश्लेषणात्मक रूपों के विपरीत इन शब्द-समुदायों का प्रयोग बिना तुलित द्रव्य के होता है तो इनके ज़रिये तुलना नहीं की जाती, जैसे, पुलिस के हाथों गिरफ्तार हो जाना ज्यादा मुश्किल बात न थी (69, 30)।

उत्तमावस्था के विश्लेषणात्मक रूप मुख्यतः दो अर्थ व्यक्त करते हैं : (1) वे गुण के चारों भाव को सूचित करते हैं, जैसे, आज संसार का सबसे बड़ा आदमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने प्राणों की बाज़ी खेल रहा है (69, 71), इस सम्बन्ध में सबसे अधिक ध्यान देने की बात यह है कि···(115, 325)। विशेषणों की द्विरुक्ति का प्रयोग इसी अर्थ में होता है, जैसे, मैंने अच्छी-से-अच्छी सिलाई-कढ़ाई सिखाई (108, 61), बड़े-से-बड़े बलिदान तो वह पहले ही कर चुकी थी (69, 8)।

(2) वे एक या अनेक सजातीय द्रव्यों सम्बन्धी गुण की अधिकता या न्यूनता व्यक्त कर सकते हैं जिससे यह द्रव्य शेष द्रव्यों की कुल संख्या से अलग किये जाते हैं, जैसे, इस काल के लेखकों में सबसे प्रसिद्ध कालिदास हैं (2, 71), ऐसी टीकाओं में सबसे अधिक प्रसिद्ध पतंजलि का महाभाष्य है (2, 59)। जैसे कि उदाहरणों से स्पष्ट है यहाँ उत्तमावस्था के साथ-साथ 'में'/(या 'में से')/परसर्ग सहित द्रव्य आ जाता है जो गुण के चारों भाव का विस्तार सीमित करता है।

व्युत्पत्ति से संस्कृत तथा अरबी-फारसी विशेषणों ने विश्लेषणात्मक ढंग से विशेषणों की तुलना बनाने के साथ-साथ अपनी भाषाओं से प्राप्त उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था के संश्लेषणात्मक रूपों को बनाये रखा है जो संस्कृत शब्दों के लिए 'तर' तथा 'तम' और अरबी-फारसी शब्दों के लिए 'तर' तथा 'तरीन' प्रत्ययों से बनते हैं, जैसे,···उसका विश्वास दृढ़ से दृढ़तर होता जाता (17, 85), ···खेत लघु से लघुतर बँटते जा रहे हैं (115, 371), वह···मानव जीवन की शिवतम, सुन्दरतम और शाश्वततम व्याख्या भी प्रस्तुत कर रहे हैं (121, 48); इसकी सबसे ताज़ातरीन मिसाल है···(IV, 3-12-1972), मैंने अपनी ज़िन्दगी का बेहतरीन हिस्सा···जेलों में काट दिया (17, 383), तेज़तर बमबारी (IV, 5-11-1972), हम सब गए-बीते, कुत्तों से भी बदतर हैं (103, 199)।

शब्द-समुदायों के स्तर पर विशेषण निम्न सम्बन्ध व्यक्त करते हैं: (1) विशेषणात्मक जिनमें ये भेद हैं: (क) गुणात्मक-विशेषणात्मक—काली मखमली चप्पल (151, 19), लँगड़ा घोड़ा (52, 46), अगले दिन (99, 9), लाल-सा चेहरा (103, 24); (ख) परिमाणात्मक-विशेषणात्मक—पन्द्रहवाँ साल (66, 3), दूनी-चौगुनी रकमें (83, 32), कितनी लड़ाइयाँ (41, 6), उतना रुपया (52, 37), काफी पेड़ (99, 13); (ग) क्रियाविशेषणात्मक-विशेषणात्मक—ज़रा ऊँचा बोलो, मैं कम सुनता हूँ (27, 46), प्रायः उन्हें लेने के स्थान पर देने अधिक पड़ते हैं (115, 372); (2) पूर्णताबोधक—तू शर्मा को सीधा समझती है (151, 35), सुरजना ने अपने को निर्दोष बतलाया (44, 17); (3) विधेय-वाचक-विशेषणात्मक—औरत सिर से पैर तक नंगी पानी में से निकली (25, 21), सिर से उतारकर सूटकेस धरती पर खड़ा रखता हुआ मक्खन बोला··· (107, 104); (4) विधेयवाचक—उसके शाप को पूरा होने का समय आ गया है (28, 88), मुंशी जी को निर्मला के निर्दोष होने का विश्वास हो गया (66, 177); (5) कर्तावाचक (केवल सार्वनामिक विशेषण)—मेरा पीया हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्याला (103, 34), आपका बताया नुस्खा (143, 49), अपनी बनायी हुई तस्वीर (52, 132), इसके मरते ही···(52, 32)।

शब्द-समुदाय के स्तर पर होनेवाले अपने मुख्य कार्यों में विशेषण परसर्गों के साथ नहीं आ सकते। अपवाद के रूप में केवल 'वाला' विभक्ति आ सकती है जिसका प्रयोग दोनों अर्थपूर्ण तथा सार्वनामिक विशेषणों के साथ होता है। अर्थपूर्ण विशेषणों के साथ 'वाला' परसर्ग के प्रयोग से विशेषण का गुण तीव्र हो जाता है, जैसे, आज हम बड़ेवाले गाँव में गए थे (103, 66)। सार्वनामिक विशेषणों के साथ 'वाला' परसर्ग के प्रयोग से सम्बन्ध पर बल पड़ता है, जैसे, मेरेवाली जगह खाली है (52, 129)। इसके अतिरिक्त कुछ स्थानों में 'वाला' परसर्ग के प्रयोग से विशेषण में तुलनात्मक अर्थ आ जाता है, जैसे, इसलिए उसकी दुकान पर अब पहलेवाली भीड़ नहीं रहती (111, 80), उसका पहलेवाला जोश और पहलेवाली प्रसन्नता धीरे-धीरे कम होने लगी (151, 26)। जैसे कि उदाहरणों से स्पष्ट है 'वाला' परसर्ग के पूर्व आनेवाला विशेषण अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक के रूप में प्रयुक्त होता है।

वाक्य के स्तर पर विशेषण उसके निम्न अंगों के रूप में आता है: (1) विशेषण जिसमें ये भेद हैं : (क) संज्ञा-संलग्न विशेषण—लम्बी बरौनियाँ (103, 23), अतुल शक्ति (69, 36); (ख) विशेषण-संलग्न—बड़ा अच्छा (99, 77), कितना भीषण (69, 12), हल्का सुनहला (30, 74); (2) पूरक—स्त्री को बेवकूफ समझता है (103, 6), उसने वह सब पूरा कर डाला जो दारोगा ने भूल से अधूरा छोड़ दिया था (83, 7); (3) समानाधिकरण—मुझ अज़ीज को तूने अपनी दया से सब कुछ दिया (24, 5), वह विचारी···अपने बाल छोटे कटाती थी (52, 131); (4) विधेयवाचक विशेषण—एक-दूसरे से बुरी तरह लिपटे हम दोनों रो रहे थे—बेहोश, बेसुध (108, 101), साँवले खून से लथपथ जमीन पर लोटने लगा (113, 24); (5) विधेय—ज़रदालू सूखे थे और खट्टे-मीठे (30, 73), तुम मेरे हो, मैं तुम्हारी हूँ (103, 56), जानते हो यह जगह कौन-सी है? (151, 234), बात यह बड़ी पेचीदी जान पड़ती है (51, 19)।

आधुनिक हिन्दी में व्याकरणिक नियम के अनुसार विशेषण पूर्व स्थान में यानी विशेष्य के पूर्व आते हैं। इस पूर्व स्थान में विकारी और आंशिक रूप से विकारी विशेषण विशेष्य शब्द या निकटतम विशेष्य शब्द से नियमित रूप से अन्वित होते हैं। क्रम-विपर्यय सम्बन्धी परिस्थिति में जो व्याकरण की दृष्टि से मानक नहीं है बल्कि एक शैलीगत उपाय है। विशेषण भी विशेष्य से नियमित रूप से अन्वित होते हैं, जैसे, जरा एक बोतल अच्छी-सी भेज देना (69, 36), कभी-कभी चित्त मेरा बुरा हो जाता है (44, 10), रात आधी के लगभग बीत चुकी थी···(139, 100), चन्दा कँटीला-सा उसके ऊपर उठ आया था (103, 26),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूध मेरा किसी और के प्रति नहीं बहेगा (44, 125)।

उल्लेखनीय है कि सार्वनामिक संज्ञा के साथ विशेषण का प्रयोग पूर्व स्थान की तुलना में अधिक परिस्थिति में होता है, जैसे, तुम अकेली रहती जा रही हो (44, 10), वह बिचारी···अपने बाल छोटे कटाती थी (52, 131), आखिर में अकेली यह बोझ कब तक उठाऊँगी ? (151, 27), परन्तु तुलना कीजिए--अकेले तुम कैसे असहाय···(40, 66)।

विधेय-विशेषण तथा पूरक के कार्य में आनेवाले विशेषणों का प्रयोग व्याकरणिक नियम के अनुसार परिस्थिति में होता है।

उद्देश्य से सम्बन्धित विधेय-विशेषण के कार्य में आते हुए विकारी विशेषण (जो नियमतः अर्थपूर्ण होता है) उद्देश्य से नियमित रूप से अन्वित होता है, जैसे, एक महीना पूरा निकल आया (66, 202), वह भिखारिन जाने कितने दिनों की भूखी-प्यासी वहीं पड़ी थी (30, 66)।

परसर्गरहित प्रधान कर्म से सम्बन्धित पूरक के कार्य में आते हुए विकारी विशेषण (जो नियमतः अर्थपूर्ण होता है) पूरक से नियमित रूप से अन्वित होता है, जैसे, ···कुएँ गहरे करने से अधिक जल उपलब्ध किया जा सकता है (II, 5-4-1966, 15), ···दोनों ने बाबा के हुज़ूर में सिर नवाया और परिक्रमा पूरी करके बाहर निकल आए (15, 53), उसने गेट खुला छोड़ दिया था (8, 89)।

परसर्गसहित प्रधान कर्म से सम्बन्धित पूरक के रूप में आते हुए विकारी विशेषण (नियमतः अर्थपूर्ण) प्रधान कर्म से या तो नियमित रूप से अन्वित होता है, जैसे, हम न उन्हें तस्कीन दे सकते हैं न इस कमी को पूरी कर सकते हैं (4, 227), प्रभा···लड़कियों को आँखों में सुरमे की लकीरों से लम्बी बनाये देखती··· (96, 58), मिसेज़ शर्मा कहेंगे, मेरे बाद लड़के को भूखा रखा ! (107, 129), आखिर सब मुझे अकेले छोड़कर उस किले से निकल गए···(24, 114), आज उसकी आवाज़ ने उसे गूँगी नहीं बनाया (58, 40) या प्रधान कर्म से अन्वित नहीं होते, तब वह पुल्लिग एकवचन के रूप में आता है, जैसे, चुनी गयी सरकार जनता की जरूरतों को पूरा करने के लिए काम करे (II, 10-1-1968, 10), एक सिपाही ने उसे नंगा कर दिया (69, 10), मैं तुम्हारी डिग्री के लिए सबको भूखा और नंगा नहीं रख सकता (65, 4), तू शर्मा को सीधा समझती है (151, 35), तू प्यारी को बुरा कहती है (103, 69)।

उल्लेखनीय है कि प्रधान कर्म से अन्विति तब भी हो सकती है जब यह कर्म मिश्रित के दूसरे अंश में होता है, जैसे, निर्मला को प्रसन्न रखने के लिए उनमें जो स्वाभाविक कमी थी, उसे वह उपहारों से पूरी करना चाहते थे (66, 42), पाटन का प्रश्न तो इस स्वप्न है जिसे सच्चा किया जा सकता है (4, 105)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधेय-विशेषण जो वाक्य में पूरक के साथ आता है परसर्ग सहित प्रधान कर्म से अन्वित हो सकता है, जैसे, मैंने उसे जंगल में नन्ही-सी फेंकी हुई पाया था (54, 109)।

मुख्य विधेय के नामिक अंग के कार्य में आते हुए विकारी विशेषण उद्देश्य से नियमित रूप से अन्वित होता है, जैसे, कुरी बुरा है। काला है। गन्दा है (103, 69), धरती भूरी भरी-सी दिखायी देती थी (16, 75), तुम अब हमारी नहीं रह गयी हो राजकन्या (44, 10), उसकी माँ और दादी भूखी हैं (103, 98), खेत कैसे रंगीन हरे-हरे हैं। घर कैसे छोटे-छोटे से हैं (103, 101)।

गौण विधेय के नामिक अंग के कार्य में आते हुए विशेषण परसर्गसहित कर्ता से नियमित रूप से अन्वित होता है, जैसे, विकास की गति धीमी होते हुए भी इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता ···(II, 10-1-1966, 28), मालूम नहीं अभी रुपया पूरा होने में कितनी कसर है (72, 95), इसलिए गरीब देशों को ही अनुसन्धान-कार्य खर्चीले होने की बात सोचनी पड़ती है (II, 10-1-1968, 22)।

गौण विधेय के नामिक अंग के कार्य में आते हुए विशेषण परसर्गसहित कर्ता से या तो अन्वित होता है, जैसे, आज मुझे लग रहा है कि उसके शाप के पूरा होने का समय आ गया है (84, 88), ···मोटा भाई को गेट खुला रहना···पसन्द नहीं (8, 92), धारा के उल्टी बहने से उसका सामान डूबने लगा (84, 64) या इस कर्त्ता से अन्वित नहीं होता, तब वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यय परसर्गीय कारकों में आता है, जैसे, तीसरी पंचवर्षीय योजना की सफलता इसके कृषि लक्ष्यों के पूरा होने पर निर्भर होगी (132, 69), जब सिर पर हज़ारों बालों का खड़ा रहना बुरा नहीं लगता (19, 25)—तुलना कीजिए—एक सफेद बाल का ही खड़ा रहना (19, 25), द्रौपदी के बड़े होने पर उसके पिता ने स्वयंवर का आयोजन किया (84, 142), ···मानो चाय के ठण्डे होने का ध्यान हो आया हो (107, 12), ···उसने···भगवती भाई के सच्चे होने का प्रमाण दिया है (97, 33)।

उद्देश्यरहित रचनाओं में विधेय के कार्य में आते हुए विकारी विशेषण एकवचन पुल्लिग में आते हैं, जैसे, हम दोनों को बुरा लगा (103, 109), आज बहुत दिन बाद ऐसा लगा कि···(103, 222)।

विशेषणों का नामिकीकरण : व्याकरण की दृष्टि से विशेषणों का नामिकीकरण विशेषणों द्वारा साधक तथा परसर्गीय अप्रत्यक्ष कारकों के बहुवचन रूपों को अपनाने तथा उनमें स्त्रीपुंजाति सम्बन्धी रूपों को जुड़े रखने से सम्बन्धित हैं, जैसे, अब उसे मालूम हुआ कि संसार बुरों के लिए बुरा है और अच्छों के लिए अच्छा है (69, 129), लेकिन औरों ने कहा···(45, 28), कइयों ने एक साथ ही उत्सुक होकर पूछा (83, 69), बिचारियाँ मेरी खातिर घर छोड़-छाड़कर यहाँ भटक रही हैं (107, 9), छोटी ने मेरे, बाँके के लहू से टीका लगाया है (103, 337), ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने कितने इधर-उधर चल रहे थे (103, 331)।

वाक्यविन्यास की दृष्टि से नामिकीकरण शब्द-समुदायों के स्तर पर आश्रित शब्दों द्वारा नामिक विशेषणों को सूचित करने तथा वाक्य के स्तर पर उद्देश्य और कर्म के कार्य में प्रयोग करने की सम्भावना से सम्बन्धित हैं, जैसे, लेकिन अब इस वर्तमान का क्या करूँ? (108, 11), ···कयामत उस ऐसे-तैसे ने यह की··· (24, 33), तब अन्धे को बुलाया (69, 20), वह हर पुराने को नये से बदल लेगी, हर बुरे को अच्छे से बदल लेगी (107, 22), बस, ग्यारहवें के आगे वह नहीं बढ़े होंगे कि···(53, 41)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्यावाचक (संख्यांक)

संख्यांकों की कोटिगत विशेषता यह है कि वे द्रव्यों की संख्या सूचित कर सकते हैं। आधुनिक हिन्दी में संख्यांक का प्रयोग द्रव्य के अविकारी निर्धारक के रूप में होता है जिसमें कारक के अवशेषों को छोड़कर कोई और व्याकरणिक लक्षण नहीं है। संख्यांक के निर्धारक कार्य के कारण वे या तो अविकारी विशेषण से या अनिश्चित संख्यावाचक सर्वनाम से मिलते-जुलते हैं।

अपने अर्थ के अनुसार संख्यांक निश्चित संख्यावाचक में जिनमें अपूर्णांक-बोधक, समुदायवाचक (अगर ठीक कहा जाय तो समुदायवाचक-विभाजक) आते हैं और अनिश्चित संख्यांक में विभक्त होते हैं।

अपने रूप के अनुसार निश्चित संख्यावाचक मूल (रूढ़ व साधित) तथा संयुक्त हो सकते हैं। समुदायवाचक तथा अनिश्चित संख्यावाचक नियम के रूप में रूढ़ होते हैं। मूल में संख्यांकों में एक से लेकर दस तक तथा पूरी दहाइयों को सूचित करनेवाले समकाल के लिए रूढ़ संख्यांक आते हैं, जैसे, बीस (संस्कृत में विंसतिं), तीस (संस्कृत में त्रिसत्), चालीस (संस्कृत में चत्वारिंसत्), पचास (संस्कृत में पंचासत्), साठ (संस्कृत में षष्टि), सत्तर (संस्कृत में सप्तति), अस्सी (संस्कृत में अशीति), नब्बे (संस्कृत में नवति)।

परम्परागत रूप से जो 'सौ', 'हज़ार', 'करोड़', 'अरब', 'खरब' आदि शब्द संख्यांकों में सम्मिलित किए जाते थे, वास्तव में संज्ञा में आ जाते हैं जो इन कोटिगत लक्षणों से प्रमाणित हैं: (1) उपर्युक्त शब्द संज्ञापरक रूप में संख्यांक को प्रस्तुत करते हैं जिससे उनमें लिंग का बोध होता है, जैसे, सूद-दर-सूद मिलाकर एक हज़ार पूरा (54, 27), तनख्वाह पूरे डेढ़ सौ रुपये मिलते हैं (71, 54)—तुलना कीजिए—पूरे आधे दर्जन 'चिल्ला-पों' भी हैं (61, 54); (2) निर्धारक कार्य में आते हुए वे अपने ही विशेषण अपना सकते हैं, जैसे, तनख्वाह पूरे डेढ़ सौ रुपये मिलते हैं (61, 54), जिससे इनका प्रयोग उन परसर्गरहित संज्ञार्थक शब्द-समुदायों के समान होता है जिसका आश्रित घटक अपने विशेषण के साथ आता है, जैसे, डूबी रकम लेखा (56, 133)—उल्लेखनीय है कि 'पूरा' विशेषण पूर्णांक को सूचित करने के लिए प्रायः सभी निश्चित संख्यावाचकों के साथ आ सकता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे. ···और खानेवाले पूरे बारह प्राणी हैं (59, 28); (3) उनमें लिंग की कोटि है क्योंकि उसके पूर्व विशेषण, अनिश्चित संख्यावाचक या सर्वनाम प्रयुक्त हो सकता है, जैसे, कई हज़ार का कर्ज़ है (66, 36), वश चलता, तो ये दो हज़ार तुम्हारे कदमों पर रख देता···(96, 99), कुछ लाखों की तादाद में वहाँ के तरुण सैनिक···निकल पड़े हैं (121, 10); (4) संख्येय संज्ञाओं के समान वे संज्ञा-संलग्न विशेषण के रूप में समुदायवाचक अर्थ में आ सकते हैं, जैसे, वहाँ हज़ारों मनुष्य एकत्र हो गये (72, 216), हिन्दी को करोड़ों लोग आसानी से समझते हैं (31-10-1957)—तुलना कीजिए—ढेरों रुपये लाकर (25, 103), सेरों (लहू) बढ़ गया (103, 180)।

साधित संख्यांकों में ग्यारह से लेकर निन्यानबे तक सब संख्यांक आते हैं जो मूल संख्यांकों के विकृत रूपों से बने हैं।

संयुक्त संख्यांकों में एक सौ से लेकर यानी एक सौ एक, दो सौ, पौने हज़ार, सवा लाख इत्यादि संख्यांक 'सौ', 'हज़ार', 'लाख' आदि संख्यांकों को छोड़कर आते हैं।

'एक' निश्चित संख्यावाचक (जिसमें एक से कम अपूर्णांक संख्यांक तथा 'डेढ़' संख्यांक भी आते हैं) तथा दो से लेकर सभी शेष संख्यांकों के बीच होनेवाले विरोध के कारण संख्येय संज्ञाओं में एकवचन तथा बहुवचन का विरोध दीख सकता है। प्रत्यक्ष कारक में प्रथम तथा द्वितीय (स्त्रीलिंग) कारक रचना की संज्ञाएँ व्याकरणिक रूप से यह विरोध सूचित करती हैं, जैसे, एक लड़का—दो लड़के, एक लड़की—दो लड़कियाँ। बहुवचन के अप्रत्यक्ष कारकों में अपनी संज्ञाओं में यह विरोध स्पष्ट रूप से दीखता है, यहाँ पर बहुवचन के अव्यक्त रूप अपवाद के तौर पर आते हैं जो आधुनिक हिन्दी के भाषाई प्रयोग की विशेषता है।

अपने मुख्य अर्थ के अतिरिक्त यानी एकल द्रव्य को सूचित करने के अतिरिक्त 'एक' संख्यांक का प्रयोग नीचे दिए अर्थों में होता है : (1) अनिश्चायक आर्टिकल जो 'कोई' सार्वनामिक विशेषण के समान आता है, जैसे, एक बड़ी कम्पनी ने एक शहर में नयी शाखा खोली (35, 75), एक आदमी ने देवी जी को धक्का दे दिया (69, 45); (2) अनिश्चायक संख्यावाचक मार्कर जो 'कोई' सार्वनामिक क्रिया-विशेषण के समान आता है, जैसे, पचास-एक आदमी इकट्ठे हो गये थे (49, 129), ···एक परीज़ात औरत वर्ष चौदह-एक की (24, 121)।

एक से ज्यादा परन्तु दो से कम अपूर्ण संख्यांक यानी सवा और डेढ़ संज्ञा को बहुत्व का अर्थ प्रदान नहीं करते, जैसे, रुपया-सवा रुपया रोज (53, 8), वह रोज़ डेढ़ घण्टा प्रयोग करके···(17, 88)।

अपूर्ण संख्यांक भी मूल (सवा, डेढ़, ढाई, साढ़े, पौने) तथा संयुक्त (एक-तिहाई, दो-चौथाई, दो बटा चार) हो सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चित संख्यावाचक जैसे कि ऊपर लिखा है संज्ञा के पूर्व निर्धारक के रूप में आते हैं। बिना नामिकीकरण किए स्वतन्त्र रूप में संख्यांक नीचे दिए अर्थों में आते हैं: (1) घण्टों में समय को निश्चित करते हुए, जैसे, फौजी घड़ियाल ने बारह बजाये, एक बजाया, दो बजाये (69, 200), अभी तो डेढ़ ही बजा है (108, 218), चार बज चुके हैं (69, 99), रात के नौ बजे थे (66, 9)—कीजिए—हाल की घड़ी ने एक का घण्टा बजाया (109, 6); (2) हिसाब करते हुए, जैसे, इसे पाँच से गुणा कीजिए फिर इसमें छः जोड़ दीजिए, फिर चार से गुणा कीजिए (45, 21), इस संख्या को वह दस से भाग देता है, अर्थात् 12 के आगे के दो शून्य हटा देता है (45, 23); (3) दाम को बताते हुए, विशिष्ट मौद्रिक इकाइयों में, जैसे, कुल एक सौ पैंतीस की रकम दी (102, 51), यह हार छः सौ में बना था (65, 3), डाक बाबू भी दो हज़ार का सवाल करते हैं (66, 40); (4) किसी संख्या को (मुख्यतः लोगों को) सूचित करते हुए, जैसे, शेष एक करोड़ सत्रह लाख की जनशक्ति (II, 25-2-1970, 12), एशिया की जनसंख्या (चीन को छोड़कर) अस्सी करोड़ के निकट पहुँच रही है (XI, 14-10-1957), 1961 में भारत की कुल कार्यकारी जनशक्ति 18 करोड़ 87 लाख थी (II, 25-2-1970, 12)।

संख्यांकों के ऐसे प्रयोग से वे सार्वनामिक संज्ञाओं से मिलते-जुलते हैं, क्योंकि यहाँ पर संख्यांक द्रव्य के अर्थ में नहीं आते, केवल दूसरे द्रव्य को सूचित करते हैं।

अपूर्ण संख्यांक नियम के रूप में सदा अपने विशेष्य शब्द के साथ आते हैं। इनका स्वतन्त्र प्रयोग बहुत कम होता है, जैसे, अपने कुल धन का एक बटा आठ बड़े बेटे को दिया (61, 81)।

समुदायवाचक संख्यांक आधुनिक हिन्दी में बहुवचन अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक के अप्रचलित रूपों में आते हैं क्योंकि इनके रूप केवल दो से शुरू होते हैं। समुदायवाचक संख्यांकों में प्रथम दहाई के संख्यांक सबसे ज्यादा प्रचलित हैं हालाँकि दूसरी दहाइयों के समुदायवाचक संख्यांक भी मिलते हैं, जैसे, तीनों लाशें एक ही चिता में रखी गयीं (68, 14), चारों दिशाओं और आठों कोणों की ओर (49, 9), बत्तीसों दाँत दर्शनीय हो गए (49, 125), पचासों आदमी जमा थे (69, 45)।

समुदायवाचक अर्थ के साथ-साथ इन संख्यांकों में विभाजक अर्थ भी आता है, जैसे, मगर पाठक का रहना तो रात-दिन और बारहों महीने इसी बस्ती में होता था (49, 126), दसों बार महाराज खुश हुए (54, 24), दोनों ओर दर्शकों की दीवारें-सी खड़ी थीं (59, 58)।

अनिश्चित संख्यावाचक में कुछ ही शब्द आ जाते हैं—कई, बाज़चन्द; अनेक, एकाध, जिनमें से 'एकाध' शब्द को छोड़कर बाकी शब्द संज्ञा को अनिश्चित बहुत्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अर्थ प्रदान करते हैं, जैसे, कई हज़ार आदमी···खड़े हो गये (69, 58), कई आदमी गये (75, 40), बाज़ लोग हैं (41, 35), दोनों चन्द कदम बर्फ पर गये होंगे···(15, 86), अनेक स्थानों पर उसने···सर्वसाधारण को उत्तेजित किया (4, 95), अगर कोई आदमी···एकाध कंकड़ फेंक देता···(69, 11)। 'अनेक' शब्द समुदायवाचक संख्यांक के रूप में भी आ सकता है, जैसे, मुझमें अनेकों आग छिपी रहती हैं (102, 124)।

अनिश्चित संख्यावाचक के अर्थ में अनिश्चित संख्यावाचक अर्थ वाले कुछ विशेषण आ सकते हैं, जैसे, बहुत, कम, ज़रा, कुछ। आधुनिक हिन्दी में कुछ शब्दों का व्याकरणिक सम्मंजन काफी बड़ा होता है जो विशेष रूप से 'कुछ' और 'बहुत' जैसे शब्दों से स्पष्ट होता है। 'कुछ' शब्द के ऐसे नीचे अर्थ होते हैं : (1) अनिश्चित सार्वनामिक संज्ञा—मैं कुछ न बोलूँगा (67, 37); (2) विशेषण—इसका कुछ भरोसा नहीं (103, 258); (3) क्रियाविशेषण—फिर कुछ रुककर बोले (99, 93); (4) संख्यांक—कुछ रुपये लिए (66, 15), कुछ आदमी उसके साथ थे (75, 168)।

'बहुत' शब्द के अनेक अर्थ होते हैं : (1) विशेषण—साढ़े आठ सौ बहुत होते हैं (65, 66), कटक का विस्तार बहुत था (4, 45); (2) क्रियाविशेषण—बहुत चाहा··(4, 63); (3) संख्यांक—बहुत जन मूर्च्छित हो-होकर गिर गये (4, 84), और मैं वहाँ बहुत दिन न रहूँगी (142, 21-22)। 'बहुत' शब्द में अनिश्चित संख्यावाचक के अर्थ का निर्माण घनिष्ठ रूप से उसके विशेषण-क्रिया-विशेषण के अर्थ से जुड़ा हुआ है, जैसे, डेढ़ सौ रुपये बहुत हैं (61, 54), बहुत-से खानाबदोश आदमियों का रेवड़ पड़ा हो (4, 92), बहुत-सी काली मूर्तियाँ चारों ओर से उनके निकट चली आ रही हैं (4, 81)। 'बहुत' शब्द के कारक रूप तथा तुलना के रूप नहीं होते। इसके कारण 'सा' निपातरहित निर्धारक के रूप में यह विशेषण-क्रियाविशेषण विशेष्य शब्द को बहुत्व का अर्थ प्रदान करते हुए अनिश्चित संख्यावाचक के कार्य में प्रयुक्त होने लगता है।

जो भी 'बहुत' शब्द के बारे में लिखा गया है वह समान रूप में 'ज़रा' शब्द के लिए सही है और कहीं कम 'कम' शब्द से जुड़ा होता है क्योंकि 'कम' शब्द के तुलना के रूप हैं और वह अखण्ड क्रियामूलक समास में उसके घटक के रूप में आता है। विशिष्ट वाक्यविन्यासात्मक स्थानों में 'ज़रा' तथा 'कम' शब्द अनिश्चित संख्या-वाचक के रूप में आते हैं, जैसे, बाहर से बहुत कम कपड़े आते थे (69, 82), तुम्हें कम-से-कम योद्धा दूंगा (4, 137)।

शब्द-समुदाय के स्तर पर संख्यांक परिमाणात्मक-गुणात्मक कार्य में आते हैं तथा वाक्य के स्तर पर वे संज्ञा-संलग्न विशेषण के रूप में आते हैं। पुरुषवाचक सार्वनामिक संज्ञाओं के साथ समुदायवाचक संख्यांकों का प्रयोग संज्ञा के पूर्व या संज्ञा के बाद हो सकता है (हम दोनों तथा दोनों हम)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्यांकों का नामिकीकरण तथा विशेषणीकरण : समुदायवाचक संख्यांक अन्य संख्यांकों से कहीं ज्यादा नामिकीकृत बन जाते हैं क्योंकि उनमें अन्य संख्यांकों की तुलना में कहीं अधिक द्रव्यत्व सम्मिलित हैं। नामिकीकृत समुदायवाचक संख्यांक वाक्य के निम्न अंगों के रूप में आते हैं: (1) उद्देश्य (सामान्यीकृत भी)—उनकी गोलियों से हज़ारों घायल हुए और सैकड़ों मर गये थे (116, 77), चारों तीन-तीन साल काट आये हैं (69, 43), दर्द और कमज़ोरी दोनों जैसे गायब हो गयी (69, 40); (2) प्रधान कर्म (सामान्यीकृत भी)—मैंने दोनों को कुचलवाया (103, 329), आज वसन्त पंचमी है, सरस्वती-पूजा और वसन्त-स्वागत दोनों करने का आज विधान है (121, 23); (3) गौण कर्म—मैं उन पंचों से शादी करूँगी···(143, 22); (4) कर्तावाचक निर्धारक—दोनों को काम में रास आ रहा है (102, 92); (5) विशेषण (सामान्यीकृत भी)—आज जैसे दोनों के दिल एक हो गये थे (103, 329), ताड़ी और शराब—दोनों की दुकानें मिली हुई थीं (69, 34)।

नामिकीकृत निश्चित संख्यावाचक सार्वनामिक संज्ञाओं के समान आते हैं। कुछ स्थानों में इसका दावा करना मुश्किल होता है कि क्या हुआ नामिकीकरण या संज्ञा का लोप जिसके बारे में ऊपर लिखा है। नामिकीकृत निश्चित संख्यावाचक संज्ञाओं में पहला स्थान 'एक' संख्यांक लेता है जो दूसरे ऐसे संख्यांकों के साथ वाक्य के निम्न अंगों के रूप में आता है : (1) उद्देश्य—एक ने नारायणी को पकड़ लिया (102, 132), इन आठ में से प्रथम चार अधिक प्रभावशाली भी थे (2, 43); (2) प्रधान कर्म—उन्होंने एक को भी पकड़ लिया···(103, 431), उनमें से प्रथम पाँच को वह देवी के मन्दिर में ले गये (2, 208); (3) गौण कर्म—उक्त सैंतीस में से पच्चीस बच गयीं और सिर्फ बारह मरीं (143, 20); (4) विधेय—पक्का चार सौ बीस है वह (61, 99), हम दो थे (102, 112)।

अनिश्चित संज्ञावाचक का नामिकीकरण विशेषणों के नामिकीकरण के अनुकूल होता है हालाँकि विशेषणों की तुलना में वाक्य के स्तर पर नामिकीकृत अनिश्चित संख्यावाचकों का प्रयोग काफी सीमित होता है। नामिकीकृत अनिश्चित संख्यांक बहुधा विशेषण के रूप में आते हैं, जैसे, कइयों के सिर से खून की धारें बह चलीं, कई हाथ-पैर में चोट खाकर गिरकर तड़पने लगे (83, 15), अनेकों की दाढ़ियाँ आधी जलकर उनकी विचित्र सूरत बन गयी थी (4, 92), कइयों ने एक साथ ही उत्सुक होकर पूछा···(83, 69)।

संख्यांकों का विशेषणीकरण 'एक' संख्यांक के विशेषणीकरण से जुड़ा हुआ है जो आधुनिक हिन्दी में शब्दकोशों से प्रमाणित है। विशेषण के रूप में 'एक' शब्द-समुदाय के स्तर पर विशेषणवाचक कार्य में तथा वाक्य के स्तर पर विशेषण तथा विधेय के कार्य में आता है, जैसे, भगवान के यहाँ दोनों एक हैं (113, 21), आज हम एक हुए हैं (103, 83), एक-एक चीज की आलोचना होती रही (65, 9)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिया

क्रिया का मुख्य कोटिबद्ध लक्षण यह है कि वह व्यापार या स्थिति जैसी उस प्रक्रिया को बोध कराती है जो पुरुष, वचन, काल, अर्थ, प्रकार की व्याकरणिक कोटियों में तथा लिंग, पक्ष व वाच्य की शाब्दिक-व्याकरणिक कोटियों में व्यक्त होती है।

क्रिया के दो रूप हैं : अविधेय और विधेय। नीचे इन दोनों रूपों का विवरण दिया जाता है।

क्रिया का अविधेय रूप

क्रिया की धातु

आधुनिक हिन्दी में क्रिया की धातु क्रिया के सब विधेय तथा अविधेय रूपों को बनाने का मूल रूप है। अपने शब्द-रचनात्मक सम्बन्धों के अनुसार धातु क्रियापरक और नामधातु में विभक्त होती है। अपनी तरफ से क्रियापरक धातु मूल धातु में जिससे प्रचलित उत्पादक प्रत्यय निकाले नहीं जा सकते, तथा साधित (सकर्मक व प्रेरणार्थक) धातु में विभाजित है जो प्रचलित उत्पादक प्रत्ययों के ज़रिये मूल धातु से बनती है। नामधातु भी मूल धातु में जो नाम से परिवर्तन के ज़रिये बनी है तथा साधित धातु में, जो नामधातु से प्रचलित उत्पादक प्रत्ययों के ज़रिये बनी है, विभाजित है। परिवर्तित धातु और साधित नामधातु क्रियापरक धातुओं के सब क्रियावाचक लक्षण अपना लेती हैं।

मूल क्रियापरक धातु	प्रत्यय	साधित धातु
कर	आ	करा
कर	वा	करवा
पी	ला	पिला
पी	ल्वा	पिलवा
देख	आ	दिखा
देख	ला	दिखला
देख	वा	दिखवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामधातु	प्रत्यय	मूल क्रियापरक नामधातु	साधित क्रियापरक नामधातु
डर	—	डर	
खरीद	—	खरीद	
बदल	—	बदल	
शर्म	आ	—	शरमा
गहर	आ	—	गहरा
अलग	आ	—	अलगा
अपन	आ	—	अपना
मोट	आ	—	मोटा
झुठ	ला	—	झुठला
हाथ	इया	—	हथिया
गोल	इया	—	गोलिया
जल्द	इया	—	जल्दिया

ये मूल क्रियापरक नामधातुएँ साधित (सकर्मक या प्रेरणार्थक) धातु बना सकती हैं, जैसे, बदल—बदला—बदलवा; डर—डरा—डरवा।

अपनी रचना के अनुसार धातु संश्लेषणात्मक (मूल या साधित) तथा विश्लेषणात्मक होती हैं जिनमें दो और ज्यादा घटक हो सकते हैं। विश्लेषणात्मक धातु कर्मणि, पक्ष सम्बन्धी तथा संयुक्त नामिक हो सकती है। कर्मणि धातु द्वितीय सरल कृदन्त और 'जाना' सहायक क्रिया के मेल से बनी है; पक्ष सम्बन्धी धातु रंजक क्रियाओं के साथ प्रथम तथा द्वितीय सरल कृदन्तों, प्रथम और द्वितीय सरल क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों, क्रियार्थक नामों तथा स्वयं धातु के मेल से बनी है; संयुक्त नामिक धातु सहकारी क्रिया के धातु के साथ रूप-प्रक्रियात्मक दृष्टि से 'नष्ट' नाम के मेल से बनी है। विश्लेषणात्मक धातु सम्मिश्रित हो सकती है यानी वह कर्मणि तथा पक्ष सम्बन्धी धातुओं के मेल से तथा पक्ष सम्बन्धी और नामिक धातुओं के मेल से बन सकती है, जैसे :

धातु/धातु	कर्मणि	पक्ष सम्बन्धी	संयुक्त नामिक
कर्मणि	लिखा जा	लिखा जा सक	शुरू किया जा
पक्ष सम्बन्धी	लिखा जा चुक	लिखता जा	शुरू किया कर
संयुक्त नामिक	शुरू किया जा	शुरू किया कर	शुरू कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि कर्मणि तथा संयुक्त नामबोधक धातुएँ एकरूपी हैं यानी समान पुनरावर्ती, अर्थ की दृष्टि से प्रधान तत्त्वों से बनी हैं (कर्मणि धातु में यह द्वितीय सरल कृदन्त तथा संयुक्त नामिक धातु में यह रूप-प्रक्रिया की दृष्टि से 'नष्ट' नाम है) तो पक्ष सम्बन्धी धातुएँ बहुरूपी हैं क्योंकि मुख्य अर्थपूर्ण घटक के रूप से क्रिया के विभिन्न अविधेय रूप आते हैं, जैसे :

रंजक क्रिया धातु धातु	पूर्व-कालिक कृदन्त अव्यय	प्रथम कृदन्त	द्वितीय कृदन्त	प्रथम क्रिया-विशेषण कृदन्त	द्वितीय क्रिया विशेषण कृदन्त	क्रिया-मूलक नाम	तुमर्थ
आ	+	+	+		+		
उठ	+						
कर						+	
चल	+	+					
चाह						+	
चुक	+						
छोड़	+						
जा	+	+	+	+	+		
डाल	+				+		
दे	+				+		
निकल	+						
पड़	+		+				+
पा	+						
बन					+		
बैठ	+						
मार	+						
रख	+		+		+		
रह	+	+	+		+		
ले		+				+	
सक	+						
हो							+

अविधेय क्रिया रूपों के साथ रंजक क्रिया के सभी सम्भव संयोगों की उपर्युक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका का यह मतलब नहीं है कि धातु का प्रयोग सभी शाब्दिक श्रेणियों के अविधेय क्रिया रूपों के साथ हो सकता है क्योंकि यहाँ रंजक क्रिया तथा अविधेय रूप की शाब्दिक तथा व्याकरणिक अनुरूपता प्रथम स्थान लेती है। अनुरूपता के नियम रूप-प्रक्रिया में नहीं, वरन् शैली विज्ञान में आते हैं जो इस पुस्तक की सीमाओं से बाहर है।

कुछ क्रियापरक धातुओं से परिवर्तन के ज़रिये भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं जो भाषाई प्रयोग के अनुसार स्त्रीलिंग समझी जाती हैं, जैसे, मार, रोक, लूट, समझ, माँग।

सरल क्रियापरक नामधातु दुवारा परिवर्तित नहीं होती, वे नामिक धातु का लिंग सुरक्षित रखती हैं, जैसे, डर—पुल्लिग का शब्द, खरीद—स्त्रीलिंग का शब्द।

क्रियापरक तथा क्रियापरक नामधातुओं से इनके समाकार क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त अलग करना चाहिए जो भाषाई प्रयोग के परिणामस्वरूप पूर्वकालिक कृदन्त अव्यय द्वारा 'कर', 'के', 'करके' रूप-निर्माण विषयक प्रत्ययों के लोप से बने हैं। धातुओं के विपरीत उनसे समाकार क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों का स्वतन्त्र प्रयोग होता है, जैसे, ···तीन घण्टे में काम खत्म कर संध्या लौट भी गया था (96, 18)।

धातुओं से उनके समाकार आज्ञार्थ के मध्यम पुरुष का रूप भी अलग करना चाहिए जिसका स्वतन्त्र प्रयोग भी हो सकता है, जैसे, आ लड़ाई आ, मेरे आँगन में से जा ! (10, 93)।

इसी तरह आधुनिक हिन्दी में धातु एक रूपाश्रित सहायक तत्त्व है जो क्रिया के विभिन्न रूपों के निर्माण का मूल रूप है। इसीलिए उसके कोई भी वाक्य-विन्यासात्मक लक्षण नहीं हैं।

तुमर्थ (क्रिया का साधारण रूप)

आधुनिक हिन्दी में तुमर्थ एक क्रियावाचक नामिक अविधेय रूप है जिसमें क्रिया, संज्ञा तथा कृदन्त के लक्षण सन्निहित हैं। व्युत्पत्ति की दृष्टि से तुमर्थ एक तरफ से 'ईय' ('अनीय') प्रत्ययवाले संस्कृत भविष्यत् (संस्कृत 'करणीय', प्राकृत 'करनीया', 'कराना', हिन्दी 'करना') तथा दूसरा तरफ 'अनन' प्रत्ययवाले संस्कृत क्रियापरक नाम से (कथनन—कहना, चलनन—चलना) निकाला जाता है (दे. 79, भाग-2, 244)। इससे हिन्दी में तुमर्थ की तिगुनी प्रकृति समझी जा सकती है।

आधुनिक हिन्दी में तुमर्थ सरल होता है जो क्रियावाचक या क्रियावाचक नामधातु से 'न' प्रत्यय तथा 'अ' विभक्ति की सहायता से बनता है तथा साधित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(यौगिक) होता है जो सहायक, रंजक या सहकारी क्रिया के कार्य में आनेवाले सरल तुमर्थ तथा मुख्य क्रिया के कृदन्त या क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के मेल से बनता है। साधित तुमर्थ कर्मणि, पक्ष सम्बन्धी तथा संयुक्त नामिक में विभक्त होता है। कर्मणि तथा संयुक्त नामिक तुमर्थ अनुकूल धातुओं की भाँति एकरूपी हैं क्योंकि इनके अर्थ की दृष्टि से प्रधान घटक में एक ही समान रूप (द्वितीय सरल कृदन्त या रूप-प्रक्रिया की दृष्टि से 'नष्ट' नाम) प्रयुक्त होते हैं। पक्ष सम्बन्धी तुमर्थ बहुरूपी हैं क्योंकि यहाँ पर प्रधान घटक के कार्य में विभिन्न अविधेय रूप आते हैं हालांकि धातुओं के रूपों की तुलना में विश्लेषणात्मक रूपों की संख्या कुछ कम होती है ('करना', 'चाहना', 'बनना', 'होना' रंजक क्रियाओं समेत पक्ष सम्बन्धी तुमर्थ रूप प्रयुक्त नहीं होते तथा 'आना', 'चलना', 'डालना', 'देना', 'पड़ना', 'लेना' रंजक क्रियाओं के तुमर्थ रूप भी कम हैं), जैसे :

तुमर्थ	धातु	पूर्वकालिक कृदन्त अव्यय	प्रथम कृदन्त	द्वितीय कृदन्त	प्रथम क्रिया-विशेषण-वाचक कृदन्त	द्वितीय क्रिया-विशेषणवाचक कृदन्त
आना		+	+	+		
उठना		+				
चलना		+				
चुकना		+				
छोड़ना		+				
जाना		+	+	+	+	+
डालना		+				
देना		+				
निकलना		+				
पड़ना		+				
पाना		+				
बैठना		+				
मारना		+				
रखना		+			+	+
रहना		+	+	+	+	+
लेना		+				
सकना		+				

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल और साधित तुमर्थ में निम्नलिखित क्रियावाचक लक्षण हैं :

(1) वाच्य की कोटि। सब अकर्मक तुमर्थ में कर्तृवाच्य रूप हैं। सब सकर्मक तुमर्थों में कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य के रूप हैं। सब भाववाच्य (पुरुष शून्य) तुमर्थों में कर्मवाच्य या निजवाचक (कर्तृगामि) भाववाच्य का अर्थ निहित है, जैसे, (क) उस समय उसके मुँह से आवाज़ निकलना भी मुश्किल हो जायेगी (59, 72), ···वे चलने को तैयार हुए···(10, 10); (ख)···प्रेमपत्र भेजना एक बड़ी समस्या रही है (143, 52), उसके पैरों से रौंदे जाने में सेठी को सुख अनुभव हो रहा था (96, 12); (ग) बक्स खुलने के समय माधो का दिल···धड़क उठा··· (102, 87-88), ···जैसे टाँग का कट जाना हर रोज़ की बात थी (30, 113)।

(2) पक्ष की कोटि। (क) नित्यताबोधक पक्ष—ऐसे में अधिक देर तक घूमते रहना सम्भव नहीं था (142, 143); (ख) नित्यताबोधक पूर्णपरिणामी पक्ष—···दल के लिए तुम्हारा बचे रहना अधिक उपयोगी होगा (97, 22); (ग) घटमान पक्ष—सेठी उसे खिलाते जाना चाहता था (96, 15); (घ) घटमान पूर्णपरिणामी पक्ष—···वे···अपने योद्धाओं को बढ़े आने को ललकार रहे थे (4, 176); (च) विद्यर्थक (सम्भाव्य) पक्ष—इस प्रस्ताव का पास हो सकना ही असम्भव जान पड़ रहा था (97, 158), ···उसे कहानी में ला पाना बड़ा मुश्किल लगता था (13, 179); (छ) समापक (प्रभावी) पक्ष—···देवताओं के पी चुकने के बाद शायद उनकी बारी आये (84, 33); (ज) अवधारण पक्ष—···आदमी की मौत का सुन लेना या कह देना एक भारी नैतिक अपराध लगता है (116, 37), अब पाला सिंह ने टाल जाना ही उचित समझा (75, 52)।

(3) सापेक्ष कालसूचक अर्थ की कोटि। सरल परसर्गरहित तुमर्थ क्रिया विधेय के साथ सहायक व्यापार की समक्षणिकता व्यक्त करता है, जैसे, तीस की नौकरी बताना अपमान की बात थी (65, 39), कर्मों के द्वारा जीवन में जो गुफाओं का जाल है, उनका नाश करना, शुद्ध-पवित्र बनना, आनन्द में मग्न रहना, ईश्वर में भक्ति रखना इत्यादि में ही शिक्षा का आयोजन, देश-सेवा तथा समाज का मंगल निर्भर है (100, 113), क्या बीच में उसे छोड़ देना कापुरुषता ही नहीं हो जायेगी (44, 44-45)।

विभिन्न परसर्गों के साथ तुमर्थ क्रियाविधेय के व्यापार की पूर्वकालिकता तथा परकालिकता प्रकट कर सकता है, जैसे, (क) मन्त्री-पद पर आने के बाद उनकी लोकप्रियता और प्रभाव और बढ़ा (II, 20-11-1965, 12), ···यह दस्ताबन्द नौकर के तनख्वाह माँगने पर पहले भी कई बार खो चुका है (116, 53) और (ख)···शायद जाने के पहले बच्ची को देखने···के लिए आवें (66, 101), वैद्यों के बुलाए जाने के पहले ही उनकी मृत्यु हो गयी (84, 88)।

(4) सकर्मकत्व तथा अकर्मकत्व की कोटि। सकर्मक तुमर्थ के साथ न केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान कर्म बल्कि दूसरा परसर्गरहित या सहित तुमर्थ और सुपाईन का प्रयोग हो सकता है, जैसे, इसके लिए स्कूल-कॉलेजों में लड़के-लड़कियों को परस्पर घृणा करना सीखना चाहिए (143, 26), वह जिन जंजीरों को तोड़कर चला आया है, उनको टूटी ही पड़ी रहने देना चाहता है (116, 74)। अकर्मक तुमर्थ के साथ व्यापार के कर्त्ता तथा सुपाईन का प्रयोग हो सकता है, जैसे, इसका मूल कारण··· जनसंख्या-वृद्धि न रुक पाना बताया गया है (II, 5-4-1966, 4), अगर आपको मेरा खेलने जाना पसन्द नहीं···(66, 61)। भाववाच्य तुमर्थ के साथ कर्म का भी प्रयोग हो सकता है, पर सकर्मक क्रियाओं के प्रतिकूल भाववाच्य क्रियाएँ वाक्य के स्तर पर पूर्ण कालवाचक रूपों में कर्मणि अथवा भाववाच्य रचनाओं को बना नहीं सकतीं परन्तु अकर्मक क्रियाओं की तरह केवल कर्तृवाचक रचना को बनाती हैं।

(5) अर्थ की कोटि। तुमर्थ आज्ञार्थ का मतलब अपना सकता है जो 'तुम' या 'तू' सर्वनामों के साथ आज्ञार्थ रूपों के समान हैं, जैसे, देखो, रुपये की ज़रूरत पड़े, तो मुझे तार देना (65, 231), तो बस, तेरी ही जिद है, तू ही जाना (69, 76)।

(6) विधेयन की कोटि। जो इसमें अपने को व्यक्त करती है कि तुमर्थ का अपना ही कर्ता हो सकता है और वह तार्किक विधेय भी सूचित कर सकता है। इसमें तुमर्थ अनाश्रित निरपेक्ष रचना बनाता है या उद्देश्यवाचक तुमर्थ वाक्यांश में आ सकता है। सकर्मक तुमर्थ का कर्ता 'का' परसर्गसहित आता है और अकर्मक या भाववाच्य तुमर्थ का कर्ता परसर्गसहित या रहित हो सकता है, जैसे, कृष्णा का यह सुनना था कि···(84, 117), लड़के माँ के मना करने की परवाह न करते (69, 213), अपने पिता का मारना भूल न सके थे (84, 66), बाल्टी के टूट जाने से रस्सी उतने ही ज़ोर से ऊपर को फिरी थीं···(17, 386-387), तभी उसने हाल-कमरे का दरवाज़ा बन्द होने···की आवाज़ सुनी (13, 155), बक्स खुलने के समय माधो का दिल···धड़क उठा···(102, 87-88), जूते पड़ने रुक गये। (103, 379)।

(7) वृत्ति (प्रकारता) तथा पक्ष सम्बन्धी कोटियाँ जो अपने को इसमें व्यक्त करती हैं कि तुमर्थ कुछ रंजक क्रियाओं के साथ व्याकरणीकृत तथा संयुक्त रचनाओं को बना सकता है। इसके अतिरिक्त आधुनिक हिन्दी में तुमर्थ कुछ रंजक क्रियाओं के साथ व्याकरणीकृत तथा वर्णनात्मक कालवाचक रचनाओं को बना सकता है जो वाक्य में संयुक्त या जटिल विधेय के रूप में आती हैं। इनमें ये रचनाएँ आती हैं :

(क) आवश्यकताबोधक रचनाएँ जो तुमर्थ के साथ 'होना' व 'पड़ना' तथा 'चाहिए' वृत्तिवाचक क्रिया के मेल से बनी हैं;

(ख) कालवाचक रचनाएँ जिनसे यह प्रकट होता है कि व्यापार निकट भविष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पूरा किया जायेगा;

(ग) वृत्तिवाचक रचनाएँ जो तुमर्थ द्वारा सूचित व्यापार को पूरा करने की सामर्थ्य प्रकट करती हैं;

(घ) पक्ष सम्बन्धी रचनाएँ जो तुमर्थ द्वारा सूचित आरम्भ हुए व्यापार की विभिन्न प्रकार की पूर्णता प्रकट करती हैं;

(च) पक्ष सम्बन्धी रचनाएँ जो तुमर्थ द्वारा सूचित व्यापार का आरम्भ प्रकट करती हैं;

(छ) पक्ष सम्बन्धी रचनाएँ जो तुमर्थ द्वारा सूचित व्यापार की समाप्ति प्रकट करती हैं;

आधुनिक हिन्दी में तुमर्थ की नामिक प्रकृति इसमें व्यक्त होती है कि उसका नामिकीकरण तथा कृदन्तीकरण हो सकता है।

आधुनिक हिन्दी में तुमर्थ का पूर्ण तथा आंशिक नामिकीकरण होता है।

आधुनिक हिन्दी में तुमर्थ का पूर्ण नामिकीकरण प्रायः नहीं मिलता जिसमें बहुवचन की कोटि समेत जो कि संज्ञाओं की श्रेणी में तुमर्थ के पूर्ण संक्रमण का सबसे मुख्य लक्षण है तुमर्थ संज्ञा के सब रूप-प्रक्रियात्मक लक्षण अपना लेता है। आधुनिक हिन्दी में इन पूर्ण नामिकीकृत तुमर्थों में 'खाना', 'गाना' और कुछ दूसरे शब्द आते हैं जो एक तरफ से बहुवचन में प्रयुक्त हो सकते हैं और दूसरी तरफ उनके समनाम क्रिया के पुरुषवाचक रूपों से संलग्न हो सकते हैं, जैसे,···कुछ थियेटर के गाने आ जाएँ और बस···(73, 41), उसने गाना नहीं गाया (44, 100), खाना खा लिया (44, 109)। इसी तरह पूर्ण नामिकीकरण में तुमर्थ दूसरी शाब्दिक-व्याकरणिक श्रेणी—संज्ञाओं की श्रेणी में आ जाता है।

आंशिक नामिकीकरण में तुमर्थ के नामिक लक्षण उनके क्रियावाचक लक्षणों के साथ-साथ मौजूद हैं और इसी तरह तुमर्थ केवल विशेष परिस्थितियों में संज्ञा के कार्य में आता है लेकिन इसमें वह अपने विशिष्ट क्रियावाचक लक्षण सुरक्षित रखता है।

नामिकीकरण में तुमर्थ निम्नलिखित नामिक लक्षणों को सूचित करता है :

(1) नामिकीकृत तुमर्थ में पुल्लिग की कोटि है जो उससे विशेषणवाचक शब्दों की अन्विति में तथा विशेषणवाचक शब्द से व्यक्त क्रिया विधेय के साथ उसके समानाधिकरण में प्रकट होती है, जैसे, गाँववालों के लिए कोदई का पकड़ लिया जाना लज्जाजनक मालूम हो रहा था (71, 158), कुछ देर बाद गोलियों का चलना बन्द हुआ (116, 72), अगर आपको मेरा खेलने जाना पसन्द नहीं··· (66, 61),···मेरे मिटते जाने से उन पर प्रभाव पड़ता है···(20, 50)।

(2) नामिकीकृत तुमर्थ में साधक कारक समेत कारकों की कोटि है, जैसे, लोगों का आना आरम्भ हुआ (61, 47)—प्रत्यक्ष कारक; राम के वन भेजने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरत का हाथ था (84, 89)—अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक; लगातार भूखा रहने ने उसे कठोर और बेईमान-सा बना दिया था (28, 121)—साधक कारक।

(3) नामिकीकृत तुमर्थ में एकवचन और बहुवचन का विरोध नहीं है और वह नियम के अनुसार Singularia tantum संज्ञाओं के समान आता है। अपवाद के रूप में यहाँ कुछ पूर्ण नामिकीकृत तुमर्थ आते हैं, जो संज्ञाओं की श्रेणी में पूरी तरह से आ चुके थे और जो तुमर्थ के शाब्दिक समनाम बन चुके हैं। इन शब्दों की चर्चा ऊपर की गयी है।

(4) नामिकीकृत तुमर्थ के पूर्व विशेषण या 'का' परसर्ग समेत संज्ञा आ सकती है, जैसे, उसका चलना कठिन होता जाता (30, 91), ···दल के लिए तुम्हारा बचे रहना अधिक उपयोगी होगा (97, 22), रामा को इस वक्त रतन का आना बुरा मालूम हुआ (65, 83), ···इस प्रस्ताव का पास हो सकना ही असम्भव जान पड़ रहा था (97, 158)।

(5) नामिकीकृत सकर्मक तुमर्थ के साथ 'का' परसर्ग समेत संज्ञा से व्यक्त कर्म का प्रयोग हो सकता है, जैसे, इस भीष्म प्रण के करने से ही देवव्रत का नाम भीष्म पड़ा (84, 134), जेलर के गिनती पुकारते जाते पर भीगी···बेंत को···अभियुक्त के शरीर पर मारता है (97, 153), ···अगले महीने के अन्तिम सप्ताह में यूरोपीय सम्मेलन का किया जाना काफी असम्भव है (IV, 20-5-1973)।

(6) नामिकीकृत तुमर्थ के साथ प्राय: सब परसर्गों का प्रयोग हो सकता है, जैसे, मेरे मित्र मिट रहे हैं और इस मिटने में उनकी ममता है आधार (20, 50), बराबर लड़ाई होती रहने के कारण सिक्खों को तीन लाभ हुए (2, 209), हाथ रोकने पर भी बीस हज़ार से कम खर्च न होंगे (66, 4), कुलसुम के पाने की उसे इतनी प्रसन्नता थी···(30, 88), रमा ने उसे लेने से साफ इनकार कर दिया (65, 159), न खाने को कोई चीज़ मिली, न पीने को चाय-काफी (99, 172), भाभा ने रुपये भेजने पर जोर दिया···(72, 102), खेती को व्यावसायिक आधार पर चलाने के लिए किसानों में एकाउंट रखने के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने की आवश्यकता नहीं है (II, 5-12-1967, 21)।

(7) नामिकीकृत तुमर्थ वाक्य के स्तर पर संज्ञा के लिए स्वाभाविक सब प्रकार्य पूरा कर सकता है:

(क) उद्देश्य—आधे पेट खाने ने समय से पहले उसके चेहरे पर लकीरें बना दी थीं···(15, 11), पूरे वर्ष-भर वस्तु का मिलते रहना उसकी सेवा का फल है (101, 203), ···लोगों का आना आरम्भ हुआ (61, 47), गाँववालों के लिए कोदई का पकड़ लिया जाना लज्जाजनक मालूम हो रहा था (71, 158)।

निरपेक्ष तुमर्थ वाक्यांश अंशत: उद्देश्य के रूप में आता है क्योंकि वाक्य का क्रियार्थक संयोजक विधेय के नामिक अंग से समानाधिकृत होता है, जैसे, तीस की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकरी बताना अपमान की बात थी (65, 39), सहारनपुर की बम-फैक्टरी का पकड़ा जाना हमारे दल के लिए बड़ी भारी चोट थी (97, 6), ···उसका न चुना जाना मेरी पराजय थी (8, 68)

(ख) प्रधान कर्म—अन्त में ऋषि ने पत्नी का कहना किया (84, 35), जूली लैम्प बुझाना भूल गयी (52, 127), उनका चलना और हँसना देखकर लगता था···(108, 156), ···उसका चोर समझा जाना वह नहीं सह सकती (44, 21)।

'कहना' क्रिया के साथ प्रधान कर्म के रूप में परसर्गसहित तुमर्थ आता है, जैसे, खैर, इन दिनों तुम्हारी तनख्वाह न काटने को कह देना (44, 118), ··· भैया ने···भाभी को लेने जाने को कह दिया···(3, 110)।

(ग) गौण कर्म—(1) संज्ञा सम्बन्धी : मालती को उसके आने में विलम्ब समझ पड़ा (39, 48), उसने चन्दा देने से इनकार किया···(73, 8); (2) विशेषण सम्बन्धी : ···मैं आज उसे देने को तैयार हूँ (71, 118), बड़ी मुश्किल से कुछ गहने लौटाने पर राज़ी हुआ (65, 15), वह कुछ कह सकने में असमर्थ हो गयी (103, 107); (3) क्रिया सम्बन्धी : अंग्रेज़ी पढ़ा हिन्दुस्तानी मन्दिर में जाने में झेंपता था···(103, 516), ऐसी है कौन जो सुखराम को मेरे पास आने से रोक लेगी (101, 154), ···जैसे किसी भयानक वस्तु से बचने के लिए कोई बालक को रोकता हो (39, 52)।

(घ) विशेषण—आखिर यही तो खाने-पहनने और जीवन का आनन्द उठाने के दिन हैं (65, 73), ···निरन्तर सहायता मिलती रहने की आशा थी··· (II, 5-4-1966, 6),···छत पर जाने की सीढ़ियाँ थीं (107, 121), ···वह··· एक प्रदर्शनी में भेजने के लिए कुछ चित्र बना रहा था (96, 101)।

(च) क्रियाविशेषण—(1) कालवाचक : वैद्यों के बुलाये जाने के पहले ही उनकी मृत्यु हो गयी (84, 88), दल के भंग हो जाने पर मुझसे आज़ाद ने कहा··· (97, 118); (2) कारणवाचक : बराबर लड़ाई होते रहने के कारण सिक्खों के तीन लाभ हुए (2, 209), ···दो दिन लगातार लटके उड़ते रहने से मेरे हाथों ने जवाब दे दिया था (107, 30); (3) उद्देश्यवाचक : ···तुम मुझे लेने को अपने भाई को भेज दो (3, 113), कहीं जलवायु बदलने के लिए जाना ज़रूरी है··· (66, 119); (4) अनुमतिवाचक : हाथ रोकने पर भी बीस हज़ार से कम खर्च न होंगे (66, 4), पर यह निश्चय करने पर भी उसके पैर आगे बहुत धीरे-धीरे उठते थे (66, 181)।

(छ) पूरक (बहुत कम)—···बहस की जगह उन कामों को करना कुछ करना कहला सकता है (44, 43)।

(ज) संयुक्त नामिक विधेय का नामिक अंग—···उस दिन चूल्हे के सामने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना अपनी मौत बुलाना है (71, 47), उसकी अवज्ञा करना तो मनुष्यता को कुचलना है (116, 39), मेरी इच्छा तो अभी जाने की न थी (71, 129)।

शब्द-समुदाय के स्तर पर नामिकीकृत तुमर्थ निम्न सम्बन्ध व्यक्त करता है : (क) कर्मवाचक—उन्होंने इधर का आना-जाना बहुत कम कर दिया (30, 95), अपने को रोके रहने में भी सन्तोष था (96, 110); (ख) विशेषणवाचक—पढ़ने की इच्छा थी (39, 52), मांस के भूने जाने की सुगन्ध आ रही थी (30, 100); (ग) क्रियाविशेषणवाचक—नागफनी ने···एक किताव पढ़ने को मँगाई (143, 54), ···उसके मिटाने से बदनामी अवश्य होती है (72, 157), प्रधानमंत्री पद पर आने के बाद उनकी लोकप्रियता और प्रभाव और बढ़ा

(II, 20-11-1965, 12)।

जैसे कि ऊपर दिए उदाहरणों से स्पष्ट है नामिकीकृत तुमर्थ के प्रायः सब क्रियावाचक लक्षण सुरक्षित रखे हुए हैं यानी : (क) वाच्य की कोटी—···कोदई का पकड़ लिया जाना···(71, 158), ···टाँग का कट जाना···(30, 313); (ख) पक्ष सम्बन्धी कोटि—···वस्तु का मिलते रहना···(101, 203), शत्रुओं के बढ़ते चले आने की फिक्र···(70, 70), ···मेरे मिटते जाने से···(20, 50), देवताओं के पी चुकने के बाद···(84, 23); (ग) सापेक्ष कालवाचक अर्थ की कोटि—रघुवरसिंह के मरने के बाद (1, 125), ···सब अस्त्र चला चुकने पर··· (16, 28); (घ) सकर्मकत्व व अकर्मकत्व की कोटि—इस भीष्म प्रण के करते से···(84, 124), खर-दूषण का मारा जाना सुनकर···(84, 92), बाल्टी के टूट जाने से···(17, 386), आज सराफे का जाना···(65, 60); (च) विधेयन की कोटि—बाल्टी के टूट जाने से···(17, 386),···माँ के मना करने की परवाह··· (69, 213); (छ) वृत्ति की कोटि—जाने रात बढ़ने को थी, ढलने को थी (44, 65)। इसी तरह नामिकीकृत तुमर्थ में केवल अर्थ की कोटि नहीं है जो सिर्फ शुद्ध तुमर्थ के लिए स्वाभाविक है।

आधुनिक हिन्दी में तुमर्थ का नामिकीकरण शब्द-निर्माण का एक उत्पादक रूप-प्रक्रियात्मक तथा वाक्यविन्यासात्मक ढंग है जिसके कारण 'आव', 'न', 'ती' आदि प्रत्ययों वाली क्रियार्थक संज्ञाएँ हटाई जाने लगीं। इसका कारण यह भी हो सकता है कि नामिकीकृत तुमर्थ न केवल व्यापार बल्कि अपनी द्विगुण प्रकृति के फलस्वरूप व्यापार के साथ-साथ वाच्य तथा पक्ष के लक्षणों को, काल के विभिन्न सहायक अर्थों को व्यक्त कर सकता है तथा व्यापार के कर्ता और कर्म को सूचित कर सकता है यानी उनकी ओर संकेत कर सकता है। नामिकीकृत तुमर्थ की ये सब विशेषताएँ और लक्षण एकांगी तुमर्थ वाक्यों में खास तौर से साफ-साफ देखने में आते हैं, जैसे, फिर वही लाश घसीटना, कगार तक ले जाना, हाथ-पाँव पकड़कर झुलाना और अनन्त आकाश की ओर फेंक देना। उसका पानी में छपाक् से गिरना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फिर वह जाना। मटमैले पानी का उभरना। गर्मी के मारे पसीनों का टपकना (102, 92)।

नामिकीकृत तुमर्थ के साथ आधुनिक हिन्दी में कृदन्तीकृत या कृदन्तपरक तुमर्थ भी हैं, जो शुद्ध तथा नामिकीकृत तुमर्थ के विपरीत लिंगों और वचनों के अनुसार बदल सकता है तथा विशेषणात्मक स्थिति में कारकों के अनुसार भी बदल सकता है।

कृदन्तपरक तुमर्थ में कुछ क्रियावाचक लक्षण निहित हैं: (क) वाच्य की कोटि—इसके मायने हैं कि ब्याज की अदायगी निर्यात वस्तुओं के रूप में की जानी स्वीकार कर लेना (II, 26-7-1967, 19); (ख) पक्ष सम्बन्धी कोटि—बुढ़िया ने अपनी डलिया छीन लेनी चाही (44, 80); (ग) सकर्मकत्व और अकर्मकत्व की कोटि—बिसाती ने मिन्नत करनी शुरू की (65, 94), ···प्लेटें आनी शुरू हुईं (61, 112); (घ) विधेयन की कोटि—जूते पड़ने रुक गये (103, 379); (च) वृत्ति की कोटि—कल या तो रुपये देने पड़ेंगे, या गहने लौटाने पड़ेंगे (65, 17)।

इसके साथ-साथ कृदन्तपरक तुमर्थ में कुछ नामिक लक्षण निहित हैं: (क) वह लिंगों व वचनों के अनुसार बदल सकता है (वचन के अनुसार बदलना पुल्लिग संज्ञाओं के साथ अन्वित होने में मिलता है)—जूते पड़ने रुक गये (103, 379), ···प्लेटें आनी शुरू हुईं (61, 112); (ख) वह पूर्व स्थानीय विशेषण के रूप में आ सकता है—(उसने) और भी न जाने कितने कहने-अनकहने अत्याचार किये (108, 31); (ग) 'नी' कारान्त संज्ञापरक रूप बना सकता है—होनी को कौन रोक सकता है (1, 488), तुम मुझे अनहोनी को होनी करने के लिए कहते हो (108, 11)।

मगर नामिकीकृत तुमर्थ के प्रतिकूल, कृदन्तपरक तुमर्थ के पूर्व विशेषण या 'का' परसर्गसहित संज्ञा नहीं आ सकती और वह आश्रित शब्दों के विना विधेय में आ न सकता तथा उद्देश्य के रूप में प्रयुक्त न हो सकता। कृदन्त के विपरीत कृदन्तपरक तुमर्थ परिस्थिति में आते हुए परसर्गसहित विशेष्य शब्द से अन्वित नहीं हो सकता और इसी तरह भाववाच्य रचना नहीं बना सकता।

कृदन्तपरक तुमर्थ मुख्यतः आवश्यकताबोधक रचनाओं में तथा आरामबोधक व समाप्तिबोधक क्रियाओं के साथ, 'चाहना' क्रिया के साथ तथा विधेय के नामिक अंग के कार्य में आनेवाले विशेषणों तथा 'बात' शब्द समेत कुछ रचनाओं में प्रयुक्त होता है। उल्लेखनीय है कि कृदन्तपरक तुमर्थ के साथ-साथ यहाँ पर शुद्ध तुमर्थ भी आ सकता है, जैसे—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृदन्तपरक तुमर्थ	शुद्ध तुमर्थ
आवश्यकताबोधक रचनाएँ	
···अमीर की राह रोकनी है (4, 87), मनुष्य को उससे मुक्ति पानी चाहिए (39, 126);	उसे अभी दूर की मंज़िल तय करना है (44, 26), युवती के सामने खूब प्रेम की बातें करना चाहिए (66, 43);
आरामबोधक व समाप्तिबोधक क्रियाएँ	
और उसने···दुआएँ करनी आरम्भ कर दीं (113, 7),	लोगों ने भी उँगलियाँ उठाना शुरू कर दिया (52, 33-34),
···शिरीष भाई की बात सुनायी देनी बन्द हो गयी (108, 17),	···खर्च-वर्च देना बन्द कर दिया जाये (66, 75),
साँवले पर लातों-जूतों के प्रहार होने शुरू हुए (113, 24);	बादल जल्दी घुमड़ना शुरू हो गये थे (44, 74);
'चाहना' क्रिया	
···लड़के ने कफनी उठा लेनी चाही (44, 104);	उसने पाँच रुपये दक्षिणा भी देना चाहा···(65, 159);
अन्य रचनाएँ	
बात मुँह से निकलनी मुश्किल है··· (4, 14),	···उसके मुँह से आवाज़ निकलना मुश्किल हो जायेगी (59, 71),
उनके बारे में कोई राय बनानी अनुचित बात होगी (116, 97)।	तीस की नौकरी बताना अपमान की बात थी (65, 39)।

वाक्य के स्तर पर कृदन्तपरक तुमर्थ निम्न कार्यों में प्रयुक्त होता है: (क) संयुक्त व जटिल क्रियामूलक विधेय का क्रियावाचक अंग—पहले तो केशव को इस पर दस्तखत करने होंगे (28, 179), उन्होंने स्वयं गाड़ी देखनी शुरू की (13, 66),···बुढ़िया ने अपनी डलिया छीन लेनी चाही (44, 80); (ख) उद्देश्य (मुख्यत: जटिल)—···दो महीने की छुट्टियाँ भी काटना दूभर हो जाती हैं 52, 110), फाइल तो आज ही चलनी शुरू हो जायेगी (27, 37)।

शब्द-समुदाय के स्तर पर आरामबोधक व समाप्तिबोधक तथा 'चाहना' क्रिया के साथ कृदन्तपरक तुमर्थ कर्मवाचक सम्बन्धों को व्यक्त करता है।

तुमर्थ रचनाएँ

तुमर्थ रचनाएँ व्याकरणीकृत तथा संयुक्त में विभक्त होती हैं।

व्याकरणीकृत तुमर्थ रचनाएँ तुमर्थ के साथ सहायक या रंजक क्रियाओं के मेल से बनी हैं जो पूरी तरह या आंशिक रूप से अपने स्वतन्त्र अर्थ को खो चुकी हैं। सहायक क्रिया व्यापार की वृत्ति तथा काल सम्बन्धी नये गुण प्रदान करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारी रचना का शाब्दिक अर्थ तुमर्थ में निहित है। वाक्य में व्याकरणीकृत तुमर्थ रचनाएँ क्रियामूलक विधेय के समान आती हैं और सहायक क्रिया के रूप के आधार पर यह विधेय संयुक्त या जटिल हो सकता है।

आवश्यकताबोधक वृत्तिवाचक रचना तुमर्थ के साथ (शुद्ध तुमर्थ या कृदन्तपरक तुमर्थ) 'होना' तथा 'पड़ना' रंजक क्रियाओं और 'चाहिए' वृत्तिवाचक क्रिया के मेल से बनी है जो आवश्यकता के विभिन्न सहायक अर्थ प्रदान करती है। इस रचना का मुख्य अर्थ व्यापार की वस्तुगत आवश्यकता प्रकट करना है। इसमें कर्ता के साथ जो 'को' परसर्गसहित अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक में (सार्वनामिक संज्ञा इसके अतिरिक्त कर्मकारक में) आता है, सह-सम्बन्ध की ओर संकेत दिया जा सकता है या नहीं दिया जा सकता। आवश्यकता को प्रकट करने के विभिन्न सहायक अर्थ सहायक क्रियाओं द्वारा प्रदान किये जाते हैं।

'पड़ना' क्रिया के साथ तुमर्थ के मेल से विवशतापूर्ण आवश्यकता का अर्थ मुख्य रूप से दिया जाता है, यह आवश्यकता बननेवाली परिस्थितियों के कारण उत्पन्न होती है, जैसे, गज़नी से चलकर उसे यह पहली बड़ी लड़ाई लड़नी पड़ी थी (4, 85), बड़ी मुश्किल और पशोपेश में पड़ जाना पड़ता है मुझे (79, 36), कल या तो रुपये देने पड़ेंगे या गहने लौटाने पड़ेंगे (65, 17)।

'होना' क्रिया के साथ तुमर्थ के मेल से चरमावस्था की आवश्यकता का अर्थ आता है, जैसे, जाने आज क्या-क्या करना होता है। कैसे करना होता है! (108, 12),···उसे आज की यथार्थता के अनुकूल अपने आपको ढालना होगा (II, 10-12-1966, 5),···देश की जनता को गुलामी की नयी बेड़ियाँ पहनना था (116, 69), इन्हें काम भी करना हुआ (7, 97)।

'होना' क्रिया के साथ तुमर्थ के मेल से कर्त्तव्य की जैसी आवश्यकता का अर्थ भी आ सकता है, जैसे, पिछले दिनों चीन जाना हुआ (107, 6), जब मुझे चक्की पीसनी है, तो जितनी जल्दी पीस लूँ उतना ही अच्छा (65, 218), वहाँ बाहर को आना ही होगा (30, 34)।

'होना' क्रिया के साथ तुमर्थ के मेल से विवशतापूर्ण आवश्यकता का-सा अर्थ भी आ सकता है जो 'पड़ना' क्रिया समेत रचनाओं से मिलता-जुलता है, जैसे, उन्हें अत्यधिक किराया अदा करना होता है और अपनी भू-धारण स्थिति के बारे में भी अनिश्चित रहना पड़ता है (II, 10-12-1966, 8), सेठी जब चाहें उसे बिना बाँह और बिना पीठ का ब्लाउज़ पहनना होगा (96, 23)।

विवशतापूर्ण आवश्यकता का अर्थ 'रहना' क्रिया के साथ तुमर्थ के मेल से पैदा हो सकता है जो 'होना' क्रिया के स्थानाश्रित समानार्थी के रूप में आता है, जैसे, रोज़ का काम वही चार इंच वाली तोप पर गोली भरना रह गया (116, 57), कभी किसी को घर का काम पूछना रहता था तो किसी को टोस्ट की तैयारी करनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहती थी (109, 82)।

'चाहिए' वृत्तिवाचक क्रिया के साथ तुमर्थ के मेल से व्यापार को पूरा करने की अपेक्षित आवश्यकता का अर्थ आता है, जैसे, जब उसे नट का रोल अदा करना है तो नेताओं की भाषा बोलनी चाहिए (107, 7), प्रस्तावित आयोग को अपराधी जेल में डालने का अधिकार दे देना चाहिए (II, 10-11-1966, 11)।

कालसूचक रचना 'होना' सहायक क्रिया के रूपों के साथ 'को' परसर्गसहित विकारी तुमर्थ के मेल से बनी है। इसका मतलब यह है कि व्यापार निकट भविष्य में पूरा किया जानेवाला है, जैसे, लड़ाई शुरू होने को हुई (84, 152), उसकी आँखों में आये हुए आँसू नीचे गिरने को हो रहे थे (52, 158), दिन चढ़ने को हो रहा है (96, 57)।

'होना' सहायक क्रिया अविधेय रूप में आ सकती है, जैसे, वह रोने को होती हुई-सी बोली···(108, 160), तुमर्थ पुनरुक्त रूप में आ सकता है, जैसे, वह गिरने-गिरने को हो जाता (17, 90)।

इस रचना में 'कोई भी व्यापार आरम्भ करने जा रहना' पक्ष सम्बन्धी सहायक अर्थ आ सकता है, जैसे, यह कहकर वह रोने को हो आया, पर रोया नहीं, (44, 53), इस बार गुसलखाने में जो पहुँची और पानी डालने को हुई तो दिखा कि जगह पर साबुनदानी नहीं है (44, 110), यह तो भगवान का दण्ड है। जिस पर गिरने को होता है, उस पर गिरता है (102, 77)।

व्यापार के पक्ष-सम्बन्धी तथा वृत्तिवाचक लक्षण को व्यक्त करती संयुक्त तुमर्थ रचनाएँ तुमर्थ के साथ सहायक (अर्द्धसहायक) क्रिया के रूपों के मेल से बनी हैं जो आंशिक रूप से अपने शाब्दिक अर्थ खो सकती हैं या उसे लगभग पूरी तरह से सुरक्षित रख सकती हैं। वाक्य के स्तर पर ऐसी रचनाएँ जटिल क्रियात्मक विधेय के कार्य में आती हैं।

'आना' क्रिया के रूपों के साथ 'को' परसर्ग समेत विकारी तुमर्थ के मेल से व्यापार की समाप्ति का अर्थ आता है, तुमर्थ में नियम के अनुसार 'होना' क्रिया प्रयुक्त होती है, जैसे,···उसकी उम्र अब चालीस की होने को आयी थी (13, 83), गोली खत्म होने को आ गयी (103, 224), आँखें उसकी भीगने को आ गयीं, और वह उन्हें पोंछ नहीं सकी (44, 79)।

'आना' क्रिया के रूपों के साथ परसर्गरहित तुमर्थ के मेल से तुमर्थ से व्यक्त व्यापार करने की सामर्थ्य का बोध होता है। इस रचना में व्यापार का कर्ता अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक में आता है (सार्वनामिक संज्ञाएँ इसके अतिरिक्त कर्म कारक में आ सकती हैं), जैसे, ···मुझे माँगना नहीं आता (72, 123), उसे कठिनाइयों से टकराना आता था (47, 37), गोरों को तो लड़ना तक नहीं आता है (116, 60), हमें क्या बोलना आता है (125, 224)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जानना' क्रिया के रूपों के साथ परसर्गरहित तुमर्थ के मेल से तुमर्थ द्वारा व्यक्त व्यापार करने की सामर्थ्य का बोध होता है, जैसे, मैं पहाड़ पर चढ़ना-उतरना जानती हूँ (103, 468), ···कजरी तैरना जानती है, घर में बैठकर बातें बताना जानती हो (103, 127)। जैसे कि उदाहरणों से स्पष्ट है इन रचनाओं में व्यापार का कर्ता प्रत्यक्ष कारक में आता है।

'आना' क्रिया के रूपों के साथ 'में' परसर्ग समेत विकारी तुमर्थ के मेल से तुमर्थ द्वारा व्यक्त आरम्भ हुए व्यापार की विभिन्न प्रकार की पूर्णता का बोध होता है, जैसे, क्या कोई नयी बात देखने में आयी ? (4, 38), ···विद्या से आदमी की बुद्धि ठीक हो जाती है पर यहाँ उल्टा ही देखने में आता है (67, 2), यह भी सुनने में आया था कि···(66, 121), यह बात तो पिछले दस सालों से सुनने में आ रही है (52, 92)। जैसा कि उदाहरणों से स्पष्ट है यहाँ पर तुमर्थ के रूप में बहुधा 'देखना' व 'सुनना' क्रियाओं का तुमर्थ प्रयुक्त होता है।

'लगना' क्रिया के रूपों के साथ 'में' परसर्गसहित विकारी तुमर्थ के मेल से तुमर्थ द्वारा व्यक्त व्यापार के आरम्भ का बोध होता है, जैसे, ···मैं एलज़बरा का सवाल निकालने में लग गया (44, 75), ···मैंने जो काम बताया, करने में लग गयी (44, 86)।

निरपेक्ष तुमर्थ वाक्यांश

निरपेक्ष तुमर्थ वाक्यांश तुमर्थ (शुद्ध तुमर्थ या कृदन्तपरक तुमर्थ) और इससे उस आश्रित शब्द के मेल से बना है जो अंशतः उद्देश्य के रूप में उस नामिक विधेय के साथ आता है जिसका संयोजक संज्ञा द्वारा व्यक्त नामिक अंग से समानाश्रित हैं, जैसे, ···प्रेम-पत्र भेजना एक बड़ी समस्या रही है (143, 52), क्या बीच में उसे छोड़ देना कापुरुषता ही नहीं हो जायेगी ? (4, 44-45), ···जैसे टाँग का कट जाना हर रोज की बात थी (30, 113), सहारनपुर की ब्रम-फैक्टरी का पकड़ा जाना हमारे दल के लिए बड़ी भारी चोट थी (97, 6)। निरपेक्ष तुमर्थ वाक्यांश तब अलग किया जा सकता है, जब विधेय के नामिक अंग में स्त्रीलिंग की संज्ञा आती है। अगर विधेय के नामिक अंग में एकवचन पुल्लिग संज्ञा आती है तो संयोजक देखने में तुमर्थ तथा नामिक अंग दोनों से समानाश्रित होता है, जैसे, पूरे वर्ष-भर वस्तु का मिलते रहना उसकी सेवा का फल है (101, 203), ऐसी जगह···सम्मानित वेशभूषा की महिला का पहुँचना सन्देह का ही कारण होता है (97, 17)।

नामिक अंग के रूप में प्रयुक्त विशेषण समेत क्रियापरक व नामिक विधेय तथा तुमर्थ, जो वाक्य का उद्देश्य है नियमित रूप से एक-दूसरे से समानाश्रित होते हैं, जैसे, हमारे विचार से आपके यहाँ एक बार आना हमारे और आपके सम्बन्धों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को सदैव के लिए दृढ़ बना देगा (92, 378), इशारों में सब कुछ कहते रहना मुझे दिन-रात खाये जाता है (108, 36), ···उसके चंचल हँसमुख स्वभाव के लिए चुपचाप लेटे रहना कठिन हो गया (10, 128)।

सुपाईन (अविकारी तुमर्थ)

आधुनिक हिन्दी में सुपाईन रूप-प्रक्रियात्मक दृष्टि से विलुप्त क्रियामूलक कोटि है जिसमें कोई भी नामिक लक्षण नहीं है। इसी कारण शब्द-समुदायों के स्तर पर सुपाईन क्रिया-प्रधान शब्द-समुदायों के आश्रित घटक के रूप में आता है और वाक्य के स्तर पर जटिल क्रियामूलक विधेय में आता है। शब्द-समुदाय और वाक्य दोनों के स्तर पर कुछ क्रियाओं के साथ सुपाईन प्रकार्यात्मक ढंग से समान तुमर्थ रचनाओं से मिलता-जुलता है मगर कुछ दूसरी क्रियाओं के साथ सुपाईन के स्थान पर तुमर्थ का प्रयोग असम्भव होता है।

गतिवाचक, स्थानान्तरणवाचक तथा कुछ दूसरी क्रियाओं के साथ सुपाईन और तुमर्थ एक-दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त हो सकते हैं :

सुपाईन	तुमर्थ
गर्मी में तैरने जाता हूँ (1, 248),	···बीसों विद्यार्थी भाषा पढ़ने के लिए काशी गये···(64, 104),
वह जलसा देखने आयेंगे (72, 159),	शायद जाने से पहले बच्ची को देखने के लिए···आवें (66, 201),
आया बल्लू को सड़क पर टहलाने ले जाती है (96, 22),	···बच्चों को खिलाने के लिए ले चला (107, 29),
वे सभी···कपिल मुनि को मारने दौड़े (84, 53),	(निर्मला) छुड़ाने को दौड़ी (66, 48),
(रमानाथ) खत लिखने बैठे (65, 32),	मैं बिना खाये-पीये पढ़ने को बैठ गयी (16, 97),
उन्हें वह···धूप में सूखने डाल देती (17, 92),	···रंगरेज़ ने···पगड़ियाँ सूखने को डाल रखी थीं (17, 74),
किसी वैद्य-हकीम को बुलाने भेजना चाहते होंगे (69, 211)।	···तुम मुझे लेने को अपने भाई को भेज दो (3, 113)।

'देना' व 'पाना' क्रियाओं समेत रचनाओं में, 'आरम्भ करना ('होना')' के अर्थ में 'लगना' क्रिया तथा 'इच्छा रखना, इरादा रखना' के अर्थ में सन्तत कृदन्त के रूप में प्रयुक्त 'जाना' क्रिया समेत रचनाओं में नियम के अनुसार सुपाईन के स्थान पर तुमर्थ नहीं आ सकता। इन रचनाओं पर आगे भी विचार किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायेगा।

सुपाईन में निम्नलिखित क्रियामूलक लक्षण निहित हैं :

(1) वाच्य की कोटि : सब अकर्मक सुपाईनों में कर्तृवाच्य के रूप हैं। सब सकर्मक सुपाईनों में कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य के रूप हैं, जैसे, सुबह धूप निकलने पर घूमने निकला (96, 28), हुकुम मिलते ही लड़कियाँ चुनी जाने लगीं (25, 133), ···खिल्ली उड़ाई जाने लगी (58, 7)।

(2) पक्ष की कोटि : (क) नित्यताबोधक—बरामदे की बत्ती मैंने जलती रहने दी (52, 153); (ख) घटमान—वह अपना सब कुछ खो देने को तैयार होती जाने लगी (44, 88)।

(3) सकर्मकत्व और अकर्मकत्व की कोटि : सकर्मक सुपाईन के साथ न केवल प्रधान कर्म वरन् तुमर्थ का भी प्रयोग हो सकता है, जैसे, मैं मूँग लेने ही तो गयी थी···(39, 124), ···जब तुम गंगा जी में तैरना सीखने जाती हो··(123, 12), अकर्मक सुपाईन के साथ इससे आश्रित दूसरे सुपाईन का प्रयोग हो सकता है, जैसे, ···जब वह खेलने जाने लगते हैं···(66, 64), कृष्णा···ग्वालों के साथ गाय चराने जाने लगे (84, 111)।

(4) वृत्ति तथा पक्ष की कोटियाँ जो इसमें व्यक्त होती हैं कि सुपाईन कुछ क्रियाओं के साथ संयुक्त रचनाएँ बना सकता है जो वाक्य में संयुक्त अथवा जटिल क्रियामूलक विधेय के रूप में आती हैं। ये ऐसी रचनाएँ हैं :

(1) वे रचनाएँ जिनका अर्थ 'सुपाईन द्वारा व्यक्त व्यापार पूरा करने की अनुमति देना या न देना है' ('देना' क्रिया के साथ सुपाईन का संयोग);

(2) वे रचनाएँ जिनका अर्थ 'सुपाईन द्वारा व्यापार को पूरा करने का अवकाश देना या न देना है' ('पाना' क्रिया के साथ सुपाईन का संयोग);

(3) वे रचनाएँ जिनका अर्थ 'सुपाईन द्वारा व्यक्त व्यापार का आरम्भ करना है' ('लगना' क्रिया के साथ सुपाईन का संयोग);

(4) वे रचनाएँ जिनका अर्थ 'सुपाईन द्वारा व्यक्त व्यापार को पूरा करने का इरादा करना है' ('जाना' क्रिया के सन्तत रूपों के साथ सुपाईन का संयोग)।

कुछ शर्तों के साथ यहाँ पर 'होना' क्रिया के सुपाईन की तथा 'आना' क्रिया के रूपों से बनी व्याकरणीकृत रचना आ सकती है जो निकटतम भविष्य में व्यापार की पूर्ति व्यक्त करती है। यह रचना विकारी तुमर्थ के साथ बननेवाली समानार्थी रचना के स्थान पर प्रयुक्त हो सकती है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर सुपाईन का प्रयोग तुमर्थ से आश्रित अंग के समान और कहीं कम अन्य अविधेय रूपों से आश्रित अंग के समान होता है, जैसे, किसी वैद्य-हकीम को बुलाने भेजना चाहते होंगे (69, 211), वे ही मिस 'रोज़रेम' मेरी माता को···पढ़ाने आने लगीं (1, 58-59), ···वह अनुभवी दूतों को अमीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की खोज-खबर लेने भेजकर···(4, 69), माँ बनने जा रही वह नवयुवती··· (√, विशेषांक, 1962, 34)।

वाक्य के स्तर पर सुपाईन बहुधा जटिल क्रियामूलक विधेय में तथा अपेक्षाकृत कम क्रिया के अविधेय रूपों के वाक्यांश में आता है, जैसे, मैं चाय पीने चल रहा हूँ (59, 61), वह जिन जंजालों को तोड़कर चला आया है उनको टूटी ही पड़ी रहने देना चाहता है (116, 74), और तब धड़ाधड़ दरवाज़ा और खिड़कियाँ पीटी जाने लगीं (13, 68), अगर आपको मेरा खेलने जाना पसन्द नहीं है तो कल से न जाऊँगा (66, 61), यह तार कंचनजंगा की चोटी छूने जा रही जर्मन टोली की ओर से आया है (27, 64), ···रामलीला मैदान में होने जा रही जनता पार्टी की सार्वजनिक सभा के सम्बन्ध में पुलिस ने बड़े पैमाने पर यातायात की व्यवस्था की है (IX, 23-3-1977), उसे पत्नी की गोद में टिका रहने देकर कुछ देर चुपचाप वह अँधेरे में देखता रहा (44, 69)।

सुपाईन की रचनाएँ

जैसा कि ऊपर अंकित है सुपाईन चार अर्द्धसहायक क्रियाओं की सहायता से वृत्तिवाचक प्रकृति की संयुक्त रचनाएँ बनाता है जो नियम के अनुसार जटिल क्रियामूलक विधेय के समान प्रयुक्त होती हैं। इन रचनाओं में अर्द्धसहायक क्रियाएँ रचनाओं के लिए स्थिर शाब्दिक अर्थों में प्रयुक्त होती हैं जो न्यूनाधिक ढंग से इन क्रियाओं के मुख्य अर्थों से भिन्न होती हैं।

'देना' क्रिया के रूपों के साथ सुपाईन के संयोग से व्यापार करने की अनुमति देने या न देने की ओर संकेत दिया जाता है। इस रचना का प्रयोग बहुधा निषेध के साथ होता है यानी वह व्यापार करने की अनुमति न देने की बात प्रकट करती है, जैसे, लाजवन्ती हेमराज को घर से बाहर न निकलने देती थी (139, 13), उसने उसे नीचे से निकलने नहीं दिया (17, 221), लड़के-लड़की में कभी सम्पर्क नहीं होने देना चाहिए (143, 26), बस रहने दो···(44, 98), ···ज़रा हो जाने दे (17, 220), बरामदे की बत्ती मैंने जलती रहने दी थी (52, 153), अरे उस्ताद, अभी लड़ाई तो खत्म होने दो (116, 63)।

'पाना' क्रिया के रूपों के साथ सुपाईन के योग से सुपाईन द्वारा व्यक्त व्यापार को पूरा करना सम्भव या असम्भव होने की ओर संकेत दिया जाता है। इस रचना में नियम के अनुसार निषेध का प्रयोग होता है यानी इस रचना का अर्थ व्यापार को पूरा करना असम्भव होने का है, जैसे, मर जाने के लिए सब कुछ तो करता हूँ, पर मर नहीं पाता (39, 101), लेकिन सारी उतावली के बावजूद इन धक्कम-धक्कियों में सावधानी बरती जा रही थी कि कोई गिरने न पाये (1, 267), हाते के बाहर भी न निकलने पाया था कि जोर की वर्षा होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगी (65, 38), वहाँ नौ बजे के बाद कोई पढ़ने नहीं पाता और सबको नियम के साथ खेलना पड़ता है (66, 81)।

उल्लेखनीय है कि व्याकरण और अर्थ विज्ञान की दृष्टि से यह रचना "धातु रूपी क्रियाविशेषण + 'पाना' क्रिया" जैसी विश्लेषणात्मक क्रिया से मिलती-जुलती है जो व्यापार का सम्भाव्य पक्ष प्रकट करती है। अर्थ की दृष्टि से यह दोनों रचनाओं के समान अर्थ में व्यक्त होता है, जैसे, 'मर जाने के लिए सब कुछ तो करता हूँ, पर मर नहीं पाता (39, 101)', तथा 'अनवर नवाब उन्हें हटा देना चाहते हैं, लेकिन हटा नहीं पाते (1, 529)'। व्याकरण की दृष्टि से इन दोनों की एकरूपता 'पाना' क्रिया के पूर्णकालिक रूपों में कर्मणि रचना के अभाव में प्रकट हो जाती है, जैसे, परन्तु वे सीढ़ियों से भी न उतरने पाये थे कि सहसा शोर मचा (139, 172), ...चल पड़ने की इच्छा को वह रोक पाये (107, 112)।

'लगना' क्रिया के रूपों के साथ सुपाईन के संयोग से सुपाईन द्वारा व्यक्त व्यापार आरम्भ होने की ओर संकेत दिया जाता है, जैसे, दादा फिर रोने लगे (107, 68),...कानूनी कुमार कमरे में टहलने लगता है (71, 33), राजकन्या कहना चाहने लगी...(44, 11)।

'जाना' क्रिया के सन्तत रूपों से सुपाईन के संयोग से सुपाईन द्वारा व्यक्त व्यापार को पूरा करने के इरादे की ओर संकेत दिया जाता है, जैसे, वह कुल्लू के किसी गाँव में रहने जा रही है (52, 135), वह उत्तर देने ही जा रहा था कि...(1, 253), ...हम इस रंगमहल में आग लगाने जा रहे हैं (3, 120)।

'आना' क्रिया के रूपों के साथ 'होना' क्रिया के सुपाईन के योग से सुपाईन द्वारा व्यक्त व्यापार की पूर्ति का अर्थ आता है। ये रचनाएँ 'आना' क्रिया के रूपों के साथ 'होना' क्रिया के विकारी तुमर्थ समेत रचनाओं के समानार्थी हैं, जैसे, मैं तीस वर्ष का होने आया हूँ (10, 107), मगर आज चौथा दिन होने आ रहा था (107, 104), आठ बरस का यह लड़का होने आया...(44, 42)—तुलना कीजिए—उसकी उम्र अब चालीस की होने को आयी थी (13, 83), यह उम्र होने को आयी, सुबह से शाम तक बस पैसे के पीछे हाय-हाय (52, 30)।

कृदन्त

आधुनिक हिन्दी में कृदन्त क्रियावाचक नामिक रूप है जो या तो द्रव्य अथवा व्यक्ति के प्रक्रियात्मक लक्षण या गौण सहायक व्यापार या स्वयं मुख्य व्यापार प्रकट करता है। इस तरह कृदन्त में क्रिया तथा विशेषण के लक्षण सन्निहित हैं, और एक स्थान में कृदन्त के क्रियावाचक लक्षण तथा दूसरे स्थान में कृदन्त के नामिक लक्षण प्राथमिकता पाते हैं।

आधुनिक हिन्दी में रूप तथा अर्थ के अनुसार 12 कृदन्त रूप हैं जिनमें से छः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप कर्तृ प्रयोग के कृदन्त हैं और छः कर्मणि प्रयोग के हैं। 3 कृदन्त रूप कर्तृवाच्य धातु से बनते हैं, 3 और कृदन्त रूप कर्मवाच्य धातु से बनते हैं, 2 कृदन्त रूप कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य सुपाईन से तथा 4 कृदन्त रूप स्वयं कृदन्तों से बनते हैं।

कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य धातु से 'त' परप्रत्यय और 'आ' विशेषणवाचक विभक्ति जुड़कर प्रथम कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य कृदन्त बनते हैं यानी 'लिख+त +आ = लिखता', 'लिखा जा+त+आ = लिखा जाता'।

कर्तृवाच्य धातु से 'आ (या)' विशेषणसूचक विभक्ति जुड़कर द्वितीय कर्तृवाच्य कृदन्त बनते हैं यानी 'लिख+आ = लिखा', 'खा+या = खाया'। द्वितीय कर्मवाच्य कृदन्त द्वितीय कर्तृवाच्य कृदन्त और जाना' क्रिया के 'गया' सार्वदेशीय रूप के मेल से बनते हैं यानी 'लिखा+गया = लिखा गया'। कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य धातु से 'रहा' क्रिया रूप जुड़कर (जो 'रहना' क्रिया से बने द्वितीय कृदन्त का व्याकरणिक समनाम है) कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य प्रक्रियात्मक (सन्तत) कृदन्त बनते हैं यानी 'लिख+रहा = लिख रहा', 'लिखा जा+रहा = लिखा जा रहा'।

कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य सुपाईन से 'वाल' परप्रत्यय तथा 'आ' विशेषण-सूचक विभक्ति जुड़कर कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य 'वाला' रूपिम कृदन्त बनते हैं यानी 'लिखने+वाल+आ = लिखने वाला', 'लिखा जाने+वाल+आ = लिखा जाने वाला'।

प्रथम तथा द्वितीय कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य कृदन्तों से 'हुआ' क्रिया रूप (जो कि 'होना' क्रिया से बने द्वितीय कृदन्त का व्याकरणिक समनाम है) जुड़कर कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य प्रथम तथा द्वितीय संयुक्त कृदन्त बनते हैं यानी 'लिखता +हुआ = लिखता हुआ', 'लिखा जाता+हुआ = लिखा जाता हुआ', 'लिखा+ हुआ = लिखा हुआ', 'लिखा गया+हुआ = लिखा गया हुआ'। उल्लेखनीय है कि प्रथम तथा द्वितीय संयुक्त कर्मवाच्य कृदन्तों के रूप अधिकतर काल्पनिक रूप हैं न कि वास्तविक।

सरल (कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य) प्रथम तथा द्वितीय कृदन्त और कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य सन्तत कृदन्त अपूर्ण, पूर्ण तथा सन्तत काल-रूपों को तथा सम्भाव-नार्थ तथा संकेतार्थ के अनुकूल रूपों को बनाने में भाग लेते हैं, जब भी प्रथम तथा द्वितीय संयुक्त कृदन्त तथा 'वाला' रूपिम कृदन्त क्रिया के काल-रूपों को बनाने में भाग नहीं लेते, वे संयुक्त नामिक विधेय के नामिक अंग के प्रकार्य के समान आते हैं।

प्रथम तथा द्वितीय सरल कृदन्त विश्लेषणात्मक तथा पक्ष-सम्बन्धी रूपों को बनाने में भाग लेते हैं। इसके अतिरिक्त प्रथम तथा द्वितीय सरल कृदन्तों में काल व वाच्य सम्बन्धी अन्तर्विरोध विद्यमान हैं यानी 'आता—आया', 'लिखता—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखा'। प्रथम सरल कृदन्त में वृत्तिवाचक विरोध मौजूद हैं यानी 'जाता' (जाता आदमी) और 'जाता' (अगर आदमी जाता)। प्रथम और द्वितीय सरल कृदन्तों में पक्ष-सम्बन्धी विरोध विद्यमान हैं यानी 'बढ़ता—बढ़ता जाता', 'बढ़ता रहता', 'बना—बना रहा', 'बढ़ा—बढ़ा जाता।'

इसी तरह आधुनिक हिन्दी में कृदन्तों के समान तथा विशिष्ट प्रकार्य हैं और वे रूपप्रक्रियात्मक तथा वाक्यविन्यासात्मक लक्षणों की संख्या से अलग होते हैं। इसलिए प्रत्येक कृदन्त का अलग-अलग वर्णन करना आवश्यक है।

प्रथम सरल कृदन्त : प्रथम सरल कृदन्त में निम्न क्रियावाचक लक्षण हैं :

(1) वाच्य की कोटि, जो कृदन्त के स्वतन्त्र प्रयोग में तथा विधेय रूपक प्रयोग दोनों में प्रकट होती है, जैसे, 'कन्धे रगड़ती भीड़ें चिरता हुआ मैं यहाँ चला आया हूँ' (107, 26) और 'नीचे रगड़े जाते साथी को छुड़ाने के लिए वह लड़का आगे बढ़ा···(17, 220)'; 'अपने साथ मुझे भी क्यों पाप का भागी बनाते हो' (1, 204) और '···सूट प्रायः सर्दियों में बनाये जाते हैं' (1, 203)'।

(2) पक्ष की कोटि, जो कि स्वतन्त्र प्रयोग में तथा विधेय रूपक प्रयोग दोनों में प्रकट होती है, जैसे, दौड़ती बस में सागर की सीली-सीली हवाओं में आती ये गम्भीर पुकार कैसी फुरहरी पैदा करती थी (107, 28), ···भागे जाते एक नवयुवक ने मुझ नववृद्धा को अनचेता धक्का दे दिया (1, 124), वह भागता जा रहा था (21, 111), ज्यों-ज्यों वे पीछा करनेवाले से बचने के लिए भागकर आगे बढ़ते, पीछा करनेवाले का भय बढ़ता जाता था (96, 77), ···प्रवाह में बहे जाते रावत जैसे सहसा किनारे आ लगे (96, 88)।

(3) सकर्मकत्व और अकर्मकत्व की कोटि, जैसे, ऐसा दूध पीता नादान बच्चा नहीं (73, 112), वह स्वप्न देखती चली जा रही थी—उसकी अंगुली थामे फज्जा चल रहा था (7, 29), ···उसने दूर चली जाती नन्दा के चरणों की थाप सुनी (107, 88)।

(4) काल की कोटि, जो प्रथम सरल कृदन्त के स्वतन्त्र प्रयोग में सरल क्रिया विधेय के प्रकार्य में प्रकट होती है। सरल कृदन्ती कालवाचक रूप लुप्तांश रूप होते हैं जिनमें वर्तमान काल के निषेधात्मक रूप तथा नियमतः पुनरावृत्ति अपूर्ण काल (लङ्) के रूप आते हैं जो कि वर्तमान तथा अपूर्ण भूतकाल के रूपों जैसे एक-दूसरे का विरोध करते हैं, जैसे, 'वह उसे देख नहीं पाते और वह सबको देखता है' (16, 159)' और 'पहला युवक प्रायः आता, उसके पास बैठता और अनेक चेष्टाएँ करता, किन्तु युवती अचल पाषाण-प्रतिमा की तरह बैठी रहती' (39, 88)।

(5) सापेक्ष कालसूचक अर्थ की कोटि। सहायक विधेय, क्रियाविशेषणवाचक या विधेयवाचक विशेषण के रूप में आते हुए जो मुख्य विधेय के साथ-ही-साथ एक ही कर्ता से सम्बन्ध रखता है, प्रथम सरल कृदन्त मुख्य विधेय के व्यापार से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समपाती व्यापार की समक्षणिकता प्रकट करता है, जैसे, मैं तौलिये से अपने कानों के पास का साबुन पोंछता उनकी आँखों को गौर से देखता रहा (107, 43), बीच आसमान में लटकता मैं चला जा रहा था (107, 29)। स्वतन्त्र सहायक विधेय के समान आते हुए जो उस कर्ता से सम्बन्ध रखता है जो कि वाक्य का उद्देश्य नहीं है, प्रथम सरल कृदन्त विधेय से विधिवत् रूप में सम्बन्ध-विच्छेद करता है और विधेय से काल के बारे में एक सामान्य धारणा से जुड़ जाता है, जैसे, तू जब मोरनी के पास मोर नाचता देखता है···(103, 59), ···वह जब कभी कहीं फोटो खींचे जाते देखता···(15, 87)।

(6) अर्थ की कोटि, जो इसमें प्रकट होती है कि प्रथम सरल कृदन्त संकेतार्थ (सरल रूप) के समान प्रयुक्त होते हैं, जैसे, काश, वह अपनी कृति देख पाता (107, 71)।

विधेयन की कोटि, जो इसमें प्रकट होती है कि कृदन्त तार्किक विधेय व्यक्त कर सकता है और अपना कर्ता अपना सकता है। इसमें कृदन्त नियमतः वाक्य के प्रधान कर्म की विशेषता दिखाता है और अधिकतर अकर्मक होता है, जैसे, ··· सुमन की अनिच्छा दिनो-दिन बढ़ते देखकर उसने अपने मन में यह निर्धारित किया···(73, 70), मैं इन शब्दों को ध्वनित-प्रतिध्वनित होता सुन रहा था (142, 125), सिपाहियों को मज़ाक करता देखकर इन्द्रपाल ने एक सिपाही को सम्बोधन किया···(97, 54), ···मैं लालटेन जलती छोड़कर सो जाता··· (108, 51)।

इसके अतिरिक्त प्रथम सरल कृदन्त मुख्य क्रिया की हैसियत से निम्न विश्लेषणात्मक कालवाचक रूपों में आता है : (1) अपूर्ण भूलकाल (लङ्)—लाख अपने को विश्वास दिलाता था, लेकिन विश्वास ही नहीं होता था कि आज मेरी ही सुहागरात है (108, 7); (2) नियमतः पुनरावृत्ति, अपूर्ण भूतकाल (लङ)—अम्मा और विमल दादा जब भी मिलते, उनमें अकसर इसी बात को लेकर लड़ाई हो जाती (107, 46); (3) आभ्यासिक वर्तमान काल—सुबह मैं व्यायाम कर चुकता हूँ तो मुझे तेज़ भूख लगती है (10, 112); (4) द्वितीय भविष्यत् काल—यहाँ अभी तुम्हारे जेठजी आते होंगे (108, 53)।

प्रथम सरल कृदन्त सम्भावनार्थ तथा संकेतार्थ के अपूर्ण रूपों में आता है—जब सारा आसमान सलेटी रहता हो, बस पूरब में इस छोर से उस छोर तक छाया बैंगनी प्रकाश धीरे-धीरे सुनहली पड़ता जाता हो···(108, 105), यही सब यदि जानता होता तो नन्दा, मैं भी सीधा हो गया होता (107, 87)।

मुख्य क्रिया की हैसियत से प्रथम सरल कृदन्त निम्न पक्ष-सम्बन्धी रूपों में आता है : (1) नित्यताबोधक सीमित पक्ष—बस तुझे देखता रहना चाहता हूँ (96, 131), वे लोग जब खाएँ, तुम खिलाती रहना (95, 36); (2) घटमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पक्ष—हर बार वह गिनती बढ़ाता गया (17, 83), जज साहब की स्थिति बिगड़ती चली गयी (87, 298)।

शब्द-समुदाय के स्तर पर प्रथम सरल कृदन्त विशेषणपरक सम्बन्ध प्रकट करता है जो कि (क) विशेषणात्मक-गुणात्मक—काँपते हाथ (102, 3), बदलता रंग (102, 6), जलती बीड़ी (52, 33); (ख) विशेषणात्मक-क्रियाविशेषणात्मक—महादेव···मेढ़क की भाँति उचकता चला (69, 123), 'दुत् पगली···!' शीला उसे उठाती बोली (116, 104), ···अम्मा ··चावल बीनती कहती··· (107, 43); (ग) विशेषणात्मक-विधेयवाचक—यही आँखें कभी उसे खेलती देखकर प्रसन्न होती थीं, अब रक्त में लोटती देखकर तृप्त होंगी (72, 223), हमने हिन्दी के गीतों के रिकार्ड बजते सुने (99, 17) में बाँटते हैं।

प्रथम सरल कृदन्त में निम्न नामिक लक्षण हैं :

(1) कृदन्त में लिंग तथा वचन की व्याकरणिक कोटि निहित है। इन कृदन्तों की वचन सम्बन्धी व्याकरणिक कोटि पुल्लिग संज्ञाओं से कृदन्त का अन्वय होते समय व्यक्त होती है। कारक की कोटि भी पुल्लिग संज्ञाओं से कृदन्तों का अन्वय होते समय व्यक्त होती है। स्त्रीलिंग-संज्ञाओं से कृदन्त केवल लिंग में अन्वित होता है। कुछ उदाहरण, दूध पीता बच्चा (73, 112), काँपने दो हाथों ने (108, 28), बरसते पानी में (102, 3), चलती कुमुदिनी (16, 136), देखती रहती···उसकी ठण्डी पड़ती देह को, उसकी बन्द होती धड़कनों को (107, 75), नीचे रगड़े जाते साथी को (17, 220), कहे जाते शब्दों को (44, 71)।

(2) विशेषण की तरह कृदन्त वस्तु का लक्षण सूचित कर सकता है और विशेषण के साथ विशेषण के समान आ सकता है, जैसे, भपाड़े छोड़ती शराबी साँसें (108, 8), ···अपलक देखती अदृश्य आँखें (107, 13)।

(3) विशेषण की तरह कृदन्त 'सा' निपात-विशेषक के साथ प्रयुक्त हो सकता है, जैसे, सोचती-सी बोली (108, 24), रेंगता-सा स्वर (96, 100)।

(4) विशेषण की तरह कृदन्त निषेधात्मक पूर्वप्रत्यय जोड़ सकता है, जैसे, पत्नी ने···अपनी अनदेखती आँख को जरा दबाकर, देखती आँख को कुछ कमान-सी ऊपर को खींचे, ठण्डे सुर से कहा,···(20, 19)।

(5) विशेषण की तरह कृदन्त का नामिकीकरण हो सकता है जिसके फल-स्वरूप वह संज्ञा के सब लक्षण अपना लेता है, जैसे, जीतते का जग साथी हारते का बेटा नहीं···(20, 80), रावत···राह चलतों से राह पूछते चौक की ओर चलने लगे (96, 84), द्वार पर आते-जातों की भीड़ें जुटने लगीं···(1, 440), अचानक वह जैसे सोते से चौंक पड़ा (28, 51), पहचानते में कोई दुविधा नहीं हुई (97, 172), ···बारातियों की बोलती बन्द करके लच्छू जब रमेश के घर आया तब कन्यादान हो रहा था (1, 97), मरता क्या न करता (77, 300)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द-समुदाय के स्तर पर नामिकीकृत कृदन्त निम्न सम्बन्ध व्यक्त करते हैं : (1) कर्म-विषयक— ···इस बात की घोषणा वे···हर आते-जाते को सुनाते हुए ज़रूर किया करते (17, 205); (2) कर्ता-विषयक—घायलों की चीत्कार, मरतों का आर्त्तनाद, हाथियों की चिंघाड़···सब मिलकर रक्त में अवसाद उत्पन्न करने लगे (4, 171); (3) कर्ता-कर्मविषयक—डूबते को तिनके का सहारा मिला (69, 139); (4) सम्बन्धवाचक (विशेषणवाचक सम्बन्धों के अन्दर)—आते-जातों की भीड़ (1, 440); (5) क्रियाविशेषणात्मक—अभी सुखराम के पाँव में चलते में कुछ दर्द बाकी था (103, 242)।

वाक्य के स्तर पर प्रथम सरल कृदन्त निम्न अंगों के रूप में आते हैं :

(1) विशेषण—संज्ञा-संलग्न विशेषण के समान आते हुए कृदन्त अपने विशेषक से नियमित ढंग से अन्वित होता है, यानी निर्धारित पुल्लिग संज्ञा से वह लिंग, वचन तथा कारक में अन्वित होता है तथा निर्धारित स्त्रीलिंग संज्ञा से केवल लिंग में, जैसे, ···उभरते गंज को देखकर···(52, 26), ···काँपते हाथों से पत्तों को छू-छूकर···(102, 3), ···प्रवाह में वहे जाते रावत जैसे सहसा किनारे आ लगे (96, 88), ···कहे जाते शब्दों को सुनती रह गयी (44, 71), बड़ी दूर दिखती घाटी···(116, 33), ···छत से जाती ज़ंजीर में···(52, 23), ···चौकीदार की मुसकराती नज़रों से उसकी आँखें मिली (52, 25)।

एकल कृदन्तों के साथ-साथ विशेषण के रूप में द्विरुक्त कृदन्त आ सकते हैं, जो कि (क) भिन्न मूलों की धातुओं से बने हैं—जीती-जागती तसवीरें नहीं खींच सकते (64, 51); (ख) एकमूलीय सरल तथा साधित धातुओं से बने हैं—···और इस मरु में किसी जलते हुए तीर की तरह जलती-जलाती, तपती-तपाती यह सड़क ! (7, 28)।

उन कृदन्तों के अतिरिक्त जो क्रियापरक तथा नाम-क्रियापरक धातुओं से बने हैं, संज्ञा-संलग्न विशेषण के कार्य में वे प्रथम सरल कृदन्त आते हैं जो विश्लेषणात्मक धातुओं से बने हैं, जैसे, हजारों वीर खाई में कूदकर बढ़ते आते हथियारों पर करारा वार करने लगे (4, 117), उनकी आँखें···काले दिखायी देते ऊँचे वृक्षों···पर घूम रही थीं (96, 69)।

संज्ञा-संलग्न विशेषण की हैसियत से कृदन्त-रूपक क्रियावाचक नामिक शब्द-समुदाय तथा पदबन्ध रचनाएँ आ सकती हैं, जैसे, आँसू लाने की कोशिश करती आँखों को देखा किये (51, 76), लालाजी का पीछा करती गोविन्द की निगाह···मुड़ गयी (52, 22), बिना फीते के खीसें निपोरते फटे-पुराने बूट ! (52, 21), ···जहाँ पर करवट लेती-सी नदी मुड़ी थीं (116, 33), देखती रहती···उसकी ठण्डी पड़ती देह को, उसकी बन्द होती धड़कनों को (107, 75)।

(2) विधेयवाचक विशेषण जो 'मिलना, नज़र आना, दिखायी देना', तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'देखना, सुनना, छोड़ना, पाना' आदि क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होता है। विधेय-वाचक विशेषण के समान आते हुए कृदन्त वाक्य के उद्देश्य सम्बन्धी सहायक विधेय के रूप में (जब मुख्य क्रिया अकर्मक है) तथा वाक्य के प्रधान कर्म सम्बन्धी सहायक विधेय के रूप में (जब मुख्य क्रिया सकर्मक है) प्रयुक्त होते हैं, जैसे, ···बिन्दु एक पेड़ के नीचे खड़ी उसकी प्रतीक्षा करती मिली (36, 8), ···लोमड़ी दूसरी झाड़ी की ओर भागी जाती दिखी (51, 28), नन्दलाल की माँ बाहर से आती दिखायी दी···(16, 148), दद्दा के सिर से खून बहता देख टुकड़ी के नायक ने कहा··· (4, 170), हमने हिन्दी के गीतों के रिकार्ड बजते सुने (99, 17), ···मैं लालटेन जलती छोड़कर सो जाता···(108, 51), 'झरना' से आगे बढ़कर हम कवि को 'आँसू' में सिसकता पाते हैं (152, 146)। लक्षणरहित प्रधान कर्म को निर्धारित करते हुए कृदन्त उससे नियमित ढंग से अन्वित होता है। लक्षणान्वित प्रधान कर्म को निर्धारित करते हुए कृदन्त (क) उससे नियमित ढंग से अन्वित हो सकता है, जैसे, ···तुमने जवानी में कितने ही हवाई महलों को···गिरते देखा (32, 94), बरौज उसको प्रसन्नता में नाचती देख बहुत प्रसन्न हुआ (36, 53-54); (ख) एकवचन पुल्लिग कृदन्त के रूप में अविकृत ढंग से आ सकता है, जैसे, आदमियों को आता देखकर बाबाजी भागे···(147, 122), ···शत्रु···सैकड़ों जीवित मूर्तियों को जलता देख भयभीत होकर भाग गये थे (4 64)।

(3) क्रियाविशेषणात्मक विशेषण, जो बहुधा गति, स्थानान्तरण, कथन, चिन्तन आदि की क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होता है, जैसे, सारा दिन मैं मुँह छिपाता इधर-से-उधर भटकता रहा (108, 19), ···पाली छिपता-छिपाता ज्वालासिंह के घर में पहुँचा (75, 119), ···लहरा लँगड़ाती-लँगड़ाती चली जा रही थी (7, 29), और फिर वह पुरानी गाड़ी अड़ती, मचलती, हिलती चलने लगी (69, 169), वह मानो चुनौती देता-सा उठा···(44, 66), ···सोचती-सी बोली···(108, 24), एक दिन वह बातें करती-करती मूर्छित हो गयी (116, 126)।

(4) विधेय, जो (1) क्रियावाचक हो सकता है और इसमें (क) सरल कृदन्त-वाचक— ···जो कुछ वह कहते, मैं कर डालता (108, 20), अगर वह सबसे कुछ-न-कुछ कहती फिरती, तब भी शायद नया नहीं लगता (108, 19), उन्हें यह मौसम नहीं सुहाता (52, 98); (ख) संयुक्त कृदन्त क्रियावाचक या कृदन्त कृदन्तवाचक—मैं जब हँसता हूँ या हँसाता हूँ···(10, 51), अंग्रेज रमणियाँ थीं, जो धीरे नहीं चलती थीं, तेज़ चलती थीं (44, 35); (2) संयुक्त नामिक, जो नियमतः 'दिखायी देना' अर्थक क्रियाओं के साथ आता है—लाल साहब तो पक्के कृषक होते दिखायी देते हैं (69, 120), अपने हृदय से एक बोझा-सा उतरता मालूम हुआ···(69, 134), उसे इससे सहारा होता जान पड़ता है (44, 66),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी ज़िम्मेदारी खत्म नहीं होती लगती है (116, 96), शिवदास की मूर्ति उनके सामने खड़ी यह कहती देख पड़ती थी··· (69, 116)। स्मरणीय है कि इस ढंग के विधेय में कृदन्त उद्देश्य में निहित हो सकनेवाले व्यापारसूचक लक्षण की ओर संकेत देता है जो वास्तव में हो भी न सकता, यानी सारे विधेय में एक विशिष्ट काल्पनिक अर्थ विद्यमान है। यह इन सब अर्द्धसंयोजक क्रियाओं सहित सभी कृदन्तपरक विधेयों से सम्बन्धित हैं।

इसी श्रेणी में 'अनुभव (महसूस) होना' के साथ प्रयुक्त कृदन्त भी आते हैं, जैसे, सरनो को अपने शरीर से गर्मी-सी निकलती अनुभव हो रही थी (75, 126), प्रत्येक कदम पर दुर्घटना की नंगी तलवार सिर पर लटकती महसूस होती थी (IV, 12-12-1973)।

नामिकीकृत कृदन्त वाक्य के स्तर पर निम्न अंगों के रूप में आते हैं: (1) उद्देश्य—मरता क्या न करता (77, 300); (2) प्रधान कर्म—···इस बात की घोषणा वे···हर आते-जाते को सुनाते हुए ज़रूर किया करते (17, 205); (3) गौण कर्म—रावत···राह चलतों से राह पूछते चौक की ओर चलने लगे (96, 84); (4) विशेषण—द्वार पर आते-जातों की भीड़ें जुटने लगीं (1, 440); (5) क्रियाविशेषण—शायद भागते में वह गिर भी चुकी थी (102, 155); (6) कर्तावाचक निर्धारक—डूबते को तिनके का सहारा मिला (69, 139)।

एकल कृदन्तों के साथ-साथ विधेयवाचक तथा क्रियाविशेषणवाचक विशेषण की परिस्थिति में द्विरुक्त कृदन्त प्रयुक्त हो सकते हैं, जो (क) एकमूलीय सरल तथा साधित धातुओं से बने हैं—···पाली छिपता-छिपाता ज्वालासिंह के घर में पहुँचा (75, 119); (ख) भिन्न मूलों की धातुओं से बने हैं—वह गिरती-पड़ती चली जा रही थी (69, 247), वे बकती-झकती रसोईघर की ओर चली गयीं (7, 78); (ग) एक ही धातु से बने हैं—···लहरा लँगड़ाती-लँगड़ाती चली जा रही थी (7, 29), ···जुए के खेल की बातें भी वह सुनाती-सुनाती थकती नहीं थी (116, 25)।

द्विरुक्त कृदन्त संयुक्त नामिक विधेय में भी आ सकते हैं, जैसे, ···हरदम लिखते-पढ़ते ही नजर आते थे (1, 58)।

संयुक्त प्रथम कृदन्त—प्रथम संयुक्त कृदन्त विश्लेषणात्मक रचना है जो प्रथम सरल कृदन्त और 'हुआ' क्रिया रूप (जो 'होना' क्रिया के द्वितीय सरल कृदन्त का समाकार है) के मेल से बनी है।

प्रथम संयुक्त कृदन्त में वे तमाम नामिक लक्षण निहित हैं जो प्रथम सरल कृदन्त में हैं, परन्तु प्रथम सरल कृदन्त के विपरीत इसमें वे सब क्रियापरक लक्षण नहीं हैं जो सरल कृदन्त में मिलते हैं।

प्रथम संयुक्त कृदन्त में अग्रलिखित क्रियापरक लक्षण हैं:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(1) पक्ष की कोटि, जो प्रथम संयुक्त कृदन्त के स्वतन्त्र प्रयोग में ही मिलती हैं, जैसे, अंजर-पंजर को तोड़ती आती हुई खाँसी···(46, 9), इस म्लेच्छ घुड़-सवार सेना को बढ़ती आती हुई देख···(4, 58)।

(2) सकर्मकत्व और अकर्मकत्व की कोटि, जैसे, पानी को काटती हुई मथानी 52, 72), आवाज़ों को दबाती हुई गलियाँ (7, 10), वह रोता हुआ घर में आया (69, 149), ···लाश पानी में बहती हुई आ रही थी (1, 250)।

(3) सापेक्ष कालवाचक अर्थ की कोटि। विधेयवाचक तथा क्रियाविशेषण-वाचक विशेषण के समान आते हुए जो कि मुख्य क्रिया के साथ-साथ व्यापार के एक ही कर्त्ता से सम्बन्ध रखता है, प्रथम संयुक्त कृदन्त मुख्य क्रिया के व्यापार से सहायक व्यापार की सहकालिकता प्रकट करता है, जैसे, तभी सामने से शीला तेज़ी से कदम बढ़ाती हुई आती दिखायी दी (112, 84), अरी, तू अब तक पीछे ही लटकती हुई चली आ रही है···(7, 22)। विधेयवाचक विशेषण (सहायक स्वतन्त्र विधेय) के समान आते हुए जो व्यापार के कर्म से सम्बन्ध रखता है, प्रथम संयुक्त कृदन्त विधेय से विधिवत ढंग से कालवाचक सम्बन्ध खो देता है और इससे काल के बारे में एक सामान्य धारणा से जुड़ता है, जैसे, तभी उसने सामने आग की लपटें उठती हुई देखीं (116, 77), लल्लू लुधियाना के एक हलवाई की दुकान पर बर्तन माँजता हुआ पकड़ा गया (17, 353)।

(4) विधेयन की कोटि, जो इसमें प्रकट होती है कि कृदन्त तार्किक विधेय व्यक्त कर सकता है और अपना कर्ता अपना सकता है। इसमें कृदन्त नियमतः वाक्य के प्रधान कर्म की विशेषता दिखाता है और अधिकतर अकर्मक होता है, जैसे, तभी उसने सामने आग की लपटें उठती हुई देखीं (116, 77), ···मुझे पढ़ता हुआ देख रही थी···(108, 52)।

प्रथम संयुक्त कृदन्त का अपना आश्रित उपवाक्य हो सकता है, जैसे, इसी तरह अपने दिल को तसल्ली देता हुआ कि अगली दुकान से लूँगा, चला जाता था (24, 80)।

शब्द-समुदाय के स्तर पर प्रथम संयुक्त कृदन्त विशेषणपरक सम्बन्ध प्रकट करते हैं, जो (क) विशेषणात्मक-गुणात्मक में—भटकता हुआ राजकुमार (52, 11), चमकती हुई मुसकराहट (27, 103); (ख) विशेषणात्मक-क्रिया-विशेषणात्मक में—वह रोता हुआ घर में आया (69, 149), ···पानी शोर करता हुआ बह रहा था (52, 144); (ग) विशेषणात्मक विधेयवाचक—···स्त्रियाँ रास्ता चलती हुई देखी जा सकती हैं (44, 94), तिरंगे झंडों को फहराता हुआ देखकर···(115, 50)—में विभक्त होते हैं।

संयुक्त प्रथम कृदन्त में निम्न नामिक लक्षण हैं:

(1) कृदन्त में लिंग, वचन तथा कारक सम्बन्धी व्याकरणिक कोटि निहित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। प्रथम संयुक्त कृदन्तों में वचन तथा कारक की व्याकरणिक कोटि पुल्लिग संज्ञाओं से इनका अन्वय होते समय व्यक्त होती है क्योंकि स्त्रीलिंग संज्ञाओं के साथ कृदन्त का केवल लिंग में अन्वय होता है, जैसे, बिगड़ता हुआ काम बना लेती है (69, 151), दूजी ने उन झिलमिलाते हुए तारों को देखा (69, 246), उनके काँपते हुए पैर स्थिर हो गये···(69, 261), वह आँगन में खेलती हुई रजिया पर एक स्नेहभरी दृष्टि डालकर···(7, 13), वह बर्फ की बहती हुई चट्टानों के नीचे से छिपकर मार करता था (116, 49)।

(2) विशेषण की तरह प्रथम संयुक्त कृदन्त वस्तु का लक्षण सूचित कर सकता है और वह विशेषण के साथ विशेषण के कार्य में आ सकता है, जैसे, यह हरा-भरा लहलहाता हुआ पौधा जल गया (65, 10), नस-नस में लपकती हुई नीली लहरों के विष-बुझे तीर तुम्हारी चेतना के रथ को छलनी कर डालेंगे (107, 23)।

(3) विशेषण की तरह प्रथम संयुक्त कृदन्त 'सा' निपात विशेषक के साथ प्रयुक्त हो सकता है, जैसे···पिछले कई वर्ष उसकी आँखों के सामने उड़ते हुए-से गुज़र गये (7, 68), आँख बन्द करके कुछ देखती हुई-सी पन्ना ने कहा··· (129, 22)।

(4) विशेषण की तरह प्रथम संयुक्त कृदन्त का नामिकीकरण हो सकता है जिसके फलस्वरूप वह संज्ञा के सब लक्षण अपना लेता है, जैसे, सज्जन, इन जाते हुओं को क्या ताकता है, अब आते हुओं की ताक में रहना होगा (4, 56)।

शब्द-समुदाय के स्तर पर नामिकीकृत प्रथम संयुक्त कृदन्त निम्न सम्बन्ध व्यक्त करते हैं: (1) कर्म-विषयक—सज्जन, इन आते हुओं को क्या ताकता है··· (4, 56); (2) कर्ता-विषयक—मरते हुओं के आर्तनाद···से वातावरण अशान्त हो उठा (4, 184)।

वाक्य के स्तर पर प्रथम संयुक्त कृदन्त निम्न अंगों के रूप में आते हैं:

(1) विशेषण—संज्ञा-संलग्न विशेषण के समान आते हुए प्रथम संयुक्त कृदन्त अपने विशेषक से नियमित ढंग से अन्वित होता है, यानी निर्धारित पुल्लिग संज्ञा से वह लिंग, वचन तथा कारक में अन्वित होता है तथा निर्धारित स्त्रीलिंग संज्ञा से केवल लिंग में, जैसे, ·· उसकी पत्नी ने सामने जाते हुए ताँगे के पीछे उड़ती हुई धूल में आँखें गड़ा दीं···(7 18), दूजी ने उन झिलमिलाते हुए तारों को देखा (69, 246), ···कहीं से धीमे-धीमे उठता हुआ शोर ज़ोर पकड़ने लगा (44, 22)।

उन प्रथम संयुक्त कृदन्तों के अतिरिक्त जो शुद्ध क्रियापरक तथा नामक्रिया-परक धातुओं से बने हैं संज्ञा-संलग्न विशेषण के कार्य में वे प्रथम संयुक्त कृदन्त आते हैं जो विश्लेषणात्मक धातुओं से बने हैं, जैसे, ···सब अंजर-पंजर को तोड़ती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आती हुई खाँसी कहीं जमे कमबख्त कफ को तनिक भी उखाड़कर अपने साथ न ला पाती थी (46, 9), वह दूर से दिखायी देती हुई आकृति मिस पाल ही हो सकती थी (52, 127)।

संज्ञा-संलग्न विशेषण के कार्य में कृदन्तरूपक क्रियावाचक नामिक शब्द-समुदाय तथा पदवन्ध रचनाएँ आ सकती हैं, जैसे, सारे कला भवन में नग्नता का प्रदर्शन करता हुआ एक भी चित्र नहीं है (99, 61), पर तभी मेरी दृष्टि उसकी दूर होती हुई लड़खड़ाती आकृति पर पड़ी (125, 28), राह काटते हुए गाड़ीवान ने पूछा···(54, 44)।

सजातीय विशेषणों के कार्य में आते हुए कई प्रथम संयुक्त कृदन्तों में हुआ क्रिया रूप अन्तिम कृदन्त के बाद से एक बार प्रयुक्त हो सकता है, जैसे, नुकीली चट्टानों से छीलता और काटता हुआ पानी शोर करता हुआ बह रहा था (52, 144)।

(2) विधेयवाचक विशेषण जो 'मिलना', 'नज़र आना', 'दिखायी देना' तथा 'देखना', 'सुनना', 'पाना' आदि क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होता है। विधेयवाचक विशेषण के समान आते हुए प्रथम संयुक्त कृदन्त वाक्य के उद्देश्य सम्बन्धी सहायक विधेय के रूप में (जब मुख्य क्रिया अकर्मक है) तथा वाक्य के प्रधान कर्म सम्बन्धी सहायक विधेय के रूप में (जब मुख्य क्रिया सकर्मक है) प्रयुक्त होते हैं, जैसे, रोज लगभग एक ही स्थान पर इसी समय यही करता हुआ वह मिलता है (44, 95), केशर···बाहर जाती हुई दिखायी दी (69, 271), पश्चिम में गर्द उड़ती हुई नजर आ रही थी (69, 67), ···एक भारी-भरकम साँड़···तेज़ी से बढ़ता जाता हुआ दिखायी दिया (1, 252), तभी उसने सामने आग की लपटें उठती हुई देखीं (11, 77), लल्लू लुधियाना के एक हलवाई की दुकान पर बर्तन माँजता हुआ पकड़ा गया (17, 353), रत्नप्रभा अपनी ओर लोगों को देखते हुए पाने की आदी है (44, 95)।

लक्षणरहित प्रधान कर्म को निर्धारित करते हुए प्रथम संयुक्त कृदन्त इससे नियमित ढंग से अन्वित होता है। लक्षणान्वित प्रधान कर्म को निर्धारित करते हुए प्रथम संयुक्त कृदन्त (क) इससे नियमित ढंग से अन्वित हो सकता है, जैसे, इस म्लेच्छ घुड़सवार सेना को बढ़ती आती हुई देख···(4, 58), ···रंगून को जलते हुए देखा था (52, 113); (ख) एकवचन पुल्लिग कृदन्त के रूप में अविकृत ढंग से आ सकता है, जैसे, उन्होंने अपनी आँखों से अपनी इज्जत को गोद-गोदकर छुरियों से कटता हुआ देखा (103, 617), वह खिड़की के बाहर बादलों को उड़ता हुआ देखती रही (52, 98), ···तिरंगे झंडों को फहराता हुआ देखकर··· (116, 50)।

(3) क्रियाविशेषणात्मक विशेषण, जो बहुधा गति, स्थानान्तरण, कथन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिन्तन सम्बन्धी आदि क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होता है। उल्लेखनीय है कि यह प्रकार्य प्रथम संयुक्त कृदन्तों का मुख्य प्रकार्य है, जो इसमें प्रथम सरल कृदन्तों की तुलना में कहीं अक्सर आते हैं।

मुख्य क्रिया के व्यापार की गुणात्मक विशेषता तब और अधिक स्पष्ट दीखती है जब प्रथम संयुक्त कृदन्त मुख्य क्रिया से सन्निहित है, जैसे, भागता हुआ जा बेटा (54, 6), करीमुद्दीन बुड़बुड़ाता हुआ बाहर चला गया (52, 112), लखनदास भागता हुआ आ रहा है···(69, 262), वह जल्दी मचाती हुई-सी बोली···(108, 139), वह काँपती हुई बैठ गयी (69, 195), ···लतिका सोती हुई-सी जग गयी (52, 90)।

मुख्य क्रिया से भिन्न-भिन्न दूरी के स्थानों पर आते हुए (बहुधा आश्रित अंगों समेत) प्रथम संयुक्त कृदन्त क्रियाविशेषणवाचक विशेषण का प्रकार्य निम्नतर ढंग से अदा करने लगता है, परन्तु अपूर्ण सहायक गौण व्यापार का प्रकार्य अपनाने लगता है जो मुख्य व्यापार का समपाती होता है, जैसे, ड्राइवर ने···गाड़ी चला दी और कुछ क्षणों तक उसकी गड़गड़ाहट धीमी होती हुई फिर खो गयी (112, 52), वेश्या जम्हाई लेती हुई गली में किसी को पुकार रही थी (96, 86),···पर रौनकी इसको न जानता हुआ अपने काम में लीन था (139, 64), स्त्रियाँ पनघटों को जाती हुई रुक गयीं (69, 240)।

(4) संयुक्त नामिक विधेयक जो (क) संयुक्त नामिक विधेय में जो प्रथम संयुक्त कृदन्त और संयोजक क्रिया से बना है, जैसे, उसका कद छः फुट से निकलता हुआ था (31, 38), बूढ़े की आवाज़ गड़गड़ाती हुई थी (53, 46), सवेरे जब उनकी आँखें खुलतीं, तो श्रद्धा उनके स्नान के लिए पानी तपाती हुई होती··· (68, 125); (ख) संयुक्त नामिक विधेय में जो प्रथम संयुक्त कृदन्त और 'मालूम होना', 'लगना' आदि अर्द्धसंयोजक क्रिया से बना है, जैसे, उसकी आँखें किसी को खोजती हुई मालूम होती थीं (65, 272), ···इस लड़के का काँपता हुआ स्वर उसके भीतर घूमता हुआ लगता था (44, 99), अपने जीवन की घटनाएँ··· आनन्द के निवास-स्थान की ओर दौड़ती हुई जान पड़ती थीं···(69, 269), डाकू की भयानक आँखें उसे अपने शरीर के अणु-अणु में प्रवेश करती हुई प्रतीत हुईं (16, 123)-- में विभक्त होता है।

वाक्य के स्तर पर नामिकीकृत प्रथम संयुक्त कृदन्त उसके निम्न अंगों के रूप में आते हैं : (1) प्रधान कर्म—सज्जन, इन जाते हुओं को क्यों ताकता है··· (4, 56); (2) विशेषण—मरते हुओं के आर्तनाद···से वातावरण अशांत हो उठा (4, 184)।

प्रथम संयुक्त कृदन्तों के आधार पर एक नवरचना—अनुमतिवाचक कृदन्त उत्पन्न हुई जो प्रथम संयुक्त कृदन्त तथा 'भी' निपात के मेल से बनती है, जैसे, वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर की ओर देखता हुआ भी जैसे उन्हीं को देख रहा था (8, 32), मैं उससे असहमत होता हुआ भी उसे मना न करता…(29, 100), बड़ा ही करुण, क्षीण स्वर था, दूर से आया प्रतीत होता हुआ भी मेरे बिलकुल समीप था (116, 116)।

(5) विधेयवाचक समानाधिकरण, जो मुख्यतः कर्तृ कारकीय नामिक एकांगी वाक्यों में आते हुए वाक्य के मुख्य अंग से नियमित ढंग से अन्वित होता है, यहाँ तक कि इसका 'हुआ' में अन्तिम स्वर का नामिकीकरण होता है, जैसे, और एकाएक मेरी निगाहों में मेरे छोटे भाई की दुल्हन आशा का चेहरा घूम गया—शर्मीला, साँवला चेहरा। माथे पर बिन्दी। नाक में सोने की चमकीली कील। पतले-पतले होंठ, लज्जा और शर्म से मुसकराते हुए। और मेंहदी रची उँगलियाँ रेशम के लच्छों को सँभालती हुईं, रंगीन दूरियों में रोज़ाना के जीवन के सपने बुनती हुई (31, 46)।

उन प्रथम संयुक्त कृदन्तों के अतिरिक्त जो शुद्ध क्रियापरक तथा नाम-क्रियापरक धातुओं से बने हैं, परिस्थिति में वे प्रथम संयुक्त कृदन्त आ सकते हैं जो विश्लेषणात्मक (पक्ष-सम्बन्धी) धातुओं से बने हैं, जैसे, …एक भारी-भरकम साँड़ …तेज़ी से बहता जाता हुआ दिखायी दिया (1, 252), इस म्लेच्छ घुड़सवार सेना को बढ़ती आती हुई देख…(4, 58)।

प्रथम सरल और संयुक्त कृदन्तों में निम्न प्रकार्यात्मक भेद होते हैं :

(1) प्रथम संयुक्त कृदन्त वाक्य, काल तथा वृत्ति सम्बन्धी उन विरोधों से वंचित हैं जो व्याकरणिक ढंग से प्रकट किये जाते हैं। शुद्ध कृदन्तीय विधेय के रूप में प्रथम संयुक्त कृदन्त के प्रयोग की संभावना, जैसे, 'वह सलाम करके चलता हुआ (65, 122)', बहुत कम नज़र आती है क्योंकि 'हुआ' की जगह 'बनना' क्रिया से बना द्वितीय सरल कृदन्त आ सकता है, जैसे,…अमीर खाँ इन इलाकों को छोड़कर चलता बना (47, 29)।

(2) प्रथम संयुक्त कृदन्त काल सम्बन्धी रूपों को तथा सम्भावनार्थ तथा संकेतार्थ के रूपों को नहीं बनाते यानी क्रियापरक विधेय के समान उनका प्रयोग नहीं होता। संयुक्त नामिक विधेय में उनका संयोजक क्रियाओं समेत प्रयोग भी बहुत कम आता है।

(3) वाक्य के स्तर पर प्रथम संयुक्त कृदन्त विधेयपरक समानाधिकरण के प्रकार्य में आते हैं जो प्रथम सरल कृदन्तों में नहीं मिलता।

(4) शब्द-समुदाय तथा वाक्य के स्तर पर प्रथम संयुक्त कृदन्तों की पुनरुक्ति नहीं होती।

सरल द्वितीय कृदन्त—ऊपर विचारित अविधेय क्रिया-रूपों के विपरीत सरल द्वितीय कृदन्त प्रक्रिया ही नहीं बल्कि निष्पादित प्रक्रिया का परिणाम प्रकट करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जो द्रव्य (या व्यक्ति) में इसकी विशेषता बतलाने वाले जैसी सम्मिलित की जाती हैं। यह विशेषता स्वयं कर्ता के व्यापार के फलस्वरूप उत्पन्न हो सकती है और तब सरल द्वितीय कृदन्त कर्तृवाचक होता है, परन्तु यह विशेषता किसी बाहरी व्यापार के फलस्वरूप जो कि अन्य कर्ता (निर्दिष्ट और अनिर्दिष्ट) द्वारा किया जाता है और तब सरल द्वितीय कृदन्त कर्मवाच्य होता है। अतः कर्तरि प्रयोग में सरल द्वितीय कृदन्त पूर्ण परिणामात्मक विशेषता के अर्थ में आता है और वह व्यापार के पूर्णत्व और अपूर्णत्व की दृष्टि से सरल प्रथम कृदन्त का विरोध है : 'आया लड़का—आता लड़का' तथा 'लड़का आया—लड़का आता'। कर्मणि प्रयोग में सरल द्वितीय कृदन्त वाच्य की दृष्टि से प्रथम सरल कृदन्त का विरोध है : 'उसकी लिखी किताब' तथा 'वह किताब लिखता'। स्मरणीय है कि सकर्मक क्रिया से बने द्वितीय कृदन्त का कर्तरि प्रयोग कृदन्त के विशेषणात्मक प्रकार्य में होता है जब वह अपने प्रधान कर्म समेत संज्ञा-संलग्न विशेषण के समान आता है।

सरल द्वितीय कृदन्त में निम्न क्रियापरक लक्षण हैं :

(1) वाच्य की कोटि, जो सरल द्वितीय सकर्मक कृदन्त के शाब्दिक अर्थ के अतिरिक्त व्याकरणिक रूप से कृदन्त के स्वतन्त्र प्रयोग में और विधेय दोनों में व्यक्त होती हैं, जैसे, 'आपका बताया नुस्खा मैं हमेशा याद रखूँगा' (143, 49) और 'उन्हें ज्योतिष द्वारा बताये गये अपने हस्तरेखा के फल पर दृढ़ विश्वास था' (96, 33), '···वह···दुर्गा भाभी द्वारा इकट्ठा किया दल का पैसा था' (97, 18) और 'रमेश के द्वारा की गयी इस गहरी खुशामद से···' (1, 180), 'मेरे आँसू उन्होंने देख लिए' (139, 155) और 'दैत्यों से यह न देखा गया' (28 60)।

(2) पक्ष की कोटि, जो सरल द्वितीय कृदन्त के स्वतन्त्र प्रयोग में तथा विधेय दोनों में मिलती है, जैसे, '···उसका पिसे आटे को सँभालने वाला गिलाफ-सा सूँड़ की तरह लटका था' (52, 23) और '···महँगाई के कुचक्र में पिसता आया उपभोक्ता अब कुछ राहत की साँस ले सकेगा' (II, 5-5-1968, 9), 'लड़का असहाय पड़ी रत्नप्रभा की आँखों में करुणा से देखता हुआ···' (44, 113) और 'धुँधली पड़ गयी आँखों के कारण जान पड़ता था कि···' (96, 89), '···वह दरवाज़े की ओर बढ़े' (44, 71) और 'कुन्ती सीधी बढ़ती गयी' (17, 389), 'पत्नी ने ऊपर देखा···' (44, 71) और 'पत्नी स्तब्ध बनी उसे देखती रही' (44, 70)।

(3) सकर्मकत्व और अकर्मकत्व की कोटि, जैसे, वर्दी पहने खानसामा ने··· पूछा (96, 13-14), ···सड़क से भटका परदेशी हूँ (96, 49), प्राण-विसर्जन का प्रण किये लाल माने नहीं (96, 39),···टप्पर से लटके लालटेन की रोशनी में छाया नाचती है आसपास···(52, 55)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) काल की कोटि जो सरल क्रियापरक विधेय के रूप में सरल द्वितीय कृदन्त के प्रयोग में व्यक्त होती है जब कृदन्त निष्पादित एक बार होने वाला व्यापार प्रकट करता है, जैसे, वह डरा (44, 66), इस तरह एक महीना बीत गया, मगर कोई पत्र न आया (139, 144), खाना खाकर जब चेतन लेटा··· 17, 88)।

(5) सापेक्ष कालवाचक अर्थ की कोटि। सहायक विधेय (या क्रियाविशेषणात्मक विधेयवाचक विशेषण) के समान आते हुए जो कि मुख्य क्रिया के साथ-साथ व्यापार के एक ही कर्ता से सम्बन्ध रखता है सरल द्वितीय कृदन्त मुख्य क्रिया के व्यापार से सहायक परिणामात्मक अवस्था की सहकालिकता प्रकट करता है, जैसे, विचारा बैठा मार खाता रहा (69, 10), ···एक युवक हाज़ी···भागा आ रहा है (9, 107), ···स्टेशन मास्टर मरा पड़ा था (31, 27), गंगा की कथा पुराणों में अनेक प्रकार से लिखी मिलती है (84, 54)।

किसी भी कर्ता सम्बन्धी सहायक विधेय (विधेयवाचक विशेषण) के समान आते हुए जो वाक्य का उद्देश्य नहीं है सरल द्वितीय कृदन्त विधेय से विधिवत् ढंग से कालवाचक सम्बन्ध खो देता है और इससे काल के बारे में एक सामान्य धारणा से जुड़ता है, जैसे, ···उसने गेट खुला छोड़ दिया था (8, 89), तू मुझे बदली समझता है (103, 78)।

स्वतन्त्र कृदन्तीय वाक्यांश में जो कि संरचना में समुच्चयबोधक रहित जटिल वाक्य के समान है, अपने कर्ता समेत आते हुए सरल द्वितीय कृदन्त मुख्य विधेय के व्यापार की पूर्वकालिकता (या परकालिकता) प्रकट करता है, जैसे, (क्षमा)··· एक महीना हुआ यहाँ आयी थी (69, 6), उसकी मौत का अघट शोक भी अर्सा हुआ मुझे पहुँच चुका था (136, 80), थोड़ी देर हुई बुलावा आया था (65, 129)।

(6) विधेयन की कोटि, जो इसमें प्रकट होती है कि सरल द्वितीय कृदन्त तार्किक विधेय व्यक्त कर सकता है और अपना कर्ता अपना सकता है। इसमें कृदन्त वाक्य के प्रधान कर्म की विशेषता दिखाता है अथवा स्वतन्त्र कृदन्तीय वाक्यांश में प्रयुक्त होता है, जैसे, अब अपनी हवेली का ताला टूटा और किवाड़ खुले पड़े···(24, 129), थोड़ी देर हुई लौटा हूँ (66, 167), मुझे लौट आया देख भूरा मेरे पास आ गया (103, 123)।

ऊपर लिखे लक्षणों के अतिरिक्त सरल द्वितीय कृदन्त मुख्य क्रिया के समान निम्न विश्लेषणात्मक कालवाचक रूपों में आता है : (1) पूर्ण भूतकाल में—चेतन पहले भी आया था (147, 61), उसके बाद दस दिन उन लोगों को दण्ड दिया जाता था, जो दूर-दूर से आये होते थे (2, 80); (2) पूर्णतावाची काल (आसन्न-भूत, पूर्ण वर्तमान)—कलकत्ता तो कई बार गया हूँ (36, 133), ···उन्होंने चाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर कुछ मित्र बुला रखे होते हैं···(9, 94); (3) तृतीय भविष्यत्काल—कहार सो गये होंगे (73, 32)।

सरल द्वितीय कृदन्त सम्भावनार्थ तथा संकेतार्थ के पूर्ण रूपों में आता है—···सोचने लगे, शायद घूमने गया हो···(66, 194), ···अगर मैं···दावत न दी होती, तो मुझे क्या यह काम मिल जाता ? (7, 100)।

मुख्य क्रिया की हैसियत से सरल द्वितीय कृदन्त निम्न पक्ष-सम्बन्धी रूपों में आता है : (1) नित्यताबोधक पूर्णपरिणामी पक्ष—सप्ताह भर मैं बीमार पड़ी रही (13, 22), वह गहरी नींद सोया रहा (8, 41); (2) घटमान पूर्णपरिणामी पक्ष—प्रभा शर्म और उलझन में मरी जा रही थी (96, 64), ज़िन्दगी खराब हुई जा रही है लड़के की (108, 96); (3) स्थैतिक पक्ष—···परिहास उनकी वाणी से फूटा पड़ रहा था (108, 50), ···जी, क्यों बीच में कूद पड़ते हो (69, 38)।

शब्द-समुदाय के स्तर पर सरल द्वितीय कृदन्त विशेषणपरक सम्बन्ध प्रकट करता है जो कि (क) विशेषणात्मक-गुणात्मक—आया आदमी (96, 49), बैठे लोग (96, 37), पिसे आटे को (52, 23), खुली दृष्टि (72, 91); (ख) विशेषणात्मक-क्रियाविशेषणात्मक—···एक नौकर बैठा खाना खा रहा था (7, 74), दौड़ा-दौड़ा उनको ले आया (116, 92); (ग) विशेषणात्मक-विधेय-वाचक—पिता का शव एक कोने में कपड़े से ढँका रखा था (31, 108), हेम ने शीला को अपने विचारों में खोया पाया (112, 71)—में विभक्त होते हैं।

सरल द्वितीय कृदन्त में निम्न नामिक लक्षण हैं :

(1) कृदन्त में लिंग, वचन तथा कारक की व्याकरणिक कोटि निहित है। इन कृदन्तों की वचन तथा कारक सम्बन्धी कोटि पुल्लिग संज्ञाओं से कृदन्त का अन्वय होते समय व्यक्त होती है, जैसे, सामने···पेड़ों से छाया एक और छोटा-सा टीला था (96, 47), काजों में फँसे बटन खिंचे जा रहे थे (96, 113), स्टोर वाले ने ध्यान से अशोक के चश्मा पहने चेहरे की ओर देखा···(136, 41)। स्त्रीलिंग संज्ञाओं के साथ कृदन्त केवल लिंग में अन्वित होता है, जैसे, ···आटे में नहाई चक्की···खड़ी थी (52, 23), ···खिड़की में बैठी राजकुमारी की तसवीर (42, 11-12), डबडबा आयी आँखों को ऊपर उठाकर···(59, 98)।

(2) विशेषण की तरह सरल द्वितीय कृदन्त वस्तु का लक्षण सूचित कर सकता है और वह विशेषण के साथ विशेषण के समान आ सकता है, जैसे, भीगी और शिथिल वायु ने रावत को याद दिलाया···(96, 77), घने, फैले, काले जंगल और चाँदनी में चमकता लिद्दर···(79, 114)।

(3) विशेषण की तरह सरल द्वितीय कृदन्त 'सा' निपात-विशेषक के साथ प्रयुक्त हो सकता है, जैसे, भरे-से स्वर में कहा···(102, 14), यहाँ···टूटा-सा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुल है (52, 112)।

(4) विशेषण की तरह सरल द्वितीय कृदन्त निषेधात्मक या कुछ अन्य पूर्वप्रत्यय जोड़ सकता है, जैसे, किस शिव का धनुष मेरे बिना अनटूटा पड़ा है ? (107, 22), ···वह मुसकराहट अभी तक अनसिमटी पड़ी है (171, 30), चेतन···कोहनियों के बल अधलेटा हो उठा (17, 19), तुम···बेहोश और अधमरे पड़े हुए थे (28, 34)।

(5) विशेषण की तरह सरल द्वितीय कृदन्त शाब्दिक खण्ड के रूप में 'होना' क्रिया के तुमर्थ के साथ आ सकता है, जैसे, थके होने के कारण खूब ज़ोर की नींद आयी (99, 27), ऊँची कुर्सी पर बना होने पर भी शिवालिक का खुला द्वार आधा डूबा हुआ था (1, 254), चेस्टर के नीचे नेकर पहने होने के कारण उसकी टाँगें खुली रहतीं (52, 12)।

(6) विशेषण की तरह सरल द्वितीय कृदन्त का नामिकीकरण हो सकता है जिसके फलस्वरूप वह संज्ञा के सब लक्षण अपना लेता है, जैसे, सरकार का दिया ही खाता हूँ (103, 130), मरों के मुँह किसी ने सी दिये हैं (103, 174), मैंने उसका कहा न माना (28, 54), चेतन की माँ का खयाल था कि ऐसी फिर-निकलियाँ घर में कम ही टिकती हैं···(17, 283)।

शब्द-समुदाय के स्तर पर नामिकीकृत सरल द्वितीय कृदन्त निम्न सम्बन्ध व्यक्त करते हैं : (1) कर्म-विषयक—सब किये-धरे पर पानी फिर जाता (83, 73); (2) कर्ता-कर्मविषयक—मगर हुस्न के चोट खाये को चैन कहाँ (103, 261); (3) सम्बन्धवाचक (विशेषणावाचक सम्बन्धों के अन्दर)—मरों के मुँह किसी ने सी दिये हैं (103, 114); (4) क्रियाविशेषणात्मक—···बादशाह तख्त से उठकर गम के मारों की तरह महल में चला गया (35, 164)।

वाक्य के स्तर पर सरल द्वितीय कृदन्त निम्न अंगों के रूप में आते हैं :

(1) विशेषण—संज्ञा-संलग्न विशेषण के समान आते हुए कृदन्त अपने विशेषक से नियमित ढंग से अन्वित होता है, यानी निर्धारित पुल्लिग संज्ञा से वह लिंग, वचन तथा कारक में अन्वित होता है, तथा निर्धारित स्त्रीलिंग संज्ञा से केवल लिंग में, जैसे, बैठा गोविन्द हिसाब लिख रहा था (52, 19), रामशरण जंगल से छाये टीले पर चढ़ रहा था (96, 47), ···वह बड़ी देर तक काली स्याही से छपे कहानी के अक्षरों को स्थिर निगाहों से घूरता रहा (52, 11), ढीली पकड़ी लाठी विजय के हाथ से निकल गयी (51, 25), बीती बातों की याद···गुसाईं सोचने लगा···(52, 74)।

एकल कृदन्तों के साथ-साथ विशेषण के रूप में द्विरुक्त कृदन्त आ सकते हैं, जो कि (क) एकमूलीय सरल तथा साधित धातु से बने हैं—जीती-जिताये बाज़ी हाथ से जाती थी···(70, 39), ···ये सुनी-सुनाई बातें थीं···(73, 109) ···शर्माजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने इन्हीं गिने-गिनाये मनुष्यों को प्रसन्न रखना उत्तम समझा (73, 104); (ख) भिन्न मूलों की धातुओं से बने हैं—घास के लॉन के साथ काटी-छाँटी मेंहदी के पीछे क्यारी में सोसन खिला था (7, 124), आनन्दोत्सव में बची-खुची पूँजी भी निकल गयी (69, 209), पियानो के संगीत सुर रुई के छुई-मुई रेशों से अब तक उसके मस्तिष्क की थकी-माँदी नशों पर फड़फड़ा रहे थे (52, 107); (ग) एक ही धातु से बने हैं—दाड़िम की फैली-फैली अधढँकी डालों से छनकर धूप उसके शरीर पर पड़ रही थी (52, 82)।

उन कृदन्तों के अतिरिक्त जो क्रियापरक तथा नामपरक धातुओं से बने हैं, संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में सरल द्वितीय कृदन्त आते हैं जो विश्लेषणात्मक धातुओं से बने हैं, जैसे, मैंने जल चुकी सिगरेट को देखा (159, 149), ···जेब में तह किये रखे मैट्रिक के सार्टिफिकेट को मैं खूब मरोड़ता-मसलता रहा (108, 137), गले में खुद कत्ल किये आदमियों के मुंडों की माला पहने रहते हैं (96, 63)।

संज्ञा-संलग्न विशेषण की हैसियत से कृदन्त-रूपक क्रियावाचक नामिक शब्द-समुदाय तथा पदबन्ध रचनाएँ आ सकती हैं, जैसे, जिन लोगों ने पक्की कराई बात को फेर दी···(66, 131), ···वह···दुर्गा भाभी द्वारा इकट्ठा किया दल का पैसा था (97, 18), ···उसने···एड़ी का पिछला हिस्सा किवाड़ के उस चोट खाये भाग पर अड़ाकर पूरा ज़ोर लगाया (7, 135)।

सरल द्वितीय कृदन्त द्वारा प्रकट किए हुए विशेषणों में वे जटिल विशेषण एक खास स्थान अपना लेते हैं, जो परसर्गरहित संज्ञा के साथ बहुधा कर्तृहीन कृदन्त के मेल से बने हैं और जिसका करणकारकीय अर्थ होता है, जैसे, ···नग जड़े पिन ने उसका ध्यान आकर्षित किया (96, 12), चमारियाँ मोटे कपड़े का रंग उड़ा लहँगा पहनतीं···(103, 157), ···कालिख पुती बटलोई में पानी भरकर··· (52, 82), स्त्री रामशरण पर ममताभरी दृष्टि डालकर···(96, 53), मोजे चढ़े पैरों में चप्पल थी (44, 40)।

कुछ ऐसी रचनाओं में लक्षणान्वित या लक्षणरहित परसर्गीय नियन्त्रण बचा रहता है, जैसे, ज़रा आगे लकड़ी के लट्ठों से लदी एक भैंस बड़ी ही मंथर गति से चली जा रही थी (9, 169), ···सुनहरे बादल रत्नों-भरी लहरों के आँचल में चमकने लगे···(28, 67)।

सरल द्वितीय कृदन्त से आश्रित घटक समेत परसर्गरहित रचना के आधार पर जटिल कृदन्त उत्पन्न होते हैं जो एक शाब्दिक इकाई के रूप में प्रयुक्त होते हैं जिनमें से अधिकतर शब्दकोश में पाए जा सकते हैं, जैसे, तू मुँहमाँगा इनाम पायेगा (54, 64), इन लोगों को···मदन की नचकढ़ी बेबाकी पसन्द आ गयी थी (28, 90), मीनू में लिखी हुई मनचाही वस्तुओं का ऑर्डर दे दो (123, 52)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल द्वितीय सकर्मक कृदन्तों की विशेषता यह है कि वे व्यापार का वह कर्ता अपना लेते हैं जो 'का' परसर्गसहित संज्ञा या सम्बन्धवाचक सार्वनामिक विशेषण से प्रकट होता है, जैसे, ताल्सताय के स्वयं के बनाए कई चित्र भी इस कमरे में टंगे हैं (99, 69), पर मोहब्बत का मारा जोगी है? (103, 72), तेरी काती रुई का बहुत अच्छा सूत था (103, 25)। व्यापार के कर्ता के सिवा, द्वितीय सकर्मक एवं अकर्मक कृदन्त 'का' परसर्ग की सहायता से कालसूचक को शामिल कर सकते हैं, उदाहरणार्थ, सुबह की पढ़ी चीज़ सन्ध्या को भूल जाता है (108, 77), रात की देखी पिक्चर की कहानी भाभी को सुनाना जारी रहता (107, 42)।

(2) विधेयवाचक विशेषण, जो कि मुख्यतः 'पड़ना', 'मिलना', दिखायी देना', 'नज़र आना' तथा 'देखना', 'पाना', 'छोड़ना' आदि क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होता है। विधेयवाचक विशेषण के समान आते हुए सरल द्वितीय कृदन्त वाक्य के उद्देश्य सम्बन्धी सहायक विधेय (जब मुख्य क्रिया अकर्मक है) और वाक्य के प्रधान कर्म सम्बन्धी सहायक विधेय (जब मुख्य क्रिया सकर्मक है) की हैसियत से प्रयुक्त होते हैं, जैसे, फ़र्श पर शीशे का एक सुन्दर फूलदान टूटा पड़ा था (16, 111), एक कहानी लिखी पड़ी थी (9, 27) ···लड़के जले मिले (84, 141), पेंसिल दीवार के साथ लगी दिखायी दी (9, 162), सफ़ाई ऐसी की कि एक तिनका भी पड़ा कहीं नज़र नहीं आया···(24, 123), एक रोज़ एक पुस्तक में भी लिखा देखा··· (24, 11), उसने अपनी सूरत को कुछ उतरा पाया (9, 162), उसने गेट खुला छोड़ दिया था (8, 89)।

कृदन्त जब लक्षणरहित प्रधान कर्म के विशेषक का काम देता है, तो वह उससे नियमित तौर पर अन्वित होता है। कृदन्त जब लक्षणसहित प्रधान कर्म का विशेषक होता है तो वह (क) नियमित तौर पर उससे अन्वित हो सकता है, उदाहरणार्थ, चेतन के पिता भी अपने पुत्रों को एकदम नेक और अच्छे लड़के बने देखना चाहते थे (17, 209), मुझे इस प्रकार बनी-ठनी देखकर···(69, 83); (ख) पुल्लिग, एकवचन, कृदन्त के रूप में ही हो सकता है, उदाहरणार्थ, माई ने रोटी को अपने पास पड़ा देखा···(24, 84), हेम ने शीला को अपने विचारों में खोया पाया (112, 71)।

(3) क्रियाविशेषणात्मक विशेषण, जो कि मुख्यतः गति, स्थानान्तरण, चिन्तन सम्बन्धी आदि क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होते हैं, उदाहरणार्थ, एक युवक भागा आ रहा है (9, 167), लच्छू, रमेश दोनों थके-थकाए लौट रहे थे···(1, 72), ··· दौड़ा-दौड़ा उनको ले आया (116, 92), वह बिस्तर पर बैठी चाय बना रही है (2, 45), वह बड़ी देर तक पार्क में घास पर बैठी सोचती रही···(71, 107), ···निर्मला अपने कमरे में चारपाई पर पड़ी रो रही थी···(66, 207) बातों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब खोई-सी वह सो जाती···(52, 99), सामने भूत हुआ खड़ा है (44, 66)।

जैसा कि उदाहरणों से स्पष्ट है, क्रियाविशेषणात्मक विशेषण के प्रकार्य में सिर्फ़ वही कृदन्त आते हैं, जो कि अकर्मक धातु से बने हैं। सकर्मक धातु के कृदन्त समान स्थितियों में द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के रूप में आते हैं, जो कि शुद्ध क्रियाविशेषण के प्रकार्य की हैसियत से प्रयुक्त होते हैं।

(4) पूरक जो कि उन क्रियाओं में व्यक्त होता है, जो विशेष शाब्दिक वाक्यात्मक स्थितियों में अपर्याप्त सूचना रखती हैं और जो पूरक की उपस्थिति में ही प्रधान कर्म अपना सकती हैं। ऐसी क्रियाएँ बन्द शाब्दिक सूची से सम्बन्ध रखती हैं। द्वितीय कृदन्त के साथ मुख्यत: 'समझना', 'अनुभव करना' आदि क्रिया इस्तेमाल होती है। उदाहरणार्थ, तू मुझे बदली समझता है? (103, 79), मुझे खत्म हुआ, चूक गया समझते थे (8, 69)। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पूरक के प्रकार्य में द्वितीय कृदन्त बहुधा पुल्लिग, एकवचन के रूप में होता है।

(5) विधेय, जो निम्न प्रकार का हो सकता है: (1) क्रियार्थक: (क) सरल कृदन्तपरक—हम आगे बढ़े (103 121), कुछ देर से ज़ीने से एक जवान स्त्री उतरी (96, 52); (ख) संयुक्त (कृदन्तपरक-क्रियार्थक या कृदन्तपरक-कृदन्तार्थक) —···मैंने लड़की को देखा है (147, 48), पराये मर्दों के संग सोई हूँ (103, 141), औरत जो कल आयी थी···(69, 41), तारो और कीथू तब तक अपने स्कूलों को जा चुके थे (115, 70); (2) संयुक्त नामिक: (क) जो कि 'दिखायी देता' जैसी क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होते हैं। उदाहरणार्थ, ···सबके चेहरे मुझे खिले दिखायी दे रहे थे (31, 100), अब खेलने का मज़ा आ गया दिखता है (44, 10), बाँके आया लगता है (103, 300), वह मनुष्यों का बनाया नहीं मालूम होता था (2, 67), हर व्यक्ति खुदा की पूजा में लगा नज़र आया (24, 139), ···उनको कुछ हर्ष नहीं हुआ प्रतीत होता था (44, 59); (ख) संयोजक क्रियाओं के साथ, जहाँ सकर्मक क्रियाओं के कृदन्त होते हैं जो कि अवस्थापरक कर्मवाच्य का अर्थ देते हैं, उदाहरणार्थ, भाग्य में जो लिखा था वह हुआ, आगे भी वही होगा, जो लिखा है (65, 46), सरकारी टिकटों पर ये शब्द लिखे होते हैं 'स्वदेशी चीज़ें' खरीदो (69, 21); (ग) 'रहना' क्रिया के साथ (या 'होना' क्रिया के साथ जो 'रहना' से कम आता है), जब कृदन्त 'का' परसर्ग समेत पुनरुक्त रूप से व्यक्त होता है, उदाहरणार्थ, दिलीप का हाथ उठा का उठा रह गया (3, 125), वह पलंग पर लेटी की लेटी रही (116, 10), ···तब से पत्थर पर बैठा का बैठा हूँ (116, 103); (घ) 'है', 'था' संयोजक क्रिया और सरल द्वितीय कृदन्त के साथ, जिनमें कारण या काल चिह्नक होते हैं, जैसे, दुनिया के कानून पैसे वालों के बनाये हैं (102, 113), रात-भर का थका था (107, 42)।

नामिकीकृत सरल द्वितीय कृदन्त वाक्य के स्तर पर उसके अग्रलिखित अंगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रकार्य की हैसियत रख सकता है : (1) उद्देश्य—लेकिन आदमी का चाहा कब हो सका है (57, 8); (2) प्रधान कर्म—मैं अपने हाथ का ही बना खाती हूँ (57, 113); (3) गौण कर्म—उसे अपने किये पर पछतावा होने लगा (26, 17); (4) कर्तृ-सम्बन्धी निर्धारक—मगर हुस्न की चोट खाये को चैन कहाँ (103, 261); (5) विशेषण—मरों के मुँह किसी ने सी दिये हैं··· (103, 174); (6) क्रियाविशेषण—···बादशाह तख़्त से उठकर गम के मारों की तरह महल में चला गया (25, 184); (7) नामिक विधेय—यह सब तुम्हारा करा-कराया है (57, 82)।

अकेले कृदन्तों के साथ-साथ क्रियाविशेषणात्मक तथा विधेयवाचक विशेषक की परस्थित हालत में कृदन्तों की पुनरुक्तियाँ आ सकती हैं जो कि (क) एकमूलीय सरल और व्युत्पन्न धातु से बन सकती हैं, ···सब चीज़ें प्लेटों में सजी-सजायी चली आती हैं (123, 52), ···लच्छू, रमेश दोनों थके-थकाये लौट रहे थे··· (1, 72); (ख) भिन्न मूलों की धातुओं से बन सकती हैं : मुझे इस प्रकार बनी-ठनी देखकर··· (69, 83), रास्ते में पत्थरों के ढेर टूटे-फूटे पड़े हुए थे (69, 176); (ग) एक ही धातु से बन सकती हैं : चार हज़ार तो गाड़ी पर बैठा-बैठा ही दे रहा था (52, 37), राम इन्हीं विचारों में पड़ा-पड़ा सो गया (65, 85)।

सरल द्वितीय कृदन्तों के अलावा, जो कि शुद्ध क्रियार्थक या नामिक-क्रियार्थक धातुओं से बने होते हैं परस्थिति में वे द्वितीय सरल कृदन्त आ सकते हैं जो कि विश्लेषणात्मक धातुओं से बने होते हैं; उदाहरणार्थ, लोग मुझे खत्म हुआ, चूक गया समझते थे (8, 69)।

परस्थिति में ऐसे कृदन्त होते हैं जो कि आश्रित कर्तृ-सम्बन्धी या काल-चिह्नक के साथ आ सकते हैं, उदाहरणार्थ, और मैं शामत की मारी वहीं आयी··· (73, 39), आज तो सुबह के गये अब आये हो (108, 49-50)।

संयुक्त द्वितीय कृदन्त—संयुक्त द्वितीय कृदन्त विश्लेषणात्मक रचना है जिसमें सरल द्वितीय कृदन्त के साथ 'हुआ' रूप लगता है जो 'होना' क्रिया का सरल द्वितीय कृदन्त रूप है।

संयुक्त द्वितीय कृदन्त, सरल द्वितीय कृदन्त की तरह सिर्फ़ प्रक्रिया को ही व्यक्त नहीं करता, बल्कि निष्पादित प्रक्रिया का परिणाम है, जिसका कारण कोई द्रव्य (या व्यक्ति) है। यह विशेषता कर्ता के व्यापार के कारण या बाह्य व्यापार के कारण जिसे कोई दूसरा कर्ता (ज्ञात या अज्ञात) पूरा करता है, प्रकट होती है। पहली हालत में संयुक्त द्वितीय कृदन्त का कर्तृवाच्य में तथा दूसरी हालत में कर्म-वाच्य में प्रयोग होता है। जब कर्तृवाच्य में प्रयुक्त द्वितीय कृदन्त का प्रयोग होता है तो निष्पादित परिणामी विशेषता के अर्थ में होता है और वह व्यापार के पूर्णत्व या अपूर्णत्व की दृष्टि से संयुक्त प्रथम कृदन्त का विरोध है : आया हुआ लड़का—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आता हुआ लड़का। जब कर्मवाच्य में इसका प्रयोग होता है तो वाच्य की परि-कल्पना में संयुक्त द्वितीय कृदन्त संयुक्त प्रथम कृदन्त का विरोध है : बोझ उठाता हुआ तथा—उसका उठाया हुआ तूफ़ान।

संयुक्त द्वितीय कृदन्त नामिक चिह्नों सहित होते हैं जो कि सरल द्वितीय कृदन्तों की विशेषता होती है, लेकिन सरल द्वितीय कृदन्त के विपरीत उनके क्रियार्थक चिह्न नहीं होते, जैसे, वाच्य की श्रेणी (उसकी व्याकरणिक अभिव्यक्ति में) और व्यापार के पक्ष की श्रेणियाँ। इस प्रकार, संयुक्त द्वितीय कृदन्त के निम्न-लिखित क्रियार्थक चिह्न होते हैं :

(1) सकर्मक तथा अकर्मक श्रेणी—उदाहरणार्थ : रास्ता भूला हुआ मृग (5, 14), ···मुन्नी भागी आयी···(108, 78);

(2) सापेक्ष कालवाचक अर्थ की श्रेणी—गौण विधेय के प्रकार्य की हैसियत से (क्रियाविशेषणात्मक या विधेयवाचक विशेषण), जो कि मुख्य विधेय के साथ-साथ एक ही व्यापार के कर्ता से सम्बन्धित होता है, संयुक्त द्वितीय कृदन्त मुख्य विधेय के व्यापार के साथ समपाती परिणामी अवस्था की समकालिकता को व्यक्त करता है। उदाहरणार्थ : भाई ने कहानी का नाम ही बदला हुआ पाया··· (9, 29),···एक सैनिक आँगन में दौड़ा हुआ पहुँचा (70, 77), वह पकड़ा हुआ आया (44, 62), बीवी जी दूध तो नपा हुआ रखा है···(108; 78)। किसी भी कर्ता सम्बन्धी सहायक विधेय (विधेयवाचक विशेषण) के प्रकार्य की हैसियत से आते हुए जो कि वाक्य का उद्देश्य नहीं होता, कृदन्त विधेय से रूपात्मक सम्बन्ध खो देता है और उससे समय के बारे में एक आम भावना से जुड़ा होता है, उदाहरणार्थ : आप हमारे कमरे में कई-कई आलमारियाँ पुस्तकों से सजी-सजाई देखेंगे··· (72, 181), भाई ने कहानी का नाम ही बदला हुआ पाया (9, 29)।

(3) विधेयन की श्रेणी, जो इनमें प्रकट होती है कि संयुक्त द्वितीय कृदन्त तर्कसंगत विधेय व्यक्त करता है और कर्ता भी अपना सकता है। इस हालत में कृदन्त वाक्य के प्रधान कर्म की विशेषता दिखाता है, उदाहरणार्थ : तब उसने रास्ते में एक लाश पड़ी हुई देखी (69, 183), ···भाई ने कहानी का नाम ही बदला हुआ पाया···(9, 29)।

संयुक्त द्वितीय कृदन्तों के निम्नलिखित नामिक लक्षण होते हैं :

(1) संयुक्त द्वितीय कृदन्त के लिंग, वचन और कारक की व्याकरणिक श्रेणी होती है। इन कृदन्तों के वचन एवं कारक की श्रेणी सिर्फ पुल्लिग संज्ञाओं के साथ अन्विति के समय प्रकट होती है, जैसे, छत पर रुका हुआ पानी टपक रहा था (65, 30), उमड़े हुए आँसू न रुक सके (69, 228), खुले हुए मैदान में भी देह से पसीने की धारें निकलती थीं (66, 67)। स्त्रीलिंग संज्ञाओं के साथ ये कृदन्त सिर्फ लिंग से अन्वित होते हैं, उदाहरणार्थ : थकी हुई आँखें सो गयी थीं (7, 134),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्यसभा पर लिखी हुई पुस्तक में उन्होंने पढ़ा···(7, 81)।

(2) संयुक्त द्वितीय कृदन्त विशेषण की तरह द्रव्य के लक्षण को व्यक्त कर सकते हैं और विशेषक या नामिक विधेय के प्रकार्य में विशेषण के साथ आ सकते हैं, उदाहरणार्थ : अंग्रेजी की शिक्षा पाया हुआ, शौकीन, रंगीन और रसीला आदमी था (69, 235), इसका वृक्ष काफी ऊँचा और फैला हुआ होता है (50, 102)।

(3) संयुक्त द्वितीय कृदन्त, विशेषण की तरह, 'सा' निपात-विशेषक के साथ आ सकता है, जैसे, फिर वह···भागा हुआ-सा सड़क पार आ खड़ा हुआ··· (7, 35), एक पाँव दूसरे पाँव के आगे जरा उठा हुआ-सा···(28, 22)।

(4) संयुक्त द्वितीय कृदन्त का प्रयोग, विशेषण की तरह शाब्दिक खण्ड के रूप में, 'होना' क्रिया के तुमर्थ के साथ हो सकता है; लेकिन यह बात इन कृदन्तों में बहुत कम पायी जाती है, जैसे, यही एक गिरे हुए होने की निशानी थी (111, 33)।

(5) संयुक्त द्वितीय कृदन्त विशेषण की तरह नामिकीकृत हो सकता है, और संज्ञा से सब लक्षणों को अपना सकता है, जैसे, पोखर में पड़े हुओं ने भी गरदनें बढ़ा-बढ़ाकर देखने की कोशिश की थी (83, 69), तूने नातों का छुआ हुआ खाया है (103, 9), काले आदमी का लिखा हुआ जाली था···(69, 197)।

संयुक्त द्वितीय कृदन्त शब्द-समुदाय के स्तर पर निम्नलिखित विशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं : (क) विशेषणात्मक-गुणवाचक—खोया हुआ भाई (69, 202), बनाये हुए खाके (52, 137), बनी हुई वस्तुएँ (115, 81); (ख) विशेषणात्मक-क्रियाविशेषणात्मक—दूजी बैठी हुई सोचती थी (69, 240), एक सैनिक आँगन में दौड़ा हुआ पहुँचा (70, 77); (ग) विशेषणात्मक-विधेय-वाचक—···उसे एक कल्सा रखा हुआ मिला···(69, 125), ···आज तक किसी ने···उसकी कविताएँ छपी हुई नहीं देखीं (112, 29)।

नामिकीकृत कृदन्त शब्द-समुदाय के स्तर पर निम्नलिखित सम्बन्ध व्यक्त करते हैं : (1) कर्म-सम्बन्धी—तूने नटों का छुआ हुआ खाया है (103, 9); (2) सम्बन्धवाचक (विशेषणात्मक सम्बन्धों की प्रणाली में)—उन्होंने हाथ में कसे हुओं की बिलिया करवायी (103, 308)।

वाक्य के स्तर पर संयुक्त द्वितीय कृदन्त उसके निम्नलिखित अंगों के प्रकार्य में आते हैं :

(1) विशेषण : संयुक्त द्वितीय कृदन्त संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में अपने विशेषक से नियमित तौर पर अन्वित होते हैं, अर्थात् लिंग, वचन, कारक—पुल्लिग संज्ञाओं में, और सिर्फ लिंग में अगर स्त्रीलिंग हो तो, उदाहरणार्थ : ···वह कोई सुखी परिवार के प्यार में पला हुआ युवक है (39, 75), हारे हुए जुआरी की तरह मैं मुसकरा उठा (57, 25), उसे धुले हुए कपड़े पहनने को मिले (7, 10), ···काटे हुए खेतों से जैसे लहरिये-से उठ रहे थे (16, 70), ···अब वही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सूखी हुई टहनी उस हरे-भरे पेड़ का चिह्न रह गया था (69, 229), थकी हुई औरतें सो गयी थीं (7, 134)।

संयुक्त द्वितीय कृदन्तों के अलावा जो कि शुद्ध क्रियार्थक या नामिक क्रियार्थक धातुओं से बनते हैं, संज्ञा-संलग्न विशेषक के प्रकार्य में वे सरल कृदन्त आते हैं, जो कि विश्लेषणात्मक धातुओं (मुख्यतः नामबोधक संयुक्त धातुओं) से बनते हैं, उदाहरणार्थ : ···मेरी पैदा की हुई दौलत है (66, 155), ···यह सब सिर्फ़ उसी चौबीस-पच्चीस साल में जमा की हुई रकम है (52, 29)।

संयुक्त द्वितीय कृदन्त के रूप में संज्ञा-संलग्न विशेषक के प्रकार्य में क्रियार्थक-नामिक वाक्यांश और पदबंध रचनाएँ आती हैं, उदाहरणार्थ : मैं जीवन-यात्रा की कई मंज़िलें पार किया हुआ मेम्बर हूँ (72, 206), वह चोरी की हुई चीज़ चुपचाप वापस वहीं रख देता था (17, 209), ···तुम्हें कब्र में पाँव लटकाये हुए बूढ़े के जीवन-मूल्यों का लिहाज़ तो बहुत हुआ···(1, 555), ···(मुंशीजी) गोली खाये हुए मनुष्य की भाँति ज़मीन पर गिर पड़े (66, 177)।

यह उल्लेख करना उचित होगा कि क्रियार्थक-नामिक वाक्यांशों में जो कि संयुक्त द्वितीय कृदन्त के रूप में आते हैं, वाक्यांश का नामिक घटक—संज्ञा—क्रिया की उपस्थिति में प्रधान कर्म नहीं होता, बल्कि व्यापार का शाब्दिक पूरक होता है, उदाहरणार्थ : प्रेस की हुई साड़ी, कल्फ़ की हुई धोती (96, 107), वार्निश की हुई लकड़ी (65, 75), चूँकि हमारे पास वे उदाहरण नहीं हैं जिनमें नामिक घटक के साथ करण परसर्ग हों जिनसे कि जटिल विशेषक का पता चल सकता हो, जैसे, 'साड़ी प्रेस से (द्वारा) की हुई', 'धोती कल्फ़ से (द्वारा) की हुई' आदि।

अकर्मक, मुख्यतः भाववाचक क्रियाओं में, जैसा कि सरल द्वितीय कृदन्तों के विश्लेषण के समय बताया गया था, करण अर्थ को करण परसर्ग व्यक्त कर सकते हैं, हालांकि संयुक्त द्वितीय कृदन्त समान प्रयोगों के लिए बहुत कम सामग्री देते हैं, जैसे, बाँस लदी हुई गाड़ी (57, 39)। संयुक्त कृदन्तों के इस प्रयोग के आधार पर (यह सच है कि बहुत-बहुत कम) संयुक्त कृदन्त पैदा होते हैं जो कि रूप-निर्माण के गौण अंश होते हैं : पहले संज्ञा एवं सरल द्वितीय कृदन्त के मिलने से एक जटिल कृदन्त बनता है, जो कि एक शाब्दिक इकाई होती है, जिसमें बाद में संयुक्त कृदन्त का सूचक मिल जाता है अर्थात् 'हुआ' का रूप, उदाहरणार्थ : फिर मुझे दिलचाही हुई सज़ा दीजिये (120, 39)।

क्रियार्थक-नामिक वाक्यांश का क्रियार्थक घटक संयुक्त द्वितीय कृदन्त के रूप में संज्ञा-संलग्न विशेषक के प्रकार्य में वाक्यांश के नामिक घटक अर्थात् संज्ञा में आ सकता है, उदाहरणार्थ : ···भय था सिर पर ली हुई ज़िम्मेदारी पूरी न कर सकने का (96, 78), ···यह मेरी की हुई बेइज़्ज़ती पी कैसे गया (103, 130)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त द्वितीय कृदन्त सरल द्वितीय कृदन्त के समान व्यापार के कर्ता के साथ मिल सकते हैं, जो कि 'का' परसर्ग सहित संज्ञा या सम्बन्धवाचक सार्वनामिक विशेषण द्वारा व्यक्त होते हैं, उदाहरणार्थ : विजय के उठाये हुए तूफ़ान से बचना मुश्किल था (120, 46), ···उसने चौकीदार की दी हुई बीड़ी सुलगायी (82, 27), हद से ज़्यादा बढ़ी हुई निराशा का मारा हुआ पुरुष न गोभी का पत्ता बन सकता है न प्याज़ का छिलका (30, 67), भाभी ने मेरा पिया हुआ प्याला हाथ से वापस ले लिया···(103, 34), ···मेरी पैदा की हुई दौलत है (66, 155)। 'का' परसर्ग के अलावा यहाँ करण परसर्ग भी हो सकते हैं (मुख्यतः 'के द्वारा'), उदाहरणार्थ : विजय द्वारा भड़काया हुआ तूफ़ान अब भी उनके दिमाग में चल रहा है···(120, 46), ···चिड़िया उस काफ़िले द्वारा उड़ी हुई धूल की ओर तक रही थी (95, 94)। सरल द्वितीय कृदन्तों के विपरीत 'का' परसर्ग सहित कालसूचक बहुत कम संयुक्त द्वितीय कृदन्त से मिलता है : न जाने कितनी रातों का जागा हुआ था (31, 27)।

(2) विधेयवाचक विशेषण, जिसका प्रयोग मुख्यतः 'मिलना', 'दिखायी देना' तथा 'देखना', 'पाना', 'रखना' आदि क्रियाओं के साथ होता है। संयुक्त द्वितीय कृदन्त विधेयवाचक विशेषण के प्रकार्य में उद्देश्य सम्बन्धी सहायक विधेय (जब अकर्मक मुख्य क्रिया या 'रखना' क्रिया होती है) और प्रधान कर्म सम्बन्धी सहायक विधेय (जब मुख्य क्रिया सकर्मक होती है) की हैसियत से प्रयुक्त होता है, उदाहरणार्थ : ···उसे एक कलसा रखा हुआ मिला···(69, 125), पुराने अख़बारों के टुकड़े इधर-उधर बिखरे हुए दिखायी दे जाते हैं (52, 112), मेरे सन्दूकों में सैकड़ों, एक-से-एक कीमती साड़ियाँ तह की हुई रखी थीं (53, 58) पूरियाँ गर्म मिलें, इसके लिए आटा अलग गुथा हुआ रखा था (1, 100), तब उसने रास्ते में एक लाश पड़ी हुई देखी (69, 183), मैंने हर समय अपने को इन लोगों से कितना ऊँचा उठा हुआ पाया है (103, 15)।

लक्षणरहित प्रधान कर्म के विशेषक की हैसियत से कृदन्त उससे नियमित तौर पर अन्वित होता है। जब लक्षणान्वित प्रधान कर्म का विशेषक होता है तो संयुक्त द्वितीय कृदन्त मुख्यतः पुल्लिंग, एकवचन का अधिकारी रूप धारण करता है, उदाहरणार्थ : उसने मुर्गों को मरा हुआ पाया (103, 432), आँगन में शिव ने कपूर को घिरा हुआ देखा (97, 11), उस्ताद ने वातावरण को बदला हुआ पाया (54, 94)। संयुक्त द्वितीय कृदन्त की अन्विति की स्थितियाँ कम होती हैं, जैसे, उसको तो मैंने रसूलपुर के बाहर पड़ी हुई पाया था (54, 43)।

(3) क्रियाविशेषणात्मक विशेषण, जो कि गति, अवस्था, चिन्तन, उक्ति या कुछ दूसरी क्रियाओं के साथ आता है, उदाहरणार्थ : सुमन···भागी हुई अपने घर आयी (75, 21), उसने टोकरी फेंक दी और दौड़ा हुआ चाचा के घर में जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचा (69, 211), वह पकड़ा हुआ आया (44, 62), मेरी सारी जिज्ञासा रुँधी हुई रह गयी (103, 4), ···वह जनसमूह में शान्ति की मूर्ति बनी हुई निश्चल खड़ी थी (69, 242), दूजी बैठी हुई सोचती थी···(69, 243), न जाने कौन मेरे हृदय में वैठा हुआ कह रहा था (69, 203), दूजी एक चट्टान पर···बैठी हुई यह दृश्य देख रही थी (69, 242), ···रामनाथ वाचनालय में वैठा हुआ पत्र पढ़ रहा था (65, 157), सिगार नीचे झुका हुआ लटक रहा था (52, 115)।

सरल द्वितीय कृदन्तों की भाँति क्रियाविशेषणात्मक विशेषण के प्रकार्य में सिर्फ़ वे संयुक्त द्वितीय कृदन्त इस्तेमाल होते हैं जो कि अकर्मक धातुओं से बनते हैं। इस प्रकार्य में सकर्मक कृदन्तों के स्थान पर संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों का प्रयोग होता है, जो कि शुद्ध क्रियाविशेषण के प्रकार्य में आते हैं।

(4) पूरक जो कि उस क्रिया में प्रकट होता है जो विशेष शाब्दिक-वाक्यात्मक स्थितियों में अपर्याप्त सूचना रखती है, और जो पूरक की उपस्थिति में ही प्रधान कर्म अपना सकती है। ऐसी क्रियाएँ बन्द शाब्दिक सूची से सम्बन्ध रखती हैं। संयुक्त द्वितीय कृदन्त के साथ मुख्यतः 'समझना', 'अनुभव (महसूस) करना', 'स्वीकार करना' और दूसरी क्रियाएँ इस्तेमाल होती हैं। उदाहरणार्थ : मैं आपको मरा हुआ समझता था (69, 197), ···वे अपने-आपको एकदम बदला हुआ महसूस करने लगे (8, 51), ···हम विदेशी मुद्रा की तुलना में रुपये के मूल्य को कटा हुआ स्वीकार कर चुके थे (II, 5-7-1966, 6)। इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि संयुक्त द्वितीय कृदन्त पूरक के प्रकार्य में बहुधा पुल्लिग, एकवचन के रूप में होता है।

(5) संयुक्त नामिक विधेय जिसे निम्नलिखित श्रेणियों में बाँट सकते हैं : (क) संयुक्त नामिक विधेय, जो कि संयुक्त द्वितीय कृदन्त तथा संयोजक क्रिया से मिलकर बनता है, और (ख) संयुक्त नामिक विधेय जो कि संयुक्त द्वितीय कृदन्त तथा 'मालूम होना', 'लगना' जैसी अर्द्धसंयोजक क्रियाओं से मिलकर बनता है।

संयुक्त नामिक विधेय सरल तथा संयुक्त वर्तमान योजक के साथ मुख्यतः पूर्णतावाची अर्थ रखता है, उदाहरणार्थ : भाई घंटे-भर से आया हुआ है··· (66, 141), उसने मुझे रखा हुआ है (28, 151), ···सड़ा हुआ शरीर जिस पर सहस्रों भद्दे दाग पड़े हुए होते हैं (32, 64)। कुछ स्थितियों में विधेय का पूर्णतावाची अर्थ कम हो जाता है और द्रव्य (या व्यक्ति) की अवस्था, जो कि व्यापार के परिणामस्वरूप पैदा होती है, एक स्थैतिक गुण, द्रव्य (या व्यक्ति) की स्थायी विशेषता समझी जाने लगती है। यह बात विशेषकर सजातीय विधेय के उदाहरणों में खरी उतरती है, जो कि विशेषण या संयुक्त द्वितीय कृदन्तों द्वारा व्यक्त होते हैं, उदाहरणार्थ : इसका वृक्ष ऊँचा और फैला हुआ होता है (50, 102), हिन्दू संख्या में कम हैं, असंगठित हैं, बिखरे हुए हैं (69, 174)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल या संयुक्त अपूर्ण योजक समेत संयुक्त नामिक विधेय मुख्यतः पूर्णभूत का अर्थ रखता है, उदाहरणार्थ : थोड़ी देर में वह लौटा और हमें एक कमरे में ले गया, जिसमें चार व्यक्ति पहले से ही ठहरे हुए थे (69, 30), नोहरी अभी बैठी हुई थी कि शोर मचा (69, 67), उसकी दृष्टि लजायी हुई थी (28, 34), इन लोगों ने एक कोठरी किराये पर ली हुई थी (97, 29)। यहाँ भी संयुक्त कृदन्त द्रव्य (या व्यक्ति) के स्थैतिक गुण को व्यक्त कर सकता है, जो कि विशेषण एवं कृदन्त द्वारा व्यक्त सजातीय विधेयों में सबसे अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट होता है, उदाहरणार्थ : हृदय अपमान से संकुचित और सिर लज्जा के बोझ से झुके हुए थे (69, 344)।

संयुक्त नामिक विधेय, जो कि कर्मवाच्य अवस्था के अर्थ में सकर्मक क्रिया द्वारा व्यक्त होता है, सरल या संयुक्त वर्तमान योजक की उपस्थिति में वर्तमान अर्थ और सरल या संयुक्त अपूर्ण योजक में अपूर्ण अर्थ रखता है। उदाहरणार्थ : मगर पानी तो सिरहाने रखा हुआ है (66, 136), मूल्य सूची में बहुत-सी वस्तुओं के मूल्य दिये गये होते हैं (109, 233), और यही मेरी पहचान फौजी रजिस्टर में भी लिखी हुई थी (19, 208)।

संयुक्त वर्तमान और अपूर्ण योजकों के साथ-साथ योजक के अर्थ में 'रखना' विशेषक क्रिया आ सकती है, जो संयुक्त द्वितीय कृदन्त के साथ नामिक विधेय को बनाती है जो अपने अर्थ में नित्यताबोधक पूर्णपरिणामी पक्ष के रूपों के नज़दीक होता है, उदाहरणार्थ : चारों ओर नीरवता छायी हुई रहती थी···(73, 114), तुलना कीजिए—वहाँ नीरवता छायी रहती (116, 56), वह तो दिन-भर काम में जुटी हुई रहती थी (116, 55)।

साधारण भविष्यत् काल के रूप में प्रयुक्त योजक समेत संयुक्त नामिक विधेय भविष्य में व्यापार को व्यक्त करता है या द्रव्य (या व्यक्ति) की उस अवस्था को बताता है जो कि भविष्य में व्यापार के परिणामस्वरूप पैदा होती है। इस मुख्य अर्थ के अलावा यह विधेय तृतीय भविष्यत् काल का भी अर्थ दे सकता है, उदाहरणार्थ, फ़र्क इतना ही होगा कि यह (गुठली) होगी पिघली हुई (50, 50), विद्या में तो शायद अधिकांश तुझसे बड़े हुए होंगे (69, 54)।

साधारण सम्भावनार्थ के रूप में प्रयुक्त योजक समेत संयुक्त नामिक विधेय उद्देश्य की काल्पनिक, सम्भव अवस्था व्यक्त करता है जो कि कार्यान्वित हुए वास्तविक व्यापार के परिणामस्वरूप पैदा हो सकती थी, उदाहरणार्थ : फूल की पत्तियाँ एक-दूसरे पर जैसे पड़ी हुई हों, ऐसी लगती हैं (50, 89)।

संयुक्त नामिक विधेय जो कि संयुक्त द्वितीय कृदन्त तथा संयोजक क्रियाओं से बना होता है, कुछ काल्पनिक अर्थ रखता है चूँकि संयुक्त द्वितीय कृदन्त उद्देश्य को प्राप्त प्रक्रियात्मक विशेषता की ओर संकेत करता है, जो कि वास्तविकता में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं भी हो सकता, उदाहरणार्थ : उनके तेवर आज कुछ बदले हुए मालूम होते थे (69, 239), …पर अब कार्यक्षेत्र कठिनाइयों से घिरा हुआ जान पड़ता था (69, 111), आज मुझे तेरा सुर बदला हुआ लगता है (103, 75), बैंक भी आज खुला हुआ दिखायी पड़ता था (69, 102), …पर उसे अपने हृदय पर एक बोझ-सा रखा हुआ मालूम देता था।

(ग) विधेयवाचक समानाधिकरण, जो कि मुख्यतः कर्तृकारक-सम्बन्धी नामिक एकांगी वाक्यों में प्रकट होता है, जहाँ संयुक्त द्वितीय कृदन्त नियमित तौर पर वाक्य के मुख्य अंग के साथ अन्वित होता है, उदाहरणार्थ : एक पाँव दूसरे पाँव के आगे जरा-सा उठा हुआ-सा, दो भिन्न सुरों की तरह उलझा हुआ-सा (28, 22), कुत्सित वृक्ष में केवल एक पल दृष्टिगोचर हुआ, वह भी कुछ पीला-सा, मुरझाया हुआ-सा (69, 215), फिर आँखें मिलतीं, एक प्रेमाकांक्षा से बेचैन, दूसरी लज्जावश सकुची हुई (69, 236)।

नामिकीकृत संयुक्त द्वितीय कृदन्त का वाक्य के स्तर पर उनके निम्नलिखित अंगों के प्रकार्य की हैसियत से प्रयोग हो सकता है : (1) उद्देश्य—पोखर में पड़े हुओं ने भी गरदनें बढ़ा-बढ़ाकर देखने की कोशिश की थी (83, 69); (2) प्रधान कर्म—तूने नटों का छूआ हुआ खाया है (103, 9); (3) विशेषण—उन्होंने हाथ में कसे हुओं की बिलिया करवायी…(103, 308)।

सरल तथा संयुक्त द्वितीय कृदन्तों में निम्नलिखित प्रकार्यात्मक अन्तर हैं :

(1) संयुक्त द्वितीय कृदन्तों में वाच्य, पक्ष, काल, तथा वृत्ति सम्बन्धी विरोध नहीं होते, जो कि व्याकरणिक माध्यमों से व्यक्त होते हैं।

(2) संयुक्त द्वितीय कृदन्तों में काल के पूर्णतावाची रूप नहीं पाये जाते, और वे सम्भावनार्थ तथा संकेतार्थ के रूपों को भी नहीं बनाते, अर्थात् वे क्रियार्थक विधेय की रचना में इस्तेमाल नहीं होते।

(3) संयुक्त द्वितीय कृदन्त नामिक विधेय के प्रकार्य में पूर्ण व्यापार के काल के सभी अर्थ व्यक्त करते हैं, जैसे कि वे सरल द्वितीय कृदन्त के व्याकरणिक समनाम हों। संयुक्त द्वितीय कृदन्त संयोजक क्रिया के वृत्तिवाचक रूपों के साथ वही अर्थ देते हैं जैसे कि सरल द्वितीय कृदन्त के पूर्णतावाची वृत्तिवाचक रूप देते हैं।

(4) संयुक्त द्वितीय कृदन्त वाक्य के स्तर पर विधेयवाचक समानाधिकरण के प्रकार्य में आते हैं जो कि सरल द्वितीय कृदन्त के लिए नहीं होता।

(5) संयुक्त द्वितीय कृदन्त वाक्य तथा शब्द-समुदायों के स्तर पर पुनरुक्त रूप में नहीं आते।

संतत कृदन्त : संतत कृदन्त भी विश्लेषणात्मक रचना होती है जो कि धातु क्रिया तथा 'रहा' के विकारी रूप के साथ मिलकर बनती है (सरल द्वितीय कृदन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का 'रहने' क्रिया से समाकार)।

संतत कृदन्त संतत लक्षण को व्यक्त करता है जो कि किसी व्यक्ति या द्रव्य के साथ किसी विशेष समय के अन्तराल में लगता है।

संतत कृदन्त एक नयी रचना है जिसको अपेक्षाकृत हाल ही में व्याकरणाचार्यों ने खोजा है। यह कृदन्त प्रयोग का सीमित घेरा रखता है: विशेषणात्मक (संज्ञा-संलग्न विशेषण) और विधेयवाचक (संतत काल रूपों का संयुक्त घटक)। इसके गुण नामिक की अपेक्षा क्रियार्थक ज्यादा होते हैं।

संतत कृदन्त तथा सरल प्रथम कृदन्त के बीच अन्तर यह है कि संतत लक्षण हमेशा किसी विशेष, सिद्धान्ततः सीमित समय के अन्तराल में होता है, और कथन के क्षण से सम्बन्धित होता है या उससे नहीं होता, जबकि सरल कृदन्त उस लक्षण को व्यक्त करता है जो कि हमेशा कथन के किसी विशेष क्षण के साथ सम्बन्ध रखता है। विधेयवाचक प्रकार्य में इन दोनों कृदन्तों में व्यापार के पक्ष में अन्तर है: सांतत्य और अपूर्णता, सांतत्य और आवर्ती प्रक्रम। काल के संतत क्षणों के लिए सांतत्य तथा सरल प्रथम कृदन्त के रूपों के लिए अपूर्णता तथा आवर्ती प्रक्रम स्वाभाविक है।

संतत कृदन्त के लिए निम्नलिखित क्रियार्थक लक्षण स्वाभाविक हैं:

(1) वाच्य की श्रेणी, जो कि कृदन्त के स्वतन्त्र प्रयोग में तथा विधेय में प्रगट होती है, जैसे, क्रोध और पीड़ा से काँप रही आवाज़ में वह बोल उठी··· (59, 14), नीचे दी जा रही तालिका से···दूध के उत्पादन की स्थिति स्पष्ट हो जाएगी (II, 5-9-1967, 24); मैं अन्दर बरामदे में बैठी पढ़ रही थी (13, 14), बड़े-बड़े शामियाने लगाकर उनमें शरणार्थियों को ठहराया जा रहा था (1, 269)।

(2) पक्ष की श्रेणी, जो कृदन्त के स्वतन्त्र प्रयोग तथा विधेय में प्रगट होती है, उदाहरणार्थ: विश्व पूँजीवादी बाज़ार अधिक तेज़ी से बढ़ती जा रही उत्पादन क्षमता के मुकाबले संकुचित होता जा रहा है (141, 22), हो सकता है कि आदि-काल से लोगों के मुँह पर चढ़ी चली आ रही इन पहेलियों और मुकरियों की भाषा में कुछ परिवर्तन हो गया हो (119, 83), वह सीधा उसी की ओर बढ़ता चला आ रहा था (75, 151)।

(3) सकर्मकता और अकर्मकता की श्रेणी, उदाहरणार्थ:···फिर मुड़कर चाय ला रहे बैरे से कहा···(59, 35), प्रोफेसर कनेतर की निगाहें···ज्वार पर आ रहे सागर, आठवें क्षितिज पार डूबने को जा रहे सूरज—कहीं पर नहीं टिकीं (8, 42)।

(4) काल की श्रेणी, जो कि संतत कृदन्त के स्वतन्त्र प्रयोग में क्रियार्थक विधेय के प्रकार्य में प्रगट होती है। संतत कृदन्त समेत कालवाचक रूप लुप्त होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। इनमें वर्तमान संतत काल के निषेधात्मक रूप तथा नियमित आवर्ती प्रक्रम के सभी संतत अपूर्ण रूप शामिल हैं, जो कि वर्तमान तथा भूतकाल के संतत रूपों में एक-दूसरे का विरोध है, उदाहरणार्थ : मदाम, छुट्टियों में क्या आप घर नहीं जा रहीं ? (52, 89), मैं धीरे-धीरे पागल तो नहीं होता जा रहा ? (108, 72), और वे अन्दर बिस्तर पर लेटे-लेटे बातें कर रहे होते···(7, 64), कभी मल्होत्रा छुट्टी के दिन बारह एक बजे इधर से गुज़रते तो लल्लन नल पर नहा रही होती (13, 38)।

(5) सापेक्ष-कालवाचक अर्थ की श्रेणी। संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य की हैसियत से संतत कृदन्त द्रव्य (या व्यक्ति) का संतत लक्षण व्यक्त करता है, जो कि एक निश्चित समय के साथ सहकालिक है, जब विधेय अपूर्ण काल रूपों से व्यक्त किया होता है या एक निश्चित काल से पूर्ववर्ती है, जब विधेय पूर्णतावाची काल रूपों से व्यक्त किया जाता है, उदाहरणार्थ : ···वज़ीर जुनाईजी···प्रति क्षण बदल रहे रंग को समझ रहा था (113, 6) और हमारा देश 15 अगस्त, 1947 को सदियों से चली आ रही विदेशी दासता से मुक्त हुआ (115, 394)।

किन्तु पूर्णतावाची काल रूपों में भी संतत कृदन्त संतत लक्षण व्यक्त कर सकता है, जो कि एक निश्चित समय का सहकालिक होता है, उदाहरणार्थ : क्रोध और पीड़ा से काँप रही आवाज़ में वह बोल उठी···(59, 14)।

इसके अलावा, संतत कृदन्त मुख्य क्रिया की हैसियत से निम्नलिखित विश्लेषणात्मक काल रूपों में शामिल हो सकता है : (1) संतत अपूर्ण काल—दरवाज़े पर शहनाई बज रही थी और भीतर गाना हो रहा था (72, 153); (2) नियमित आवर्ती प्रक्रम या संतत अपूर्ण काल—चेतन जब कभी पानी भरने या कुएँ पर नहाने जाता और उनमें से कोई पानी भर रही होती···(17, 116); (3) वर्तमान संतत—कहाँ जा रहा है ? (103, 101), मैं अपने वादे के अनुसार तुम्हें जहाज़ में से ही पत्र लिख रही हूँ (123, 1); (4) अभ्यासिक वर्तमान संतत—जब देखो वे किसी को मिलने जा रही होती हैं या कोई उन्हें मिलने आ रहा होता है (V, विशेषांक, 1962, 55); (5) भविष्यत् संतत—आ ही रहे होंगे (66, 86), मुझे लगता है कि लाजवन्ती···मेरी ओर देख रही होगी···(8, 83)। सम्भावनार्थ तथा संकेतार्थ के संतत रूपों में भी संतत कृदन्त शामिल हो सकता है—मुझे लगा, जैसे वह निरन्तर मेरी ओर देख रहा हो (13, 15), वह विवाह कर रही होती तो हम पूरी सहायता देते (1, 555)।

विशेषण की तरह संतत कृदन्तों की भी लिंग, वचन तथा कारक की व्याकरणिक श्रेणियाँ होती हैं। इन कृदन्तों की वचन तथा कारक श्रेणी सिर्फ़ तब ही प्रगट होती है जब वे पुल्लिग संज्ञाओं से अन्वित होते हैं, उदाहरणार्थ : फिर मुड़कर चाय ला रहे बैरे से कहा···(59, 35), ···उसकी बुनियाद प्राथमिक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ रहे लड़के और लड़कियों की शिक्षा पर डाली जाती है (II, 25-9-1966, 5)। संतत कृदन्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं से सिर्फ़ लिंग में अन्वित होते हैं, उदाहरणार्थ : उसकी चिरख रही रगों का रक्त झनझनाने लगा था (59, 7), उनके चेहरे पर हर समय झलक रही मनोव्यथा से यह जाना जा सकता था (1, अंक 8, 1965, 45)।

संतत कृदन्तों के दूसरे नामिक लक्षण नहीं होते।

संतत कृदन्त शब्द-समुदाय के स्तर पर सिर्फ़ विशेषणात्मक-गुणात्मक प्रकार्य में हो सकते हैं, और वाक्य के स्तर पर मुख्यत: विशेषण के प्रकार्य में।

बहुत ही कम स्थितियों में संतत कृदन्त संयुक्त नामिक विधेय के नामिक अंग के प्रकार्य में जिसमें 'दिखायी देना' जैसी अर्द्धसंयोजक क्रियाएँ हों, आ सकता है, जैसे, उनके पुनरुद्धार के प्रयत्न राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे दिखायी देते हैं (115, 425)।

संतत कृदन्त विशेषण के प्रकार्य में अपने निर्धारित विशेषक से नियमित तौर पर अन्वित होते हैं, अर्थात् लिंग, वचन, कारक—अगर संज्ञा पुल्लिग है और सिर्फ़ लिंग में—अगर संज्ञा स्त्रीलिंग है।

शुद्ध संतत कृदन्त के अलावा, संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में पक्ष-सम्बन्धी संतत तथा संयुक्त नामधातु वाले संतत कृदन्त भी होते हैं, उदाहरणार्थ : विश्व पूँजीवादी बाज़ार अधिक तेज़ी से बढ़ती जा रही उत्पादन-क्षमता के मुकाबले संकुचित होता जा रहा है (141, 22), आन्तरिक तट-कर हटा लेने से क्षेत्र के कम कुशल उत्पादकों की सदस्य-देशों से आयात हो रही वस्तुओं की प्रतियोगिता से सुरक्षा नहीं हो सकेगी (II, 10-12-1966, 16)।

संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में कृदन्तपरक रूप में क्रियार्थक-नामिक वाक्यांश आ सकते हैं, उदाहरणार्थ : पिछले कई वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था में काम कर रही टिकटों के परिमाणों को दृष्टि में रखकर रुपये का अवमूल्यन किया गया है (II, 25-7-1966, 13), हम···ठण्डे हो रहे लोहे के बेंच पर बैठ गये (44, 37)।

'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त—'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त एक विश्लेषणात्मक रचना होती है जो कि अविकारी तुमर्थ (सुपाइन) के साथ 'वाला' रूपिम लगाने से बनती है। 'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त न केवल द्रव्य (या व्यक्ति) के प्रक्रिया के लक्षण को व्यक्त करता है, वरन् साथ-साथ व्यापार के निष्पादन के आशय को भी प्रगट करता है। प्रक्रिया का लक्षण जो कि 'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त द्वारा व्यक्त किया जाता है, एक प्रकार का द्रव्य (या व्यक्ति) के लिए सर्वदा स्वाभाविक लक्षण के रूप में लिया जाता है। प्रथम कृदन्त तथा 'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त के बीच में यही अन्तर है। प्रथम कृदन्त उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्षण को व्यक्त करता है जो कि किसी विशेष समय में द्रव्य (या व्यक्ति) के लिए स्वाभाविक है।

'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त के लिए निम्नलिखित क्रियार्थक लक्षण स्वाभाविक हैं :

(1) वाच्य की श्रेणी, जो कि कृदन्त के स्वतन्त्र प्रयोग तथा विधेय में आ सकती है, उदाहरणार्थ : ···अपने शरीर का सौदा करनेवाली यह औरत···दो हज़ार कैसे ठुकराये दे रही है (96, 89), बीमारी में किए जानेवाले आराम ने उसे और भी खूबसूरत बना दिया था (13, 159), ···हालत बदलने वाली न थी (16, 58), ···मकान का किराया उससे ही लिया जानेवाला है (44, 93)।

(2) पक्ष की श्रेणी—जो कि मुख्यत: कृदन्त के स्वतन्त्र प्रयोग में प्रगट होती है, उदाहरणार्थ : चक्कर लगाती रहनेवाली आपकी सहेली क्यों नहीं आयी (58, 34), उधर तैयार हो चुकनेवाली चीज़ों पर पालिश हो रहा था (9, 177), भड़क उठनेवाले विमल दादा को इतनी तीखी बात पर गुस्सा क्यों नहीं आया (107, 51)।

(3) सकर्मकता तथा अकर्मकता की श्रेणी—उदाहरणार्थ, वह चीख मारने ही वाली थी···(31, 9), खिड़की से झाँकनेवाला आदमी भी नीचे उतर आया ···(96, 49)।

(4) सापेक्ष कालवाचक अर्थ की श्रेणी—जब 'वाला' रूपिम कृदन्त विधेय-वाचक विशेषण के प्रकार्य में आता है जो कि मुख्य क्रिया के साथ व्यापार के एक ही कर्ता (या कर्म) से सम्बन्धित होता है तो वह कृदन्त मुख्य क्रिया के व्यापार के साथ समपाती प्रक्रियात्मक लक्षण की सहकालिकता व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : ···ये उद्‌गार तुर्की, ईरान और पाकिस्तान की हिम्मत बढ़ानेवाले सिद्ध होंगे··· (XI, 30-7-1957),···जो संसार का नाश करनेवाले कहे जाते हैं···(84, 11), ···प्रभा बहुत अच्छी अंग्रेज़ी लिखनेवाली गिनी जाती थी···(96, 59)। व्यापार के कर्म संलग्न विधेयवाचक विशेषण के प्रकार्य में आते हुए जबकि विधेय व्यापार के कर्ता को निर्धारित करता है, 'वाला' रूपिम कृदन्त विधेय से सब प्रकार के रूपात्मक कालबोधक सम्बन्ध खो बैठता है और वह उससे काल के बारे में सिर्फ़ एक आम धारणा से जुड़ा होता है, उदाहरणार्थ : आज वह मुझे अपने बेटे की जान लेनेवाली कहती है (59, 82), ···उसे हम अपने स्वास्थ्य का नाश करनेवाली बना देते हैं (X)।

(5) विधेयन की श्रेणी—तो तब प्रगट होती है जब कृदन्त तार्किक विधेय व्यक्त करता है और उसका अपना कर्ता होता है। इस स्थिति में कृदन्त, सिद्धान्तत:, वाक्य के प्रधान कर्म की विशेषता दिखाता है, उदाहरणार्थ : आज वह मुझे अपने बेटे की जान लेनेवाली कहती है (59, 82)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त के निम्नलिखित नामिक लक्षण होते हैं :

(1) 'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त की लिंग, वचन तथा कारक की व्याकरणिक श्रेणी होती है। वचन तथा कारक की व्याकरणिक श्रेणी सिर्फ़ पुल्लिग संज्ञाओं के साथ अन्वित होने में प्रगट होती है, उदाहरणार्थ : मैं हूँ आटा माँगने वाला भिखारी (102, 12), अहातों में बोझा ढोनेवाले बैल···भयातुर दृष्टि से देख रहे थे (96, 13), खिड़की से बाहर निकलने वाले चेहरे ने दोहराया··· (96, 49)। स्त्रीलिंग संज्ञाओं के साथ 'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त सिर्फ़ लिंग में अन्वित होता है, उदाहरणार्थ : घुन की भाँति भीतर-ही-भीतर खा जानेवाली वेदना ! (75, 105), ऐसा अधिकार मोटरों पर बैठनेवाली स्त्रियों को ही था (96, 58)।

(2) 'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त विशेषण की तरह नामिकीकृत हो सकता है, और तब वह न केवल कृदन्तपरक पुल्लिग संज्ञा का रूप अपना लेता है, बल्कि एकार्थी स्त्रीलिंग रूप भी अपना लेता है। इस प्रकार 'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त के बारे में कह सकते हैं कि वे कारक रूप की पूर्ण संज्ञात्मक रूपतालिका अपना लेते हैं, जैसे, आध घण्टे तक वह किसी आने-जाने वाले की राह देखता रहा··· (92, 63), ···वे···टिकट पा जानेवालों को धन की मदद देते हैं (142, 147), कोठरियों में रहने वालियाँ बैठकर नीचे आते-जाते लोगों को आकर्षित करने की चेष्टा करती हैं (96, 85), पानी भरने वालियों के प्रभाव से पानी खराब हो सकता है (X)।

शब्द-समुदाय के स्तर पर 'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त निम्नलिखित विशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं : (क) विशेषणात्मक-गुणात्मक—सामान लाने-ले जानेवाले ट्रक (53, 33), घूमने वाली लड़कियों को (96, 58); (ख) विशेषणात्मक-विधेयवाचक—···उसे हम···अपने स्वास्थ्य का नाश करने वाली बना देते हैं (X)।

'वाला' रूपिम के साथ नामिकीकृत कृदन्त शब्द-समुदाय के स्तर पर निम्न-लिखित सम्बन्ध व्यक्त करते हैं : (1) कर्म-विषयक—पीछा करनेवाले से बचने के लिए (96, 77); (2) कर्ता-सम्बन्धी कर्म-विषयक—रहने वालियों के नाज़-नखरे (140, 24); (3) सम्बन्धवाचक (विशेषणात्मक की प्रणाली में)—रहनेवालों के मन (1, 415)।

'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त वाक्य के स्तर पर उसके निम्नलिखित अंगों में आ सकता है :

(1) विशेषण—संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में 'वाला' रूपिम कृदन्त अपने विशेषक के साथ नियमित तौर पर अन्वित होता है अर्थात् वचन, लिंग तथा कारक में—अगर संज्ञा पुल्लिग हो और सिर्फ़ लिंग में—अगर संज्ञा स्त्रीलिंग हो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहरणार्थ : लोहे की दूकान से लखपति होनेवाले रामधन साहू है···(111, 7), ···पहाड़ जानेवाले यात्री···बसों के चलने के समय प्रतीक्षा कर रहे थे (96, 7), ···लैला बननेवाली हीराबाई···का नाम किसने नहीं सुना भला ! (52, 40), उधर तैयार हो चुकनेवाली चीज़ों पर पालिश हो रहा था (9, 177)।

शुद्ध 'वाला' रूपिम के साथ कृदन्तों के अलावा, संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में पक्ष-सम्बन्धी तथा 'वाला' रूपिम के साथ नामबोधक संयुक्त धातु वाले कृदन्त हो सकते हैं, उदाहरणार्थ : ···चाँदनी चौक में लाठी लेकर गश्त करते रहने वाले एक सिपाही ने उसे भागते देखकर उस पर लाठी का भरपूर वार कर दिया (97, 129), ···कल से आरम्भ होनेवाली छुट्टियों का ध्यान भटक आया (52, 90)।

'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त के रूप में संज्ञा-सलग्न विशेषण के प्रकार्य में क्रियार्थक-नामिक वाक्यांश और पदबन्ध हो सकते हैं, उदाहरणार्थ : ···पीछा करने वाले व्यक्ति की आहट ही उनके कानों में गूँजने लगी (96, 77), ···अपने शरीर का सौदा करनेवाली यह औरत···दो हज़ार को कैसे ठुकराए दे रही है ! (96, 85), चक्कर लगाते रहनेवाली आपकी सहेली क्यों नहीं आयी ? (58, 34), अंग्रेजों को जलाकर उनका खून करनेवाले इन हथियारों के प्रति साहब लोगों के क्रोध और घृणा के कारण प्रतिहिंसा का अन्त न था (96, 92)।

(2) विधेयवाचक विशेषण—जो मुख्यत: 'सिद्ध (साबित) होना' ('करना') और 'कहना', 'गिनना', 'समझना' और दूसरी क्रियाओं की उपस्थिति में आते हैं, उदाहरणार्थ : ···ये उद्‌गार तुर्की, ईरान और पाकिस्तान की हिम्मत बढ़ानेवाले सिद्ध होंगे (XI, 30-7-1957), आज वह मुझे अपने बेटे की जान लेनेवाली कहती है (59, 82), ···प्रभा बहुत अच्छी अंग्रेजी लिखनेवाली गिनी जाती थी (96, 59)।

'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त लक्षणान्वित प्रधान कर्म-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में उसके साथ नियमित तौर पर अन्वित होता है, उदाहरणार्थ : जिस सुहावनी तथा स्वच्छ वायु ने हमारे स्वास्थ्य का निर्माण किया था, उसे हम गोबर तथा गन्दे ढेरों की दुर्गन्ध से अपने स्वास्थ्य का नाश करनेवाली बना देते हैं (X), आज वह मुझे अपने बेटे की जान लेनेवाली कहती है (50, 82)।

(3) पूरक जो कि उन क्रियाओं में प्रगट होता है जो विशेष शाब्दिक-वाक्यात्मक स्थितियों में अपर्याप्त सूचना रखती हैं, और जो पूरक की उपस्थिति में ही प्रधान कर्म अपना सकती हैं। ऐसी क्रियाएँ बन्द शाब्दिक सूची से सम्बन्ध रखती हैं। 'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त इसी प्रकार की बहुत ही कम क्रियाओं से प्रयुक्त होते हैं, उदाहरणार्थ : आज वह मुझे अपने बेटे की जान लेनेवाली कहती है (59, 82), ···प्रभा बहुत अच्छी अंग्रेजी लिखनेवाली गिनी जाती थी (96, 59),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

···उसे हम···अपने स्वास्थ्य का नाश करनेवाली बना देते हैं (X)। यहाँ यह उल्लेख करना उचित होगा कि 'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त बहुधा लक्षणान्वित प्रधान कर्म के साथ नियमित तौर पर अन्वित होता है।

(4) संयुक्त नामिक विधेय जिसका अर्थ उद्देश्य का प्रक्रिया सम्बन्धी लक्षण है, जो स्थायी तथा नित्य व्यापार में निहित है या व्यापार के कर्ता से जो कि वाक्य का उद्देश्य है, व्यापार करने की इच्छा की ओर संकेत करता है। संयोजक क्रियाएँ 'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त-रूप तथा वर्तमान, भूत और (कम) भविष्यत् काल के बीच के सह-सम्बन्ध बताती हैं तथा संकेतार्थ और सम्भावनार्थ के साथ भी, उदाहरणार्थ, समिति की बैठक यहाँ 29 सितम्बर को होनेवाली है (IV, 26-9-1968), थोड़ी देर में गाड़ी जानेवाली है (31, 35), ग्यारह बजनेवाले थे (8, 37), वह चीख मारने ही वाली थी कि···(31, 9), ···देश का वातावरण दूषित होने के कारण खबरें बड़ी परेशान करनेवाली होतीं···(7, 81), अब तो निकलने ही वाली होगी (उनकी बारात) (1, 491), हाँ, अब दो बजनेवाले होंगे (52, 82), ···मैं इस बाज़ार में बाकायदा आनेवाला होता तो उठकर उसे··· कमरे से बाहर कर देता (13, 125)।

जैसा कि उदाहरणों से विदित है, 'वाला' रूपिम के साथ कृदन्त विधेय की बनावट में, रचना के संयुक्त घटकों के बीच समावेशित निपात रख सकता है, जैसे, मेरी मेज़ खाली होने ही वाली थी (59, 30)। इसके कारण 'वाला' इस विश्लेषणात्मक रचना में परप्रत्यय नहीं है बल्कि रूपिम है अर्थात् स्वत: पदायोग्य शब्द, जो कि सिर्फ व्याकरणिक प्रकार्य का काम दे रहा है।

'वाला' रूपिम के साथ नामिकीकृत कृदन्त वाक्य के स्तर पर उसके निम्नलिखित अंगों के प्रकार्य में आ सकता है: (1) उद्देश्य— ···मगर तब तो बहुत-सी काम करनेवालियाँ थीं (1, 262); ···गानेवालियाँ तथा नाचनेवालियाँ भी बारात के साथ थीं (140, 64); (2) प्रधान कर्म— ···वे···टिकट पा जाने वालों को धन की मदद देते हैं (142, 147); (3) अप्रधान कर्म—मरनेवाले की याद रुलाने के लिए काफी है (66, 22); (4) विशेषण—लेकिन पिटनेवाले से पीटनेवाली की फुर्ती अधिक थी (9, 119)।

कर्मवाच्य कृदन्त—कर्मवाच्य कृदन्त बगैर किसी अपवाद के विश्लेषणात्मक रचना होती है जो कि मुख्य क्रिया के सरल द्वितीय कृदन्त तथा सहायक क्रिया 'जाना' के चारों में से किसी एक कृदन्तपरक रूप से बनी होती है (संयुक्त प्रथम तथा द्वितीय कृदन्तों के रूपों को छोड़कर अर्थात् 'जाता हुआ' और 'गया हुआ' छोड़कर)। इस प्रकार, निम्नलिखित कर्मवाच्य कृदन्त होते हैं: कर्मवाच्य सरल प्रथम कृदन्त (लिखा+जाता), कर्मवाच्य सरल द्वितीय कृदन्त (लिखा+गया), कर्मवाच्य संतत कृदन्त जो कि बहुविश्लेषणात्मक रूप है (लिखा+जा+रहा),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वाला' रूपिम के साथ कर्मवाच्य कृदन्त, वह भी बहुविश्लेषणात्मक रूप है (लिखा +जाने+वाला)। संयुक्त कर्मवाच्य प्रथम तथा द्वितीय कृदन्त ज्यादातर काल्पनिक रूप होते हैं न कि भाषा में सच में होनेवाले हैं, इसलिए उनका अध्ययन यहाँ नहीं किया जायेगा हालांकि दो-एक उदाहरण साहित्य में मिलते हैं, जैसे··· पहनाई जाती हुई मालाएँ (श्रेष्ठ आंचलिक कहानियाँ, पृष्ठ 112)।

कर्तृवाच्य कृदन्तों के विपरीत कर्मवाच्य कृदन्तों के प्रयोग का अधिक सीमित घेरा होता है चूँकि शब्द-समुदाय के स्तर पर स्वतन्त्र प्रयोग में सिद्धान्ततः सिर्फ विश्लेषणात्मक-गुणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं और वाक्य के स्तर पर वे मुख्यतः संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में ही आते हैं। कर्मवाच्य कृदन्तों के लिए दूसरे प्रकार्य जैसे शब्द-समुदाय तथा वाक्य के स्तर पर, स्वाभाविक नहीं होते। विधेय के प्रकार्य में, वे आम तौर पर सिर्फ क्रियार्थक कालरूपों की बनावट में आते हैं जिसका वाच्य के विभाग में अध्ययन किया जायेगा। इसकी वजह से कर्मवाच्य कृदन्तों के काफी कम क्रियार्थक एवं नामिक लक्षण होते हैं।

क्रियार्थक लक्षणों में सकर्मकता, पक्ष (मुख्यतः विधेय के प्रकार्य में; विशेषण के प्रकार्य में केवल अवधारण तथा प्रभावी पक्ष के रूप में ही इस्तेमाल हो सकते हैं), काल की श्रेणी, जो कि कर्मवाच्य कृदन्तों के स्वतन्त्र प्रयोग के समय हो सकती है (प्रथम और द्वितीय तथा बहुत कम संतत कृदन्त में), जब वे क्रियार्थक विधेय के प्रकार्य में आते हैं ('किताब लिखी नहीं जाती' और 'किताब लिखी गयी'), और वृत्ति (अर्थ) की श्रेणी (सिर्फ प्रथम कर्मवाच्य कृदन्त की स्थिति में)।

कर्मवाच्य कृदन्तों के नामिक लक्षण उनमें लिंग, कारक तथा वचन की व्याकरणिक श्रेणियों तक ही सीमित हैं, जो कि कर्तृवाच्य कृदन्तों जैसा नियमित तौर पर प्रगट होते हैं। कर्मवाच्य कृदन्त आम तौर पर नामिकीकृत नहीं होते।

इसके अलावा कर्मवाच्य कृदन्त मुख्य क्रिया की हैसियत से उन्हीं विश्लेषणात्मक काल रूपों के संघटन में आते हैं जिनमें 'जाना' सहायक क्रिया का कृदन्त आता है (सरल प्रथम कृदन्त, सरल द्वितीय कृदन्त तथा संतत कृदन्त)। यही बात संकेतार्थ तथा सम्भावनार्थ के अपूर्ण, पूण तथा संतत रूपों के लिए भी उतनी सही है। कर्मवाच्य कृदन्तों के प्रयोग के प्रकार्यात्मक पहलू का जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, वाच्य के विभाग में अध्ययन किया जायेगा।

कर्मवाच्य सरल प्रथम कृदन्त—जब संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में आता है तो वह अपने विशेषक से नियमित तौर पर अन्वित होता है, उदाहरणार्थ : नीचे रगड़े जाते साथी को छुड़ाने के लिए वह लड़का आगे भागा···(17, 220), वह ···पति को देखती और कहे जाते शब्दों को सुनती रह गयी (44, 71), जोती जाती कुल भूमि का दस प्रतिशत बटाई के अन्तर्गत है (II, 10-2-1970, 12)।

कर्मवाच्य सरल द्वितीय कृदन्त—जब संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है तो अपने विशेषक से नियमित तौर पर अन्वित होता है, उदाहरणार्थ : रूस द्वारा छोड़ा गया उपग्रह बिना किसी पूर्व सूचना के अचानक सामने आया है (XI, 8-10-1957), रावत ने समझाये गए ढंग से दरवाजे पर पुकारा (96, 76) रमेश के द्वारा की गयी अपनी इस गहरी खुशामद से रघु बाबू प्रसन्न हुए··· (1, 180), ···बनायी गयी ऐसी योजना के लिए की गयी व्यवस्थाओं में और वृद्धि की गयी (153, 7)।

जैसा कि उदाहरणों से प्रगट होता है क्रियार्थक-नामिक वाक्यांश का क्रियार्थक घटक कर्मवाच्य द्वितीय कृदन्त के रूप में वाक्यांश के नामिक घटक-संज्ञा के संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में हो सकता है : की गयी खुशामद, की गयी व्यवस्था।

कर्मवाच्य द्वितीय कृदन्त के रूप में संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में क्रियार्थक-नामिक वाक्यांश और विश्लेषणात्मक नामबोधक संयुक्त क्रिया आ सकते हैं जो नियमित तौर पर अपने विशेषक से अन्वित होते हैं, उदाहरणार्थ : इनमें कई नयी स्थापित की गयी कम्पनियों के शेयर शामिल हैं (153, 33), प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य यह है कि इन प्रश्नों तथा पहले प्रस्तुत किए जा चुके प्रश्नों का विश्लेषण किया जाए (145, 56), अमरीका ने अपनी ओर से शुरू किये गए हमले में मदद माँगी (XI, 4-2-1963), ···1970-71 में जारी किये गए आयात-लाइसेंसों के मूल्यों में तेजी से वृद्धि हो गयी थी (153, 71)।

अगर क्रियार्थक-नामिक वाक्यांशों के नामिक घटक जो कि कर्मवाच्य द्वियीय कृदन्त के रूप में आते हैं, संज्ञा होती है, तो वह क्रियार्थक घटक की उपस्थिति में अपने-आपको प्रधान कर्म प्रगट नहीं करता, बल्कि सिर्फ़ व्यापार का शाब्दिक पूरक होता है, उदाहरणार्थ : ···विदेशी सहायता में से उपयोग नहीं की गयी विदेशी सहायता की राशि केवल 502.64 करोड़ रुपये थी (II, 10-2-1970, 7)।

कर्मवाच्य संतत कृदन्त—जब संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में आता है तो वह अपने विशेषक से नियमित तौर पर अन्वित होता है, उदाहरणार्थ : लेकिन क्या अब उसके द्वारा लिखे जा रहे और उसके बारे में लिखे जा रहे कागज़ों में सारी चीज़ें बन्द नहीं हैं ? (V, जनवरी, 1963, 23), ···जिससे कि दोनों देशों के मध्य चलाये जा रहे व्यापार की रूपरेखा मालूम की जा सके (II, 20-3-1966, 22), नीचे दी जा रही तालिका ऋण के विभिन्न स्रोतों को प्रदर्शित करती है (II, 5-4-1967, 24)।

क्रियार्थक-नामिक वाक्यांश के क्रियार्थक घटक कर्मवाच्य संतत कृदन्त के रूप में वाक्यांश के नामिक घटक—संज्ञा—के संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में आ सकते हैं, उदाहरणार्थ : शायद श्री सुब्रमनियम को कांग्रेस जन द्वारा इस क्षेत्र में किये जा रहे काम का अध्ययन करने का समय नहीं मिला (II, 20-10-1967, 4), सरकार···उनके द्वारा किये जा रहे व्यापार पर प्रतिबन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगाती···(XI, 17-1-1963)।

कर्मवाच्य संतत कृदन्त के रूप में संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में क्रियार्थक-नामिक वाक्यांश हो सकता है, उदाहरणार्थ : इस समय स्थापित किये जा रहे आठ कारख़ानों में से छः सरकारी तथा दो निजी क्षेत्र में हैं (II, 20-8-1965, 8)।

'वाला' रूपिम के साथ कर्मवाच्य कृदन्त—संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में अपने विशेषक से नियमित तौर पर अन्वित होता है, उदाहरणार्थ, रोज़ बदले जानेवाले कपड़े धोने लगी (13, 41), सरकारी भण्डारों से दिये जानेवाले अनाज की मात्रा काफ़ी बढ़ा दी गयी है (153, 2), वहाँ भेजी जानेवाली लड़कियों को पचहत्तर रुपये मासिक भत्ता दिया जा रहा था···(96, 60)।

क्रियार्थक-नामिक वाक्यांश का क्रियार्थक घटक 'वाला' रूपिम के साथ कर्म-वाच्य कृदन्त के रूप में वाक्यांश के नामिक घटक—संज्ञा—के संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में हो सकता है, उदाहरण के तौर पर : बीमारी में किये जाने-वाले आराम ने उसे और भी खूबसूरत बना दिया था (13, 159), साथ ही भारत सरकार ने···राज्यों को दी जानेवाली सहायता की सीमाएँ भी बढ़ा दी हैं (153, 7)।

'वाला' रूपिम कृदन्त के साथ संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में क्रियार्थक-नामिक वाक्यांश, नामबोधक संयुक्त विश्लेषणात्मक क्रियाएँ तथा पदबन्ध आ सकते हैं, उदाहरणार्थ : आयात की जानेवाली मुख्य वस्तुओं के स्थान पर देश में तैयार की जानेवाली वैसी ही वस्तुओं का उत्पादन काफ़ी हुआ था (153, 72), इसी तरह, पिछड़े क्षेत्रों में स्थापित किये जानेवाले लघु उद्योग, एकांकों के लिए संयंत्र और कच्चा माल आयात करने के सम्बन्ध में वरीयता दी जाती रही (153, 82), जारी किये जानेवाले औद्योगिक लाइसेंसों और आशय-पत्रों की संख्या में भी वृद्धि हुई (153, 31)।

अगर क्रियार्थक-नामिक वाक्यांश का नामिक घटक जो 'वाला' रूपिम के साथ कर्मवाच्य कृदन्त के रूप में आता है, संज्ञा है तो क्रियार्थक घटक की उपस्थिति में वह अपने-आपको प्रधान कर्म प्रगट नहीं करता, बल्कि सिर्फ़ व्यापार का शाब्दिक पूरक होता है। तब मुख्य क्रिया या अपने सरल द्वितीय कृदन्त के रूप में अपने नामिक घटक विशेषक शब्द के साथ भी अन्वित होती है, उदाहरणार्थ : 'निर्यात **किये जाने** वाली कुछ वस्तुओं पर···जो प्रतिबन्ध लगाये गए थे, उनमें ढील दे दी गयी' (153, 81) और 'निर्यात **की जाने** वाली वस्तुओं का उत्पादन बढ़ने···की सुनिश्चित व्यवस्था करना' (153, 81)।

'वाला' रूपिम के साथ कर्मवाच्य कृदन्त 'सकना' सम्भाव्य क्रिया के साथ पक्ष-सम्बन्धी रूप में आ सकता है, उदाहरणार्थ : ···वास्तविक प्राप्तियाँ सन्तोष-जनक कहे जा सकनेवाले स्तरों से काफ़ी नीची हैं (II, 5-4-1966, 36),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'''सरकार द्वारा अपनायी जा सकनेवाली घाटे की वित्त-व्यवस्था की रकम अपेक्षाकृत कम है (153, 58)।

'वाला' रूपिम के साथ कर्मवाच्य कृदन्त संयुक्त नामिक विधेय के प्रकार्य में आ सकता है, उदाहरणार्थ : '''मकान का किराया उससे ही लिया जानेवाला है (44, 93), '''रफ़ी को एक घोड़े पर सवार किया जानेवाला है (161, 28)।

क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त

क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त आधुनिक हिन्दी में एक अविकारी क्रियार्थक-क्रियाविशेषणात्मक रूप होता है, जो कि या तो मुख्य व्यापार के गुणात्मक लक्षण को व्यक्त करता है, या सहायक, गौण व्यापार या अवस्था को व्यक्त करता है या मुख्य व्यापार को जो कि कर्त्ता की अवस्था के द्वारा प्रगट होता है।

आधुनिक हिन्दी में रूप एवं अर्थ के अनुसार क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों में 6 कर्तृवाच्य के तथा 3 कर्मवाच्य के होते हैं। दो क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त कर्मवाच्य तथा कर्तृवाच्य धातु से बनते हैं। पाँच क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त कृदन्तों के आधार पर उत्पन्न होते हैं और एक स्वयं क्रियाविशेषण कृदन्त से बना है।

कर्तृवाच्य धातु से परिवर्तन द्वारा (संकालिक अर्थ में), और धातु के साथ 'कर', 'के' और 'करके' परप्रत्यय लगाने से तृतीय कर्तृवाच्य क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त बनता है (पूर्ववर्ती व्यापार का क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त)। कर्मवाच्य धातु से उसके साथ वे ही परप्रत्यय लगा तृतीय कर्मवाच्य क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त बनता है :

कर्तृवाच्य धातु	पर-प्रत्यय	तृतीय कर्तृवाच्य क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त	कर्मवाच्य धातु	पर-प्रत्यय	तृतीय कर्मवाच्य क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त
लिख	—	लिख	लिखा जा	—	लिखा जा
लिख	कर	लिखकर	लिखा जा	कर	लिखा जाकर
लिख	कर	लिख के	लिखा जा	के	लिखा जाके
लिख	करके	लिख करके	लिखा जा	करके	लिखा जा करके

पाँच कृदन्तपूर्वक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त रूप में कृदन्तों के अप्रत्यक्ष कारक के बराबर हैं।

प्रथम कर्तृवाच्य क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त (सरल एवं संयुक्त) रूप में कर्तृवाच्य कृदन्त के सरल तथा संयुक्त रूप के अप्रत्यक्ष कारण के बराबर है : 'लिखते' और 'लिखते हुए'। भाषा के संकालिक विश्लेषण के आधार पर यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त, क्रिया के कर्तृवाच्य धातु के साथ परप्रत्यय 'ते' जोड़कर बनता है : लिख+ते=लिखते। कर्तृवाच्य संयुक्त कृदन्त इस स्थिति में 'हुए' रूप को (क्रिया 'होना' के सरल क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त का समाकार है) सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के साथ जोड़ने से बनता है।

कर्मवाच्य प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त (आम तौर पर केवल सरल) कर्मवाच्य प्रथम सरल कृदन्त के अप्रत्यक्ष कारक के रूप के बराबर है : लिखा जाते। भाषा के संकालिक विश्लेषण के आधार पर कह सकते हैं कि कर्मवाच्य सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त कर्मवाच्य धातु को परप्रत्यय 'ते' लगाने से बनता है, लिखा जा+ते= लिखा जाते।

कर्तृवाच्य द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त (सरल तथा संयुक्त) कर्तृवाच्य द्वितीय कृदन्त के सरल तथा संयुक्त रूप के अप्रत्यक्ष कारक के रूप के बराबर है : 'लिखे' और 'लिखे हुए'। भाषा के संकालिक विश्लेषण के आधार पर निश्चय से कहा जा सकता है कि सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रिया के कर्तृवाच्य धातु के साथ परप्रत्यय 'ए' (ये) जोड़ने से बनता है : लिख+ए = लिखे। कर्तृवाच्य द्वितीय संयुक्त क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त इस स्थिति में सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के साथ 'हुए' रूप को ('होना' क्रिया के सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त का समाकार है) जोड़ने से बनता है।

क्षणिक पूर्ववर्ती क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त (क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त 'ही' निपात के साथ) प्रथम सरल कर्तृवाच्य क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के साथ 'ही' निपात लगाने से बनता है : लिखते+ही = लिखते ही।

अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त जिनको आधुनिक हिन्दी में नयी रचना कहा जाता है द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के रूप से, प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के सरल तथा संयुक्त रूप से द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के संयुक्त रूप से 'भी' निपात लगाने से बनता है क्योंकि अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों को छोड़कर ये सब रचनाएँ, जिनका ऊपर अध्ययन किया गया है, प्राचीनतम हिन्दी में मिलती हैं : (क) तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त—मालिन आवत देख करी···(कबीर—62, 10), पेट पकड़िके माता रोवई बाँह पकड़िके भाई (कबीर—62, 12); (ख) प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त (सरल)—सोते मुझको आन जगावे (खुसरो—62, 5), चलते-चलते झुक गया गाँव कोम पर गउ (कबीर—79, भाग-2, 250); (ग) द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त (सरल)—मूँड मराये हरि मिलई (कबीर—62, 11); (घ) 'ही' निपात के साथ क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त—सूरन की कहत ही··· (सूरदास—79, भाग-दो, 250)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त, एवं सरल तथा संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त तथा 'ही' निपात के साथ क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के कर्मवाच्य रूप ज्यादातर काल्पनिक होते हैं और भाषा में उनका वास्तविक अस्यित्व नहीं के बराबर होता है।

सरल तथा संयुक्त तथा द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त काल विरोध रखते हैं: आते—आये, आते हुए—आए हुए; सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त और तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त वाच्य विरोध रखते हैं—लिखते—लिखा जाते, लिखकर—लिखा जाकर।

सरल प्रथम तथा द्वितीय क्रियाविशेषात्मक कृदन्त विश्लेषणात्मक पक्ष-सम्बन्धी रूप की रचना में हिस्सा लेते हैं।

तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त पक्ष-सम्बन्धी विरोध रखते हैं: करके—करते रहकर, भागकर—भागे जाकर।

शब्द-समुदाय और वाक्य के स्तर पर क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त तद्रूप तथा विशेष प्रकार्यों को पाबन्द करते हैं। वे रूपात्मक तथा वाक्यात्मक लक्षणों की श्रेणियों से पहचाने जाते हैं। इसलिए हर क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के लिए स्वतन्त्र विवरण की जरूरत पड़ती है।

सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के निम्नलिखित क्रियार्थक लक्षण होते हैं:

(1) वाच्य की श्रेणी, उदाहरणार्थ, पहले दिन उन्होंने···तैयार करते देखा था···(16, 27), और···टुन्नु का शव वरुणा में प्रवाहित किये जाते भी हमारे संवाददाता ने देखा है (129, 106)।

(2) सकर्मकता तथा अकर्मकता की श्रेणी—उदाहरणार्थ, यह कहते नोहरी ने सबको आशीर्वाद दिया···(69, 79), सुरजना को मारते-मारते वह बेदम कर सकती···(44, 21), रास्ता चलते वह किसी स्त्री को देखकर रुक जाती···(75, 31)।

(3) सापेक्ष कालवाचक अर्थ की श्रेणी—सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त मुख्य व्यापार के गुणात्मक लक्षण या गौण सहायक व्यापार का वर्णन करते हुए मुख्य विधेय के व्यापार की सहकालिकता व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ: 'हाँ भाई', चिलम को मुँह लगाते करिन्दा बोला···(83, 35), लेकिन सोहन को सारी रात खाँसते गुज़री (66, 148)।

(4) विधेयन की श्रेणी—जो तब प्रगट होती है जब सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त तार्किक विधेय व्यक्त कर सकता है और उसका अपना कर्त्ता भी हो सकता है। क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त इस स्थिति में स्वतन्त्र पदबन्ध बनाता है या वाक्य के प्रधान कर्म से सम्बन्धित होता है, उदाहरणार्थ: राम के पहुँचते वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी पहुँच जायेगी (65, 139), ···उसे शहर में चौकीदारी करते हो चुके थे नकद बीस साल···(52, 25), राम ने धूल उठते देखी (84, 91-92)।

सरल प्रथम विशेषणात्मक कृदन्त मुख्य क्रिया की हैसियत से निम्नलिखित पक्ष-सम्बन्धी रूपों की बनावट में आता है : (1) नित्यताबोधकसीमाकारी पक्ष—हर दो दिन बाद नया कुर्ता-धोती लाते रहना सम्भव न था···(97, 36), ···इशारों में सब कुछ कहते रहना मुझे दिन-रात खाये जाता है (108, 36); (2) घटमान पक्ष—सेठी उसे खिलाते जाना चाहता था···(96, 19); (3) योग्यताबोधक पक्ष—नीलो से कुछ बोलते नहीं बना (59, 132)।

क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के क्रियाविशेषणात्मक लक्षण इसलिए प्रगट होते हैं कि प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त एक अविकारी रूप होता है जो कि लिंग, वचन, कारक के अनुसार बदलता नहीं। क्रियाविशेषण की तरह, सरल क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त व्यापार का गुणात्मक वर्णन कर सकता है जब वह क्रियाविशेषणात्मक शब्द के प्रकार्य में होता है। तब क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रिया से पहले स्थान लेता है जो स्थान क्रियाविशेषण या दूसरा क्रियाविशेषणीकृत शब्द लेता है।

प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के क्रियाविशेषणीकरण की असीम हद उसका क्रियाविशेषण बनना होती है, उदाहरणार्थ···वह देखते-देखते द्वार से बाहर तैरती निकल गयी (44, 71)—देखते-देखते—अर्थात् 'जल्दी-से', 'क्षण-भर में', 'पल-भर में'; मेरे कुल की नारियाँ पुराने ज़माने में हँसते-हँसते आग में कूद जाती थीं (143, 17)—हँसते-हँसते—अर्थात् 'खुशी से', 'बगैर डर के'; मेरा यह निर्णय केवल प्रोफ़ेसर महमूद की उस चलते-चलते कही गयी बात के कारण हो, ऐसा नहीं (11, 14)—चलते-चलते—अर्थात् 'राह चलते'।

सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयोजक होता है, अगर उसका कर्ता वाक्य का उद्देश्य होता है और वह निरपेक्ष होता है, अगर वह अपने कर्ता के साथ-साथ आता है या वह कर्ता कल्पित होता है। संयोजक तथा निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयोजक या निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तपरक रचना बनाते हैं, लेकिन वे अकेले क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त की हैसियत से हो सकते हैं। निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त का तब व्यापार का कल्पित कर्ता होता है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर सिर्फ़ संयोजक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त होते हैं जो कि विशेषणात्मक सम्बन्धों की प्रणाली में क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, उदाहरणार्थ, थियेटर में···वह हँसते-हँसते लोट गया (66, 95)। स्पष्ट है कि निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त शब्द-समुदाय के आश्रित घटक के प्रकार्य में नहीं हो सकते।

वाक्य के स्तर पर सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त उसके अग्रलिखित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगों के प्रकार्य में आ सकता है :

(1) क्रियाविशेषण—क्रियाविशेषण के प्रकार्य में सरल प्रथम क्रिया-विशेषणात्मक कृदन्त संयोजक अथवा निरपेक्ष हो सकता है।

संयोजक प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रियाविशेषण के प्रकार्य में मुख्य व्यापार से समपाती गौण व्यापार को व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : बाहर निकलते, सड़क पर चलते, घर में रहते हमेशा सचेत रहता…(108, 167), डण्डा लेते चलना, 66, 55)।

अगर संयोजक प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त में कर्त्ता है जो कि कर्तृ-सम्बन्धी रचना में आता है और बहुवचन, पुल्लिग संज्ञा से व्यक्त होता है या एक-वचन के शिष्ट रूप में होता है, तो सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त रूप और प्रकार्य में सरल प्रथम कृदन्त के अप्रत्यक्ष कारक के साथ मिलता है और वे व्याकरणिक पर्याय शब्द और शाब्दिक समनाम की हैसियत से आते हैं, उदाहरणार्थ : लड़के…उछलते-कूदते घर में दाखिल हुए (69, 170-171), इन्कार के शब्द उसके होंठों तक आते-आते रुक गये (75, 118), तुम दौड़ते-दौड़ते थक गये (69, 186)।

अगर उद्देश्य साधक कारक में होता है (कर्म या भाववाचक रचनाओं में) तो इस प्रकार्य में सिर्फ़ सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त ही आते हैं (आम तौर पर पुनरुक्त), उदाहरणार्थ : भाग्य को धिक्कारते-धिक्कारते उसने (औरत) लल्लनसिंह को धिक्कारना आरम्भ किया (69, 251), जल्पा ने डरते-डरते उधर देखा (65, 240), कुजरे ने डरते-डरते कहा…(69, 135), कहते-कहते शेरनी की तरह लपककर उसने एक तेज़ छुरा स्त्री की छाती में घुसेड़ दिया (69, 199)। इस बात को ऐसे समझना चाहिए कि साधक कारक में शब्द वाक्य के बाकी अंगों के साथ अपना हर सम्बन्ध खो बैठता है, सिवाय अपने विशेषण के, इस तरह कृदन्त उससे अन्वित होने की सम्भावना खो बैठता है जैसा कि, कृदन्त के लक्षणान्वित प्रधान कर्म की उपस्थिति में होता है (मुकाबला कीजिएगा…उसे खेलती देखकर…(72, 223)।

क्रियाविशेषणात्मक प्रकार्य में निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त मुख्यतः निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तपरक पदबन्ध में आता है, जो कि वाक्य का पृथक्कृत अंग होता है। ऐसे पदबन्धों में क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त अपने तार्किक कर्ता के साथ मानो स्वतन्त्र विचार व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : मुझे नौकरी करते तीस साल हो गये (65, 52), रमा के पहुँचते-पहुँचते वह भी पहुँच जायेगी (65, 139), लेकिन सोहन को सारी रात खाँसते गुजरी (66, 148), अपना धार्मिक विश्वास मैं प्राण रहते छोड़ूँगा नहीं (3, 79), ढाई बजते-न-बजते हरी गाड़ी दरवाज़े पर खड़ी हो गयी (1, 139)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक क्रृदन्तपरक पदबन्ध के स्थान पर यहाँ निरपेक्ष अर्थ में पुनरुक्त क्रियाविशेषणात्मक क्रृदन्त आ सकता है, उदाहरणार्थ : चलते-चलते मेरे पैर दुखने लगे···(69, 190), खाते-पीते बारह बजते हैं (65, 178)।

प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के संयोजक और निरपेक्ष प्रयोग के बीच में तथाकथित 'कर्म-सम्बन्धी' सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त है जिसका एक तरफ़ तो अपना तार्किक कर्ता होता है और दूसरी तरफ़ वह पृथक्कृत पदबन्ध को नहीं बनाता चूँकि वह वाक्य के प्रधान कर्म से सम्बन्ध रखता है (मुख्यत: सुनना, देखना आदि क्रियाओं की उपस्थिति में), उदाहरणार्थ, राम ने धूल उड़ते देखी (84, 91-92), ···उसने लालबिहारी को दरवाज़े पर खड़े यह कहते सुना कि···(69, 150), अपनी आँखों मैंने अपने सम्बन्धियों की निर्मम हत्या होते देखी है (87, 507), रमणी को जाते देखकर सरदार साहब की जान में जान आयी (69, 189), इस कोठरी का दरवाज़ा खुलते सुनता···(69, 226)।

'कर्म-सम्बन्धी' सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक क्रृदन्त उस व्यापार को व्यक्त करता है, जो कि किसी विशेष समय के बीच हुआ हो और जो सारे समय में हुए मुख्य व्यापार के साथ सन्निपात हो या उसकी कार्यान्विति के किसी निश्चित क्षण के साथ सन्निपात हो। यही एक अन्तर सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक क्रृदन्त तथा उन सरल प्रथम क्रृदन्तों के बीच है जिनमें वे ही क्रियाएँ प्रयोग में आती हैं, लेकिन जो विधेयवाचक विशेषण के प्रकार्य में व्यक्त होती हैं चूँकि क्रृदन्त अपने स्थान को बदल सकते हैं, अर्थात् शुद्ध विशेषण के प्रकार्य में हो सकते हैं [मुकाबला कीजिये—'दद्दा के सिर से खून बहता देख···(4, 170)' और 'दद्दा के सिर से बहता खून देख···', लेकिन '···पहलवान के मुँह से खून बहते देखकर··· (28, 184')'], इसीलिए प्रथम क्रियाविशेषणात्मक क्रृदन्त अपने कर्त्ता के व्यापार तथा उसकी अवस्था को व्यक्त करता है, लेकिन कर्ता के सन्तत गुण को नहीं। यही कारण है कि यहाँ क्रियाविशेषणात्मक क्रृदन्त क्रियाविशेषण है, और कृदन्त— विधेयवाचक विशेषण।

सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त न केवल पुल्लिग, बहुवचन बल्कि एकवचन वाले लक्षणान्वित प्रधान कर्म के साथ आते हुए रूप और प्रकार्य में सरल प्रथम कृदन्त के अप्रत्यक्ष कारक से मिल जाते हैं और वे व्याकरणिक पर्याय तथा शाब्दिक समनाम की हैसियत से आते हैं, उदाहरणार्थ : जब मैंने उनके गवाहों को सरासर झूठ बोलते देखा···(71,5), लड़कों को खेलते देखा···(69, 213), ···कृष्णचन्द्र ने···साधू को अपनी ओर आते देखा (72, 231), ···दो व्यक्तियों को व्यभिचार और चोरी करते पकड़ा···(24, 88)।

जब लक्षणान्वित स्त्रीलिंग संज्ञाएँ इस्तेमाल होती हैं तो प्रधान कर्म के प्रकार्य में केवल सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक क्रृदन्त आता है, उदाहरणार्थ : इस बुढ़िया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को निकलते देखा (24, 131), सोना ने अंग्रेजी सेना को एकत्रित होते देखा (36, 89)।

इस तरह तीन प्रकार के सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रियाविशेषणात्मक प्रकार्य में आते हैं : (1) संयोजक, या 'कर्त्ता' क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त; निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त और 'कर्म-सम्बन्धी' क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त।

(2) विधेय—सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयुक्त और जटिल क्रियार्थक विधेय में इस्तेमाल होता है।

संयुक्त क्रियार्थक विधेय में सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त व्यापार के योग्यताबोधक पक्ष में आता है, उदाहरणार्थ : ···आपकी बात नहीं टालते बनती (65, 68)।

जटिल क्रियार्थक विधेय में क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त शामिल हो सकता है : (क) व्यापार के नित्यताबोधक-सीमित तथा घटमान पक्षों सम्बन्धी तुमर्थ में, उदाहरणार्थ : वह किसी बहाने से उसकी मदद करते रहना चाहती थी (65, 182), सेठी उसे खिलाते जाना चाहता था (96, 19); (ख) 'डरना', 'शर्माना', 'झेंपना', 'घबराना', 'ऊँघना' आदि क्रियाओं की रचनाओं में, 'थकना' तथा 'चूकना' क्रियाओं के साथ जहाँ क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त का अर्थ क्रियार्थक कर्म के करीब होता है जो तुमर्थ व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : मैं इन लोगों के सामने पड़ते डरता हूँ (108, 33), ···वह सुधा के घर गहने पहन कर जाते शर्माती थी (66, 118), इतना स्वीकार करते क्यों झेंपते हो (66, 121-122), राम इतना भारी बोझ लेते घबरा रहा था (65, 68), ···वह गाते-गाते थक गया (52, 96), तो यह बात बताते भी नहीं चूकता कि···(116, 106); (ग) 'बचना' क्रिया के साथ तथा 'सम्भलना' और 'रहना' क्रियाओं के साथ की रचनाओं में जहाँ क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त अर्थक भार का धारण करते हैं, और समापक क्रिया ज़ाहिर करती है कि कृदन्त द्वारा व्यक्त किया हुआ व्यापार वास्तविक रूप में नहीं हुआ, उदाहरणार्थ : वह बार-बार गिरते-गिरते बचा (96, 47), सुखराम का लट्ठ कन्धे पर पड़ते-पढ़ते बचा (103, 166), वह एक और धोखा खाकर गिरते-गिरते सम्भली···(108, 71), उसके मुँह से एक बार आवाज़ निकलते-निकलते रह गयी (65, 269); (घ) एक धातु की क्रिया की रचनाओं में, जो कि मुख्य व्यापार की कार्यान्विति की ओर संकेत देती है, जो कि सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त द्वारा व्यक्त की जाती है, उदाहरणार्थ : इस तरह बातचीत बढ़ते-बढ़ते बढ़ गयी (51, 12), शिथिलता फैलते-फैलते फैल गयी (116, 125)।

जैसा कि उदाहरणों से विदित है कि क्रियाविशेषण के प्रकार्य में एवं विधेय के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार्य में सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त 'बहुत' अवसर पुनरुक्त रूप में आता है, जो कि व्यापार की नित्यता को अकेले क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त से ज़्यादा व्यक्त करता है। निषेधात्मक 'न' निपात के साथ क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त की पुनरुक्ति का अर्थ यह है कि व्यापार या अवस्था जो कि क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त द्वारा व्यक्त किया गया है, शुरू हो चुका है, परन्तु अभी समाप्त नहीं हुआ है, उदाहरणार्थ : नन्दू ने अनमने भाव से नोट गिनने शुरू किये, परन्तु गिनती खत्म करते-न-करते उसकी आँखें चमक उठीं (7, 9), तीररे दिन सूर्योदय होते-न-होते उसका जीवन अस्त हो गया (1, 32)।

संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त—संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों के निम्नलिखित लक्षण होते हैं :

(1) सकर्मकता तथा अकर्मकता की श्रेणी—उदाहरणार्थ : किवाड़ खोलते हुए मिनाल बोली···(108, 128), यह कहते हुए लल्लू हँसा (17, 358), अँधेरे बरामदे में चलते हुए लतिका ठिठक गयी (52, 87)।

(2) सापेक्ष कालवाचक अर्थ की श्रेणी—जब क्रियाविशेषण के प्रकार्य में आता है तो संयुक्त क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त मुख्य विधेय के व्यापार के साथ सहकालिकता व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ: ···वह मुसकराते हुए बोली··· (52, 105), दूजी को बूढ़ी कैलासी के साथ रहते हुए एक मास बीत गया (69, 245)।

(3) विधेयन की श्रेणी—जो कि तब प्रगट होती है जब संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त तार्किक विधेय को व्यक्त करता है और अपना कर्ता रखता है। इस स्थिति में क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त स्वतन्त्र पदबन्ध बनाता है या वाक्य के प्रधान कर्म के साथ सम्बन्धित होता है, उदाहरणार्थ : आपके फ़ेल होते हुए मेरा पास हो जाना इतना बड़ा अपराध है···(143, 8), मिस्टर, कभी तुमने बर्फ़ गिरते हुए देखी है ? (30, 30)।

संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के क्रियाविशेषणात्मक लक्षण इससे प्रगट होते हैं कि यह क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त एक अविकारी रूप है जो कि लिंग, वचन तथा कारक के अनुसार बदलता नहीं। क्रियाविशेषण की तरह, संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त व्यापार के गुणात्मक वर्णन को व्यक्त कर सकता है, जब वह क्रियाविशेषणात्मक शब्द के प्रकार्य में होता है। यह बात विशेषकर तब प्रगट होती है जब कि मुख्य क्रिया और क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त की सन्निहित अवस्था होती है।

संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयोजक होता है अगर उसका कर्ता वाक्य का उद्देश्य होता है, और वह निरपेक्ष होता है अगर वह अपने कर्ता के साथ होता है (या अगर वह कल्पित होता है)। संयोजक और निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृदन्त संयोजक और निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तपरक पदबन्ध बनाते हैं और अकेले क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त हो सकते हैं। निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त का तब व्यापार का कल्पित कर्ता होता है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर सिर्फ संयोजक प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त ही हो सकते हैं जो कि विशेषणात्मक सम्बन्धों की प्रणाली में क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं। उदाहरणार्थ : वह मुसकराते हुए बोली…(52, 105)।

वाक्य के स्तर पर संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त उसके निम्नलिखित अंगों के प्रकार्य में आते हैं :

(1) क्रियाविशेषण—संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों का क्रियाविशेषणात्मक प्रकार्य ही मुख्य प्रकार्य है, जहाँ संयोजक अथवा निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त इस्तेमाल होते हैं।

क्रियाविशेषणात्मक प्रकार्य में संयोजक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त सहायक व्यापार को व्यक्त करते हैं जो कि मुख्य व्यापार का गौण होता है। उदाहरणार्थ : और यह कहते हुए वह मुड़ा (17, 189), जादूगर दौड़कर झोंपड़ी में माँ-माँ पुकारते हुए घुसा (39, 30)।

विधेय से जैसे-जैसे दूर होते हैं, विशेषकर जब संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त वाक्य के उद्देश्य से पहले रखा जाता है, तो उसके क्रियाविशेषणात्मक प्रकार्य कम हो जाते हैं और प्रथम स्थान पर सहायक व्यापार का शुद्ध अर्थ आ जाता है, उदाहरणार्थ : मोटर से जाते हुए सेठानी ने यह सब देखा (44, 95), और रास्ते में चलते हुए वह बार-बार मेरी तरफ देखती रही…(52, 146)।

अगर संयोजक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त में उद्देश्य कर्तृसम्बन्धी रचना में आता है और बहुवचन पुल्लिग संज्ञा द्वारा व्यक्त होता है या एकवचन में शिष्ट रूप में व्यक्त होता है तो संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त रूप तथा प्रकार्य में संयुक्त प्रथम कृदन्त के अप्रत्यक्ष कारक से मिल जाता है और वे व्याकरणिक पर्याय तथा शाब्दिक समनाम की हैसियत से आते हैं, उदाहरणार्थ : …लोग उसके सामने जाते हुए काँपते हैं (8, 37), सरदार साहब हँसते हुए विदा हुए (69, 205)।

अगर उद्देश्य साधक कारक में होता है (कर्म-विषयक या भाववाचक रचनाओं में) तो क्रियाविशेषण के प्रकार्य में सिर्फ़ संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त ही आते हैं, उदाहरणार्थ : तुरार्या ने जाते हुए कहा…(69, 196), जागेश्वर ने बाहर जाते हुए उत्तर दिया (69, 214), स्त्री ने रोते हुए कहा…(69, 116)। जैसा कि सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों की स्थिति में, इस बात को इस तरह समझना चाहिए कि साधक कारक में शब्द वाक्य के बाकी अंगों के साथ अपना हर सम्बन्ध खो बैठता है, सिवाय अपने विशेषण के, इस तरह क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त उससे अन्वित होने की सम्भावना खो बैठते हैं, जैसा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृदन्त के लक्षणान्वित प्रधान कर्म की उपस्थिति में होता है, उदाहरणार्थ : इस मलेच्छ घुड़सवार सेना को बढ़ती आती हुई देख···(4, 58)।

क्रियाविशेषणात्मक प्रकार्य में निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त मुख्यतः निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तपरक पदबन्ध में आता है, जो कि वाक्य का पृथक्कृत अंग होता है। ऐसे पदबन्धों में क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त अपने तार्किक कर्ता के साथ मानो स्वतन्त्र विचार व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : मराठा फ़ौजों को विश्राम करते हुए अभी थोड़ा समय हुआ होगा···(47, 10), गालों पर साबुन लगाते हुए मुझे बड़ी मचलन-सी लग रही थी (108, 47), वह बच्चों के रहते हुए अपना दूसरा विवाह करे (66, 153)।

संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त बहुत ही कम 'देखना', 'सुनना' और दूसरी क्रियाओं की उपस्थिति में क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के 'कर्म सम्बन्धी' अर्थ में आता है हालाँकि ऐसा प्रयोग आधुनिक हिन्दी में मिलता है, उदाहरणार्थ : मिस्टर, कभी तुमने बर्फ़ गिरते हुए देखी है ? (30, 30), ···वह यह कहते हुए सुना जाता है (111, 100)।

संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषण कृदन्त पुल्लिग, एकवचन तथा बहुवचन के लक्षणान्वित प्रधान कर्म की उपस्थिति में रूप और प्रकार्य में संयुक्त प्रथम कृदन्त के अप्रत्यक्ष कारक के साथ मिल जाते हैं, उदाहरणार्थ : आज एक को रोते हुए देख दूसरा हँसता···(69, 216), ···उन्हें आज भी तपस्या करते हुए माना जाता है···(84, 68)।

संयोजक संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त प्रकार्य रूप में संयुक्त प्रथम कृदन्त के करीब है जो कि विधेयवाचक क्रियाविशेषण के प्रकार्य में आता है। यह बात प्रायः समान उदाहरणों से सिद्ध हो जाती है : 'यह कहते हुए लल्लू हँसा' (17, 358), और 'यह कहता हुआ जियाराम अपने कमरे में चला गया' (66, 160), 'रास्ते में चलते हुए वह बार-बार मेरी तरफ देखती रही' (52, 146), और "वह चलती हुई मुझे बताने लगी···' (52, 146)।

(2) विधेय—संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त सिर्फ़ जटिल क्रियार्थक विधेय में होता है जो कि 'डरना', 'झेंपना' आदि समापिका क्रियाओं की उपस्थिति में होता है, उदाहरणार्थ : सदान उसके आगे पुस्तक खोलते हुए डरता (73, 50), पहले मन्साराम उसके पास आते हुए झिझकता था···(66, 50), वह कुँवर बन चुका था, इसलिए ऐसी तुच्छ भेंट देते हुए झेंपता था (72, 102)।

सरल तथा संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों में निम्नलिखित प्रकार्यात्मक अन्तर हैं :

(1) संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त वाच्य विरोध नहीं रखते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त विश्लेषणात्मक पक्ष-सम्बन्धी रूपों में नहीं आते।

(3) संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त शब्द-समुदाय तथा वाक्य के स्तर पर पुनरुक्त रूप में नहीं आते।

सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त—सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त उस अवस्था को व्यक्त करता है जो कि किसी खत्म हुई प्रक्रिया का परिणाम होती है, जो कि (क) क्रियाविशेषणात्मक शब्द की हैसियत से दूसरी प्रक्रिया को साथ लेता है, और (ख) मुख्य तथा गौण विधेय की सीमा में स्वयं प्रक्रिया को व्यक्त कर सकता है (गौण विधेय केवल निरपेक्ष पदबन्ध में)। सरल द्वितीय कृदन्त के विपरीत, सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त जो कि सकर्मक धातु से बना है, हमेशा कर्तृवाच्य अर्थ रखता है। इस विषय में यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि द्वितीय कृदन्त का कोई भी कर्तृवाच्य अर्थ, वास्तव में, क्रिया-विशेषणात्मक होता है, चूँकि द्वितीय कृदन्त का विशेषणात्मक प्रयोग हमेशा अप्रत्यक्ष कारक के रूप में होता है, चाहे वह स्त्रीलिंग संज्ञा के आगे ही क्यों न हो। निम्न-लिखित उदाहरण इसको सावित करता है: इतने में झिलमिलाती पोशाक पहने और जड़ाऊँ गहनों से लदी कई परियाँ वहाँ किसी तरफ़ से आ निकलीं (25, 120)।

सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के निम्नलिखित क्रियार्थक लक्षण होते हैं:

(1) सकर्मकता और अकर्मकता की श्रेणी, उदाहरणार्थ: सामने एक टीला मार्ग रोके खड़ा था (69, 247), वह स्कूटर में लेटे-लेटे बेपरवाही से खाता है (8, 76)।

(2) सापेक्ष कालवाचक अर्थ की श्रेणी—जब सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रियाविशेषणात्मक शब्द या क्रियाविशेषणात्मक पदबन्ध के प्रकार्य में आता है, तो वह प्रक्रिया-अवस्था व्यक्त करता है, जो कि मुख्य क्रिया के व्यापार के साथ सहकालिक होती है, उदाहरणार्थ: भालचन्द्र एक मिनट तक आँखें बन्द किये बैठे रहे···(66, 22), धर्मदास सिर झुकाये खड़ा रहा (69, 179)।

(3) विधेयन की श्रेणी, जो तब प्रगट होती है जबकि सरल द्वितीय क्रिया-विशेषणात्मक कृदन्त तार्किक विधेय को व्यक्त करता है और अपना कर्ता रखता है। इस स्थिति में क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त स्वतन्त्र पदबन्ध बनाता है या वाक्य के प्रधान कर्म के साथ सम्बन्ध रखता है, उदाहरणार्थ: चेतन के बैठे-बैठे रजत की बहन चाय लायी थी (17, 154), श्री कोलारकर को स्वीप खेले वर्षों बीत गये थे (7, 87), मुझे पलकें झुकाए देखकर सोनो उठ गयी (103, 42)।

सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त मुख्य क्रिया की हैसियत से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्रलिखित पक्ष-सम्बन्धी रूपों में होता है : (1) नित्यताबोधक पूर्णपरिणामी पक्ष —पुलिस भी पहरा लगाये रहती थी (97, 5), वह करीमुद्दीन को देर रात तक बातों में उलझाये रहती (52, 99); (2) घटमान पूर्णपरिणामी पक्ष—चिन्ता दिल को खाये जा रही थी (58, 37), उसकी माँ रोये जाती है, उसे चूमे जाती है, रोये जाती है (7, 122); (3) निश्चयबोधक पक्ष —बैठने की जगह मैं अभी बनाये देती हूँ (52, 132), अरे ठहरो, मैं पकड़े लेता हूँ (75, 173); (4) गुणार्थक पक्ष—क्रोध सम्भाले नहीं सम्भलता था (29, 10), उस गाय की याद तो अलग हटाये नहीं हटती (116, 97)।

सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के क्रियाविशेषणात्मक लक्षण इसलिए होते हैं कि क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त एक अविकारी रूप है और लिंग, वचन तथा कारक के अनुसार नहीं बदलता। क्रियाविशेषण की तरह, सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त व्यापार के क्रियाविशेषणात्मक वर्णन को व्यक्त कर सकता है। इस तरह, सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त उसी स्थान पर क्रिया से पहले होता है जो कि क्रियाविशेषण या दूसरा क्रियाविशेषणात्मक शब्द लेता है। सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त का असीम क्रियाविशेषणीकरण है उसका क्रियाविशेषण बन जाना, जो विशेषकर निषेधात्मक पूर्वप्रत्यय सहित क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों के लिए सही है। उदाहरणार्थ : मैंने अनजाने किया (47, 12), अनजाने—'बगैर इच्छा के', 'वैसे ही'; वह इसी तरह चुपचाप बे-हिले-डुले लेटा रहा (17, 16), बे-हिले-डुले—'बगैर हिले'; बैठे-बैठे आ जायेगा? (103, 416); बैठे-बैठे—'बगैर मुश्किल के', 'बगैर किसी बात के'; तुम्हें बैठे-बैठाये एक-न-एक खुचर सूझती ही रहती है (69, 224), बैठे-बिठाये—'वैसे ही', 'बगैर किसी बात के'।

सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयोजक होता है अगर उसका कर्ता वाक्य का उद्देश्य होता है, और निरपेक्ष है, अगर वह अपने कर्ता के साथ आता है (या अगर वह कल्पित है)। संयोजक तथा निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयोजक या निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तपरक पदबन्ध बना सकते हैं, लेकिन वे अकेले क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के रूप में आते हैं। निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त का तब व्यापार का कल्पित कर्ता होता है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर सिर्फ़ संयोजक सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त आते हैं जो कि विशेषणात्मक सम्बन्धों की प्रणाली में क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, उदाहरणार्थ : न जाने आँखें मूँदे मैं क्या सोच रहा था… (116, 42), जहाँ गगास की नदी…पहाड़ियों में अनजाने खो जाती है (9, 130)।

वाक्य के स्तर पर सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त उसके अग्रलिखित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगों के प्रकार्य में आता है :

(1) क्रियाविशेषण—क्रियाविशेषण के प्रकार्य में सरल द्वितीय क्रिया-विशेषणात्मक कृदन्त संयोजक और निरपेक्ष हो सकते हैं।

संयोजक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रियाविशेषण के प्रकार्य में कर्ता, जो कि वाक्य का उद्देश्य है, की अवस्था व्यक्त करता है और क्रियार्थक विधेय के व्यापार का क्रियाविशेषण के रूप में साथ देता है (मुख्यतः व्यापार के प्रकार का क्रियाविशेषण)। मुख्य क्रिया की हैसियत से, जिसके साथ क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त का सम्बन्ध है, दूसरी क्रियाओं की अपेक्षा गतिसूचक तथा दशासूचक क्रियाएँ ज़्यादा आती हैं और कथनवाचक तथा भाव-चेतनावाचक क्रियाएँ भी। उदाहरणार्थ : उसकी उँगली थामे फज्जा चल रहा है···(7, 29), सरदार छुरा लिये मेरी तरफ़ बढ़ा (69, 190), सद्‌वृत्तीय मुँह छुपाये खड़ी थी···(66, 15), ···वह स्टेशन के प्लेटफ़ार्म पर कुर्सी डाले धूप में बैठा था (16, 148), धर्मदास सिर झुकाये खड़ा रहा (69, 179), न जाने आँखें मूँदे मैं क्या सोच रहा था···(116, 42), वही वह युवा शिकारेवाले दोंगे पर बैठे एक आदमी से बातें कर रहा था (9, 182)।

प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के विषयों के विपरीत जो कि अप्रत्यक्ष प्रथम कृदन्त का समाकार है, द्वितीय (सरल तथा संयुक्त) क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त सिर्फ़ द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त की उपस्थिति में ही ऐसा समाकार बना सकता है जो कि अकर्मक धातुओं (या अकर्मक कृदन्तों) से बनते हैं। सकर्मक धातुओं से बने अविधेय रूप हमेशा अविकारी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तपरक रूप में आते हैं, चाहे वे प्रत्यक्ष कारक में शब्द के आगे ही क्यों न हों, उदाहरणार्थ : उसके साथ बरसाती ओढ़े, छाता लगाये, एक युवती थी (116, 91), ···सीधे-सादे रंगों के कपड़े पहने स्त्रियाँ (95, 65), दीवार से पीठ टिकाये मर्द नारियल गुड़गुड़ाता हुआ फिर बड़बड़ा रहा था···(96, 35)। सरल द्वितीय क्रिया-विशेषणात्मक कृदन्त जो कि अकर्मक धातु से बना है, रूप तथा प्रकार्य में सरल द्वितीय कृदन्त के अप्रत्यक्ष कारक के साथ मिल जाता है और वे व्याकरणिक पर्याय और शाब्दिक समनाम की हैसियत में आते हैं, जब वाक्य का उद्देश्य, जो कि कर्तृ-सम्बन्धी रचना में आता है, पुल्लिंग, बहुवचन या शिष्ट रूप, एकवचन द्वारा व्यक्त किया जाता है, उदाहरणार्थ : ···बगुले डालियों पर बैठे हिंडोले झूल रहे थे (69, 130), ब्रजनाथ दरवाजे पर बैठे गोरेलाल का इन्तज़ार कर रहे हैं (60, 133), पुरोहितजी पूजा पर बैठे सोच रहे थे···(69, 127)।

अगर उद्देश्य (कर्म-सम्बन्धी या भाववाचक रचनाओं में) साधक कारक में है तो परस्थित स्थिति में आम तौर पर सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त आता है जो कि अकर्मक धातु (अकर्मक कृदन्त) से बनता है, उदाहरणार्थ : नवाब ने मोटर में बैठे-ही-बैठे कहा···(3, 25)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोजक द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रियाविशेषणात्मक प्रकार्य में 'के बिना' और 'के बगैर' परसर्गों के साथ आता है। इस स्थिति में वे सहायक व्यापार को व्यक्त करते हैं, जिसके बगैर मुख्य क्रियार्थक विधेय का व्यापार सम्पन्न हो जाता है, उदाहरणार्थ : मिस पाल क्षण भर बाद फिर उसी तरह बिना रुके बात करने लगी···(52, 148), ···बिना कोई जवाब दिये लौट पड़ा···(71, 91), ···बिना मुँह से एक शब्द निकाले कमरे से निकल गयी (66, 205)।

निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रियाविशेषणात्मक प्रकार्य में मुख्यतः निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तपरक पदबन्ध में प्रयोग होता है जो कि वाक्य के पृथक्कृत अंग के प्रकार्य में आता है। इन पदबन्धों में क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त अपने तार्किक कर्ता के साथ मानो स्वतन्त्र विचार व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : यूसुफ़ सौदागर को मरे सौ वर्ष हो चुके थे···(25, 47), चेतन के बैठे-बैठे रजत की बहन चाय लायी थी (17, 154), सुमन को ससुराल आये डेढ़ साल के लगभग हो चुका था (73, 21), मुन्नू इतनी रात बीते नहीं जा सकता (69, 135), उस वक्त सूरज छिपे काफ़ी देर रात हो गयी थी (17, 243)।

निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त 'तक' परसर्ग के साथ इस्तेमाल हो सकता है, उदाहरणार्थ : वह उसके साथ दिन चढ़े तक सोया रहता (7, 64), दिन छिपे तक सोता रहता···(7, 71)।

सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के निरपेक्ष तथा संयोजक इस्तेमाल के बीच में तथाकथित 'कर्म-सम्बन्धी' सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त है जो एक तरफ़ अपना तार्किक कर्ता रखता है तो दूसरी तरफ़ पृथक्कृत पदबन्ध नहीं रचता चूँकि वह वाक्य के प्रधान कर्म के साथ सम्बन्ध रखता है (मुख्यतः 'देखना' क्रिया के साथ), उदाहरणार्थ : मुझे पलकें झुकाये देखकर सोनो उठ गयी (103, 42), 'कर्म-सम्बन्धी' सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त उस अवस्था को व्यक्त करता है जो कि द्रव्य (या व्यक्ति) के लिए मुख्य व्यापार की कार्यान्विति के समय स्वाभाविक है।

जैसा कि सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त की स्थितियों में होता है, यहाँ भी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त का रूप अविकारी होता है और परस्थिति निश्चित होती है।

पुल्लिग, एकवचन तथा बहुवचन लक्षणान्वित प्रधान कर्म में जब आता है, तो सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त रूप तथा प्रकार्य में सरल द्वितीय कृदन्त के अप्रत्यक्ष कारण से मिल जाता है और वे फिर व्याकरणिक पर्याय और शाब्दिक समनाम की हैसियत से आने लगते हैं, उदाहरणार्थ : ···मादा हातिम को वहाँ पड़े देखकर घबरायी···(25, 20), सुमन ने दो कांस्टेबलों को कन्धे पर लट्ठा रखे आते देखा (73, 33)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिह्नित स्त्रीलिंग संज्ञा में इस प्रकार्य में सिर्फ़ क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त आता है, उदाहरण के लिए : उसने भोली को छज्जे पर बैठे देखा (73, 20)।

इस प्रकार, क्रियाविशेषणात्मक प्रकार्य में सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के तीन प्रकार आते हैं : संयोजक, या 'कर्तृ-सम्बन्धी' कृदन्त, निरपेक्ष क्रिया-विशेषणात्मक कृदन्त तथा 'कर्म-सम्बन्धी' क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त।

(2) विधेय—सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रियार्थक और नामिक विधेय में आता है।

सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयुक्त क्रियार्थक विधेय में मुख्य क्रियाओं की हैसियत से निम्नलिखित पक्षों में आता है : (क) नित्यताबोधक पूर्णपरिणामी—किन्तु कोई शक्ति उसे रोके रही···(52, 14); (ख) घटमान पूर्णपरिणामी—वह लगातार बातें किये जा रहा है (28, 154); (ग) निश्चय-बोधक—मैं लाये देती हूँ···(75, 91); (घ) गुणार्थक—उस गाय की याद तो अलग हटाये नहीं हटती (116, 97)।

सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त जटिल क्रियार्थक विधेय में नित्य-बोधक पूर्णपरिणामी और घटमान पूर्णपरिणामी पक्ष-सम्बन्धी तुमर्थ में आता है, उदाहरणार्थ : वह दल के लिए मेरा भेद जाने रहना चाहता था (97, 98)।

सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयुक्त नामिक विधेय में मुख्य क्रिया होता है, जो कि कृदन्तपरक रूपों के विपरीत कर्ता द्वारा किये जानेवाले व्यापार को नहीं बल्कि कर्ता की अवस्था को व्यक्त करता है, जो वह अनुभव करता है। इस प्रकार्य में सिर्फ़ सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त ही आते हैं, जो कि सकर्मक धातुओं से (या कृदन्तों से) बने हैं, और वाक्य की रचना हमेशा कर्तृ-सम्बन्धी रहती है, उदाहरणार्थ : वह···फरिया पहने थी···(103, 4), मैं समझे था तुम गुसलखाने में हो (107, 53), मेमसाहब बच्चे के लिए पिटारी में दूध की बोतल लिये थीं (96, 14), वह···इतनी जोर से मुट्ठी बाँधे थी कि··· (103, 553)। इस क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के साथ के विधेय में संयोजक 'था' मौजूद है।

संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त—संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त, सरल क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के समान वह अवस्था व्यक्त करते हैं जो कि समाप्त की हुई प्रक्रिया के परिणामस्वरूप होती है जो कि (क) दूसरी प्रक्रिया के साथ, क्रियाविशेषणात्मक शब्द की हैसियत से आ सकता है, और (ख) मुख्य तथा गौण विधेय (गौण विधेय केवल निरपेक्ष पदबन्धों में) की सीमा में खुद प्रक्रिया व्यक्त कर सकता है। संयुक्त द्वितीय कृदन्त के विपरीत, सकर्मक धातु से बना संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त हमेशा कर्तृवाच्य अर्थ रखता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के निम्नलिखित क्रियार्थक लक्षण होते हैं :

(1) सकर्मकता तथा अकर्मकता की श्रेणी—उदाहरणार्थ : राम सिर झुकाये हुए सुनता रहा (65, 255), गंधा बैठे हुए पैरों के घुँघरू उतार रही थी। (87, 130)।

(2) सापेक्ष कालवाचक अर्थ की श्रेणी—क्रियाविशेषणात्मक शब्द के प्रकार्य में या क्रियाविशेषणात्मक पदबन्ध में, संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त प्रक्रिया-अवस्था को व्यक्त करता है, जो कि मुख्य क्रिया के व्यापार के साथ सहकालिक होती है, उदाहरणार्थ : एक व्यक्ति शानदार मोतियों का ताज पहने हुए बैठा था (24, 59), ···बरामदे में लेटे हुए मैं देर तक जाली के बाहर देखता रहा (52, 152)।

(3) विधेयन की श्रेणी—इसके प्रगट होने का कारण है कि संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त तार्किक विधेय को व्यक्त कर सकता है और अपना कर्ता रखता है। क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त उस स्थिति में स्वतन्त्र पदबन्ध बनाता है। उदाहरणार्थ : रामनाथ को कलकत्ता आये हुए दो महीने से ऊपर हो गये हैं (65, 155), पंडित कृष्णचन्द्र को जेलखाने से छूटकर आये हुए एक सप्ताह बीत गया था···(73, 113)।

संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के क्रियाविशेषणात्मक लक्षण के प्रगट होने का कारण यह है कि यह क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त एक अविकारी रूप होता है जो कि क्रियाविशेषण की तरह व्यापार के क्रियाविशेषणात्मक वर्णन को व्यक्त करता है। तब संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रिया से पहले स्थान पर होता है, जिस पर कि क्रियाविशेषण या दूसरे क्रियाविशेषणात्मक शब्द होते हैं।

संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयोजक होता है, अगर उसका कर्ता वाक्य का उद्देश्य होता है, और निरपेक्ष होता है अगर वह अपने कर्ता के साथ होता है (या अगर वह कल्पित होता है)। संयोजक या निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयोजक या निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तपरक पदबन्ध बना सकते हैं।

शब्द-समुदाय के स्तर पर सिर्फ़ संयोजक संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त आते हैं जो कि विशेषणात्मक सम्बन्धों की प्रणाली में क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, उदाहरणार्थ : वह सिर लटकाये हुए चुपचाप वहाँ से लौट गया (52, 145), गंधा बैठे हुए पैरों के घुँघरू उतार रही थी (87, 130)।

वाक्य के स्तर पर संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त उसके अग्रलिखित अंगों के प्रकार्य में आ सकते हैं :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(1) क्रियाविशेषण—क्रियाविशेषण के प्रकार्य में संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयोजक अथवा निरपेक्ष हो सकता है।

संयोजक संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त कर्ता, जो कि वाक्य का उद्देश्य है, की अवस्था को व्यक्त करता है और क्रियाविशेषण की तरह क्रिया-विधेय के व्यापार के साथ होता है (आम तौर पर—व्यापार के प्रकार का क्रियाविशेषण)। मुख्य क्रिया की हैसियत से, जिससे क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त सम्बन्ध रखता है, गति तथा अवस्था की क्रिया होती है, और कथनवाचक तथा भावचेतनावाचक क्रिया होती है, उदाहरणार्थ : धर्मदास पानी लिये हुए दौड़ा···(69, 176), आईना सामने रखे हुए कानों में झुमके पहन रही थी (65, 124), राम सिर झुकाये हुए सुनता रहा (65, 255), ···मिसरानी···सिर्फ़ चोली पहने हुए खुले सिर चुनौती के साथ कहने लगी···(44, 23), आँखें झुकाये हुए ही वह बोला (108, 79)।

संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयुक्त द्वितीय कृदन्त के अप्रत्यक्ष कारक का समाकार सिर्फ़ तब हो सकता है जब वह अकर्मक धातु से बनता है चूंकि अविधेय रूप जो कि सकर्मक धातुओं से बनते हैं, हमेशा अविकारी क्रियाविशेषणात्मक होते हैं, चाहे वे वाक्य के उद्देश्य (या शब्द, जिससे वे सम्बन्ध रखते हैं) के आगे हों, उदाहरणार्थ : ···उनके बीच में आने-जाने का रास्ता छोड़े हुए, फिर भी उस रास्ते को रोके हुए यह ड्योढ़ी थी (44, 120), ···तिरंगा झण्डा लगाये हुए एक टैक्सी उनके पास आकर खड़ी हो गयी (116, 67)।

संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त जो अकर्मक धातु से बनता है प्रकार्य तथा रूप में संयुक्त द्वितीय कृदन्त के अप्रत्यक्ष कारक के रूप में मिल जाता है और वे व्याकरणिक पर्याय तथा शाब्दिक समनाम की हैसियत से आते हैं जब वाक्य का उद्देश्य कर्ता-सम्बन्धी रचना में आता है और पुल्लिग बहुवचन संज्ञा या शिष्ट एकवचन रूप से व्यक्त होता है, उदाहरणार्थ : ये लोग राज-पथ से हटे हुए, पेचीदा औघट रास्तों से चले आ रहे थे (69, 174), रद्दू सिंह खोये हुए से बैठे थे (1, 146)।

अकर्मक संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त और अप्रत्यक्ष कारक के संयुक्त द्वितीय कृदन्त की उपस्थिति में उद्देश्य आम तौर पर साधक कारक में नहीं होते।

विरल स्थिति में संयोजक संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त 'के बिना' और 'के बगैर' परसर्गों के साथ होते हैं। वे तब, समान सरल क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों की तरह, सहायक व्यापार को व्यक्त करते हैं, जिसके बगैर विधेय की मुख्य क्रिया का व्यापार सम्पन्न होता है, उदाहरणार्थ : ···वह बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये हुए ही चला गया था (116, 31)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रियाविशेषणात्मक प्रकार्य में आम तौर पर निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तपरक पदबन्ध में इस्तेमाल होता है, जो कि वाक्य के पृथक्कृत अंग के प्रकार्य में होता है। इन पदबन्धों में क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त अपने तार्किक कर्ता के साथ मानो स्वतन्त्र विचार व्यक्त करते हैं, उदाहरणार्थ : हमारे सोये हुए धर्म-ज्ञान की सारी सम्पत्ति लुट जाये, तो उसे ख़बर नहीं होती···(69, 155), आगे-पीछे पड़े हुए सवेरा हो जायेगा (65, 123), अभी आपके यहाँ से निकले हुए उसे पाँच-छः महीने से ज़्यादा नहीं हुए होंगे (73, 59), उसे लेटे हुए अभी कुछ ही मिनट हुए होंगे (15, 12)।

'कर्म-सम्बन्धी' संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त बहुत कम पाया जाता है और मुख्यतः सकर्मक संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त से व्यक्त होता है, उदाहरणार्थ : उसने उसे मुँह पर रूमाल लपेटे हुए ही देखा था (69, 74), यहाँ पर मैंने बहुत-से लोगों को भेड़ की खाल के बालों के कपड़े पहने हुए देखा है (27, 12)। 'कर्म-सम्बन्धी' संयुक्त क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त अवस्था को व्यक्त करता है जो कि द्रव्य (या व्यक्ति) के मुख्य व्यापार की कार्यान्विति के समय स्वाभाविक है।

इस तरह, क्रियाविशेषणात्मक प्रकार्य में क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों के तीन प्रकार होते हैं : संयोजक या 'कर्ता-सम्बन्धी' क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त, निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त और 'कर्म-सम्बन्धी' क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त।

(2) विधेय—संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त मुख्य क्रिया की हैसियत से संयुक्त नामिक विधेय में आता है और कृदन्तपरक रूपों के विपरीत कर्ता—वाक्य के उद्देश्य—द्वारा किये गये व्यापार को नहीं बल्कि कर्ता द्वारा अनुभव की गयी अवस्था को व्यक्त करता है। इस प्रकार्य में सिर्फ़ संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त आते हैं जो कि सकर्मक धातुओं से (या कृदन्तों से) बने होते हैं, और वाक्य की रचना हमेशा कर्ता-सम्बन्धी होती है, उदाहरणार्थ : वह शराब पिये हुए थी (103, 23), जी, वही पहने हुए हूँ (27, 32), ···बालक सेठी की उँगली पकड़े हुए था (96, 13), मैं सरकार से सम्पर्क कायम किये हुए हूँ (XI, 2-2-1963)। इस समान प्रकार्य के सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों के विपरीत, यहाँ सिर्फ़ अपूर्ण भूत ही नहीं बल्कि वर्तमान योजक भी प्रयोग होता है। संयुक्त योजक की हैसियत से यहाँ 'रहना' क्रिया हो सकती है जो कि रूपों में समस्त रचना को व्यापार के नित्यताबोधक पूर्णपरिणामी पक्ष के करीब लाती है, उदाहरणार्थ : दिन-भर युवतियाँ उसे घेरे हुए रहती थीं (116, 28)।

(3) विधेयवाचक सामाधिकरण—जो कि मुख्यतः कर्तृकारक नामिक एकांगी वाक्यों में प्रगट होता है जबकि संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त अवस्था का विधेयवाचक सूचक होता है, उदाहरणार्थ : ···नाक उभरी हुई, पेशानी चौड़ी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल ज़रा लाली लिए हुए (3, 33), अब लड़का सरकार। ठहरा जवान। शहर की हवा खाये हुए (15, 24)।

सरल तथा संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों में निम्नलिखित प्रकार्यात्मक अन्तर हैं :

(1) संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त विशेषणात्मक पक्ष-सम्बन्धी रूपों में नहीं आता।

(2) संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त पुनरुक्त रूप में नहीं आता।

(3) संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त, सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के विपरीत विधेयवाचक सामाधिकरण के प्रकार्य में आता है।

(4) संयुक्त द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त सिर्फ़ संयुक्त नामिक विधेय में आता है।

तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त (पूर्ववर्ती व्यापार का क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त)—तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के निम्नलिखित क्रियार्थक लक्षण होते हैं :

(1) वाच्य की श्रेणी—जो कि तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के स्वतन्त्र प्रयोग में प्रगट होती है, उदाहरणार्थ : 'मैंने उसको उठाकर मंगू की तरह घुमाया' (103, 112), और 'उस तरह उठाया जाकर वह उठ गया···' (44, 55)।

तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त कर्मवाच्य अर्थ अपनाते हैं अगर वह मुख्य क्रिया से सम्बन्ध रखता है जो कि कर्मवाच्य में होती है, उदाहरणार्थ : चन्दा पकड़कर भीतर भेजी गयी (103, 486), हालाँकि तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त का यह कर्मवाच्य अर्थ शुद्ध शाब्दिक है।

(2) पक्ष की श्रेणी—जो कि सिर्फ़ तृतीय क्रियाविशेषणात्मक के स्वतन्त्र प्रयोग में प्रगट होती है, जैसे, थोड़ी देर उसका लिखना ताकते रहकर लड़के ने··· पत्रिका निकालकर उनके सामने रख दी···(52, 13), कुछ देर उसके पीछे भागे जाकर गालियाँ देते और हाँफते चाचा डालचन्द वापस लौट आये (17, 106)।

(3) सकर्मकता तथा अकर्मकता की श्रेणी—उदाहरणार्थ : बात की थाह पकड़कर बोली·· (116, 20), कजरी बैठकर सी रही थी (103, 507)।

(4) सापेक्ष कालवाचक अर्थ की श्रेणी—जब मुख्य व्यापार के गुणात्मक वर्णन को व्यक्त करता है या सहायक गौण व्यापार को व्यक्त करता है तो तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त मुख्यतः क्रिया (क्रिया-विधेय) के पूर्ववर्ती व्यापार को व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : पहाड़ पर पहुँचकर सुखराम रुक गया (103, 445), वह बाहर निकला और नल पर जाकर भरपेट पानी पिया (116, 75)। यद्यपि काल के अपूर्ण रूपों में तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त मुख्य क्रिया के व्यापार के साथ सहकालिकता व्यक्त कर सकता है, जबकि पूर्व-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तिता की बाकी घटनाएँ फिर भी महसूस होती हैं, उदाहरणार्थ : ···मार-मारकर खाल उड़ा देगा दारोगा (103, 39), कठफोड़ा अखरोट के पेड़ पर चोंच मार-मार खट-खट, खट-खट की आवाज़ कर रहा था (116, 29), वह ठुमका मारकर कमर हिलाती हुई नाचती (103, 45)।

(5) विधेयन की श्रेणी—जो कि तब प्रगट होती है जब तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त तार्किक विधेय व्यक्त कर सकता है और अपना कर्ता रखता है। तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त तब स्वतन्त्र पदबन्ध को बनाता है, उदाहरणार्थ : उसे जनता के उस जोश को देखकर विश्वास नहीं हुआ··· (116, 75), ···आपको यह जानकर बड़ी प्रसन्नता होगी (27, 55)।

तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के क्रियाविशेषणात्मक लक्षण यह है कि वह अविकारी रूप होने की वजह से व्यापार के गुणात्मक वर्णन को व्यक्त कर सकता है जब वह क्रियाविशेषणात्मक शब्द के प्रकार्य में आता है और उसी स्थान पर होता है जो कि क्रियाविशेषण या किसी दूसरे क्रियाविशेषणीकृत शब्द का होता है।

तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के क्रियाविशेषणीकरण की चरम सीमा उसका क्रियाविशेषण हो जाना है, उदाहरणार्थ : कृष्णचन्द्र उड़कर पहुँचना चाहते थे (72, 10), उड़कर 'बहुत जल्दी', 'क्षण-भर में'; मैंने इम्तहान को अपने मन में आँख डालकर कसकर बाँध लेना चाहा···(44, 74), कसकर 'पक्की तरह', 'ज़ोर से', 'शक्ति से'; वह खुलकर मुसकराया···(52, 51), खुलकर 'स्वतन्त्रता से', 'हार्दिक ढंग से'।

तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयोजक होता है, अगर उसका कर्ता वाक्य का उद्देश्य होता है और निरपेक्ष होता है, अगर वह अपने कर्ता के साथ आता है (या अगर वह कल्पित होता है)। संयोजक और निरपेक्ष तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयोजक या निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तपरक पदबन्ध बना सकते हैं परन्तु साथ-साथ अकेले क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त होते भी हैं। निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त का तब व्यापार का कल्पित कर्ता होता है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर सिर्फ़ संयोजक तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त आते हैं, जो कि विशेषणात्मक सम्बन्धों की प्रणाली में क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, उदाहरणार्थ : उसने चौंककर देखा···(39, 33), जुगनू ने झुककर सलाम किया···(71, 56)।

वाक्य के स्तर पर तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त उसके निम्नलिखित अंगों के प्रकार्य में आता है :

(1) क्रियाविशेषण—क्रियाविशेषण के प्रकार्य में तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयोजक और निरपेक्ष हो सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोजक तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त व्यक्त कर सकते हैं : (क) मुख्य क्रिया का गुणात्मक वर्णन—वह चीख-चीखकर रोती रही, बिलख-बिलखकर रोती रही, लिपट-लिपटकर रोती रही (108, 89), पत्नी इस पर झपट के उठी···(44, 71), कुँवर साहब ठठारकर हँसे (73, 144); (ख) सहायक व्यापार जो कि मुख्य व्यापार का पूर्ववर्ती है—लीला ने स्वयं हाथ बढ़ाकर सिगरेट ले लिया, सिगरेट होंठों में दबाकर मेज़ पर से माचिस उठा, एक सींक जलाकर बोली···(96, 63), वहाँ पहुँचकर तुम दायीं तरफ़ वाला रास्ता पकड़ लेना (25, 108), सुखराम शिकार मारकर लाता है (103, 451); (ग) सहायक व्यापार जो कि मुख्य क्रिया के साथ है—···तोते···टाँय-टाँय कर उड़ रहे थे (103, 240), कठफोड़ा पक्षी अखरोट के पेड़ पर चोंच मार-मारकर खट-खट, खट-खट की आवाज़ कर रहे थे (116, 29)।

निरपेक्ष तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रियाविशेषणात्मक प्रकार्य में मुख्यतः निरपेक्ष कृदन्तपरक पदबन्ध में आता है जो कि वाक्य का पृथक्कृत अंग है। इन पदबन्धों में क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त, अपने तार्किक कर्ता के साथ मानो स्वतन्त्र विचार व्यक्त करता है। उदाहरणार्थ : एक घायल को देखकर उसका दिल पसीज उठा (116, 76), मुझे उन लोगों की यह हालत देखकर बहुत दुःख हुआ (27, 21), सरदार पटेल की बात मानकर आत्मसमर्पण किया गया (116, 74)।

इस प्रकार, क्रियाविशेषणात्मक प्रकार में तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के दो प्रकार होते हैं : संयोजक, या 'कर्ता-सम्बन्धी' क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त और निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त।

(2) विधेय—तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयुक्त तथा जटिल क्रियार्थक विधेय में आता है।

संयुक्त क्रियार्थक विधेय में तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रिया-विशेषणात्मक कृदन्त-धातु के रूप में व्यापार का अवधारण तथा प्रभावी पक्ष में आते हैं, उदाहरणार्थ : उनके माथे पर बाल उभर आये (107, 48), दुर्भाग्य से मैं एक नाग औरत को नौकर रख बैठी थी (36, 116), हूणों का ज़िक्र हम पहले कर चुके हैं (2, 68)।

क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु के साथ, अवशिष्ट घटनाओं की हैसियत से यहाँ परप्रत्ययी तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त मिलते हैं, उदाहरणार्थ : एक किस्सा आँखों के आगे उभरकर आता है (107, 32), चाय पीकर चुके ही थे कि फिर जीप के आकर रुकने की आहट हुई (147, 30)।

जटिल क्रियार्थक विधेय में तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रिया-विशेषणात्मक कृदन्त-धातु के रूप में मुख्य व्यापार को स्वतन्त्र समझाने वाला या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ने वाला अंश होता है, उदाहरणार्थ :···मैं किसी के साथ निकल तो नहीं भागी (59, 115), बाँदा की उस श्यामल छाया ने तुम्हें ऐसी जगह ला छोड़ा··· (107 22)।

कर्मवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त—आधुनिक हिन्दी में कर्मवाचक प्रथम तथा तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त मौजूद हैं। कर्मवाचक द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त नहीं होता चूँकि द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त उस अवस्था को व्यक्त करता है जो कि व्यापार के कर्ता द्वारा अनुभव की जाती है लेकिन स्वयं व्यापार को व्यक्त नहीं करता। जैसा कि पता है, आधुनिक हिन्दी में व्यापार का कर्मवाच्य है जो कि 'जाना' सहायक क्रिया की मदद से बनता है तथा अवस्था का कर्मवाच्य है जो कि द्वितीय कृदन्त तथा संयोजक क्रिया के मेल से बनता है। दूसरी ओर संयोजक द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त हमेशा कर्तृ-सम्बन्धी रचना में प्रयोग होता है, इस कारण भी कर्मवाचक द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त का बनना सम्भव नहीं।

कर्मवाचक प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त (मुख्यतः सरल क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त)—आम तौर पर 'देखना' क्रिया की उपस्थिति में 'कर्म-सम्बन्धी' क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त की हैसियत से आता है। तब कर्मवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त का पहला तत्त्व अन्वित या भाववाचक रूप में आ सकता है अर्थात् द्वितीय कृदन्त के रूप में, लेकिन क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तपरक रूप भी अपना सकता है, उदाहरणार्थ : वह स्कूल से आते वक्त भैरों बाजार में घण्टों बोतलें भरी जाते देखा करता था (17, 287), समस्त अधिकारों को छीना जाते हुए देखकर एक चुनौती-सी लगी···(103, 248), लड़कपन में उसे बोतलों में सोडा भरे जाते देखना बेहद पसन्द था (17, 287), ···टुन्नू का शव वरुणा में प्रवाहित किए जाते भी हमारे संवाददाता ने देखा है (129, 106)। कर्मवाचक प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त सहायक व्यापार को व्यक्त करता है जो कि मुख्य क्रिया के व्यापार के साथ सहकालिक है।

कर्मवाचक तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रियाविशेषण के प्रकार्य में सहायक व्यापार को, जो कि मुख्य क्रिया के व्यापार का पूर्ववर्ती है, व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : उपहार कर के बारे में आपका सुझाव है कि कर उपहारदाता पर न लगाया जाकर, उपहार पाने वाले पर लगाया जाय (II, 20-3-68, 26), इतना भारी पर्वत दैत्यों और देवों द्वारा खींचा जाकर जब कछुए की पीठ पर जोरों से घूमता था तो···(84, 19), उस तरह उठाया जाकर वह उठ गया··· (44, 55)।

क्षणिक पूर्ववर्ती क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त ('ही' निपात समेत क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त)—इन कृदन्तों के अग्रलिखित क्रियार्थक लक्षण होते हैं :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(1) सकर्मकता तथा अकर्मकता की श्रेणी—उदाहरणार्थ : शिव की आज्ञा पाते ही उसके हाथ वीणा पर बढ़ गये (28, 10), युवक गिरते ही उठा··· (17, 22)।

(2) सापेक्ष कालवाचक अर्थ की श्रेणी—गौण सहायक व्यापार, या मुख्य क्रिया के गुणात्मक वर्णन को व्यक्त करते हुए, क्षणिक पूर्ववर्ती क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त मुख्य क्रिया-विधेय के क्षणिक पूर्ववर्ती व्यापार को व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : कृष्णचन्द्र उन्हें देखते ही घबराकर उठे···(73, 11), ···असेम्बली खुलते ही यह बिल पेश करूँगा (71, 29)।

(4) विधेयन की श्रेणी तब प्रगट होती है जब क्षणिक पूर्ववर्ती क्रिया-विशेषणात्मक कृदन्त तार्किक विधेय व्यक्त करता है और अपना कर्ता रखता है। क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त इस स्थिति में स्वावलम्बी और स्वतन्त्र पदबन्ध बनाता है, उदाहरणार्थ : पहली बार चलते ही भगदड़ मच गयी (69, 12), बाप के मरते ही अपने यार को कहीं से उठा के ले आयी है (28, 30)।

क्षणिक पूर्ववर्ती क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के क्रियाविशेषणात्मक लक्षण इसलिए प्रगट होते हैं कि यह क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त एक अविकारी रूप है। क्रियाविशेषण की तरह, यह क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त भी व्यापार के गुणात्मक वर्णन को व्यक्त कर सकता है। जब वह क्रियाविशेषणात्मक शब्द के प्रकार्य में होता है तब क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त उसी स्थान पर क्रिया से पहले होता है, जहाँ पर क्रियाविशेषण या दूसरा क्रियाविशेषणात्मक शब्द होता है।

क्षणिक पूर्ववर्ती क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयोजक होता है, अगर उसका कर्ता वाक्य का उद्देश्य होता है और निरपेक्ष होता है, अगर वह अपने कर्ता के साथ होता है (या अगर वह कल्पित होता है)। संयोजक और निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयोजक और निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तपरक पदबन्ध बना सकते हैं, लेकिन अकेले क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त भी हो सकते हैं। तब निरपेक्ष क्रिया-विशेषणात्मक कृदन्त व्यापार का अपना कल्पित कर्ता रखता है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर सिर्फ़ संयोजक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त आते हैं जो कि विशेषणात्मक सम्बन्धों की प्रणाली में क्रियाविशेषणत्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, उदाहरणार्थ : शर्मा जी उसकी सूरत देखते ही सूख जाते (73, 54), ··· रतन आ पहुँची और आते-ही-आते बोली···(65, 100)।

वाक्य के स्तर पर क्षणिक पूर्ववर्ती क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रियाविशेषण के प्रकार्य में आता है।

संयोजक क्षणिक पूर्ववर्ती क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त गौण व्यापार को व्यक्त करता है जो कि मुख्य व्यापार का पूर्ववर्ती होता है और दोनों व्यापारों के बीच में समय का अन्तर न्यूनतम होता है, उदाहरणार्थ : घर पहुँचते ही विट्ठलदास पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखने को बैठ गये (73, 61), युवक गिरते ही उठा···(17, 222)।

निरपेक्ष क्षणिक पूर्ववर्ती क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रियाविशेषणात्मक प्रकार्य में मुख्यतः निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तपरक पदबन्ध में आता है जो कि वाक्य का पृथक्कृत अंग होता है। इन पदबन्धों में क्रियाविशेणात्मक कृदन्त अपने तार्किक कर्ता के साथ मानो स्वतन्त्र विचार व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : ज़मींदार साहब के जाते ही कुछ समय के बाद धानियाँ आयी (87, 107), शिव ने केशव के झुकते ही अपना दाहिना पाँव उसके सिर से लगा दिया (28, 13), रुक्मिणी की याद आते ही सियाराम घर की ओर चला (60, 187)।

अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त ('भी' निपात समेत क्रिया-विशेषणात्मक कृदन्त)—ये क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त (सरल तथा संयुक्त), द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त (आम तौर पर संयुक्त) और तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त भी निपात के साथ के संयोग से बनते हैं। ये क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त नयी रचनाओं से सम्बन्ध रखते हैं और ये रचनाएँ प्रासंगिक से कोटिबद्ध तक की संक्रमक रचनाएँ होती हैं। ऊपर उल्लेखित सभी अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों में सबसे ज़्यादा वे अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त मिलते हैं जो कि संयुक्त प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त से बनते है। अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों के निम्नलिखित क्रियार्थक लक्षण होते हैं :

(1) सकर्मकता तथा अकर्मकता की श्रेणी—उदाहरणार्थ : (क) लेकिन सुमन सब कुछ देखते हुए भी देखती न थी, सब कुछ सुनते हुए भी कुछ न सुनती थी (73, 230),···छात्रालय में रहते हुए भी उसने वह काम न किया···(66, 88), ···एक पंजाबी आदमी लोगों के रोकते-रोकते भी भीड़ चीरकर डैडी के पास तक आ पहुँचा (107, 7), उठकर जाते भी क्रूरता अनुभव होती थी (96, 28); (ख)···निगाहें नीची किये हुए भी वह ऊपर की स्थिति को भाँपने का प्रयत्न करता था (52, 15); (ग)···उन्होंने उसे देखकर भी ना देखा (71, 56), वह मरकर भी मरी नहीं थी (103, 11)।

(2) सापेक्ष कालवाचक अर्थ की श्रेणी—सहायक गौण व्यापार या मुख्य व्यापार के गुणात्मक वर्णन को व्यक्त करते हुए अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त निम्नलिखित बातें व्यक्त कर सकते हैं : (क) मुख्य विधेय के व्यापार के साथ सहकालिकता (अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त जो प्रथम क्रिया-विशेषणात्मक कृदन्त के आधार पर बनते हैं), उदाहरणार्थ : अगर वे चाहती हैं कि वह सब कुछ देखते और समझते हुए भी चुप रहे···(58, 48), ऐसी नायाब चीज़ें पास रहते भी ज़िन्दा नहीं रह सकते ? (32, 112), वह सिर से पाँव तक कपड़े पहने हुए भी नंगा था (65, 131); (ख) मुख्य विधेय का पूर्ववर्ती व्यापार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त जो कि तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के आधार पर बनते हैं), उदाहरणार्थ : वह मरकर भी मरी नहीं थी (103, 11), ···और यह देखकर भी मुझे धक्का कम नहीं लगा···(107, 108)।

(3) विधेयन की श्रेणी—जो इसलिए प्रगट होती है कि अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त तार्किक विधेय व्यक्त कर सकता है और अपना कर्ता रखता है। तब क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त एक स्वतन्त्र पदबन्ध बनाते हैं, उदाहरणार्थ : बड़ी-बूढ़ियों के रहते हुए भी राजकिशोर कहने से न चूका··· (1, 99), कभी-कभी सकर्मक धातुओं का आशय कर्म के रहते भी पूरा नहीं होता···(22, 161), ···और यह देखकर भी मुझे धक्का कम नहीं लगा··· (22, 161), ···और यह देखकर भी मुझे धक्का कम नहीं लगा···(107, 108)।

अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों के क्रियाविशेषणात्मक लक्षण इसलिए प्रगट होते हैं कि वे अविकारी रूप होते हैं। क्रियाविशेषण की तरह ये क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त व्यापार के गुणात्मक वर्णन को व्यक्त कर सकते हैं जब वे क्रियाविशेषणात्मक शब्द के प्रकार्य में आते हैं। तब क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त उसी स्थान पर क्रिया के आगे होता है जिस पर क्रियाविशेषण या दूसरा क्रिया-विशेषणात्मक शब्द होता है।

अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयोजक होते हैं अगर उनका कर्ता वाक्य का उद्देश्य होता है, और निरपेक्ष होते हैं, अगर अपने कर्ता के साथ आते हैं (या अगर वह कर्ता कल्पित होता है)। संयोजक और निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त संयोजक या क्रियाविशेषणात्मक पदबन्ध बनाते हैं, लेकिन अकेले क्रिया-विशेषणात्मक कृदन्त भी हो सकते हैं। निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त तब व्यापार का कल्पित कर्ता रखता है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर सिर्फ़ संयोजक अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त ही होते हैं जो कि विशेषणात्मक सम्बन्धों की प्रणाली में क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, उदाहरणार्थ : अनचाहे भी चाहा ही कि वे झेंपें··· (20, 76), वह सिर से पाँव तक कपड़े पहने हुए भी नंगा था (65, 131), तुम चाहकर भी कुछ नहीं कर सकोगे (59, 88)।

वाक्य के स्तर पर अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रियाविशेषण के प्रकार्य में आता है।

संयोजक अनुमतिवाचक क्रियाविशेषण कृदन्त गौण व्यापार को व्यक्त करते हैं, जिसके विपरीत मुख्य व्यापार होता है, उदाहरणार्थ : ···हम सुहागिन होते हुए भी विधवाएँ थीं (69, 278), मैं कहना चाहकर भी कह नहीं सकता था (103, 82), ···निगाहें निची किये भी वह ऊपर की स्थिति को भाँपने का प्रयत्न करता था (52, 15)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरपेक्ष अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त क्रियाविशेषणात्मक प्रकार्य में मुख्यत: निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तपरक पदबन्ध में आता है, जो कि वाक्य का पृथक्कृत अंग होता है। इन पदबन्धों में क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त मानो स्वतन्त्र विचार व्यक्त करता है जिसके विपरीत मुख्य व्यापार होता है और अपना तार्किक कर्ता रखता है, जैसे, न चाहते हुए भी उसकी निगाहें उधर उठ गयीं (8, 111), ···जो अपने पति के होते हुए भी विधवा है (59, 57), उठकर जाते हुए भी क्रूरता अनुभव होती थी (96, 28), ···और यह देखकर भी मुझे धक्का कम नहीं लगा···(107, 108)।

निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तपरक पदबन्ध—विभिन्न क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों के अध्ययन के समय जैसा कि उल्लेख किया गया था कि उनमें से हरएक स्वतन्त्र पदबन्ध बना सकता है, जबकि क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों के संयोजक प्रयोग के विपरीत, क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त स्वतन्त्र विचार व्यक्त करता है और अपना तार्किक कर्ता रखता है। व्याकरण की दृष्टि से यह निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तपरक पदबन्ध वाक्य का एक व्यापक पृथक्कृत अंग होता है (व्यापार या अनुमति के प्रकार का क्रियाविशेषण)। ऐसे निरपेक्ष पदबन्ध रूसी भाषा में नहीं होते। इसलिए वे अनुवाद में उचित आश्रित वाक्यों द्वारा व्यक्त होते हैं।

निरपेक्ष क्रियाविशेषणामक कृदन्तपरक पदबन्ध का कर्ता या 'उद्देश्य' व्यक्त हो सकता है :

(1) संज्ञा द्वारा—(1) प्रत्यक्ष कारक के रूप में (आम तौर पर सिर्फ़ अचेतन संज्ञा), उदाहरणार्थ : संध्या होते-होते हलके में दारोगा साहब आ पहुँचे (69, 24), इस वक्त सूरज छिपे काफ़ी देर हो गयी (69, 12); (2) अप्रत्यक्ष कारक के रूप में—(क) 'के' परसर्ग के साथ (आम तौर पर प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त, क्षणिक पूर्ववर्ती क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त तथा अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के साथ), उदाहरणार्थ : हम लोगों के उतरते-उतरते एक रूसी सज्जन आ गये (99, 67), लेकिन इन सब बातों के होते हुए जब तुम्हारी आँख खुली··· (32, 95), बाप के मरते ही अपने यार को कहीं से उठाके ले आयी है (28, 30), ···माली के न रहते हुए भी उन्हें तोड़ नहीं सकता···(73, 92); (ख) 'को' परसर्ग के साथ (सब क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त सिवाय क्षणिक पूर्ववर्ती और अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों के), उदाहरणार्थ : जीजी को बूढ़ी कैलासी के साथ रहते हुए एक साल बीत गया (69, 245), श्री कोलारकर को स्वीप खेले वर्षों बीत गये थे (7, 87), पण्डित कृष्णचन्द्र को जेलखाने से छूटकर आये हुए सप्ताह बीत गया था···(73, 113), इस भाँति विट्ठलदास पर दोषारोपण करके शर्माजी को बहुत धैर्य हुआ (73, 61); (ग) 'का' परसर्ग के साथ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जबकि संज्ञा वाक्य के किसी अंग के संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में आती है, मुख्यतया उद्देश्य के, उदाहरणार्थ : यह कहते-कहते लालबिहारी का गला भर गया (69, 149)।

(2) सर्वनाम द्वारा—अप्रत्यक्ष या कर्म कारक में, उदाहरणार्थ : आपको तो बीस-बीस साल नौकरी करते हो गये होंगे (65, 38), अपने बाप से कहते हुए तुमको क्यों शर्म आती है ? (65, 128), मुझे सोये हुए बहुत देर हुई (73, 233), मुझे उन लोगों की यह हालत देखकर बहुत दुःख हुआ (27, 21),—यहाँ भी समस्त क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त आते हैं सिवाय क्षणिक पूर्ववर्ती और अनुमति-वाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों के।

(3) सार्वनामिक विशेषण द्वारा—(क) पुल्लिग अप्रत्यक्ष कारक के रूप में, अगर वह प्रत्यक्ष रूप से क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त से सम्बन्ध रखता है, उदाहरणार्थ : अरे वह साला ! मेरे रहते क्या कर सकता है ! (103, 318), मेरे होते हुए मेरे घर सुख की सेज पर नहीं सो सकेगी (59, 49), हमारे सोये हुए धर्म-ज्ञान की सारी सम्पत्ति लुट जाये···(69, 153), उनके कहते ही हमें भी फ़ौज में कोई बड़ा ओहदा मिल जायेगा (47, 74); (ख) संज्ञा संलग्न विशेषण के अन्वित रूप में, अगर सार्वनामिक विशेषण किसी दूसरे शब्द से सम्बन्ध रखते हैं, उदाहरणार्थ : सहते-सहते हमारा कलेजा पक गया (69,168), इन फ़ौजियों को देखकर उसका हृदय घृणा से भर जाता था (116, 76), शिव की आज्ञा पाते ही उसके हाथ वीणा पर बढ़ गये (28, 10)।

जैसा कि उदाहरणों से विदित है, निरपेक्ष क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तपरक पदबन्ध वाक्य के शुरू में या बीच में हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधेय-क्रिया

पुरुष, लिंग तथा वचन की श्रेणी

आधुनिक हिन्दी में सब विधेय के क्रियार्थक रूप पुरुषवाचक, पुरुषवाचक-लैंगिक तथा लैंगिक क्रियाओं में बाँट सकते हैं।

पुरुषवाचक क्रिया में पुरुष एक विशेष विभक्ति द्वारा व्यक्त होता है जो कि साथ-साथ वृत्ति तथा वचन का सूचक भी होता है। आधुनिक हिन्दी में आज्ञार्थ और सरल सम्भावनार्थ के संश्लेषणात्मक रूप पुरुषवाचक क्रियाओं से सम्बन्ध रखते हैं। निश्चयार्थ में 'है' पुरुषवाचक क्रिया के रूप भी पुरुषवाचक क्रियाओं से सम्बन्ध रखते हैं।

पुरुषवाचक-लैंगिक विधेय-क्रिया संश्लेषणात्मक और विश्लेषणात्मक हो सकती है। संश्लेषणात्मक पुरुषवाचक-लैंगिक क्रिया विभक्ति रखती है अर्थात् पुरुष और वचन की सूचक और विकारी (व्युत्पत्ति से कृदन्तपरक) विभक्ति जो कि लिंग, वचन, वृत्ति तथा काल की सूचक है। विश्लेषणात्मक पुरुषवाचक-लैंगिक रूप कृदन्तों के लैंगिक रूपों तथा पुरुषवाचक या पुरुषवाचक-लैंगिक रूपों के मिलने से बनते हैं:

लैंगिक रूप (संश्लेषणात्मक तथा विश्लेषणात्मक) अविधेय होते हैं चूँकि उनकी पुरुष की श्रेणी वाक्यविन्यासात्मक ढंग से होती है अर्थात् पुरुषवाचक या पुरुषवाचक-संकेतवाचक सर्वनाम तथा लैंगिक रूप के मिलने से।

सम्भावनार्थ और 'है' क्रिया के पुरुषवाचक रूप के दो-दो पर्यायवाची रूप होते हैं: मध्यम तथा अन्य पुरुष का एकवचन और उत्तम, शिष्ट मध्यम और अन्य पुरुष का बहुवचन। इस तरह पुरुषवाचक रूपों में चार विभक्तिपरक रूपों का एक वर्ग शामिल होता है: (1) उत्तम पुरुष का एकवचन रूप, (2) मध्यम तथा अन्य पुरुष के एकवचन रूप, (3) उत्तम, शिष्ट मध्यम तथा अन्य पुरुष के बहुवचन रूप तथा (4) मध्यम पुरुष का बहुवचन रूप।

पुरुषवाचक-लैंगिक रूपों (संश्लेषणात्मक और विश्लेषणात्मक) का एक वर्ग होता है जो कि आठ रूपों से बना होता है (चार पुंल्लिग में तथा चार स्त्रीलिंग में)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लैंगिक रूपों (संश्लेषणात्मक तथा विश्लेषणात्मक) का एक वर्ग होता है जो कि चार रूपों से बनता है (दो पुल्लिग में तथा दो स्त्रीलिंग में)।

समस्त विधेय-क्रियाओं में उत्तम तथा मध्यम पुरुष का अर्थ जो कि पुरुषवाचक है, अन्य पुरुष के अर्थ का विरोध होता है जो कि वस्तुपरक-पुरुषवाचक है अर्थात् अन्य पुरुष में व्यापार का कर्ता पुरुषवाचक-संकेतवाचक सर्वनाम द्वारा व्यक्त हो सकता है, जो कि व्यक्ति या द्रव्य होता है और संज्ञा या किसी भी संज्ञापरक शब्द द्वारा भी व्यक्त हो सकता है: 'वह आया', 'दिन जो आया', 'जो दिन आया', आदि।

उत्तम पुरुष के रूपों का मुख्य अर्थ है बोलनेवाले पुरुष तथा व्यापार के कर्ता की समानता: 'मैं बोलूँ', 'मैं आऊँगी'। मध्यम पुरुष के रूपों का मुख्य अर्थ है व्यापार के कर्ता तथा बातचीत करनेवाले के साथ समानता जिसके लिए शब्द बोले गये हों: 'तू जा', 'तुम बोलो'। अन्य पुरुष के रूपों का मुख्य अर्थ है यह जताना कि व्यापार का कर्ता न तो बोलनेवाला है और न ही बातचीत करनेवाला, बल्कि कोई और ही व्यक्ति या वस्तु है: 'वह चला गया', 'यह वही मेज़ है जो कोने में पड़ी थी'।

उत्तम तथा मध्यम पुरुष के बहुवचन रूप बतलाते हैं कि व्यापार कुछ-एक लोगों से, जिनमें तत्सम्बद्ध व्यक्ति भी शामिल हैं, सम्बन्धित है। अन्य पुरुष के बहुवचन रूप इस बात का संकेत देते हैं कि व्यापार कुछ-एक लोगों (वस्तुओं) से जिनमें उत्तम तथा मध्यम पुरुष नहीं हैं, सम्बन्धित है।

कोटिबन्द, या मुख्य पुरुषवाचक रूपों के प्रयोग के अलावा, पुरुषवाचक रूपों के प्रासंगिक प्रयोग भी होते हैं।

मध्यम पुरुष के एकवचन रूप सामान्य पुरुषवाचक अर्थ रख सकते हैं जो कि किसी निश्चित व्यक्ति से सम्बन्ध नहीं रखते, बल्कि सब व्यक्तियों से सम्बन्ध रखते हैं, उदाहरणार्थ: जो बोओगे वही काटोगे। अन्य पुरुष के बहुवचन रूप अनिश्चय पुरुषवाचक अर्थ रख सकते हैं। इस स्थिति में व्यापार कई-एक अनिश्चित व्यक्तियों से सम्बन्ध रखता है तथा एक ही अनिश्चित व्यक्ति से, उदाहरणार्थ: ···सैकड़ों किताबों का जन्म हुआ है, जिन्हें उपनिषद् कहते हैं (90, 16), बोगी के चारों कोनों पर रस्सियाँ बाँध देते हैं (154, 90)।

पुरुषवाचक रूपों में वचन की श्रेणी पुरुष के सूचक के साथ विभक्तियों में निहित होती है।

पुरुषवाचक-लैंगिक रूपों के वचन की श्रेणी संश्लेषणात्मक रूपों की विभक्तियों में और कृदन्तपरक प्रत्ययों में निहित है, और विश्लेषणात्मक रूपों में सहायक क्रियाओं के पुरुषवाचक या पुरुषवाचक-लैंगिक रूपों के संयोग में कृदन्तों के लैंगिक रूपों में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लैंगिक रूपों में वचन की श्रेणी लैंगिक विभक्तियों और नामिकीकरण (स्त्रीलिंग के लैंगिक रूपों में) द्वारा व्यक्त होती है।

लिंग की श्रेणी सिर्फ़ पुरुषवाचक-लैंगिक और लैंगिक रूपों में प्रकट होती है। तब बहुवचन के विभिन्न लिंगों के निर्धारित द्रव्यों को लेकर अधिकतर विधेय-क्रिया में पुल्लिग के रूप अधिक होते हैं, अगर निर्धारित द्रव्यों में से अन्तिम द्रव्य के अनुसार क्रिया-रूप नहीं बदलता।

व्यापार के प्रकार, काल तथा पक्ष की श्रेणी

प्रकार की व्याकरणिक श्रेणी में कृदन्तपरक विधेय-क्रिया शामिल होती है और वह श्रेणी इन रूपों के विरोध से बनती है, जिनमें सरल प्रथम कृदन्त, सरल द्वितीय कृदन्त तथा संतत कृदन्त आते हैं।

विधेय-क्रिया जिसमें सरल प्रथम कृदन्त मुख्य क्रिया के प्रकार्य में आता है अपूर्ण प्रकार बनाती है, विधेय-क्रिया जिसमें सरल द्वितीय कृदन्त आता है पूर्ण प्रकार (अनिर्दिष्ट) बनाती है और विधेय-क्रिया जिसमें संतत कृदन्त आता है सांतत्त्वबोधक प्रकार बनाती है।

पुरुषवाचक क्रिया के रूप तथा क्रिया के संश्लेषणात्मक पुरुषवाचक-लैंगिक रूप प्रकार की श्रेणी को नहीं बनाते।

हिन्दी के प्रकार स्लाव भाषाओं के प्रकार की श्रेणी से भिन्न हैं, चूँकि उनके लिए क्रिया के समापक कृदन्तपरक रूप स्वाभाविक हैं और क्रिया के समस्त पुरुष-वाचक तथा अविधेय रूपों के लिए लागू नहीं हैं, जैसा कि स्लाव भाषाओं में होता है।

हिन्दी में प्रकार की श्रेणी और पक्ष की श्रेणी के बीच अन्तर जानना चाहिए। पक्ष की श्रेणी धातु के, क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तपरक धातु के, सरल प्रथम तथा द्वितीय कृदन्त के, सरल प्रथम तथा द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के, क्रियार्थक नाम के रूपों में मुख्य क्रिया तथा विभिन्न विशेषक क्रियाओं के सम्मिलन से बनती है। उसका विभिन्न स्तर का व्याकरणिकीकरण होता है। इसलिए पक्ष की श्रेणी शाब्दिक-व्याकरणिक श्रेणी होती है। विशेषक क्रियाएँ ही समस्त व्याकरणिक लक्षणों को व्यक्त करती हैं, जो कि प्रकार की श्रेणी को भी शामिल करते हैं, अगर वे क्रियाएँ कृदन्तपरक रूप में होती हैं।

आधुनिक हिन्दी में काल की श्रेणी व्यापार का उक्ति के क्षण के साथ सम्बन्ध बनाती है जो कि वर्तमान, भूत तथा भविष्यत् काल के रूपों से व्यक्त होती है। ये निश्चयार्थ में संश्लेषणात्मक कृदन्तपरक-क्रियार्थक, क्रियार्थक-कृदन्तपरक रूपों तथा विश्लेषणात्मक कृदन्तपरक-क्रियार्थक, कृदन्तपरक-कृदन्तपरक तथा कृदन्तपरक-क्रियार्थक-कृदन्तपरक रूपों में प्रकट होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिए आधुनिक हिन्दी में **शुद्ध काल (प्रकारहीन) रूप** मिलते हैं जो कि संश्लेषणात्मक तिङन्ती और तिङन्ती-विकारी रूपों में बाँटे जा सकते हैं। शुद्धकाल रूपों में 'था' का विकारी रूप भी आता है जो कि कृदन्तपरक रूपों के बाहर द्रव्य की भूतकाल में अवस्था व्यक्त करता है।

प्राकारिक काल रूपों में—संश्लेषणात्मक विकारी रूप आते हैं तथा विश्लेषणात्मक विकारी-तिङन्ती रूप ('है' सहायक क्रिया समेत कृदन्तपरक रूप), विकारी-विकारी रूप ('था' सहायक क्रिया समेत कृदन्तपरक रूप), विकारी-तिङन्त-विकारी रूप (सामान्य भविष्यत् काल में 'होना' सहायक क्रिया समेत कृदन्तपरकी रूप), विकारी-विकारी-तिङन्ती रूप (कृदन्तपरक रूप जिनमें सहायक क्रिया 'होना' के वर्तमान तथा पूर्णतावाची रूप अर्थात् 'होता है', 'हुआ है' आते हैं), विकारी-विकारी-विकारी रूप (कृदन्तपरक रूप जिनमें सहायक क्रिया 'होना' के अपूर्णतावाची तथा पूर्ण भूतवाची रूप आते हैं—'होता था', 'हुआ था')।

आधुनिक हिन्दी में व्याकरणिक काल तथा प्राकारिक काल के रूप निश्चयार्थ के घेरे में सीमित होते हैं। आज्ञार्थ, सम्भावनार्थ तथा संकेतार्थ के रूप काल-सापेक्षता का ज़्यादा सामान्य अर्थ व्यक्त करते हैं।

इस प्रकार, आज्ञार्थ के रूप अपने प्रत्यक्ष आज्ञार्थक अर्थ में भविष्यत् काल की काल सापेक्षता व्यक्त करते हैं, उदाहरणार्थ : सरनो ज़रा अन्दर आइयो (75, 130), तुम लोग हट जाओ, वरना मैं फ़ायर कर दूंगा (71, 5)। भविष्यत् काल की कालसापेक्षता विशेषकर उभरकर प्रगट होती है जबकि आज्ञार्थ का शिष्ट रूप 'इएगा' द्वारा व्यक्त किया जाता है, जैसे, आप आथॉरिटीज़ से शिकायत कीजियेगा (8, 40)।

भविष्यत् काल की कालसापेक्षता सम्भावनार्थ तथा संकेतार्थ के रूप भी व्यक्त कर सकते हैं, जैसे, यदि आप आज्ञा दें तो हम इसे वार्षिक अंक में दे दें (9, 28), वह विवाह कर रही होती तो हम पूरी सहायता देते (1, 555)।

सम्भावनार्थ और संकेतार्थ के रूप भी काल सापेक्षता व्यक्त कर सकते हैं जो कि वर्तमान काल के स्तर से सम्बन्ध रखती है, उदाहरणार्थ : लेकिन अब इस वर्तमान का क्या करूं? (108, 11), यदि आज यह पुरुष जीवित होता, तो पचास या पचपन वर्ष का होता (5, 37)।

सम्भावनार्थ और संकेतार्थ के रूप भूतकाल से सम्बन्धित कालसापेक्षता व्यक्त कर सकते हैं, उदाहरणार्थ : फिर सोचा, कहीं यह कोई दुर्घटना तो नहीं हो गयी—आग लग गयी हो या किसी ने किसी का ख़ून कर दिया हो (108, 135), ···जान-बूझकर सरकार ने आपको अधिक नम्बर दिये है, नहीं तो आप क्या कम्पीट करतीं (111, 26)।

सम्भावनार्थ और संकेतार्थ के कृदन्तपरक रूप प्राकारिक वर्णनों से ओतप्रोत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं और व्यापार की अपूर्णता-पूर्णता-सांतत्य की दृष्टि से विपरीत होते हैं। सम्भावनार्थ का सरल रूप प्राकारिक विरोध नहीं रखता।

अर्थ की श्रेणी—आधुनिक हिन्दी में अर्थ की व्याकरणिक श्रेणी वास्तविकता और व्यापार के बीच सम्बन्ध व्यक्त करती है जो कि वक्ताओं द्वारा निर्धारित होती है। अर्थ यह व्यक्त करता है कि वक्ता व्यापार को वास्तविक समझता है या अवास्तविक समझता है। व्यापार की वास्तविकता का अर्थ है उसके तीन वस्तुगत तौर पर मौजूदा काल-स्तरों में से किसी एक के साथ सम्बन्ध। और अवास्तविकता का अर्थ है इस सम्बन्ध की अनुपस्थिति चूँकि व्यापार सम्भाव्य, वांछित, संदिग्ध, प्रतिबन्धित या आवश्यक समझा जाता है। व्यापार की वास्तविकता जो कि निश्चयार्थ रूपों द्वारा व्यक्त होती है, अवास्तविक व्यापार के विरोध में होती है, जो कि आज्ञार्थ, सम्भावनार्थ और संकेतार्थ के रूपों द्वारा व्यक्त होता है।

निश्चयार्थक वास्तविक व्यापार को व्यक्त करता है जो कि वास्तविकता का प्रत्यक्ष प्रतिबिम्ब होता है। निश्चयार्थ की काल-क्रियार्थक रूपों की प्रणाली के वर्तमान काल, भूतकाल और भविष्यत् काल के व्यापार और वास्तविक घटनाओं के बीच परस्पर सम्बन्ध बनाती है। निश्चयार्थ में समस्त कृदन्तपरक काल रूप प्राकारिक वर्णनों द्वारा जटिल बनते हैं, जो कि प्राकारिक काल रूपों की जटिल प्रणाली को बनाते हैं। उनका अध्ययन निम्न प्रकार कर सकते हैं।

निश्चयार्थ के सभी रूपों में से सिर्फ़ पाँच संश्लेषणात्मक रूप होते हैं, ये 'हैं' क्रिया के तिङन्ती रूप होते हैं, एवं 'था' क्रिया के विकारी रूप, सामान्य भविष्यत् काल के तिङन्ती-विकारी रूप और दो कृदन्तपरक विकारी रूप (प्रथम कृदन्त तथा द्वितीय कृदन्त)। विश्लेषणात्मक प्राकारिक काल रूप जिनमें प्रथम और द्वितीय कृदन्त हैं द्विघटकीय, तथा संतत कृदन्त के ऐसे रूप तृघटकीय हैं। निश्चयार्थ के प्राकारिक काल रूप पक्ष-सम्बन्धी वर्णनों द्वारा जटिल बन सकते हैं और तब एक जटिल समापक विश्लेषणात्मक रचना बनाते हैं जो अपने अन्दर पाँच घटकों को शामिल कर सकती हैं।

सम्भावनार्थ अवास्तविक व्यापार व्यक्त करता है, जो कि सम्भाव्य, वांछनीय, काल्पनिक या अनुज्ञेय हो सकता है। सम्भावनार्थ का अर्थ एक अप्राकारिक तिङन्ती संश्लेषणात्मक रूप और तीन प्राकारिक विकारी-तिङन्ती रूपों द्वारा व्यक्त हो सकता है, जो कि पक्ष-सम्बन्धी वर्णनों द्वारा जटिल हो सकता है और तब वे (रूप) एक जटिल बहुघटकीय समापक रचना बनाते हैं।

संकेतार्थ अवास्तविक व्यापार को व्यक्त करता है जो कि काल्पनिक, संदिग्ध या सप्रतिबन्ध सम्भाव्य हो सकता है। तब व्यापार की अवास्तविकता प्रतिबन्धित हो सकती है अर्थात् व्यापार किन्हीं विशेष स्थितियों में ही हो सकता है। संकेतार्थ का अर्थ एक प्राकारिक संश्लेषणात्मक विकारी रूप तथा तीन विश्लेषणात्मक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राकारिक विकारी रूपों द्वारा व्यक्त होता है, जो कि पक्ष-सम्बन्धी वर्णनों द्वारा जटिल हो सकते हैं और तब वे जटिल बहुघटकीय समापक रचना बनाते हैं।

आज्ञार्थ किसी एक व्यक्ति का संकल्प व्यक्त करता है और दूसरे व्यक्ति को व्यापार के लिए उद्बोधक करता है। यह भी हो सकता है कि संकल्प एक स्पष्ट आज्ञा हो, स्पष्ट या शिष्ट प्रार्थना हो। आज्ञार्थ का अर्थ मध्यम पुरुष के एकवचन तथा बहुवचन के रूपों की प्रणाली द्वारा व्यक्त हो सकता है—स्पष्ट आज्ञा अगर मध्यम पुरुष में एकवचन को दी गयी हो और स्पष्ट प्रार्थना अगर मध्यम पुरुष में बहुवचन को दी गयी हो, शिष्ट प्रार्थना जब मध्यम पुरुष में बहुवचन के शिष्ट रूप होते हैं। अन्य पुरुष में एकवचन तथा बहुवचन के रूप व्यापार के लिए उद्बोध व्यक्त करते हैं। मध्यम पुरुष में एकवचन और बहुवचन के रूप पाँच संश्लेषणात्मक रूपों द्वारा व्यक्त होते हैं, जिनमें से तीन तो नियमित होते हैं और दो शैली की दृष्टि से रंजित होते हैं। ये रूप प्रासंगिक प्रत्ययों के क्रिया की धातु के साथ मिलने से बनते हैं। अन्य पुरुष में एकवचन तथा बहुवचन के रूपों में सम्भावनार्थ का सरल तिङन्ती रूप प्रयोग होता है। आज्ञार्थ के रूप बहुत ही कम स्थितियों में पक्ष-सम्बन्धी वर्णनों द्वारा जटिल बन सकते हैं।

वाच्य की श्रेणी—आधुनिक हिन्दी में वाच्य की श्रेणी एक जटिल तथा परस्पर विरोधी बात है। एक तरफ़ वाच्य क्रिया के रूपों द्वारा व्यक्त होता है और रूपात्मक श्रेणी होता है, दूसरी तरफ़ वाच्य शब्दों के अन्दर विशेष सम्बन्धों में प्रगट होता है अर्थात् एक वाक्यात्मक श्रेणी है। इसीलिए वाक्य की श्रेणी की परिभाषा इस प्रकार दे सकते हैं: वाच्य यह क्रिया के व्याकरणिक रूपों की एक प्रणाली है, जो कि उद्देश्य (या व्यापार के कर्ता, अगर क्रिया के अविधेय रूप होते हैं) के साथ क्रियार्थक व्यापार का सम्बन्ध बताती है। अगर क्रियार्थक रूप उद्देश्य को व्यापार के कर्ता की हैसियत से व्यक्त करता है अर्थात् व्यक्ति (या वस्तु) जो कि व्यापार को कर रहा है, तो यह कर्तृवाच्य होता है। अगर क्रियार्थक रूप उद्देश्य को व्यापार के कर्म की हैसियत से व्यक्त करता है, अर्थात् व्यक्ति (या वस्तु), जिसकी तरफ़ व्यापार का संकेत है, तो कर्मवाच्य होता है। लेकिन अगर पहले स्थान पर व्यापार ही प्रस्तुत है, और व्यापार के कर्ता या कर्म की तरफ़ सम्बन्ध अव्यक्त रहता है तो भाववाच्य (कर्ता-कर्महीन वाच्य) होता है।

कर्तृवाच्य की क्रियाएँ कर्तृवाच्य धातु से बनती हैं, जो कि क्रिया के समस्त पुरुषवाचक और अविधेय रूपों को बनाने के लिए प्रारम्भिक होती हैं।

कर्मवाच्य की क्रियाएँ कर्मवाच्य धातु से बनती हैं, जिनका कोटिबद्ध लक्षण सकर्मक सरल द्वितीय कृदन्त का होना है जो कि 'जाना' सहायक क्रिया के कर्तृ-वाच्य धातु के रूप के साथ आता है। कर्मवाच्य धातु क्रिया के समस्त पुरुषवाचक तथा अविधेय रूपों को बनाने के लिए प्रारम्भिक होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाववाच्य की क्रियाएँ सिर्फ़ समापक रूपों से ही व्यक्त होती हैं, जो कि सरल अकर्मक द्वितीय कृदन्त तथा 'जाना' सहायक क्रिया से बने होते हैं।

वाक्य के स्तर पर कर्तृ-क्रियाएँ कर्तृवाच्य कर्तृ-सम्बन्धी, कर्मणि-सम्बन्धी तथा भाववाचक रचनाएँ बनाती हैं। कर्मवाच्य की क्रियाएँ कर्मवाच्य कर्मणि-विषयक और भाववाचक रचनाएँ बनाती हैं। भाववाच्य की क्रियाएँ भाववाचक अवैयक्तिक रचना बनाती हैं।

विधेय-क्रियाओं में वाच्य 'जाना' सहायक क्रिया समेत सरल द्वितीय कृदन्तों के सकर्मक और अकर्मक रूपों के और समस्त बचे हुए तिङन्ती और विकारी क्रियार्थक रूपों के विरोध में प्रगट होता है। तब कर्मवाच्य की समापक क्रियाएँ कभी भी कर्तृ-सम्बन्धी रचना में नहीं आतीं, और भाववाच्य की समापक क्रियाएँ सिर्फ़ अवैयक्तिक भाववाच्य रचना में आती हैं। भाववाच्य की क्रियाओं और व्यापार के घटमान पूर्णपरिणामी पक्ष के रूपों में जो कि सदा की तरह कर्ता-सम्बन्धी रचनाओं में आते हैं, यही अन्तर है (मुकाबला कीजिए : 'मुझसे चला नहीं जाता' (103, 60)—भाववाच्य और '···मैं भी आया जाता हूँ' (65, 76)।

कर्मवाच्य तथा कर्तृवाच्य का विरोध सिर्फ़ सकर्मक क्रियाओं के क्षेत्र को ही प्रभावित करता है और कर्म और कर्तृ-सम्बन्धी रचनाओं में प्रगट होता है। कर्तृवाच्य भाववाच्य का विरोध अकर्मक क्रियाओं के क्षेत्र को ही प्रभावित करता है, जहाँ मुख्यतः गति और अवस्था की ही क्रियाएँ होती हैं। कर्मवाच्य और भाववाच्य का विरोध, जबकि समान रूप-निर्माण होता है, क्रिया का सकर्मकता द्वारा तथा उसकी वजह से कर्मवाच्य में प्रधान कर्म की उपस्थिति द्वारा और क्रिया की अकर्मकता द्वारा तथा भाववाच्य में प्रधान कर्म के अभाव द्वारा व्यक्त होता है।

बनावट की दृष्टि से सब वाच्य रचनाओं की विशेषता यह है कि उनका क्रियार्थक विधेय अवश्य होता है और उद्देश्य और कर्म की उपस्थिति ज़रूरी नहीं है। कर्तृ रचना का विधेय कर्मणि-सम्बन्धी और अवैयक्तिक भाववाचक रचनाओं के विधेय से मेल खाता है। कर्तृ रचना का उद्देश्य कर्मवाच्य और अवैयक्तिक भाववाचक रचना के साधक कर्म (व्यापार के कर्ता) से मेल खाता है। कर्तृरचना का प्रधान कर्म कर्मवाच्य रचना के उद्देश्य या प्रधान कर्म से मेल खाता है और अवैयक्तिक भाववाचक रचना में संगत संरचनात्मक तत्व नहीं रखता।

वाच्य रचनाएँ तिनांगी, दो अंगी और एकांगी हो सकती हैं।

कर्तृवाच्य रचना तिनांगी हो सकती है, अर्थात् उसमें उद्देश्य, विधेय और प्रधान कर्म हो सकते हैं [मैंने लड़के को पाला है··· (73, 7)]; दो-अंगी हो सकती हैं, अर्थात् उसमें विधेय और उद्देश्य हो सकते हैं, [शोभा बोली (11, 78)]; और एकांगी हो सकती है अर्थात् उसमें सिर्फ़ विधेय हो सकता है (कहते हैं कि···)।

कर्मवाच्य रचना तिनांगी हो सकती है, अर्थात् उसमें उद्देश्य, साधक कर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और विधेय हो सकते हैं [वे एक स्वर्णकार के द्वारा पाले-पोसे गये थे (1, 174)]; दो-अंगी हो सकती है, अर्थात् उसमें (क) विधेय और उद्देश्य हो सकते हैं [···मैं पकड़ा जाऊँगा (102, 108)]; (ख) विधेय और प्रधान कर्म हो सकते हैं [लड़की को टॉर्चर करके मारा गया है (111, 43)]; (ग) विधेय तथा साधक कर्म हो सकते हैं [मुझसे न कहा जायेगा (1, 188)] और एकांगी भी हो सकता है अर्थात् सिर्फ़ विधेय से रचना बन सकती है [कहा जाता है कि···111, 62)]।

अवैयक्तिक भाववाचक रचना, आम तौर से, दो-अंगी होती है अर्थात् उसमें विधेय और साधक कर्म हो सकते हैं [मुझसे चला नहीं जाता (103, 60)]।

कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य रचनाओं के बीच संरचनात्मक भिन्नता के अलावा शब्दार्थक भिन्नता भी हो सकती है। कर्तृवाच्य रचना में व्यापार के कर्ता अर्थात् वाक्य के उद्देश्य पर ज़ोर होता है। कर्मवाच्य पदबन्धों में व्यापार और उसके कर्म पर अर्थात् उसके उद्देश्य या प्रधान कर्म पर ज़ोर होता है। कर्मवाच्य रचनाओं में व्यापार का कर्ता संरचना का आवश्यक तत्त्व नहीं होता अगर ज़ोर व्यापार और उसके कर्म पर होता है। फिर भी, अगर व्यापार ही पर ज़ोर होता है, जो कि व्यापार के कर्ता की तरफ़ से उसकी पूर्ति की सम्भावना या असम्भावना से सम्बन्धित होता है अर्थात् कर्मवाच्य रचनाओं में जिनमें वृत्तिवाचक झुकाव बहुत ही स्पष्टत: व्यक्त होता है, व्यापार का कर्ता एक आवश्यक संरचनात्मक तत्त्व है। व्यापार का कर्म एक अनावश्यक संरचनात्मक तत्त्व हो जाता है। इस तरह, आधुनिक हिन्दी में सबसे ज़्यादा दो-अंगी कर्मवाच्य रचनाएँ प्रचलित होती हैं जिनमें किसी-न-किसी तरह से व्यापार पर मुख्य ज़ोर होता है लेकिन कर्ता के ऊपर नहीं। इसी कारण कर्मवाच्य रचना आम तौर पर सामान्यकृत व्यापार को व्यक्त करने के काम आती है। यह रचना उस व्यापार को नहीं बता सकती जो कि उक्ति के क्षण के साथ मेल खाता है।

इसके परिणामस्वरूप हिन्दी व्याकरण में कर्मवाच्य रचना इन स्थितियों में हो सकती है जब कि मुख्य ज़ोर व्यापार पर ही देना होता है। उन रचनाओं में जिनमें वृत्तिवाच्य छाया नहीं होती, सकर्मक क्रिया का व्यापार कर्म द्वारा बढ़ाया जाता है, और उन रचनाओं में जहाँ वृत्तिवाचक छाया होती है, क्रिया का व्यापार उसके निकास के स्रोत की ओर संकेत के साथ होता है, और कर्म द्वारा सदा की तरह नहीं बढ़ाया जाता।

कर्मवाच्य रचना कर्म-विषयक (उद्देश्य-सम्बन्धी) हो सकती है, उदाहरणार्थ: मैं सरकारी अनाथालय में पाला गया हूँ (69, 202), अच्छे आदमी सताये जाते हैं···(116, 35), फिर की बात फिर सोची जायेगी (111, 26), तभी तो मुझसे कहानी नहीं लिखी जाती (125, 209) और भाववाचक (उद्देश्यरहित) हो सकती है जो कि बाँटी जा सकती है: (क) रचना जिसमें चिह्नित प्रधान कर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है जो कि बगैर चिह्न के रचना का उद्देश्य हो जाता है, उदाहरणार्थ : दुनिया को धोखे में रखा जा सकता है···(111, 36), बड़े-बड़े शामियाने लगाकर उनमें शरणार्थियों को ठहराया जा रहा था (1, 269), मुकाबला कीजिये : 'दुनिया धोखे में रखी जा सकती है और शरणार्थी ठहराये जा रहे थे'; (ख) रचना जिसमें उद्देश्य छोड़ा गया हो या चिह्नित प्रधान कर्म होता है, उदाहरणार्थ : उस दिन न मुझसे खाया गया और न कुछ पीया ही गया (69, 193), ···लेकिन हमसे··· उस ठण्डे पानी में नहाया न गया···(9, 61); (ग) रचना जिसमें उद्देश्य छोड़ा गया हो और साधक कर्म भी, उदाहरणार्थ : कहा नहीं जा सकता यह बात कहाँ तक ठीक है (111, 116), ···जैसा कि पहले बताया गया है···(153, 11)।

कर्मवाच्य रचनाएँ शब्दार्थक-वाक्यात्मक अर्थ में कर्तृवाच्य रचनाओं से मेल खा सकती हैं, लेकिन पूर्ण वाक्यात्मक और शब्दार्थक मेल इन दोनों रचनाओं में कदापि नहीं हो सकता।

सबसे ज़्यादा परस्पर सम्बन्ध तिनांगी कर्मवाच्य और कर्तृवाच्य रचनाएँ रखती हैं, उदाहरणार्थ :

कर्मवाच्य रचना	**कर्तृवाच्य रचना**
···कम्पनियों द्वारा 5.2 करोड़ रुपये की पूँजी जुटायी गयी···(153, 9)।	कम्पनियों ने 5.2 करोड़ रुपये की पूँजी जुटायी।
···ताकत के ज़रिये उसकी सीमाएँ बदली जा सकती हैं···(145, 2-3)।	ताकत उसकी सीमाएँ बदल सकती है।
···भारत···विदेशी लुटेरों के हाथ लूटा जाता है (4, 48)।	भारत को विदेशी लुटेरे लूटते हैं।

तिनांगी कर्मवाच्य रचना वृत्तिवाचक अर्थ के साथ रूपात्मक तौर पर कर्तृ-वाच्य रचना के साथ मेल नहीं खाती, चूँकि कर्तृवाच्य रचना को समान वृत्ति-वाचक अर्थ को रखने के लिए वृत्तिवाचक क्रिया द्वारा जटिल हो जाना है, उदाहरणार्थ :

कर्मवाच्य रचना	**कर्तृवाच्य रचना**
···यह···बकबक उससे भी न सही गयी (66, 202)।	वह यह बकबक न सह सकी।
छत्रपति से यह दृश्य और अधिक न देखा गया (47, 13)।	छत्रपति यह दृश्य और अधिक न देख सका।

तिनांगी कर्मवाच्य रचना संरचनात्मक तौर पर कर्तृवाच्य रचना से, जिसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाववाच्य क्रियाएँ होती हैं, मेल खाती है जो कि कर्मवाच्य अर्थ रखती है, उदाहरणार्थ :

कर्मवाच्य रचना	कर्तृवाच्य रचना
···भारत···विदेशी लुटेरों के हाथ लूटा जाता है (4, 48)।	वह मोना के हाथों लूटता गया (28, 85)।
···यह किस चीज़ से तोड़ा गया (80, 79)।	फूलदान वास्तव में उसी से टूट गया था (16, 111)।

जैसा कि उदाहरणों से स्पष्ट है, व्यापार का कर्ता (साधक कर्म) कर्मवाच्य रचनाओं में परसर्गीय अप्रत्यक्ष कारक में अलग-अलग करण परसर्गों के साथ आता है : से, के द्वारा, के ज़रिये, के हाथ (हाथों)।

दो-अंगी कर्मवाच्य रचनाएँ पूरी तरह कर्तृवाच्य दो-अंगी रचनाओं से मेल नहीं खा सकतीं चूंकि हिन्दी के व्याकरण में अनिश्चय-पुरुषवाचक कर्तृवाच्य रचनाएँ तुलना में कम ही क्रियाओं को शामिल करती हैं, जो कि मुख्यतः कारोबारी व सरकारी भाषा में इस्तेमाल होती हैं, उदाहरणार्थ :

कर्मवाच्य रचना	कर्तृवाच्य रचना
···वे सरकार के आदमी कहे जाते हैं (51, 59)।	···जिसे 'मैकमोहन लाइन' कहते हैं (115, 411)।
जब पत्रों को उपर्युक्त विधि से छाँट लिया जाता है (161, 75)।	पहले पत्रों को वर्णमाला के आधार पर छाँट लेते हैं (101, 74)।
एक सूची खज़ांची के पास भेज दी जाती है (101, 11)।	···दूसरी पर उसके हस्ताक्षर कराकर लेखा-विभाग को भेज देते हैं (101, 11)।
···आगे का हिसाब नहीं लिखा जाता (51, 50)।	विश्वविद्यालयों की डिग्रियाँ···नाम के बाद में लिखते हैं (101, 31)।

दो-अंगी कर्मवाच्य रचनाएँ कर्तृवाच्य रचनाओं के साथ निम्नलिखित स्थितियों में मेल खाती हैं :

(1) जबकि मुख्य सकर्मक क्रिया की संगत व्युत्पन्न भाववाच्य क्रिया होती है, उदाहरणार्थ :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मवाच्य रचना	कर्तृवाच्य रचना
लोग पीटे जा रहे थे (102, 148)।	बड़े-बड़े आदमी भी पिटे थे (102, 148)।
ज़मींदारी तोड़ दी जायेगी (120, 39)।	ज़मींदारी टूट रही है (120, 39)।
बाँध काटा जा चुका है (120, 129)।	बाँध कट गया (120, 129)।
बंजर ज़मीन खेत मज़दूरों और गरीब किसानों में बाँटी जाए (IV, 30-1-1972)।	गाँव में मिठाई बँटी थी (111, 11)।
···बैठक ही के एक द्वार में पर्दा टाँगा गया (1, 59)।	वहाँ खूँटी पर स्टेथस्कोप भी टँगा था।

(2) जब कर्मवाच्य रचना क्रिया-नामिक वाक्यांशों के नामधातुज विश्लेषणात्मक क्रिया के या 'करना' क्रिया सहित क्रियार्थक समास के आधार पर बनती है और 'होना' क्रिया के साथ संगत विरोध रखती है, उदाहरणार्थ :

कर्मवाच्य रचना	कर्तृवाच्य रचना
···केन्द्रीय समाज-कल्याण मण्डल की स्थापना की गयी (115, 415)।	···केन्द्रीय सरकारी बैंक की स्थापना हुई (115, 376)।
···जिसका उपयोग प्रतिरक्षा के लिए न किया जाता हो (II, 10-2-1966, 40)।	···जिससे···श्रम-शक्ति का पूरा उपयोग हो सके (115, 374)
···4 करोड़ राज्यों में खर्च किया जायेगा (115, 416)।	···दो करोड़ 37 लाख रुपये कारीगरों पर खर्च होंगे (115, 374)।
इस समस्या को खेतों को बड़ा करके··· हल किया जा सकता है (115, 288)।	···बहुत-सी वर्तमान समस्याएँ अपने-आप हल हो जायेंगी (115, 288)।
हर राज्य में युवा-कल्याण मण्डल स्थापित किये जायें (IV, 30-1-1977)।	लोक - संस्कृति - शोधक संस्थान भी स्थापित हो गये हैं (115, 428)।
···दस नये पैसों के सिक्के ही प्रचलित किये गये (115, 437)।	···यह प्रणाली सन् 1786 से प्रचलित है (115, 436)।

(3) जब कर्मवाच्य रचना क्रियार्थक विधेय द्वारा व्यक्त होती है, और कर्तृवाच्य रचना से परस्पर मेल खाती है, जो कि नामिक विधेय द्वारा उसी मुख्य कृदन्त समेत व्यक्त होती है, उदाहरणार्थ :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्तृवाच्य रचना	कर्मवाच्य रचना
···लक्ष्य रखा गया है (115, 417)।	साइकिल रखी हुई थी (65, 139)।
···आगे का हिसाब नहीं लिखा जाता (51, 60)।	यही मेरी पहचान फ़ौजी रजिस्टरों में भी लिखी हुई थी (69, 202)।
···दस सहकारी कृषि समितियाँ बनायी जायें (115, 374)।	मैं जो कुछ हूँ, माँ का बनाया हूँ (13, 28)।
···मिश्रजी एक दिन बाँधे जा सकते हैं (51, 90)।	सर्दी के लिए सिर पर जो रूमाल बाँधा था···(58, 89)।

हालाँकि दो-अंगी कर्मवाच्य रचनाओं में व्यापार के कर्ता की ओर रूपात्मक संकेत का अभाव होता है, वह फिर भी सान्दर्भिक तौर पर काफ़ी हद तक निश्चयतः समझा जा सकता है। इसी कारण दो-अंगी कर्मवाच्य रचनाएँ निम्नलिखित वर्गों में बाँटी जा सकती हैं :

(1) जबकि व्यापार का कर्ता बहुत ही अस्पष्ट होता है और व्यावहारिक तौर पर उसके बारे में वास्तविकता से नहीं बता सकते, उदाहरणार्थ : बंजर ज़मीन खेत मज़दूरों और किसानों में बाँटी जाये (IV, 30-1-1972), कहीं ऐसी बातें कही जाती होंगी (103, 183), दुनिया को धोखे में रखा जा सकता है··· (111, 36)।

(2) जबकि व्यापार का कर्ता काफ़ी हद तक स्पष्टतः व्यक्त होता है, चूँकि वह किसी विशेष व्यक्ति द्वारा, बहुधा लोगों के किसी ग्रुप द्वारा वर्णित होता है, उदाहरणार्थ : यह हसन खाँ, जो गाँव में सिर्फ़ 'हस्सू' के नाम से पुकारा जाता रहा ···(7, 23), अब छोटी-बड़ी क्लासों में कहानियाँ पढ़ायी जाती हैं···(64, 37), आपका नाम सोच-समझकर रखा गया था (111, 56), इन्टरव्यू में तू ही चुनी जायेगी (111, 109)। हालाँकि उद्धृत किये गये उदाहरणों में और परिवर्ती प्रसंगों में व्यापार के कर्ता की ओर प्रत्यक्ष संकेत नहीं है, फिर भी उदाहरण काफ़ी हद तक सम्भव कर्ता को व्यक्त करते हैं। पहले उदाहरण में—गाँव के लोग हैं, दूसरे में—स्कूल के अध्यापकगण, तीसरे में—माँ-बाप तथा चौथे में—जो इन्टरव्यू ले रहा है।

(3) व्यापार का कर्ता प्रसंग की बदौलत काफ़ी हद तक ठीक व्यक्त होता है, उदाहरणार्थ : मैं दिल की बात कहता हूँ, अब तुम्हारी यह हालत देखी नहीं जाती (108, 128), ···वह गर्भवती हो गयी और ऐसी चेष्टा हो रही थी कि गर्भ गिरा दिया जाये···(111, 61), गली के और लोगों ने भी मदद की। लाश उठायी जा रही थी (111, 69)। उद्धृत किये उदाहरण स्पष्टतः व्यापार के कर्ता की ओर संकेत देते हैं, जिसकी वजह से कर्मवाच्य रचनाओं का कर्तृवाच्य रचनाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में परिवर्तन होना सम्भव है : 'मैं दिल की बात कहता हूँ, अब मैं तुम्हारी यह हालत नहीं देख सकता', 'वह गर्भवती हो गयी और ऐसी चेष्टा हो रही थी कि वह गर्भ गिरा दे', 'गली के और लोगों ने भी मदद की, वे लाश उठा रहे थे'।

एकांगी कर्मवाच्य रचना व्यावहारिक तौर पर कर्तृवाच्य रचना से मेल नहीं खाती सिवाय कुछ एक क्रियाओं के जो कि अनिश्चित-पुरुषवाचक रचनाओं में आती हैं, जैसे, 'कहा जाता है कि···' और 'कहते हैं कि'।

कर्मवाच्य के प्राकारिक काल रूप को कर्मवाच्य की शाब्दिक ढंग की अभिव्यक्ति से संभ्रमित नहीं होना चाहिए। शाब्दिक कर्मवाच्य का अर्थ निम्नलिखित प्रकारों द्वारा व्यक्त हो सकता है :

(1) **भाववाच्य क्रिया**—भाववाच्य क्रियाएँ कर्मवाच्य व्यापार को व्यक्त करती हैं, जो कि मुख्यत: उनके कर्ता के किसी भी हस्तक्षेप के बिना अपने-आप ही होता है। वाक्य के स्तर पर भाववाच्य क्रियाएँ सिर्फ़ कर्तृ-सम्बन्धी रचना ही बनाती हैं, हालाँकि भाववाच्य क्रियाओं के कर्मवाच्य अर्थ में वाक्य का उद्देश्य व्यापार का कर्ता नहीं होता है, बल्कि कर्म होता, उदाहरणार्थ : फूलदान वास्तव में उसी से टूट गया (16, 111), इसी कारण पति के हाथों उसे कई बार पिटना पड़ा था (17, 115), वह अपने क्रूर पिता के हाथों बुरी तरह पिटा था (16, 85), दाढ़ी उसकी न मुँडासे बँधी थी, न डोरे कसी थी (15, 10), रावत लुट तो गये ही थे (96, 83)। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, भाववाच्य क्रियाओं के साथ रचनाओं को कर्मवाच्य रचनाओं में परिवर्तित कर सकते हैं और 'कर्मवाच्य-कर्तृवाच्य' का इस तरह का विरोध रख सकते हैं। भाववाच्य क्रियाओं को 'प्राकृतिक या मौलिक कर्मवाच्य' नहीं कह सकते (151, 100-101), चूँकि भाववाच्य क्रियाओं का कर्मवाच्व अर्थ ही नहीं, बल्कि कर्तृवाच्य अर्थ भी हो सकता है, उदाहरणार्थ : 'लेकिन रात तो कट ही जायेगी' (102, 15), 'रात कुछ बीत ही जायेगी'; कुछ लोग और बँधे (51, 88), 'कुछ लोग और शामिल हुए'; 'लोग डर के मारे रुपये दे-देकर छूट रहे हैं' (102, 158), 'लोग डर के मारे पैसे दे रहे हैं और बच रहे हैं' [मुकाबला कीजिए—ढोर छूटे (151, 49), 'पशु को छोड़ दिया गया']; 'जब नींद टूट जाती है'—(111, 45), 'जब नींद में खलल हो जाता है'। व्यापार का कर्ता भाववाच्य क्रियाओं की उपस्थिति में बहुत कम आता है, वह आम तौर पर, परसर्गों 'से', 'के हाथ' (हाथों) द्वारा चिह्नित होता है, लेकिन व्यापार के प्रकार के परसर्गों 'के द्वारा' (ज़रिये) के साथ प्रयोग में नहीं आता।

(2) **संस्कृत के कृदन्तपरक विशेषणों** द्वारा व्यक्त हो सकता है जिसका निकास संस्कृत के कर्मवाच्य कृदन्त हैं, उदाहरणार्थ : सर्वेक्षण द्वारा यह तथ्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापित हो चुका है…(115, 371), बहुमूल्य जानकारी प्राप्त हुई है (115, 443), यह संविधान कई राष्ट्रों के विधानों के सम्मिश्रण से निर्मित हुआ (115, 327)। संस्कृत के कृदन्तपरक विशेषण कर्मवाच्य में आ सकते हैं— मुख्यत: कर्मवाच्य कृदन्त के रूप में 'करना' क्रिया के साथ। इस स्थिति में कर्मवाच्य का शाब्दिक और व्याकरणिक अर्थ एक हो जाता है, उदाहरणार्थ : सिक्कों की परिवर्तन-तालिका भी बहुत अधिक संख्या में वितरित की गयी (115, 437), रजवाड़ों को उनके पर्सों और विशेषाधिकारों से वंचित किया जा चुका है (IV, 30-1-1972)।

(3) **सकर्मक क्रियाओं से बने सरल तथा संयुक्त द्वितीय कृदन्तों द्वारा व्यक्त** हो सकते हैं, जो कि सरल तथा संयुक्त योजकों के साथ संयुक्त नामिक विधेय में आते हैं और कर्मवाच्य प्रकृति की वजह से कृदन्त की स्थैतिक कर्मवाच्य (या अवस्था का कर्मवाच्य) का अर्थ व्यक्त करते हैं। उदाहरणार्थ : भाग्य में जो लिखा था, वह हुआ, आगे भी वही होगा, जो लिखा है (65, 46), मूल्य-सूची में बहुत-सी वस्तुओं के मूल्य दिये हुए होते हैं (101, 233), जो गढ़े खोदे थे…(69, 268)।

स्थैतिक कर्मवाच्य के शाब्दिक अभिव्यक्त रूपों और नियमित कर्मवाच्य के रूपों के बीज अन्तर जानना चाहिए, चूँकि वे (क) (स्थैतिक) कर्मवाच्य कृदन्त के रूपों से वंचित होते हैं और इसलिए वे कभी भी विशेषण की तरह इस्तेमाल नहीं हो सकते; (ख) सिर्फ़ एक ही पूर्णतावाची प्राकारिक रूप रखते हैं, जो कि योजक के आधार पर वर्तमान, भूत, भविष्यत् काल को बतलाता है, लेकिन काल रूपों के विभाजन नहीं रखते, जैसा कि कर्मवाच्य के लिए प्राकृतिक है; (ग) आम तौर पर, व्यापार के कर्ता के साथ इस्तेमाल नहीं होते, चूँकि व्यापार को व्यक्त नहीं करते, बल्कि उसकी परिणामी अवस्था को व्यक्त करते हैं। कर्मवाच्य के विधेय में आने वाले स्थैतिक रूपों और अपने कर्ता के साथ सरल तथा संयुक्त द्वितीय कृदन्त के नामिकीकृत प्रयोग के बीच अन्तर जानना चाहिए जो कि 'का' परसर्ग के साथ संज्ञा द्वारा व्यक्त होता है या सम्बन्धवाचक सार्वनामिक विशेषण द्वारा व्यक्त होता है। नामिकीकृत कृदन्त विशेषण के तौर पर, विशेषण-विधेय और विधेय के तौर पर हो सकते हैं, उदाहरणार्थ : चुंगी का लाया सौदा क्या तुमने कभी देखा नहीं है (66, 186), मैं प्यास की मारी जा पहुँची थी (13, 10); दुनिया के कानून पैसे वालों के बनाये हैं (102, 113); (घ) 'है, था, होगा' योजक-क्रियाओं के स्थान पर सरल तथा संयुक्त द्वितीय कृदन्त के साथ जो कि स्थैतिक कर्मवाच्य का अर्थ देता है, अर्द्धसंयोजक 'रहना' क्रिया आ सकती है, उदाहरणार्थ : प्रत्येक कार्ड पर एक तारीख लिखी होती है और कार्ड क्रमानुसार रखे रहते हैं (101, 102), दो प्लेटों में कृत्रिम फल और मेवे रखे रहते थे (13, 29)।

शब्दार्थ स्तर पर कर्मवाच्य रचनाएँ अवैयक्तिक रचनाओं से परस्पर सम्बन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखती हैं, चूँकि दोनों रचनाएँ विशेष कर जिनमें निषेध होता है, समान वृत्तिवाचक अर्थ को व्यक्त करती हैं। यह बात व्यापार के कर्ता के साथ 'से' परसर्ग जोड़ने से विशेष कर स्पष्ट प्रकट होती है। फिर भी संरचनात्मक तौर पर ये रचनाएँ कर्मवाच्य रचना में प्रधान कर्म की उपस्थिति या अवैयक्तिक रचना में ऐसे कर्म के अभाव में भिन्न होती हैं, उदाहरणार्थ :

कर्मवाच्य रचना	अवैयक्तिक रचना
मुझसे अब बार-बार चूल्हा नहीं जलाया जाता (14, 98)।	मुझसे तो ऊपर न लेटा गया (8, 38)।
दैत्यों से यह न देखा गया (28, 60)।	उसकी स्त्री से न रहा गया (69, 10)।

अगर प्रधान कर्म को छोड़ दिया जाये तो कर्मवाच्य रचनाओं और अवैयक्तिक रचनाओं में संरचनात्मक भिन्नता नहीं होती, उदाहरणार्थ :

कर्मवाच्य रचना	अवैयक्तिक रचना
मुझसे न कहा जायेगा (1, 188)।	मुझसे रहा नहीं गया (31, 73)।
उस दिन न मुझसे खाया गया और न ही कुछ पिया गया (69, 193)।	नहीं रोया जायेगा मुझसे (102, 119)

निश्चयार्थ

आधुनिक हिन्दी में निश्चयार्थ काल-रूपों का एक समूह है, जो कि तीनों मौजूदा वास्तविक कालों अर्थात् वर्तमान, भूत और भविष्यत् काल से सम्बन्ध रखते हैं।

वर्तमान काल के रूप उस व्यापार को व्यक्त करते हैं जो कि उक्ति के क्षण के साथ मेल खाता है, जिसमें उक्ति का क्षण शामिल होता है और जो उक्ति के क्षण के लिए वास्तविक होता है।

भूतकाल के रूप उस व्यापार को व्यक्त करते हैं जो कि उक्ति के क्षण का पूर्ववर्ती होता है या भूतकाल में किसी विशेष काल के क्षण तक सम्पन्न होता है।

भविष्यत् काल के रूप उस व्यापार को व्यक्त करते हैं जो कि उक्ति के क्षण के प्रति अनुवर्ती होता है या भविष्य में किसी विशेष क्षण तक सम्पन्न होता है।

आधुनिक हिन्दी में प्रत्येक काल के लिए विश्लेषणात्मक और संश्लेषणात्मक कृदन्तपरक रूपों का अपना वर्ग होता है।

वर्तमान काल 'है' क्रिया के संश्लेषणात्मक तिङन्ती रूपों तथा उन विश्लेषणात्मक रूपों द्वारा व्यक्त होता है जो कि प्रथम कृदन्त, द्वितीय कृदन्त और संतत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृदन्त और 'है' क्रिया के तिङन्ती रूपों के संयोग से बनते हैं।

भूतकाल 'था' क्रिया के संश्लेषणात्मक विकारी रूपों तथा प्रथम और द्वितीय कृदन्त के विकारी रूपों एवं उन विश्लेषणात्मक रूपों द्वारा व्यक्त होता है जो कि प्रथम कृदन्त, द्वितीय कृदन्त और संतत कृदन्त तथा 'था' क्रिया के विकारी रूपों के सम्मिलन से बनते हैं।

भविष्यत् काल किसी भी क्रिया के सामान्य भविष्यत् काल के संश्लेषणात्मक तिङन्ती-विकारी रूप एवं उन विश्लेषणात्मक रूपों से बनता है जो कि प्रथम कृदन्त, द्वितीय कृदन्त और संतत कृदन्त और 'होना' क्रिया के सरल भविष्यत् काल के तिङन्ती-विकारी रूपों के संयोग से बनते हैं।

निश्चयार्थ के काल रूप प्राकारिक वर्णनों के दृष्टिकोण से अप्राकारिक ('है', 'था' क्रियाओं के रूप और भविष्यत् काल के संश्लेषणात्मक रूप) और प्राकारिक रूपों में बाँट सकते हैं जो कि प्रथम और द्वितीय कृदन्तों तथा संतत कृदन्तों द्वारा व्यक्त होते हैं।

रूप \ काल	वर्तमान	भूत	भविष्यत्
संश्लेषणात्मक अप्राकारिक	है	था	लिखेगा
संश्लेषणात्मक अपूर्ण	लिखता	लिखता	—
संश्लेषणात्मक पूर्ण	—	लिखा	—
विश्लेषणात्मक अपूर्ण	लिखता है	लिखता था	लिखता होगा
विश्लेषणात्मक पूर्ण	लिखा है	लिखा था	लिखा होगा
विश्लेषणात्मक संतत	लिख रहा है	लिख रहा था	लिख रहा होगा

आधुनिक हिन्दी में काल के रूप में निरपेक्ष रूप को पहचानना चाहिए जो कि स्वयं व्यापार को व्यक्त करते हैं और जो कि प्रत्यक्ष रूप से उक्ति के क्षण से सम्बन्ध रखते हैं और सापेक्ष रूप को पहचानना चाहिए जो कि एक व्यापार को दूसरे व्यापार (या काल के क्षण) के साथ उसके सम्बन्ध में व्यक्त करते हैं और इस तरह उक्ति के क्षण के साथ 'परोक्ष सम्बन्ध' रखते हैं।

समस्त संश्लेषणात्मक रूप और वर्तमान काल के सब विश्लेषणात्मक रूप और भूतकाल तथा भविष्यत् काल के समस्त अपूर्ण रूप निरपेक्ष रूप होते हैं। यहाँ यह उल्लेख करना उचित होगा कि वर्तमान काल का पूर्ण रूप उस व्यापार को व्यक्त करता है जिसका आखिरी सिरा उक्ति का क्षण है।

भूतकाल और भविष्यत् काल के पूर्ण और संतत रूप सापेक्ष रूप होते हैं।

वर्तमान काल और भूतकाल के पूर्णतावाची रूप पूर्ण वर्तमान (या आसन्न भूत) का अर्थ रखते हैं, अर्थात् उस व्यापार को व्यक्त करते हैं, जिसके परिणाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान तथा भूतकाल में अनुवर्ती काल अर्थ नें वास्तविक होते हैं।

भूत तथा भविष्यत् काल के पूर्णतावाची रूप उस व्यापार को व्यक्त कर सकते हैं जो कि दूसरे भूत या भविष्य के व्यापार से पहले हो गया हो अर्थात् उनका पूर्ण भूत तथा पूर्ण भविष्यत् अर्थ होता है।

अपूर्णतावाची काल रूप मुख्यत: आवर्ती, अवास्तविक और अमूर्त व्यापार को व्यक्त करते हैं जो किसी असीमित समय में होता है, उदाहरणार्थ : जब कमरे में आती, लोग खड़े हो जाते थे (69, 31), दो बच्चे हैं, जो स्कूल चले जाते हैं (111, 102), —तो खाते क्या होंगे ? —बेटी, यह लोग हवा पर रहते हैं (69, 289)।

कम स्थितियों में ऐसा होता है कि अपूर्णतावाची काल रूप मूर्त, वास्तविक व्यापार व्यक्त करते हैं, जो कि उक्ति के क्षण के साथ घटता है और सीमित समय के अन्दर होता है, उदाहरणार्थ : दुनिया में सब सोते होंगे, बस हम ही जागते हैं (102, 111), लड़को, क्यों भागते हैं (69, 73), पाँचों रंगरूट एक-दूसरे से लिपटते थे, उछलते थे, चीखते थे···(69, 77)।

पूर्णतावाची काल रूप मुख्यतः मूर्त, अकेले व्यापार को व्यक्त करते हैं जो कि समय में सीमित होता है, उदाहरणार्थ : परसों शहर में गोलियाँ चलीं (69, 10), और कल से उसने आज तक पानी नहीं पिया है (120, 88), आज से पाँच दिन पहले उसको बुखार आया था (111, 70)।

आवर्ती व्यापार भी काल की दृष्टि से सीमित होता है : हसनदीन इस बीच में दो-तीन बार घास ले आया था (15, 8), कलकत्ता तो कई बार गया हूँ (35, 133)।

बहुत ही कम स्थितियों में पूर्णतावाची काल रूप समय में असीमित आवर्ती व्यापार को व्यक्त करते हैं जो कि कभी-कभी क्रिया के शाब्दिक अर्थ के साथ सम्बन्धित है, उदाहरणार्थ : पराये मरदों से सोयी हूँ (103, 141), बेटी, उसे मैंने देश-भर में बहुत खोजा···(5, 13)।

संतत काल रूप आम तौर पर एकल प्रक्रियात्मक व्यापार को व्यक्त करते हैं जो समय में सीमित होता है, उदाहरणार्थ : बाहर अब भी वर्षा हो रही है (111, 25), एक दिन संध्या समय मैं रामायण पढ़ रही थी (69, 81), मुझे लगता है कि लवाणी···मेरी ओर देख रही होगी···(8, 83)।

संतत काल रूप आवर्ती व्यापार को बहुत ही कम व्यक्त करते हैं जो कि समय में असीमित होता है, उदाहरणार्थ : सूर्य लगातार रेडियो-तरंगें भेज रहा है (88, 195), शेख पट्टी में लोग कारीगरी से जी रहे हैं (120, 57)।

'था' और 'है' अप्राकारिक काल रूप वर्तमान काल तथा भूतकाल में अकेले, मूर्त व्यापार को व्यक्त करते हैं। भविष्यत् काल का अप्राकारिक रूप अकेले, मूर्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापार को और सामान्यीकृत आवर्ती व्यापार को भी व्यक्त कर सकता है, उदाहरणार्थ : 'मैं अभी शादी नहीं करूँगी' (111, 78), और '···तुम्हारे आरकेस्ट्रा में वायलिन बजाऊँगा' (28, 165)।

काल-रूपों के प्रत्यक्ष सांदर्भिक सम्बन्धित प्रयोग के साथ-साथ, जबकि प्रसंग काल रूप के मुख्य अर्थ को रखता है, काल-रूपों का उपलक्षित लाक्षणिक प्रयोग भी होता है जो कि परिवर्ती प्रसंग के साथ विरोध में होते हैं । इस हालत में वर्तमान तथा भूतकाल भविष्यत् काल का अर्थ देते हैं, और भूतकाल वर्तमान काल का अर्थ देता है और वर्तमान भूतकाल का, उदाहरणार्थ : ···ऐसा लग रहा है जैसे दिल अब बैठा, अब बैठा (59, 58), ···तो कल आप 'सत्य' जी के उपन्यास की आलोचना लिख ला रहे हैं ना ? (59, 24), सुखराम घायल लेटा है ·· कजरी बैठी है पास (103, 219), ···ओह, आप ! नमस्ते ! ···नमस्ते ! इसी ट्रेन से आ रही हैं क्या ?···जी हाँ । अकेली ही ? जी हाँ, अकेली ही आयी हूँ ! (59, 104)।

लाक्षणिक अर्थ मात्रिक तथा गुणात्मक तौर पर प्रबल हो सकता है। यह तब होता है जब भविष्यत् काल के कृदन्तपरक रूपों का इस्तेमाल करते हैं। भविष्यत् काल हर हालत में अतिरिक्त वृत्तिवाचक अर्थों से स्वतन्त्र नहीं होता, जिनकी विशेषता है—भावी व्यापार की कल्पना। हालाँकि व्यापार पूरी तरह वास्तविक समझा जाता है, इसकी प्रतीक्षा मात्र की जाती है। इसी कारण भविष्यत् काल के कृदन्तपरक रूपों के ऊपर पुनः विचार किया गया जो कि बहुत कम 'शुद्ध' भविष्यत् काल का अर्थ देते हैं और अकसर काल्पनिक (संदेहार्थक) व्यापार व्यक्त करते हैं, जो कि वर्तमान, भूत या स्वयं भविष्यत् काल से भी सम्बन्ध रख सकता है। व्यापार की काल्पनिक प्रकृति और प्रबल हो जाती है जब 'होना' सहायक क्रिया सामान्य भविष्यत् काल के संश्लेषणात्मक रूप में होती है, चूँकि स्वयं 'होना' क्रिया सामान्य भविष्यत् काल में वृत्तिवाचक छाया को बहुत ही अच्छी तरह व्यक्त करती है। (माइकू) ने कहा—बड़ी भीड़ है, वे कोई दो-तीन सौ आदमी होंगे (69, 61)। भविष्यत् काल के कृदन्तपरक रूपों के लाक्षणिक अर्थ के बारे में विस्तारपूर्वक उल्लेख भविष्यत् काल के रूपों का वर्णन करते समय किया जायेगा।

निश्चयार्थ के ऊपर गिनाये गये काल-रूपों के अलावा जिनको सामान्य कह सकते हैं, आधुनिक हिन्दी में बहुत-से सीमित, विशेष प्रसंग के काल रूप होते हैं, जो कि समापक कृदन्तों और संयुक्त वर्तमान और अपूर्ण सहायक क्रियाओं ('होता है', 'होता था') के संयोग से बनते हैं।

कई शर्तों के तहत सीमित, विशेष प्रसंग के रूपों में संयुक्त पूर्ण वर्तमान और पूर्णभूत सहायक क्रियाओं ('हुआ है', 'हुआ था') के रूप शामिल हो सकते हैं, जो, दूसरी तरफ़, संयुक्त नामिक विधेय कहला सकते हैं, जो कि संयुक्त द्वितीय कृदन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वर्तमान और अपूर्ण योजक ('है', 'था') के संयोग से बनते हैं, अर्थात् 'लिखा+हुआ है (था)' या 'लिखा हुआ+है (था)'।

इस तरह, सीमित विशेष प्रसंग के रूपों को ध्यान में रखते हुए, निश्चयार्थ के काल रूपों की तालिका निम्न प्रकार की होगी :

काल / रूप	वर्तमान	भूत	भविष्यत्
संश्लेषणात्मक अप्राकारिक	है	था	लिखेगा
संश्लेषणात्मक अपूर्ण	लिखता	लिखता	—
संश्लेषणात्मक पूर्ण	—	लिखा	—
विश्लेषणात्मक	लिखता है	लिखता था	लिखता होगा
अपूर्ण	लिखता होता है	लिखता होता था	—
विश्लेषणात्मक	लिखा है	लिखा था	लिखा होगा
पूर्ण	लिखा होता है	लिखा होता था	—
	लिखा हुआ है	लिखा हुआ था	—
विश्लेषणात्मक	लिख रहा है	लिख रहा था	लिख रहा होगा
संतत	लिख रहा होता है	लिख रहा होता था	

सीमित विशेष प्रसंग के रूप उक्ति के क्षण के लिहाज़ से वे ही सम्बन्ध व्यक्त करते हैं जो कि सरल सहायक क्रिया के साथ काल रूप व्यक्त करते हैं।

संयुक्त वर्तमान या अपूर्ण सहायक क्रिया के साथ काल रूप आम तौर पर आवर्ती व्यापार व्यक्त करते हैं, जो कि समय में असीमित या बहुत कम सीमित होता है।

संयुक्त पूर्ण वर्तमान या पूर्ण भूत सहायक क्रिया के साथ काल रूप मुख्यतः समय में अकेला सीमित व्यापार व्यक्त करते हैं, उदाहरणार्थ : तुमको किसी ने रोककर नहीं रखा हुआ है (36, 89), सीढ़ियों से सटे जँगले पर ह्यू बर्ट ने अपना सिर रखा हुआ था (52, 123)।

निश्चयार्थ के काल रूपों के विश्लेषण के कुछ परिणाम निकालते समय कह सकते हैं कि हर काल रूप के लिए शब्दार्थक लक्षणों का वर्ग स्वाभाविक होता है, जो एक तरफ़ काल रूपों को मिलाते हैं और दूसरी तरफ़ अलग करते हैं, और उनके सामान्य और विशेष गुणों पर प्रकाश डालते हैं। निश्चयार्थ के काल रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

शब्दार्थक लक्षणों के अनुसार निम्नलिखित तौर पर होते हैं :

काल	रूप	शब्दार्थक लक्षण								
		पूर्व(अ)	पूर्व(आ)	सह०	पर०	सी०	पूर्ण०	आव०	अके०	प्र०*
	है	−	−	+	−	+	−	−	+	−
व	लिखता है	−	−	+	−	∓	−	+	−	∓
तं	लिखता होता है	−	−	+	−	∓	−	+	−	−
मा	लिखा है	+	−	∓	−	+	+	−	+	−
न	लिखा होता है	+	−	∓	−	∓	+	+	−	−
का	लिखा हुआ है	+	−	∓	−	+	+	−	+	−
ल	लिख रहा है	−	−	+	−	+	−	∓	+	+
	लिख रहा होता है	−	−	+	−	∓	−	+	+	+
भू	था	+	−	−	−	+	−	−	+	−
	लिखता	+	−	−	−	+	−	+	−	∓
त	लिखा	+	−	−	−	+	−	−	+	−
	लिखता था	+	−	−	−	∓	−	∓	+	∓
का	लिखता होता था	+	−	−	−	∓	−	+	−	−
	लिखा था	+	+	−	−	+	+	−	+	−
ल	लिखा होता था	+	−	−	−	∓	∓	+	−	−
	लिखा हुआ था	+	∓	−	−	+	∓	−	+	−
	लिख रहा था	+	−	−	−	+	−	−	+	+
	लिख रहा होता था	+	−	−	−	∓	−	+	−	+
भ										
वि	लिखेगा	−	−	−	+	+	−	∓	∓	∓
ष्य	लिखता होगा	−	−	−	+	+	−	+	−	+
त्	लिखा होगा	−	+	−	+	+	(∓)	−	+	−
का	लिख रहा होगा	−	−	−	+	+	−	∓	+	+
ल										

*पूर्व० (अ) = उक्ति के क्षण की पूर्ववर्तिता; पूर्व० (आ०) = भूत या भविष्यत् काल में काल के क्षण की पूर्ववर्तिता; सह० = सहकालिकता; पर० = परवर्तिता, सी० = काल में सीमित व्यापार, पूर्ण० = पूर्णतावाची,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आव० = आवर्ती व्यापार; अके० = अकेला व्यापार; प्र० = प्रक्रियात्मक व्यापार; + का अर्थ है लक्षण की अभिव्यक्ति; — का अर्थ है रूप के प्रत्यक्ष प्रयोग में यह लक्षण नहीं होता; $\overline{+}$ बताता है कि लक्षण व्यक्त हो सकता है, लेकिन ज़रूरी तौर पर नहीं अर्थात् दिये गये रूप के लिए वैकल्पिक है।

कालरूपों के प्रत्यक्ष और लाक्षणिक अर्थ

वर्तमान काल के रूप

वर्तमान काल में निम्नलिखित काल रूप होते हैं : (1) वर्तमान स्थिर सत्यवाचक, (2) वर्तमान अपूर्णतावाची, (3) वर्तमान अपूर्णतावाची आभ्यासिक, (4) वर्तमान पूर्णतावाची, (5) वर्तमान पूर्णतावाची आभ्यासिक, (6) वर्तमान पूर्णतावाची स्थैतिक, (7) वर्तमान संतत और (8) वर्तमान संतत आभ्यासिक। इन आठ काल रूपों में चार सामान्य होते हैं और चार सीमित विशेष प्रसंग के जो वास्तव में सामान्य काल रूपों के विकार होते हैं। प्रथम कृदन्त के द्वारा मुख्य क्रिया की हैसियत से व्यक्त किये गये रूप ये लक्षण बताते हैं : सह० +, सी० $\overline{+}$, आव० +; द्वितीय कृदन्त द्वारा मुख्य क्रिया की हैसियत से व्यक्त किये गये रूप इन लक्षणों को बताते हैं : पूर्व० (अ) +, सी० +, पूर्ण० +, अके० +; संतत कृदन्त द्वारा मुख्य क्रिया की हैसियत से व्यक्त किये गये रूप इन लक्षणों से व्यक्त होते हैं : सह० +, सी० +, अके० +, पूर्व० (आ) +। काल रूप वर्तमान सहायक क्रिया के साथ अतिरिक्त लक्षण आव० + को व्यक्त करते हैं। अप्राकारिक तिङन्ती रूप 'है' सह० +, सी० +, अके० + लक्षणों को व्यक्त करता है।

चूँकि सब रूपों के प्रयोग की कोई-न-कोई विशेषता होती है, इसीलिए उनके बारे में स्वतन्त्र वर्णन की ज़रूरत है।

वर्तमान स्थिर सत्यवाचक

यह काल रूप 'है' क्रिया के चार तिङन्ती रूपों द्वारा व्यक्त होता है—'हूँ' उत्तम पुरुष, एकवचन; 'है'—मध्यम तथा अन्य पुरुष, एकवचन; 'हैं'—उत्तम तथा अन्य पुरुष, बहुवचन और मध्यम शिष्ट पुरुष; बहुवचन, 'हो'—मध्यम पुरुष बहुवचन। उदाहरणार्थ :

मैं हूँ	हम हैं
तू है	तुम हो, आप हैं
वह है	वे हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस काल रूप का प्रयोग तब करते हैं जब द्रव्य या व्यक्ति की उपस्थिति (निषेधात्मक वाक्यों में अनुपस्थिति) के बारे में बताना होता है, जब वे वाक्य के उद्देश्य होते हैं, उदाहरणार्थ : हाँ, मैं ही हूँ (10, 9), ···दो छोटे पात्र हैं (111, 51), अब मैं बम्बई में हूँ (28, 48), घर में चार कमरे हैं (111, 10), वह क्या सिपाही नहीं है ? पुलिस नहीं है ? (103, 78), यहाँ बच्चों के लिए दूध भी नहीं है (29, 21)।

निषेधात्मक वाक्यों में, विशेषकर जब बातचीत हो रही है, 'है' को छोड़ भी सकते है, उदाहरणार्थ : आपको अवश्य कोई धोखा हुआ है। कोई धोखा नहीं (28, 26), ···मियादी बुखार है। टाइफ़ायड तो नहीं ?···(12, 97)। लेकिन यह बात व्याकरणिक मानक नहीं जिसकी निम्नलिखित उदाहरणों की जोड़ियों से पुष्टि हो जाती है : 'क्यों री, तुझे ग़म नहीं ?' (103, 84) और 'फिर तो तुझे गुस्सा नहीं है ?' (103, 93); 'कौन है ? पता नहीं' (103, 22) और 'बच्ची के बाप को इसका कुछ पता नहीं है' (29, 12)।

संयोजक क्रिया की हैसियत से 'है' वर्तमान काल के साथ विधेय के नामिक हिस्से के परस्पर सम्बन्ध की ओर संकेत करता है, उदाहरणार्थ : यह मेरे एक मित्र का बच्चा है। तो यह बच्चा तुम्हारा नहीं है ? (29, 17), तू राजा है (103, 114), राजा नहीं हूँ (103, 107)।

संयोजक क्रिया के प्रकार्य में 'है' को आम तौर पर छोड़ नहीं देते।

लेकिन 'है' को छोड़ने की बात को नामिक एकांगी वाक्य नहीं समझ लेना चाहिए चूँकि उसको संरचना की दृष्टि से 'है' के आवश्यक अभाव के आधार पर अलग होता है, उदाहरणार्थ : अकेली रातें, प्रभात और संध्या वेलाएँ, जलती दोपहरी (4, 251), आसमान साफ़ खुला और नीला, धरती भूरी, काली और मटियाली (28, 14)।

वर्तमान अपूर्णतावाची

यह काल का रूप प्रथम कृदन्त के लैंगिक विकारी रूपों और क्रिया 'है' के तिङन्ती रूपों के संयोग से बनता है। इस तरह, वर्तमान अपूर्णतावाची पुंल्लिग के दो लैंगिक रूप तथा स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप द्वारा व्यक्त होता है जो कि 'है' क्रिया के चार तिङन्ती रूपों के साथ मिल जाते हैं :

मैं लिख-ता (-ती) हूँ	हम लिख-ते (-ती) हैं
तू लिख-ता (-ती) है	तुम लिख-ते (-ती) हो
	आप लिख-ते (-ती) हैं
वह लिख-ता (-ती) है	वे लिख-ते (-ती) हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निषेधात्मक वाक्यों में जब कि सहायक क्रिया 'है' को छोड़ दिया जाता है, यह काल रूप चार लैंगिक रूपों द्वारा व्यक्त होता है :

मैं नहीं लिख-ता (-ती)	हम नहीं लिख-ते (-तीं)
तू नहीं लिख-ता (-ती)	तुम नहीं लिख-ते (-तीं)
	आप नहीं लिख-ते (-तीं)
वह नहीं लिख-ता (-ती)	वे नहीं लिख ते (-तीं)

निषेधात्मक वाक्यों में सहायक क्रिया का छोड़ना रचनात्मक तत्त्व है, लेकिन वह एक व्याकरणिक मानक नहीं है, चूँकि सहायक क्रिया रह सकती है, उदाहरणार्थ : मैं तो कहती हूँ इस पर वह मानता नहीं है (29, 33), तो तुम लिखते क्यो नहीं हो ? (28, 159), वह जादू तो नहीं जानती है (59, 114)।

सहायक क्रिया का निषेधात्मक वाक्यों में होना आवश्यक है अगर उसके छोड़ने से काल अर्थ में भंग हो सकता है, उदाहरणार्थ : ···वह ग्यारह दिन टैक्सी नहीं चला सकता था। और जब टैक्सी नहीं चलती है तो घर का खर्च नहीं चल सकता, और बच्चों का स्कूल नहीं चलता है, और बनिये की बही नहीं चलती है···(29, 25)। सहायक क्रिया के बग़ैर व्यापार को भूतकाल (नियमित आवर्ती का अपूर्णतावाची) में समझा जा सकता था। यह बात निम्नलिखित उदाहरण के लिए भी सही है : यदि एक दिन भी वह नहीं आता है तो उसके प्राण व्याकुल हो जाते हैं (5, 44) !

इस रूप का सामान्य अर्थ सह० +, सी० +, आव० +, प्र० + लक्षणों द्वारा व्यक्त होता है, तब व्यापक रूप से सहकालिकता को उक्ति के क्षण के साथ परस्पर सम्बद्ध कह सकते हैं। अपूर्णतावाची वर्तमान को उक्ति के क्षण के अनुसार अवास्तविक वर्तमान में बाँट सकते हैं, जो कि अमूर्त आवर्ती व्यापार द्वारा व्यक्त होता है जो कि समय में असीमित होता है तथा वास्तविक वर्तमान में बाँट सकते हैं, जो कि मूर्त संतत व्यापार द्वारा व्यक्त है और जो समय में सीमित होता है। अपूर्णतावाची वर्तमान के ऊपर गिनाये गये प्रकारों को अनेक अनुच्छेदों में बाँटा जा सकता है।

अवास्तविक अपूर्णतावाची वर्तमान काल रूप के मुख्य अर्थ को व्यक्त करता है। यहाँ पर इस बात का संकेत नहीं होता कि व्यापार उक्ति के मूर्त क्षण में हुआ, बस व्यापार होता है आम तौर पर। वह वास्तव में वर्तमान के साथ औपचारिक सम्बन्ध रखता है। अपूर्णतावाची वर्तमान के इस अवच्छेद के बहुत-से छोटे अवच्छेद होते हैं।

(1) अमूर्त अवास्तविक वर्तमान—अवास्तविक अपूर्णतावाची वर्तमान का यह अवच्छेद असीम सामान्य व्यापार को व्यक्त करने के काम आता है जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि मुख्यतः अलग-अलग मुहावरे, कहावतें, स्थिर सच्चाई, सूक्तियाँ आदि व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : एक मछली सारे तालाब को गन्दा करती है (37, 80), एक हाथ से ताली नहीं बजती (37, 80), बनिया भी दादा कहने से गुड़ देता है (54, 5), निराशा असम्भव को सम्भव बना देती है (60, 103), हर चीज़ का वक्त आता है (80, 56), जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं (37, 103)।

(2) नियमित अवास्तविक वर्तमान—अवास्तविक अपूर्णतावाची वर्तमान का यह अवच्छेद नियमित आवर्ती व्यापार को व्यक्त करने के काम आता है जो कि स्थिर नहीं होता, बल्कि रुक-रुककर होता है, उदाहरणार्थ : मिसेज़ दास के पत्र कभी-कभी आते हैं (69, 95), हर साल बाढ़ आती है और लाखों लोग इससे तबाह हो जाते हैं (111, 99), आजकल कोई लड़की किराये के मकान में नहीं रहती (28, 119), अब वह अंग्रेज़ी पुस्तकें बहुत कम पढ़ती है (69, 96), कम-से-कम पाँच आदमी मेरे यहाँ रोज़ आते हैं (111, 124), और पुलिस बड़े आदमियों की ही मदद क्यों करती है ? (103, 154)।

अवास्तविक वर्तमान के इस अवच्छेद में वह व्यापार एक विशिष्ट स्थान लेता है जो 'होना' क्रिया से बने प्रथम कृदन्तपरक रूप से प्रगट होता है और जिसमें मुख्य ज़ोर प्रस्तुत व्यापार की आभ्यासिकता पर पड़ता है, उदाहरणार्थ : अमीरों को धन का रोग होता है (69, 210), जब बादल बहुत होते हैं तो जोड़ों का दर्द भी बढ़ जाता है (111, 33), इस विधि का प्रयोग छोटे कार्यालयों में ही होता है (101, 73)।

'होना' क्रिया का यह कृदन्तपरक रूप 'है' क्रिया के तिङन्ती रूप के साथ मिलकर संयुक्त वर्तमान योजक की हैसियत से प्रयुक्त हो सकता है, जबकि वह लक्षण की आभ्यासिकता की ओर संकेत करता है जो कि नामिक हिस्से में होता है, उदाहरणार्थ : कॉमन-रूप में जब लड़कियाँ इकट्ठी होती हैं तो···(111, 27), वे ऊपर से गोल होते हैं (101, 80), भूख बड़ी भयानक होती है (102, 78)।

विश्लेषणात्मक क्रियाओं में क्रियार्थक हिस्सा जो इसी संयुक्त रूप द्वारा व्यक्त होता है बिना आभ्यासिकता की किसी छाया के वर्तमान अपूर्णतावाची की सभी किस्में व्यक्त कर सकता है, उदाहरणार्थ : ···जिसका नाम उस सूचक-पत्र पर लिखे अक्षर से आरम्भ होता है (101, 79)—अमूर्त वर्तमान; 'क्यों रोती है ?' रुस्तम खाँ पूछता है। वह कहती है 'दर्द होता है' (103, 149)—मूर्त वर्तमान।

यह अवास्तविक वर्तमान का अवच्छेद कर्मवाच्य रूपों द्वारा बहुत ज़्यादा व्यक्त होता है जो कि कारबारी सरकारी भाषा के लिए विशेषकर लाक्षणिक है, उदाहरणार्थ : ···सारे पत्र तिथिवार रखे जाते हैं (101, 79), पत्र को खोलने के बाद उस कार्यालय की मुहर लगायी जाती है (155, 34), आगे का हिसाब नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखा जाता (51, 160), आज छोटे-बड़े क्लासों में कहानियाँ पढ़ाई जाती हैं और परीक्षाओं में उन पर प्रश्न किये जाते हैं (64, 37), मुझसे अब बार-बार चूल्हा नहीं जलाया जाता (14, 97)।

(3) वृत्तिवाचक अवास्तविक—अवास्तविक वर्तमान अपूर्णतावाची का यह अवच्छेद वृत्तिवाचक छायापूर्ण अमूर्त व्यापार को व्यक्त करने के काम आता है, जहाँ रूप के वृत्तिवाचक अर्थ के ऊपर मुख्य बल दिया जाता है। यहाँ निम्नलिखित वृत्तिवाचक छायाओं के बीच अन्तर जानना चाहिए :

(क) विध्यर्थक, अर्थात् व्यापार के लिए आम तौर पर क्षमता, योग्यता की छाया, लेकिन किसी विशेष हालत में नहीं, उदाहरणार्थ : क्या करते हो ? वीणा बजाता हूँ (28, 36), खड़े क्यों हो, आओ ना, ज़रा देखूँ कैसे नाचते हो ! (9, 69), गधे होने के बावजूद तुम बातें अच्छी बना लेते हो (27, 49)।

(ख) काल्पनिक, जो कि संरचनात्मक तौर पर शर्त द्वारा व्यक्त होता है (आम तौर पर क्रियार्थक-नामिक पदबन्ध 'कल्पना करना' या 'मानना' क्रिया द्वारा) जिसके बाद अवास्तविक व्यापार होता है जो कि निश्चयार्थ के वर्तमान तथा भविष्यत् काल की सीमा पर होता है और जिसका शब्दार्थक तौर पर सम्भावनार्थ की तरफ़ झुकाव होता है, उदाहरणार्थ : कल्पना कीजिये कि पचास हज़ार की बस्ती वाले शहर में राजधानी से एक व्यक्ति आता है (35, 21), मान लीजिये कि आदिवासी केवल तीन ही गिनती करना जानता है... (35, 89); मान लीजिये कि वह स्वयं अपनी दाढ़ी बनाता है (35, 99)।

(ग) निर्दिष्ट व्यापार की छाया, जो कि बताती है कि व्यापार का कर्ता व्यापार किन्हीं खास निर्दिष्ट सिद्धान्तों आदि के बल पर करता है और व्यापार स्वयं एक प्रकार की आवश्यकताबोधक प्रकृति अपना लेता है और वह अमूर्त होता है लेकिन आवर्ती नहीं, उदाहरणार्थ : ऐसे प्रबन्ध के अभाव में प्राप्ति-क्लर्क स्वयं ऐसे पत्रों की प्राप्ति स्वीकार करके, उन्हें उक्त अफ़सर के पास भेजने की व्यवस्था करता है (155, 34), पत्र खोलने के पश्चात्...प्रधान क्लर्क प्राप्त पत्रों को रजिस्ट्री क्लर्क के पास भेज देता है जो उन पत्रों का ब्योरा करके एक अवाक् रजिस्टर में लिख देता है (101, 460)।

वर्तमान अपूर्णतावाची वास्तविक मूर्त व्यापार को व्यक्त करता है जो कि उक्ति के क्षण के समय होता है, लेकिन उक्ति का क्षण अलग-अलग लम्बाई का हो सकता है। व्यापार उक्ति के समय के साथ सौ फ़ीसदी मेल खा सकता है और व्यापार के क्षण की सीमा के बाहर भी हो सकता है जो उक्ति से पहले शुरू हो सकता है और उसके बाद भी चल सकता है। इस कारण वास्तविक वर्तमान अपूर्णतावाची भी कई प्रकारों में बाँटा जा सकता है :

(1) वास्तविक जो कि उक्ति के क्षण के साथ मेल खाता है अर्थात् जो कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी विशेष समय पर होता है, उदाहरणार्थ : लड़को क्यों भागते हैं ? (69, 73); क्यों घबराते हो, क्यों चिल्लाते हो (80, 74), जल्दी पानी ला। मैं गर्मी से जली जाती हूँ (5, 66), मैं बोलता हूँ, ···अपने मुल्क को लौट जाओ (28, 129), मैं तुम्हें गिरफ़्तार करता हूँ (80, 83)।

(2) वास्तविक विस्तारित व्यापार, जो न केवल उक्ति के क्षण के साथ मेल खाता है, बल्कि ज़्यादा व्यापक काल का अर्थ रखता है, वह उक्ति के क्षण से पहले शुरू हो सकता है, उक्ति के क्षण के समय चल सकता है और उक्ति के क्षण के बाद समाप्त हो सकता है। व्यापार एक नित्यताबोधक तथा निरंतरताबोधक प्रक्रिया जैसा होता है जो कि वास्तव में मौजूदा समय की दृष्टि से असीमित या सीमित होती है। वास्तविक वर्तमान अपूर्णतावाची का यह प्रकार बहुत ही कम पाया जाता है, उदाहरणार्थ : मैट्रिक में पढ़ता है और आठवीं श्रेणी का प्रश्न नहीं आता (12, 80), उस दिन से अब मैं आठों पहर अपनी बदनसीबी पर आँसू बहाता हूँ (25, 34), ग्यारह साल से मेरे घर की मुफ़्लिसी तुम्हारा इंतज़ार करती है (29, 94), उनके बुड्ढे वालिद खेती का काम करते-करते मरते हैं (80, 89)।

वास्तविक वर्तमान का यह प्रकार बहुत ही स्पष्टतः उन स्थितियों में प्रगट होता है, जबकि व्यापार काल-सूचकों के साथ-साथ घटित होता है जो कि उसकी लम्बाई की ओर संकेत करते हैं, उदाहरणार्थ : पिछले बीस साल से गाड़ी हाँकता है हीरामन (52, 36), इस लड़की को मैं बचपन से जानता हूँ (61, 85), पिछले दो-तीन साल से मिस लतिका ही रहती है (52, 106)।

(3) वास्तविक नित्यतासूचक व्यापार, जो कि सिर्फ़ उक्ति के क्षण को प्रभावित करता है, जो कि निरन्तर और नित्य बगैर काल की किसी भी सीमा के होता है। वास्तविक वर्तमान तथा वास्तविक विस्तारित वर्तमान के बीच में यही अन्तर है जो कि समय से बाँधा जा सकता है। वास्तविक नित्यतासूचक वर्तमान वर्तमान के काल-अर्थ को भरता है और व्यापार के कर्ता के नित्यतासूचक प्रक्रियात्मक लक्षण की ओर संकेत करता है, उदाहरणार्थ : ···शंकरगढ़ का थाना विंध्याचल की पर्वतमाला की गोद में इस ज़िले के सुदूर भाग की रक्षा करता है (80, 9), दुर्ग का जो परकोटा समुद्र की ओर पड़ता है, ···(4, 5), ···वह पिछवाड़े की उस सड़क पार आयी जो दरियागंज में शहर के पुराने परकोटे के किनारे-किनारे जाती है (29, 14), आगे कुछ दूर वह नाला था जो इस्माईलपुर ग्राम के पास से बहता है (80, 69)।

अवास्तविक तथा वास्तविक वर्तमान अपूर्णतावाची काल के बीच वर्तमान अपूर्णतावाची का एक और प्रकार है, जो एक तरफ़ समय में पूर्णतः असीमित होता है और दूसरी तरफ़ मूर्त प्रक्रियात्मक व्यापार को व्यक्त करता है। वर्तमान अपूर्णतावाची के इस प्रकार को सप्रतिबद्ध हम **वर्तमान रूपबद्ध** कहेंगे चूँकि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत ही विशेष सीमाओं से बाँधा जा सकता है और रूपबद्धतः वह वर्तमान के अर्थ से सम्बन्ध रखता है। इस प्रकार के निम्नलिखित अवच्छेद हैं :

(1) **'नाटक-सम्बन्धी' वर्तमान**—जो कि किसी नाटक-रचना के लिए लेखक की टिप्पणियों द्वारा व्यक्त होता है। 'नाटक-सम्बन्धी' वर्तमान का व्यापार संगत नाटक-सम्बन्धी व्यापार के क्षण के साथ मेल खाता है और वास्तव में समय निरपेक्ष होता है, चूँकि रचना के काल से सम्बन्ध रखता है लेकिन किसी वास्तविक वस्तुगत काल के साथ सम्बन्ध नहीं रखता, अर्थात् वर्तमान के इस प्रकार को सापेक्ष काल रूप माना जा सकता है, उदाहरणार्थ: अशोक अन्दर जाकर अपने स्थान पर बैठ जाते हैं। सब लोग खड़े होकर उनका स्वागत करते हैं (38, 56), बाली राम के बाण से गिर जाता है। राम बाली के पास चले जाते हैं (138, 29), पंडित नेहरू चौंक कर भगवानदीन की तरफ़ देखते हैं और बुद्ध की मूर्ति से हाथ हटाकर पलट जाते हैं और खुली खिड़की में खड़े हो जाते हैं और आसमान में खिले हुए तारों की तरफ़ देखने लगते हैं (29, 49)।

(2) **कथा-सम्बन्धी वर्तमान**—जो कि प्रयोग में तब आता है जब (क) किसी साहित्यिक रचना के विषय-वस्तु के बारे में बताते हैं, उदाहरणार्थ : फिर जासूस आते हैं, वकील आते हैं और मुजरिम गिरफ़्तार होता है, उसे सज़ा मिलती है (64, 53-54); (ख) किसी स्थिति के बारे में वर्णन होता है जो कि वास्तव में नहीं भी हो सकती, उदाहरणार्थ : ···ऐसी खोई-खोई-सी सुन्दरी बहुत शीघ्र किसी ठीक प्रकार के, लेकिन किसी धनी का बिज़नेसमैन के ध्यान का केन्द्र बन जाती। छः महीने बाद वह उससे विवाह कर लेती है और चित्रकार 'ओल्ड जोन' के किसी कोने में काफ़ी का एक तल्ख़ प्याला पीता है और···अपने भाग्य को कोसता है (28, 155); (ग) गणित या तर्कशास्त्र की किसी सत्यता की परिकल्पना करने के लिए, उदाहरणार्थ :···हम कागज़ का एक वर्गाकार टुकड़ा लेते हैं और इसे 64 लघु वर्गों में विभाजित करते हैं (35, 49)।

रूपबद्ध वर्तमान के इस प्रकार की खास विशेषता व्यापारों की क्रमबद्ध शृंखला है जो कि एक के बाद दूसरा आता है। वे एक तरह से घटनाओं के किसी क्रम पर प्रकाश डालते हैं। ये व्यापार उक्ति के क्षण के साथ किसी भी प्रकार सम्बन्ध नहीं रखते, बल्कि समस्त वर्णन या इसके किसी विशेष अंश के साथ काल-अर्थ से सम्बन्ध रखते हैं। उक्ति के क्षण के साथ वे सिर्फ़ उन ऊपर उल्लेखित व्यापारों की वास्तविक कार्यान्विति के समय ही मेल खाते हैं।

(3) **उक्ति-सम्बन्धी वर्तमान**—किसी लेखक के कथन का वर्णन करता है, उदाहरणार्थ : गीता कहती है कि मर कर भी तुम मरते नहीं (122, 45), इस अध्याय के अन्त में भगवान कहता है···(122, 47), अर्जुन स्वानुभव से कहता है कि विराट स्वरूप देखने की इच्छा न करो (122, 144)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपबद्ध वर्तमान का यह प्रकार सिर्फ़ किसी कथन, विचार, स्थिति की ओर संकेत करता है, लेकिन व्यापार की उक्ति के क्षण के साथ किसी भी प्रकार नहीं मिलाता। सिर्फ़ यही ज़रूरी है कि किसी दिये गये वर्तमान क्षण में कथन का अस्तित्व है, चाहे कथन कितने ही पुराने भूतकाल से सम्बन्ध रखता है। इसलिए यहाँ वर्तमान काल अर्थ की पूर्णतावाची छाया से जटिल हो जाता है।

वर्तमान अपूर्णतावाची के रूपों के प्रत्यक्ष प्रयोगों के साथ-साथ जब व्यापार अपने कई अर्थों में वर्तमान काल के अर्थ की सीमा के बाहर नहीं होता, वर्तमान अपूर्णतावाची के रूपों का लाक्षणिक प्रयोग भी होता है जब कि रूप के काल अर्थ और उसके उक्ति के क्षण के बीच भिन्नता होती है। वर्तमान अपूर्णतावाची के लाक्षणिक समयनिरपेक्ष प्रयोग के भी अपने प्रकार होते हैं।

(1) **ऐतिहासिक वर्तमान**---जो कि भूतकाल के व्यापार को व्यक्त करने के काम आता है। व्यापार चूँकि क्षणिक होता है, इसीलिए वह बहुत भावपूर्ण होता है। व्यापार की क्षणिकता जैसे कि उसे उक्ति के साथ मिलाती है या उक्ति के क्षण के करीब कर देती है, उदाहरणार्थ : जब केशव ने आँखें खोलीं तो क्या देखता है कि हार ने अपना स्थान बदल लिया है (28, 110), हातिम आवाज़ सुनते ही उस ओर को चल पड़ा। कुछ दूर जाकर देखता क्या है कि एक खूबसूरत नौजवान··· रो रहा है (25, 20), देखने लगी कि लोग क्या चन्दा देते हैं। अधिकांश लोग दो-दो, चार-चार आना ही दे रहे थे (69, 82)।

(2) **वर्तमान भविष्यत् काल के अर्थ में**—तब इस्तेमाल होता है जब कि व्यापार को उक्ति के क्षण के बाद व्यक्त करना चाहते हैं। यहाँ भविष्यत् काल के शाब्दिक सूचक भी हो सकते हैं, उदाहरणार्थ : मैं कल ही···साइनबोर्ड बनवाये डालता हूँ (1, 157), कल दादा को कहला भेजना है कि मैं जाता हूँ (69, 77), अब हटता है कि और लेगा ? (69, 62), जाओ, सीधे, नहीं तो मैं शोर मचाती हूँ (107, 125), मैं आधे घण्टे में आता हूँ फिर खाके कीर्तन में जाऊँगा (1, 129), कल मैं हरी दादा के प्रेस में जाकर फ़िल्म-कम्पनी के पैड और रसीद छपवा लेता हूँ और काम चालू कर देता हूँ (28, 127)।

अपूर्णतावाची आभ्यासिक वर्तमान

यह काल रूप प्रथम कृदन्त के विकारी रूपों तथा संयुक्त सहायक क्रिया के विकारी-तिङन्ती रूपों के मेल से बनता है। इसलिए अपूर्णतावाची आभ्यासिक वर्तमान पुल्लिग के दो लैंगिक रूपों (मुख्य और सहायक क्रिया), स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप (मुख्य और सहायक क्रिया) और 'है' क्रिया के चार तिङन्ती रूपों द्वारा व्यक्त होता है :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं लिख-ता (-ती) हो-ता (-ती) हूँ	हम लिख-ते (-ती) हो-ते (-ती) हैं
तू लिख-ता (-ती) हो-ता (-ती) है	तुम लिख-ते (-ती) हो-ते (-ती) हो
	आप लिख-ते (-ती) हो-ते (-ती) हैं
वह लिख-ता (-ती) हो-ता (-ती) है	वे लिख-ते (-ती) हो-ते (-ती) हैं

जैसा कि ऊपर उल्लेखित किया गया है यह रूप सीमित संकुचित प्रसंग से सम्बन्ध रखता है और बहुत ही कम पाया जाता है। वह मूर्त अकेले व्यापार को व्यक्त करता है, आम तौर पर वह समय में सीमित होता है। अपूर्णतावाची वर्तमान की तुलना में इस काल का रूप अकेले व्यापार की आभ्यासिकता पर ज़ोर देता है। यह रूप आम तौर पर काल के आश्रित वाक्यों में आता है, उदाहरणार्थ : जब लोग चाय पीते हैं वह बिना बुलाये पहुँच जाती है···(V, जनवरी 1963, 85), जब और रईस मीठी नींद के मज़े लेते होते हैं तो आप नदी के किनारे ऊषा का शृंगार देखते हैं (68, 17)।

पूर्णतावाची वर्तमान

यह काल रूप द्वितीय कृदन्त के विकारी रूपों (कर्तृसम्बन्धी और कर्म-सम्बन्धी रचना में) या द्वितीय कृदन्त के एक रूप में (भाववाचक रचना में) तथा 'है' क्रिया के तिङन्ती रूपों (कर्तृ-सम्बन्धी और कर्म-सम्बन्धी रचना में) या 'है' क्रिया के एक रूप (भाववाचक रचना में) के मेल से बनता है। इस तरह पूर्णतावाची वर्तमान पुल्लिग के दो विकारी लैंगिक रूपों और स्त्रीलिंग के एक विकारी लैंगिक रूप (कर्तृ-सम्बन्धी और कर्म-सम्बन्धी रचना में) या पुल्लिग के एक विकारी लैंगिक रूप (भाववाचक रचना में) और (क) 'है' क्रिया के चार तिङन्ती रूपों (कर्तृ-सम्बन्धी रचना में), (ख) 'है' क्रिया के दो तिङन्ती रूपों (कर्म-सम्बन्धी रचना में) और (ग) 'है' क्रिया के अविकारी रूप (भाववाचक रचना में) से व्यक्त होता है।

कर्तृ-सम्बन्धी रचना

मैं आया (आयी) हूँ	हम आये (आयी) हैं
तू आया (आयी) है	तुम आये (आयी) हो
	आप आये (आयी) हो
वह आया (आयी) है	वे आये (आयी) हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्म-सम्बन्धी रचना

एकवचन

मैं
तू
उस
हमने पत्र (चिट्ठी) लिखा (लिखी) है
तुम
आप
उन्होंने

बहुवचन

मैं
तू
उस
हमने पत्र (चिट्ठियाँ) लिखे (लिखी) हैं
तुम
आप
उन्हों

भाववाचक रचना

एकवचन तथा बहुवचन

मैं
तू
उस
हमने पत्र-पत्रों को (चिट्ठी-चिट्ठियों को) लिखा है
तुम
आप
उन्हों

पूर्णतावाची वर्तमान जिसका दूसरा नाम भी होता है—आसन्न भूत—विगत व्यापार को व्यक्त करता है जिसका परिणाम ज़्यादा बाद के काल अर्थ यानी वर्तमान काल में वास्तविक होता है। पूर्णतावाची वर्तमान के दोनों संयुक्त हिस्से व्यापार को अपने काल की छाया देते हैं, कृदन्त भूतकाल काल का अर्थ व्यक्त करता है, क्रिया वर्तमान काल का अर्थ देती है। तब 'है' क्रिया इस बात का संकेत देती है कि परिणामी अवस्था जो भूतकाल में उत्पन्न हुई थी, वर्तमान काल में भी है। स्वयं व्यापार (क) खत्म हो सकता है और वर्तमान काल में सिर्फ़ उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम होता है और (ख) समाप्त नहीं भी हो सकता है, जो कि भूतकाल में शुरू हुआ था और पूर्णता को प्राप्त किया, व्यापार वर्तमान काल में भी होता है (वह बैठा है—व्यापार शुरू हुआ और भूतकाल में पूर्णता को प्राप्त किया, लेकिन प्रक्रिया समाप्त नहीं हुई)।

पूर्णतावाची वर्तमान के व्यापार की समाप्ति द्वैध हो सकती है। एक तरफ़ तो व्यापार की समाप्ति उक्ति के क्षण का सहारा ले सकती है, चाहे वास्तव में कभी भी व्यापार पूर्ण हुआ हो, अर्थात् व्यापार वर्तमान क्षण के साथ किसी भी अन्तराल द्वारा टूट नहीं सकता, उदाहरणार्थ : 'वह उसके साथ कलकत्ता गयी है (36, 76)' —यहाँ पूर्णतावाची व्यापार के परिणाम से इस बात का संकेत मिलता है कि 'वह कलकत्ता में है', यही बात हमारे वाक्य द्वारा भी व्यक्त हो सकती थी : 'वह कलकत्ता में है'; 'यह तीतर लायी हूँ' (103, 192)—तीतर यहाँ है; 'हाँ-हाँ अभी थोड़ा पहले मेरे साथ ही आयी है' (1, 97)—वह यहाँ है; 'कहाँ है तुम्हारा बाबा ?' —'खेत पर गया है' (36, 22)। वर्तमान काल के साथ निकट सम्बन्ध स्पष्टतापूर्वक संयुक्त नामिक विधेय में होता है जिसमें पूर्णतावाची योजक होता है, उदाहरणार्थ : '···वह जोश अब ठण्डा हो चला है' (69, 86)—जोश ठण्डा है; 'चित्र लगभग तैयार हो गया है' (26, 47)—चित्र तैयार है; 'वह तो गाँव में है। और जवान भी हो गया है···' (29, 43)—जवान भी है।

उक्ति के क्षण तक व्यापार की असमाप्ति अपूर्ण व्यापार के विभिन्न क्रिया-विशेषणों जैसे आज, आजकल, अब, कभी, अकसर, कभी, हमेशा, सदैव, और काल क्रियाविशेषणों द्वारा समर्थित होती है। ये काल क्रियाविशेषण 'में' और 'से' परसर्ग समेत संज्ञाओं द्वारा व्यक्त होते हैं (पक्ष-सम्बन्धी क्रियाओं की हालत में परसर्ग 'तक' समेत), उदाहरणार्थ : ···तुमने आजकल घर में क्या उपद्रव मचा रखा है ? (69, 146), आज चाचा ने मुझे मारा है (75, 152), ···लेकिन अब हमने गुलामी की ज़ंजीरों को तोड़ने का फ़ैसला कर लिया है (69, 35), अभी तेरा काम समाप्त कहाँ हुआ है ! (75, 149), इस मूल्य का ज्ञान कब से हुआ है ?—जब से तुम मुझे छोड़कर आयी हो (36, 110), अकसर ज़मींदारों ने तो लगान वसूल करने से इन्कार कर दिया है। अब पुलिस उनकी मदद पर भेजी गयी है (69, 10), अदालत का फ़ैसला कभी दोनों फ़रीकान ने पसन्द किया है कि तुम्हीं करोगे ? (69, 76), ···इस तरह के लोगों के प्रति नीला ने हमेशा अपनी विरक्ति ही दिखायी है (112, 11), तुमने सदैव मेरी आज्ञाओं का पालन किया है, इस समय निराश न करना···(69, 93), एक महीने से देश की हालत बदल गयी है (69, 173), कितने प्राइवेट कॉलिज पिछले चन्द महीनों में खुले हैं···(112, 33), बाबा आज बहुत देर तक एक साधु से बातें करता रहा है (36, 8)।

दूसरी तरफ़ व्यापार की कालावधि जिसमें पूर्णतावाची वर्तमान हो रहा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उक्ति के क्षण तक समाप्त हो सकती है। इस स्थिति में पूर्णतावाची वर्तमान का परिणामी अर्थ कम हो जाता है और पूर्ववर्तिता का अपना अर्थ प्रथम स्थान पर आता है। 'है' सहायक क्रिया इस बात की ओर संकेत करती है कि व्यापार जो कि उक्ति के क्षण से पहले समाप्त हो गया है, वर्तमान अर्थ के साथ कोई सम्बन्ध रख सकता है। यहाँ, आम तौर पर, पूर्णतावाची वर्तमान में पूर्ण काल के क्रिया-विशेषण आ सकते हैं, उदाहरणार्थ : आयशा को लग रहा था मानो वह घटना कल ही हुई है (58, 17), पिछले वर्ष उसके घर वाले का स्वर्गवास हो गया है और उसने दूसरा विवाह कर लिया है (36, 23), वहाँ पहुँचा तो मालूम हुआ कि पाँच मिनट पहले निकल गये हो (13, 64)।

यहाँ यह कहना उचित होगा कि आधुनिक हिन्दी में पूर्णतावाची वर्तमान और अंग्रेज़ी भाषा के 'प्रेज़ेंट परफेक्ट' में यही अन्तर है। अंग्रेज़ी में पूर्ण समय के क्रिया-विशेषण का प्रयोग सम्भव नहीं है।

असमापक क्रियाओं में, विशेषकर जब स्थैतिक क्रियाएँ हों, वर्तमान में अवस्था का अर्थ मुख्य है जिसे व्यापार का कर्ता (या कर्म) इसलिए अनुभव करते हैं कि व्यापार ने उक्ति के क्षण से पहले पूर्णता तो प्राप्त कर ली है, लेकिन उक्ति के समय भी चल रहा है। इस प्रकार अगर पूर्ण व्यापार की हालत में व्यापार-प्रक्रिया होती है तो वहाँ व्यापार-अवस्था होती है जो कि व्यापार की कार्यान्विति के परिणाम-स्वरूप पैदा होती है।

इस तरह आधुनिक हिन्दी में पूर्णतावाची वर्तमान का व्यापार (क) उक्ति के क्षण में टेक ले सकता है अर्थात् उसकी एक तरफ़ तक ही पहुँच सकता है और दूसरी तरफ़ जारी नहीं रह सकता, जो कि अपूर्णतावाची वर्तमान की हालत में होता है; (ख) उक्ति के क्षण समाप्त हो सकता है, और व्यापार की समाप्ति और उक्ति के क्षण के बीच एक अन्तराल रह सकता है, जिसकी शुरुआत पूर्ण काल के क्रियाविशेषण द्वारा व्यक्त की जाती है और (ग) परिणामी अवस्था की हैसियत से हो सकता है जो कि व्यापार की उक्ति के क्षण तक पूरी होती है। परिणाम-स्वरूप पूर्णतावाची वर्तमान के निम्नलिखित अर्थ हो सकते हैं : (1) पूर्णतावाची (शुद्ध पूर्ण वर्तमान), (2) समावेशी अर्थात् जिसमें उक्ति का क्षण भी शामिल हो और (3) पूर्णकालिक, जो कि पूर्व० (अ)+, सी०+, पूर्ण०+, अके०+चिह्नों द्वारा व्यक्त होता है।

ये चिह्न अलग-अलग स्तर पर पूर्णतावाची वर्तमान के अर्थ देते हैं। ऊपर उक्ति के क्षण के साथ इस काल के रूप के तीन प्रकारों के सम्बन्ध के बारे में उल्लेख किया गया था और पूर्णकालिक अर्थ में पूर्णतावाची छाया के कम होने के बारे में भी बताया गया था। यहाँ व्यापार की सम्भव पौनः पुनिकता के बारे में और कहना चाहिए जो कि एकल पृथक्कृत व्यापारों का 'गुच्छा' होता है। पौनः पुनिकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब प्रकट होती है जब अलग-अलग पौन: पुन्यवाचक क्रियाविशेषण होते हैं (अकसर, हमेशा, कई बार आदि), या उद्देश्य या प्रधान कर्म होता है जो कि बहुवचन में आते हैं, उदाहरणार्थ : कलकत्ता तो कई बार गया हूँ (36, 133), अकसर ज़मींदारों ने तो लगान वसूल करने से इन्कार कर दिया है (69, 10), ···इस तरह के लोगों के प्रति नीला ने हमेशा अपनी विरक्ति ही दिखायी है (112, 11), उन्होंने बरसों तुम्हारा नमक खाया है, तुम्हारी रोटियाँ तोड़ी हैं (29, 55), नारायण ने तुमको बच्चे दिये हैं···(68, 170), इस अपनी बीमारी में भी मैंने निरन्तर हास्य-व्यंग्य की कहानियाँ लिखी हैं (12, 6)।

आइये, अब पूर्णतावाची वर्तमान के सब अर्थ क्रमानुसार देखें :

(1) **शुद्ध पूर्णतावाची अर्थ** जो कि खुद प्रत्यक्ष परिणामी और अप्रत्यक्ष परिणामी में बाँटा जा सकता है।

प्रत्यक्ष परिणामी अर्थ में व्यापार के कर्ता या कर्म के प्रत्यक्ष परिवर्तन के साथ सम्बन्ध रहता है, अर्थात् व्यापार करने के परिणामस्वरूप कर्ता या कर्म की एक नयी अवस्था हो जाती है, उदाहरणार्थ : ऐसा जान पड़ा मानो उसके जन्म-जन्मान्तर के क्लेश मिट गये हैं; वह चिन्ता और माया के बन्धनों से मुक्त हो गया है (69, 60), मैं समझता हूँ कि सस्ते में छूट गये (36, 19), समझू ने बैल को जान-बूझकर मारा है (69, 163), उसने एक शहर बसाया है···(25, 5), मुझे तो सख़्त चोट आयी है।

कर्ता या कर्म की अवस्था के परिवर्तन के साथ नयी स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है जो कि व्यापार के पूरा होने के परिणामस्वरूप होती है। उदाहरणार्थ : लेकिन औद्योगिक क्रान्ति के बाद पिछले डेढ़ सौ वर्षों में स्थिति पूर्णत: बदल गयी है (II, 20-5-1968, 5), भारत के श्रमिक संघों की दशा में गत वर्षों में सुधार की अपेक्षा निरन्तर पतन हुआ है। श्रम संघों में सुदृढ़ता की अपेक्षा कमज़ोरी आती गयी (II, 20-5-1968, 20)।

पूर्णतावाची वर्तमान का प्रत्यक्ष परिणामी अर्थ मुख्यत: मूर्त शारीरिक प्रभाव की क्रियाओं के ऊपर तथा स्थानान्तरणवाचक, गतिवाचक, हरणवाचक व हस्तगण-वाचक, वचनसूचक तथा अस्वीकारसूचक, आरम्भवाचक तथा समापकवाचक क्रियाओं के ऊपर आधारित होता है, उदाहरणार्थ : दुष्ट ने उनकी ओर बन्दूक तानी है (69, 178), क्या किया तुमने उसको ? उसका शव नदी में बहा दिया है (36, 11), ···वह किसी ऊँचे मीनार पर चढ़ गये हैं (69, 114), आपके दीवान साहब ने धन्धा बढ़िया पकड़ा है (147, 46), पाज़ेब उसने चुन्नू को दी है (44, 54), अम्माँ ने आज आरम्भ किया है (69, 84)।

अप्रत्यक्ष परिणामी अर्थ कर्ता या कर्म की नयी स्थिति के उत्पन्न होने से सम्बन्धित नहीं है। यहाँ व्यापार कर्ता या कर्म द्वारा नयी सूचना, नया अनुभव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनाने से सम्बन्धित है जो कि वर्तमान में भी अपना अर्थ सुरक्षित रखते हैं। इसी कारण यहाँ मुख्यतः चिन्तनवाचक क्रियाएँ, भाव-चेतनावाचक, कथनवाचक और विभिन्न सम्बन्धवाचक क्रियाएँ होती हैं, उदाहरणार्थ : आखिर कुछ सोचा है, काम कैसे चलेगा (69, 29), मैंने एक डरावना सपना देखा है (103, 53), जैसा कि मैंने आपकी बातों से जाना है···(147, 45), किसी ने बहुत ठीक कहा है कि··· (64, 37), मैं समझ गयी हूँ कि मेरा यह व्यवहार ठीक नहीं है (36, 91), सुना है कि तुम्हारी आँखें खराब हो गयी हैं (36, 102), ···किसी ने इधर चार महीने से पेट-भर रोटी खायी है? (69, 69), दस्तयेव्स्की ने भी उपन्यासों के अतिरिक्त कहानियाँ लिखी हैं···(64, 23), तुमने कहाँ तक उसे चाहा है? (28, 145), तुम सब भाइयों को मैंने बहुत सताया है (69, 77)।

(2) **समावेशी** अर्थ जो कि मुख्यतः दशासूचक क्रियाओं के साथ सम्बन्धित होता है, जो कि वर्तमान काल में कर्ता की दशा को बताती हैं, जो कि व्यापार की कार्यान्विति के परिणामस्वरूप पैदा हुई है, उदाहरणार्थ : हम इस बार पहले से बैठे हैं (17, 222), हम 'ग्रेंड होटल' में ठहरे हैं (36, 64), मैं सारी रात जागा हूँ (54, 49), डाकू जाग उठे हैं हर ओर (156, 19), अब मैं भी थक गया हूँ (29, 59), सोचा शायद तू सो गया है (103, 192), पराये मर्दों के साथ सोयी हूँ (103, 141), ज़रा आकाश की तरफ़ देखो, कैसी आँधी उठी है (75, 87), सुखराम घायल लेटा है (103, 219)।

समावेशी अर्थ विशेषकर तब स्पष्टतः प्रकट होता है, जब पूर्णतावाची वर्तमान के रूपों के साथ वर्तमान के अपूर्णतावाची तथा संतत रूप इस्तेमाल होते हैं, उदाहरणार्थ : सिकन्दर का सेनानी फ़िलिपोस झेलम के किनारे बैठा है और अभी तक सिकन्दर के नाम पर राज्य कर रहा है (156, 31)।

फिर भी पूर्णतावाची वर्तमान के इस अर्थ को शुद्ध वर्तमान काल के साथ समान नहीं मानना चाहिए चूँकि अपूर्णतावाची वर्तमान के रूप मुख्यतः आवर्ती, नियमित, सामान्यकृत व्यापार को व्यक्त करते हैं, उदाहरणार्थ : ···वे बोलते कैसे हैं, बैठते कैसे हैं, चलते कैसे हैं, यह सब मुझे बताएँ (122, 30), ग्यारह बजे जब कुर्सी पर बैठता हूँ तो शाम के छः बजे तक सिर उठाने की फ़ुर्सत नहीं मिलती (59, 19)।

मूर्त एकल व्यापार को व्यक्त करते समय अपूर्णतावाची वर्तमान के रूप व्यापार-प्रक्रिया को भी व्यक्त करते हैं, लेकिन व्यापार-दशा नहीं, उदाहरणार्थ : थोड़ी देर में ख़ाली हो जायेगी तब तक मैं आपके पास बैठ जाता हूँ (59, 27)।

इस तरह, अपूर्णतावाची वर्तमान के रूप परिणामी दशा को व्यक्त नहीं करते चूँकि उनका व्यापार अपूर्ण होता है और पूर्णतः विकसित नहीं हो पाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(3) **पूर्णकालिक** अर्थ जो कि स्वयं पूर्णकालिक तथा पूर्णभूत में बाँटा जा सकता है।

पूर्णकालिक अर्थ आम तौर पर पूर्णकाल के क्रियाविशेषणों की उपस्थिति में प्रकट होता है, उदाहरणार्थ : कल माँ और बाबा में बातचीत हुई है (36, 8), अभी परसों घी आया है ! (69, 144), पिछले वर्ष उसके घर वाले का स्वर्गवास हो गया है और उसने दूसरा विवाह कर लिया है (36, 23), भारत सरकार ने जुलाई 1972 में···नये मार्गदर्शक सिद्धान्त जारी किये हैं (153, 20), इसे कल ही स्कूल में डाला है (109, 82)।

पूर्णतावाची वर्तमान का पूर्णभूत का अर्थ उन स्थितियों में होता है, जब उसका व्यापार दूसरे सम्पन्न व्यापार का पूर्ववर्ती होता है, उदाहरणार्थ : वहाँ पहुँचा तो मालूम हुआ कि पाँच मिनट पहले निकल गये हो (13, 64), रामनाथ को कलकत्ता आये हुए दो महीने से ऊपर हो गये हैं (65, 155), मैंने थोड़ी ही देर पहले उन्हें देखा है (156, 43), मुकाबला कीजिये—थोड़ी ही देर पहले मैंने उन्हें घोड़े पर जाते देखा था (156, 45)।

'होना' क्रिया संयोजक क्रिया की हैसियत से पूर्णतावाची वर्तमान में लक्षण की पूर्णता का संकेत देती है जो कि नामिक हिस्से में होता है। इस तरह लक्षण की पूर्णता उक्ति के क्षण के लिए परिणामी अर्थ रखती है अर्थात् पूर्णतावाची योजक मुख्यतः समावेशी अर्थ व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : बाबूजी विश्वास संसार से न लुप्त हुआ है (69, 101), स्त्री, पुरुष के लिए उत्पन्न हुई है (75, 105), ···यह गढ़ा तब जाकर तैयार हुआ है (69, 192), ···ग्यारह लोग ज़ख्मी हुए हैं (IV, 18-6-1974)।

पूर्णतावाची आभ्यासिक वर्तमान

यह काल रूप द्वितीय कृदन्त के विकारी रूप तथा संयुक्त वर्तमान सहायक क्रिया के विकारी-तिङन्ती रूपों के मेल से बनता है। यहाँ कृदन्तों और 'है' क्रिया के रूपों के साथ (संयुक्त सहायक क्रिया में) वही परिवर्तन होता है जो कि पूर्णतावाची वर्तमान में होता है :

कर्तृ-सम्बन्धी रचना

मैं बैठा (-ठी) हो-ता (-ती) हूँ	हम बैठे (-ठी) हो-ते (-ती) हैं
तू बैठा (-ठी) हो-ता (-ती) है	तुम बैठे (-ठी) हो-ते (-ती) हो
	आप बैठे (-ठी) हो-ते (-ती) हैं
वह बैठा (-ठी) हो-ता (-ती) है	वे बैठे (-ठी) हो-ते (-ती) हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्म-सम्बन्धी रचना

एकवचन

मैं
तू
उस
हम ने पत्र (चिट्ठी) लिखा (लिखी) होता (होती) है
तुम
आप
उन्हों

बहुवचन

मैं
तू
उस
हम ने पत्र (चिट्ठियाँ) लिखे (लिखी) होते (होती) हैं
तुम
आप
वे

भाववाचक रचना

एकवचन तथा बहुवचन

मैं
तू
उस
हम ने पत्र-पत्रों को (चिट्ठी-चिट्ठियों को) लिखा होता है
तुम
आप
उन्हों

यह काल रूप सीमित विशेष प्रसंग से सम्बन्ध रखता है और बहुत ही कम पाया जाता है। यह एकल पृथक्कृत व्यापारों के 'गुच्छे' को व्यक्त करता है जिसकी निर्धारित और अनिश्चित कालान्तरों में पुनरावृत्ति होती है। चूँकि यहाँ आम तौर पर दशासूचक क्रियाएँ होती हैं, इसलिए इस रूप के लिए मुख्यतः समावेशी अर्थ स्वाभाविक है, उदाहरणार्थ : सन्ध्या के समय इतनी भीड़ होती है कि एक-एक कुर्सी पर दो-दो व्यक्ति बैठे होते हैं (7, 74), मगर ताड़ और खजूर का यह रस यदि सूर्योदय के पहले ही पिया जाये, जबकि उसमें फेन नहीं आया होता तो बड़ा उपकारी होता है (50, 57-58), वे इलाहाबादी सोसायटी के नवीन समाचारों से भरे होते हैं (69, 95), कई बार ऐसा होता है कि उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाय पर कुछ मित्र बुला रखे होते हैं, पर वह मैटिनी देखने चला जाता है (9, 94), पर ऊपर उसकी डालें फैली होती हैं (50, 94)।

जब द्वितीय कृदन्त के पक्ष-सम्बन्धी रूपों को ('चुकना' रंजक क्रिया के साथ) इस्तेमाल करते हैं तो सापेक्ष पूर्ववर्तिता की छाया मुख्य बन जाती है, उदाहरणार्थ : ···और जब आधे घण्टे बाद अचार लेकर लौटती है, तो मैं उठ चुका होता हूँ··· (9, 85), लेकिन फल सड़ चुके होते हैं (9, 85), ···हिम युग तब आरम्भ होता है कि जब उत्तरी ध्रुवीय महासागर की बर्फ़ पिघल चुकी होती है (88, 90)।

पूर्णतावाची स्थैतिक वर्तमान

यह काल रूप द्वितीय कृदन्त के विकारी रूपों तथा संयुक्त पूर्णतावाची सहायक क्रिया के विकारी-तिङन्त रूपों के मिलन से बनता है। यहाँ कृदन्तों और 'है' क्रिया के रूपों के साथ (संयुक्त सहायक क्रिया में) वही परिवर्तन होते हैं जो कि पूर्णतावाची वर्तमान में होते हैं :

कर्तृ-सम्बन्धी रचना

मैं आया (आयी) हुआ (हुई) हूँ	हम आये (आयी) हुए (हुई) हैं
तू आया (आयी) हुआ (हुई) है	तुम आये (आयी) हुए (हुई) हो
	आप आये (आयी) हुए (हुई) हैं
वह आया (आयी) हुआ (हुई) है	वे आये (आयी) हुए (हुई) हैं

कर्म-सम्बन्धी रचना

एकवचन

मैं
तू
उस
हम ने एक आदमी (एक औरत) रखा (रखी) हुआ (हुई) है
तुम
आप
उन्हों

बहुवचन

मैं
तू
उस
हम ने दो आदमी (दो औरतें) रखे (रखी) हुए (हुई) हैं
तुम
आप
उन्हों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाववाचक रचना

एकवचन तथा बहुवचन

मैं
तू
उस
हम ने आदमी-आदमियों को (औरत-औरतों को) रखा हुआ है।
तुम
आप
उन्हों

पूर्णतावाची स्थैतिक वर्तमान संयुक्त नामिक विधेय का व्याकरणिक समनाम समझा जा सकता है जो कि संयुक्त द्वितीय कृदन्त तथा 'है' योजक से बनता है। इस कारण, इसके बावजूद कि यह रूप सीमित विशेष प्रसंग से सम्बन्ध रखता है, यह अकसर पाया जाता है। यह बात उन रूपों की विशेषता है जो कि कर्तृ-सम्बन्धी रचना को बनाते हैं, उदाहरणार्थ : भाई, तारासिंह भी इस मेले में आया हुआ है (V, जनवरी, 1963, 92), ···उनकी आँखें डबडबाई हुई हैं (69, 275), इतनी घटा उमड़ी हुई है, किन्तु बरसने का नाम ही नहीं लेती (69, 231), दुकान खुली हुई है, दस-पांच मित्र जमे हुए हैं (69, 167), ···संसार के कलाकार कई किस्मों में बँटे हुए हैं (79, 34)।

कर्म-सम्बन्धी और भाववाचक रचना को बनाने वाले रूप बहुत कम पाये जाते हैं, उदाहरणार्ण : सरकार ने कई योजनाएँ जारी की हुई हैं (IX, 18-10-1962), उसने मुझे रखा हुआ है (28, 151), ···राय साहब को बहुत दिन से बिरादरी ने च्युत किया हुआ है··· (3, 54), क्या अरब देशों ने इनके प्रति विरोधी रुख अपनाया हुआ है? (IX, 9-7-1971)।

पूर्णतावाची वर्तमान के विपरीत यह रूप पूर्णतावाची और समावेशी अर्थ रखता है, व्यापार उक्ति के क्षण तक पहुँच कर कर्ता या कर्म की दशा के रूप में उक्ति के क्षण पर भी जारी रहता है। जब इस रूप का संयुक्त नामिक विधेय से सम्बन्ध होता है तो व्यापार-दशा वर्तमान काल से सम्बन्ध रखती है।

संतत वर्तमान

यह काल रूप संतत कृदन्त के लैंगिक विकारी रूप तथा 'है' क्रिया के तिङन्ती रूपों के मेल से बनता है। इसलिए, संतत वर्तमान पुल्लिग के दो विकारी रूप, स्त्रीलिंग के एक विकारी रूप और 'है' क्रिया के चार तिङन्ती रूपों से व्यक्त होता है :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं लिख रहा (रही) हूँ	हम लिख रहे (रही) हैं
तू लिख रहा (रही) है	तुम लिख रहे (रही) हो
	आप लिख रहे (रही) हैं
वह लिख रहा (रही) है	वे लिख रहे (रही) हैं

निषेधात्मक वाक्यों में जब सहायक क्रिया 'है' को छोड़ देते हैं तो यह रूप चार विकारी रूपों द्वारा व्यक्त होता है :

मैं नहीं लिख रहा (रही)	हम नहीं लिख रहे (रही)
तू नहीं लिख रहा (रही)	तुम नहीं लिख रहे (रही)
	आप नहीं लिख रहे (रही)
वह नहीं लिख रहा (रही)	वे नहीं लिख रहे (रही)

निषेधात्मक वाक्यों में सहायक क्रियाओं का छोड़ना एक संरचनात्मक तत्त्व है, लेकिन जैसा कि अपूर्णतावाची वर्तमान की स्थिति में होता है, व्याकरणिक मानक नहीं है, चूँकि सहायक क्रिया रह भी सकती है, जो कि इस रूप में अपूर्णतावाची वर्तमान की अपेक्षा काफ़ी अक्सर होता है, उदाहरणार्थ : एक पैसे में लूट नहीं रहा हूँ (5, 111), क्या, तुझे चैन नहीं आ रहा है ? (103, 196), प्यारी जी नहीं रही है, दिन काट रही है (103, 181)।

इस रूप का सामान्य अर्थ सह०+, सी+०, अके०+, प्र०+चिह्नों द्वारा व्यक्त होता है। इन चिह्नों में मुख्य, बेशक, प्र० + है। अपूर्णतावाची वर्तमान के विपरीत संतत वर्तमान व्यापार को उसके प्रत्यक्ष विकास में व्यक्त करता है। तब संतत व्यापार, आम तौर पर, उक्ति के क्षण पर ही जारी रहता है, जबकि अपूर्णतावाची वर्तमान का व्यापार उक्ति के क्षण के साथ प्रत्यक्ष रूप से मेल नहीं रख सकता, उदाहरणार्थ : (क) क्या करते हैं ? वीणा बजाता हूँ (28, 36), उनके साथ के स्वयंसेवक क्या कर रहे हैं ? खड़े हैं (69, 45); पण्डित लच्छीराम बैठे हैं। पढ़ा रहे हैं। वे किताबों से कम पढ़ाते हैं, मौखिक अधिक (102, 27); (ग) दो बच्चे हैं, जो स्कूल चले जाते हैं (111, 102), मैं कांग्रेस के जलसे में जा रही हूँ (69, 21)।

दूसरी तरफ़ संतत वर्तमान, आम तौर पर, एकल व्यापार व्यक्त करता है। यह सामान्यकृत व्यापार व्यक्त नहीं कर सकता, उदाहरणार्थ : (क) सभापति ने कहा—एक बहन इस पैसे के दाम पाँच रुपये दे रही है (69, 23)—बनिया भी दादा कहने से गुड़ देता है (54, 5); (ख) पीढ़ियों तक बाक़ायदा यही सिलसिला चलता है···(28, 15)—पिक्चर चलोगी ? हम सभी चल रहे हैं (111, 106)।

संतत वर्तमान तथा अपूर्णतावाची वर्तमान के काल अर्थ समान हो सकते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब दोनों उस व्यापार को व्यक्त करते हैं, जो कि उक्ति के क्षण के साथ मेल खाता है, उदाहरणार्थ : (क) बिजलियाँ कड़कती हैं और मूसलाधार वर्षा हो रही है (111, 25); (ख) वह रो रहा है···तुम क्यों रोते हो (103, 189); (ग) आप ही लोगों के भरोसे से जी रही हूँ (111, 83)—अभी तक हम तुम्हारे बालक जीते ही हैं (69, 76)।

इस तरह संतत वर्तमान एक मूर्त प्रक्रियात्मक व्यापार है, जो समय में सीमित होता है और उक्ति के क्षण पर भी जारी रहता है। उक्ति के क्षण की कालावधि विभिन्न हो सकती है : (क) व्यापार उक्ति के क्षण के साथ शत-प्रतिशत मेल खा सकता है और (ख) उक्ति के क्षण की सीमा के बाहर जा सकता है, जो कि उससे पहले शुरू होकर, उक्ति के क्षण पर भी जारी रह सकता है। इसी कारण संतत वर्तमान को दो प्रकारों में बाँट सकते हैं :

(1) उक्ति के प्रत्यक्ष क्षण का वास्तविक संतत वर्तमान, उदाहरणार्थ : दूर कहीं घण्टे बज रहे हैं (103, 144), आखिर कहाँ जा रहे हैं आप ? ज़रा आगे जा रहा हूँ (75, 225), क्या देख रहे हो ? (111, 97), न मैं कुछ भी नहीं सुन रही। किन्तु वह सुन रही है—वह नहीं जो गिरीश कह रहा है, किन्तु वह जो नहीं कहा जा रहा (52, 104), नहीं, माँ, मैं तुम्हें नहीं कह रही। मैं तो औरों की बात कर रही हूँ (75, 116)।

(2) विस्तारित व्यापार का वास्तविक संतत वर्तमान जो न केवल उक्ति के क्षण के साथ मेल ही खाता बल्कि काफ़ी बड़े काल-अर्थ को प्रभावित करता है जिसे काल के क्रियाविशेषणों द्वारा व्यक्त किया जा सकता है और जो काल सीमाओं को रख भी नहीं सकता, उदाहरणार्थ : (क) पन्द्रह साल से तो मैं तुम्हें देख रहा हूँ (107, 39), ···मैं अर्से से कराची में रह रहा हूँ (3, 8), मैं तो कब से कह रही हूँ···(111, 104), तेरह साल की उम्र से कर रही हूँ (111, 120), सवा घण्टे से तो वह भी देख रहा है (28, 154); (ख) जब यह जाहिर है कि कांग्रेस सरकार से दुश्मनी कर रही है तो कांग्रेस की मदद करना सरकार के साथ दुश्मनी करना है (69, 25), शोभा इन दिनों रिसर्च कर रही है (111, 66), आजकल वह मेरा इलाज कर रहा है (103, 217)।

संतत व्यापार का एक प्रकार संतत रूपबद्ध वर्तमान है जो कि उस व्यापार को व्यक्त करता है जो कि मूर्त, लेकिन समय में असीमित होता है। अपूर्णतावाची वर्तमान के विपरीत यहाँ व्यापार के एकल प्रक्रियात्मक प्रकृति पर मुख्य बल होता है।

वास्तविक संतत वर्तमान के साथ रूपबद्ध संतत वर्तमान संलग्न होता है, जो कि मूर्त व्यापार को व्यक्त करता है, लेकिन रूपबद्ध अपूर्णतावाची वर्तमान के विपरीत यह व्यापार के काल में सीमित होता है। हालाँकि व्यापार सिर्फ़ रूपबद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तौर पर ही वर्तमान के अर्थ के साथ सम्बन्ध रखता है, लेकिन लगता है जैसे व्यापार उक्ति के क्षण के साथ हो रहा है। दर्शक, पाठक या श्रोता जैसे कि हो रहे व्यापार में हिस्सा ले रहे हों। यहाँ, निम्नलिखित प्रकारों में अन्तर जानना चाहिए :

(1) **'नाटक सम्बन्धी'** संतत व्यापार जो कि नाटकीय रचना के कार्य-व्यापार के ऊपर लेखक की टिप्पणी द्वारा व्यक्त होता है। 'नाटक-सम्बन्धी' संतत वर्तमान का व्यापार नाटक के संगत व्यापार के क्षणों के साथ मेल ही नहीं खाता, बल्कि ऐसा लगता है जैसे कि दर्शकों के सामने हो रहा हो और मौजूदगी का प्रभाव पैदा करता है, उदाहरणार्थ : सभी राक्षसनियाँ सीता को तरह-तरह की यातना देने लगीं, हनुमान जी यह सब देख रहे हैं (138, 48), युवराज सुमन अकेले खड़े हैं। उनके सम्मुख राजमहल का संगमरकर से जड़ा आँगन विविध रंगों से भीगकर, बरसात के सायंकालीन आकाश के समान दिखायी दे रहा है। चारों ओर से सुगंध की लपटें-सी उठ रही हैं। युवराज एकटक दृष्टि से इस दृश्य को देख रहे हैं (38, 27), रावण बाण छोड़ता है। सर्पों की तरह बाण जा रहे हैं (138, 55), नागरिकों की एक भीड़ एकत्र है और शोरगुल हो रहा है (88, 10)।

(2) **'उक्ति सम्बन्धी'** संतत वर्तमान जो कि किसी लेखक के शब्दों के साथ परिचय कराता है जो कि उक्ति के क्षण के साथ अधिकतम करीब होता है और यह भावना पैदा करता है जैसे कि पाठक भी उसमें मौजूद है, उदाहरणार्थ : दूसरे अध्याय में गीता की शिक्षा का आरम्भ होता है और शुरू में ही भगवान जीवन के महासिद्धान्त बता रहे हैं (122, 17)।

बहुत ही कम स्थितियों में, मुख्यतः कारबारी और वैज्ञानिक भाषा में, संतत वर्तमान उस व्यापार को व्यक्त करता है जो कि उक्तियों के क्षण के साथ मेल नहीं खाता, बल्कि काल के क्षण के साथ मेल खाता है जो कि दूसरे व्यापार द्वारा निश्चित होता है। यहाँ व्यापार निरपेक्ष नहीं बल्कि सापेक्ष होता है, उदाहरणार्थ : ···भेजने वाले को यह स्वीकार करना पड़ता है कि वह जिस वस्तु को भेज रहा है उसके भेजने के लिए उसके पास एक माँग आयी है (101, 135), उसे यह कदापि नहीं सोचना चाहिए कि शिकायत करने वाले असत्य लिख रहे हैं अथवा केवल कुछ कटौती ऐंठ लेने को ऐसा लिख रहे हैं (101, 423), जब किसी व्यक्ति को कोई निश्चित पता उस स्थान का न हो जिस स्थान को वह जा रहा है ···(101, 148)।

कुछ वाक्य जिनका विधेय वर्तमान संतत द्वारा व्यक्त होता है, संरचनात्मक तौर पर उन वाक्यों से मेल खाते हैं जिनका विधेय अपूर्णतावाची वर्तमान द्वारा व्यक्त होता है यानी अवास्तविक व्यापार को व्यक्त करता है। ऐसी समानता सिर्फ़ बाह्य तौर पर ही होती है चूँकि संतत वर्तमान उस व्यापार को व्यक्त करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जो कि उक्ति के समय हो रहा हो और मौजूदगी का प्रभाव इस तरह देता है, उदाहरणार्थ :

अपूर्णतावाची वर्तमान	**संतत वर्तमान**
मान लीजिये कि आप प्रथम 12 को चुनते हैं (35, 23),	मान लीजिये कि एक खरगोश और एक कछुए की दौड़ हो रही है (35, 8),
मान लीजिये कि आदिवासी केवल तीन तक ही गिगती करना जानते हैं (35, 89)।	मान लो, कि हम 16 पृष्ठ वाले पत्र को पढ़ रहे हैं (101, 99)।

'होना' क्रिया संतत वर्तमान में अस्तित्व क्रिया का अर्थ आंशिक रूप से खो बैठती है और संतत क्रिया का अर्थ व्यक्त करती है, उदाहरणार्थ : आपका सर्वनाश हो रहा है (69, 70), बाहर अब भी वर्षा हो रही है (111, 25), ···उस वस्तु-समूह के उत्पादन में और वृद्धि नहीं हो रही है (153, 23)।

संयोजक क्रिया की हैसियत से 'होना' क्रिया संतत वर्तमान में उक्ति के क्षण के साथ उस लक्षण के सम्बन्ध का संकेत करती है जो कि नामिक हिस्से द्वारा व्यक्त होता है, तब लक्षण स्थैतिक नहीं, बल्कि गतिक होता है, उदाहरणार्थ : वह रुस्तम खाँ का दुःख देखकर खुश हो रही है (103, 142), ···राजपूत सेना··· रणांगन में अग्रसर हो रही है (4, 74), ···आज का युद्ध ही निर्णायिक युद्ध हो रहा है (4, 76)।

संतत वर्तमान के रूपों का प्रत्यक्ष प्रयोग, जबकि व्यापार वर्तमान कालार्थ की सीमा से बाहर नहीं जाता, हो सकता है और संतत वर्तमान के रूपों का लाक्षणिक प्रयोग भी हो सकता है जबकि रूप के कालार्थ और उक्ति के क्षण में उसके सम्बन्ध में अन्तर होता है।

संतत वर्तमान के लाक्षणिक प्रयोग के अपने प्रकार होते हैं :

(1) **'ऐतिहासिक' संतत वर्तमान**—जो कि भूतकाल में व्यापार को व्यक्त करने के काम आता है और व्यापार एकल प्रक्रियात्मक कार्य के तौर पर व्यक्त होता है, जो कि गति और अभिव्यंजना में भिन्न होता है, ऐसा लगता है कि आपकी आँखों के सामने सब कुछ हो रहा हो, उदाहरणार्थ : मैंने देखा कि मैं बहुत दूर तक एक निर्जन जंगल में निकल गया हूँ। सामने से एक शेर आ रहा है (142, 142), मुझे ऐसा मालूम हुआ कि कोई स्त्री···भीतर घुस आयी है···वह दबे पाँव···धीरे-धीरे मेरी ओर बढ़ रही है (65, 200), मैंने देखा कि मैं जंगल में चली जा रही हूँ (103, 53)।

(2) **भविष्यत् काल के अर्थ में संतत वर्तमान**—जो कि उक्ति के क्षण के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद के व्यापार को भविष्यत् में व्यक्त करने के काम में आता है। यहाँ दो प्रकार पाये जाते हैं : (क) संदिग्ध व्यापार का संतत वर्तमान और (ख) भविष्यत् काल के व्यापार का संतत वर्तमान।

संदिग्ध व्यापार का संतत वर्तमान यह बात व्यक्त करता है कि व्यापार उक्ति के क्षण पर शुरू हो सकता है, परन्तु उक्ति के क्षण के बाद भी शुरू हो सकता है, यहाँ व्यापार को करने की इच्छा का अर्थ पहले स्थान पर आता है, उदाहरणार्थ : इस समझौते की दो प्रतियाँ आपको भेज रहे हैं (101, 445), मैंये सुना है कि तुम क़रीम से शादी कर रही हो (28, 141), हम धर्म-संग्राम में जा रहे हैं (69, 78), सरकार वहाँ पर खुदाई का काम शुरू कर रही है (28, 195), कलकत्ता वे पहली बार जा रहे हैं (101, 436)।

संतत वर्तमान के इस पुन: अर्थनिरूपण के आधार पर 'जा रहा' व्याकरणिक रूप उत्पन्न हुआ जो कि सुपाईन (अविकारी क्रियार्थक संज्ञा) के साथ मिलकर व्यापार को पूर्ण करने की इच्छा व्यक्त करता है, जो कि सुपाईन द्वारा लक्षित होता है, उदाहरणार्थ : वह कुल्लू के किसी गाँव में रहने जा रही थी (52, 135), ...मैं जो कुछ करने जा रहा हूँ... (71, 116)।

भविष्यत् व्यापार का संतत वर्तमान यह बात बताता है कि व्यापार उक्ति के क्षण के बाद किसी भी कालावधि में होगा, जो कि विशेषकर स्पष्टत: भविष्यत् काल के शाब्दिक चिह्नों की उपस्थिति में प्रकट होता है, उदाहरणार्थ : तो रानी, कल तुम आ रही हो न चिट्ठी लेके (1, 13), मिस्टर ह्यूबर्ट, कल आप दिल्ली जा रहे हैं (52, 110), ...श्री रमाकान्त आगामी 30 अगस्त से अवकाश ग्रहण कर रहा है (101, 441), मदाम छुट्टियों में आप घर नहीं जा रहीं ? (52, 89)।

(3) **भूतकाल के अर्थ में संतत वर्तमान**—जो कि बहुत ही कम स्थितियों में उक्ति के क्षण से पहले भूतकाल में व्यापार को व्यक्त करने के काम आता है, उदाहरणार्थ : —ओह, आप ! नमस्ते !—नमस्ते ! इसी ट्रेन से आ रही हैं क्या ? —जी हाँ !—अकेली ही...—जी हाँ, अकेली ही आयी हूँ (59, 104), मैं रोटी नहीं खाऊँगा।—क्यों ?—खाकर आ रहा हूँ (75, 41)।

आभ्यासिक संतत वर्तमान

यह काल रूप संतत कृदन्त के विकारी रूप तथा संयुक्त वर्तमान सहायक क्रिया के विकारी-तिङन्ती रूपों के मिलन से बनता है। इस तरह आभ्यासिक संतत वर्तमान पुल्लिग के दो विकारी रूप (मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रिया का कृदन्त-परक रूप) स्त्रीलिंग के एक विकारी रूप (मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया का कृदन्तपरक रूप) और 'है' क्रिया के चार तिङन्ती रूपों द्वारा व्यक्त होता है :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं लिख रहा (रही) हो-ता (-ती) हूँ	हम लिख रहे (रही) हो-ते (-ती) हैं
तू लिख रहा (रही) हो-ता (-ती) है	तुम लिख रहे (रही) हो-ते (-ती) हैं
	आप लिख रहे (रही) हो-ते (-ती) हैं
वह लिख रहा (रही) हो-ता (-ती) है	वे लिख रहे (रही) हो-ते (-ती) हैं

यह रूप भी सीमित विशेष प्रसंग से सम्बन्ध रखता है और बहुत कम पाया जाता है। यह वह एकल व्यापार व्यक्त करता है जो कि काल के किसी क्षण होता है, अर्थात् रूप समय में सीमित होता है। व्यापार सापेक्ष होता है और उक्ति के क्षण के साथ नहीं, बल्कि काल के क्षण के साथ मेल खाता है, उदाहरणार्थ : तब··· वह···किचन में पहुँचता है। मौसी रोटी बेल रही होती हैं या अँगीठी को पंखा कर रही होती हैं या आटा सान रही होती हैं (9, 107), जब देखो वे किसी को मिलने जा रही होती हैं या कोई उन्हें मिलने आ रहा होता है (V, विशेषांक, 1962, 55), पता किस तरह हो सकता है। आप तो उस वक्त खर्राटे ले रहे होते हैं (19, 79), जब माल जहाज में आ रहा होता है तो वह आने पर बेचा जाता है (101, 248), दीपवर्धन अभी कोई बहाना सोच ही रहे होते हैं कि शीला झट से रसोईघर की ओर चली जाती है (38, 20)।

जैसा कि उदाहरणों से विदित है, यह रूप मुख्यतः मिश्र वाक्य में इस्तेमाल होता है जो कालवाचक होता है।

भूतकाल के रूप

भूतकाल के निम्नलिखित काल रूप होते हैं :

(1) स्थिर सत्यवाचक भूतकाल; (2) अपूर्णतावाचक नियमित आवर्ती भूतकाल; (3) अपूर्णतावाचक भूतकाल; (4) अपूर्णतावाचक आभ्यासिक भूतकाल; (5) सामान्य भूतकाल (पूर्णकालिक, अनिश्चित भूत); (6) पूर्णतावाची भूतकाल; (7) पूर्णतावाची आभ्यासिक भूतकाल; (8) पूर्णतावाची स्थैतिक भूतकाल; (9) संतत भूतकाल; (10) संतत आभ्यासिक भूतकाल। इस दस काल प्रकारों में पाँच सामान्य कहलाते हैं और पाँच—सीमित विशेष प्रसंग के, जो कि वास्तव में सामान्य काल रूपों के विकार होते हैं। भूतकाल के समस्त रूप चिह्न पूर्व० (अ)+द्वारा वर्णित होते हैं। रूप, जो कि द्वितीय कृदन्त और संतत कृदन्त द्वारा व्यक्त होते हैं, सी०+, और अके०+द्वारा वर्णित होता है। रूप, जो कि संतत कृदन्त द्वारा व्यक्त होते हैं, प्र०+चिह्न द्वारा वर्णित होते हैं। रूप, प्रथम कृदन्त और संयुक्त अपूर्ण सहायक क्रिया के साथ आव०+चिह्न द्वारा व्यक्त होते हैं। 'था' का पक्ष-रहित विकारी रूप पूर्व (आ)+, सी०+, अके०+चिह्नों द्वारा वर्णित होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर उल्लेखित रूप के अपने प्रयोग की निश्चित विशेषता है, इसलिए हर एक के बारे में स्वतन्त्र वर्णन किया जायेगा।

स्थिर सत्यवाचक भूतकाल

यह काल एकवचन और बहुवचन में पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के चार विकारी रूपों द्वारा व्यक्त होता है :

मैं, तू, वह था (थी) हम, तुम, आप, वे थे (थीं)

यह काल रूप द्रव्य या व्यक्ति की मौजूदगी और निषेधात्मक वाक्यों में उसके अभाव को जो कि वाक्य में उद्देश्य होते हैं, व्यक्त करने के काम आता है, उदाहरणार्थ : शाम का वक्त था (69, 61), कफ़न के लिए पैसे नहीं थे (111, 69), उसके हाथ में एक लम्बा लट्ठ था (103, 165), रावी के पूर्वी तट पर जहाँ आज लाहौर है, उस समय लवपुर नाम का एक छोटा-सा नगर था (156, 21)।

संयोजक क्रिया के प्रकार्य में 'था' विधेय के नामिक हिस्से का भूतकाल के साथ परस्पर सम्बन्ध बनाता है, उदाहरणार्थ : आपका विचार एकदम ठीक था (156, 25), बाँके शेर की तरह खड़ा था (103, 165), पहले उसके तीन भाई और थे, पर इस समय वह अकेली थी (65, 2), पर दुर्भाग्य से लड़का एक भी न था (69, 143)।

व्यापार जो 'था' क्रिया द्वारा व्यक्त होता है। भूतकाल में समस्त काल-सतह पर स्थित होता है, इसके ऊपर निर्भर नहीं होता कि वह किस क्षण पूर्ण हुआ, वह भूतकाल में द्रव्य या व्यक्ति की सिर्फ़ मौजूदगी (या अभाव) के तथ्य को बताता है।

अपूर्णतावाची भूतकाल

यह काल रूप प्रथम कृदन्त के विकारी रूप तथा 'था' सहायक क्रिया के विकारी रूपों के मिलन से बनता है। इस तरह अपूर्णतावाची भूतकाल पुल्लिग के दो विकारी रूपों, स्त्रीलिंग के एक विकारी रूप और 'था' क्रिया के चार विकारी रूपों द्वारा व्यक्त होता है :

मैं
तू लिख-ता (-ती) था (थी)
वह

हम
तुम, आप लिख-ते (-ती) थे (थीं)
वे

यह रूप पूर्व० (अ) +, सी० +, अके० + मुख्य चिह्नों द्वारा व्यक्त होता है। वह असमापक अतीत व्यापार को व्यक्त करता है जो आम तौर पर भूतकाल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है और वर्तमानकाल के साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं होता है। वह भूतकाल में व्यापारों के क्रम को नहीं बताता है, बल्कि उन व्यापारों को बताता है जो कि एक काल-सतह पर स्थित होते हैं। इसीलिए यह रूप वर्णनात्मक भूतकाल की हैसियत से जाना जाता है।

अपूर्णतावाची भूतकाल के व्यापार के समय में सीमित होने के चिह्न के अनुसार दो प्रकार होते हैं : अपूर्णतावाची वास्तविक भूतकाल और अपूर्णतावाची अवास्तविक भूतकाल।

अपूर्णतावाची वास्तविक भूतकाल एकल, मूर्त व्यापार को व्यक्त करता है, जो कि भूतकाल के किसी विशेष क्षण पर होता है। व्यापार दिए गये क्षण के साथ विभिन्न तरीके से सम्बन्ध रखता है और इसीलिए अपूर्णतावाची वास्तविक भूतकाल के अपने प्रकार होते हैं :

(1) अतीत में किसी मूर्त क्षण का अपूर्णतावाची भूतकाल, उदाहरणार्थ : पाँचों रंगरूट एक-दूसरे से लिपटते थे, उछलते थे, चीखते थे···(66, 77), किसी के मुँह से बात न निकलती थी (69, 30), ···वह उन पर कदम रखकर चलता था (25, 9), नोहरी के पाँव ज़मीन पर न पड़ते थे (69, 79)।

व्यापार की सीमितता काल के शाब्दिक चिह्नकों की उपस्थिति से ज़्यादा हो जाती है। उदाहरणार्थ : 1949 की बात है। उन दिनों मैं गाँव में रहता था (103, 1), इस समय इस आवास में सात सौ सुन्दरियाँ रहती थीं (4, 13), इस वक्त गली में पियक्कड़ों के सिवा और कोई न आता था (69, 61), वह दफ़्तर में अब भी आता था, काम अब भी करता था···(139, 29-30)।

(2) विस्तारित व्यापार का अपूर्णतावाची भूतकाल, जो कि भूतकाल में न केवल किसी क्षण के साथ मेल खाता है बल्कि इस क्षण तक शुरू भी हो सकता है और इस क्षण के बाद जारी भी रह सकता है, उदाहरणार्थ : उनके पुरखे पुराने ज़माने से ही गाँव में रहते थे (103, 60), 'लाल चौधरी' मूल पुरुष के समय से ही सरकारी कागज़ों में लिखा जाता था (119, 7)।

(3) नित्यतासूचक व्यापार का अपूर्णतावाची भूतकाल, जो भूतकाल में किसी क्षण को प्रभावित करता है और समय की किसी भी सीमा के बगैर नित्यता-पूर्वक और निरन्तर जारी रहता है, जैसे कि वह भूतकाल का काल अर्थ भरता है और व्यापार के कर्ता के नित्यतासूचक लक्षण की ओर संकेत करता है हालाँकि भूतकाल की कालावधि से सीमित होता है। उदाहरणार्थ : ···एक हरा-भरा समतल मैदान था, जहाँ मीठे पानी की एक छोटी-सी नदी बहती थी (4, 89), दूसरी तरफ़ सीढ़ियाँ उतरती थीं (103, 117)।

अपूर्णतावाची अवास्तविक भूतकाल अतीत में किसी भी क्षण के सम्बन्ध के बाहर व्यापार को व्यक्त करता है, व्यापार साधारणतः होता है और वास्तव में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूतकाल के समस्त अर्थ को भरता है। अपूर्णतावाची भूतकाल के इस प्रकार का मुख्य अर्थ नियमबद्ध आवर्ती व्यापार को व्यक्त करता है जो कि नित्यतापूर्वक नहीं बल्कि सविराम होता है, उदाहरणार्थ : यहाँ पर··· अधिकतर विदेशी टूरिस्ट आते थे (28, 153), शीतकाल के समय वहाँ इतनी ठण्ड पड़ती थी कि मनुष्य के शरीर का रक्त ही जम जाता था (4, 45), वह किसान न थे, पर खेती करते थे; ज़मींदार न थे, पर ज़मींदारी करते थे; थानेदार न थे पर थानेदारी करते थे (65, 2)।

अपूर्णतावाची भूतकाल के इस प्रकार के आधार पर एक अर्द्धस्वतन्त्र काल रूप अर्थात् नियमित आवर्ती का अपूर्णतावाची भूतकाल बनता है जो कि प्रथम कृदन्त के चार विकारी रूपों द्वारा व्यक्त होता है :

मैं	हम
तू लिखता (लिखती)	तुम, आप लिखते (लिखतीं)
वह	वे

नियमित आवर्ती का अपूर्णतावाची भूतकाल नियमित रूप से आवर्ती और सविराम व्यापार को व्यक्त करने के काम आता है। यह रूप आम तौर पर कई समान व्यापारों का वर्णन करने के काम आता है जो कि एक ही काल-सतह पर स्थित हो सकते हैं या जब शाब्दिक चिह्नक होते हों, एक-दूसरे के बाद आते हैं। उदाहरणार्थ : वह अपने अभिभावक के ढोर-डंगर चराती, खेत गोड़ती, रोपती, डंगरों के लिए घास छीलती, समय पड़ने पर खाना पकाती, बर्तन मलती, नदी से पानी लाती (17, 365), पहला युवक प्रायः आता, उसके पास बैठता और अनेक चेष्टाएँ करता, किन्तु युवती अचल पाषाण-प्रतिमा की तरह बैठी रहती (39, 88), बुढ़िया बेचारी मुँह-अँधेरे उठती, चारपाई पर बैठी-बैठी दस-पन्द्रह मिनट प्रार्थना करती, फिर गृहस्थी के काम में जुट जाती और रात गये तक जुटी रहती। कभी अँगीठी सुलगाती, कभी चाय बनाती; कभी बच्चों को नहलाती-धुलाती, कभी भोजन बनाती और कभी बर्तन समेटती। जो बहुओं से बन पड़ता, बहुएँ करतीं···(142, 41)।

शुद्ध कृदन्तपरक रूपों के साथ बहुत अकसर मिश्रित समापक रचनाएँ भी प्रयोग होती हैं जब कृदन्तपरक रूपों के साथ-साथ वे रूप भी होते हैं जो कि कृदन्त और सहायक क्रिया के मिलन से बनते हैं, उदाहरणार्थ : जब कमरे में आती, लोग **खड़े हो जाते थे**, पर वह पिछली सफ़ से आगे न बढ़ती थी (69, 31), जब दोपहर में भोजन के बाद सारे गाँव में सन्नाटा छा जाता, लोग विश्राम करने लगते, तब सरला वहीं बैठी-बैठी पुराने ग्रन्थों के पन्ने **उलटा-पलटा करती थी** (5, 9)।

मिश्रित रूप उन अलग-अलग वाक्यों में विशेषकर अक्सर मिलते हैं जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनमें से कुछ वाक्यों में सहायक क्रिया नहीं होती, और दूसरों में सहायक क्रिया होती है, उदाहरणार्थ : उस दिन से जालपा के पति-स्नेह में सेवा-भाव हुआ। वह स्नान करने जाता तो अपनी धोती धुली हुई मिलती। आले पर तेल और साबुन भी रखा हुआ पाता। जब दफ़्तर जाने लगता तो जालपा उसके कपड़े लाकर सामने रख देती। पहले पान माँगने पर मिलते थे, अब ज़बरदस्ती खिलाये जाते थे। जालपा उसका रुख देखा करती। उसे कुछ कहने की जरूरत न थी। यहाँ तक कि जब वह भोजन करने बैठता तो वह पंखा झला करती। पहले वह अनिच्छा से भोजन बनाने जाती थी और उस पर भी बेगार-सी टालती थी। अब बड़े प्रेम से रसोई में जाती (65, 61); वह बड़े प्रेम और यत्न से उन्हें पानी पिलाती, पुचकारती और चारा खिलाती थी। कभी-कभी वह जंगल से अपने हाथों से घास छील लाती और उन्हें खिलाती थी। लोकनाथ जब गाय दुहने बैठता, तो सरला उसके आगे खड़ी होकर उसके माथे को सहलाती रहती, और गाय चुपचाप बछड़े को चाटती रहती (5, 8)।

अपूर्णतावाची अवास्तविक भूतकाल में वह व्यापार एक विशेष स्थान रखता है जो कि 'होना' क्रिया के प्रथम कृदन्त से व्यक्त होता है, जिसमें भूतकाल में व्यापार की अभ्यासता पर मुख्य बल होता है, उदाहरणार्थ : पिंडारियों के अलग-अलग जत्थे होते थे (47, 9), जब वे उनसे मिलतीं तो उनके हाथों पर व्यंग्य और विद्रूप की गहरी परतें होतीं···(111, 21), उनके साथ बहुत से राजदूत, जनसाधारण और बालक होते थे (4, 58), ···मुझे उनसे घृणा होती थी (4, 13)।

'होना' क्रिया का यह कृदन्तपरक रूप 'था' विकारी क्रिया के मिलन से संयुक्त अपूर्ण योजक की हैसियत से आ सकती है, जहाँ यह रूप लक्षण की अभ्यासता को व्यक्त करता है। यह लक्षण नामिक हिस्से में होता है, उदाहरणार्थ : ···दयनाथ विचलित होते थे (65, 4), ···उसका काम सबसे अधिक और सबसे सुथरा होता था (139, 25), वे बड़े निर्दयी और चतुर होते थे (2, 288)।

विश्लेषणात्मक क्रियाओं का क्रियार्थक घटक जो कि इस संयुक्त रूप द्वारा व्यक्त होता है, व्यापार के अपूर्णतावाची भूतकाल के दोनों प्रकारों को अभ्यासता की कोई भी छाया नहीं देता, उदाहरणार्थ : साथ ही समय पर पूरा रुपया भी वसूल नहीं होता था (2, 280)—वास्तविक अपूर्णतावाची भूतकाल; हर साल अपने खेतों में लाखों मन गल्ला पैदा होता था (119, 63)—अवास्तविक अपूर्णतावाची भूतकाल।

अपूर्णतावाची भूतकाल के प्रत्यक्ष प्रयोग के साथ-साथ, जब व्यापार भूतकाल के अर्थ की सीमा के बाहर नहीं आता, इस काल रूप का लाक्षणिक प्रयोग भी होता है जो कि एक कृदन्त द्वारा व्यक्त होता है। यह आम तौर पर तब प्रकट होता है जबकि एकांगी नामिक वाक्यों के बाद कृदन्तपरक रूप आता है। तब कृदन्तपरक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप उस व्यापार को व्यक्त करता है जो कि वर्तमान अर्थ के साथ सम्बन्ध रखता है, उदाहरणार्थ : इन मैदानों को यहाँ की बोलचाल में 'खादर' कहते हैं। खादर में ऊँची-नीची लहरों की-सी ढलवां ज़मीन, कहीं हरी छोटी दूब और कहीं लहराते घास के झुरमुट और कहीं अकेला बरगद या पीपल का छायादार वृक्ष। दूर बसे गाँवों के मवेशी यहाँ चरने को आते। उनके पीछे डण्डा लिए बालक कभी आँख-मिचौनी खेलते, कभी रेत में दौड़ लगाते और कभी थककर पेड़ के नीचे चना या मक्का चबाते (80, 55); नीचे घाटी में बहती नदी। उसमें पनचक्की। घाटी में फैले हरे-पीले धान के खेत। चीड़ के पेड़। जब उनकी सूखी मुड़वां ढलानों पर बिछ जातीं तो वह और उसकी सहेलियाँ उन पर फिसलतीं, लुढ़कती चली जातीं। गाँव के निकट एक जगह नदी का रुका हुआ पानी···उसमें वे जी-भर नहातीं, तैरतीं, कपड़े धोतीं, सुखातीं, गेंद उछालतीं, गातीं (17, 365); ग्राम के दक्षिण में एक कच्चा रास्ता लगभग पाँच मील जाकर ग्रेंड ट्रंक रोड से मिलता (80, 78)।

अपूर्णतावाची आभ्यासिक भूतकाल

काल का यह रूप प्रथम कृदन्त के विकारी रूप और सहायक क्रिया के संयुक्त अपूर्णतावाची और विकारी रूपों के मिलन से बनता है। इस तरह अपूर्णतावाची आभ्यासिक भूतकाल पुल्लिग के दो विकारी रूप (मुख्य और सहायक क्रिया), स्त्रीलिंग के एक विकारी रूप (मुख्य और सहायक क्रिया का कृदन्तपरक हिस्सा) और 'था' क्रिया के स्त्रीलिंग के दो रूपों द्वारा व्यक्त होता है :

मैं लिख-ता (-ती) हो-ता (-ती) था (-थी)	हम लिख-ते (-ती) हो-ते (-ती) थे थीं
तू	तुम, आप
वह	वे

यह काल रूप सीमित विशेष प्रसंग से सम्बन्ध रखता है और बहुत कम पाया जाता है। वह मूर्त, एकल व्यापार का वर्णन करता है, जो आम तौर पर काल में सीमित होता है। अपूर्णतावाची भूतकाल के मुकाबले में यह काल रूप एकल व्यापार की अभ्यासता पर विशेष बल देता है। उदाहरणार्थ : वह दिलचस्प आदमी थे। जब हम उनकी दुकान पर पहुँचते, वे सोने-चाँदी का कोई ज़ेवर बनाते होते···(20, 42), सुभद्रा कोई काम करती होती तो सुमन स्वयं उसे करने लगती (73, 28), उसे तो क्वार से शुरू होने वाले दिन अच्छे लगते जब आगे-आगे माँ भागती होती और पीछे-पीछे वह···उसे पकड़ने को दौड़ता होता···(83, 40), उसके होंठ जलते होते, उनमें कैसी भीषण ज्वाला होती (116, 125)।

जैसा कि उदाहरणों से विदित है, यह रूप आम तौर पर 'था' क्रिया के काल चिह्नक के बगैर आता है चूंकि भूतकाल के साथ व्यापार का सम्बन्ध पहले या बाद वाले प्रसंग द्वारा पक्का होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान्य भूतकाल (अनिश्चित भूत तथा पूर्णकालिक भूत)

काल का यह रूप सरल द्वितीय कृदन्त का समाकार है। इस तरह सामान्य भूत पुल्लिग के दो विकारी रूपों और स्त्रीलिंग के दो विकारी रूपों द्वारा व्यक्त होता है।

कर्तृ-सम्बन्धी रचना

मैं	हम
तू आया (आयी)	तुम, आप आए (आईं)
वह	वे

कर्म-सम्बन्धी रचना

एकवचन

मैं
तू
उस
हम ने पत्र (चिट्ठी) लिखा (लिखी)
तुम
आप
उन्हीं

बहुवचन

मैं
तू
उस
हम ने दो पत्र (चिट्ठियाँ) लिखे (लिखी)
तुम
आप
उन्हों

भाववाचक रचना

एकवचन तथा बहुवचन[1]

मैं
तू
उस
हम ने पत्र-पत्रों को (चिट्ठी-चिट्ठियों को) लिखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम
आप
उन्हों

सामान्य भूतकाल पूर्व० (अ) +, सी० +, अके० + चिह्नों द्वारा व्यक्त होता है और उस व्यापार को बताता है जो कि उक्ति के क्षण तक पूर्ण हो जाता है। व्यापार भूतकाल में किसी तथ्य के बारे में वर्णन करता है जो एक बार होता है या पौन: पुन्यवाचक क्रियाविशेषणों द्वारा मूर्त तथ्यों के किसी समूह को व्यक्त करता है। प्रसंग में सामान्य भूतकाल के ये अर्थ एकल पृथक्कृत व्यापार के रूप में या क्रमबद्ध पृथक्कृत एक-दूसरे को बदलते व्यापारों की शृंखला के रूप में आते हैं। परिणामस्वरूप सामान्य भूतकाल के दो प्रकारों में भेद करना चाहिए: (1) पृथक्कृत एकल व्यापार का सामान्य भूतकाल और (2) 'कथनात्मक' सामान्य भूतकाल।

(1) सामान्य पृथक्कृत एकल भूतकाल उस एक ही तथ्य को व्यक्त करता है जो कि व्यापार की उक्ति के क्षण तक पूर्ण हो जाता है, चाहे पूर्ण व्यापार और उक्ति के क्षण के बीच कितना ही छोटा या बड़ा कालान्तर क्यों न हो, उदाहरणार्थ : अभी तक एक पैसा नहीं दिया (65, 112), मेरी जेब से तो आज तक एक पैसा न गिरा (65, 117), महीनों और सालों बीत गये। मैंने न तुरैया को और न उसके बाप को ही देखा (69, 198), परसों शहर में गोलियाँ चलीं (69, 10)।

पौन: पुन्यवाचक क्रियाविशेषणों की उपस्थिति में सामान्य पृथक्कृत भूतकाल एकल तथ्यों के 'गुच्छे' अर्थात् किसी समूह को व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : बड़े-बड़े विद्वानों ने उसे दो-दो, तीन-तीन बार पढ़ा (5, 41), इस पड़ताल में कई बार मैं मरते-मरते बचा (64, 188-189)।

(2) 'कथनात्मक' सामान्य भूतकाल क्रमबद्ध, पृथक्कृत एक-दूसरे को बदलते व्यापारों के क्रम को व्यक्त करता है, और सारे कथन की विशेषता गति है, उदाहरणार्थ : यही सोचते हुए बाबू साहब उठे, रेशमी चादर गले में डाली, कुछ रुपये लिये, अपना कार्ड निकालकर एक दूसरे कुर्ते की जेब में रखा, छड़ी उठायी और चुपके से बाहर निकले (66, 15), मिस्टर सेठ ने विलायती टूथ पाऊडर विलायती ब्रुश से दाँतों पर मला, विलायती साबुन से नहाया, विलायती चाय विलायती प्यालियों से पी, विलायती बिस्कुट, विलायती मक्खन के साथ खाया, विलायती दूध पिया। फिर विलायती सूट धारण करके विलायती सिगार मुँह में दबाकर वे निकले और मोटर साइकिल पर बैठकर फ्लावर शो देखने चले गये (69, 20)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'होना' क्रिया का पूर्णकालिक रूप योजक की हैसियत से संयुक्त नामिक विधेय में आता है जहाँ वह उस लक्षण की पूर्णता का संकेत देता है, जो नामिक हिस्से में आता है, उदाहरणार्थ : वे ज़ख़्मी हुए (4, 80), उसकी सहायता से सेल्यूकश पश्चिमी शत्रु पर विजयी हुआ (2, 41), सरला का मुख और भी मधुर···हो उठा (5, 49), पश्चिमी दिशा लाल हुई (4, 77)।

विश्लेषणात्मक क्रियाओं में क्रियार्थक घटक, जो कि 'होना' क्रिया के पूर्णकालिक रूप द्वारा व्यक्त होता है, सामान्य भूतकाल का मुख्य अर्थ देता है, उदाहरणार्थ : देश में राष्ट्रीय जागरण का युग आरम्भ हुआ (115, 51), बादशाह को यह बात मालूम हुई (24, 190), ···सेना सीमा-प्रदेश को रवाना हुई (139, 184)।

सामान्य भूतकाल के प्रत्यक्ष प्रयोग के साथ-साथ इस कालिक रूप का लाक्षणिक प्रयोग भी होता है, जबकि रूप के कालार्थ और उक्ति के क्षण के सम्बन्ध में अन्तर होता है। सामान्य भूतकाल अपने लाक्षणिक अर्थ में भविष्यत् काल के अर्थ में आता है। यहाँ ऐसे प्रयोग के दो प्रकारों के बीच भेद जानना चाहिए : (1) सांदर्भिक-प्रतिबन्धित और (2) संरचनात्मक-प्रतिबन्धित।

सांदर्भिक-प्रतिबन्धित प्रयोग प्रसंग की विशेषताओं से सम्बन्ध रखता है जो यह बताता है कि व्यापार जो सामान्य भूतकाल के रूपों द्वारा व्यक्त होता है, भविष्यत् काल का अर्थ रखता है, और ज़्यादा ठीक, निकट भविष्य का अर्थ रखता है। सामान्य भूतकाल के रूप का सांदर्भिक-प्रतिबन्धित प्रयोग भविष्यत् काल के अर्थ में साधारणत: तब होता है जब :

(क) गति की क्रियाएँ हों, उदाहरणार्थ : अब तो मैं चला (5, 16), यार, भाभी प्रतीक्षा में बैठी होंगी। मैं चल दिया (8, 23), मैं अभी दो मिनट में आया (142, 107), अच्छा तो फिर मैं चली (75, 148)।

(ख) 'अभी', 'कभी' क्रियाविशेषणों के साथ विभिन्न शब्दार्थक क्रियाएँ होती हैं, उदाहरणार्थ : नीचे मत उतरो, गोविन्द ! अभी ऊपर आया (120, 110), अभी आया सरकार···(1, 507), कहीं यह इन्कार कर गये तब ? (73, 55), अगर वह नहीं छोड़ता···तो मैं अभी रोई (120, 64)।

(ग) अलग-अलग शब्दार्थक क्रियाएँ होती हैं और 'अब' क्रियाविशेषण मुख्यत: अविरत क्रिया के साथ आता है, उदाहरणार्थ : कोने की मस्जिद इतनी झुकी हुई है कि लगता है अब गिरी, अब गिरी (1, 250), ऐसा लग रहा है जैसे दिल अब बैठा, अब बैठा (59, 58), मालूम होता था, अब गिरा (65, 106)।

सामान्य भूतकाल के रूपों का संरचनात्मक-प्रतिबन्धित प्रयोग भविष्यत् काल के अर्थ में मिश्र वाक्यों के संकेतवाचक उपवाक्य में आता है, जिनके मुख्य हिस्से का विधेय सरल भविष्यत् काल के रूपों द्वारा व्यक्त होता है, उदाहरणार्थ : यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अड़तालीस घण्टे के अन्दर ये औरतें नहीं छूटीं तो फिर युद्ध होगा (36, 83-84), अब अगर कुछ और कहा तो पोतड़े तेरे ही मुख पर फेंक मारूँगी (111, 60), ख़बरदार कुतिया, जो तुमने अकेले घर से बाहर कदम रखा तो तेरी टाँगें तोड़कर रख दूँगा (71, 133), पुजारीजी का प्रेत कभी नदी पार आ गया तो हम चरण छूएँगे (147, 58)।

भविष्यत् काल के अर्थ में सामान्य भूतकाल के रूपों का संरचनात्मक-प्रतिबन्धित प्रयोग शाब्दिक चिह्नकों द्वारा पक्का हो सकता है, उदाहरणार्थ : कल अगर बुखार बिलकुल उतर गया तो मूँग की खिचड़ी दूँगी (59, 75)।

बहुत ही कम स्थितियों में सामान्य भूतकाल के रूपों का समान प्रयोग मिश्र वाक्य के विशेषण उपवाक्य में पाया जा सकता है, उदाहरणार्थ : जिस दिन तुमने कन्धा टेढ़ा किया, उसी दिन मार पड़ने लगेगी (69, 75)।

सामान्य भूतकाल के रूपों का प्रयोग विशेषण मिश्र वाक्य के दोनों हिस्सों में हो सकता है, हालाँकि ऐसा प्रयोग हमेशा सांदर्भिक-प्रतिबन्धित हो सकता है, उदाहरणार्थ : अगर तुम ना पिओगे तो मैं भी न पिऊँगा। जिस दिन तुमने पी उसी दिन फिर शुरू कर दी (69, 37)।

पूर्णतावाची भूतकाल

यह काल का रूप कर्तृ-सम्बन्धी और कर्म-सम्बन्धी रचनाओं में द्वितीय कृदन्त के तीन लैंगिक रूपों (पुल्लिग के दो रूप और स्त्रीलिंग का एक रूप) और 'था' क्रिया के चार लैंगिक रूपों या भाववाचक रचना में एकवचन में पुल्लिग के एक लैंगिक रूप और 'था' क्रिया के एक समान रूप के मिलन से बनता है :

कर्तृ-सम्बन्धी रचना

मैं	हम
तू आया (आयी) था (थी)	तुम, आप आये (आयी) थे (थीं)
वह	वे

कर्म-सम्बन्धी रचना

एकवचन

मैं
तू
उस
हम ने पत्र (चिट्ठी) लिखा (लिखी) था (थी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम
आप
उन्हों

बहुवचन

मैं
तू
उस
हम ने दो पत्र (दो चिट्ठियाँ) लिखे (लिखी) थे (थीं)
तुम
आप
उन्हों

भाववाचक रचना

एकवचन और बहुवचन

मैं
तू
उस
हम ने पत्र-पत्रों को (चिट्ठी-चिट्ठियों को) लिखा था
तुम
आप
उन्हों

पूर्णतावाची भूतकाल उस व्यापार को व्यक्त करता है जो कि भूतकाल में काल के क्षण के साथ या उक्ति के क्षण के साथ मेल खाता है। जब काल के क्षण के साथ मेल खाता है तो पूर्णतावाची भूतकाल उस व्यापार को व्यक्त करता है, जो कि दूसरे विगत व्यापार से पहले पूर्ण हुआ हो, या भूतकाल में किसी विशेष क्षण से पहले हुआ हो, या भूतकाल में किसी पहले पूर्ण हुए व्यापार का परिणाम बताता है। जब उक्ति के क्षण के साथ मेल खाता है तो पूर्णतावाची भूतकाल उस व्यापार को व्यक्त करता है जो कि उक्ति के क्षण का पूर्ववर्ती हो। इस तरह पूर्णतावाची भूतकाल तीन अर्थों को रखता है : (1) पूर्ण भूत, (2) पूर्णतावाची (अर्थात् पूर्णतावाची-समावेशी), और (3) पूर्णकालिक।

जब पूर्ण भूत का अर्थ बताता है तो पूर्णतावाची भूतकाल दूसरे विगत व्यापार से परस्पर सम्बन्ध रखता है या अतीत में किसी विशेष क्षण के साथ परस्पर सम्बन्ध रखता है जो कि इस बीते हुए व्यापार या क्षण से पहले पूर्ण हो गया हो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात् पूर्णतावाची भूतकाल के पूर्ण भूत के अर्थ में वह भूतकाल में किसी विशेष काल केन्द्र से पहले पूर्ण हो जाता है।

काल केन्द्र एक ही वाक्य की सीमा में हो सकता है, उदाहरणार्थ : दिन निकलने से पूर्व वे वीस मील निकल गये थे (36, 32), आज से तीन वर्ष पूर्व बाबूजी को किसी प्रकार बुखार आ गया था (69, 90), मैनेजर ने पहले ही कह दिया था (28, 18), सहसा वही अन्धा लड़का, जिसे उसने एक पैसा दिया था, न जाने किधर से आया (69, 22), सम्मेलन समाप्त होने तक उसने निश्चय कर लिया था···(36, 66), उस बच्ची को आज तक इतने ज़ोर से रोते हुए मैंने नहीं देखा था (58, 40)।

काल केन्द्र वाक्य के बाहर भी हो सकता है, उदाहरणार्थ : आप यहाँ क्यों आये ? मैंने तो आपसे कहा था, अपनी जगह से न हिलियेगा। मैंने तो आपसे मदद न माँगी थी? (69, 44), ···हम दोनों बेंच की तरफ़ बढ़े। बेंच पर एक दस-ग्यारह साल का लड़का बैठा था (142, 116), वह वकील था। उन्होंने शिक्षा की ऊँची-से-ऊँची डिग्रियाँ पायी थीं (69, 80), ···जंगली जातियों का एक-एक मनुष्य मुझे जानता था और मेरे खून का प्यासा था। यदि मैं उन्हें मिल जाता तो ज़रूर मेरा नामो-निशान दुनिया से मिट जाता। न जाने कितने अफ़रीदियों और गिल्ज़ाइयों को मैंने मारा था, कितनों को पकड़-पकड़कर सरकारी जेलख़ाने में भर दिया था और न मालूम उनके कितने गाँवों को जलाकर खाक कर दिया था (69, 185)।

संरचनात्मक-प्रतिबन्धित स्थितियों में, पूर्णतावाची भूतकाल जब कालवाचक मिश्र वाक्य के मुख्य हिस्से के विधेय में आता है, तो क्षणिक पूर्ववर्ती को व्यक्त करता है जो कि बीते हुए व्यापार का अनुवर्ती होता है, उदाहरणार्थ : वह अभी दो पग ही गया था कि उसको अपने कन्धे पर किसी का हाथ रखने का अनुभव हुआ (36, 9), एक दिन शाम को क्षमा संध्या करने उठी थी कि देखा मृदुला सामने आ खड़ी हुई (69, 9), बस, आकर ही बैठी थी कि तुम आ गयीं (75, 146)।

पूर्णतावची भूतकाल जब समान रचनाओं में विषेध के साथ आता है तो उस व्यापार को व्यक्त करता है जो कि किसी-न-किसी कारण दूसरे बीते हुए व्यापार से पहले पूरा नहीं हो सका। इस तरह यहाँ शुद्ध संकेतवाचक पूर्ववर्तिता होती है, उदाहरणार्थ : कोदई ने अभी कोई जवाब नहीं दिया था कि नोहरी पीछे से आकर बोली···(69, 72), बड़े-बड़े वैद्यराज अभी रोग की परख भी न कर पाये थे कि मृत्यु ने काम तमाम कर दिया (69, 104), बेचारा जानवर अभी दम भी न लेने पाया था कि फिर जोत दिया (69, 159)।

क्षणिक पूर्ववर्तिता की संरचनात्मक-प्रतिबन्धित को और क्षणिक पूर्ववर्तिता प्रयोग शाब्दिक-प्रतिबन्धित प्रयोग के बीच जो कि 'अभी' क्रियाविशेषण से पक्के होते हैं, भेद करना चाहिए, उदाहरणार्थ : वे उस सड़क पर होकर आगे बढ़ रहे थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि जिस पर होकर अभी-अभी चन्द्रगुप्त गये थे (159, 37), ...रामू धोबी... उसी नयी फ़िल्म के गीत गाता हुआ जो उसने अभी-अभी देखी थी, घर की ओर चला (27, 18), घड़ी की ओर देखा था : अभी तीन बजे थे (65, 193), चूँकि पूर्णतावाची भूतकाल के प्रयोग के लिए व्यापार की पूर्णता तथा काल केन्द्र के बीच का कालान्तर निश्चित नहीं होता। व्यापार या तो काल केन्द्र से बिलकुल पहले पूर्ण हो सकता है, या काल केन्द्र से काफ़ी पहले भी समाप्त हो सकता है, उदाहरणार्थ : आज से पाँच दिन पहले उसको बुखार आया था (111, 70), आज से लगभग 6000 वर्ष पहले की सभ्यता का इतिहास हमें बहुत कुछ मालूम है। लेकिन हमारे देश में उसके लाखों वर्ष पहले ही मनुष्य रहने लगे थे (2, 6)।

जब अपूर्ण काल के क्रियाविशेषण होते हैं तो पूर्णतावाची भूतकाल का व्यापार पहले पूर्ण हुए व्यापार का परिणाम व्यक्त करता है। व्यापार जब पूर्णता को प्राप्त कर लेता है तो काल के क्षण में अपने परिणामी अर्थ का सहारा लेता है। इस तरह पूर्णतावाची भूतकाल के पूर्णतावाची-समावेशी अर्थ में, व्यापार जो कि काल केन्द्र से पहले ही पूर्ण हो चुकता है, काल के क्षण में भी हो सकता है जो कि पूर्ण हूए व्यापार की काल के क्षण तक की परिणामी अवस्था है। पूर्णतावाची भूतकाल का पूर्णतावाची अर्थ सबसे ज़्यादा स्पष्ट असमापक क्रियाओं के कारण होता है, उदाहरणार्थ : शाम ही से जंगल का स्टेडियम पहलवानी के शौकीन लोगों से भर गया था (28, 191), बंगाली बहुत समय से सैनिक सेवा से वंचित रखे गये थे (119, 27), ...उसने भी बहुत दिन से वह आवाज़ नहीं सुनी थी (25, 50), भय्या, जब से तुमने मेरी पंचायत की, तब से मैं तुम्हारा प्राणघातक शत्रु बन गया था (69, 63)।

103931

दशासूचक और भाववाच्य क्रियाएँ अपनी अर्थ-शक्ति के अनुसार पूर्णतावाची अर्थ दे सकती हैं चाहे अपूर्ण काल के क्रियाविशेषण न भी हों, उदाहरणार्थ : सरदार...उदास बैठा था (25, 39), कई बोरे गुड़ और कई पीपे घी उन्होंने बेचे थे, दो-ढाई सौ रुपये कमर में बाँधे थे (69, 160), ...ईश्वर की कृपा से हड्डी टूटी न थी (69, 189)।

पूर्णता परिवर्तितता के साथ आ सकती है, उदाहरणार्थ : उसने (तुरैया) बड़े-बड़े मूँग निकालकर मेज़ पर रख दिये। मेरी पत्नी मेरे साथ कमरे के भीतर आयी थी (69, 198) (अर्थात् पत्नी उस क्षण से पहले पहुँची जबकि तुरैया ने मूँगों को रखना शुरू किया और कमरे में तब तक रही जब तक तुरैया मूँगों को रख रही थी)।

पूर्णतावाची भूतकाल और पूर्णतावादी वर्तमान में ऐसी रचनाओं में भेद जहाँ एक ही क्रियाएँ हों यह है कि पूर्णतावाची भूतकाल किसी-न-किसी तरह काल केन्द्र की तरफ़ स्थिर होता है, जबकि पूर्णतावाची वर्तमान काल के क्षण के सम्बन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बग़ैर ही पूर्ण होता है। पूर्णतावाची वर्तमान के लिए दूसरे व्यापार का पूर्ववर्ती होना ज़रूरी नहीं, व्यापार सिर्फ़ उक्ति के क्षण का पूर्ववर्ती होता है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है पूर्णतावाची भूतकाल सापेक्ष काल रूप है जबकि पूर्णतावाची वर्तमान निरपेक्ष रूप है। उदाहरणार्थ : 'जाने शहर के विभिन्न मोहल्लों' से कितने जुलूस वहाँ पहुँचते थे। लगता था जैसे सारा शहर नाडीराम के तालाब पर पहुँचा है' (17, 131)—पहले वाक्य में कहा गया है कि उपन्यास का हीरो तालाब पर जब पहुँचा, वहीं पर ही बहुत से जुलूस पहुंचे थे। दूसरे वाक्य में कहा गया है कि सारा शहर, तालाब के पास पहुँचने पर, वहाँ है; 'उसने डिप्टी-कलेक्टरी के लिए दरख़ास्त दी थी' (143, 9) और 'अस्तभान, तूने डिप्टी-कलेक्टरी के लिए दरख़ास्त दी है' (143, 11)—पहले वाक्य में इस बात का संकेत देते हैं कि हीरो ने दरख़ास्त पहले ही दे दी है और चाहता था कि अस्तभान उसे नौकरी को देने में मदद करे, दूसरे वाक्य में इस बात पर ज़ोर है कि हीरो ने दरख़ास्त दे रखी है और कहीं उसके ऊपर गौर किया जा रहा है।

पूर्णकालिकता के अर्थ में पूर्णतावाची भूतकाल काल केन्द्र से मेल खाता है और इस तरह पूर्ववर्तिता को व्यक्त करता है लेकिन उक्ति के क्षण को। इस अर्थ में पूर्णतावाची भूतकाल अति प्राचीन काल की तरह प्रयोग में आता है और मुख्यतः उस व्यापार को व्यक्त करता है जो कि अतिप्राचीन काल में पूर्ण हुआ हो, उदाहरणार्थ : चन्द्रगुप्त के समय में एक चीनी यात्री फ़ाह्यान आया था। वह 399 ई. में अपने देश से चला था (2, 67), 643 ई. में उसने ह्वेन-साँग के सामने भी एक ऐसी सभा कन्नौज में की थी (2, 80)।

विवरण के शुरू में विभिन्न काल चिह्नकों को व्यक्त करते समय (अध्याय के शुरू में या पैराग्राफ़ के शुरू में) पूर्णतावाची भूतकाल स्वयं काल केन्द्र को बनाने लगता है, जिसके बाद बाकी घटनाएँ होती हैं, उदाहरणार्थ : शाम हो गयी थी, कई मित्र आ गये (69, 103), संध्या हो गयी थी। कर्मचारी एक-एक करके जा रहे थे (65, 98), रात के दस बज गये थे। जालपा खुली छत पर लेटी हुई थी (65, 21)।

पूर्णतावाची भूतकाल काल केन्द्र के प्रकार्य में उन घटनाओं को व्यक्त करने के लिए आ सकता है जो कि समय के चिह्नकों से सम्बन्ध नहीं रखतीं, उदाहरणार्थ : बाढ़ ने और भी विशाल रूप पा लिया था। सवेरे से रात तक बाढ़ की ख़बरों को छोड़कर कहीं और कोई चर्चा न होती थी (1, 65), पानी थम गया था। इसकी चेतना जब हुई तो दोनों कारिडोर से निकल आये (111, 68)।

पूर्णतावाची भूतकाल के इस पूर्णकालिक अर्थ को सांदर्भिक-प्रतिबन्धित कह सकते हैं, जिसके साथ-साथ पूर्णतावाची भूतकाल का संरचनात्मक-प्रतिबन्धित अर्थ भी होता है, जब वह कालवाचक मिश्र वाक्य के मुख्य हिस्से में प्रयोग होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके आश्रित हिस्से में सामान्य भूतकाल होता है, उदाहरणार्थ : चन्द्रगुप्त ने जब नन्दों का नाश किया तब शायद कलिंग स्वतन्त्र हो गया था (2, 46), पिछले साल जब उसने अपने से ड्यौढ़े जवान को···दंगल में पछाड़ दिया, तो उन्होंने··· अखाड़े में ही जाकर उसे गले से लगा लिया था, पाँच रुपये के पैसे भी लुटाये थे (69, 149)।

इन उदाहरणों में व्यापार जो कि पूर्णतावाची भूतकाल द्वारा व्यक्त किया गया है, उस व्यापार के अनुवर्ती है जो कि सामान्य भूतकाल द्वारा व्यक्त किया गया है।

पूर्णतावाची भूतकाल और सामान्य भूतकाल में भेद यह है कि पूर्णतावाची भूतकाल आम तौर पर क्रमबद्ध, एक-दूसरे को बदलते हुए व्यापारों को व्यक्त करने के काम नहीं आता। जब वह कथनात्मक प्रकार्य में आता है तो वह मानो वर्णन को तोड़ देता है और जिस व्यापार को वह व्यक्त करता है वह कहीं पहले कालार्थ में होता है, उदाहरणार्थ : तब हूण पश्चिम की ओर बढ़ने लगे। उन्होंने युचियों और शाकों को ठेलकर भारत की ओर **भेजा था**। इस समय वे स्वयं भारत पर आक्रमण करने लगे (2, 68), संध्या समय पचास हज़ार आदमी जमा हो गये। आज का नेतृत्व मुझे **सौंपा गया था**।···एक अबला स्त्री, जिसे संसार का कुछ भी ज्ञान नहीं, जिसने घर के बाहर पाँव नहीं निकाला, आज अपने प्यारों के उत्सर्ग की बदौलत उस महान पद पर **पहुँच गयी थी**·· निश्चित समय पर जुलूस ने प्रस्थान किया (69, 15)।

पूर्णतावाची भूतकाल एक-जैसे व्यापारों को गिनवाते समय बताता है कि व्यापार एक-दूसरे को क्रमबद्ध नहीं बदलते, बल्कि एक ही लाइन में होते हैं और आंशिक रूप से अपने काल की गति के साथ मेल खाते हैं, उदाहरणार्थ : एक बार एक कड़ा व्याख्यान देने के लिए जेल हो आये थे···अब उसका विवाह हो गया था, दो-तीन बच्चे भी हो गये थे, दशा बदल गयी थी (69, 83), बहुत बार रोई थी वह इस बात को लेकर, बहुत बार उसने सिर फोड़े थे, मायके गयी थी और बहुत बार अपने बड़े लड़के प्रदीप को धुना था (107, 32)।

उस स्थिति में भी जबकि ऐसा लगता है कि बाह्य तौर पर व्यापार एक-दूसरे को क्रमबद्ध बदल रहे हैं, पूर्णतावाची भूतकाल फिर भी पूर्ववर्ती व्यापारों को व्यक्त करता है जो कि समय की अपनी गति के साथ मेल खाते हैं उदाहरणार्थ : पूटी गुरु कल सवेरे ही बड़े तड़के ही··किसी गाँव में गये थे। पाधा गली के बाचान महाराज भी उनके साथ गये थे। वह तो रात ही में किसी की साइकिल के पीछे बैठकर लौट आये थे और रात में उन्होंने रमेश की माँ को सन्देशा भिजवा दिया था कि गुरु सवेरे आयेंगे (1, 246)।

संयोजक क्रिया की हैसियत से 'होना' क्रिया पूर्णतावाची भूतकाल में लक्षण की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्णता का संकेत देती है, जो कि नामिक हिस्से में होता है। तब लक्षण की पूर्णता ज़्यादा बाद के कालार्थ के परिणामी अर्थ को रखती है, अर्थात् पूर्ण भूत का योजक मुख्यत: पूर्णतावाची-समावेशी अर्थ व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : ···दूसरे क़बीले के लोग इनकी पंचायत में आने के लिए तैयार हुए थे (36, 71), एक भी बाल सफ़ेद न हुआ था (69, 188), अभी उनका कर्त्तव्य पूर्ण नहीं हुआ था (4, 64)।

विश्लेषणात्मक क्रिया के क्रियार्थक घटक में 'होना' क्रिया पूर्णतावाची भूतकाल में इस काल रूप की सभी छायाएँ व्यक्त करती हैं, उदाहरणार्थ : गली की ज़िन्दगी शुरू हो गयी थी (111, 29)।

पूर्णतावाची आभ्यासिक भूतकाल

यह काल का रूप द्वितीय कृदन्त के पुल्लिग के दो लैंगिक रूपों (एकवचन तथा बहुवचन), और स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप तथा कर्तृ-सम्बन्धी और कर्म-सम्बन्धी रचनाओं में संयुक्त अपूर्णतावाची सहायक क्रिया के चार लैंगिक रूपों या भाववाचक रचना में एकवचन में पुल्लिग के एक लैंगिक रूप तथा सहायक क्रिया के समान लैंगिक रूप के मिलन से बनता है।

कर्तृ-सम्बन्धी रचना

मैं
तू बैठा (-ठी) हो-ता (-ती) था (-थी)
वह
हम
तुम, आप बैठे (बैठी) हो-ते (-ती) थे (थीं)
वे

कर्म-सम्बन्धी रचना

एकवचन

मैं
तू
उस
हम ने पत्र (चिट्ठी) लिखा (लिखी) हो-ता (-ती) था (थी)
तुम
आप
उन्हों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुवचन

मैं
तू
उस
हम ने दो पत्र (दो चिट्ठियाँ) लिखे (लिखी) हो-ते (-ती) थे (थीं)
तुम
आप
उन्हों

भाववाचक रचना

एकवचन तथा बहुवचन

मैं
तू
उस
हम ने पत्र-पत्रों को (चिट्ठी-चिट्ठियों को) लिखा होता था
तुम
आप
उन्हों

यह काल रूप सीमित विशेष प्रसंग से सम्बन्ध रखता है और बहुत कम प्रयोग में आता है। यह एकल पृथक्कृत व्यापारों के 'गुच्छे' को व्यक्त करता है जो कि निश्चित या अनिश्चित कालावधि में आवर्ती होते हैं और पूर्णभूत या पूर्णतावाची-समावेशी अर्थ व्यक्त करते हैं।

पूर्णतावाची आभ्यासिक भूतकाल पूर्णभूत के अर्थ में उस व्यापार को व्यक्त करता है जो कि दूसरे व्यापार तक जो कि साधारणतया या नियमित तौर पर होता है। आम तौर पर पूर्ण हो जाता है। उदाहरणार्थ : उसके बाद 10 दिन उन लोगों को दान दिया जाता था जो दूर-दूर से आये होते थे (2, 80), जिन देहातियों ने कभी शहर में फ़िल्म देखी होती थी वे ज़रूर शुरू से लेकर अन्त तक पूरा खेल देखते (V, जनवरी, 1963, 96)।

पूर्णभूत का अर्थ विशेषकर स्पष्ट द्वितीय कृदन्त के पक्ष-सम्बन्धी रूपों को ('चुकना' रंजक क्रिया के साथ) इस्तेमाल करने से होता है, उदाहरणार्थ : दोपहर के समय जब वह खाना खाने घर पर आता तो प्रायः उसकी माँ लखने के लिए रोटी लेकर खेतों पर जा चुकी होती थी (75, 73), तारो और कीशू तब तक अपने स्कूलों को जा चुके होते थे (1, 570), जब वे घर आते तो उसका बच्चा सो चुका होता…(7, 82)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्णतावाची आभ्यासिक भूतकाल का पूर्णतावाची-समावेशी अर्थ वह व्यापार व्यक्त करता है जो आम तौर पर काल के क्षण तक अधिकतम हो चुका हो और काल के क्षण के बाद साधारण परिणामी अवस्था के रूप में जारी रहे, उदाहरणार्थ : कई बार महरोत्रा स्टूडियो से आता तो उसकी बीवी नीचे झोंपड़ी के दरवाज़े पर अमृता बहन के पास बैठी होती (8, 96), ···जो अपनी चारपाई पर आराम से लेटे होते थे (75, 56), धोती उसकी घुटनों के ऊपर और आस्तीनें कोहनियों पर चढ़ी होतीं (17, 287), ऊँटों पर···शामियाने लदे होते थे (73, 8)।

पूर्णतावाची स्थैतिक भूतकाल

काल का यह रूप द्वितीय कृदन्त के पुल्लिग के दो (एकवचन तथा बहुवचन) लैंगिक रूपों और स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप तथा कर्तृ-सम्बन्धी और कर्म-सम्बन्धी रचनाओं में संयुक्त पूर्ण भूत सहायक क्रिया के चार लैंगिक रूपों के मिलन या भाववाचक रचना में एकवचन में पुल्लिग के एक लैंगिक रूप और सहायक क्रिया के समान लैंगिक रूप के मिलन से बनता है।

कर्तृ-सम्बन्धी रचना

मैं
तू बैठा (बैठी) हुआ (हुई) था (थी)
वह
हम
तुम, आप बैठे (बैठी) हुआ (हुई) था (थीं)
वे

कर्म-सम्बन्धी रचना

एकवचन

मैं
तू
उस
हम ने पत्र (चिट्ठी) लिखा (लिखी) हुआ (हुई) था (थी)
तुम
आप
उन्हों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुवचन

मैं
तू
उस
हम ने दो पत्र (दो चिट्ठियाँ) लिखे (लिखी) हुए (हुई) थे (थीं)
तुम
आप
उन्हों

भाववाचक रचना

एकवचन तथा बहुवचन

मैं
तू
उस
हम ने पत्र-पत्रों को (चिट्ठी-चिट्ठियों को) लिखा हुआ था
तुम
आप
उन्हों

यह काल रूप पूर्णतावाची-समावेशी अर्थ रखता है : व्यापार काल के क्षण से पहले अधिकतम होता है और काल के क्षण के बाद भी परिणामी अवस्था के रूप में जारी रहता है। पूर्णतावाची स्थैतिक भूतकाल संयुक्त नामिक विधेय का व्याकरणिक समनाम है, जो कि संयुक्त द्वितीय कृदन्त तथा 'था' योजक से बना होता है। इस सूरत में व्यापार-अवस्था जो कि संयुक्त कृदन्त द्वारा व्यक्त होती है मूर्त भूतकाल से सम्बन्ध रखती है।

इसके बावजूद कि यह रूप सीमित विशेष प्रसंग से सम्बन्ध रखता है, यह रूप काफ़ी पाया जाता है, यह बात उन रूपों के लिए विशेषकर स्वाभाविक है जो कि कर्तृ-सम्बन्धी रचना को बनाते हैं. उदाहरणार्थ : लाला कानपुर गये हुए थे (1, 77), इस समय तक स्टीवेनसन डाक बंगले में पहुँचा था (36, 144), सभी के चेहरे मुरझाए हुए थे (69, 174), जालपा खुली छत पर लेटी हुई थी (65, 21)।

पूर्णतावाची स्थैतिक वर्तमान के मुकाबले पूर्णतावाची स्थैतिक भूतकाल के रूप जो कि कर्म-सम्बन्धी और भाववाचक रचना बनाते हैं, अक्सर पाये जाते हैं, उदाहरणार्थ : औरतों ने बाल सँवारे हुए थे (36, 27), इन लोगों ने एक कोठरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किराये पर ली हुई थी (97, 24), ···उसने एक प्रेमिका पाली हुई थी (30, 118), ···उसने सिंगार भी बहुत कौशल से किया हुआ था (36, 123), सीढ़ियों से सटे जंगले पर ह्यू बर्ट ने अपना सिर रखा हुआ हुआ था (52, 123)।

संतत भूतकाल

यह काल का रूप संतत कृदन्त के पुल्लिग (एकवचन तथा बहुवचन) के दो लैंगिक रूपों और स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप तथा सहायक क्रिया 'था' के चार लैंगिक रूपों से बनता है :

मैं
तू लिख रहा (रही) था (थी)
वह
हम
तुम, आप लिख रहे (रही) थे (थी)
वे

इस रूप का सामान्य अर्थ पूर्व० +, सी० +, अके० + और प्र० + चिह्नों द्वारा वर्णित होता है; जिनमें से प्र० + मुख्य है। अपूर्णतावाची भूतकाल के विपरीत संतत भूतकाल व्यापार को उसके प्रत्यक्ष विकास में व्यक्त करता है जो कि भूतकाल में, ठीक दिये गये समय पर होता है जो कि बीते हुए व्यापार के ज़रिये निश्चित होता है या शाब्दिक चिह्नक के द्वारा व्यक्त होता है। इस तरह भूतकाल में काल के क्षण का मालूम कर सकते हैं : (1) काल चिह्नक द्वारा, उदाहरणार्थ : एक दिन संध्या समय मैं रामायण पढ़ रही थी (69, 81), दोपहर हो गयी थी। चरवाहे दूर कहीं पहाड़ पर पुकार रहे थे (103, 103); (2) आश्रित वाक्य द्वारा (मुख्यतः काल के), उदाहरणार्थ : राम दफ़्तर से घर पहुँचा तो चार बज रहे थे (65, 38), बाप-बेटे दोपहर में पहुँचे तो विन्दु सोना से बातें कर रही थी (37, 19); (3) पूर्ववर्ती प्रसंग के द्वारा, उदाहरणार्थ : रामो को देखते ही लड़कों ने ताश को टाट के नीचे छिपा दिया और पढ़ने लगे। सिर झुकाए चपत की प्रतीक्षा कर रहे थे (65, 21), उसने खिड़की खोल दी और नीचे की तरफ़ झाँका। होली अब भी जल रही थी और एक अन्धा लड़का गा रहा था (69, 19)।

इस तरह अपूर्णतावाची भूतकाल के विपरीत संतत भूतकाल आम तौर पर एकल व्यापार को व्यक्त करता है और सामान्यीकृत व्यापार को व्यक्त नहीं कर सकता।

संतत और अपूर्णतावाची भूतकाल के व्यापार एक-दूसरे से मेल तब खा सकते हैं जब वे किसी मूर्त व्यापार को व्यक्त करते हैं जो कि भूतकाल में किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चित क्षण पर होता है, उदाहरणार्थ : (क) 'एक स्वप्न देख रही थी' ···'क्या स्वप्न देखती थी?' (65, 25); (ख) '···अनुभवी योद्धा···सोना फेंकते हुए अकड़ते फिर रहे थे···लुटेरों की टोलियाँ···बाजारों में घूमती फिरती थीं' (4, 41, 42); (ग) 'उसका चपल अश्क हवा में उछल रहा था' (4, 128), और 'पाँचों रंगरूट···उछलते थे···' (69, 77)।

दोनों काल रूपों में भेद यह है कि संतत भूतकाल हमेशा किसी काल केन्द्र अर्थात् काल के क्षण के साथ सम्बन्ध रखता है, जबकि अपूर्णतावाची भूतकाल किसी उक्ति के क्षण के साथ परस्पर सम्बन्ध रखता है न कि काल के क्षण के साथ अर्थात् अपूर्णतावाची भूतकाल निरपेक्ष काल है और संतत भूतकाल सापेक्ष।

इस तरह संतत भूतकाल एक मूर्त प्रक्रियात्मक व्यापार है जो समय में सीमित होता है और भूतकाल में किसी विशेष समय में होता है जो कि किसी दूसरे बीते हुए व्यापार या काल के शाब्दिक चिह्नक के साथ परस्पर सम्बन्ध रखता है। इस तरह संतत भूतकाल उस व्यापार को व्यक्त करता है जो कि प्रत्यक्ष रूप से काल के क्षण में होता है।

काल के क्षण की कालावधि विभिन्न हो सकती है: (क) व्यापार काल के क्षण के साथ ठीक मेल खा सकता है और (ख) व्यापार काल के क्षण की सीमा के बाहर आ सकता है, उससे पहले शुरू होके काल के क्षण में जारी रह सकता है। इसी कारण संतत भूतकाल को निम्नलिखित प्रकारों में बाँट सकते हैं :

(1) काल के प्रत्यक्ष क्षण का वास्तविक संतत भूतकाल, उदाहरणार्थ : कुछ देर में उसने सिर उठाकर देखा तो युवक का सारा शरीर काँप रहा था (5, 48), बाबूजी उस समय ऊपर कमरे में बैठे कुछ पढ़ रहे थे (69, 68) महाराज महासेनापति का ध्यान उधर गया···अमीर के हाथी दीवार बनाकर चल रहे थे (4, 173), कजरी मेरी ताकत जानती थी। वह आराम से खड़ी गाली दे रही थी···(103, 110)।

(2) विस्तारित व्यापार का वास्तविक संतत भूतकाल, जो कि न केवल काल के क्षण के साथ मेल खाता है, बल्कि काफ़ी विस्तृत कालार्थ को लिए होता है, जो आम तौर पर काल के क्रियाविशेषणों की मदद से व्यक्त होता है, उदाहरणार्थ : बेचारा चार साल से रँडुआ चला आ रहा था···(17, 51), पिछले दस वर्षों से बिल्टू रिक्शा चला रहा था (110, 70), वह फ़र्स्ट क्लास के डिब्बे में बैठा अपनी पत्नी के साथ पिछले आधा घण्टे से ताश खेल रहा था (8, 99), जहाँ वह सात साल से रह रहा था (142, 140), ···जो उस समाधि में आठ सौ वर्ष से तपस्या कर रहे थे (28, 134)।

संतत भूतकाल नित्यतासूचक व्यापार को व्यक्त नहीं कर सकता जो सिर्फ़ उक्ति के क्षण को शामिल करता है और समय की किसी भी सीमा के बिना अविराम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जारी रहता है जैसा कि अपूर्णतावाची भूतकाल की स्थिति में होता है। वह उस व्यापार को व्यक्त करता है जो हमेशा काल के क्षण की टेक लेता है, हालाँकि उसकी शुरुआत काल के क्षण के बहुत पहले हो सकती है। इसीलिए व्यापार ऐसे वाक्यों में जैसे '···यहाँ से ऊपर को सीढ़ियाँ उस छिद्र तक जा रही थीं' (4. 166), 'तट पर एक बहुत बड़ा प्राचीन वट वृक्ष था, उसकी अनगिनत जटायें जल तक छू रही थीं' (4, 150), '···कालीन बिछे थे, जिन पर सुनहरी तारों का काम हो रहा था' (4, 43), काल के प्रत्यक्ष क्षण से परस्पर सम्बन्ध रखता है, वह भूतकाल के समस्त अर्थ को भरता नहीं है जिसमें व्यापार नित्यतापूर्वक और अविराम जारी रहता है परन्तु काल के निश्चित समय पर होता है अर्थात् उद्देश्य का नित्यतासूचक नहीं बल्कि क्षणिक लक्षण प्रस्तुत करता है।

'होना' क्रिया जब संतत भूतकाल में आती है तो वह आंशिक रूप से अस्तित्व का अर्थ खो बैठती है और नित्यताबोधक क्रिया का अर्थ व्यक्त करती है, उदाहरणार्थ : लड़कियों का आदान-प्रदान हो रहा था (36, 23), ···भीतर गाना हो रहा था (72, 153), अब मुख्य युद्ध जल ही में हो रहा था (4, 173)।

'होना' क्रिया जब संयोजक प्रकार्य में आती है तो संतत भूतकाल में वह उस लक्षण के साथ परस्पर सम्बन्ध की ओर संकेत करती है जो कि नामिक हिस्से में भूतकाल में किसी निश्चित क्षण में व्यक्त होता है। इस स्थिति में लक्षण स्थैतिक नहीं होता बल्कि गतिक होता है, उदाहरणार्थ : वह अत्यन्त दुर्बल हो रहे थे (59, 91), ···उसका मुख पीला हो रहा था (4, 22), वह तो हर्षोन्मत्त हो रहा था (103, 308)।

संतत आभ्यासिक भूतकाल

काल का यह रूप संतत कृदन्त के स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप और पुल्लिग (एकवचन तथा बहुवचन) के दो लैंगिक रूप तथा अपूर्णतावाची संयुक्त सहायक क्रिया के चार लैंगिक रूपों के मेल से बनता है :

मैं
तू लिख रहा (रही) हो-ता (-ती) था (थी)
वह

हम
तुम, आप लिख रहे (रही) हो-तो (-ती) थे (थीं)
वे

यह रूप सीमित विशेष प्रसंग से सम्बन्ध रखता है और कम पाया जाता है। यह किसी मूर्त, एकल व्यापार को व्यक्त करता है जो आम तौर पर काल के किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चित क्षण पर होता है। व्यापार सविराम नहीं होता, बल्कि व्यापारों का जोड़, सजातीय 'गुच्छा' होता है, जो कि ठीक दिये गये काल क्षण में होते हैं, जो कि दूसरे बीते हुए व्यापार द्वारा निर्धारित है, उदाहरणार्थ : कभी मलहोत्रा छुट्टी के दिन बारह-एक बजे इधर से गुज़रते, तो लल्लन नल पर नहा रही होती। कभी गीली धोती में उभरा बदन छिपाती, अपनी कोठरी की ओर आ रही होती। मलहोत्रा देखकर भी न देखते। कभी ऐसे में उसका पति हरिया अपनी कोठरी के आगे बैठा बीड़ी पी रहा होता (13, 38)। हम लोग उसके यहाँ पहुँचते, तो उसके कमरे से सितार की आवाज़ आ रही होती... मगर जब वह इन दोनों कामों में से कोई भी न कर रही होती, अपने तख़्त पर... लेटी छत की तरफ़ देख रही होती (52, 132), चेतन जब कभी पानी भरने या कुएँ पर नहाने जाता और उसमें से कोई पानी भर रही होती...(17, 116), जब घर आता, वे वहीं एकान्त में बैठी अपनी बच्ची से उलझती होतीं। कभी दूध पिला रही होतीं या कभी तेल लगाकर गर्म पानी से नहला रहा होतीं (108, 75)।

जैसा कि उदाहरणों से विदित है, सहायक संयुक्त अपूर्णतावाची क्रिया यहाँ आम तौर पर, बगैर 'था' काल के चिह्नक के कृदन्तपरक रूप में आती है।

भविष्यत् काल के रूप

भविष्यत् काल के निम्नलिखित रूपों में भेद होता है :

(1) सामान्य भविष्यत् काल (सरल भविष्यत् काल), (2) अपूर्णतावाची भविष्यत् काल (द्वितीय भविष्यत् काल), (3) पूर्णतावाची भविष्यत् काल (तृतीय भविष्यत् काल), (4) संतत भविष्यत् काल। ये सभी रूप सामान्य होते हैं और निम्नलिखित चिह्नों द्वारा व्यक्त होते हैं : पर० +, सी० +, अके± ०, और प्र० ±। रूप जो कि प्रथम कृदन्त द्वारा व्यक्त होता है, वह अतिरिक्त चिह्न आव० + द्वारा व्यक्त होता है, रूप जो कि द्वितीय कृदन्त द्वारा व्यक्त होता है, सम्भाव्य चिह्न पूर्ण० + द्वारा व्यक्त होता है।

हर रूप का अपने प्रयोग की निश्चित विशेषता है, इसलिए उनका स्वतन्त्र वर्णन करना ज़रूरी है।

सरल (सामान्य) भविष्यत् काल

काल का यह रूप पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के चार तिङन्ती-विकारी रूपों द्वारा व्यक्त होता है :

मैं लिखूँ-गा (-गी)	हम लिखें-गे (-गी)
तू लिखे-गा (-गी)	तुम लिखो-गे (-गी)
	आप लिखें-गे (-गी)
वह लिखे-गा (-गी)	वे लिखें-गे (-गी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान्य भविष्यत् काल निम्नलिखित मुख्य चिह्नों द्वारा वर्णित होता है : पर० + और सी० + । वह उस व्यापार को बताता है जिसकी शुरुआत या कार्यान्विति उक्ति के क्षण के बाद होगी या उक्ति के क्षण के साथ मेल खायेगी। सामान्य भविष्यत् काल किसी घटना को बताता है जो कि वक्ता की राय में भविष्यत् काल में ज़रूर होगी। सामान्य भविष्यत् काल का व्यापार मूर्त, एकल हो सकता है, और आवर्ती और अमूर्त भी हो सकता है, जो शाब्दिक चिह्नकों और प्रसंग द्वारा निर्धारित होता है।

एकल, मूर्त व्यापार का सामान्य भविष्यत् काल एकल, मूर्त तथ्य को व्यक्त करता है जो कि उक्ति के क्षण के बाद होगा या उक्ति के क्षण के साथ शुरू होगा, उदाहरणार्थ : इस जुमेरात को जाऊँगी (69, 195), तुम कोलाबा नहीं जाओगे, हमारे साथ जाओगे (28, 164), अगले मंगल को सवा सेर लड्डू चढ़ाऊँगा (111, 78), आज नहीं तो कल वह खुलेगा ही (3, 30), बहुत बक-बक करोगी तो अब मारूँगी (109, 52)।

सामान्य अमूर्त भविष्यत् काल को बाँटा जा सकता है : (1) अमूर्त आवर्ती भविष्यत् काल और (2) अमूर्त सामान्यकृत भविष्यत् काल।

अमूर्त आवर्ती भविष्यत् काल सविराम व्यापार को व्यक्त करता है जो कि भविष्य में कई बार हो सकता है, उदाहरणार्थ : जो ख़र्चे वह तुम्हें देते थे मैं दूँगा (28, 172), ···तुम्हारे आर्केस्ट्रा में वायलिन बजाऊँगा (28, 165), कभी सूखा पड़ेगा तो ऐसा पड़ेगा कि मीलों किसी कुएँ में पानी नहीं बचेगा (111, 99), क्या तुमने मुझे पहचान लिया ? आपको नहीं पहचानूँगी तो भला किसे पहचानूँगी ? (75, 223)।

अमूर्त सामान्यकृत भविष्यत् काल वह व्यापार व्यक्त करता है जो भविष्यत् काल भी कभी भी हो सकता है, उदाहरणार्थ : मेरे घर में या तो धर्मपत्नी आयेगी और मैं उसके आते ही सही अर्थों में एक शरीफ़ पति बन जाऊँगा, वरन् यूँ भी ज़िन्दगी क्या बुरी है (1, 430), ···किसी-न-किसी दिन उसे इस द्वीप को छोड़ना ही पड़ेगा (115, 453)।

'होना' क्रिया सामान्य भविष्यत् काल में दो अर्थों में आती है : (1) जब किसी मूर्त तथ्य को बताना होता है, जो, वक्ता की राय में, अवश्य ही भविष्य में होगा, उदाहरणार्थ : प्रजा की रक्षा कैसे होगी ? नहीं होगी महाराज (4, 101), ऐसे तमाशे होंगे कि देखकर तेरी आँखें खुल जायेंगी (66, 6), वह दुनिया कितनी अच्छी होगी, जिसमें पुलिस नहीं होगी (103, 154), और (2) जब किसी कल्पना को या किसी तथ्य या घटना की भविष्यत् काल या वर्तमान काल में संदिग्धता व्यक्त करते हैं, जबकि वक्ता उसके बारे में सिर्फ़ कल्पना करता है, लेकिन पक्का विश्वास व्यक्त नहीं करता, उदाहरणार्थ : माइकु ने कहा—बड़ी भीड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। वे कोई दो-तीन सौ आदमी होंगे (69, 61), मेरा अनुमान है कि खिड़की के सामने गुज़रने वाला पहला व्यक्ति एक पुरुष होगा (35, 59), सब मिल के ढाई-तीन हज़ार मज़दूर होंगे। फिर भी तो उनकी यूनियनें होंगी। और उनके नेता भी होंगे (7, 575)।

बहुत ही कम स्थितियों में कल्पना भूतकाल के अर्थ के साथ सम्बन्ध रखती है, उदाहरणार्थ : यह विवाह नहीं था, शोभा। तुम्हारे लिए न होगा, मेरे लिए था। अब भी है (28, 150)।

'होना' क्रिया संयोजक क्रिया के प्रकार्य में सामान्य भविष्यत् काल में उस लक्षण को व्यक्त करता है जो कि नामिक हिस्से में आता है, जो वक्ता की राय में, थोड़ी ज़्यादा विश्वस्तता से भविष्य में प्रकट होगा, अर्थात् लक्षण मूर्त तथा काल्पनिक भी हो सकता है, उदाहरणार्थ : एक पहर दिन चढ़े बाद पातान पर मेरी सत्ता स्थापित होगी (4, 108), यह सेना हमारे पृष्ठ का बल होगी (4, 109), किन्तु हमारे बेटे-पोतों का धर्म ऐसा होगा जहाँ सब समान होंगे, कोई छोटा-बड़ा न होगा (4, 132), कैसी भी हो। होगा तो जवान ही? (103, 313), होटल वाले बदमाश तो न होंगे (65, 231)।

भविष्यत् काल में 'होना' क्रिया जब विश्लेषणात्मक क्रियाओं के क्रियार्थक घटक में आती है तो इस काल रूप की सभी छायाएँ व्यक्त कर सकते हैं, उदाहरणार्थ : समाधि अभी भंग नहीं होगी (4, 129)।

अपूर्णतावाची भविष्यत् काल (द्वितीय भविष्यत्)

काल का यह रूप प्रथम कृदन्त के पुल्लिग के दो लैंगिक रूपों (एकवचन तथा बहुवचन) और स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप तथा 'होना' क्रिया के पुल्लिग के चार तिङन्त-विकारी रूपों एवं स्त्रीलिंग के चार समान रूपों द्वारा व्यक्त होता है :

मैं लिख-ता (-ती) हूँगा (-गी)	हम लिख-ते (-ती) हों-गे (-गी)
तू लिख-ता (-ती) हो-गा (-गी)	तुम लिख-ते (-ती) हो-गे (-गी)
	आप लिख-ते (-ती) हों-गे (-गी)
वह लिख-ता (-ती) हो-गा (-गी)	वे लिख-ते (-ती) हों-गे (-गी)

अपूर्णतावाची भविष्यत् काल पर + ०, सी + ०, आव० + मुख्य चिह्नों द्वारा व्यक्त होता है। यह अपने प्रत्यक्ष अर्थ में वास्तविक या अवास्तविक नित्यताबोधक व्यापार बताता है जिसकी कार्यान्विति उक्ति के क्षण के बाद होती है या उक्ति के क्षण के साथ मेल खाती है, उदाहरणार्थ : और आज भी तुम्हारी बेटियों को लेकर जब तुम्हारी बीवी से लड़ाई होती होगी और यह तुम्हारी पूज्य माँ बैठी-बैठी चौखट से सिर फोड़ती होगी···(107, 17)—वास्तविक व्यापार; जितने पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप किराये में बचाते हैं उससे छः गुने को डाक्टरों को दे देते होंगे (111, 65)—अवास्तविक व्यापार।

परन्तु आधुनिक हिन्दी में काल का यह रूप मुख्यतः अपने लाक्षणिक अर्थ में आता है, जो कि प्रयोग में इस रूप का मुख्य अर्थ बन गया है। प्रथम कृदन्त के साथ 'होना' क्रिया आने के कारण जो कि यहाँ अपने वृत्तिवाचक अर्थ में आती है, यह काल रूप सुनिश्चितता सम्बन्धी अर्थ से वंचित होता है जो कि सामान्य भविष्यत् काल के लिए स्वाभाविक है और व्यापार की काल्पनिकता की छाया व्यक्त करता है। इस तरह रूप की वृत्तिवाचक छाया होती है और वह प्रसंग के आधार पर वर्तमान भूत, भविष्यत् के अर्थ में कल्पना व्यक्त करता है। इस तरह व्यापार पूर्णतः वास्तविक होता है, लेकिन वक्ता पूर्णतः विश्वस्त नहीं होता कि व्यापार होता है (हुआ या होगा)। व्यापार का काल्पनिक चरित्र 'होना' क्रिया के सामान्य भविष्यत् काल के रूपों की उपस्थिति में प्रबल होता है।

वाक्य में 'अवश्य', 'ज़रूर' वृत्तिवाचक शब्दों की उपस्थिति में काल्पनिकता का अर्थ कमज़ोर पड़ जाता है और पहले स्थान पर विश्वस्तता और स्वीकारात्मकता की छाया आती है, हालाँकि वक्ता का पूरी तरह से शक खत्म नहीं होता, उदाहरणार्थ : ···वे आपको ज़रूर जानते होंगे (10, 118), ···अवश्य ही फाटक पर उसके पत्तों का मेहराब लगाया जाता होगा (50, 78)।

वर्तमान में कल्पना : 'दुनिया में सब सोते होंगे', माधो बोला, 'बस हम ही जागते हैं' (102 111), —तो खाते क्या होंगे ?—बेटी, यह लोग हवा पर रहते हैं (69, 289), वे आपको ज़रूर जानते होंगे (119, 118)।

भूतकाल में कल्पना : मैं अम्मा के पास गयी ही क्यों ? भाभी ज़रूर पहले से ज़ानती होंगी (108, 132), वहाँ तो तनख़्वाह भी ज़्यादा मिलती होगी ? जी हाँ, सवा दो सौ मिलते थे (142, 34), चेतन उन्हें आँख भर देखता हुआ उन दिनों की कल्पना करता था, जब वे लाठी चलाते होंगे (17, 47)।

भविष्यत् काल में कल्पना : (मुख्यतः निकट भविष्यत्) : ···वह कपड़े बदलने गयी है और आती होगी (108, 53), गंधा ने अनुमान लगाया कि अंत्येष्टि क्रिया के बाद वे लोग अब यहीं आते होंगे (87, 301), लच्छू बोला, 'अरे आती होगी बारात भी' (1, 89), मुझसे जो कुछ कहोगे, मैं करती जाऊँगी (108, 127), लड़का लाता होगा चिलम भरकर (147, 12)।

'होना' क्रिया अपूर्णतावाची भविष्यत् काल में प्रस्तुत व्यापार की अभ्यासता व्यक्त करती है, लेकिन उसकी छाया काल्पनिक होती है, उदाहरणार्थ : ननदों से हँसी-मजाक होता होगा (140, 75), शत्रु के वार ख़ाली करने वाले सेनानायक के यहाँ उतनी तल्लीनता नहीं होती होगी, जितनी ताश या चौपड़ खेलते वक्त बड्डे की आँखों में होती है (17, 43), उनसे बच्चे क्यों नहीं होते हैं, यदि होते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो कहाँ होते होंगे (116, 12)।

'होना' क्रिया संयोजक क्रिया के प्रकार्य में अपूर्णतावाची भविष्यत् काल में लक्षण की अभ्यासता की ओर संकेत करती है, जो कि नामिक हिस्से द्वारा काल्पनिक छाया सहित व्यक्त होता है, उदाहरणार्थ : तो लड़कियाँ बहुत खराब होती होंगी (66, 5), वह···कितनी उदास और निराश होती होगी (32, 20)।

जैसा कि उदाहरणों से विदित है, 'होना' क्रिया स्वतन्त्र प्रयोग में और योजक के प्रकार्य में काल्पनिक व्यापार को व्यक्त करती है, जो कि वर्तमान के अर्थ से ज़्यादा और भूतकाल से कम, परस्पर सम्बन्ध रखता है, चूँकि भविष्यत् काल में काल्पनिकता सामान्य भविष्यत् काल की 'होना' क्रिया के रूपों द्वारा व्यक्त होती है।

पूर्णतावाची भविष्यत् काल (तृतीय भविष्यत्)

यह काल का रूप द्वितीय कृदन्त के पुल्लिग (एकवचन तथा बहुवचन) के दो लैंगिक रूपों और स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप तथा कर्तृ-सम्बन्धी रचना में सामान्य भविष्यत् काल में 'होना' क्रिया के पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के चार-चार तिङन्त-विकारी रूपों के मेल से बनता है; कर्म-सम्बन्धी रचना में द्वितीय कृदन्त के पुल्लिग के दो लैंगिक रूपों और स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप तथा सामान्य भविष्यत् काल में 'होना' क्रिया के पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के दो तिङन्त-विकारी रूपों के मिलने से या भाववाचक रचना में पुल्लिग के एक लैंगिक रूप तथा सामान्य भविष्यत् काल में 'होना' क्रिया के समान विकारी-तिङन्त रूप के मेल से बनता है।

कर्तृ-सम्बन्धी रचना

मैं आया (आई) होऊँगा (-गी)	हम आए (आई) हों-गे (-गी)
तू आया (आई) हो-गा (-गी)	तुम आये (आई) हो-गे (-गी)
	आप आए (आई) हों-गे (-गी)
वह आया (आई) हो-गा (-गी)	वे आये (आई) हों-गे (-गी)

कर्म-सम्बन्धी रचना

एकवचन

मैं
तू
उस
हम ने पत्र (चिट्ठी) लिखा (लिखी) हो-गा (-गी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम
आप
उन्हों

बहुवचन

मैं
तू
उस
हम ने दो पत्र (दो चिट्ठियाँ) लिखे (लिखी) हों-गे (-गी)
तुम
आप
उन्हों

भाववाचक रचना

एकवचन तथा बहुवचन

मैं
तू
उस
हम ने पत्र-दो पत्रों को (चिट्ठी-दो चिट्ठियों को) लिखा होगा
तुम
आप
उन्हों

पूर्णतावाची भविष्यत् पर० +, पूर्व० (आ) +, सी० +, अके० + मुख्य चिह्नों द्वारा वर्णित होता है। अपने मुख्य अर्थ में वह वास्तविक व्यापार को व्यक्त करता है जो कि भविष्य में दूसरे व्यापार से पहले होता है, उदाहरणार्थ : ···तुम मेरे पास आओगे लेकिन मैं उस समय तुमसे बहुत दूर चला गया होऊँगा (47, 42), सुखदेव ने बताया कि यदि उसकी गिरफ़्तारी के समाचार से मकान बदल न लिया गया होगा तो प्रभात (शिव वर्मा) वहाँ मिल जायेगा (97, 5), मन्दिर की मूर्ति चोरी होगी, यह कल्पना भी पहले से इनके दिमाग में नहीं रही होगी (147, 50), सोचा कि सहारनपुर में तो अखबार ख़रीदा गया होगा, पहुँचकर पढ़ लेंगे (97, 12)।

मगर आधुनिक हिन्दी में यह काल रूप मुख्यतः अपने लाक्षणिक अर्थ में आता है, जो कि प्रयोग के कारण मुख्य अर्थ बन गया है। सामान्य भविष्यत् में यह रूप जब 'होना' क्रिया के साथ आता है, जो वृत्तिवाचक अर्थ रखती है तो निरपेक्षता (सुनिश्चितता) का अर्थ खो बैठता है और व्यापार की काल्पनिकता का अर्थ व्यक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता है। तब व्यापार समाप्त हुआ दिखता है। वह ज़्यादातर भूतकाल के अर्थ से सम्बन्ध रखता है, और बहुत कम स्थितियों में वर्तमान या भविष्यत् काल के अर्थ से सम्बन्ध रखता है। व्यापार पूर्णतया वास्तविक और एकल दिखता है, लेकिन वक्ता को पूर्ण विश्वास नहीं होता कि व्यापार वास्तव में कार्यान्वित हुआ, वक्ता को ऐसा लगता है कि व्यापार ने पूर्णता प्राप्त की।

अगर वाक्य में 'ज़रूर' और 'अवश्य' वृत्तिवाचक शब्द होते हैं तो कल्पना का अर्थ कमज़ोर पड़ जाता है और पहले स्थान पर विश्वस्तता की छाया होती है, हालाँकि वक्ता शक से पूर्णतः वंचित नहीं होता। उदाहरणार्थ : तुमने मई-जून में शहर के बाज़ारों में अण्डे के आकार के लाल-लाल फल बिकते देखे होंगे (50, 18), बीरवल—डी० एस० पी० ने मेरा नाम नोट कर लिया है। मिट्ठन भाई—ज़रूर कर लिया होगा (69, 54)।

भूतकाल में कल्पना : मैंने पन्द्रह सेर से ऊपर दुहकर आपके सामने दे दिया था। दे दिया होगा (94, 120), वैशाली का नाम तुमने तो सुना ही होगा (50, 18), शायद मोर्चे से बहुत बुरी ख़बर आयी होगी (29, 88), बाक़ी सवाल उसने कैसे किये होंगे, इसकी कल्पना की जा सकती है (17, 42), कहार सो गये होंगे (73, 32), कितनी देर सोया होऊँगा ? दो-चार मिनट (102, 111)।

संरचनात्मक-प्रतिबन्धित स्थितियों में जब कालवाचक मिश्र वाक्य के मुख्य हिस्से के विधेय में आता है तो पूर्णतावाची भविष्यत् काल पूर्णतावाची भूतकाल के समान क्षणिक पूर्ववर्तिता को, जो कि व्यापार का अनुवर्ती होता है, व्यक्त करता है। इन दोनों काल रूपों के प्रयोगों में सिर्फ़ यही भिन्नता होती है कि पूर्णतवाची भविष्यत् काल के लिए काल्पनिकता की छाया और विश्वास का अभाव स्वाभाविक है, उदाहरणार्थ : लीजिये अभी कुछ कदम ही चला होऊँगा कि श्री शम्भूनाथ ने अपनी बारीक आवाज़ में पुकारते हुए कहा···(19, 90), अभी बीस मिनट भी न गुज़रे होंगे कि एक स्वयंसेवक आकर खड़ा हो गया (69, 43), लेकिन शायद अभी गार्ड के डिब्बे तक पहुँचे भी न होंगे कि इंजन ने सीटी दे दी (8, 36)।

जब समान निषेधात्मक रचनाओं में आता है तो पूर्णतावाची भविष्यत् काल उस व्यापार को व्यवत करता है जो कि वक्ता की राय में या कल्पना में, अभी पूर्णतया कार्यान्वित न हुआ हो, उदाहरणार्थ : लेकिन वे शायद अभी गार्ड के डिब्बे तक पहुँचे भी न होंगे कि इंजन ने सीटी दे दी (8, 36), अभी बीस मिनट भी न गुज़रे होंगे कि एक स्वयंसेवक आकर खड़ा हो गया (69, 43)।

वर्तमान में कल्पना : लेकिन दूसरा आदमी भी तो भूखा बैठा होगा (108, 139), जब बाज़ार के चौक में जायें तो एक सफ़ेद दाढ़ी वाला आदमी वहाँ बैठा होगा (24, 110)। जैसा कि उदाहरणों से विदित है, यहाँ मुख्यतः दशासूचक क्रियाएँ आती हैं और समस्त रूप समावेशी अर्थ धारण करता है :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापार उक्ति के क्षण तक पूर्णता प्राप्त करता है और उक्ति के क्षण में भी कर्ता की परिणामी दशा के रूप में होता है। यह बात स्पष्टत: तब प्रकट होती है जबकि पूर्णतावाची अर्थ में पूर्णतावाची वर्तमान के रूपों के साथ पूर्णतावाची भविष्यत् काल का प्रयोग होता है, उदाहरणार्थ : मैं समझा सो गयी होगी। और तो सब सो गए हैं? (75, 82)।

भविष्यत् काल में कल्पना : आज़ाद ने वीरभद्र तिवारी और सतगुरु दयाल अवस्थी दोनों को ही सन्देश भेजा कि वे आकर अपने व्यवहार की सफ़ाई दें, इस समय कोई केन्द्रीय समिति तो थी नहीं। सम्भवत: सुरेन्द्र और आज़ाद के भी सामने यह बात हुई होगी। आज़ाद के सन्देश के उत्तर में अवस्थी ने पत्र लिखकर उत्तर दिया कि उस पर किए गए सन्देह झूठे और निराधार हैं पर मिलने नहीं आया (97, 130-131), हाँ, घर की हवा से इतना ज़रूर लग गया कि बाद में उस बात पर खूब महाभारत हुआ होगा। हूँ···हमने किया है! हुआ होगा (108, 80), फिर उसे अपनी चार इंच वाली टोप की याद आयी। कौन जाने, उसे चलाने की ज़रूरत पड़ी होगी (116, 74), ऐसे वस्त्र तो शायद मुझे अपने विवाह में भी न मिले होंगे (69, 167)।

संतत भविष्यत् काल

काल का यह रूप संतत कृदन्त के पुल्लिग (एकवचन तथा बहुवचन) के दो लैंगिक रूपों और स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप तथा सामान्य भविष्यत् काल में 'होना' क्रिया के पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के चार-चार रूपों के मिलन से बनता है :

मैं लिख रहा (रही) होऊँ-गा (-गी)	हम लिख रहे (रही) हों-गे (-गी)
तू लिख रहा (रही) हो-गा (-गी)	तुम लिख रहे (रही) हो-गे (-गी)
	आप लिख रहे (रही) हों-गे (-गी)
वह लिख रहा (रही) हो-गा (-गी)	वे लिख रहे (रही) हों-गे (-गी)

यह काल रूप पर०+, सी०+, अके०+, प्र०+ मुख्य चिह्नों द्वारा वर्णित होता है। अपने प्रत्यक्ष अर्थ में वह वास्तविक एकल प्रक्रियात्मक व्यापार को व्यक्त करता है जिसकी शुरुआत या कार्यान्विति उक्ति के क्षण के बाद होती है या उक्ति के क्षण के साथ मेल खाती हैं, उदाहरणार्थ : तू पहली गाड़ी से जाना। आदमी स्टेशन पर प्रतीक्षा कर रहा होगा (97, 91), अब वह आ रहा होगा, उसका प्यारा मदन! (28, 200), अगर ये मुसाफ़िर भी उसी तरफ़ ही जा रहे होंगे, तो हमारा सफ़र मज़े में कट जायेगा (47, 82), तुम्हीं ने कहाँ सोचा होगा कि जो आदमी बस में बैठकर आगे चला गया था, वह घण्टा भर बाद तुम्हारे कमरे में बैठा तुमसे बातें कर रहा होगा (52, 138), आ ही रहे होंगे (66, 86)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक हिन्दी में यह काल रूप लाक्षणिक अर्थ में भी आ सकता है। यह रूप भी निश्चितता की छाया खो बैठता है और व्यापार की काल्पनिकता को व्यक्त करना शुरू करता है। तब व्यापार एकल तथा वास्तविक होता है। वह वर्तमान या भूतकाल के किसी निश्चित क्षण के साथ सम्बन्ध रख सकता है। वक्ता व्यापार के सम्बन्ध में अपनी कल्पना व्यक्त करता है जो कि किसी विशेष समय में पूर्ण होता है।

वर्तमान में कल्पना : तब उसे याद आया कि नीलो के पास बैठा हुआ विमल उसकी प्रतीक्षा कर रहा होगा (59, 52), आपको यहाँ बैठने में तकलीफ़ हो रही होगी (149, 18), कुछ चमारों में शोर तो हो रहा है। होने दे यार ! साली रो रही होगी और क्या (103, 315), मिट्ठो इस वक्त मुझे दिल में कितना कायर और नीच समझ रही होगी (69, 57)।

भूतकाल में कल्पना : चेतन समझ गया, वह कैसे जागा और वह हुंकार क्या थी !—उसका छोटा भाई परसराम ज़रूर ही वहाँ कसरत कर रहा होगा (17, 15), वह कल्पना कर रही थी कि शहज़ादी वाक्स में क्या सोचती हुई वही चली जा रही होंगी (103, 262), ···खाँसी की तरह हँस रहे थे···हँस क्या रहे होंगे बेचारे ! मुँह से चाहे हँसें, दिल तो रोता ही होगा (65, 222)।

संभावनार्थ

आधुनिक हिन्दी में संभावनार्थ चार रूपों का वर्ग है, उनमें से एक संश्लेषणात्मक तिङन्ती है, और बाकी तीन विश्लेषणात्मक विकारी तिङन्ती रूप हैं। संभावनार्थ के सभी रूप कालवाचक नहीं होते, बल्कि कालसापेक्षता के अधिक सामान्य अर्थ को व्यक्त करते हैं।

संभावनार्थ के रूपों को प्राकारिक विवरण की दृष्टि से प्राकारिक रूपों में, जो कि कृदन्तपरक विश्लेषणात्मक रूपों द्वारा व्यक्त होते हैं, और अप्राकारिक रूपों में, जो कि तिङन्ती संश्लेषणात्मक रूप द्वारा व्यक्त होता है, बाँट सकते हैं :

रूप/प्रकार	अप्राकारिक	अपूर्ण	पूर्ण	संतत
संश्लेषणात्मक	लिखे	—	—	—
विश्लेषणात्मक	—	लिखता हो	लिखा हो	लिख रहा हो

संश्लेषणात्मक (सरल) रूप

यह रूप क्रिया के चार तिङन्ती रूपों द्वारा व्यक्त होता है, जो कि क्रिया की धातु के साथ पुरुषवाचक प्रत्यय जोड़ने से बनते हैं : 'ऊँ'- एकवचन, उत्तम पुरुष;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ए'—मध्यम तथा अन्य पुरुष, एकवचन; 'एँ'—उत्तम तथा अन्य पुरुष, बहुवचन तथा मध्यम शिष्ट पुरुष, बहुवचन; 'ओ'—मध्यम पुरुष, बहुवचन :

मैं लिख-ऊँ (लिखूँ)	हम लिख-एँ (लिखें)
तू लिख-ए (लिखे)	तुम लिख-ओ (लिखो)
	आप लिख-एँ (लिखें)
वह लिख-ए (लिखे)	वे लिख-एँ (लिखें)

अगर क्रिया की धातु दीर्घ स्वर (ई या ऊ) में समाप्त होती है तो दीर्घ स्वर लघु स्वर में परिवर्तित हो सकता है। उदाहरणार्थ :

सी-ए = सि-ए पी-ए = पि-ए छू-ए = छु-ए

'देना', 'लेना', तथा 'होना' क्रियाएँ अनियमित तौर पर संभावनार्थ के संश्लेषणात्मक रूप बनाती हैं : 'देना' और 'लेना' क्रियाओं के पुरुषवाचक प्रत्यय अंत्यलोप धातु के साथ मिलते हैं (जिसमें स्वर नहीं होता); 'होना' क्रिया के साथ उत्तम पुरुष के एकवचन तथा मध्यम पुरुष के बहुवचन के पुरुषवाचक प्रत्यय जुड़ते हैं, मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष के रूप धातु के साथ समाकार हैं, और उत्तम, अन्य तथा मध्यम पुरुष के शिष्ट रूप बहुवचन में नासिकीकृत धातु होते हैं :

मैं दूँ, लूँ, होऊँ	हम दें, लें, हों
तू दे, ले, हो	तुम दो, लो, हो
	आप दें, लें; हों
वह दे, ले, हो	वे दें, लें, हों

साधारणतया यह समझा जाता है कि धातु जिसका दीर्घ स्वर में अन्त होता है (आ, ई, ऊ, ओ) और पुरुषवाचक प्रत्यय (ए, एँ) के बीच सुश्रव्य ध्वनि 'य' और 'व' आ सकती है, और सुश्रव्य ध्वनि 'य' पुरुषवाचक प्रत्यय 'ए', 'एँ' का स्थान ले भी सकती है और बहुवचन में नामिकीकरण अपना सकती है, उदाहरणार्थ : जाए-जाये, जावे-जाय (एकवचन) और जाएँ-जायें, जावें-जायँ (बहुवचन)। यह बात उपभाषाओं के प्रभाव से सम्बन्धित है और अप्रचलित है। इसलिए सुश्रव्य ध्वनियों को अनियमित गिना जायेगा।

संभावनार्थ का संश्लेषणात्मक रूप छिपे हुए संभाव्य तथा वांछनीय व्यापार व्यक्त करता है, जो कि मुख्यतः वर्तमान तथा भविष्यत् काल के अर्थ के साथ सम्बन्ध रखता है, उदाहरणार्थ : (वर्तमान कालार्थ में)—आप लोग यहाँ भीड़ न लगायें और न किसी को भला-बुरा कहें (69, 39), आज यहाँ···कौन पण्डित ऐसा है जो मेरे तलवे सहलाने में अपनी इज़्ज़त न समझे ? (73, 41), ···उन सबमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई-न-कोई बात छिपी रहती है, चाहे वह आजकल हमारी समझ में न आये (73, 108); (भविष्यत् काल के अर्थ में)---मेरी समझ में सवेरे चलें (73, 67), अगर वह माया से विवाह करे तो तुम्हें खुशी होगी ? (147, 60), इन्द्रमणि—···जाऊँ, उसे बुलाऊँ ? सुखद—तुम क्यों जाओगे, मैं आप चली जाऊँगी (69, 228)।

संभावनार्थ के ये रूप वह संभाव्य या वांछनीय व्यापार को कम व्यक्त करते हैं जो कि भूतकाल के अर्थ में आता है, उदाहरणार्थ : निश्चय न कर सके कि हाथ मिलाएँ या झुककर सलाम करें (69, 99-100), ···यह नहीं हो सकता था कि वे न आएँ (109, 44)।

संभावनार्थ के संश्लेषणात्मक रूप आम तौर पर एकल संभाव्य या वांछनीय व्यापार को व्यक्त करते हैं, उदाहरणार्थ : भीतर-ही-भीतर मृणाल बेहद डर भी रही थी कि कहीं एकदम फूटकर रो न पड़े (109, 42), नहीं, नहीं ठहरिये मैं देख लूँ (73, 72), अभी तो कोशिश थी उसे उसके घर ही भेज दूँ (108, 12)।

ये रूप सामान्यकृत संभाव्य या वांछनीय व्यापार को कम ही व्यक्त करते हैं, उदाहरणार्थ : यदि कोई मांस न खाये तो बकरे की गर्दन पर छुरी क्यों चले (73, 110), भोजन एक ही समय बने···(73, 51)।

संभावनार्थ का अपूर्ण रूप

यह रूप संभावनार्थ प्रथम कृदन्त के लैंगिक विकारी रूपों तथा 'होना' क्रिया के तिङन्ती रूपों के मिलन से बनता है। इस तरह, संभावनार्थ का अपूर्ण रूप पुल्लिग के दो लैंगिक रूपों (एकवचन और बहुवचन) और स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप एवं संभावनार्थ में 'होना' क्रिया के चार तिङन्ती रूपों के मिलन से बनता है :

मैं लिख-ता (-ती) होऊँ	हम लिख-ते (-ती) हों
तू लिख-ता (-ती) हो	तुम लिख-ते (-ती) हो
	आप लिख-ते (-ती) हों
वह लिख-ता (-ती) हो	वे लिख-ते (-ती) हों

संभावनार्थ के अपूर्ण रूप संभाव्य नित्यताबोधक अपूर्ण व्यापार को व्यक्त करते हैं जो कि मुख्यतः निश्चयार्थ में विधेय-क्रिया के साथ एक ही काल सतह पर होता है, उदाहरणार्थ : ···उसका मन ऐसा प्रसन्न था मानो वह किसी बड़े रमणीक स्थान की सैर करके आता हो (73, 1·5)—भूतकाल के अर्थ में; यदि उसे भय ही लगता हो तो भी कहने की क्या आवश्यकता है (75, 48)—वर्तमान के अर्थ में; विधान-निर्माण के इस कार्य में जनता का प्रत्यक्ष योगदान तभी मिल सकेगा जब जनता पढ़ी-लिखी हो, राजनीति में रुचि लेती हो और राजनीतिक पार्टियों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ अपनी सहमति या अपना विरोध प्रकट करने का साहस रखती हो (159, 220)—भविष्यत् काल के अर्थ में।

संभावनार्थ का अपूर्ण रूप बहुधा संभाव्य एकल व्यापार को व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : ···बड़े अनुरोध और भर्राये गले से मानो शब्दों को बलात् ठेलकर कहते हों, वे बोले थे···(109, 40), ···मछलियाँ ऐसी मालूम होती थीं मानो किसी सुन्दरी के चंचल नयन महीन घूँघट से चमकते हों (73, 79), साईंदास को इस समय यह ख़याल हुआ कि कदाचित् परसाल से रुपये आते हों (69, 103)।

मगर यह रूप संभाव्य सामान्यकृत व्यापार को भी व्यक्त कर सकता है, उदाहरणार्थ : यदि प्रतिद्वन्द्वी का कोई मोहरा मरता हो तो उसे मारना आवश्यक है···(7, 89), संभव है कभी-कभी बाज़ार की तरफ़ चला जाता हो···(73, 86), यह सुकुमारी, जिसके कोमल अंगों में शायद हवा भी चुभती हो···(69, 32)।

संभावनार्थ का पूर्ण रूप

यह रूप द्वितीय कृदन्त के पुल्लिग (एकवचन तथा बहुवचन) के दो लैंगिक रूपों तथा स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप एवं कर्तृ-सम्बन्धी रचना में संभावनार्थ की 'होना' क्रिया के चार तिङन्ती रूपों के मेल से बनता है; सकर्मक द्वितीय कृदन्त के पुल्लिग के दो लैंगिक रूपों तथा स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप तथा कर्म-सम्बन्धी रचना में 'होना' क्रिया के संभावनार्थ के दो तिङन्ती रूपों के मेल से बनता है, भाववाचक रचना में पुल्लिग के एक लैंगिक रूप तथा संभावनार्थ की 'होना' क्रिया के एक रूप के मेल से बनता है।

कर्तृ-सम्बन्धी रचना

मैं आया (आयी) होऊँ	हम आये (आयी) हों
तू आया (आयी) हो	तुम आये (आयी) हो
	आप आये (आयी) हों
वह आया (आयी) हो	वे आये (आयी) हों

कर्म-सम्बन्धी रचना

एकवचन

मैं
तू
उस
हम ने पत्र (चिट्ठी) लिखा (लिखी) हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम
आप
उन्हों

बहुवचन

मैं
तू
उस
हम ने दो पत्र (दो चिट्ठियाँ) लिखे (लिखी) हों
तुम
आप
उन्हों

भाववाचक रचना

एकवचन तथा बहुवचन

मैं
तू
उस
हम ने पत्र-दो पत्रों को (चिट्ठी-दो चिट्ठियों को) लिखा हो
तुम
आप
उन्हों

संभावनार्थ का पूर्ण रूप संभाव्य व्यापार को व्यक्त करता है, जो कि निश्चयार्थ में साथ आने वाली सहायक क्रिया के पूर्ववर्ती हो सकता था, अगर वास्तव में होता, तो, उदाहरणार्थ : कौन जानता! शायद मर भी गये हों (69, 195), सोचा, गुप्ताजी के यहाँ न चली गयी हो (109, 41), इस तरह लौट आऊँगा जैसे कुछ भी न हुआ हो (108, 26)।

संभावनार्थ का पूर्ण रूप संभाव्य व्यापार को व्यक्त करता है जो कि दूसरे संभाव्य व्यापार के पूर्ववर्ती होता है, जो आम तौर पर संभावनार्थ के संश्लेषणात्मक रूप द्वारा व्यक्त होता है, उदाहरणार्थ : जी, अगर यहाँ का काम समाप्त हो गया हो तो चलिये आपको जीवनजी से मिला दूँ (147, 44), मेरी आँखें फूट जायें, अगर मैंने उनकी तरफ़ ताका भी हो। मेरी जीभ गिर जाये, अगर मैंने उससे एक बात भी की हो (73, 34), अपने पिता से पहले तुमने किसी ऐसे आदमी को मरते देखा है जिसे साँप ने काटा हो ? (147, 38)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्भावनार्थ का पूर्ण रूप पूर्णतावाची अर्थ का सम्भाव्य व्यापार कम ही व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : एक बार उसकी ओर दबी आँखों से देखा, फिर जैसे हाथ-पाँव फूल गये हों (73, 80), सम्भव है अब उन्होंने घर बसा लिया हो··· (75, 8), महाशय विट्ठलदास इस समय ऐसे खुश थे मानो उन्हें कोई सम्पत्ति मिल गयी हो (73, 66)।

सम्भावनार्थ का पूर्ण रूप उस सम्भाव्य व्यापार को व्यक्त कर सकता है जो कि दूसरे सम्भाव्य व्यापार के साथ एक ही काल की सतह पर हो सकता है या निश्चयार्थ में साथ आने वाली क्रिया के व्यापार के साथ हो रहा हो, उदाहरणार्थ : ···परन्तु जब उन्होंने देखा हो कि ज़मीन ख़रीदने की बात केवल एक ढकोसला ही था, तो उनका ध्यान पृथ्वीपाल सिंह की बात की ओर गया हो (75, 117), जब वह ज़मीन पर गिर पड़ी तब उसे जैसे होश आ गया हो (69, 47), फिर सोचा, कहीं यहाँ कोई दुर्घटना तो नहीं हो गयी—आग लग गयी हो या किसी ने किसी का खून कर दिया हो (108, 135)।

संभावनार्थ का संतत रूप

यह रूप संतत कृदन्त के लैंगिक रूपों से तथा सम्भावनार्थ में 'होना' क्रिया के तिङन्ती रूपों के मेल से बनता है। इस तरह सम्भावनार्थ का संतत रूप पुल्लिग (एकवचन या बहुवचन) के दो लैंगिक रूपों और स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप एवं 'होना' क्रिया के चार तिङन्ती रूपों के मिलन से बनता है :

मैं लिख रहा (रही) होऊँ	हम लिख रहे (रही) हों
तू लिख रहा (रही) हो	तुम लिख रहे (रही) हो
	आप लिख रहे (रही) हों
वह लिख रहा (रही) हो	वे लिख रहे (रही) हों

सम्भावनार्थ का संतत रूप सम्भाव्य अपूर्ण व्यापार को व्यक्त करता है जो कि ठीक दिये गये काल के क्षण पर होता हो, जो कि दूसरे व्यापार द्वारा निर्धारित होता है जो आम तौर पर पूर्ववर्ती प्रसंग या निश्चयार्थ में क्रिया द्वारा दिया गया होता है। इस तरह यह मान सकते हैं कि सम्भावनार्थ के संतत रूप का व्यापार, आम तौर पर, वास्तविक व्यापार की पृष्ठभूमि या पूर्ववर्ती प्रसंग की पृष्ठभूमि में होता है, उदाहरणार्थ : फिर तो उसने एक-एक संदूक, एक-एक कोना छान मारा, मानो कोई सुई ढूँढ़ रही हो···(73, 83), मुझे लगा, जैसे वह निरन्तर मेरी ओर देख रहा हो···(13, 15), भय लगा हुआ था कि देहातियों का कोई दल पीछे से न आ रहा हो (69, 174), और जो कोई देख रहा हो ! (102, 115)।

आधुनिक हिन्दी में सम्भावनार्थ क्रियार्थक श्रेणी में आता है जो कि अधिकतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थितियों में मिश्र वाक्य की संरचना के साथ सम्बन्धित होती है। वाक्य के प्रकार के आधार पर सम्भावनार्थ के रूप में भेद कर सकते हैं। उदाहरणार्थ : सम्भावनार्थ का संतत रूप तुलनात्मक आश्रित वाक्यों में सम्भाव्य तुलना को व्यक्त करने के काम आता है।

वैसे कई स्थितियों में मुख्य वाक्य का वृत्तिवाचक सार आश्रित वाक्य में सम्भावनार्थ के प्रयोग को प्रतिबन्धित करता है। मुख्य वाक्य में शब्दों के अर्थ भी सम्भावनार्थ के प्रयोग को प्रतिबन्धित करते हैं। ये सब बातें मिश्र वाक्यों की संरचनात्मक श्रेणियों को बनाने में मदद करती हैं जिनमें मुख्य वाक्य की किसी भी रचना में, मुख्य वाक्य की विशेष रचना के लिए या मुख्य वाक्य के मुख्य शब्दों के विशेष अर्थ में सम्भावनार्थ का प्रयोग अपरिहार्य है। दूसरी तरफ़ मिश्र वाक्यों के संरचनात्मक प्रकारों को बता सकते हैं, जिनमें सम्भावनार्थ का प्रयोग सम्भव है लेकिन ज़रूरी नहीं। यों एक तरफ़ से सम्भावनार्थ के रूपों का प्रयोग संरचनात्मक-प्रतिबन्धित और शब्दार्थक-प्रतिबन्धित हो सकता है और दूसरी तरफ़ वैकल्पिक हो सकता है। आइये, मिश्र वाक्य के मुख्य प्रकारों में सम्भावनार्थ के रूपों के प्रयोग का अध्ययन करें।

सह-सम्बन्धीसा र्वनामिक वाक्य (संयोजक-सार्वनामिक प्रकार)। इस मिश्र वाक्य के इस प्रकार में विधेय में निषेध की उपस्थिति सम्भावनार्थ के प्रयोग को अनिवार्य कर देती है, उदाहरणार्थ : इतना सब्र न था कि उन्हें ठण्डा हो जाने दे (157, 12), ···हमारे इतना भी वश में नहीं कि उस यन्त्र को चाबी न दें (158, 16), फिर हर किसान के पास इतनी भूमि नहीं होती कि वह ट्रैक्टर का पूरा उपयोग कर सके (115, 28), ऐसी बात नहीं थी कि वह ताश का खेल बिलकुल न जानता हो (158, 18)।

निश्चयात्मक वाक्यों में सम्भावनार्थ का प्रयोग वैकल्पिक होता है, उदाहरणार्थ :

सम्भावनार्थ	**निश्चयार्थ**
ऐसी चीख-पुकार, भाग-दौड़ मच गयी जैसे कहीं भूचाल आ गया हो··· (108, 7);	तुम तो ऐसी बात करते हो मानो इस देश में पैदा ही नहीं हुए···(73, 107);
उन्हें ऐसा जान पड़ा कि सारी प्रकृति एक विराट व्यापक नृत्य की गोद में खेल रही हो (69, 69)।	ऐसा मालूम होता था मानो उसका कायाकल्प हो गया (69, 140)।

व्याख्यात्मक वाक्य मिश्र वाक्यों के इस प्रकार में सम्भावनार्थ के रूपों का प्रयोग शब्दार्थक-प्रतिबन्धित होता है, और यह प्रतिबन्ध मुख्य वाक्य की संरचना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा पक्का होता है। मुख्य शब्द 'कि' स्वरूपवाचक समुच्चयबोधक की उपस्थिति में अपने शब्दार्थ में अनिवार्य रूप से काल्पनिकता की छाया रखते हैं। इन शब्दों को काल्पनिक अर्थ की प्रकृति के कारण निम्नलिखित वर्गों में बाँट सकते हैं :

(1) आवश्यकताबोधक अर्थ के शब्द : 'आवश्यक', 'ज़रूरी', 'योग्य', 'लायक', 'क़ाबिल', 'चाहिए' आदि जो कि उद्देश्यवाचक मिश्र वाक्य के मुख्य हिस्से में आते हैं जैसे : इसलिए यह भी आवश्यक है कि इस पर सरकारी नियन्त्रण हो (115, 260), अतः यह ज़रूरी है कि···योजनाएँ अपनायी जाएँ (153, 12), हमारा कर्त्तव्य है कि हम उन्हें सुमार्ग पर लायें···(73, 148), वह खुद इस योग्य नहीं कि सारनो उसे चाहे (75, 106), और क्या बातें वास्तव में इस लायक थीं कि उन पर बैठकर··यों रोया जाये (18, 49), इसके लिए लाज़मी है कि यह काम अधिकतर सम्पन्न लोगों को सौंपा जाये (IV, 8-4-1974), ···मन्त्री इसके लिए बाध्य तो नहीं है कि वह ··कोई ग़ैर-कानूनी और अनैतिक काम करें (IV, 7-9-1974), ···हमें इसकी ज़रूरत है कि उस क्षेत्र में हम घटनाओं को प्रभावित कर सकें (IV, 5-9-1974), लेकिन उद्योग यह होना चाहिए कि उन कुप्रथाओं का सुधार किया जाये (73, 75)।

(2) शब्द जिनका अर्थ इच्छाबोधक होता है जो कि खुद बाँटे जा सकते हैं : (क) क्रियाएँ और संज्ञाएँ जिनका प्रत्यक्ष अर्थ इच्छाबोधक होता है : 'चाहना', 'इच्छा (इच्छा करना)', 'जी चाहना', 'मन करना' 'अभिलाषा (अभिलाषा रखना)', 'इरादा (इरादा रखना, करना)' आदि। उदाहरणार्थ : तुम चाहती हो कि मैं मर जाऊँ? (158, 27), मैं नहीं चाहता कि कोई मुझे हिन्दुस्तानी कहे या समझे (69, 18), जी चाहता है कि विष खा लूँ (73, 112), मुझे यह हार्दिक अभिलाषा रहती है कि आपकी कोई सेवा करूँ (73, 106), हमारी इच्छा यह थी कि वह हम लोगों को साहब समझे (69, 40), मन होता था कि अभी छज्जे से कूदकर आत्महत्या कर डालूँ (108, 102), मन में एक प्रबल आवेश उठा कि किसी से जाकर पूछूँ (108, 46), उत्सुकता हुई कि देखूँ (108, 47), अब भी उनका इरादा था कि कुछ सजावट के सामान और मोल ले लें (69, 102); (ख) संज्ञाएँ जो कि संकल्प की प्रक्रियाएँ व्यक्त करती हैं : 'कोशिश', 'प्रयत्न', 'प्रयास', 'यातना', 'निश्चय', 'निर्णय', 'फ़ैसला', 'चिन्ता' आदि। उदाहरणार्थ : अभी तो कोशिश करूँगा कि उसे उसके घर ही भेज दूँ (108, 12), निश्चय न कर सके कि हाथ मिलाएँ या झुककर सलाम करें (69, 99-100),···उसे चिन्ता हुई कि रुपयों का क्या प्रबन्ध करूँ (73, 196), मेरी ज़िद थी कि मसाला बनाने का काम मैं करूँ (97, 34), ···तय हुआ कि मैं जुलाई के पहले सप्ताह में दिल्ली पहुँच जाऊँ (97, 86), कोई इसी धुन में है कि शूद्र और चण्डाल सब क्षत्रिय हो जायें (73, 108), वह इसी संकल्प-विकल्प में पड़े हुए थे कि सुमन के पास चलूँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या न चलूँ (73, 85); (ग) निश्चित गुण का अर्थ अपनाने वाले विशेषण : 'अच्छा', 'उचित', 'मुनासिब', 'ठीक', 'महत्त्वपूर्ण' आदि, जो कि इन वाक्यों में इच्छा का बोध कराते हैं, उदाहरणार्थ : इससे कहीं अच्छा है कि आप मुझे यह काम सौंपें (62, 32), इससे तो कहीं उत्तम यही है कि डूब जाऊँ (73, 155), ···यही उचित है कि आप भी सदान के लिए कोई बात उठा न रखें (73, 52), मुनासिब यह है कि साहब अभी अपना लिबास बदल डालें (24, 21)।

(3) 'डर, भय, अनिच्छा' के अर्थ के शब्द—'डरना', 'डर', 'भय' 'घबराना', 'हैरान' आदि, उदाहरणार्थ : भीतर-ही-भीतर मृणाल बेहद डर रही थी कि कहीं एकदम फूटकर रो न पड़े···(109, 42), मुझे डर था कि कोई दूसरा आदमी न रख लिया हो (75, 170), घबराते थे कि बात करते बने या न बने (69, 99), पाली हैरान था कि अब वह क्या करे (75, 174), भय लगा हुआ था कि देहातियों का दल पीछे से न आ रहा हो (69, 174)। संरचनात्मक तौर पर ये वाक्य मुख्यतः निश्चयात्मक मुख्य हिस्से और निषेधात्मक आश्रित हिस्से से बने होते हैं। मुख्य शब्द में निषेध की उपस्थिति में आश्रित हिस्से में आम तौर पर निश्चयार्थ के रूप आते हैं।

(4) उद्बोध के अर्थ के शब्द जो बाँटे जा सकते हैं :

(क) शब्द जो कि उद्बोध के प्रत्यक्ष अर्थ में आते हैं—'माँगना', 'कहना' ('हुक्म' के अर्थ में), 'देना' ('अनुमति' के अर्थ में, 'इजाज़त' के अर्थ में), 'आदेश', 'हुक्म', 'हिदायत', 'आज्ञा' (स्वतन्त्र रूप से या 'देना' क्रिया के साथ), 'माँग', 'आग्रह', 'प्रार्थना', 'अपील', 'आह्वान', 'निवेदन', 'अनुरोध', 'मिन्नत' (स्वतन्त्र रूप से या 'करना' क्रिया के साथ), उदाहरणार्थ : भारतीय टीम के सदस्यों से कहा गया कि दस सितम्बर तक यहाँ पहुँच जाएँ (IV, 1-9-1974), डाक्टर कहते हैं कि इतना परिश्रम न करूँ (109, 104), मुझे भी आज्ञा दो कि कहीं चलकर चार पैसे कमाने का उपाय करूँ (73, 117), ···मन्त्रालय ने निर्देश भी दे दिया कि···चावल ही केरल को बेचा जाए (IV, 24-6-1974), श्री गुप्ता ने प्रधानमन्त्री से अपील की कि वे विदेशों में अपने दूतावासों को निर्देश दें कि वे सरकारी स्तर पर भारत के पक्ष को समझाएं (IV, 22-8-1974), मित्र लोग आग्रह कर रहे हैं कि धूमधाम से आनन्दोत्सव किया जाये (73, 71), मैं फिर खुदा से दुआ करती हूँ कि वह हमारे दिलों को अपनी रोशनी से रोशन करे (73, 220), कार्यकारिणी ने···राज्य सरकार से यह माँग भी की कि वह···सख्त कदम उठाये (IV, 24-6-1974), मैं तो भगवान से यही प्रार्थना करती हूँ कि मुझे सद्बुद्धि दे, बल दे (109, 106), कई दिन से वह चैनलाल पंसारी से तकाज़ा कर रहा था कि वह उसे शहर की सैर करा लाये (75, 30), ···हाथ जोड़ने लगी कि किसी को बताऊँ (75, 183); (ख) शब्द जो कि प्रसंग में उद्बोध का अर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखते हैं। जहाँ पर इस अर्थ का पता नहीं चलता, वहाँ निश्चयार्थ के रूप प्रयोग होते हैं; मुख्य शब्दों की हैसियत से यहाँ पर विभिन्न शब्दार्थ के शब्द आते हैं, उदाहरणार्थ : उन्होंने कांग्रेसी सदस्यों पर इस बात के लिए दबाव डाला है कि वे संसदीय समिति द्वारा जाँच कराने की माँग को छोड़ दें (IV, 2-9-1964), अध्यक्ष ने···सुझाव दिया कि अभी···फिर बैठक हो (IV, 7-9-1974), जयचन्द्रजी ने परामर्श दिया कि मैं अपने सदस्यों की संख्या और हथियारों का संग्रह बढ़ाता जाऊँ (97, 31), एक दिन इन्द्रपाल को सावधान कर दिया कि वह आने वाली रात किसी मुसाफ़िर को अपने पास टिक जाने के लिए उत्साहित न करे (97, 50), धर्मपाल ने सुझाया कि हंसराज शायद कोई ऐसा प्रबन्ध कर दे कि बिना बिजली के तार लगाते ही काम हो जाये (97, 62)।

(5) 'उद्देश्य और अभिप्राय' के अर्थ के शब्द—'अभिप्राय', 'प्रयोजन', 'उद्देश्य', 'लक्ष्य', 'मकसद', 'मतलब', 'अर्थ' आदि; उदाहरणार्थ : अभिप्राय यह था कि हमारी योजना और प्रयत्न को एक व्यक्तिगत चीज न समझ लिया जाये (97, 49), ···प्रस्ताव का एकमात्र मकसद यही है कि···किसी तरह मामले को ख़त्म कर दिया जाये (IV, 6-9-1974), प्रयोजन था कि···टिकट की ओर ध्यान आकर्षित न हो (97, 15), ···नीति का मुख्य लक्ष्य यह है कि अमरीका···कच्चा माल व व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त हों (IV, 5-9-1974)।

(6) 'शक, अप्रामाणिकता' के अर्थ के शब्द—'सन्देह', 'शंका', उदाहरणार्थ : तिस पर भी उसको यह सन्देह हो रहा था कि कहीं इस बहाने से उसे छिपा न दिया हो (73, 48), ···शंका हुई कि उसी ने हँसी में छिपाकर रखा हो (73, 83)।

(7) 'सम्भावना' के अर्थ के शब्द—'सम्भव', 'मुमकिन', 'अवसर', 'मौका', उदाहरणार्थ : सम्भव है कि वह···मेम्बरों से आश्रम की प्रशंसा करे (73, 138), ···आज तक कभी वह मौका नहीं आया कि मुझे युद्ध क्षेत्र छोड़ना पड़ा हो··· (108, 57), ···यह नहीं हो सकता था कि वे न आयें (109, 44), ···यह असम्भव है कि पकड़ने वाले न आयें (97, 75), यह गैर-मुमकिन है कि वे औरतें ···मेहनत और मज़दूरी की ज़िन्दगी बसर करने पर राज़ी हो जायें (73, 183)।

(8) निकट अनुभव के अर्थ के शब्द—'लगना', 'जान पड़ना', 'प्रतीत होना', 'विदित होना', 'मालूम होना' आदि, जिनका सामान्य अर्थ 'मालूम होना' होता है। आश्रित वाक्य यहाँ समुच्चयबोधक 'कि', 'जैसे' और 'मानो' के द्वारा जुड़ते हैं, उदाहरणार्थ : इन्हें यह नीति-संगत मालूम होता है कि खालाजान को माहवार ख़र्च दिया जाये (69, 157), माया को लगता था मानो समय का चक्र रुक गया हो (147, 61), मुझे लगा जैसे उन्होंने भरे बाज़ार में मुझे गाली दे दी हो (108, 151), ···सुखराम को लगा था जैसे पुरवैया के थपेड़ों से बादल झूमकर चमके हों···(103, 134)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(9) शर्त के अर्थ में शब्द—'शर्त', 'दाँव' (दाँव करना), 'उपाय', 'तरीका' आदि, उदाहरणार्थ : शर्त केवल यह है कि हम समस्याओं को यथार्थ दृष्टि से देखें… (IV, 11-9-1974), सरकार को सबसे सीधा उपाय यही सूझता कि पाबन्दी लगा दी जाये… (IV, 24-6-1974)।

जैसा कि उदाहरणों से विदित है कि व्याख्यात्मक वाक्य यहाँ चार संरचनात्मक रूपान्तरों में आता है : व्याख्यात्मक कर्म-सम्बन्धी [तुम चाहती हो कि मैं मर जाऊँ? (158, 27]; व्याख्यात्मक उद्देश्य-सम्बन्धी [सबसे ज़रूरी यह है कि उन लोगों की तेज़ी से तलाश की जाये… (IV, 11-9-1974]; व्याख्यात्मक विधेयवाचक [सरकार का हुक्म है कि लगान किराये के साथ वसूल किया जाये (69, 10)]; व्याख्यात्मक तुलनावाचक [मुझे लगा जैसे वह निरन्तर मेरी ओर देख रहा हो (13, 15)]।

सम्भावनार्थ के रूपों का शब्दार्थक-प्रतिबन्धित प्रयोग का यह मतलब नहीं है कि वाक्यों में ऊपर गिनाये गये शब्दों के वर्गों के अन्तर्गत ही सम्भावनार्थ के रूप अवश्य आ सकते हैं। यह बात सिर्फ़ उन शब्दों के वर्गों के लिए ही पक्की तरह से कह सकते हैं जिनमें आवश्यकताबोधक, इच्छाबोधक (मुख्य श्रेणी) और उद्‌बोधक (मुख्य श्रेणी) अर्थ के शब्दों का वर्ग आता है। बाक़ी शब्दों के वर्गों में, विशेषकर जब व्यापार का भविष्यत् काल का अर्थ होता है निश्चयार्थ के रूप आ सकते हैं। सम्भावनार्थ के रूप आम तौर पर भूतकाल के अर्थ में व्यापार के लिए ज्यादा प्रयोग में आते हैं।

उद्देश्यवाचक वाक्य : इन मिश्र वाक्यों की श्रेणी में सम्भावनार्थ के रूपों का प्रयोग शब्दार्थक-प्रतिबन्धित के अलावा संरचनात्मक-प्रतिबन्धित होता है, जो कि विशेषकर आश्रित वाक्यों के लिए सही है, जो 'ताकि' समुच्चयबोधक द्वारा जोड़े जाते हैं, उदाहरणार्थ : मैंने अपने कमरे का दरवाज़ा बन्द कर लिया ताकि बाहर किसी प्रकार की आवाज़ न जाये (109, 101), अगले दिन किले को एक पुलिस गार्ड भेजने के लिए लिखा गया ताकि मूर्ति संरक्षण में नयी दिल्ली जा सके (147, 163), वह जल्दी से उठे कि घड़ी को ठीक कर दें (69, 93)।

अनुमतिवाचक वाक्य : सम्भावनार्थ के रूपों का मिश्र वाक्यों की इस श्रेणी में प्रयोग शब्दार्थक और संरचनात्मक दृष्टि से अनिवार्य होता है अगर आश्रित वाक्य 'चाहे', 'भले' शब्दों द्वारा जोड़े जाते हैं, उदाहरणार्थ : लेकिन आज उसने मुलाकात करने का निश्चय कर लिया है, चाहे कितनी देर क्यों न हो जाये (73, 69), दूसरों की मज़दूरी करते उन्हें नहीं रुचता भले ही भूखे रह जायें (115, 367), …वह चाहे धन्नासेठ ही क्यों न हों, उसकी ओर आँख उठाकर न देखूँ (73, 165), भले ही तेरी नकेल प्यारी की पूँछ में बँधी हो, पर मेरी नकेल तो तेरी पूँछ से बँधी है (103, 92)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुमतिवाचक समुच्चयबोधक के सम्भाव्य छोड़ने में सम्भावनार्थ के रूपों का प्रयोग मुहावरेदार पदबन्ध 'कितना···(कैसा···) क्यों न हो' द्वारा सम्भव किया जाता है, उदाहरणार्थ : वह कितना ही कुकर्मी, अधर्मी क्यों न हो, पर आप उसे जिस ओर चाहें ले जा सकते हैं (69, 102)।

संकेतवाचक वाक्य : सम्भावनार्थ के रूपों का मिश्र वाक्यों की इस श्रेणी में प्रयोग शब्दार्थक तौर पर अनिवार्य है, अगर आश्रित वाक्य में या वाक्यों के दोनों हिस्सों में सम्भाव्य व्यापार भविष्यत् काल के अर्थ में व्यक्त होता है, उदाहरणार्थ : यदि मेरे प्राण भी आपके काम में आ सकें तो मुझे आपत्ति न होगी (73, 106), जी, मेरा बस चले तो उन्हें टाउन में भी घुसने न दूँ (147, 25), एक कुआँ बनवा दिया जाये तो सदा के लिए नाम हो जायेगा (73, 111), मानो तो एक बात कहूँ (147, 39)।

इस श्रेणी के वाक्यों में मुख्यतः सम्भावनार्थ के सरल संश्लेषणात्मक रूप प्रयोग होते हैं। पूर्ण रूपों का प्रयोग इस बात की ओर संकेत देता है कि सम्भाव्य व्यापार दूसरे सम्भाव्य व्यापार से पहले भी हो सकता था, जो कि भविष्यत् काल का अर्थ रखता है, उदाहरणार्थ : मेरी आँखें फूट जाएँगी, अगर मैंने उसकी तरफ़ ताका हो। मेरी जीभ गिर जाए, अगर मैंने उससे एक बात की हो (73, 34)।

तुलनावाचक वाक्य : सम्भावनार्थ के रूपों का मिश्र वाक्यों की इस श्रेणी में प्रयोग शब्दार्थक तौर पर उन स्थितियों में अनिवार्य है जब कि तुलना काल्पनिक उपाधि के साथ हो रही हो जो कि आश्रित वाक्य में आती है, अर्थात् मिश्र वाक्यों की इस श्रेणी में वास्तविक रूप से मौजूदा घटना कैसी हो सकती है जो कि मुख्य वाक्य में दी जाती है अगर आश्रित वाक्य में काल्पनिक उपाधि होती है। आश्रित वाक्य 'जैसे' तथा 'मानो' समुच्चयबोधकों द्वारा जोड़े जाते हैं। वाक्य का विधेय-वाचक हिस्सा मुख्यतः सम्भावनार्थ के पूर्ण रूपों, अपूर्ण रूपों या संतत रूपों द्वारा दिया जाता है।

आश्रित हिस्से में सम्भावनार्थ के पूर्ण रूप इस बात का संकेत देते हैं कि वास्तविक घटना जो कि वाक्य के मुख्य हिस्से में व्यक्त होती है, काल्पनिक पूर्ववर्ती उपाधि का परिणाम हो सकती थी। उदाहरणार्थ : उसका खून खौलने लगा, मानो उसके सिर पर खून सवार हो गया हो (69, 47), आज मैंने पिता में एक विह्वलता देखी थी, जैसे वह पुराना बरगद का पेड़ हिल उठा हो (103, 13), मोहनसिंह चौंक पड़े जैसे किसी ने चुटकी काट ली हो···(73, 105), इक्कों और ताँगों का कहीं पता न था, जैसे शहर लुट गया हो (69, 56)।

आश्रित वाक्य में सम्भावनार्थ के संतत रूप इस बात का संकेत देते हैं कि वास्तविक घटना, जो कि मुख्य बात में व्यक्त होती है, की उस काल्पनिक उपाधि से तुलना कर रहे हैं, जो कि मुख्य वाक्य की विधेय-क्रिया के व्यापार के साथ एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही काल सतह पर है। उदाहरणार्थ : ···वह···इधर-उधर देखने लगे मानो छिपने के लिए कोई बिल ढूँढ़ रहे हों (73, 80), नोहरी के पाँव ज़मीन पर न पड़ते थे, मानो विमान पर बैठी हुई स्वर्ग जा रही हो (69, 79), रोहित मर गया···रोहित मर गया···रोहित मर गया, जैसे ख़राब रिकार्ड की सुई बार-बार इसी लाइन पर घूम रही हो···(109, 50), ···लोग आते और जाते थे···जैसे सब कुछ अपने आप होता चला जा रहा हो (107, 2)।

तुलनावाचक वाक्यों में सम्भावनार्थ के सरल (संश्लेषणात्मक) और अपूर्ण रूप कम ही पाये जाते हैं।

आश्रित वाक्य में सरल रूप मुख्य वाक्य के उद्देश्य की सम्भाव्य अवस्था की ओर संकेत करता है जिससे उस उद्देश्य की वास्तविक अवस्था की तुलना करते हैं, जो मुख्य वाक्य में व्यक्त होती है, उदाहरणार्थ : समूह स्थिर भाव से खड़ा हो गया, जैसे बैठा हुआ पानी मेड़ से रुक जाये (69, 74)।

सम्भावनार्थ के अपूर्ण रूप सम्भाव्य व्यापार व्यक्त करता है जो कि मुख्य वाक्य में विधेय-क्रिया के वास्तविक व्यापार के साथ काल अर्थ में मेल खाता है। यहाँ अपूर्ण रूप कुछ हद तक संतत रूप का पर्याय-सा लगता है, उदाहरणार्थ : ··· बड़े अनुरोध और भर्राये गले से, मानो शब्दों को बलात् ठेलकर कहते हों, वे बोल उठे···(109, 40), बस, सब-का-सब मन एक दृढ़ संकल्प लिए लपके चले जा रहे थे, मानो कोई घटा उमड़ी चली आती हो (69, 52), कुत्ता निरीह भाव से खड़ा था मानो वह समझता हो कि···(109, 105)।

कालवाचक वाक्य : मिश्र वाक्यों के इस प्रकार में सम्भावनार्थ के रूपों का प्रयोग संरचनात्मक रूप से प्रतिबन्धित तथा वैकल्पिक हो सकता है।

आश्रित कालवाचक वाक्यों में सम्भावनार्थ के रूपों का संरचनात्मक रूप से प्रतिबन्धित प्रयोग निषेध समेत समुच्चयबोधक 'जब तक', (जब तक कि) और संयुक्त संयोजक शब्द 'इससे (के) पहले (पूर्व) कि' के साथ सम्बन्धित होता है।

कालवाचक वाक्य, जो कि विधेयवाचक हिस्से में हुए निषेध के साथ 'जब तक' द्वारा जोड़ा जाता है, इस बात का संकेत देते हैं कि मुख्य वाक्य का व्यापार आश्रित वाक्य में सम्भाव्य व्यापार से पहले नहीं हो सकता, उदाहरणार्थ : ···आप मन्दिर में उस समय तक मत आना जब तक कि मैं न बुलाऊँ (147, 53-54), परन्तु तब भी मैं भला आदमी ही बना रहूँगा जब तक कि मेरे अपराधों का भण्डा न फूट जाये (147, 49), मैंने सरल रीति से उतने दिनों तक आश्रय देना उचित समझा जब तक उसके पति का क्रोध न शान्त हो जाये (73, 61)।

कालवाचक वाक्य, जिनमें संयुक्त संयोजक शब्द—'इससे (के) पहले (पूर्व) कि' आते हैं, सम्भाव्य व्यापार को व्यक्त करते हैं जो कि मुख्य वाक्य की विधेय-क्रिया के व्यापार के पूर्ववर्ती होता है, उदाहरणार्थ : मगर इसके पहले कि वे किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर हाथ चलाएँ, सभी लोग हुर्रे हो गये (69, 71), और इससे पहले कि कजरी कुछ कहे वह बाहर निकल आया (103, 433)।

अगर समुच्चयबोधक शब्द 'जब' आश्रित वाक्य में आता है और अपने परपद 'तो' के साथ आता है जो कि मुख्य वाक्य में आता है तो शब्दार्थ और रचना में समस्त मिश्र वाक्य संकेतवाचक वाक्य के निकट आ जाता है, सिर्फ़ एक भिन्नता होती है कि संभाव्य व्यापार संतत हो सकता है और काल के किसी भी अर्थ से सम्बन्ध रख सकता है। आश्रित वाक्य में संभावनार्थ के रूपों में संगत मुख्य वाक्य में निश्चयार्थ के रूप होते हैं, उदाहरणार्थ : ऐसा व्यक्ति जान-बूझकर जब किसी पर कीचड़ फेंके तो इसके सिवाय क्या कहा जा सकता है कि···(73, 49), और जब मन्दिर अच्छी तरह चलता हो, तो उसकी वार्षिक आय किसी तरह भी एक अच्छी-खासी फैक्टरी की आय से कम नहीं होती (28, 140-141)।

संभावनार्थ के रूपों का वैकल्पिक प्रयोग संभाव्य व्यापार को व्यक्त करने से नहीं, बल्कि वांछनीय व्यापार व्यक्त करने से सम्बन्धित है। इस हालत में संभावनार्थ के रूप आश्रित एवं मुख्य वाक्यों में आ सकते हैं (कई बार सिर्फ़ मुख्य वाक्य में) उदाहरणार्थ : आप जब तक चाहें रहें (73, 115), शायद ही कोई ऐसा दिन ख़ाली जाता हो जबकि समाचार-पत्र के पृष्ठ हड़ताल की सूचनाओं से शून्य रहते हों (115, 99), जब तक वह आनन्द मिलता है तब तक उसे क्यों न भोगूँ (73, 77)।

विशेषण वाक्य : मिश्र वाक्यों के इस प्रकार में संभावनार्थ के रूपों का प्रयोग बहुत हद तक वैकल्पिक होता है, हालाँकि विशेषण वाक्यों के विभिन्न संरचनात्मक प्रकार अक्सर संभावनार्थ के रूपों के साथ अधिकतर आते हैं।

उनमें से एक प्रकार है आश्रित वाक्य की परस्थिति जबकि उसका मुख्य वाक्य 'ऐसा' पूर्वपद के साथ आता है। बहुधा मुख्य वाक्य का विधेय निषेधात्मक होता है, उदाहरणार्थ : कोई ऐसा फल न था जिसे वे बीमारी का कारण समझते हों (69, 169), ···ऐसी करुणा नहीं जो भीतर की ओर मुड़ी हुई हो और दूसरों की दया चाहती हो (158, 19), कोई आँख ऐसी न थी जो आँसू से लाल न हो (69, 56)।

अगर इन वाक्यों का विधेय बग़ैर किसी निषेधात्मक निपात के आता है, तो आश्रित वाक्य में, आम तौर पर, विधेय निषेधात्मक होता है, उदाहरणार्थ : आज यहाँ···कौन पण्डित ऐसा है जो मेरे तलुए सहलाने में अपनी इज़्ज़त न समझे ? (73, 41), लोग मुझे बिलकुल बेकार का ऐसा आदमी मानने लगे हैं कि जिसे कोई काम-धाम न हो, दिन-भर बस मन-भर का मुँह बनाये घूमता रहता हो (108, 34)।

दोनों विधियों में भी निषेध हो सकता है : कोई आँख ऐसी न थी जो आँसू से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाल न हो (69, 55), कोई···चमार ऐसा न बचा जिसके सम्बन्ध में शर्मा जी ने कुछ-न-कुछ पूछा न हो (73, 48)।

विशेषण वाक्यों के दूसरे प्रकार में जिनके आश्रित हिस्से में संभावनार्थ के रूप आते हैं, आश्रित वाक्य की परस्थिति के साथ ऐसे वाक्य हो सकते हैं, जिनमें मुख्य वाक्य का सार खुलता है, ज़्यादा ठीक होगा अगर कहेंगे कि मुख्य वाक्य के उद्देश्य की दशा का सार खुलता हो, उदाहरणार्थ : गंगाधर प्रसाद की दशा उस मनुष्य की-सी थी जो चोरों के बीच में अशर्फ़ियों की थैली लिये बैठा हो (73, 23), ···उस मनुष्य की-सी दशा हो गयी जो किसी नदी के तट पर बैठा उसमें कूदने का विचार कर रहा हो (69, 115)।

विशेषण वाक्यों के तीसरे प्रकार में जिनके आश्रित हिस्से में संभावनार्थ के रूप आते हैं, ऐसे वाक्य होते हैं जो आश्रित वाक्य की पूर्वस्थिति के साथ होते हैं, जिनका सम्भाव्य व्यापार भविष्यत् काल के अर्थ में होता है, उदाहरणार्थ : जो मेरे साथ रह सके वह रहे···(108, 12), जो ये कहे सो करो (108, 44)।

बाकी स्थितियों में सम्भावनार्थ के रूप मुख्यतः सम्भाव्य नहीं, बल्कि वांछनीय व्यापार व्यक्त करते हैं, उदाहरणार्थ : जिसके पास धन हो, वह धन से सेवा करे (73, 86), आपको जो आज्ञा हो करूँ (69, 84), तुम्हारी जो धारणाएँ हों तुम बड़े शौक से लिख सकते हो (147, 27), इस अपराध के लिए मुझे जो सज़ा चाहें दें (73, 49)।

विशेषण वाक्यों और उन अनुमतिवाचक वाक्यों के बीच भेद जानना चाहिए जो कि संयुक्त समुच्चयबोधकों 'जो कुछ भी' और 'जो भी' के साथ आते हैं, जो आम तौर पर संभावनार्थ के रूपों के साथ आते हैं, उदाहरणार्थ : जो कुछ भी हो, मेरा तुम्हारे साथ जाना नामुमकिन है (59, 84), खैर, जो भी हो अपने पुरखों को यों याद करना अच्छा नहीं लगता (108, 222)।

सम्बन्धवाचक-संयोजक वाक्य : मिश्र वाक्यों के इस प्रकार में संभावनार्थ के रूपों का प्रयोग जिसमें संयोजक शब्द 'जिससे और 'जिसमें' आते हैं संरचनात्मक तौर पर अनिवार्य होता है, उदाहरणार्थ : जमाखोरों ने···साज़िश की है जिससे चीनी का भाव और बढ़ जाये (IV, 8-9-1974), इस कार्यक्रम का उद्देश्य रबि के उत्पादन में इतनी वृद्धि करना है जिससे खरीफ़ के उत्पादन में कुछ हानि लगभग पूरी हो जाये (153 13), वह अपनी भाभी के इशारों पर दौड़ती थी जिसमें वह माता को कुछ कह न बैठे (73, 102)।

संभावनार्थ के रूपों का प्रयोग जिन मिश्र वाक्यों में समुच्चयबोधक नहीं होते, इन वाक्यों की विशेष रचना के साथ सम्बन्धित है। इस तरह संभावनार्थ के रूप विशिष्ट संरचना के समुच्चयबोधक रहित मिश्र वाक्यों में आते हैं जिन्हें खुद, बाँट सकते हैं : (क) वाक्य जिनमें परस्थित अन्वादेशक शब्द आते हैं और (ख) वाक्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनमें वाक्यविन्यासात्मक स्थिति पूरी नहीं होती।

उन वाक्यों में जिनमें परस्थित अन्वादेशक शब्द होते हैं, संभावनार्थ के रूप समुच्चयबोधक रहित वाक्यों के पहले हिस्से में आते हैं, दूसरे हिस्से में अन्वादेशक सम्बन्ध-तत्त्व 'यह' और 'ऐसा' आते हैं जिनमें से पहले का अर्थ 'अभिप्रेरित स्पष्टीकरण' होता है और दूसरा समरूपता व्यक्त करने के काम आता है, उदाहरणार्थ : एक किसान किसी पुलिस के आदमी के साथ इतनी बेअदबी करे, **इसे** भला वह कहीं बर्दाश्त कर सकता है (69, 11), ···इसके लिए दण्ड की कौन-सी प्रक्रिया अपनायी जाये, **इस पर** मतभेद था (IV, 6-9-1974); वह बहुत देर पहले से गाती रही हो, **ऐसा** तो नहीं लगा···(158, 30), ···उन्होंने बाहर वालों पर कृपा कर दी हो, **ऐसा** भी नहीं है (18, 152)।

जिन वाक्यों में वाक्यविन्यासात्मक स्थिति पूरी नहीं है, वे संरचनात्मक दृष्टि से व्याख्यात्मक वाक्यों से मिलते हैं, उनमें सिर्फ़ एक ही अन्तर है कि समुच्चयबोधक छोड़ देते हैं (मुकाबला कीजिए इन दो वाक्यों में : 'मेरा मन होता है, उसके कन्धे पकड़कर उसको झकझोर दूँ'···(109, 95), और 'मन होता था कि अभी छज्जे से कूदकर आत्महत्या कर डालूँ' (108, 102)। संरचनात्मक निकटता की वजह से संभावनार्थ के रूपों का प्रयोग उन्हीं शब्दों के वर्गों की उपस्थिति में शब्दार्थक तौर पर अनिवार्य होता है, जो कि व्याख्यात्मक वाक्य में भी होता है, उदाहरणार्थ : जी चाहता है, तुम्हारे पैरों पर गिरकर रोऊँ (73, 86), मन करता है, मैं भी एक कुत्ता पाल लूँ···(109, 105), इच्छा हुई, इस बुढ़िया से ही सब कुछ पूछ डालूँ··· (109, 95), संभव है, अब उन्होंने घर बसा लिया हो (75, 8), मुमकिन है, लगान की तेज़ी से इंतज़ाम न हो सका हो (73, 106)।

सरल वाक्य में संभावनार्थ के रूपों का प्रयोग बहुधा वैकल्पिक होता है, हालाँकि संभावनार्थ के रूप व्यावहारिक तौर पर निम्नलिखित शाब्दिक-व्याकरणिक चिह्नकों की उपस्थिति में अनिवार्य होते हैं : 'शायद', 'कहीं' ('कभी भी', 'कहीं भी' के अर्थ में), 'क्यों न', उदाहरणार्थ : शायद वहाँ घूमने गया हो···(66, 194), शायद वह उस प्रकार की बातों से सचमुच ही कोरी हों (75, 49), कहीं मैं हार न जाऊँ (108, 11), कहीं इस आघात से बीमार न पड़ गयी हो (109, 41), क्यों न उसे बेच डालूँ ? (73, 196), क्यों न यह कंगन सुमन बाई की नज़र करूँ ? (75, 72)।

संभावनार्थ के रूप व्याकरणिकीकृत विस्मयादिबोधक 'काश' के साथ आ सकते हैं, जिनके साथ मुख्यतः संकेतार्थ के रूप आते हैं, उदाहरणार्थ : काश, वह कभी उसे समेटकर अपनी बाँहों में ले सके···(75, 95), काश कि मैं और रानी यूरोपीय जवानों की तरह खुलेआम साथ-साथ घूम सकें (1, 179)।

संभावनार्थ के रूप स्थिर अभिव्यक्तियों में प्रयोग होते हैं जो कि 'जानना'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिया के संभावनार्थ के रूपों द्वारा व्यक्त होती हैं जिसके साथ सार्वनामिक संज्ञा और क्रियाविशेषण मिलते हैं ('क्या जाने', 'कौन जाने', 'न जाने क्या', 'न जाने क्यों', 'कैसे जाने' आदि) तथा 'चाहे' (चाहे जो कुछ हो) समुच्चयबोधक के साथ स्थिर अभिव्यक्ति द्वारा व्यक्त होती हैं, उदाहरणार्थ : न जाने क्या कर बैठूँ ! (158, 22), तुम्हारे मन का हाल कौन जाने ! (73, 95), ···लेकिन न जाने क्यों मुझे उनकी गुस्ताख़ी बुरी लग रही थी ! (157, 21), ···जाने कैसे मेरे मुँह से निकला···(108, 97); चाहे जो कुछ हो, उससे कदापि न पूछना (73, 84)।

बाक़ी स्थितियों में संभावनार्थ के रूपों का प्रयोग काल्पनिक वांछनीय व्यापार की विभिन्न छायाओं के साथ सम्बन्ध रखता है, जिनको बाँट सकते हैं :

(1) व्यापार को पूरा करने की कल्पना या इच्छा की छाया, उदाहरणार्थ : मेरे समाज में सवेरे चले (73, 67), गरीब किसान लगान कहाँ से दे (69, 10), लेकिन अब इस वर्तमान का क्या करूँ ? (108, 11), ···मोहिनी में अपने को फँस जाने दूँ या इस झड़ी से कतराकर निकल जाऊँ (108, 11)।

(2) आवश्यकता या अनिवार्यता की छाया, उदाहरणार्थ : मातृभाषा ही शिक्षा का माध्यम हो। शिक्षा किसी दस्तकारी अथवा हाथ के काम को केन्द्र बनाकर उसके आधार पर दी जाये (115, 344), भोजन एक ही समय बने,···(73, 51), खैर साहब, आपका काम है आप जानें (147, 49)।

(3) मिलकर व्यापार करने के उद्बोध की छाया, उदाहरणार्थ : आओ देखें···(108, 92), चलो लौट चलें (103, 122)।

(4) अनुमति की छाया, उदाहरणार्थ : तो हम लोग चलें इंस्पेक्टर ? (147, 24), कह दूँ हुज़ूर ? (147, 56), एक बात पूछूँ प्यारी ? (103, 146)।

(5) शिष्ट प्रार्थना की छाया, उदाहरणार्थ : आप लोग यहाँ भीड़ न लगायें और न किसी को भला-बुरा कहें (69, 39), भैया, ईश्वर के लिए आप मेरे सम्बन्ध में ऐसा विचार न करें (73, 106), कृपया इनके अतिरिक्त अन्य सब चीज़ों को दस-दस सेर रखने की कृपा करें (92, 380)।

(6) कामना की छाया, उदाहरणार्थ : ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे और तुमको अपने बच्चों से मिलाये (69, 192), भाई साहब, तुम धन्य हो (73, 86)।

व्यापार की काल्पनिकता जो कि संभावनार्थ के रूपों द्वारा व्यक्त होती है, इस व्यापार को संभावनीय व्यापार के निकट कर देती है, जो कि अपूर्णतावाची और पूर्णतावाची भविष्यत् काल के रूपों द्वारा व्यक्त होता है (द्वितीय भविष्यत् और तृतीय भविष्यत् काल)। यह बात निम्नलिखित उदाहरणों से प्रमाणित होती है : उसे संशय होने लगा लगा कि कहीं सुमन बाई को ये सब समाचार मालूम तो न हो गये हों। वह वहाँ स्वयं तो न रही होगी, लोगों ने उसे अवश्य ही त्याग दिया होगा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन उसे विवाह की सूचना ज़रूर दी होगी। ऐसा हुआ होगा तो कदाचित् वह मुझसे सीधे मुँह बात न करेगी। संभव है मेरा तिरस्कार भी करे (73, 146), मैं चाहे उसे न देख पाया होऊँ उसने ज़रूर ही मुझे देख लिया होगा (109, 16), 'शायद मर भी गयी हो' (69, 195), और 'वह भी शायद मर चुकी होगी' (31, 69)।

संभावनार्थ के रूपों के अर्थों तथा अपूर्णतावाची और पूर्णतावाची भविष्यत् काल के रूपों के बीच समानता नहीं कह सकते चूँकि भविष्यत् काल के रूप वास्तविक व्यापार को व्यक्त करते हैं, जो कि होता है (हुआ था या होगा), लेकिन वक्ता किन्हीं कारणों से पूर्णतः विश्वस्त नहीं है कि काल के किस क्षण में व्यापार हो सकता है, उदाहरणार्थ : मैं तो समझता हूँ कि विषयी मुसलमान बादशाहों के समय उसका जन्म हुआ होगा (73, 87)—भूतकाल में व्यापार हुआ, कोई पैदा हुआ, लेकिन यह बात निश्चित नहीं कि वक्ता के कहे अनुसार वह उस कालावधि में पैदा हुआ। संभावनार्थ सिर्फ़ काल्पनिक व्यापार को व्यक्त करता है जो न हो सका था और न ही होगा, चूँकि वह छिपे तौर पर संभाव्य या वांछनीय होता है। संभावनार्थ के रूपों का सम्बन्ध किसी भी वास्तविक मौजूदा वस्तुगत काल के साथ नहीं होता, वे किसी-न-किसी तरह सापेक्ष काल से सम्बन्ध रखते हैं, अर्थात् काल के क्षण के साथ। भविष्यत् काल के रूप वस्तुगत वास्तविक काल के साथ सम्बन्ध रखते हैं, उदाहरणार्थ : ऐसे वस्त्र तो शायद मुझे अपने विवाह में भी न मिले होंगे (69, 167)—वक्ता को शादी के समय वस्त्र मिले, उक्ति के क्षण से पहले व्यापार सचमुच हुआ, लेकिन वक्ता को पक्का विश्वास नहीं कि उसे भी ऐसे कपड़े मिले।

इस तरह संभावनार्थ के रूपों को तथा अपूर्णतावाची और पूर्णतावाची भविष्यत् काल के रूपों को जिनका शब्दार्थक रूप से समान अर्थ होता है, व्यापार के वास्तविक या अवास्तविक चिह्न द्वारा पता लगाते हैं।

संकेतार्थ

आधुनिक हिन्दी में संकेतार्थ चार रूपों का वर्ग होता है। उनमें से एक तो संश्लेषणात्मक विकारी होता है और बाकी तीन विश्लेषणात्मक विकारी होते हैं : संकेतार्थ के सब रूप भी काल सम्बन्धी नहीं होते, बल्कि कालसापेक्षता का ज़्यादा सामान्य अर्थ व्यक्त करते हैं।

प्राकारिक विवरणों की दृष्टि से संकेतार्थ के रूप प्राकारिक रूपों से सम्बन्ध रखते हैं, तब संश्लेषणात्मक रूप बहुप्राकारिक होते हैं चूँकि संकेतार्थ के पूर्ण और अपूर्ण प्राकारिक रूपों के अर्थ को व्यक्त करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संश्लेषणात्मक (सरल) रूप

यह रूप पुल्लिग (एकवचन और बहुवचन) के दो विकारी रूपों द्वारा व्यक्त होता है जो कि प्रथम कृदन्त के समाकार होते हैं एवं स्त्रीलिंग के दो विकारी रूपों (एकवचन और बहुवचन), जिनमें से एक प्रथम कृदन्त का समाकार होता है और दूसरा स्त्रीलिंग के प्रथम कृदन्त का नासिकीकृत रूप होता है :

मैं	हम
तू लिखता (लिखती)	तुम, आप लिखते (लिखतीं)
वह	वे

संकेतार्थ का संश्लेषणात्मक रूप छिपे हुए सम्भाव्य या वांछनीय व्यापार को व्यक्त करता है जो मुख्यतः भूतकाल या वर्तमान काल के अर्थ से सम्बन्ध रखता है। उदाहरणार्थ : (भूतकाल के अर्थ में)—चाहता तो अब तक हज़ारों रुपये जमा कर लेता (65, 52), तुम कम-से-कम इतना तो कर ही सकते थे कि उन पर डण्डा न चलाने देते (69, 54), चाहिए तो यह था कि मैं लज्जा से वहीं गड़ जाती (73, 89); (वर्तमान काल के अर्थ में)--तुम मेरी जगह होते तो इस समय क्या जवाब देते ? (73, 110), परन्तु चाहता हूँ कि वह अब न आते तो अच्छा होता (69, 96)।

संकेतार्थ का यह रूप भविष्यत् काल के अर्थ में व्यापार को कम ही व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : ऐसे कुमानसों के बीच में बेचारी निर्मला की न जाने क्या गति होती। अपने नसीबों को रोती (66, 37), मैं आज तेरे घर में रहने के लिए आयी थी। मैं तुझसे विवाह करती और तेरी होकर रहती (69, 199), कहीं उसके नाम कोई लाटरी निकल आती ! (65, 28)।

संकेतार्थ का संश्लेषणात्मक रूप संकेतवाचक वाक्य के दोनों हिस्सों में आकर उस व्यापार को व्यक्त कर सकता है जो कि विभिन्न कालार्थों से सम्बन्ध रखता है, उदाहरणार्थ : अगर मैं पहले ही सावधान हो जाता तो आज तुम लोगों की यह दुर्दशा न होती (73, 156), यदि मैं पाप से न डरता तो आज मुझे यों ठोकरें न खानी पड़तीं (73, 7), पैसे अगर दो-चार मिल जाते तो इस वक्त वह ज़रूर दे देती (69, 20)।

संकेतार्थ का संश्लेषणात्मक रूप एकल सम्भाव्य या वांछनीय व्यापार व्यक्त कर सकता है, उदाहरणार्थ : अगर इस वक्त कोई उसके दोनों हाथ काट डालता, कोई उसकी आँखें लाल लोहे से फोड़ देता, तब भी वह चूं न करता (69, 47), चाहता तो प्रधान होता (73, 137), अगर मेरी दाढ़ी होती तो आपको दे देती (73, 92)।

यद्यपि काफ़ी अकसर यह रूप संतत व्यापार को व्यक्त करता है, उदा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरणार्थ : अगर वह मुझसे वीणा सीखती, तो मुझे तीन सौ रुपये महीना मिलते (28, 148), और कौन ऐसा निठल्ला था जो रात-रात भर उससे शतरंज खेलता (65, 32), कोई साधारण मकान पाँच रुपये किराये पर ले लेता, तो क्या काम न चलता? मैं और साथ के सब आदमी आराम से रहते (69, 112), अगर भगवान ने उसे इतना अपंग न कर दिया होता, तो आज झोंपड़े लीपती, द्वार पर बाजे बजवाती, कढ़ाव चढ़ा देती, पूरियाँ बनवाती…(69, 67)।

संकेतार्थ का अपूर्ण रूप

यह रूप प्रथम कृदन्त के लैंगिक विकारी रूपों तथा संकेतार्थ में 'होना' क्रिया के विकारी संश्लेषणात्मक रूपों के मेल से बनता है। इस तरह संकेतार्थ का अपूर्ण रूप पुल्लिग (एकवचन तथा बहुवचन) के दो लैंगिक रूपों तथा स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप और संकेतार्थ में क्रिया 'होना' के चार विकारी रूपों के मेल से बनता है :

मैं
तू लिख-ता (-ती) हो-ता (-ती)
वह
हम
तुम लिख-ते (-ती) हो-ते (-तीं)
आप
वे

संकेतार्थ का अपूर्ण रूप सम्भाव्य संतत अपूर्ण व्यापार को व्यक्त करता है जो आम तौर वर्तमान काल के अर्थ में आता है, उदाहरणार्थ : यदि आज यह पुरुष जीया होता तो पचास या पचपन वर्ष का होता (5, 37), आपने न बचाया होता तो आज शराब या ताड़ी की जगह हल्दी-गुड़ पीते होते (69, 43)।

भूतकाल के अर्थ में यह रूप कम आता है, उदाहरणार्थ : यही सब यदि जानता होता तो नन्दा, मैं भी सिद्ध हो गया होता (17, 87), अगर वह जानती होती कि आनन्द के पास सात-आठ दिनों तक रहने में ही उसकी यह हालत हो जायेगी, तो तो वह यहाँ कभी नहीं आती (59, 122)।

संकेतार्थ का अपूर्ण रूप अकसर सम्भाव्य एकल व्यापार को व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : वकील साहब जीते होते तो शरमाते-शरमाते भी पन्द्रह-बीस हज़ार दे मारते (66, 25), तू मुझे मन से न चाहता होता, तो तू मुझे मारता क्यों (103, 45)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकेतार्थ का पूर्ण रूप

यह रूप द्वितीय कृदन्त के पुल्लिग (एकवचन तथा बहुवचन) के दो लैंगिक रूपों तथा स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप एवं कर्तृ-सम्बन्धी रचना में 'होना' क्रिया के संकेतार्थ के चार विकारी रूपों के मेल से बनता है। पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के समान कृदन्तपरक रूपों और कर्म-सम्बन्धी रचना में 'होना' क्रिया के संकेतार्थ के दो विकारी रूपों से बनता है और पुल्लिग के एक लैंगिक रूप एवं भाववाचक रचना में 'होना' क्रिया के संकेतार्थ के एक रूप के मिलन से बनता है।

कर्तृ-सम्बन्धी रचना

मैं आया (आयी) हो-ता (-ती)
तू
वह
हम
तुम, आप आये (आयी) हो-ते (-तीं)
वे

कर्म-सम्बन्धी रचना

एकवचन

मैं, तू, उस, हम, तुम, आप, उन्हों ने पत्र (चिट्ठी) लिखा (लिखी) हो-ता (-ती)

बहुवचन

मैं, तू, उस, हम, तुम, आप, उन्हों ने दो पत्र (दो चिट्ठियाँ) लिखे (लिखी) हो-ते (-तीं)

भाववाचक रचना

एकवचन तथा बहुवचन

मैं, तू, उस, हम, तुम, आप, उन्हों ने पत्र-दो पत्रों को (चिट्ठी-दो चिट्ठियों को) लिखा होता

सकेतार्थ का पूर्ण रूप सम्भाव्य व्यापार को व्यक्त करता है जो कि दूसरे सम्भाव्य व्यापार के पूर्ववर्ती हो सकता था, जो आम तौर पर संकेतार्थ के संश्लेषणात्मक रूप द्वारा व्यक्त होता है, उदाहरणार्थ : जुलूस निकलने से स्वराज्य मिल जाता तो अब तक कब का मिल गया होता (64, 47), यदि मैंने उसे घर से निकाल न दिया न होता तो इस भाँति उसका पतन न होता (73, 61), अगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमने यह बात मुझसे कही होती तो मैं अवश्य ही तुम्हें भगा ले जाता (75, 237)।

संकेतार्थ का पूर्ण रूप उस सम्भाव्य व्यापार को व्यक्त करता है जो निश्चयार्थ के साथ आने वाली क्रिया के व्यापार के पूर्ववर्ती हो सकता है अगर यह पूर्ववर्ती व्यापार सचमुच हुआ होता है, उदाहरणार्थ : भारत सरकार की सुरक्षा से वे वच गये हैं, अन्यथा गीर सिंह भी भारत से लुप्त हो गये होते (150, 19), मैं चला गया होता. मगर मुझे सवाक की प्रतीक्षा थी (136, 61), ···हम लोगों ने··· कहा कि हम कर चुके होते, केवल गणेश शंकर विद्यार्थी के अनुरोध से स्थगित कर कर देनी पड़ी (97, 66)।

संकेतार्थ का पूर्ण रूप संभाव्य, पूर्णतावाची प्रकृति का व्यापार कम ही व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ : भगवान ने दिया होता तो तुम्हें कहना न पड़ता 69, 67), तभी तो मेरे प्राण बच पाये हैं, नहीं तो विजय के उठाये हुए तूफ़ान से बचना मुश्किल था। लोगों ने मेरी जान ले ली होती ! (120, 46), यदि यही करना था तो आज से पच्चीस साल पहले ही क्यों न किया, अब तक सोने की दीवार खड़ी कर दी होती (73, 9)।

संकेतार्थ का पूर्ण रूप बहुत ही कम स्थितियों में सम्भाव्य व्यापार को व्यक्त करता है, जो कि दूसरे संभाव्य व्यापार या निश्चयार्थ में साथ आने वाली क्रिया के व्यापार के साथ एक ही काल की सतह पर हो सकता है, उदाहरणार्थ : काश, वह इस घर में न पैदा हुई होती ! काश, उसकी माँ सचमुच माँ होती ! (59, 85-86), यदि यही सब जानता होता तो नन्दा, मैं भी सिद्ध हो गया होता (107, 87), इससे तो कहीं अच्छा था कि आपने हमारे ही ऊपर अपना गुस्सा उतारा होता (69, 64)।

संकेतार्थ का संतत रूप

यह रूप संतत कृदन्त के लैंगिक विकारी रूपों तथा सम्भावनार्थ में 'होना' क्रिया के विकारी संश्लेषणात्मक रूपों के मेल से बनता है। इस तरह संकेतार्थ का संतत रूप पुल्लिग (एकवचन और बहुवचन) के दो लैंगिक रूपों और स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप तथा संकेतार्थ में 'होना' क्रिया के चार विकारी रूपों के मेल से बनता है :

मैं
तू लिख रहा (रही) हो-ता (-ती)
वह
हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम लिख रहे (रही) हो-ता (-तीं)
आप
वे

संकेतार्थ का संतत रूप सम्भाव्य अपूर्ण व्यापार को व्यक्त करता है, जो कि ठीक दिये गये काल के क्षण में हो सकता है, जो कि आम तौर पर दूसरे सम्भाव्य व्यापार द्वारा निर्धारित होता है, या काल के चिह्नक द्वारा या पूर्ववर्ती प्रसंग द्वारा व्यक्त होता है। इस तरह, संकेतार्थ के संतत रूप का व्यापार दूसरे व्यापार की, या काल-सूचक की या प्रसंग की पृष्ठभूमि में होता है, उदाहरणार्थ : ...वह किसी सुन्दरी और उसके प्रेमी को देखता जो अँधेरे में खड़े बातें कर रहे होते तो उसके दिल में हूक-सी उठने लगती...(30, 109), लच्छू मन-ही-मन इतना उखड़ चुका था कि अगर दूसरी कोई ट्रेन लखनऊ जा रही होती तो वह उसी दम लौट पड़ता (1, 202), यदि बिन्दो जग रही होती, तो कदाचित् उसे भी लता की ओर से यही अनुभव होता (149, 93), लच्छू, मैं भारतीय हूँ और मुझे अभी रूस की हवा नहीं लगी, समझे! वह विवाह कर रही होती तो हम पूरी सहायता देते (1, 555)।

संकेतवाचक वाक्य जो कि अवास्तविक हेतुमद् सम्बन्ध को व्यक्त करते हैं, संकेतार्थ के रूपों के प्रयोग का वाक्यविन्यासात्मक मानक है। तब अवास्तविक हेतुमद् सम्बन्ध हो सकता है : (क) स्थितिपरक और (ख) सामान्य।

जब अवास्तविक स्थितिपरक हेतुमद् सम्बन्ध होता है तो व्यापार की अवास्तविकता विशेष स्थिति द्वारा सीमित हो जाती है जिसके कारण व्यापार नहीं था (या नहीं है, या नहीं होगा), उदाहरणार्थ : अगर दूसरे ने यह हरकत की होती तो आज उसका खून पी जाता (73, 92), यदि तुमने उनकी बातें चुपचाप न सुन ली होतीं, तो मुझे बहुत ही दुख होता (69, 84), रोशनी होती तो भागना कठिन हो जाता (139, 172)।

जब सामान्य अवास्तविक हेतुमद् सम्बन्ध होता है तो अवास्तविकता, जैसी भी है, व्यापार का मुख्य विवरण होती है। व्यापार छिपे तौर पर सम्भाव्य नहीं रहता, बल्कि वांछनीय होता है, उदाहरणार्थ : जुलूस निकलने से स्वराज्य मिल जाता तो अब तक का मिल गया होता (69, 97), यदि प्राण देने से पापों का प्रायश्चित हो जाता तो मैं अब तक कभी का प्राण दे चुका होता (73, 173)। दूसरी तरफ़, व्यापार वास्तव में और तार्किक तौर पर वास्तविकता से पूर्णतया विरोध में होता, उदाहरणार्थ : अगर इस वक्त कोई उसके दोनों हाथ काट डालता, कोई उसकी आँखें लाल लोहे से फोड़ देता, तब भी वह चूँ न करता (69, 47), सुमन—मेरी दाढ़ी होती तो आपको दे देती (73, 92)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थितिपरक अवास्तविक हेतुमद् सम्बन्ध में व्यापार आम तौर पर भूतकाल के अर्थ के साथ सम्बन्ध रखता है, उदाहरणार्थ : काश उस समय पन्द्रह दिन को कहीं कलकत्ता-बम्बई, पूना-हरिद्वार, कहीं भी भाग गया होता तो सब क्यों होता ? (108, 9), तुम लोग बीच में न कूद पड़ते, तो मैंने उन सबों को ठीक कर लिया होता (69, 43), अगर तुमने उसके जीवन का अन्त कर दिया होता तो उसकी यह दुर्दशा न हुई होती (73, 160)।

स्थितिपरक अवास्तविक हेतुमद् सम्बन्ध विभिन्न काल अर्थों से (भूतकाल, वर्तमान काल) सम्बन्ध रख सकता है, उदाहरणार्थ : श्री रामचन्द्र ने यदि अपना जीवन सुखभोग में बिताया होता, आज हम उनका नाम भी न जानते (69, 113), आपने न बचाया होता तो आज शराब या ताड़ी की जगह हल्दी-गुड़ पीते होते (69, 43)।

यह व्यापार वर्तमान या निरपेक्ष काल अर्थ से कम ही सम्बन्ध रखता है, उदाहरणार्थ : अगर वही गाना···साज़ के साथ किसी महफ़िल में होता तो रुपये बरसते, लेकिन सड़क पर गाने वाले अन्धे की कौन परवाह करता है (69, 22)—वर्तमान काल के अर्थ में; अगर दस-बीस आदमी जमा हो जाते, तो पुलिस कहती, हमसे लड़ने आये हैं। डण्डे चलाने शुरू करती और अगर कोई आदमी क्रोध में एक-आध लोग जमा नहीं होते (69, 11)—निरपेक्ष काल का अर्थ।

बहुत ही कम स्थितिपरक अवास्तविक व्यापार भविष्यत् काल के अर्थ में आता है, उदाहरणार्थ : ज़रा-सी घी दाल में अधिक पड़ जाता, तो सारे घर में शोर मच जाता, ज़रा खाना ज़्यादा पक जाता, तो सास दुनिया सिर पर उठा लेती (66, 37), अहमदाबाद चलते तो कैसा रहता ! (103, 473)।

जब सामान्य अवास्तविक हेतुमद् सम्बन्ध होता है तो व्यापार मुख्यतः वर्तमान काल के, भविष्यत् काल के या निरपेक्ष काल के अर्थ से सम्बन्ध रखता है, उदाहरणार्थ : परन्तु चाहता हूँ कि वह अब न आते तो अच्छा होता (69, 112)—वर्तमान काल का अर्थ; अगर तुम्हें सुबह-सुबह किसी कारख़ाने या दफ़्तर के लिए तैयार होना पड़ता तो देखती कि तुम दो घण्टे कैसे भगवान की पूजा करते ! (28, 111), भविष्यत् काल का अर्थ; क्या अच्छा होता, अगर यह फुलवाड़ी हमेशा ही ऐसी ही गुलज़ार बनी रहती···(83, 18)—निरपेक्ष काल का अर्थ।

बहुत ही कम यह व्यापार भूतकाल के अर्थ में आता है, उदाहरणार्थ : कोई साधारण मकान पाँच रुपये पर ले लेता, तो क्या काम न चलता ? (69, 112)।

जैसा कि पता है कि अवास्तविक हेतुमद् सम्बन्ध में संकेतवाचक वाक्य में सम्भावनार्थ के रूप हो सकते हैं। संकेतार्थ तथा सम्भावनार्थ के रूपों के प्रयोग में अन्तर मुख्यतः सिर्फ़ काल के अर्थ में है : संकेतार्थ के रूप बहुधा भूतकाल के अर्थ में आते हैं जबकि सम्भावनार्थ के रूप बहुधा भविष्यत् काल के अर्थ में आते हैं। यही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख्य अन्तर वाक्यों की दूसरे समान प्रकारों की संरचना में भी है, उदाहरणार्थ : बजाय इसके कि मेरा शुक्रिया अदा करो, जो सात मील जाकर चला आया हूँ··· शुक्रिया अदा तो मैं तब करती जो तुम उसी समय उतर जाते और मुझे बस में सीट ले लेने देते (52, 137), गन्ने कैसे भी क्यों नहीं, ज़रूर मिलते (17, 104)। इस तरह संकेतार्थ के रूप सम्भाव्य व्यापार को व्यक्त करते हैं जो हो सकता था, लेकिन हुआ नहीं, और सम्भावनार्थ के रूप उस व्यापार को व्यक्त करते हैं जो भविष्यत् काल में हो सकता था जो कि वक्ता के लिए वांछनीय परिणाम हो सकता है। यह बात यहाँ बतानी उचित होगी कि यह मुख्य अन्तर सबसे ज्यादा सरल संश्लेषणात्मक रूपों में दिखायी पड़ता है। विश्लेषणात्मक रूपों में यह अन्तर कम पड़ सकता है, और किन्हीं विशिष संरचनात्मक-शब्दार्थक स्थितियों में एक ही कालार्थ हो सकता है।

संकेतार्थ के रूपों के प्रयोग के व्याकरणिक मानक उन स्थितियों में संरक्षित रहते हैं, जबकि उपाधि और परिणाम मिश्र वाक्य के एकल सेट में नहीं होते, बल्कि वाक्य के अलग-अलग दूसरे संरचनात्मक प्रकारों के साथ आते हैं या बाह्य रूप से पृथक्कृत होते हैं। इस तरह काल्पनिक उपाधि का परिणाम वाक्यों में संकेतवाचक वाक्य के बाहर भी हो सकता है, उदाहरणार्थ : सुमन, तुम सच कहती हो, बेशक हिन्दू जाति अधोगति को पहुँच गयी, और अब तक वह कभी की नष्ट हो गयी होती, पर हिन्दू स्त्रियों ही ने अभी तक उसकी मर्यादा की रक्षा की है (73, 63), मैं अकेली नहीं जाऊँगी—तो पहले कह दिया होता (28, 112), तभी तो मेरे प्राण बच पाये हैं, नहीं तो विजय के उठाये हुए तूफ़ान से बचना मुश्किल था। लोगों ने मेरी जान ले ली होती (120, 46)।

दूसरी तरफ़, संकेतवाचक वाक्य का आश्रित हिस्सा स्वतन्त्र रूप से आ सकता है और काल्पनिक उपाधि को व्यक्त कर सकता है, लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि परिणाम व्यक्त हो, उदाहरणार्थ : काश, तुमने मुझे एक मौका दिया होता, केवल मौका ! (75, 236), अगर तुम मना कर देतीं···(1, 523)।

संकेतार्थ के रूपों के प्रयोग के व्याकरणिक मानक उन स्थितियों में भी सुरक्षित रहते हैं जबकि संकेतवाचक वाक्य के एक हिस्से में (मुख्य या आश्रित में) निश्चयार्थ में क्रिया आती है।

निश्चयार्थ के रूप आश्रित हिस्से में आम तौर पर आवश्यकताबोधक की तुमर्थ वृत्तिवाचक रचनाओं द्वारा व्यक्त होते हैं जो कि विशेषक क्रिया 'होना' के साथ होती है, उदाहरणार्थ : तुझे मरना ही था तो घर पहुँचकर मरता (69, 150), नहीं लगाने थे तो पहले ही कह दिया होता (73, 137)।

मुख्य हिस्से में निश्चयार्थ के रूप आम तौर पर 'था' क्रिया के रूपों द्वारा व्यक्त होते हैं जो कि संयोजक क्रिया या अर्थपूर्ण क्रिया की हैसियत से आती है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहरणार्थ : अगर वह इस वक्त अपनी जान बचाकर हट जाता, तो शराबियों की खैरियत न थी (69, 40), अगर तुमने आग से कहीं दाग दिया होता तो इससे अच्छा था (73, 42), तुमने मुझे बल न दिया होता, तो मैं कहाँ कामयाब होने वाला था (111, 94)।

जैसा कि उदाहरणों से विदित है, मिश्रित संकेतवाचक वाक्यों में आम तौर पर संकेतार्थ का सरल संश्लेषणात्मक या पूर्ण विशेषणात्मक रूप आते हैं।

सरल वाक्य जिनकी विशिष्ट संरचना होती है, संयुक्त वाक्य जिनमें विरोधात्मक समुच्चयबोधक होते हैं और कुछ विशिष्ट मिश्र वाक्य (मुख्यतः व्याख्यात्मक) कुछ और वाक्यात्मक संरचनाओं में आते हैं जिनमें संकेतार्थ के रूप प्रयोग होते हैं।

संकेतार्थ के रूप जब सरल वाक्य में प्रयोग होते हैं, वाक्य की प्रत्यक्ष अवास्तविकता को व्यक्त नहीं करते, बल्कि यह अवास्तविकता दूसरे अवास्तविक (या वास्तविक) व्यापार के माध्यम से व्यक्त होती है जो कि वास्तव में हो भी नहीं सकती, चूँकि वक्ता की कल्पना हो सकती है।

संकेतार्थ के रूप सरल वाक्य में विभिन्न सम्भाव्य व्यापार की छायाएँ व्यक्त कर सकते हैं जो कुछ स्थितियों में सरल वाक्य की संरचना को भी प्रतिबन्धित करती हैं।

पहले तो, संकेतार्थ के रूप उस सम्भाव्य व्यापार को व्यक्त कर सकते हैं जो कि वास्तविकता से मेल नहीं रखता, अर्थात् व्यापार की प्रतिबन्धित अवास्तविकता को व्यक्त कर सकते हैं। तब स्वयं उपाधि व्यक्त या अव्यक्त रह सकती है, और किसी-न-किसी हद तक संकेतार्थ के रूप सरल वाक्य में परिणाम के अर्थ को अपना सकते हैं, जो कि व्यक्त किये हुए या निहित उपाधि के फलस्वरूप निकलता है।

जब उपाधि को व्यक्त करते हैं तो वह या तो सरल वाक्य के अन्दर एक गौण अंग की हैसियत से होती है या अलग वाक्य में हो सकती है जो कि मुख्यतः वाक्य के साथ सन्निहित स्थिति में होता है, जिसमें संकेतार्थ के रूप प्रयोग होते हैं।

सरल वाक्य के अन्दर उपाधि आम तौर पर क्रियाविशेषण होती है। उदाहरणार्थ : कंकाल-मात्र होने के बावजूद, वह पूरी तरह सिंगार करती (17, 286), इस तरह तो हम लोग भी छूट जाते (69, 6)।

उपाधि जब स्वतन्त्र वाक्य में आती है तो वह (क) उस वाक्य के पूर्ववर्ती हो सकती है जिसमें संकेतार्थ के रूप होते हैं, उदाहरणार्थ : मुझे क्या वह एक खत तक नहीं लिख सकती थी? शायद मैं पढ़ता और उपेक्षा से फाड़कर फेंक देता (108, 41), मैं आज तेरे घर में रहने के लिए आयी थी। मैं तुझसे विवाह करती और तेरी होकर रहती (69, 199); (ख) उस वाक्य के बाद में हो सकती है जिसमें संकेतार्थ के रूप होते हैं (संरचनात्मक तौर पर यहाँ संयुक्त वाक्य होते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनमें विरोधात्मक समुच्चयबोधक 'परन्तु', 'पर', 'मगर', 'लेकिन' आदि होते हैं), उदाहरणार्थ : मैं चला गया होता, मगर मुझे सवाक की प्रतीक्षा थी (136, 61), बचत तो ज़रूर होती और अच्छी होती, लेकिन जब अहलकारों के मारे बचने भी पाये (65, 48), नहीं चाची, मैं तो आज ही चला जाता, पर माँ ने कहा है कि पिताजी शायद आज आएँ (17, 33)।

वाक्य का एक विशेष प्रकार जिसमें व्यापार की प्रतिबन्धित अवास्तविकता होती है, वे संयुक्त वाक्य होते हैं, जिसमें 'नहीं तो', 'वरन्', 'अन्यथा' विरोधात्मक समुच्चयबोधक होते हैं, और जिनके दूसरे हिस्से में संकेतार्थ के रूप होते हैं, उदाहरणार्थ : मैं बहुत बचा, नहीं तो कहीं का न रहता (73, 47), पानी इतना गहरा न था, नहीं तो वह खत्म हो गया होता (10, 116), कजरी ने उसे पकड़ा, वरन् वह गिर गया होता (103, 379), भारत सरकार की सुरक्षा से वे बच गये हैं, अन्यथा गीर सिंह भी भारत से लुप्त हो गये होते (150, 19)।

कुछ हालतों में संयुक्त वाक्यों के हिस्से जिनमें उल्लेखित समुच्चयबोधक होते हैं, स्वतन्त्र वाक्य की हैसियत से आ सकते हैं, उदाहरणार्थ : मुझे क्या मालूम था कि आप मेरे सिर यह मुसीबतों की टोकरी पटक देंगे ? वरन् मैं उन चीज़ों को कभी न ले जाने देता (65, 20), विदाई के समय यदि न दिया तो अच्छा ही किया। नहीं तो और गहनों के साथ यह भी चला जाता (65, 40)।

निहित उपाधि के साथ वाक्य कम ही मिलते हैं, उदाहरणार्थ : तुम ज़रा डॉ. चटर्जी को फ़ोन करतीं (13, 131)—अगर पत्नी को पहले डॉक्टर के निदान में शक था तो वह डॉ. चटर्जी को फ़ोन कर सकती थी; लोगों ने मेरी जान ले ली होती (120, 46)—इससे पहले नायक ने एक खुशखबरी गाँव में ले पहुँचायी। उसने न ले पहुँचायी होती तो लोगों ने उसी की जान ले होती।

दूसरे तो, संकेतार्थ के रूप उस सम्भाव्य व्यापार को व्यक्त कर सकते हैं जो कि वक्ता का व्यापार की ओर वृत्तिवाचक मूल्यांकन का सम्बन्ध व्यक्त करता है। यह व्यापार एक प्रश्नालंकार होता है और इस कारण प्रश्नवाचक या विस्मयादि-बोधक वाक्यों में होता है, जिनमें प्रश्नवाचक सार्वनामिक संज्ञाएँ और क्रियाविशेषण होते हैं, उदाहरणार्थ : कुन्ती भी क्या करती ? (109, 76), बेटे को अकेला कैसे छोड़ती ? (69, 14), गोपी कलकत्ते की सैर का ऐसा अच्छा अवसर पाकर क्यों न खुश होता (65, 630), गाँव वालों की फ़रियाद कौन सुनता (69, 11), कार्य क्यों न सिद्ध होता (66, 38)।

इन व्यापारों की मुख्य विशेषता यह है कि वे सब भूतकाल के अर्थ में पूर्ण होते हैं, उदाहरणार्थ : मैं क्या करता उस वक्त (69, 54), कुछ कार्य भी सिद्ध हुआ या रास्ता ही नापना पड़ा ? कार्य क्यों न सिद्ध होता (66, 38)। संकेतार्थ और सम्भावनार्थ के रूपों में यही अन्तर है। सम्भावनार्थ के रूप मुख्यतः उस सम्भाव्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापार को व्यक्त करते हैं जो कि वर्तमान या भविष्यत् काल के अर्थ में आते है, उदाहरणार्थ : तो फिर क्या करूँ ? (111, 51), तो क्या चुप बैठा रहूँ ? तू चला जायेगा तो मेरा क्या होगा ? (103, 193)।

तीसरे तो, संकेतार्थ के रूप उस सम्भाव्य व्यापार को व्यक्त कर सकते हैं जो कि वक्ता के लिए वह अभिलाषित स्थिति होता है, जो भूतकाल में हो सकती थी। व्यापार उस विशेष उपाधि को व्यक्त करता है जिसका परिणाम निकल भी सकता था अगर उपाधि वास्तविकता से विरोध न रखती। दूसरी तरफ़ अवास्तविक उपाधि का परिणाम नहीं भी हो सकता जो कि सिर्फ़ शुद्ध कामना बनकर रह जाती है।

इस प्रकार के वाक्यों में, आम तौर पर अवधारक निपात 'काश' या समुच्चय-बोधक 'कहीं' ('अगर' के अर्थ में), 'यदि', 'अगर' और कुछ दूसरे संरचनात्मक तत्त्व प्रयोग होते हैं, उदाहरणार्थ : काश, उस समय पन्द्रह दिन को ही कहीं कलकत्ता-बंबई, पूना-हरिद्वार—कहीं भी भाग गया होता तो यह सब क्यों होता ? (108, 9), कहीं उसके नाम कोई लाटरी निकल आती ! फिर तो वह जालपा को आभूषणों से लाद देता (65, 28), कहीं तुम मुझे मिल जाते, मैं तुम्हें पकड़ पाती, फिर देखती कि मुझसे कैसे भागते हो ? (73, 177), काश, वह इस घर में न पैदा हुई होती ! काश, उसकी माँ सचमुच माँ होती ! (59, 85-86), काश, तुमने मुझे एक मौका दिया होता (75, 236)।

व्याख्यात्मक वाक्यों में संकेतार्थ के रूपों का प्रयोग और ऐसे ही सम्भावनार्थ के रूपों का प्रयोग शब्दार्थक रूप से प्रतिबन्धित होता है। यहाँ मुख्य शब्द 'क' स्वरूप-वाचक समुच्चयबोधक की उपस्थिति में काल्पनिकता की विभिन्न छायाएँ देते हैं और उनको निम्नलिखित श्रेणियों में बाँट सकते हैं :

—जहाँ पर आवश्यकताबोधक शब्द होते हैं : 'आवश्यक', 'ज़रूरी', 'योग्य', 'लायक', 'क़ाबिल', 'चाहिए' आदि जो कि व्याख्यात्मक-उद्देश्यवाचक वाक्यों में आते हैं, उदाहरणार्थ : इसलिए आवश्यक था कि मैं ज्ञान के अभाव को अपने प्रेम और भक्ति से पूरा करता (73, 112), वह इस योग्य थी कि किसी बड़े घर की स्वामिनी बनती (73, 158), तुम्हें तो चाहिए था कि डूब मरते चुल्लू भर पानी में (69, 72)।

—जिसमें अभिलाषा के अर्थ के शब्द होते हैं जो कि खुद क्रियाओं और संज्ञाओं में बाँट सकते हैं जो कि इच्छा के प्रत्यक्ष अर्थ को बताते हैं : 'चाहना', 'इच्छा' (इच्छा करना), 'जी चाहना', 'मन चाहना' आदि, उदाहरणार्थ : जी चाहता कि उन्हीं की भाँति मैं भी निःसंकोच हो जाती (69, 87), और विशेषण जो कि सकारात्मक गुण का अर्थ रखते हैं, उदाहरणार्थ : बहुत ही अच्छा होता कि तुम इस प्रश्न को मुझसे पूछने के बदले अपने ही हृदय से पूछ लेती (69, 94),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे तो कहीं अच्छा था कि आपने हमारे ही ऊपर अपना गुस्सा उतारा होता (69, 64), इससे तो यही बेहतर था कि तजवीज़ पेश न की जाती (73,184)।

—जिसमें सम्भावना के अर्थ के शब्द होते हैं: 'संभव', 'मुमकिन' आदि, उदाहरणार्थ: मुमकिन है कि इस मौके पर उस्ताद का अपमान हद तक पहुँच जाता, अगर उसी वक्त राजा मदनसिंह न आ पड़ते (54, 51)।

संभावनार्थ के रूपों के विपरीत जो कि ऐसी ही रचनाओं में आते हैं संकेतार्थ के रूप उस व्यापार को बताते हैं जो कि भूतकाल के अर्थ से सम्बन्ध रखता है, जिनका सबूत सबसे पहले भूतकाल के निश्चयार्थ के रूप हैं, जो मुख्य वाक्य में आते हैं।

संकेतार्थ के रूपों का मिश्र वाक्यों के बाकी प्रकारों में प्रयोग बहुधा वैकल्पिक होता है।

संकेतार्थ के रूप निम्नलिखित मिश्र वाक्यों में प्रयोग होते हैं:

सह-सम्बन्धी सार्वनामिक वाक्य (संयोजक सार्वनामिक तथा सर्वसम वाक्य), उदाहरणार्थ: तुम कम-से-कम इतना तो कर ही सकते थे कि उन पर डण्डे न चलाने देते (69, 54), उनमें स्वयं इतना साहस न था कि इस प्रस्ताव को इतनी स्पष्टता से व्यक्त कर सकते (69, 168), जितना रुपया उसके पेट में झोंक चुका उतने से तो अब तक गाँव मोल ले लेते (69, 153)।

अनुमतिवाचक वाक्य, उदाहरणार्थ: जवाब तो कुछ-न-कुछ जरूर ही देता, चाहे तुक मिलती या न मिलती (73, 110), उल्टे पाँव अपनी ससुराल वापस लौट आती; वहाँ उसे घुट-घुटकर चाहे मरना ही क्यों न पड़ता! (59, 122)।

विशेषण वाक्य, उदाहरणार्थ: उसके खून से तर कपड़े पहने हुए मुझे वह नशा हो रहा था जो शायद उसके विवाह में गुलाल से तर रेशमी कपड़े पहनकर भी न होता (69, 13), और कौन ऐसा निठल्ला था जो रात-रात भर उनसे शतरंज खेलता (65, 32), यह कौन था जो बीच में बोलता? (103, 159)।

कालवाचक वाक्य जो कि बहुधा संयुक्त समुच्चयबोधकों 'इसके (से) पहले (पूर्व) कि' द्वारा व्यक्त होते हैं, उदाहरणार्थ: इससे पहले कि कोई कुछ कहता··· देबू उछला (17, 220), इससे पहले कि वह लड़का चेतन पर झपटता···सभी आ पहुँचे···(17, 213)।

संकेतार्थ रूपों के साथ जो और दूसरे कालवाचक समुच्चयबोधक प्रयोग होते हैं, उनमें से एक है 'जब भी', उदाहरणार्थ: जब भी मौका मिलता, दोनों उन्हें सम्भलकर चलने की सलाह देते थे (17, 280)।

उद्देश्यवाचक वाक्य, उदाहरणार्थ: उनसे भी कोई बुरी हरकत नहीं हुए जिससे मुझे कोई शिकायत होती (24, 89)।

सम्भावनार्थक के रूपों के विपरीत, जो कि ऐसी ही रचनाओं में आते हैं, यहाँ भी संकेतार्थ के रूप उस व्यापार को व्यक्त करते हैं, जो कि भूतकाल के अर्थ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ सम्बन्ध रखता है।

निश्चयार्थ के निम्नलिखित कालवाचक रूप संकेतार्थ के रूपों के पूर्णतया व्याकरणिक समनाम होते हैं :

संकेतार्थ	निश्चयार्थ
(सरल रूप)	(अपूर्णतावाची नियमित आवर्ती भूतकाल)
तुम मेरी जगह होते तो इस समय क्या जवाब देते ? (73, 110)।	सोने जाते तो कोई-न-कोई पुस्तक साथ लेते (69, 80)।
(अपूर्ण रूप)	(अपूर्णतावाची आभ्यासिक भूतकाल)
तू मुझे मन से न चाहता होता, तो तू मुझे मारता क्यों ? (103, 45)।	सुभद्रा कोई काम करती होती तो सुमन स्वयं उसे करने लगती (73, 28)।
(पूर्ण रूप)	(पूर्ण आभ्यासिक भूतकाल)
उसने पाया होता तो कह न देता ? (73, 84)।	पर जिन देहातियों ने कभी शहर में फ़िल्म देखी होती वे ज़रूर शुरू से लेकर अन्त तक पूरा खेल देखते (V, जनवरी, 1963, 96)।
(संतत रूप)	(संतत आभ्यासिक भूतकाल)
अगर उनके हाथ से पत्ते फिसल रहे होते तो लेकर समेट देती (159, 18)।	कभी मल्होत्रा छुट्टी के दिन बारह-एक बजे इधर से गुज़रते तो लल्लन नल पर नहा रही होती (73, 38)।

इस तरह, संकेतार्थ के रूप भूतकाल के उन रूपों के व्याकरणिक समनाम होते हैं जिनमें किसी-न-किसी प्रकार्य में (मुख्य और सहायक क्रिया की हैसियत से) प्रथम कृदन्त आता है। उन रूपों में भिन्नता कैसे मालूम करते हैं ?

संकेतार्थ का सरल रूप और अपूर्णतावाची नियमित आवर्ती भूतकाल के बीच निम्नलिखित लक्षणों द्वारा अन्तर मालूम करते हैं :

(1) **नियमित आवर्ती और एकल व्यापार**—सरल रूप आवर्ती व्यापार तथा एकल व्यापार को व्यक्त करते हैं, जबकि अपूर्णतावाची नियमित आवर्ती भूतकाल सिर्फ़ आवर्ती व्यापार को व्यक्त करता है। निश्चयार्थ में आवर्ती व्यापार का लक्षण 'कभी' क्रियाविशेष हो सकता है, जो आम तौर पर संकेतार्थ में प्रयोग नहीं होता। यह क्रियाविशेषण मिश्र वाक्य में भी आ सकता है तथा सरल वाक्य में भी; उदाहरणार्थ : कभी जी घबराता, तो कोई उपन्यास लेकर पढ़ने लगती (69, 86), और तोता कभी इस डाल पर जाता, कभी उस डाल पर जाता, कभी पेड़ पर आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठता···(69, 124)।

(2) **व्यापार की अवास्तविकता-वास्तविकता**—सरल रूप उस सम्भाव्य या वांछनीय व्यापार को व्यक्त करते हैं जो कि वास्तविकता के विरोध में होता है, जबकि नियमित आवर्ती अपूर्णतावाची भूतकाल वास्तविक, नियमित आवर्ती व्यापार को व्यक्त करता है। दोनों रूपों के बीच अन्तर काफ़ी हद तक प्रामाणिकता से पाठ के निम्नलिखित खण्ड से मालूम होता है : लेकिन इतना परिश्रम का अभ्यास न होने के कारण कभी-कभी सिर में दर्द होने लगता। कभी पाचन-क्रिया में विघ्न पड़ जाता, कभी ज्वर चढ़ आता। तिस पर भी वह मशीन की तरह काम में लगे रहते। भाभी कभी-कभी झुँझलाकर कहतीं—अजी लेटे भी रहो, बड़े धर्मदाता बने हो। तुम्हारे जैसे दस-पाँच और होते, तो संसार का काम ही बन्द हो जाता (69, 132)। आख़िरी वाक्य संकेतार्थ के सरल रूप द्वारा व्यक्त हुआ है, चूँकि यहाँ वास्तविक नहीं बल्कि सम्भाव्य व्यापार व्यक्त है (चाहे कुछ और आदमी मिल भी जाते, तब भी संसार का काम हर हालत में समाप्त न होता)।

(3) **कई कालार्थ और एक कालार्थ**—संकेतार्थ के सरल रूप उस सम्भाव्य व्यापार को व्यक्त करते हैं जो कि सभी तीनों काल अर्थों में आ सकते हैं (भूत, भविष्यत् तथा वर्तमान), जबकि नियमित आवर्ती अपूर्णतावाची भूतकाल सिर्फ़ भूतकाल के अर्थ में आ सकता है।

(4) **संरचनात्मक-वाक्यात्मक भिन्नता**—नियमित आवर्ती अपूर्णतावाची भूतकाल मुख्यतः उन मिश्र वाक्यों में आता है जिनमें कालवाचक आश्रित वाक्य होता है जो 'जब' समुच्चयबोधक द्वारा जोड़ा जाता है, या सरल वाक्य में जिसमें एक-दो एकजातीय विधेय होते हैं जबकि संकेतार्थ का सरल रूप मुख्यतः उन मिश्र वाक्यों में आता है, जिनमें संकेतवाचक आश्रित वाक्य होता है और उन वाक्यों में जिनकी विशिष्ट संरचना होती है जो कि निश्चयार्थ के रूपों के प्रयोग की सम्भावना को समाप्त कर देते हैं।

जब नियमित आवर्ती अपूर्णतावाची भूतकाल के रूप संकेतवाचक वाक्यों में आते हैं, उनमें और संकेतार्थ के सरल रूपों के बीच भिन्नता वास्तविकता-अवास्तविकता, आवर्ती एकल व्यापार, एक कालार्थ—कई कालार्थ के लक्षणों द्वारा मालूम करते हैं उदाहरणार्थ :

निश्चयार्थ	संकेतार्थ
स्त्रियों को यदि गहने बनवाने होते तो उमानाथ से कहतीं (73, 100)।	···ईश्वर मुझे भी ऐसी ही एक झोंपड़ी दे देता, तो मैं उसी पर सन्तोष करता (73, 195)—भविष्यत् काल के अर्थ में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि कभी वह मुझे दर्पण के सामने देख लेती, तो धिक्कारने लगती··· (69, 82)।

अगर इस वक्त उसे जाली नोट बनाना आ जाता, तो वह अवश्य बनाकर चला देता (65, 28)—वर्तमान काल के अर्थ में;

अगर कोई होते, तो मुझे यों ही न छोड़ देते (65, 30)—भूतकाल के अर्थ में।

दूसरी तरफ़, जब संकेतार्थ का सरल रूप कालवाचक वाक्यों में आता है, तो उसमें और नियमित आवर्ती अपूर्णतावाची भूतकाल के रूपों के बीच अन्तर अवास्तविकता-वास्तविकता, एकल-आवर्ती व्यापार, एक कालार्थ में—भिन्न काल अर्थों के लक्षणों द्वारा मालूम करते हैं जो कि निम्नलिखित उदाहरण में समझा जा सकता है : अगर भगवान ने उसे इतना अपंग न कर दिया होता, तो आज झोंपड़ी तो लीपती, द्वार पर बाजे बजवाती, कढ़ाव चढ़वा देती, पूरियाँ बनवाती और जब वे लोग खा चुकते, तो अंजलि-भर रुपये उनकी भेंट कर देती (69, 67)।

संकेतार्थ का अपूर्ण रूप और अपूर्णतावाची आभ्यासिक भूतकाल निम्नलिखित लक्षणों द्वारा भिन्न होते हैं : व्यापार की अवास्तविकता-वास्तविकता, एक कालार्थ में—भिन्न कालार्थ में और संरचनात्मक-वाक्यात्मक भिन्नता में। व्यापार की अवास्तविकता-वास्तविकता के अर्थ में भिन्नता के बारे में ज़्यादा कहने की आवश्यकता नहीं, चूँकि यह संकेतार्थ के सरल रूप तथा नियमित आवर्ती अपूर्णतावाची भूतकाल के रूप वर्णन करते समय निरीक्षण किया गया था और वह संकेतार्थ तथा निश्चयार्थ के सभी रूपों को मालूम करने के लिए समान है।

कालार्थ में भिन्नता (वर्तमान तथा भूतकाल के अर्थ में—संकेतार्थ के अपूर्ण रूप और सिर्फ़ भूतकाल के अर्थ में—अपूर्णतावाची आभ्यासिक भूतकाल) जटिल इस कारण हो जाती है कि अपूर्णतावाची आभ्यासिक भूतकाल का व्यापार दूसरे अपूर्ण व्यापार की पृष्ठभूमि में होता है जो कि संकेतार्थ के रूपों के लिए स्वाभाविक नहीं है। दूसरी तरफ़, व्यापार की अभ्यासता की धारणा संकेतार्थ के अपूर्ण रूप के लिए स्वाभाविक नहीं है।

जहाँ तक संरचनात्मक-वाक्यात्मक भिन्नता का सम्बन्ध है, तो संकेतार्थ का अपूर्ण रूप आम तौर पर संकेतवाचक वाक्यों में आता है, और अपूर्णतावाची आभ्यासिक भूतकाल के रूप आम तौर पर कालवाचक वाक्यों में आते हैं।

संकेतार्थ के पूर्ण रूपों के बीच और अपूर्णतावाची आभ्यासिक भूतकाल के बीच निम्नलिखित लक्षणों द्वारा अन्तर मालूम करते हैं : व्यापार की अवास्तविकता-वास्तविकता, व्यापार का अनावर्ती-आवर्ती (नियमित) होना और संरचनात्मक-वाक्यात्मक भिन्नता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों रूप जिनके बीच तुलना की जा रही है, मुख्यत: पूर्णभूत और पूर्णतावाची भूत का अर्थ देते हैं, उनमें अन्तर यह है कि उनमें से एक तो एकल अनावर्ती व्यापार (संकेतार्थ का पूर्ण रूप) व्यक्त करता है और दूसरा नियमित आवर्ती व्यापार को (पूर्णतावाची आभ्यासिक भूतकाल) :

संकेतार्थ	निश्चयार्थ
यदि प्राण देने से पापों का प्रायश्चित हो जाता तो मैं अब तक कभी का प्राण दे चुका होता (73, 193)।	जब वे घर आते तो उनका बच्चा सो चुका होता (7, 82)।

संरचनात्मक-वाक्यात्मक अर्थ में दोनों रूप जिनकी तुलना की जा रही है, मिश्र तथा सरल वाक्यों के विभिन्न संरचनात्मक प्रकारों में आते हैं : संकेतार्थ का पूर्ण रूप—मुख्यत: संकेतवाचक वाक्यों और उन सरल वाक्यों में आता है जिनकी विशिष्ट संरचना होती है। पूर्णतावाची आभ्यासिक भूतकाल मुख्यत: कालवाचक वाक्यों में आता है।

संकेतार्थ का संतत रूप और संतत आभ्यासिक भूतकाल के बीच अन्तर निम्न-लिखित लक्षणों द्वारा मालूम करते हैं : व्यापार की अवास्तविकता-वास्तविकता, व्यापार का अनावर्ती-आवर्ती (नियमित) होना और संरचनात्मक-वाक्यात्मक भिन्नता।

पहली दो भिन्नताएँ ऊपर अध्ययन की हुई भिन्नताओं से मेल खाती हैं। जहाँ तक तुलना होने वाले रूपों की संरचना का सम्बन्ध है, तो संकेतार्थ का संतत रूप आम तौर पर संकेतवाचक वाक्यों में होता है, जबकि संतत आभ्यासिक भूतकाल आम तौर पर कालवाचक रचनाओं में आता है :

संकेतार्थ	**निश्चयार्थ**
यदि तुम पढ़ रहे होते तो उन्नति पर जाते (III, मार्च, 1969, 112)।	हम लोग उसके यहाँ पहुँचे तो उसके कमरे से सितार की आवाज़ आ रही होती (52, 132)।

संकेतार्थ के संतत रूप के विपरीत संतत आभ्यासिक भूतकाल का सरल वाक्यों में प्रयोग हो सकता है, उदाहरणार्थ : कभी ऐसे में उसका पति हरिया अपनी कोठरी के आगे बैठा बीड़ी पी रहा होता (13, 38), वे अन्दर बिस्तर पर लेटे धीरे-धीरे बातें कर रहे होते और वह बाहर बैठा उन्हें सुनने का प्रयास किया करता (7, 64)।

संकेतार्थ का सरल रूप अपूर्णतावाची वर्तमान का रूपात्मक व्याकरणिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समनाम है जो कि बग़ैर सहायक क्रिया 'है' के निषेधात्मक वाक्यों में आता है। इस स्थिति में दो रूप का जिनके बीच तुलना हो रही है निम्नलिखित लक्षणों द्वारा अन्तर जान सकते हैं : व्यापार की अवास्तविकता-वास्तविकता, विभिन्न कालार्थ—एक कालार्थ, संरचनात्मक-वाक्यात्मक प्रतिबन्धितता—संरचनात्मक-वाक्यात्मक अप्रतिबन्धितता।

अपूर्णतावाची वर्तमान, जो कि वास्तविक व्यापार व्यक्त करता है और उक्ति के क्षण के साथ मेल खाता है, व्यावहारिक रूप से सभी संरचनात्मक रचनाओं में आ सकता है, अर्थात् हर प्रकार के सरल तथा मिश्र वाक्यों के प्रकारों में, जबकि संकेतार्थ का सरल रूप, जो कि अवास्तविक व्यापार को बताता है जो विभिन्न कालार्थों में हो सकता है सीमित रचनाओं में आता है (मुख्यत: संकेतवाचक वाक्यों में और कुछ एक-दूसरे से विशिष्ट सरल और मिश्र वाक्यों में)।

आज्ञार्थ

आधुनिक हिन्दी में आज्ञार्थ छ: संश्लेषणात्मक रूपों का एक समूह है, जिनमें से चार तो नियत होते हैं अर्थात् एक सर्वनाम के साथ सम्बन्धित होते हैं और दो अनियमित रूप जो कि दो सर्वनामों से सम्बन्धित होते हैं। वह रूप जो धातु का पर्याय होता है 'तू' सर्वनाम से सम्बन्धित होता है, 'ओ' वाला रूप—'तुम' सर्वनाम से, 'इये', 'इयेगा', वाले रूप 'आप' सर्वनाम से सम्बन्धित होते हैं। 'इयो' रूप तथा रूप जो कि तुमर्थ का समाकार है, 'तू' और 'तुम' सर्वनामों से सम्बन्धित हैं। इस तरह 'तू' सर्वनाम तीनों रूपों से परस्पर सम्बन्ध रखता है : (1) धातु का समाकार, (2) 'इयो' रूप तथा (3) तुमर्थ का समाकार; 'तुम' सर्वनाम भी तीन रूपों से सम्बन्ध रखता है : (i) 'ओ' रूप से, (ii) 'इयो' से और (iii) तुमर्थ का समाकार; 'आप' सर्वनाम दो रूपों से सम्बन्ध रखता है : (i) 'इये' और (2) 'इयेगा' रूपों से।

सब उल्लेखित रूप किसी-न-किसी प्रकार उद्‌बोध को व्यक्त करते हैं जो कि मध्यम पुरुष के साथ सम्बन्ध रखता है। तीन रूप (धातु का समाकार, 'ओ' तथा 'इये' वाले रूप) उस उद्‌बोध को व्यक्त करते हैं जो कि उक्ति के क्षण के साथ मेल खाता है। बाकी तीन उस उद्‌बोध को व्यक्त करते हैं जो कि उक्ति के क्षण का अनुवर्ती होता है।

उद्‌बोध जो कि उत्तम तथा अन्य पुरुष के सर्वनाम से सम्बन्धित है, संभावनार्थ के रूपों द्वारा व्यक्त होता है।

धातु का समाकार

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, यह रूप 'तू' सर्वनाम से सम्बन्धित होता है। वह आज्ञार्थ का रूप है जो कि सिर्फ़ एक पुरुष के साथ सम्बन्ध रखता है। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप तब प्रयोग होता है जब :

(1) परिवार या समाज का बड़ा आदमी किसी छोटे आदमी को सम्बोधित करता है, या अध्यापक छात्र को सम्बोधित करता है, जैसे : जा बेटी, भागकर भीतर से अचार ले आ भाई के लिए (75, 46), भाई, अच्छा हुआ तू वापस आ गया। अपनी माँ की हालत न पूछ···(75, 40), चल बेटा ! साज़ को ताँगे में रख दे (54, 8)।

(2) घनिष्ठ मित्रगण को सम्बोधित करते हुए या निकट सम्बन्धियों के बीच जब सम्बोधन होता है, उदाहरणार्थ : अहा बेटा पानी !···आ इधर बैठ जा चारपाई पर (75, 89), फिर कान में कहा···तू अपना है···बैठ (1, 373), नज़ीर तू रंज न कर (69, 203), प्यारी, तू जा ! सो जा (103, 216)।

(3) ऐतिहासिक तौर पर उनको 'तू' से सम्बोधित कर सकते हैं जो कि समाज के नीचे स्तर के लोग होते हैं या जो कि सामाजिक स्तर पर ज़्यादा नीचे होते हैं, उदाहरणार्थ : 'पहले यह बतला', सहज तीव्र स्वर से महाराजा बोले (54, 15), 'बस कर', उस्ताद ने गुस्ताख़ ताँगे वाले को डाँटा (54, 12), अरी चल नटनी ! (103, 230), 'भीतर चल' सिपाही ने कहा (103, 41)।

(4) जानवरों को सम्बोधित करते हैं, उदाहरणार्थ : छोड़ गुस्सा··· माफ़ कर (103, 123)—घोड़े को सम्बोधित करते हुए; आ बेटा (102, 229)—कुत्ते को सम्बोधित करते हुए।

(5) परिष्कृत सम्बोधन भगवान को, भिक्षुओं को या उनको करते हैं जो कि सामाजिक स्तर पर ज़्यादा ऊँचे हैं, उदाहरणार्थ : हे भगवान, जैसे तूने मेरी सुनी, वैसे ही सबकी सुन ! (11, 78), हे महादेव, प्यारी को अच्छा कर दे, उसे बचा ले (103, 398), तू राजा हो जा···(54, 28)।

(6) तिरस्कारबोधक सम्बोधन करते हैं या गन्दी गाली देते हैं, उदाहरणार्थ : राजा !···सुन···राजा सच मान (54, 51), बोल हरामज़ादे, बोल ! (75, 132), रख दे कड़ा ! कमीन ! (102, 125), भाड़ में जा गिर (107, 63)।

आज्ञार्थ का यह रूप 'तू' के साथ भी आ सकता है, उसके बगैर भी। 'तू' सर्वनाम की उपस्थिति उद्‌बोध की प्रकृति को तेज कर देती है, विशेष कर जब क्रिया से पहले सर्वनाम आता है, उदाहरणार्थ : प्यारी तू जा ! (103, 216), अरे चुप रह तू (103, 208), जा तू कल गिरफ़्तार हो जा (103, 362)।

निषेधात्मक वाक्यों में जहाँ मनाही होती है, आज्ञार्थ का यह रूप निषेधात्मक निपात 'न' या 'नहीं' के साथ (आम मनाही) आता है या 'मत' (स्पष्ट मनाही) के साथ आता है। तब निपात 'न' और 'नहीं' एक निर्धारित जगह पर होते हैं : 'न' तो क्रिया के आगे होता है, 'नहीं' क्रिया के बाद और निपात 'मत' स्वतन्त्र जगह ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है, उदाहरणार्थ : तू न डर (103, 417), रो नहीं कजरी (103, 189), पहले मान जा, बहस न कर (103, 217), चलने दे गरीब को, मार मत (59, 9), ऐसा मत कर ! (103, 463)।

आज्ञार्थ के रूप में 'ज़रा' निपात का प्रयोग शिष्टता की छाया देता है या हुक्म को हल्का कर देता है, उदाहरणार्थ : तू यहीं ठहरा रह ज़रा (103, 430), अरे बहू ज़रा सँभालकर मल (83, 47)।

आज्ञार्थ का धातु का समाकार रूप सामान्य पुरुषवाचक अर्थ में आ सकता है। तब उसका निरपेक्ष कालवाचक अर्थ होता है, उदाहरणार्थ : नेकी कर और कुएँ में डाल (77, 225), यूँ भी देखा वूँ भी देखा (77, 335), सूरत न शक्ल, भार से निकल (77, 377)। जैसा कि उदाहरणों से विदित है यहाँ मुख्यतः मुहावरे और लोकोक्तियाँ आते हैं।

'ओ' का रूप

आज्ञार्थ का यह रूप क्रिया की धातु के साथ परप्रत्यय 'ओ' लगाने से बनता है। 'देना' और 'लेना' क्रियाओं के साथ यह परप्रत्यय अंत्यलुप्त धातु के साथ लगाते हैं : 'ओ' परप्रत्यय धातु के स्वर की जगह आता है (दे-द + ओ-दो, ले-ल+ओ-लो)। कई धातुओं में जो 'ओ' पर समाप्त होती हैं, वहाँ 'ओ' परप्रत्यय को छोड़ सकते हैं, लेकिन यह मानक नहीं है, जो कि निम्नलिखित उदाहरणों से प्रमाणित होता है, तुम न रोओ, काका ! (83, 71), तू रो नहीं कजरी (103, 417)। जैसा कि रचना से विदित है, आज्ञार्थ का यह रूप संभावनार्थ का बहुवचन में मध्यम पुरुष का पर्याय रूप है, हालाँकि दोनों रूप अपनी शब्दार्थक और वाक्यात्मक विशेषताओं से जाने जाते हैं। इस तरह सम्भावनार्थ के रूप वांछनीय या सम्भाव्य व्यापार को व्यक्त करते हैं लेकिन व्यापार के लिए उद्बोध व्यक्त नहीं करते। वे ऐसी विशिष्ट रचनाओं में प्रयोग में आते हैं जहाँ आज्ञार्थ का प्रयोग नहीं होता उदाहरणार्थ : मैं नहीं चाहता कि तुम वहाँ जाओ (69, 21), अच्छा नहीं लगता कि तुम काम करो और मैं बैठकर देखती रहूँ (59, 38) मैं तुम्हारी बात मान सकती हूँ अगर तुम मेरी एक बात मान लो (59, 88)। दूसरी तरफ़ आज्ञार्थ का मिश्र वाक्य के दोनों अंगों में प्रयोग नहीं हो सकता जो कि सिर्फ़ सम्भावनार्थ के लिए स्वाभाविक है, उदाहरणार्थ : चाहो तो तुम भी कुछ माँग लो (59, 93)। तीसरे, अगर आज्ञार्थ में सर्वनाम को छोड़ देना व्याकरणिक मानक है तो संभावनार्थ में सर्वनाम, आम तौर पर, छोड़ा नहीं जाता।

आज्ञार्थ का बहुवचन में मध्यम पुरुष के रूप का प्रयोग एक आदमी या कई आदमियों को संबोधित करते हुए हो सकता है, उदाहरणार्थ : तुम लोग हट जाओ, वरन् मैं फ़ायर कर दूँगा (71, 157), जाओ, जल्दी जाओ किशन (120, 45)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह रूप शिष्टता का आम रूप है और निम्नलिखित स्थितियों में प्रयोग होता है :

(1) परिवार (या समाज) के सामान्य शिष्ट सम्बोधन में—बड़े छोटों को सम्बोधित कर सकते हैं, और छोटे भी बड़ों को ऐसे ही सम्बोधित कर सकते हैं, उदाहरणार्थ : अम्मा थोड़ा-सा गुड़ दे दो (75, 141), गुड़ मत खाओ भैया (70, 12), तुम आज ही पृथ्वीपाल के बाप से मिल आओ (75, 141), भैया ! चलकर कुछ खाना खा लो (120, 42), पाली बेटा अचार ले लो ना? (75, 146), अम्माजी, तुम ले लो···(65, 63), एक बूढ़े ने कहा, 'हाथ-मुँह धोकर ठण्डा लो, बेटा' (83, 71)।

(2) जब दोस्तों के बीच शिष्ट सम्बोधन होता है, उदाहरणार्थ : कहो भाई चेतन, कैसे हो (17, 35), गोविन्द ! तुम मेरी नाव में बैठ जाओ (120, 51), जगतपुर के दोस्तो ! मेरी एक बात सुनकर मुझे गालियाँ दो (120, 37), एक मेहमान है मिस पाल, दरवाज़ा खोलो (52, 136), सुनो जी, ज़रा बाबू रामनाथ को बुला लाओ (65, 139)।

(3) (ऐतिहासिक तौर पर) जब वे लोग जो कि सामाजिक तौर पर ज़्यादा ऊँचे स्तर पर होते हैं, उन लोगों को सम्बोधित करते हैं जिनका सामाजिक स्तर ज़्यादा नीचा है, उदाहरणार्थ : औरतों की-सी बात न करो सुखराम (103, 495), मैं कहता हूँ, 'दादू चलो, मेरे साथ चलो (107, 6), बादशाह ने फरमाया—'अब जाओ ज़्यादा न सताओ' (24, 8)।

(4) जब अध्यापक छात्र को शिष्टता से सम्बोधित करता है, उदाहरणार्थ : जूली, ज़रा मुझे लिफ़ाफ़ा दिखलाओ (52, 116)।

(5) जब उनका दोस्ताना मित्रतापूर्ण सम्बोधन है जो कि पदवी में छोटे होते हैं, या ज़्यादा निम्न स्तर के हैं, जब वे ज़्यादा ऊँची पदवी वालों को या ज़्यादा ऊँचे स्तर के लोगों को सम्बोधित करते हैं, उदाहरणार्थ : माफ़ करो उस्ताद (54, 10), बोलो, उस्ताद (103, 215), आज बाबू भैया, मेरे संग घूमने चलो (103, 2), ठाकुर जल्दी चलो (69, 210)।

(6) भगवान को आम शिष्टतापूर्वक सम्बोधित करते हुए, उदाहरणार्थ : हे भगवान, बदला चुकाओ (51, 21), हे भगवान, मुझे भी उनके चरणों में पहुँचा दो ! (83, 26)।

(7) अशिष्ट तिरस्कारबोधक सम्बोधन, उदाहरणार्थ : चुप रहो यू ब्लडी (69, 27), अब निकल जाओ मेरे घर से···जाओ ज़ालिम ! (75, 242), आज तो अपनी ज़बान को बन्द रखो माँ ! (59,14)।

(8) दो या उससे ज़्यादा लोगों या जानवरों को सम्बोधित करते समय, उदाहरणार्थ : सिपाहियो, तलवार दो पागलों को (54, 76), तुम दोनों यहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहो (103, 345), चलो भैया (52, 38)—बैलों को सम्बोधित करते हुए; इसी बीच विजय ने सबको चुप करते हुए कहा, 'चुप रहो, अगर कारण सुनने की हिम्मत हो तो बैठो, नहीं तो कहीं चले जाओ !' (120, 12), तुम लोग उन्हीं से कहो (83, 11)।

आज्ञार्थ का यह रूप 'तुम' सर्वनाम के बग़ैर भी आ सकता है, उसके साथ भी आ सकता है। 'तुम' सर्वनाम लगाने से उद्बोध की प्रकृति तेज़ हो जाती है, विशेष कर उन स्थितियों में जब वह क्रिया के आगे होता है, उदाहरणार्थ : तुम जाओ (120, 78), तुम भी बैठो (52, 49), अरे रहने दो तुम ! (103, 24)।

निषेधात्मक वाक्यों में जब मनाही को व्यक्त करना होता है तो आज्ञार्थ का यह रूप निषेधात्मक निपातों 'न' और 'नहीं' के साथ आता है (जब सामान्य मनाही होती है) और निपात 'मत' के साथ (जब स्पष्ट मनाही होती है)। 'न' और 'नहीं' निपातों का स्थान निश्चित होता है—'न' क्रिया से पहले आता है और 'नहीं' क्रिया के बाद, लेकिन 'मत' निपात स्वतन्त्र स्थान रखता है, उदाहरणार्थ : तुम फ़िक्र न करो (17, 33), डरो नहीं, बीवी जी ! डरो नहीं (103, 463), मुझे मत छूओ (103, 559), बको मत (17, 114)।

आज्ञार्थ के इस रूप में 'ज़रा' निपात का प्रयोग शिष्टता की छाया ज़्यादा कर देता है या हुक्म को कमज़ोर कर देता है, उदाहरणार्थ : जूली, ज़रा मुझे लिफ़ाफ़ा दिखलाओ (52, 116), तुम ज़रा घूम-घुमाकर अपना जी बहला आओ (65, 81)।

आज्ञार्थ का 'ओ' रूप सामान्य पुरुषवाचक अर्थ में हो सकता है। तब वह निरपेक्ष कालवाचक अर्थ अपना लेता है, उदाहरणार्थ : मुँह से बोलो सिर से खेलो (77, 322), रोटी वहाँ खाओ और पानी यहाँ पीओ (77, 340), इन लड़कियों को खिलाओ-पिलाओ, पाल-पोस कर बड़ी करो···(75, 136), इन कमीनों को दो जूता दो, अभी बोल लेंगे (103, 41)। जैसा कि उदाहरणों से विदित है, यहाँ आम तौर पर मुहावरे और लोकोक्तियाँ आते हैं।

बहुत ही कम स्थितियों में आज्ञार्थ के इस रूप के साथ 'आप' सर्वनाम आता है, हालाँकि इस प्रयोग को भाषिक मानक नहीं कहा जा सकता, उदाहरणार्थ : आप मानो चाहे न मानो, मैं एक सयाने को लाऊँगा (65, 189), अब जब तक मान लो, आप यहाँ रहो···(24, 132)।

'इये' (इए) रूप

आज्ञार्थ का यह रूप क्रिया की धातु के साथ परप्रत्यय 'इये' (इए) लगाने से बनता है। 'देना', 'लेना', 'करना', 'पीना', 'होना', 'सीना' क्रियाएँ आज्ञार्थ के उस रूप को 'ज़िये' (जिए) लगाने से बनाती हैं जो कि स्वर विसंधि के फलस्वरूप बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम स्थितियों में 'जे' रूप को अपना सकता है : दीजिए (दीजिए, दीजे); लीजिये (लीजिए, लीजे); कीजिए (कीजिए, कीजे); पीजिये (पीजिए, पीजे); हूजिये (हूजिए, हूजे); सीजिये (सीजिए, सीजे)। जैसा कि आज्ञा के दिये गये रूपों से प्रकट होता है, 'देना', 'लेना', 'करना' क्रियाएँ परप्रत्यय को विकृत धातु के साथ लगाती हैं। 'करना' और 'होना' क्रियाएँ अनियमित रूप के साथ नियमित रूप भी बना सकती हैं : करिये (करिए), होइये (होइए)।

'इये' (इए) रूपों को बहुवचन में मध्यम पुरुष का शिष्ट रूप मान सकते हैं जो कि कई लोगों या एक आदमी के लिए परिष्कृत शिष्टता को व्यक्त करने के काम आता है, उदाहरणार्थ : आप लोग आराम से इधर बैठिये (120, 53), मिस लतिका, ज़रा अपना लैम्प ले आइए (52, 123)। इस रूप का प्रयोग हो सकता है :

(1) जब घर में छोटे बड़ों को परिष्कृत शिष्टता से सम्बोधित करते हैं या धर्म-पत्नी पति को सम्बोधित करती है, उदाहरणार्थ : अपना उपदेश आप अपने ही लिए रखिए (65, 42)—पिता को सम्बोधित करते हुए; आप उन्हें सीधे मेरे पास भेज दीजिए (65, 146)—ससुर को सम्बोधित करते हुए; सन्दूक की चाबी लीजिए, सौ-सवा सौ रुपये पड़े हुए हैं, निकाल ले जाइए (73, 52)—पति को सम्बोधित करते हुए; थोड़ा-सा खाने-पीने का सामान ले चलिए (73, 105)—बड़े भाई को सम्बोधित करते हुए; जीजाजी, आप रुक जाइए (59, 886)—बड़ी बहन के पति को सम्बोधित करते हुए; आप घबराइए नहीं पिताजी (27, 131)।

(2) जब समान स्तर के लोग परिष्कृत शिष्टता से बोलते हैं या परिचितों के बीच परिष्कृत शिष्टता से सम्बोधन होता है। अबुलवफ़ा बोले, आइये जनाब !··· आइये कुछ दूर साथ ही चलिये ! शर्माजी ने उत्तर दिया, मैं इस समय घूमा करता हूँ, क्षमा कीजिए (73, 59), मिस लतिका, लैम्प ज़रा और नीचे झुका दीजिए (52, 123)।

(3) जब अपरिचित या कम परिचित लोग परिष्कृत शिष्टता से सम्बोधन करते हैं, उदाहरणार्थ : उस पुरुष ने गाड़ी चलाते हुए काइरी से कहा, 'लीजिए मेरा रूमाल, अपने आँसू पोंछ डालिये' (28, 108), इस साले से बीस बार कहा है कि बिना देखे दोस्तों को पीछे से झपट्टा न मारा करो। कई बार यह हमारे साथ भी ऐसा करता है। मारिए उतारकर चार जूते इसके सिर पर···(17, 247), युसूफ़ ने फिर पहले युवक से हिन्दी में कहा : 'अब कृपया, आप मेरी रूसी बात का हिन्दी अनुवाद इन्हें समझा दीजिये (1, 425)।

(4) कारबारी शिष्ट सम्बोधन में, उदाहरणार्थ : सुपरिन्टेंडेंट बोला—'फ़रमाइए, क्या काम है ?'—'देखिए', मैंने कहा, 'मैं सहायता माँगने आया हूँ' (27, 33-34), चेयरमैन बोले, 'अब आप बनिये नहीं। साफ़-साफ़ बताइए,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या काम है?' (27, 28)।

(5) जब बड़ों को या अपने से बड़े ओहदे वालों से अधिक शिष्टता से सम्बोधित करते हैं, उदाहरणार्थ : घबराइए नहीं पण्डितजी (120, 72), माफ़ कीजिए, सरकार (54, 13), जी बोलिए, क्या आज्ञा है (1, 91)।

(6) जब ज़ोर देकर शिष्टता से या हास्यपूर्वक शिष्टता से बड़े लोग, जिनका समाज में ज्यादा ऊँचा ओहदा होता है, उन लोगों को सम्बोधित करते हैं जिनका सामाजिक स्तर नीचा होता है, या ज़ोर देकर शिष्टता से या हास्यपूर्वक शिष्टता से उम्र में बड़े लोग अपने से कम उम्र वाले लोगों को संबोधित करते हैं, उदाहरणार्थ : महाराज ने प्रसन्न होकर साधु को ललकारा, 'ज़रा लखनऊ के उस्ताद की नकल भी कीजिए' (54, 23), आइए, आइए, बाबू रामनाथ साहब, बहादुर! (65, 33), वकील—रतनबाई को बाल-समाज से बड़ा स्नेह है···अगर आपको बच्चों से प्यार हो, तो जाइए (65, 104), डॉक्टर आत्माराम मुसकराए, बोले, '···अपनी नयी दुनिया बसाते वक्त इस पुरानी राजनीति की चालों पर गौर न कीजिए। भगाइये यहाँ से (1, 475)।

(7) दुकानदारों का ख़रीददारों को शिष्ट-चाटुकारिताबोधक सम्बोधन, उदाहरणार्थ : दलाल ने बड़े विनीत भाव से कहा—'बाबूजी, देख तो लीजिए (65, 62), जौहरी ने हार को उलट-पुलटकर देखा और हिचकते हुए बोला—'साढ़े ग्यारह सौ कर दीजिए' (65, 122)।

आज्ञार्थ का यह रूप, 'आप' सर्वनाम के बग़ैर भी आ सकता है तथा 'आप' सर्वनाम के साथ भी। 'आप' सर्वनाम उद्बोध को ज़्यादा बल देता है, विशेषकर उन स्थितियों में जबकि वह क्रिया से पहले आये, उदाहरणार्थ : आप ही न कह दीजिए (65, 141), मेरी ख़ातिर आप इसे स्वीकार कर लीजिए (27, 66), आप लोग जाइए (44, 25)।

निषेधात्मक वाक्यों में आज्ञार्थ में मनाही व्यक्त करने के लिए 'इये' (इए) के साथ 'न' और 'नहीं' निषेधात्मक निपात (सामान्य मनाही) या 'मत' निपात (स्पष्ट मनाही) आते हैं। 'न' और 'नहीं' निपातों का निर्धारित स्थान होता है : 'न' क्रिया से पहले आता है और 'नहीं' क्रिया के बाद और 'मत' निपात स्वतन्त्र स्थान रखता है, उदाहरणार्थ : अमीर मुझे न बनाइये (54, 16), घबराइये नहीं (65, 105), आप मुझे गुरुजी मत कहिये (52, 55), हँसिये मत दरोगाजी (65 224)।

आज्ञार्थ का यह रूप सामान्य पुरुषवाचक अर्थ में आ सकता है। तब वह निरपेक्ष कालवाचक अर्थ अपनाता है, उदाहरणार्थ : अपना घर रखिये, चोर न किसी को कहिये (77, 16), खाइये मन भाता, पहनिये जग भाता (37, 86), पनीर के साथ खुश्क खाइये (77, 232), वकील साहब ने फिर कहा—'···बंधनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से समाज का पैर न बाँधिये, उसके गले में कैद की ज़ंजीर न डालिये। विधवा-विवाह का प्रचार कीजिये…(65, 104), वतन की देखिये तकदीर कब बदलती है (69, 19)। जैसा कि उदाहरणों से विदित है, यहाँ आम तौर पर मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ आते हैं।

आज्ञार्थ के इस रूप के साथ 'ज़रा' निपात का प्रयोग, वास्तव में फालतू है, चूँकि 'ज़रा' अधिक शिष्टता की किसी भी अतिरिक्त छाया को व्यक्त नहीं करता; 'ज़रा' निपात का प्रयोग महज़ भाषिक प्रयोग की देन है, उदाहरणार्थ : 'ज़रा पता तो लगाइये (59, 106), मिस लतिका, ज़रा अपना लैम्प ले आइये (52, 123)।

इयो (इओ) वाले रूप

आज्ञार्थ का यह रूप क्रिया की धातु के साथ 'इयो' (इओ) परप्रत्यय लगाने से बनता है। आज्ञार्थ का यह रूप 'देना', 'लेना', 'करना', 'होना', 'पीना', 'सीना' क्रियाओं के साथ 'जियो' (जिओ) परप्रत्यय लगाने से बनता है जो कि स्वर विसंधि के परिणामस्वरूप 'जो' का रूप अपना सकता है: दीजियो (दीजिओ), (दीजो); लीजियो (लीजिओ), (लीजो); कीजियो (कीजिओ), (कीजो); हूजियो (हूजिओ), (हूजो); पीजियो (पीजिओ), (पीजो); सीजियो (सीजिओ), (सीजो)। जैसा कि दिए गए उदाहरणों से विदित है 'देना', 'लेना', 'करना', 'होना' क्रियाएँ विकृत धातु के साथ परप्रत्यय लगवाती हैं। 'करना' और 'होना' अनियमित के साथ नियमित रूप बना सकते हैं : करियो (करिओ), होइयो (होइओ)।

'इयो' (इओ) वाला रूप 'तू' तथा 'तुम' दोनों ही सर्वनामों के साथ सम्बन्ध रख सकता है, उदाहरणार्थ : तू उससे अलग-ही-अलग भुगत लीजो। मेरा नाम न लीजिओ (103, 130), कारोबार राज्य का ईमानदारी और होशियारी से तुम किया कीजो (26, 126)। यहाँ यह उल्लेख करना उचित होगा कि अधिकतर स्थितियों में यह रूप 'तू' सर्वनाम से सम्बन्ध रखता है, इसीलिए आम तौर पर एक ही पुरुष को सम्बोधित करते समय इसका प्रयोग कर सकते हैं।

यह रूप जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, उस उद्‌बोध को व्यक्त करता है, जो कि उक्ति के क्षण का अनुवर्ती होता है, जो कि काल के संगत क्रियाविशेषणों की उपस्थिति में विशेषकर अच्छी तरह प्रकट होता है, उदाहरणार्थ : पर किसी दिन सुखराम पर हाथ साफ़ कर लीजियो (103, 217), अरी, कल ले आइयो (103, 458), कल मुझे जंगल ले चलियो (103, 193), जो तुम्हारे जी में आयेगा सो कीजो (24, 142)।

'इयो' (इओ) वाले रूप को आज्ञासूचक-प्रार्थनासूचक या आज्ञासूचक-उपदेश-सूचक रूप कहा जा सकता है, जो कि उन रूपों से कम ज़ोरदार होता है जो धातु का समाकार होता है या 'ओ' से बनता है, उदाहरणार्थ : जब मरे हमसे कह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीजियो। बिना कहे मत मरियो (44, 79), मुझे भूल न जाइयो (24, 143), देख तेज़ धागा लाइओ, देर न करिओ (54, 6), फिर तू मेरी बोटी-बोटी काट के चील-कौओं को खिला दीजो (103, 92), तू राज़ी न हूजियो (24, 100)।

आज्ञार्थ का यह रूप उन अर्थों में आता है जिनमें 'तू' और 'तुम' सर्वनामों के साथ वे रूप आते हैं जिनका ऊपर अध्ययन किया गया था। सिर्फ़ एक अपवाद को छोड़कर कि यह रूप तिरस्कारबोधक सम्बोधन और गन्दी गाली में नहीं आता एवं जानवरों को इस रूप द्वारा सम्बोधित नहीं कर सकते।

'इयो' (इओ) वाला रूप 'तू' या 'तुम' सर्वनाम के बग़ैर और साथ भी आ सकता है। 'तू' या 'तुम' सर्वनाम उद्बोध की प्रकृति को और तेज़ कर देते हैं, विशेषकर क्रिया से पहले जब सर्वनाम आता है, उदाहरणार्थ : तू आ जाइयो (75, 149), सच तू बताइयो (103, 316), कारोबार राज्य का ईमानदारी और होशियारी से तुम किया कीजो (24, 126)।

निषेधात्मक वाक्यों में जब आज्ञार्थ का यह रूप मनाही व्यक्त करता है तो 'न' निषेधात्मक निपात (सामान्य मनाही) और 'मत' (स्पष्ट मनाही) निपात के साथ आता है, जो कि (विशेषकर 'न' निपात) निर्धारित जगह पर अर्थात् क्रिया के पहले आते हैं। उदाहरणार्थ : नागा न करिओ (103, 456), भागते जाइओ, पैसों का मुँह न देखियो (54, 6), इतनी सर्दी में मेरे कपड़े मत भिगोइयो ! (75, 125), अब मत आइयो यहाँ (103, 617)।

आज्ञार्थ के इस रूप में 'ज़रा' निपात का प्रयोग शिष्टता की एक छाया देता है : सरनो ! ज़रा अन्दर आइयो (75, 130)।

बहुत ही कम 'इयो' (इओ) रूप सामान्य पुरुषवाचक अर्थ में आता है। तब वह निरपेक्ष कालवाचक अर्थ अपना लेता है, उदाहरणार्थ : जब दाँत न थे तब दूध दीजो, जब दाँत दिये तब अन्न भी देय है (37, 67)।

तुमर्थ क्रिया का समाकार

आज्ञार्थ का यह रूप 'तुम' एवं 'तू' सर्वनामों से सम्बन्ध रखता है। 'तुम' सर्वनाम से जब सम्बन्ध रखता है तो यह रूप एक पुरुष को या कई पुरुषों को सम्बोधित करते समय प्रयोग होता है, जब 'तू' सर्वनाम के साथ यह रूप प्रयोग होता है तो सिर्फ़ एक पुरुष को सम्बोधित कर सकते हैं, उदाहरणार्थ : तुम आज ज़रा मिस्त्री से कह देना कि···(52, 98), तुम सब अन्दर घुस आना··· (75, 169), तू ही जाना ! (69, 76)।

यह रूप जैसा कि ऊपर बताया गया है, उस उद्बोध को व्यक्त करता है जो कि उक्ति के क्षण का अनुवर्ती होता है, जो कि काल के संगत क्रियाविशेषणों की उपस्थिति में विशेषकर अधिक प्रकट होता है, उदाहरणार्थ : कल शाम को···रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे आना (69, 133), कल दादा को कहला भेजना···(69, 71), कल रुपये जुटा रखना (65, 107)। कालार्थ में आज्ञार्थ के 'ओ' रूप और तुमर्थ क्रिया के समाकार रूप के बीच अन्तर स्पष्टत: तब प्रकट होता है, जब दोनों रूप एक ही वाक्य में आते हैं, उदाहरणार्थ : तुम यहाँ रहकर कुछ अच्छी-अच्छी चीज़ें बना लो, फिर दिल्ली आकर अपनी प्रदर्शनी करना (52, 151), जाओ फिर कभी उधर आकर बात करना (52, 145)।

आज्ञार्थ के रूप को जो कि तुमर्थ क्रिया का समाकार है आज्ञासूचक-उपदेश-सूचक या आज्ञासूचक-प्रार्थनासूचक रूप कह सकते हैं जो कि मुख्यत: 'तुम' सर्वनाम से सम्बन्ध रखता हो लेकिन 'ओ' रूप के विपरीत कम जोरदार होता है। इसलिए तिरस्कारबोधक सम्बोधन में उसका प्रयोग नहीं होता। बाकी स्थितियों में वह उन्हीं अर्थों में प्रयोग होता है जैसा कि आज्ञार्थ का 'ओ' रूप होता है।

आज्ञार्थ का यह रूप 'तुम' और 'तू' सर्वनामों के साथ या बग़ैर भी आ सकता है। 'तू' और 'तुम' सर्वनामों से उद्‌बोध तेज़ हो जाता है, विशेषकर जब वे क्रिया से पहले आते हैं। उदाहरणार्थ : तुम अपने बच्चों के पास जाना (69, 196), उस्ताद, तुम सोचते रहना (103, 224), तू घर न जाना (103, 217)।

आज्ञार्थ का यह रूप जब निषेधात्मक वाक्यों में निषेध व्यक्त करता है तो 'न' तथा 'नहीं' (सामान्य मनाही) एवं 'मत' (स्पष्ट मनाही) निपातों के साथ आता है। 'न' और 'नहीं' निपातों की जगह निर्धारित है : 'न' क्रिया से पहले तथा 'नहीं' क्रिया के बाद आता है, 'मत' निपात स्वतन्त्र जगह रखता है, उदाहरणार्थ : 'न पसन्द होगी, तो न करना' (11, 56), रामनाथ, भाईजान, नाराज़ न होना (65, 292), तुम रोना नहीं (103, 623), भगवान का भरोसा मत छोड़ना··· (69, 75), अपनी भाभी को भूल मत जाना लाला (69, 90), रास्ते में रोना मत (65, 238)।

आज्ञार्थ के इस रूप में 'ज़रा' निपात शिष्टता की विशेष छाया देता है, उदाहरणार्थ : ज़रा इधर आना (65, 212), वह निकले तो ज़रा बता देना (11, 42)।

'इयेगा (इएगा)' रूप

आज्ञार्थ का यह रूप आज्ञार्थ के 'इये (इए)' रूप के साथ 'ग' परप्रत्यय लगाने से बनता है जिसको लैंगिक विकारी रूपिम 'गा' से भिन्न करना चाहिए, जो कि निश्चयार्थ का भविष्यत् काल का चिह्नक है चूंकि 'गा' परप्रत्यय रूपात्मक तौर पर अविकारी है। 'गा' परप्रत्यय क्रिया के नियमित तथा अनियमित रूपों के साथ-साथ लगता है। जाना-जा-जाइये-जाइएगा, करना-कर-कीजिये-कीजिएगा आदि।

यह रूप जैसा कि ऊपर बताया गया है, उस उद्‌बोध को व्यक्त करता है जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि उक्ति के क्षण का अनुवर्ती होता है जो कि काल के संगत क्रियाविशेषणों की उपस्थिति में विशेषकर प्रकट होता है, उदाहरणार्थ : कल जालपा को लाइएगा (65, 105), आप फिर आ जाइयेगा (27, 77), कल आप अपने सब रुपये ले जाइयेगा (65, 96)। कालार्थ में आज्ञार्थ के इस रूप तथा आज्ञार्थ के 'इये (इए)' रूप के बीच अन्तर भी उन स्थितियों में स्पष्टतः प्रकट होता है जब दोनों रूप एक ही वाक्य में आते हैं, उदाहरणार्थ : बाबूजी, देख तो लीजिए । पसन्द आए तो लीजिएगा, नहीं तो न लीजिएगा (65, 62), अभी ठहरिये। तब मार दीजिएगा (103, 335)। यहाँ यह कहना उचित होगा कि 'इये (इए)' रूप उस उद्बोध को व्यक्त कर सकता है जो कि उक्ति के क्षण का अनुवर्ती होता है, उदाहरणार्थ : कल आकर हिसाब कर जाइये (65, 106)।

'इएगा (इयेगा)' रूप शुद्ध कालार्थ में भी आ सकता है, जैसे कि वह सामान्य भविष्यत् काल का शिष्ट रूप हो। यह प्रयोग प्रश्नवाचक वाक्यों के लिए विशेषकर स्वाभाविक है, उदाहरणार्थ : यह लेकर आप क्या करिएगा ? (52, 44), इस वक्त जगाकर क्या कीजिएगा (65, 145), गीत ज़रूर ही सुनिएगा ? नहीं मानिएगा ? (52, 57)। हालाँकि यह अर्थ कथात्मक वाक्यों में भी हो सकता है, उदाहरणार्थ : मगर इतना कहे देता हूँ कि ऐसा सौदा फिर न पाइयेगा (65, 120), लेकिन आप आये हैं तो अंग्रेज़ी साम्राज्य की अतुल शक्ति का परिचय ज़रूर ही दीजिएगा (69, 36)।

'इयेगा (इएगा)' रूप उस उद्बोध को भी व्यक्त कर सकता है जो कि उक्ति के क्षण के साथ मेल खा सकता है। इस हालत में वह अति सूक्ष्म शिष्टता को व्यक्त करता है, जिसकी छाया अत्यन्त तन्मय सम्मान की होती है, उदाहरणार्थ : माफ़ कीजिएगा हुज़ूर (1, 488), 'माफ़ कीजिएगा', 'माफ़ कीजिएगा' कहता हुआ वह उनके पैरों पर झुक गया···(17, 241)।

आज्ञार्थ का यह रूप 'आप' सर्वनाम के बग़ैर या साथ आ सकता है। 'आप' सर्वनाम के साथ उद्बोध की प्रकृति तेज हो जाती है, विशेषकर जब क्रिया से पहले आता है, उदाहरणार्थ : आप दे दीजिएगा (65, 36), आप आथॉरिटीज़ से शिकायत कीजएगा (8, 40)।

निषेधात्मक वाक्यों में जब आज्ञार्थ का यह रूप मनाही व्यक्त करता है तो 'न' तथा 'नहीं' (सामान्य मनाही) तथा 'मत' (स्पष्ट मनाही) निषेधात्मक निपातों के साथ आता है। आम तौर पर 'न' निपात क्रिया से पहले आता है, उदाहरणार्थ : माफ़ कीजिएगा, बुरा न मानिएगा (17, 241)। 'नहीं' निपात उद्बोध व्यक्त करने के लिए क्रिया के बाद आता है, उदाहरणार्थ : अब आधा मिनट बिलकुल हिलिएगा नहीं (96, 105); और भविष्यत् काल को व्यक्त करने के लिए क्रिया से पहले आता है, उदाहरणार्थ : मुझे ईनाम नहीं दीजिएगा (44, 25)। 'मत' निपात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आम तौर पर क्रिया से पहले आता है, उदाहरणार्थ : ऐसा मत कीजिएगा (59, 73), देखिए, राज्य की बातों का बुरा मत मान जाइएगा (59, 110)।

आज्ञार्थ के इस रूप के साथ 'ज़रा' निपात लगाना, वास्तव में, फालतू होता है वह सिर्फ़ भाषायी व्यवहार की देन है, उदाहरणार्थ : मेरे पीछे-पीछे आये पर ज़रा दूर रहियेगा (17, 237)।

शब्दार्थक दृष्टि से आज्ञार्थ का सामान्य अर्थ—व्यापार की तरफ़ उद्बोध—कई छायाओं में बाँटा जा सकता है, जो कि आवाज़ के उतार-चढ़ाव के परिवर्तन के साथ आती हैं। आधुनिक हिन्दी में उद्बोध की निम्नलिखित छायाएँ होती हैं, जो आज्ञार्थ के सारे रूपों द्वारा व्यक्त होती हैं : (1) धातु का समाकार रूप, (2) 'ओ' रूप, (3) 'इये (इए)' रूप, 'इयो (इओ)' रूप, (5) तुमर्थ क्रिया का समाकार रूप, और (6) 'इयेगा (इएगा)' का रूप :

(1) सरल उद्बोध : (1) मैंने कहा : 'कह तो' (103, 71); (2) मुझे भी बताओ बेटा (120, 34); (3) आप यह बताइये कि···(27, 111); (4) उससे पूछ लीजो (103, 196); (5) सच कहना बेटा (54, 11); (6) मेरी ओर से बहुत विनय के साथ कहिएगा···(66, 19)।

(2) अनुमति—(1) तू भी कह ले (103, 206); (2) तुम भी बैठो (52, 49); (3) आप लोग जाइए (44, 25); (4) जो तुम्हारा जी चाहे सो कीजो (24, 126); (5) दवा खाने के थोड़ी देर बाद पी लेना (59, 75); (6) उधर से ही अमोला चले जाइएगा (73, 107)।

(3) प्रार्थना, याचना—(1) इस वक्त चल ज़रा (103, 454); (2) तुम तो सो जाओ (103, 216); (3) आप कृपा करके घर जाइये (73, 95); (4) छोटे सेठ, मुझे गोली मत मारियो (75, 177); (5) हमें गिरफ़्तार न कराना (103, 467); (6) माफ़ कीजिएगा हुज़ूर (1, 488)।

(4) हुक्म—(1) निकल यहाँ से, चल (103, 206); (2) पकड़ लाओ बदमाश को (54, 15); (3) भागिये यहाँ से (1, 475); (4) सरनो, ज़रा अन्दर आइयो (75, 130); (5) स्कूल से सीधे घर आना (11, 105); (6) जैसे-जैसे कहें, करते जाइयेगा (51, 75)।

(5) चेतावनी—(1) गाली न दे उसे कजरी (103, 69); (2) ऐसी बात मुंह से न निकालो प्यारे! (65, 293); (3) महाराज, आप यहाँ न आया कीजिये (73, 114-115); (4) दगा न करियो (103, 456); (5) अब यह काम न करना (44, 98); (6) अब कभी यहाँ न आइयेगा (73, 92)।

(6) इच्छा—(1) भाड़ में जा गिर (107, 67); (2) आराम से रहो (73, 41); (3) ईश्वर पर भरोसा रखिये (73, 56); (4) खुश होइये (108, 151); (5) तुम आराम से रहना (65, 255); (6) आप मुझे सँभाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहियेगा (73, 88)।

(7) मनाही—(1) ऐसा मत कर (103, 469); (2) गाली मत दो (1, 132); (3) आप मुझे गुरुजी मत कहिये (52, 55); (4) इतनी सर्दी में मेरे कपड़े मत भिगोइयो ! (75, 125); (5) तो तू आज मत जाना (103, 130); (6) ऐसा मत कीजिएगा (59, 33)।

व्यापार के पक्ष

आधुनिक हिन्दी में व्यापार के पक्ष की श्रेणी के अन्तर्गत मुख्य तथा विशेषक क्रिया के विभिन्न वर्ग आते हैं, जिनके परिणामस्वरूप मुख्य क्रिया का अर्थ अतिरिक्त पक्ष-सम्बन्धी छायाओं द्वारा जटिल हो जाता है, जो कि व्यापार के होने के चरित्र निर्धारित करती हैं या उसे अतिरिक्त वृत्तिवाचक अर्थ देती हैं।

विश्लेषणात्मक क्रियाओं का अधिकतर हिस्सा, जो व्यापार के पक्षों को आधुनिक हिन्दी में व्यक्त करता है, रूपात्मक तौर पर अभिव्यक्त होता है चूँकि ये विश्लेषणात्मक रचनाएँ विधेयवाचक तौर पर और नामिक तौर पर प्रयोग होती हैं। वे विश्लेषणात्मक पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ इनसे छोटा वर्ग बनाती हैं जो कि व्यापार के पक्ष को सिर्फ़ विधेयवाचक रूपों में व्यक्त करती हैं।

संरचनात्मक तौर पर विश्लेषणात्मक पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ मुख्य अर्थगत क्रिया (धातु के रूप में, क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त धातु, सरल प्रथम तथा द्वितीय कृदन्त, सरल प्रथम तथा द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त और क्रियार्थक नाम, जो कि सरल द्वितीय कृदन्त का समाकार है) तथा अनेक विशेषक क्रियाओं के मिलन से बनती हैं, जिनका ऊपर उल्लेख हुआ है।

आधुनिक हिन्दी में प्रयोग की आवृत्ति के आधार पर तथा रूपप्रक्रियात्मक अभिव्यक्ति के आधार पर व्यापार के निम्नलिखित पक्ष होते हैं :

(1) व्यापार का नित्यताबोधक पक्ष

यह विश्लेषणात्मक क्रियाओं द्वारा व्यक्त होता है, जो कि प्रथम सरल कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य कृदन्त एवं 'रहना' क्रिया के मिलन से बनती हैं। ये पुरुषवाचक तथा अविधेय क्रियार्थक रचनाओं में आती हैं। 'रहना' विशेषक क्रिया काल-प्रक्रिया की पूर्ण रूपावली रखती है।

ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ उस व्यापार का वर्णन करती हैं जो कि नित्यताबोधक प्रक्रिया में आता है। व्यापार समय में तथा उसके पूर्ण होने में सीमित हो सकता है। अर्थात् व्यापार हमेशा तक हो सकता है और विशेष कालान्तर में सीमित हो सकता है। व्यापार का निरन्तर विकास व्यापार के गुणात्मक या मात्रात्मक परिवर्तन से जटिल नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब पुरुषवाचक क्रियार्थक रचनाओं में निरन्तरताबोधक अविच्छिन्न व्यापार व्यक्त होता है तब ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ काल के संगत क्रियाविशेषणों के साथ या उनके बग़ैर आ सकते हैं, उदाहरणार्थ : (क) काल के क्रियाविशेषणों के साथ : पति से कैसे भी झगड़ती हो पर उनके घर में सदा नम्रता से मिनमिनाती रहती थी (13, 98), ···ऐसा मालूम होता है जैसे हमेशा यहीं रहती रही हूँ (72, 27), हर महीने पगार मिलने पर आपको 100 रुपया महीना देता रहूँगा (8, 95), निरन्तर शून्य में तकती रही···(13, 19), ···लेकिन उन्हें लगातार सीने के दाईं ओर चुभन-सी महसूस होती रही (13, 42), लल्लन, तुम क्यों लड़ती रहती हो रोज़ हरिया से ? (13, 49); (ख) काल क्रियाविशेषणों के बग़ैर : उनकी पत्नी उनके पास कुर्सी पर बैठी कुछ काढ़ती-बुनती रहती (13, 188), यों पार्टियाँ होती ही रहती थीं···(96, 67), ···और बीच में रावी का वही पानी बह रहा है जो इस धरती पर हिन्दुओं और मुसलमानों के आने से पहले भी बहता रहा है (31, 121), मैं हेम से प्यार करती हूँ और उसी से प्यार करती रहूँगी (13, 25), उत्तरी ध्रुव-प्रदेश के ठण्डे किन्तु उर्वर किनारों पर लोग रहते रहे हैं (88, 73)।

यहाँ यह बताना उचित होगा कि 'रहना' विशेषक क्रिया के पूर्ण रूप अक्सर बग़ैर काल चिह्नकों के आते हैं।

जब नित्यताबोधक व्यापार व्यक्त होता है, जो कालावधि में सीमित होता है, तब ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ, आम तौर पर, संगत क्रियाविशेषण के साथ आती हैं, मुख्यतः 'तक' तथा 'भर' परसर्गों समेत संज्ञाओं के साथ, उदाहरणार्थ : कुछ देर तक लोग टिप्पणियाँ ही करते रहे (71, 133), देर तक बहस होती रही (71, 130), आया क्षण भर खड़ी उसे देखती रही (13, 152), ज़िन्दगी भर तुम मेरे लिए रोते रहोगे और ज़िन्दगी भर मैं तुम्हारे लिए रोती रहूँगी (31, 19), सारे दिन स्कूल में दीनानाथ को अपने जादू से चकित करता रहा था और सारा दिन चेतन उससे इस खेल का राज़ पूछता रहा था (17, 80), चाय पर दोनों मित्र इस घटना के विभिन्न पहलुओं का रस लेते रहे (8, 23)।

यह बात यहाँ बतानी उचित होगी कि व्यापार जब कालावधि में सीमित होता है तो 'रहना' विशेषक क्रिया आम तौर पर पूर्णतावाची भूतकाल तथा सामान्य भूतकाल के रूपों में आती है और सामान्य भविष्यत् काल के रूप में आती है। वर्तमान तथा भूतकाल के अपूर्णतावाची रूप यहाँ आम तौर पर नहीं आते।

जैसा कि उदाहरणों से विदित है, प्रथम कृदन्त जो कि विश्लेषणात्मक क्रिया में आता है, वह उद्देश्य से नियमित तौर पर अन्वित होता है। आज्ञार्थ के विश्लेषणात्मक रूपों के लिए भी यह उचित है जहाँ 'रहना' क्रिया तुमर्थ क्रिया के समाकार रूप द्वारा व्यक्त होती है, उदाहरणार्थ : वे लोग जब खाएँ, तुम खिलाती रहना (96, 36)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अविधेय क्रियार्थक रचनाओं में ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ आम तौर पर नित्यताबोधक अविच्छिन्न व्यापार को व्यक्त करती हैं, जो कि संगत क्रिया-विशेषणों के साथ आता है, उदाहरणार्थ : बराबर लड़ाई होती रहने के कारण सिखों को तीन लाभ हुए (2, 209), ···उसे···निरन्तर सहायता मिलती रहने की आशा थी (II, 5-4-1966, 6), एक ही विषय पर लगातार सोचते-विचारते रहने से उस विषय से प्रेम हो जाया करता है (73, 104), हालाँकि ये क्रियाएँ बौर संगत क्रियाविशेषणों के भी आ सकती हैं, उदाहरणार्थ : भगवान ने ये बाधाएं हमारी शक्ति को मँजते रहने के लिए रखी हैं (108, 11), ···खाद्यान्न की माँग तेज़ी से बढ़ते रहने के कारण भारत में समय-समय पर अन्न का संकट आता रहा है (II, 25-8-1666, 6), बस तुझे देखता रहना चाहता हूँ (96, 131), वह किसी बहाने से उसकी मदद करते रहना चाहती थी (65, 182), चक्कर लगाती रहने वाली आपकी सहेली क्यों नहीं आयी ? (58, 34)।

उस व्यापार को व्यक्त करते हुए जो कि कालावधि में सीमित होता है ये क्रियाएँ आम तौर पर संगत क्रियाविशेषणों के साथ आती हैं, उदाहरणार्थ : थोड़ी देर उसका लिखना तकते रहकर लड़के ने···पत्रिका निकालकर उसके सामने रख दी (52, 13), ऐसे में अधिक देर तक घूमते रहना सम्भव नहीं था (142, 143), एक पल यों ही देखते रहकर···वे बोले थे (109, 40)।

दिये गये उदाहरणों से जैसा विदित है, प्रथम कृदन्त के साथ जो कि निर्धारित शब्द के साथ नियमित तौर पर अन्वित होता है, अविधेय रचनाओं में मुख्य क्रिया की हैसियत से प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त आ सकता है, उदाहरणार्थ :

प्रथम कृदन्त	**प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त**
बस तुझे देखता रहता चाहता हूँ (96, 131),	वह किसी बहाने से उसकी मदद करते रहना चाहती थी (65, 182),
बराबर लड़ाई होती रहने के कारण सिखों को तीन लाभ हुए (2, 209),	···खाद्यान्न की माँग तेज़ी के साथ बढ़ते रहने के कारण भारत में समय-समय पर अन्न-संकट आता रहा है (II, 29-8-1966, 6),
···उसे···निरन्तर सहायता मिलती रहने की आशा थी (II, 5-4-1966, 6)।	भगवान ने ये बाधाएँ हमारी शक्तियों को मँजते रहने के लिए रखी हैं (108, 11)।

अगर यह पक्ष-सम्बन्धी क्रिया वाक्य के उद्देश्य के प्रकार्य में आती है, तो मुख्य क्रिया आम तौर पर अविधेय रचनाओं में प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आती है, उदाहरणार्थ : जब तक पैदावार के साधन सीमित हैं, उनके बढ़ने की उम्मीद से ही आबादी **बढ़ाते रहना** उचित नहीं है (142, 69), ···भारत का निश्चिन्त पड़े **सोते रहना** एक आश्चर्य की बात थी ! (4, 46), ···बिरादराना पार्टियों के बीच बैठकों का **होते रहना** अति लाभकारी है (IV, 8-10-1972)।

(2) व्यापार का नित्यताबोधक पूर्ण परिणामी पक्ष

व्यापार के पक्ष को विश्लेषणात्मक क्रियाओं द्वारा व्यक्त करते हैं जो कि अकर्मक क्रियाओं के सरल द्वितीय कृदन्त या सकर्मक क्रियाओं के सरल द्वितीय क्रियाविशेषण कृदन्त तथा 'रहना' और 'रखना' विशेषक क्रियाओं के मिलने से बनती हैं, जो पुरुषवाचक तथा अविधेय रचनाओं में आ सकती हैं। 'रहना' तथा 'रखना' विशेषक क्रियाएँ काल प्रक्रिया की पूर्ण रूपावली रखती हैं।

ये पक्ष-सम्बन्धी रूप पहले वर्ग की क्रियाओं के विपरीत नित्यताबोधक दशा को व्यक्त करते हैं, जो कि पूर्ववर्ती व्यापार का परिणाम होती है तथा स्वयं परिणामी दशा कालावधि द्वारा सीमित हो सकती है। निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा इस बात का स्पष्टतः पता चलता है : जब किसी बात पर अड़ जाते तो बस अड़े ही रहते (142, 20), जहाँ बैठ जाती घण्टों बैठी रहती (151, 4)। यह बात उन क्रियाओं के लिए भी उचित है जिनका मुख्य घटक सकर्मक होता है, उदाहरणार्थ : उसने अपनी आँखों पर पट्टी बाँध ली और आजन्म उसे बाँधे रहा (84, 136), उसने रावण को अपनी काँख में दबा लिया और बहुत देर तक बैठाये रखा (84, 77)।

पुरुषवाचक क्रियार्थक रचनाओं में जब नित्यताबोधक परिणामी दशा को व्यक्त करते हैं तो ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ काल के संगत क्रियाविशेषणों के साथ या उनके बग़ैर आती हैं, उदाहरणार्थ : (क) काल के क्रियाविशेषणों के साथ : सदा बच्चे को दूध की नाईं सफ़ेद और स्वच्छ वस्त्र पहनाए रहती है (44, 95), लेकिन उमानाथ को वह चिन्ता बराबर लगी रहती थी (73, 14), ···बाद में तो उन्होंने सादा टोपी को अपना सरपरस्त बनाये रखा (13, 124), अपनी कामालिनी को मैं प्रति दिवस नयी-नयी साड़ियों से सजाये रहता हूँ (116, 123); (ख) काल के क्रियाविशेषणों के बग़ैर : माँ की आवाज़ का दर्द चेतन से छिपा न रहा था (17, 71), ···यह उसके दिमाग़ में नहीं घुसा रहता होगा···(107, 13), उसने व्यर्थ ही महरी को रोके रखा (107, 128), ···वह अपने आपको रोके रही··· (59, 135), यों तो कहने को जनाब ने ड्राइंग टेबल सजा रखा है (7, 97)।

कालावधि में सीमित नित्यताबोधक परिणामी दशा को व्यक्त करने के लिए ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ आम तौर पर संगत क्रियाविशेषणों के साथ आती हैं, मुख्यतः 'तक' और 'भर' परसर्गों समेत संज्ञाओं के साथ, उदाहरणार्थ : रात में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देर तक मेज़ पर बैठी रही (13, 17), तीन दिन तक तो दाना-पानी छोड़े रही (69, 8), सप्ताह भर मैं बीमार पड़ी रही (13, 22), काशी कुछ क्षण चुपचाप लेटा रहा (7, 123), तो यहाँ कब तक बैठे रहोगे ? (65, 222), ···वह देर तक करीमुद्दीन को देर रात तक बातों में उलझाये रहती (52, 99), पल भर तक ख़ामोशी छायी रहती (13, 109)।

ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ अविधेय-क्रियार्थक रचनाओं में आम तौर पर नित्यताबोधक दशा व्यक्त करती हैं, जो कि संगत क्रियाविशेषणों के साथ आ सकती है, लेकिन बहुधा नहीं आती, उदाहरणार्थ : ···धूप में लगातार खड़े रहने तथा अपनी छाया पर अपलक दृष्टि जमाये रहने के कारण उसके दिमाग पर ज़ोर पड़ गया था (17, 90), डलिया सँभाले रहना बुढ़िया को मुश्किल हो गया (44, 80), उसका यों मेज़ पर रखे रहना मुझे अच्छा नहीं लगा (142, 51), अब्दुल बैठ गया। अकेले बैठे रहना मुश्किल हो रहा था (58, 19), पर सब तरुण संगिनियों के बीच घिरी रहकर भी जाने कैसा उसे सूना लगता है (44, 7), ··· धन्वन्तरी की साधारणतया बनी रहने वाली मुस्कान लोप होकर···(97, 100), ···जेब में तह किये रखे मैट्रिक के सर्टिफ़िकेट को मैं खूब मरोड़ता-मसलता रहा (108, 137)।

अगर अविधेय रचनाओं में पक्ष-सम्बन्धी क्रिया कर्म के प्रकार्य में संश्लिष्ट क्रियार्थक विधेय के घटक में आती है (मुख्य क्रिया— 'चाहना' क्रिया), तो पक्ष-सम्बन्धी क्रिया का मुख्य घटक कृदन्तपरक रूप को सुरक्षित रखता है, अगर वह अकर्मक है और क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के रूप में आता है, अगर वह सकर्मक होता है, उदाहरणार्थ : वह इसी प्रकार लक-दक बना रहना चाहता था (10, 11), और···वह दल के लिए मेरा भेद जाने रहना चाहता था (97, 98)।

अगर अविधेय रचनाओं में पक्ष-सम्बन्धी क्रिया उद्देश्य के प्रकार्य में आती है तो मुख्य घटक आम तौर पर क्रियाविशेषण के रूप में आता है, उदाहरणार्थ : अब इसे पहने रखना ठीक नहीं है (59, 13), कम से कम एक आदमी का सुरक्षित बचे रहना आवश्यक है (97, 56), हेम जानता था कि विपिन को उसका इस प्रकार चारपाई पर लेटे रहना अच्छा नहीं लगता (112, 23)।

व्यापार के नित्यताबोधक परिणामी पक्ष की क्रियाएँ शब्दार्थक तौर पर उन क्रियाओं से मिलती हैं जो कि व्यापार के नित्यताबोधक पक्ष को व्यक्त करती हैं। इन क्रियाओं में सिर्फ़ यही भिन्नता है कि पहली क्रियाएँ तो उस दशा को व्यक्त करती हैं जो कि व्यापार के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई तथा दूसरी क्रियाएँ व्यापार को ही व्यक्त करती हैं, उदाहरणार्थ : वह रोती रही और पिताजी निश्चल और गम्भीर बैठे रहे (142, 11)।

व्यापार के नित्यताबोधक-पूर्ण परिणामी पक्ष की क्रियाओं और सकर्मक क्रिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के द्वितीय कृदन्त की उन क्रियाओं के बीच अन्तर जानना चाहिए, जो कि कृदन्त-परक-विधेयवाचक प्रकार्य में 'रहना' संयोजक क्रिया के साथ आती हैं और दशा का कर्मवाच्य का अर्थ व्यक्त करती हैं। इस स्थिति में द्वितीय कृदन्त नियमित तौर पर प्रकट होता है अर्थात् वाक्य के उद्देश्य के साथ अन्वित होता है, उदाहरणार्थ :

पक्ष-सम्बन्धी क्रिया	नामिक विधेय
यही ख़्याल अचेतन में उसे पलंग के साथ बाँधे रहा (7, 121),	प्रत्येक कार्ड पर एक तारीख़ लिखी होती है और ये कार्ड क्रमानुसार रखे रहते हैं (101, 102),
...वह अपने आपको रोके रही (59, 135)।	पंचांग में साफ़ लिखा रहता है (20, 31)।

(3) व्यापार का नित्यताबोधक-सीमित पक्ष

व्यापार के इस पक्ष को वे विश्लेषणात्मक क्रियाएँ व्यक्त करती हैं जो कि सरल प्रथम कृदन्त तथा 'आना', 'चला आना' क्रियाओं के रूपों के मिलन से बनती हैं और मुख्यतः सिर्फ़ पुरुषवाचक रचनाओं में आती हैं। 'आना', 'चला आना' क्रियाएँ मुख्यतः पूर्णतावाची और संतत भूत और वर्तमान काल में आती हैं।

ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ उस नित्यताबोधक व्यापार को व्यक्त करती हैं जो कि उक्ति के क्षण तक शुरू हो चुका होता है या काल के क्षण तक शुरू हो चुका होता है और उक्ति के क्षण या काल के क्षण पर समाप्त हो जाता है (विशेषक क्रिया के पूर्ण रूपों में), या उक्ति के क्षण या काल के क्षण में भी जारी रहता है (विशेषक क्रिया के संतत रूपों में), उदाहरणार्थ : (क) पूर्ण रूप : हम इस धरती पर रहेंगे और इसी का यश गायेंगे जैसा सात पीढ़ियों से करते चले आये हैं।··· आप तो सात पीढ़ियों से आराम करते और यश गाते आएँ हैं, लेकिन आपकी रैयत आपके लिए काम करती और आपसे फ़रियाद करती आयी है (31, 38), चेतन रामदत्त को बचपन से चाचा कहकर पुकारता आया था (17, 45), इसी जगह वह 30 साल से बराबर बैठते चले आये थे (65, 43); (ख) संतत रूप : मैं इसी नाम से बचपन ही से इसे पुकारता आ रहा हूँ (53, 11), कोई मेज़ ख़ाली न थी, वह मेज़ भी जिस पर पिछले साल भर से लगातार बैठता आ रहा हूँ (59, 26), बहुत दिनों से सुनते आ रहे थे कि उसमें घने में जोगी रहते हैं (103, 26), दोनों सहेलियाँ बचपन से चुहलें करती आ रही थीं (75, 124)।

जैसा कि उदाहरणों से विदित है, पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ काल के क्रियाविशेषण के साथ आती हैं जो कि संज्ञा के साथ 'से' परसर्ग लगाने से बनता है। 'से' परसर्ग पक्ष-सम्बन्धी क्रिया के व्यापार के समय का हिसाब रखने के लिए आता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन क्रियाओं में काल का क्रियाविशेषण 'तक' परसर्ग के साथ कम ही आता है। तब वह नित्यताबोधक व्यापार की सीमा की ओर संकेत करता है जो पक्ष-सम्बन्धी क्रिया द्वारा व्यक्त होता है। यह निश्चित है कि यहाँ विशेषक क्रिया के संतत वर्तमान के रूप में नहीं आ सकते, बल्कि आम तौर पर वर्तमान तथा भूतकाल के पूर्णतावाची रूप एवं भूतकाल के संतत रूप आ सकते हैं, उदाहरणार्थ : और तू अपने दर के भिखारी महमूद को उसी तरह अपने मुबारक हाथों से एक डबल रोटी देती रह जैसा कि सत्रह दिन में आज तक देती आयी थी (4, 252), जयकिशन खुद बचपन से लेकर अब तक यह सब अपनी आँखों से देखता आया था (49, 7), अब तक मैं तुम्हें अपनी बेटी समझती आ रही थी चन्द्रा···(59, 83)।

बहुत कम स्थितियों में, मुख्यतः पूर्णतावाची वर्तमान में व्यापार का नित्यता-बोधक सीमित पक्ष की क्रियाएँ बगैर किसी काल क्रियाविशेषण के आ सकती हैं। यहाँ यह प्राथमिक स्थान पर नित्यताबोधक व्यापार की समाप्ति की बात आती है और इस बात का संकेत नहीं मिलता कि व्यापार कब शुरू हुआ और उसकी पूर्णता का क्षण क्या था, उदाहरणार्थ : हम तो बूढ़े-बड़ों से यही सुनते आये हैं कि शाम के समय नहीं सोना चाहिए (75, 181), ···पर्दा करना कोई बहुत अच्छी चीज़ नहीं, मगर घर में चलता आया है (108, 66), मुझे सदा घर में सब शक्को कहकर पुकारते आये हैं (13, 27), उसमें तथा उनकी तमाम प्रणालियों में ज़रा समरूपता नहीं है जिनकी राजनीति के शास्त्री तथा दार्शनिक कल्पना करते आये थे (145, 2)।

व्यापार के नित्यताबोधक-सीमित पक्ष की क्रियाएँ अविधेय रचनाओं में आम तौर पर कृदन्त के रूप में बहुत ही कम पायी जाती हैं, उदाहरणार्थ : ···योजनाओं के आरम्भ से महँगाई के कुचक्र में पिसता आया उपभोक्ता अब कुछ राहत की साँस ले सकेगा (II, 5-5-1968, 9)।

(4) व्यापार का नित्यताबोधक-घटमान पक्ष

व्यापार के इस पक्ष को विश्लेषणात्मक क्रियाओं द्वारा व्यक्त करते हैं जो कि सरल प्रथम कृदन्त तथा 'जाना' क्रिया के रूपों के मेल से बनती हैं और पुरुषवाचक तथा अविधेय-क्रियार्थक रचनाओं में आ सकती हैं। 'जाना' क्रिया काल-प्रक्रिया की पूर्ण रूपतालिका रखती है।

ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ नित्यताबोधक, घटमान, अभ्यासबोधक व्यापार को व्यक्त करती आती हैं जो कि व्यापार के कर्ता में गुणात्मक तथा मात्रात्मक परिवर्तन की ओर संकेत करता है। व्यापार आम तौर पर कालावधि से सीमित नहीं होता, उदाहरणार्थ : हर बार वह गिनती बढ़ाता गया (17, 83), पानी बराबर बढ़ता ही जा रहा था (1, 269), सावित्री—समय गुज़रता जाता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भविष्यत् बिगड़ता जाता है और आशा कम होती जाती है (139, 159), हिंस्र पशुओं से भरपूर वन आते गये, जाते गये (4, 251), ढोलों की आवाज़ ऊँची होती और पास आती गयी (31, 4)।

अविधेय क्रियार्थक रचनाओं में इस पक्ष-सम्बन्धी क्रिया के कृदन्तपरक रूप अपने निर्धारित शब्द से नियमित तौर पर अन्वित होते हैं, उदाहरणार्थ : एक भारी-भरकम साँड़ ··· तेज़ी से भागता जाता हुआ दिखायी दिया (3, 252)।

अविधेय रचनाओं में जो कि संश्लिष्ट क्रियार्थक विधेय के घटक में आती हैं विश्लेषणात्मक पक्ष-सम्बन्धी क्रिया का मुख्य घटक जब नामिक प्रकार्य में आता है तो वह प्रथम कृदन्त तथा प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त का रूप अपना सकता है, उदाहरणार्थ : ···वह अपना सब कुछ को खो देने को तैयार होती जाने लगी (44, 88), सेठी उसे खिलाते जाना चाहता था (96, 19)।

नामिक प्रकार्य में जब पक्ष-सम्बन्धी क्रिया का घटक वाक्य के उद्देश्य की हैसियत से आता है, तो वह आम तौर पर सिर्फ़ क्रियाविशेषण कृदन्त का रूप लेता है, उदाहरणार्थ : ···उन्होंने उनको भी 'पालागन' करते जाना उचित समझा (17, 51)।

'जाना' विशेषक क्रिया के साथ-साथ व्यापार के इस पक्ष में विशेषक क्रियाओं के प्रकार्य में 'चलना', 'आना', 'फिरना' क्रियाएँ और 'चला जाना', 'चला आना' विश्लेषणात्मक क्रियाएँ भी आ सकती हैं।

'चलना' क्रिया मुख्यतः उस नित्यताबोधक व्यापार को व्यक्त करने के काम आती है जो कि कालावधि से सीमित नहीं है और जो विकसित नहीं होता और जो इसी कारण व्यापार के उद्देश्य में गुणात्मक या मात्रात्मक परिवर्तन नहीं करता, उदाहरणार्थ : बस निरुद्देश्य जीते चलो और जो कुछ भी सामने आ जाये, उसे स्वीकारते चलो (110, 28), ···वह पहिया घूमता है और मोमी कागज़ पर छिद्र करता चलता है (101, 58), दस-बारह पंक्तियाँ लिखता चला (1, 121)।

'चलना' क्रिया बहुत ही कम विकासमान् छाया लिए होती है, उदाहरणार्थ : सड़क के किनारे खड़ी हुई तमाशाइयों की भीड़ और उनका शोर धीरे-धीरे दूर होता चला (1, 249), वह निडर होती चली (24, 115)।

'चला जाना' क्रिया अकसर उन क्रियाओं के साथ प्रयोग में आती है जो कि गति या स्थानान्तर की ओर संकेत करती हैं। तब वह अविच्छिन्न नित्यताबोधक व्यापार की छाया देती है और मात्रात्मक पक्ष को बल देता है, उदाहरणार्थ : वे चलते चले गये (4, 185), वह मशोबरा, थियोग, नारकण्डा और बागी होता हुआ चलता चला जा रहा था (96, 45), वह अपने विचारों में डूबी बढ़ती चली गयी (75, 150)।

'चला जाना' क्रिया जब दूसरे शब्दार्थक वर्गों की क्रियाओं के साथ आती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो अपना मुख्य अर्थ सुरक्षित रखती है। उदाहरणार्थ : दादी···प्रेम से एक के बाद दूसरा ख़रबूज़ा खाती चली जा रही थी (i, 77), स्त्री कहती चली गयी··· (96, 79), ···लोग आते और जाते थे···जैसे सब कुछ अपने आप होता चला जा रहा हो···(107, 2)।

'आना' और 'चला जाना' क्रियाएँ उल्लेखित विशेषक क्रियाओं के स्थान पर तब आती हैं जबकि व्यापार, व्यापार के कर्ता की ओर से नहीं, बल्कि कर्ता की ओर संकेतित होता है। तब 'आना' क्रिया नित्यताबोधक-सीमित अर्थ को व्यक्त नहीं करती, बल्कि व्यापार के मात्रात्मक या गुणात्मक वर्णन को व्यक्त करती है, उदाहरणार्थ : उसके पैरों की आवाज़ और मशाल का प्रकाश क्रमशः बढ़ता आ रहा था (58, 83), वह इस प्रकार चलती आ रही थी···(28, 33), कभी-कभी मोटर भागती आती और धूल उड़ाती हुई भागती चली जाती है···(44, 83)।

'चला आना' क्रिया मुख्यतः गतिसूचक या स्थानान्तर क्रियाओं के साथ आती है, उदाहरणार्थ : वह सीधा उसी की ओर भागा चला आ रहा था (75, 151), चुनरी नीचे सीढ़ियों के तख़्तों पर घिसटती चली आ रही थी (75, 42), पति पास आये। दोनों हाथ आगे बढ़ाकर चाहा कि कोई उन्हें थामे और उनके सहारे उठता चला आये (44, 71)।

'आना' तथा विशेषकर 'चला आना' क्रियाएँ शुद्ध मात्रात्मक या गुणात्मक छाया कम देती हैं तथा वे व्यापार की दिशा का संकेत नहीं देतीं, उदाहरणार्थ : दिन खुलता आता था (44, 71), ···राज्य सरकारों से होने वाली आमदनी में वृद्धि होती आ रही है···(153, 53), ···उसकी लालसा इसी कारण दिन-दिन प्रबल होती आयी थी (49, 26), ढाई मील के रास्ते में बस बरातें ही बरातें देखते चले आये हम लोग (1, 73)।

'फिरना' क्रिया व्यापार में शुद्ध मात्रात्मक छाया लाती है। तब वह सिर्फ़ उसकी कालावधि को व्यक्त करती है। 'फिरना' क्रिया अकसर गतिसूचक और स्थानान्तर क्रियाओं के साथ प्रयोग होती है, हालाँकि वह दूसरे शब्दार्थक वर्गों के साथ भी आ सकती है, उदाहरणार्थ : उसकी आत्मा···परेशान भटकती फिरेगी (97, 309), ···वे सारा दिन मोटरें चलाती फिरती हैं ? (75, 61), मुन्नी उन्हें पहनकर खुशी के मारे यहाँ से वहाँ घूमती फिरी (44, 49), 'भय्या-भय्या' मत करते फिरो, सबकी बातें ग़ौर से सुन लो, बस (49, 110)।

'फिरना' क्रिया काल-प्रक्रिया के पूर्ण रूपतालिका रखती है और अविधेय रचनाओं में भी आ सकती है, उदाहरणार्थ : यही कहलाती है झण्डे दिखाते फिरने की परम्परा (IV, 11-12-1973), पुलिस के सूँघते फिरने का कारण···(97, 42), अपने कार्यक्रम के भेद बताते फिरना हम लोगों को पसन्द न था (97, 61)। जैसा कि आख़िरी उदाहरण से विदित है, पक्ष-सम्बन्धी क्रिया का मुख्य घटक जब उद्देश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रकार्य में आता है तो प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त का रूप अपना लेता है।

बहुत ही कम स्थितियों में 'फिरना' क्रिया के इसी प्रकार्य में 'डोलना' क्रिया भी आ सकती है, उदाहरणार्थ : दिन-भर बगीचे में माली के साथ उसके काम में हाथ बँटाता डोलता (1, 67), तू तो चाहता है कि मैं ऐसी ही जूतियाँ खाती डोलूँ (103, 48)।

(5) व्यापार का घटमानपूर्ण परिणामी पक्ष

यह व्यापार का पक्ष मुख्यत: विश्लेषणात्मक क्रियाओं द्वारा व्यक्त होता है जो कि अकर्मक क्रिया के सरल द्वितीय कृदन्त या सकर्मक क्रिया के द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त एवं 'जाना' क्रिया के रूपों के मिलन से बनती हैं और आम तौर पर पुरुषवाचक रचनाओं में आती हैं। यहाँ 'जाना' की काल प्रक्रिया की पूर्ण रूप तालिका नहीं होती और वह आम तौर पर काल के अपूर्णतावाची तथा संतत रूपों में आती है।

ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ नित्यताबोधक दशा को बताती हैं, जो कि पूर्ववर्ती व्यापार के परिणामस्वरूप प्रकट होती है जिससे कर्ता में कुछ गुणात्मक तथा मात्रात्मक परिवर्तन आये हैं। वे परिवर्तन हालाँकि पूर्ण नहीं होते, बल्कि विकसित होते हैं, और घटमान होते हैं। व्यापार का घटमानपूर्ण परिणामी पक्ष कालावधि से सीमित नहीं होता, उदाहरणार्थ : इस काल कोठरी में दम घुटा जाता था (69, 229), चाय ठण्डी हुई जा रही है (112, 8), वह चाबी भरे रिकार्ड की तरह बोले जा रहा था (107, 12), उसकी माँ रोये जाती, उसे चूमे जाती, रोये जाती है (7, 122), तुम अस्पताल से निकलकर आये हो और मैं हूँ कि अपने बारे में ही बातें किये जाती हूँ (52, 134)।

ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ जब विशेषण की हैसियत से अविधेय क्रियार्थक रचनाओं में आती हैं तो अपने निर्धारित शब्द के साथ नियमित तौर पर अन्वित होती हैं, उदाहरणार्थ : निराश्रय होकर प्रवाह में बहे जाते रावत जैसे सहसा किनारे आ लगे (96, 88), परीक्षा-फल की उतावली में भागते जाते एक नवयुवक ने मुझ नव वृद्ध को अनचेता धक्का दे दिया (1, 124)।

पक्ष-सम्बन्धी क्रिया जब तृतीय क्रियाविशेषणों के प्रकार्य में आती है तो ऐसा मुख्य घटक रखती है, जो कि द्वितीय क्रियाविशेषण द्वारा व्यक्त होता है, उदाहरणार्थ : कुछ दूर उसके पीछे भागे जाकर गालियाँ देते और हाँफते चाचा डालचन्द वापस लौट आया (17, 106)।

पक्ष-सम्बन्धी क्रिया जब उद्देश्य के प्रकार्य में आती है तो द्वितीय क्रियाविशेषण कृदन्त के रूप में मुख्य घटक रखती है, उदाहरणार्थ : चौथी योजना में 1000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करोड़ रुपये इस मद से जुटाये जाना बहुत कठिन प्रतीत होता है (II, 25-11-1965, 17)।

'चला जाना' क्रिया मुख्य क्रिया को अधिक नित्यता की छाया प्रदान करती है, उदाहरणार्थ : वह कल्पना कर रही थी कि शहज़ादी बाक्स में क्या सोचती हुई बही चली जा रही होगी (103, 262), मैं इस तरह सारे काम क्यों किये चला जा रहा हूँ (108, 235)।

'आना' तथा 'चला जाना' क्रियाएँ तब आती हैं, जब व्यापार कर्ता की ओर संकेतित होता है, उदाहरणार्थ : आप हर स्टेशन पर मेरे पास भागे आते हैं (8, 39), बघेर बढ़ा आ रहा था (103, 534), ···जो जिसके हाथ आता था, लूटे लिए आ रहा था (10, 98), चारपाई न हो तो मैं डाले आती हूँ (108, 53), आँखों में आँसू उमड़े चले आ रहे थे (107, 117), ···लेकिन एक के बदले अनेक चित्र एक-दूसरे के ऊपर बरसाती बादलों से उमड़े चले आये··· (7, 121)।

'फिरना' क्रिया कर्ता की उस नित्यताबोधक दशा को बताती है जो कि कालावधि में सीमित नहीं होती, बल्कि विकसित होती है, और घटमान होती है, उदाहरणार्थ : क्या यहाँ तुम गाँव-गाँव भटके फिरते हो ! (44, 21), हवा के पैरों पर वह उड़ा फिरता (17, 85)।

(6) व्यापार का स्थैतिक पक्ष

यह पक्ष उन विश्लेषणात्मक क्रियाओं से बनता है, जो कि सरल द्वितीय कृदन्त तथा 'पड़ना' विशेषक क्रिया के मिलन से बनती हैं और मुख्यतः पुरुषवाचक क्रियार्थक रचनाओं में आती हैं।

ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ परिणामी दशा को बताती हैं जो कि पूर्ववर्ती व्यापार के कारण उत्पन्न होती है। परिणामी दशा नित्यताबोधक नहीं, बल्कि स्थैतिक होती है। 'पड़ना' क्रिया के साथ आम तौर पर अकर्मक सरल द्वितीय कृदन्त आते हैं, उदाहरणार्थ : उसने होंठ बन्द करने का प्रयत्न किया, परन्तु स्वभावानुसार दाँत निकले पड़ते थे (75, 76), वे आँखें अब फटी पड़ती थीं (103, 554), वे इच्छाएँ ···बँधे पानी की भाँति राह पकड़ उबली पड़ती थी (69, 105), भारत के इतिहास के पन्ने उन गरीबों के लहू से लाल हुए पड़े हैं (32, 126), ···हमीद का कमरा पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों और पुस्तकों से अटा पड़ा था (17, 157), भक्तों से मन्दिर भरा पड़ा है (111, 30)।

अविधेय रचनाओं में ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ मुख्यतः कृदन्तों के रूप में आती हैं जो कि नियमित तौर पर अपने को प्रकट करते हैं, उदाहरणार्थ : ···बाहर को निकली पड़ती बड़ी-बड़ी कौड़ियों-सी आँखों के पपोटे भारी हो गये हैं (17, 99), इच्छा हुई कि नज़दीक में सोये पड़े साथियों को भी जगा दे (49, 11)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर मुख्य क्रिया सकर्मक होती है तो वह द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के रूप में आती है, हालाँकि ऐसी क्रियाएँ बहुत ही कम प्रयोग में आती हैं, उदाहरणार्थ : यह आदत डाले नहीं पड़ती है (116, 83)।

'पड़ना' विशेषक क्रिया जब गति या स्थानान्तरण की क्रिया के साथ आती है तो वह व्यापार के घटमानपूर्ण परिणामी पक्ष के अर्थ में आती है। इसका कारण यह है कि 'पड़ना' का अर्थ 'गिरना' भी है, उदाहरणार्थ : पानी (ओले) पड़ना। इस अर्थ में 'पड़ना' क्रिया इस बात का संकेत करती है कि मुख्य क्रिया का शुरू हुआ व्यापार संतत है, उदाहरणार्थ : ···जी क्यों बीच में कूदे पड़ते हो (69, 38), खुशी प्रभा के रोम-रोम से फूटी पड़ रही थी (108, 177), ···जब कि दूसरों के लिए क्रोध उमड़ा पड़ता था (166, 73), ···जब कि आकृति पद उल्लास फूटा पड़ता था (13, 72)।

जैसा कि दिये गये उदाहरणों से विदित है, इस अर्थ में 'पड़ना' क्रिया काल के अपूर्णतावाची तथा संतत रूपों में आती है, जैसा कि 'जाना' क्रिया व्यापार के घटमानपूर्ण प्रकार में आती है।

(7) व्यापार का सम्भाव्य पक्ष

यह पक्ष विश्लेषणात्मक क्रियाओं द्वारा व्यक्त होता है जो कि धातु क्रिया और 'सकना' क्रिया के मेल और क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु तथा 'पाना' क्रिया के मेल से बनती हैं। ये पुरुषवाचक और अविधेय क्रियार्थक रचनाओं में आती हैं। 'सकना' और 'पाना' क्रियाएँ काल और प्रक्रिया की अपूर्ण रूपतालिका रखती हैं : 'सकना' क्रिया संतत काल रूपों में नहीं आती, और 'पाना' क्रिया कर्मवाच्य में नहीं आती और सिर्फ़ कर्तृवाच्य की कर्तृ-सम्बन्धी रचना में आ सकती है, उदाहरणार्थ : खड़ी बात कह सबसे सकता हूँ (61, 93), अब तक वह मजबूर थी, कहीं आ-जा न सकती थी (65, 70), अनवर साहब उन्हें हटा देना चाहते हैं, लेकिन हटा नहीं पाते (1, 529), ···चल पड़ने की इच्छा को वह रोक पायी (107, 112)।

शब्दार्थक तौर पर 'सकना' तथा 'पाना' विशेषक क्रियाएँ इसमें भिन्न हैं कि 'सकना' क्रिया पुरुष के सामर्थ्य को व्यक्त करती हैं जो कि पुरुष की शारीरिक, उसकी दिमागी, उसके ज्ञान की सम्भावनाओं आदि द्वारा प्रतिबन्धित होता है। 'पाना' क्रिया लक्ष्य की प्राप्ति को व्यक्त करती है या सोचे हुए व्यापार की पूर्णता का परिणाम। निषेधात्मक वाक्यों में वे व्यापार सम्पन्न करने की अयोग्यता या दिये गये लक्ष्य की प्राप्ति की अयोग्यता को व्यक्त करती हैं, उदाहरणार्थ :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकना	पाना
तुम मुझे ऐसी स्त्री मालूम होती हो जिससे आदमी बोर हुए बिना दस मिनट तक बात कह सकता है (30, 42), ···स्त्री भुलाने पर भी कुछ भूल नहीं सकती (30, 54)।	···और जब उसका श्वास ठीक चलने लगता तब कहीं वह उससे बात कर पाता (30, 108), भूलना चाहती हूँ, भूल नहीं पाती (30, 52)।

दोनों विशेषक क्रियाओं के बीच अन्तर विशेष कर तब प्रकट होता है, जब दोनों क्रियाएँ एक ही वाक्य में या एक ही विचारखण्ड में आती हैं, उदाहरणार्थ : अपनी ज़िन्दगी में इतनी सुबह उठने की कभी कोशिश मैंने नहीं की। उठ नहीं सकता ऐसी तो कोई बात नहीं, लेकिन उठ नहीं पाता था इसलिए कि दो-ढाई बजे रात के पहले कभी सोने का मौका नहीं मिलता था (59, 102), इन नेत्रों से क्या मैं इस तस्वीर को नहीं देख सकता ? सम्भव है देख लो, सम्भव है न देख पाओ··· (30, 64)।

'सकना' क्रिया इसके अलावा योग्यता (अयोग्यता) को व्यक्त करने के लिए आ सकती है, जो कि परिस्थितियों के संयोग के कारण उत्पन्न होती है, उदाहरणार्थ : अब न हिन्दुस्तान वाले पाकिस्तान जा सकते हैं और न पाकिस्तान वाले यहाँ आ सकते हैं (30, 19), ···पर अँधेरे में अख़बार नहीं पढ़ सकता था (120, 38)।

'पाना' क्रिया 'सकना' क्रिया के समान अर्थ में भी आ सकती है, उदाहरणार्थ : रेणु को ज़रा-सी बात पर इतना पीटा था कि वह कई दिन तक पढ़ने को न आ पायी थी (12, 66)।

अविधेय रचनाओं में ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ कृदन्तों के रूप में आती हैं जो 'वाला' रूपिम के साथ आते हैं या तुमर्थ क्रिया के रूप में आती हैं। कृदन्तपरक रूप में ये क्रियाएँ विशेषण की हैसियत से आती हैं, और तुमर्थ क्रिया के रूप में कर्म और उद्देश्य की हैसियत से, उदाहरणार्थ : खेती के अन्तर्गत लायी जा सकने वाली भूमि भी सीमित थी (II, 26-11-1967, 81), ···न सो पाने वाले अपने पति को स्नेह से थपक कर वह सुला देती है (9, 24), क्या···वह रुपया उससे ले सकना सम्भव होगा ? (96, 83), ···उसे कहानी में ला पाना बड़ा मुश्किल लगता था (13, 179), ···उसने लायलपुर जाकर ही यन्त्र बना सकना सम्भव बताया (97, 64)।

'सकना' क्रिया ही आधुनिक हिन्दी में एकमात्र क्रिया है जो स्वतन्त्र रूप से प्रयोग में नहीं आ सकती। 'सकना' क्रिया के प्रतीयमान स्वतन्त्र प्रयोग के अवसर, उदाहरणार्थ : तब मैंने अपने आप से प्रश्न किया था—'सकोगे ?' और मैंने स्वयं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर दिया था—'सकूँगा।' ...और मैं सका! (8, 71), वास्तव में विश्लेषणात्मक वाक्यांशों के अंश-विभाजन के उदाहरण होते हैं, जिनमें मुख्य क्रिया पूर्ववर्ती (अनुवर्ती) वर्णन में प्रयोग होती है और जिसको प्रसंग में से आसानी से लिया जा सकता है।

(8) व्यापार का प्रभावी पक्ष

यह पक्ष विश्लेषणात्मक क्रियाओं द्वारा व्यक्त होता है जो कि धातु क्रिया (कालक्रमिक दृष्टि से तृतीय क्रियाविशेषण क्रृदन्त) तथा 'चुकना' क्रिया के रूपों के मिलन से बनती हैं और पुरुषवाचक तथा अविधेय रचनाओं में आ सकती हैं। 'चुकना' क्रिया की काल-प्रक्रिया की अपूर्ण रूपतालिका होती है। वह मुख्यतः वर्तमान तथा भूतकाल के पूर्णतावाची रूपों तथा भविष्यत् काल के रूपों में प्रयोग होती है, लेकिन काल के संतत रूप में कभी भी प्रयोग नहीं हो सकती।

ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ इस बात का संकेत देती हैं कि व्यापार जो कि मुख्य क्रिया द्वारा व्यक्त हुआ है, पूर्ण हो चुका है। उदाहरणार्थ : हूणों का जिक्र हम पहले कर चुके हैं (2, 68), मैं ऐसे कितने ही मुकदमे देख चुकी (69, 5), तारो और कीथू तब तक अपने स्कूलों को जा चुके होते थे (1, 570), गोरेलाल भोजन कर चुके होंगे (69, 136)।

'चुकना' विशेषक क्रिया एक ही समय में दो धातुओं से सम्बन्ध रख सकती है, उदाहरणार्थ : हमारे देश में अतिथि-सत्कार की जो परम्परा चली आती है, वह हमारे जन-जीवन में संस्कारों में रच-बच चुकी है (142, 43)।

अविधेय रचनाओं में यह पक्ष-सम्बन्धी क्रिया क्रृदन्त (द्वितीय क्रृदन्त, आम तौर पर) के रूप में और तुमर्थ क्रिया के रूप में आती है। क्रृदन्त विशेषण की हैसियत से आता है और तुमर्थ क्रिया क्रियाविशेषण की हैसियत से और क्रियार्थक विधेय के संयुक्त घटक की हैसियत से, उदाहरणार्थ : मैंने जल चुकी सिगरेट को रखा (59, 149), प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य यह है कि इन प्रश्नों तथा पहले प्रस्तुत किए जा चुके प्रश्नों का विश्लेषण किया जाये (145, 5-6), देवताओं के पी चुकने के बाद शायद उनकी बारी आये (84, 23), बहुत कुछ निरुद्देश्य घूम चुकने पर हम सड़क के किनारे की बेंच पर बैठ गए (44, 34), अब तक यह स्पष्ट हो चुका होना चाहिए कि...(IV, 17-6-1973)।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, 'चुकना' क्रिया के साथ कालक्रमिक दृष्टि से धातु नहीं, बल्कि तृतीय क्रियाविशेषणात्मक क्रृदन्त आता है जो कि निम्न-लिखित उदाहरणों द्वारा प्रमाणित होता है : चाय पीकर चुके ही थे कि फिर जीप के आकर रुकने की आहट हुई (147, 80), अभी तो तबीयत खराब होकर चुकी है (109, 57), परन्तु श्यामा को टाइफाइड होकर चुका था (112, 55),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

···अभी-अभी कुछ कहा-सुनी होकर चुकी है (109, 109), हालाँकि इसको आधुनिक हिन्दी में कालदोषी कह सकते हैं चूँकि मानक धातु का प्रयोग है जो कि विशेषकर स्पष्टत: इस पक्ष-सम्बन्धी क्रिया के अविधेय रूपों और कर्मवाच्य के पुरुषवाचक रूपों के प्रयोग में प्रकट होता है। ऐसे उदाहरण यह प्रमाणित करने की संभावना प्रदान करते हैं कि 'चुकना' क्रिया के साथ शुद्ध-धातु नहीं, बल्कि क्रियाविशेषण धातु आती है।

'चुकना' क्रिया स्वतंत्र रूप से भी प्रयोग में आ सकती है, पुरुषवाचक रचनाओं में भी तथा अविधेय रचनाओं में भी, उदाहरणार्थ : मराठों की सेना की रसद चुकती जा रही थी (47, 22), घर में काफ़ी हो-हल्ला चुकने के बाद इस ओर से लोगों को समझौते का भाव धारण करना पड़ा (108, 67), और मैंने जीवन की सारी चुकी सामर्थ्य बटोर, बच्चे को श्यामू की गोद से ले लिया था (116, 42)।

(9) व्यापार का अभ्यासबोधक पक्ष

यह पक्ष उन विश्लेषणात्मक क्रियाओं द्वारा व्यक्त होता है जो कि कृदन्तपरक संज्ञाओं, जो कि रूप में पुल्लिग, एकवचन सरल द्वितीय कृदन्त के समान हैं तथा 'करना' क्रिया के मेल से बनती हैं। ये अकसर पुरुषवाचक रचनाओं में आती हैं। 'करना' क्रिया के काल-प्रक्रिया की पूर्ण रूप तालिका होती है, हालाँकि काल और अर्थ के अपूर्णतावाची रूपों में अकसर आती है और व्यावहारिक तौर पर संतत रूपों में नहीं आती। यह बात कि 'करना' क्रिया के साथ कृदन्तपरक संज्ञा आती है, लेकिन कृदन्त नहीं, निम्नलिखित उदाहरणों से प्रमाणित हो जाती है : मैं थोड़ी देर बैठी रहा करूँगी (65, 230), हम इकट्ठे खेला करते थे (13, 39), वह मिस बुड के ख़ाली कमरे में चोरी-छुपके सोने चली जाया करती थी (52, 99)।

ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ उस व्यापार को व्यक्त करती हैं जो कि आवर्ती होता है या आंतरायिक होता है कि अभ्यासता और नियमितता से जटिल हो जाता है, उदाहरणार्थ : पुस्तकालय क्यों नहीं चले जाया करते? (65, 5), जब महाराज रहा करते थे, वह महल में हवा करने जाया करता था (147, 48), ···उसने यही फ़ैसला किया था कि वह उसके घर बहुत कम जाया करेगा (73, 76), अभागिनी को ज़रूर याद कर लिया करना (69, 9), साँपों से पहले भले ही डरा करती होऊँ, अब तो रमा डर नहीं लगता (108, 142), सुबह तक बेइख़्तियार रोया किया और आँसुओं से मुँह धोया किया (24, 94), इस खेल में हम केवल हारा किये (136, 74)।

अविधेय रचनाओं में ये क्रियाएँ बहुत कम आती हैं, मुख्यत: कृदन्त के रूप में आती हैं, उदाहरणार्थ : इस अचानक मुसीबत से रात-दिन रोया करता। चालीसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन ज्यूँ-त्यूँ करके कटे (24, 14)।

'करना' विशेषक क्रिया एक ही समय दो कृदन्तपरक संज्ञाओं से सम्बन्ध रख सकती है, उदाहरणार्थ : उस ज़माने में मैं, कृष्ण और वेदी एक-दूसरे को अपनी कहानियाँ सुनाया और उनके बारे में वाद-विवाद किया करते थे (9, 16)।

(10) व्यापार का अवधारण पक्ष

यह पक्ष विश्लेषणात्मक क्रियाओं द्वारा व्यक्त होता है जो कि क्रियाविशेषण धातु और 16 विशेषक क्रियाओं के मेल से बनती हैं (विशेषक क्रियाएँ—'आना', 'जाना', 'लेना', 'देना', 'रखना', 'रहना', 'पड़ना', 'उठना', 'बैठना', 'डालना', 'निकालना', 'चलना', 'मरना', 'मारना', 'छोड़ना', 'ले जाना')। इनमें से ज़्यादातर पुरुषवाचक तथा अविधेय क्रियार्थक रचनाओं में आ सकती हैं। उल्लेखित विशेषक क्रियाएँ काल-प्रक्रिया की पूर्ण रूपतालिका रखती हैं। परन्तु वे अक्सर पूर्णतावाची काल रूपों में आती हैं। यह कहना उचित रहेगा कि ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ बहुत ही कम निषेधात्मक वाक्यों में आती हैं।

विशेषक क्रियाएँ मुख्य क्रिया के व्यापार में विभिन्न अतिरिक्त छायाएँ दे सकती हैं, व्यापार के होने की प्रकृति तथा उसकी पूर्णता के विभिन्न स्तर की ओर संकेत दे सकती हैं। 'आना', 'जाना', 'देना', 'लेना' क्रियाएँ इन सबमें सबसे ज़्यादा प्रचलित हैं और विशेषक अर्थ में सामान्य होती हैं। ये क्रियाएँ व्यापार की शुद्ध परिणामिकता की ओर संकेत करती हैं। बाकी विशेषक क्रियाओं का क्रियाविशेषण कृदन्त-धातु के साथ मिलन दोनों संयुक्त घटकों के अर्थ के सामान्य झुकाव से निर्धारित किया जाता है एवं प्रचलित भाषिक प्रयोग द्वारा भी, चूँकि कालक्रमिक दृष्टि से ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ दो पृथक्कृत क्रियाएँ होती हैं (तृतीय क्रिया-विशेषणात्मक कृदन्त तथा समापक क्रिया)। ये अधिकाधिक स्पष्टतः व्यापार की विभिन्न अर्थगत छायाओं को व्यक्त करने का प्रयास करती रहती थीं जो कि आधुनिक हिन्दी में शब्द-रचनात्मक क्रियार्थक पूर्वप्रत्ययों के अभाव के कारण होता था। आज काल में व्यापर जो इन क्रियाओं द्वारा व्यक्त होता है, संलीन प्रतीत होता है : क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु मुख्य अर्थगत भार देती है और विशेषक क्रिया समस्त व्याकरणिक भार अपनाती है, और व्यापार के होने की प्रकृति और उसकी पूर्णता की ओर संकेत करती है, हालाँकि तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त आज तक प्रयोग में आता है :

एक किस्सा आँखों के आगे उभरकर आता है (107, 32),

···मैंने शरणार्थी कैम्पों की रिपोर्ट लिख कर दी थी (1, 300),

···उनके माथे पर बल उभर आये (107, 48),

मैंने अपनी सारी जायदाद अपने भतीजे जुम्मन के नाम लिख दी थी (61, 155),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं सामान लेकर जाता हूँ (99, 21), ···उन्होंने···शकुन्तला जी को लेकर आने···का वचन ले लिया (10, 73)। ···जूते भी वे लोग ले गए (96, 82), ···वे उसे ले आये (10, 104)।

एक ही विशेषक क्रियाओं का प्रयोग करने की नियमितता, मुख्य तथा विशेषक क्रिया के व्यापार की संलीनता ने इस पक्ष-सम्बन्धी क्रियाओं के अनेक व्याकरणिक गुणों को बनाया है।

पहले तो, जैसा कि ऊपर लिखा गया था कि वे निषेधात्मक वाक्यों में बहुत ही कम प्रयोग होती हैं।

दूसरे यह कि एक विशेषक क्रिया एक समय में ही दो या ज़्यादा क्रिया-विशेषणात्मक कृदन्त-धातुओं के साथ प्रयोग हो सकती है, जो कि एक एकमूलीय, पर्यायवाची और भिन्नार्थक क्रियाओं से बनती हैं, उदाहरणार्थ···तो ठीक है, कुछ कर करा लो (107, 127), उसने फिर पत्रिका निकालकर पूरी उलट-पुलट डाली (52, 18), यहाँ वह थक-हार जाने की स्थिति की पहचान थी? (V, जनवरी, 1963, 81), ···मुझे शीघ्र ही समझा-सिखा दिया (142, 26)।

तीसरा यह कि अगर इन पक्ष-सम्बन्धी क्रियाओं के संयुक्त घटकों में से एक अकर्मक होता है तो वे पूर्णतावाची काल रूपों में सिर्फ़ कर्तृ-सम्बन्धी रचना बनाती हैं, उदाहरणार्थ :

प्रथम अकर्मक	द्वितीय अकर्मक
मैं तुरैया के साथ चल दिया (69, 196),	···नये रिवाज भी चलन पा गए थे (2, 87),
मैं उसके पीछे लग लिया (24, 139)।	···बरौज देख आया कि बस्ती में एक ही बंगला और है (36, 128)।

इन पक्ष-सम्बन्धी क्रियाओं और 'आना', 'जाना' क्रियाओं से बनी क्रिया-विशेषणात्मक कृदन्त-धातुओं के उन स्थिर शाब्दिक पदबन्धों के बीच अंतर जानना चाहिए जो विभिन्न अकर्मक तथा सकर्मक क्रियाओं के साथ आते हैं और अपनी शाब्दिक और व्याकरणिक स्वतंत्रता नहीं खो बैठते। उदाहरणार्थ : यह बात पूर्णतावाची काल रूपों में तब प्रकट होती है जब वे कर्म-सम्बन्धी या भाववाचक रचनाओं में आते हैं, उदाहरणार्थ : हमने आगे जाने वाली बस को जा लिया था (9, 119), रास्ते में लड़कों को बुखार ने आ दबाया (7, 33), डाकुओं ने उन्हें आ घेरा (17, 47), ···राजपूत योद्धा भी···अपने-अपने मोर्चों पर जा जमे···लोग निर्धारित मोर्चों पर जा डटे। धीरे-धीरे अमीर की सेना का सारा भार मध्य द्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर आ जमा (4, 152)।

इन पक्ष-सम्बन्धी क्रियाओं और उन क्रियाओं के दूसरे पदबन्धों के बीच अन्तर जानना चाहिए जो कि क्रियाविशेषण कृदन्त-धातु के रूप में आती हैं चूँकि उन्होंने भी अपनी शाब्दिक स्वतन्त्रता नहीं खोयी, उदाहरणार्थ : विज्ञान ने कैसा करिश्मा कर दिखाया है ! (99, 13), ···कब नींद ने मुझे धर दबाया ज़रा भी मुझे याद नहीं (69, 200), मेरी माँ को मेरा बाप अपने कंधे पर उठा लाया (66, 200)।

ये संयुक्त पदबन्ध निषेधात्मक वाक्यों में भी आ सकते हैं, उदाहरणार्थ : ···मैं किसी के साथ निकल तो नहीं भागी (59, 15)।

16 विशेषक क्रियाओं में हरएक मुख्य क्रिया को अपनी छाया देती है, इसीलिए हरएक क्रिया के बारे में अलग वर्णन करना ज़रूरी है।

(1) **'आना' विशेषक क्रिया** निम्नलिखित स्थितियों में प्रयोग होती है :

(1) अपने अर्थ को सुरक्षित रखकर—जबकि व्यापार की दिशा वक्ता की ओर होती है और व्यापार की पूर्णता पर बल होता है, उदाहरणार्थ : फिर, उसकी टहनियों पर उभरा हुआ-सा कुछ निकल आता है (50, 64), ···लेकिन आधे रास्ते से लौट आया (73, 188), पालसिंह···घर से निकल आया (75, 53), घोषणा होने पर विमान में चढ़ आये (99, 25), ···आँखों में आँसू भर आये (69, 199)।

कुछेक हालत में पक्ष-सम्बन्धी क्रिया संयुक्त रचना के साथ अपना शेष सम्बन्ध सुरक्षित रखती है, उदाहरणार्थ : ···उसे अपनी कोठरी में रख आया (69, 127), ···बाप उसे अथाह पानी में डाल आया (49, 25), दो साल विलायत रह आया हूँ (73, 172), इस जगह तो मैं कई बार हो आया हूँ (69, 195), रावत दो महीने जेल भी हो आया था (49, 82), मैं मिस्टर स्टिवनसन के साथ चाय पी आयी थी (36, 54)।

(2) आंशिक तौर पर या पूर्ण रूप से अपना अर्थ खो बैठती है, जब व्यापार की परिणामी पूर्णता व्यक्त करती है, उदाहरणार्थ : बरौज देख आया कि बस्ती में एक ही बंगला और है (36, 128), जाकर माँ से पहले कह आओ कि मैं आ रहा हूँ (59, 43), राजकुमारी रुआँसी हो आयी (107, 82), प्रभा पिछली साँझ ही लीला के साथ फ़िल्म देख आयी थी (96, 65), कभी-कभी चित्त मेरा बुरा हो आता है (44, 70), ···वह रोने को हो आया···(44, 53)।

अविधेय रचनाओं में पक्ष-सम्बन्धी क्रिया विशेषक क्रिया 'आना' के साथ मुख्यतः कृदन्तों के रूप से आती है, उदाहरणार्थ : बाहर निकल आया आदमी··· बोला (96, 47), डबडबा आयी आँखों को ऊपर उठाकर···(59, 98), ···चेतन की निगाहें उनकी नाक के दोनों ठोड़ी तक खिंच आने वाली लकीरों पर अटक गयीं (17, 109)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसा कि उदाहरणों से विदित है 'आना' क्रिया सकर्मक तथा अकर्मक क्रियाओं के साथ आती है।

(2) **'जाना' विशेषक क्रिया** निम्नलिखित स्थितियों में आती है :

(1) अपना अर्थ सुरक्षित रखती है—जब व्यापार की दिशा वक्ता की ओर से होती है और व्यापार की परिणामिकता पर ज़ोर होता है, उदाहरणार्थ : इसलिए हम अपना सारा सामान उसी में छोड़ गये थे (99, 25), देखिये वही औरत यह सोने की तावीज़ दे गयी है (69, 200), ···जब नाज़ी फ़ौजें लौट गयीं··· (99, 38)।

(2) अपने अर्थ को पूर्णतः खो बैठती है, जब व्यापार का परिणाम या पूर्णता व्यक्त करना होता है, उदाहरणार्थ : बूढ़ा मेरे पास आ गया (103, 123), विचारों का ताँता टूट गया (99, 24), वसन्त ऋतु के आते ही यह फूलों से लद जाता है (50, 64), ···वह समय पर मिल गया (99, 9), सभी लोग···आकर पी जाते थे (69, 37), उसे लकवा मार गया (2, 122)।

अविधेय रूपों में पक्ष-सम्बन्धी क्रिया 'जाना' विशेषक क्रिया के साथ कृदन्तों या तुमर्थ क्रिया की हैसियत से आती है। कृदन्त की हैसियत से यह वाक्य में क्रिया-विशेषण के रूप में आती है, जैसे, पीले पड़ गये बेला के फूल का हार अब भी मौजूद था (96, 86), घुन की भाँति भीतर-ही-भीतर खा जाने वाली वेदना (75, 105)। तुमर्थ क्रिया की हैसियत से वह वाक्य में निम्नलिखित प्रकार्यों में आ सकती है : (क) उद्देश्य—···जैसे, टाँग का कट जाना हर रोज़ की बात थी (30, 113); (ख) कर्म—मैं···लिखने बैठ जाना चाहता था (1, 53); (ग) विशेषण—अब सिर्फ़ मर जाने का उत्साह मेरे मन में है (143, 18); (घ) क्रियाविशेषण--दल के भंग हो जाने पर मुझसे आज़ाद ने कहा··· (97, 118)।

'जाना' क्रिया 'आना' क्रिया की अपेक्षा सकर्मक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों-धातुओं से मेल अधिक खाती है, उदाहरणार्थ : वह बात को ताड़ गये (69, 162), समझ गया, औरत पैसे न लेगी (96, 28), ···मैं धीरे-धीरे अपनी सब मुसीबतें भूल गया (69, 197-198), एक बार पराया धन लेकर सीख गया (69, 141), अब उसे लगा कि वह गलती कर गया है (103, 226)।

'जाना' क्रिया जब उस क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से मेल खाती है जो दशा को व्यक्त करती है, तो वह प्रक्रियात्मक परिणाम या व्यापार की पूर्णता की छाया देती है। यह बात काल के पूर्णतावाची रूपों में विशेषकर अच्छी तरह प्रकट होती है :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पक्ष-रहित क्रिया	पक्ष-सम्बन्धी क्रिया
सुखराम घायल लेटा है (103, 219),	दोनों अपने-अपने विस्तर में…लेट गये (96, 21),
कजरी बैठी है पास (103, 219),	सरदार साहब और मैं कुर्सियों पर बैठ गये (69, 186),
पराये मर्दों के संग सोयी हूँ (103, 141),	बल्लू भीतर सो गया था (96, 20),
वही…होटल में ठहरे हैं न? (69, 108)।	इक्का सड़क पार जाकर ठहर गया (69, 140)।

प्रक्रियात्मक परिणाम या व्यापार की पूर्णता की छाया के अलावा 'जाना' विशेषक क्रिया व्यापार की एकलता की छाप देती है। यह बात भी सबसे ज़्यादा स्पष्टत: काल के पूर्णतावाची रूपों में प्रकट होती है :

पक्ष-रहित क्रिया	पक्ष-सम्बन्धी क्रिया
मैंने तो सुना है कि अभी सिर्फ़ दिल्ली ही में रेडियो स्टेशन खुला है (17, 169),	नहीं इसी जनवरी से लखनऊ में भी खुल गया है (17, 169),
कुँवर साहब पलंग पर लेटे थे (69, 111),	लाचार, बेचारे गाड़ी पर ही लेट गये (69, 161),
मैं सारी रात जागा हूँ (54, 49),	वह जैसे जाग गया (103, 394),
…कई बार मैं मरते-मरते बचा (69, 189)।	बच गये—राजा ने कहा (103, 387)।

अपूर्णतावाची काल रूपों में जितनी भी 'जाना' क्रिया की छायाएँ गिनवायी गयी हैं, वे सब थोड़ी अप्रकट हो जाती हैं, सिर्फ़ व्यापार की पूर्णता की छाया ही ज़्यादा स्पष्ट प्रकट होती है :

पक्ष-रहित क्रिया	पक्ष-सम्बन्धी क्रिया
फिर अण्डे के आकार के छोटे फल आते हैं (50, 54),	अप्रैल-मई में फल आ जाते हैं (50, 65);
फरवरी से अप्रैल तक फल पकते हैं (50, 34),	एक महीने में इसके फल पक जाते हैं (50, 23),
उसके सिर पर बड़े-बड़े पत्ते निकलते हैं (50, 50)।	इसका मूल बाहर निकल जाता है (50, 51)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ स्थितियों में 'जाना' विशेषक क्रिया क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु को अतिरिक्त छाया प्रदान नहीं करती, और पक्ष-सम्बन्धी क्रिया पक्ष-रहित क्रिया के साथ-साथ प्रयोग होती है, उदाहरणार्थ : हरनाम मरा, धूपो मरी, रुस्तम खाँ मरा, बाँके मर गया, और दीवान भी मर गया ! (103, 456), अगली बस अचानक रुकी तो हमारी भी रुक गयी (9, 119)।

(3) **'लेना' विशेषक क्रिया** जब क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से मिलती है तो अपना अर्थ व्यावहारिक तौर पर खो बैठती है और मुख्य क्रिया को व्यापार का परिणाम या उसकी पूर्णता का अर्थ कर्तृगामी छाया के साथ देती है, अर्थात् यह संकेत देती है कि व्यापार की दिशा कर्ता की ओर है, उदाहरणार्थ : उसने सिन्ध नदी के पश्चिम का सारा देश छीन लिया और उन्हें अपने साम्राज्य में मिला लिया (2, 195), ···पेटियाँ बाँध लीजिए (99, 11), ···बन्दूक उसके हाथ से छीन ली (69, 179), ···तुम इस प्रश्न को···अपने ही हृदय से पूछ लेतीं (69, 94), उसका जवाब मैं दे लूँगा (65, 85), मैं उसके पीछे लग लिया (24, 139)।

जैसा कि दिये गए उदाहरणों से विदित है 'लेना' क्रिया सकर्मक तथा अकर्मक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातुओं से मिलती है। परन्तु बहुधा यह क्रिया सकर्मक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातुओं से मिलती है।

'लेना' क्रिया अपनी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से मिल सकती है, उदाहरणार्थ : ये दोनों मैंने पहले ही ले लिए थे (99, 10)।

अविधेय रूपों में यह पक्ष-सम्बन्धी क्रिया मुख्यतः तुमर्थ क्रिया के रूप में आती है जो कि वाक्य में निम्नलिखित प्रकार्यों में आ सकती है : (क) उद्देश्य—मेरा कंगन पहन लेना बहू को अच्छा नहीं लगा···(65, 65); (ख) कर्म—···बुढ़िया ने अपनी डलिया छीन लेनी चाही (44, 80); (ग) विशेषण—शत्रु ने काबू कर लिए जाने की ख़बर पकड़···लौट लाया (97, 12); (घ) क्रियाविशेषण—इन्द्रपाल के स्वीकार कर लेने पर दिल्ली से मथुरा जाने वाली सड़क पर गये (97, 47)।

(4) **'देना' विशेषक क्रिया** भी जब क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से मिलती है तो अपना अर्थ खो बैठती है और मुख्य क्रिया को व्यापार के परिणाम या पूर्णता की छाया देती है। तब यह क्रिया इस बात का संकेत देती है कि व्यापार की दिशा कर्ता की ओर से है, उदाहरणार्थ : स्कन्दगुप्त ने उनको भी हरा कर भगा दिया (2, 68), ···हम लोगों ने कमर से पेटियाँ खोल दीं (99, 11), जुम्मन पर अपना घर छोड़ देते थे (69, 152), ···नहीं तो यह इसे खो देगा (96, 20)।

जैसा कि दिये गये उदाहरणों से विदित है, विशेषक क्रिया अपने मुख्य अर्थ में आम तौर पर सकर्मक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातुओं से मिलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'देना' क्रिया जब अकर्मक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातुओं से मिलती है जो वह सिर्फ़ व्यापार के परिणाम या पूर्णता की ओर संकेत देती है, उदाहरणार्थ : वह भी रो दिया (103, 490), वह मन-ही-मन हँस दिया (17, 394), मैं तुरैया के साथ-साथ चल दिया (69, 46)।

काल के अपूर्णतावाची रूपों में 'देना' क्रिया की सारी छायाएँ थोड़ी अप्रकट हो जाती हैं :

पक्ष-रहित क्रिया	पक्ष-सम्बन्धी क्रिया
इन्हें बारहमासी कहते हैं (50, 15),	छोटे बाघ को लैपर्ड और बड़े को पैंथर कह देते हैं (150, 27),
···ये बहुत देर में बड़े होकर फल देते हैं (50, 50),	क़लमी अमरूद दो वर्षों में ही फल दे देते हैं (50, 22),
बाघ···मारने की ख़ातिर ही मरता है (150, 29)।	बड़ा बाघ तो भैंस को मार देता है (150, 29)।

'देना' क्रिया अपनी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से मिल सकती है, उदाहरणार्थ : उसने किस तरह सब कुछ दे दिया है (96, 23)।

अविधेय रूपों में यह पक्ष-सम्बन्धी क्रिया तुमर्थ क्रिया के रूप में आती है जो कि वाक्यों में निम्नलिखित प्रकार्यों में आ सकती है : (क) उद्देश्य—···आदमी की मौत···कह देना एक भारी अपराध लगता है (116, 37); (ख) कर्म—···पिस्तौल भगवती भाई ने आतमरक्षा के लिए मुझे सौंप देनी चाही (97, 22); (ग) विशेषण—वैश्यों को नगर से बाहर निकाल देने का प्रस्ताव स्वीकृत हो जायेगा (72, 171); (घ) क्रियाविशेषण—···बिजली बुझा देने के बाद अँधेरे में प्रभा को साँझ की पार्टी की बातें याद आने लगीं (95, 66)।

(5) **'रखना' विशेषक क्रिया**—जब क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से मिलती है तो अपना अर्थ खो बैठती है और मुख्य क्रिया को व्यापार के परिणाम या पूर्णता की छाया देती है। 'रखना' क्रिया आम तौर पर सिर्फ़ सकर्मक क्रियाओं से मिलती है और इस तरह भूतकाल तथा वर्तमान काल के सिर्फ़ पूर्णतावाची रूपों में ही आती है। व्यापार जो कि मुख्य क्रिया द्वारा व्यक्त होता है, उस व्यापार से पहले समाप्त होता मालूम पड़ता है जो विशेषक क्रिया द्वारा व्यक्त होता है और व्यापार जो विशेषक क्रिया द्वारा व्यक्त होता है मुख्य क्रिया की परिणामी दशा को सुरक्षित रखता है, उदाहरणार्थ : शेख जुम्मन ने पहले से ही फ़र्श बिछा रखा था (69, 155), उसने पैवन्द लगे मैले-कुचैले कपड़े पहन रखे थे (142, 116), ···तुमने आजकल घर में यह क्या उपद्रव मचा रचा है ? (69, 146), दुर्लभ राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने···अमीर को दुर्गम घाटियों में फँसा रखा है (4, 114), तूने सिर चढ़ा रखा है (163, 217), बलूची औरतों की तरह रूमाल बाँध रखा था (69, 187)।

'रखना' विशेषक क्रिया जब 'देखना', 'सुनना', 'कहना' आदि जैसी उक्ति और अनुभूति की क्रियाओं के साथ आती है, तो ऐसा लगता है जैसे वक्ता की चेतना में मुख्य क्रिया के व्यापार के लिए एक कालावधि निर्धारित करती है, अर्थात् देख रखना (देखना तथा याद रखना), सुन रखना (सुनना और याद रखना), कह रखना (कहना और याद रखना), उदाहरणार्थ : मैंने यह नाटक देख रखा है (142, 42), उसने यह सुन रखा था कि···(14, 90), ···उसने कई महीने पहले कह रखा था कि···(7, 25)।

'रखना' क्रिया की अपनी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से मिल सकती है, उदाहरणार्थ : कपड़ों के ढेर के नीचे मिस पाल ने अपने बनाये हुए खाके रख रखे हैं (52, 137)।

अविधेय रूपों में यह पक्ष-सम्बन्धी क्रिया आम तौर पर सिर्फ़ तुमर्थ क्रिया के रूप में आती है, उदाहरणार्थं : सेठी बिना कुछ बोले उसे सामने बिठा रखना चाहता है (96, 23)।

(6) **'रहना' विशेषक क्रिया**—क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु के मिलने से अपना अर्थ प्रायः सुरक्षित रखती है और मुख्य क्रिया को व्यापार के परिणाम या पूर्णता की छाया प्रदान करती है। 'रहना' क्रिया सिर्फ़ अकर्मक क्रियाओं से ही मिलती है, और मुख्यतः सामान्य भूतकाल के रूप में आती है। 'रहना' क्रिया अकर्मक क्रिया के साथ उन्हीं प्रकार्यों में आती है जैसा कि 'रखना' क्रिया सकर्मक क्रियाओं के साथ आती है, अर्थात् 'रहना' क्रिया मुख्य क्रिया की परिणामी दशा को सुरक्षित रखती है, जिसका व्यापार विशेषक क्रिया के व्यापार से पहले समाप्त हो जाता है, उदाहरणार्थ : मिस्टर सेठ···आख़िर मुँह फेरकर लेट रहे (69, 22), ···सन्तराम मन्दिर में आने के स्थान साधु की झोंपड़ी में जाकर सो रहा (36, 37), ···सोना भाभी को साथ लेकर उसकी माँ भी उसके साथ रही (107, 43), बच्चे डर गये और सहमे-से चुप रहे (103, 293), ससुरा बीच रास्ते में ही मर रहा (69, 160)!

अविधेय रूपों में यह पक्ष-सम्बन्धी क्रिया आम तौर पर तुमर्थ क्रिया के रूप में ही आती है, उदाहरणार्थ : ···अभी से पड़ रहना ठीक नहीं···(24, 13), लाचार बैठ रहना पड़ा (44, 73)।

आधुनिक हिन्दी में इस पक्ष-सम्बन्धी क्रिया का द्वितीय कृदन्त एक स्वतन्त्र संतत कृदन्त की तरह प्रयोग में आता है, जो कि विश्लेषणात्मक काल रूपों में आता है। इस कारण यह पक्ष-सम्बन्धी क्रिया पुरुषवाचक रचनाओं में संतत कृदन्त के सामान्य भूतकाल की हैसियत से जानी जा सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(7) **'पड़ना' विशेषक क्रिया**—जब क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से मिलती है तो अपना अर्थ सुरक्षित रखती है और मुख्य क्रिया को व्यापार के परिणाम और पूर्णता की छाया प्रदान करने के अलावा व्यापार की तात्कालिकता तथा उसकी कार्यान्विति की सम्भावना की भी छाया देती है। यह बात वैसे हर जगह नहीं पायी जाती। जब स्थानान्तर और गति की क्रियाओं के साथ आती है तो 'पड़ना' क्रिया व्यापार की पूर्णता और परिणाम की छाया देती है जो कि विशेषकर उन क्रियाओं के बारे में स्पष्ट प्रकट होती है, जिनका अर्थ 'पड़ना' क्रिया के निकट होता है, उदाहरणार्थ : मालूम नहीं कब और कहाँ गिर पड़े (69, 139), ···फल पेड़ से टपक पड़ते हैं (50, 44), तब लंगूर पेड़ से नीचे कूद पड़ता है और बाघ एकदम उसके ऊपर टूट पड़ता है (150, 30), पतझड़ में इसके ज़्यादा पत्ते झड़ पड़ते हैं (50, 74)।

'पड़ना' क्रिया वही अर्थ सुरक्षित रखती है जब वह स्थानान्तर और गति की बाकी क्रियाओं के साथ मिलती है, उदाहरणार्थ : हातिम···कोह-काफ़ की तरफ़ चल पड़ा (25, 69), वह···घर से निकल पड़ा (69, 42), ···हम लोग बस से उतर पड़े (99, 30), तुरैया···लौट पड़ी (69, 197), बन्दूक भी हाथ से छूट पड़ी है (69, 177)।

'पड़ना' क्रिया का यह प्रकार्य काफ़ी हद तक 'जाना' विशेषक क्रिया के समान है। यह बात निम्नलिखित उदाहरणों से प्रमाणित हो जाती है :

पड़ना	जाना
मालूम नहीं कब और कहाँ गिर पड़े (69, 139),	क्या जाने कहीं गिर गये (69, 139),
पतझड़ में इसके ज़्यादा पत्ते झड़ पड़ते हैं (50, 74),	जाड़े के अन्तिम दिनों में सभी पत्ते झड़ जाते हैं (50, 64),
पतझड़ में इसके तमाम पत्ते गिर पड़ते हैं (50, 41)।	अप्रैल तक इसके सारे पत्ते गिर जाते हैं (50, 44)।

'पड़ना' विशेषक क्रिया जब आन्तरिक दशा की क्रियाओं के साथ आती है तो उनको व्यापार की तात्कालिकता का अर्थ प्रदान करती है, उदाहरणार्थ : वह रो पड़ी (103, 75), और स्त्रियाँ ठठाकर हँस पड़ीं (107, 187)।

जब 'पड़ना' क्रिया 'जानना' और 'सुनना' जैसी अनुभूतिवाचक क्रियाओं के साथ आती हैं तो व्यापार की तात्कालिकता की छाया नहीं देती। ये क्रियाएँ 'पड़ना' क्रिया के साथ मिलकर भाववाचक प्रकृति अपना लेती हैं, उदाहरणार्थ : ···जान पड़ता था, गिर पड़ेंगे (96, 89), उन्हें जान पड़ा कि···(96, 86), उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके मुँह पर उनके हृदय के समस्त भाव अंकित देख पड़ते थे (73, 170), उनके कानों में कुछ असाधारण शब्द सुन पड़े (4, 58)।

ये क्रियाएँ अपने इस अर्थ में 'दीख पड़ना' या 'सूझ पड़ना' जैसी अकर्मक भाव-वाचक क्रियाओं के समान हैं, उदाहरणार्थ : बस्ती दीख पड़ने लगी (90, 28), कोई उपाय न सूझ पड़ता था (69, 297)।

'पड़ना' विशेषक क्रिया जब 'आना' क्रिया के साथ मिलती है तो मुख्य क्रिया को नकारात्मक छाया प्रदान करती है, जिसका व्यापार, कुछ हद तक, अकस्मात प्रतीत होता है, उदाहरणार्थ : कुछ ऐसा ही काम आ पड़ा है (73, 158), समस्या ही ऐसी आ पड़ी है (73, 79)।

'पड़ना' विशेषक क्रिया जब 'बनना' क्रिया की क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से मिलती है तो व्यापार को करने की सम्भावना की छाया देती है, और प्रकार्य में 'पाना' सम्भाव्य क्रिया के निकट होती है या 'बनना' विशेषक क्रिया के निकट होती है अगर वह व्यापार के योग्यताबोधक पक्ष में आये, उदाहरणार्थ : जो बहुओं से बन पड़ता है बहुएँ करतीं···(142, 41), जितने रुपये हमसे बन पड़ेंगे, हम हर महीने भेज दिया करेंगे (1, 51)।

अविधेय रूपों में यह पक्ष-सम्बन्धी क्रिया कृदन्त, तुमर्थ क्रिया और सुपाइन के रूप में आती है, उदाहरणार्थ : छत पर से अचानक गिर पड़ने वाले आदमी के सामने सारी दुनिया···चक्कर लगा जाती है···(52, 19), जैसे वह टूट पड़ने के पहले बादल ने···श्वास खींचा था (103, 300), रावत को केवल आत्म-प्रवंचना जान पड़ने लगी (96, 83), पानी में कूद पड़ना ऐसा क्या कठिन है (73, 157)।

(8) **'उठना' विशेषक क्रिया**—व्यावहारिक तौर पर क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु के साथ मिलने से अपना अर्थ खो बैठती है, और मुख्य क्रिया को व्यापार की पूर्णता और परिणाम की छाया के साथ व्यापार की तात्कालिकता की छाया भी प्रदान करती है। 'उठना' क्रिया का यह गुण सबसे ज़्यादा स्पष्ट आन्तरिक दशा की क्रियाओं के साथ मिलने से प्रकट होता है, उदाहरणार्थ : वह चौंक उठीं (10, 203), कुँवर साहब का हृदय काँप उठा (59, 117), औरतें भय से चीख उठीं (103, 354), ···उसका दिल नाच उठा (75, 192), फिर कोई रो उठा (103, 210), ···ठण्डी गड़गड़ाती हँसी हँस उठी (103, 342)।

तात्कालिकता की छाया स्पष्टतः तब प्रकट होती है जब वह दूसरे शब्दार्थक वर्गों की क्रियाओं के साथ आती है, उदाहरणार्थ : कुत्ता ज़ोर से भौंक उठा (69, 182), पापी का घर जल उठा (103, 332), सफ़ेद-सफ़ेद दाँत चमक उठे (103, 351), ···दूसरे जहाज़ का भोंपू बज उठा (99, 23), गाँव में हल्ला मच उठा (103, 332)।

जैसा कि दिये गये उदाहरणों से विदित है, 'उठना' विशेषक क्रिया मुख्यतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकर्मक क्रियाओं के साथ मिलती है। सकर्मक क्रियाओं में से वह मुख्यतः उक्ति की क्रियाओं के साथ मिलती है, उदाहरणार्थ : बोल उठे···(69, 151), वह··· कह उठी (103, 248), जैसे वासना श्री···पूछ उठी कि (103, 203)।

यह पक्ष-सम्बन्धी क्रिया अविधेय रूपों में लगभग नहीं आती, हालाँकि कुछ अकेले-दुकेले उदाहरण पाये जाते हैं : भड़क उठने वाले विमल दादा को इतनी तीखी बात पर गुस्सा नहीं आया (107, 151)।

(9) **'बैठना' विशेषक क्रिया**—क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु के साथ मिलने से अपने अर्थ को खो बैठती है और मुख्य क्रिया को व्यापार के परिणाम और पूर्णता की छाया के अलावा मुख्य व्यापार की तरफ़ नकारात्मक सम्बन्ध व्यक्त करती है जो कि वक्ता की इच्छा के बिना हो रहा है या वक्ता जिसे अवांछनीय समझता है, उदाहरणार्थ : ऐसा मत कर बैठना विमल, नहीं तो तुम माँ से कहीं ज़्यादा अत्याचार भाभी पर कर बैठोगे (59, 42), दुर्भाग्य से मैं एक नाग औरत को रख बैठी थी (36, 116), ···मैं अपना दिल तुझे दे बैठी (25, 68), ···एक नौजवान···उसकी नौजवान लड़की को छेड़ बैठा (75, 58), मुझसे शरारत करोगे तो मार बैठूँगा (65, 85), आगे बढ़कर पूछ ही तो बैठी···(103, 187), ···उसकी हिम्मत उसका साथ छोड़ बैठी (59, 16)।

'बैठना' क्रिया जब क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से जो 'उठना' क्रिया से बनती है, मिलती है तो व्यापार की तात्कालिकता की छाया देती है, उदाहरणार्थ : मफ़तलाल उठ बैठा (143, 16), एक क्षण के बाद वह उठ बैठा (66, 96), कजरी बैठी हुई कुछ सोच रही थी। आवाज़ सुनते ही चौंककर उठ बैठी (103, 191)।

कई बार जब 'बैठना' क्रिया 'उठना' क्रिया के साथ मिलती है तो मुख्य क्रिया के व्यापार की अपूर्णता की छाया देती है। तब यह पक्ष-सम्बन्धी क्रिया 'थोड़े उठने', या 'लेटी हुई स्थिति से उठकर बैठने' की छाया देती है, उदाहरणार्थ : सबसे छोटा सूर्यभानू चारपाई पर उठ बैठा (66, 137), यह सोचते हुए वह उठ बैठा, गजधर भी आग के पास पड़े हुए थे। कृष्णचन्द्र चुपके से उठे और गंगा-तट की ओर चले (73, 162), मुकाबला कीजिये—'वह उठकर बैठ गयी' (103, 53), और 'तू उठकर तो बैठ···' (103, 66)।

'बैठना' विशेषक क्रिया जब 'चढ़ना' क्रिया के साथ मिलती है तो अपना अर्थ सुरक्षित रखती है, उदाहरणार्थ : ···तो भूमि में धँसे हुए गन्ने के बेलन पर चढ़ बैठे और निकट ही पड़े वृक्षों के तने पर बैठ गये (75, 24-25), ···वह···मेरे सिर पर चढ़ बैठेगा (59, 19)।

(10) **'डालना' विशेषक क्रिया** जब क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से मिलती है तो अपना अर्थ खो बैठती है और मुख्य क्रिया को व्यापार की पूर्णता और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके मुँह पर उनके हृदय के समस्त भाव अंकित देख पड़ते थे (73, 170), उनके कानों में कुछ असाधारण शब्द सुन पड़े (4, 58)।

ये क्रियाएँ अपने इस अर्थ में 'दीख पड़ना' या 'सूझ पड़ना' जैसी अकर्मक भाववाचक क्रियाओं के समान हैं, उदाहरणार्थ : बस्ती दीख पड़ने लगी (90, 28), कोई उपाय न सूझ पड़ता था (69, 297)।

'पड़ना' विशेषक क्रिया जब 'आना' क्रिया के साथ मिलती है तो मुख्य क्रिया को नकारात्मक छाया प्रदान करती है, जिसका व्यापार, कुछ हद तक, अकस्मात प्रतीत होता है, उदाहरणार्थ : कुछ ऐसा ही काम आ पड़ा है (73, 158), समस्या ही ऐसी आ पड़ी है (73, 79)।

'पड़ना' विशेषक क्रिया जब 'बनना' क्रिया की क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से मिलती है तो व्यापार को करने की सम्भावना की छाया देती है, और प्रकार्य में 'पाना' सम्भाव्य क्रिया के निकट होती है या 'बनना' विशेषक क्रिया के निकट होती है अगर वह व्यापार के योग्यताबोधक पक्ष में आये, उदाहरणार्थ : जो बहुओं से बन पड़ता है बहुएँ करतीं···(142, 41), जितने रुपये हमसे बन पड़ेंगे, हम हर महीने भेज दिया करेंगे (1, 51)।

अविधेय रूपों में यह पक्ष-सम्बन्धी क्रिया कृदन्त, तुमर्थ क्रिया और सुपाइन के रूप में आती है, उदाहरणार्थ : छत पर से अचानक गिर पड़ने वाले आदमी के सामने सारी दुनिया···चक्कर लगा जाती है···(52, 19), जैसे वह टूट पड़ने के पहले बादल ने···श्वास खींचा था (103, 300), रावत को केवल आत्म-प्रवंचना जान पड़ने लगी (96, 83), पानी में कूद पड़ना ऐसा क्या कठिन है (73, 157)।

(8) **'उठना' विशेषक क्रिया**—व्यावहारिक तौर पर क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु के साथ मिलने से अपना अर्थ खो बैठती है, और मुख्य क्रिया को व्यापार की पूर्णता और परिणाम की छाया के साथ व्यापार की तात्कालिकता की छाया भी प्रदान करती है। 'उठना' क्रिया का यह गुण सबसे ज़्यादा स्पष्ट आन्तरिक दशा की क्रियाओं के साथ मिलने से प्रकट होता है, उदाहरणार्थ : वह चौंक उठीं (10, 203), कुँवर साहब का हृदय काँप उठा (59, 117), औरतें भय से चीख उठीं (103, 354), ···उसका दिल नाच उठा (75, 192), फिर कोई रो उठा (103, 210), ···ठण्डी गड़गड़ाती हँसी हँस उठी (103, 342)।

तात्कालिकता की छाया स्पष्टतः तब प्रकट होती है जब वह दूसरे शब्दार्थक वर्गों की क्रियाओं के साथ आती है, उदाहरणार्थ : कुत्ता ज़ोर से भौंक उठा (69, 182), पापी का घर जल उठा (103, 332), सफ़ेद-सफ़ेद दाँत चमक उठे (103, 351), ···दूसरे जहाज़ का भोंपू बज उठा (99, 23), गाँव में हल्ला मच उठा (103, 332)।

जैसा कि दिये गये उदाहरणों से विदित है, 'उठना' विशेषक क्रिया मुख्यतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकर्मक क्रियाओं के साथ मिलती है। सकर्मक क्रियाओं में से वह मुख्यतः उक्ति की क्रियाओं के साथ मिलती है, उदाहरणार्थ : बोल उठे···(69, 151), वह··· कह उठी (103, 248), जैसे वासना थी···पूछ उठी कि (103, 203)।

यह पक्ष-सम्बन्धी क्रिया अविधेय रूपों में लगभग नहीं आती, हालाँकि कुछ अकेले-दुकेले उदाहरण पाये जाते हैं : भड़क उठने वाले विमल दादा को इतनी तीखी बात पर गुस्सा नहीं आया (107, 151)।

(9) **'बैठना' विशेषक क्रिया**—क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु के साथ मिलने से अपने अर्थ को खो बैठती है और मुख्य क्रिया को व्यापार के परिणाम और पूर्णता की छाया के अलावा मुख्य व्यापार की तरफ़ नकारात्मक सम्बन्ध व्यक्त करती है जो कि वक्ता की इच्छा के बिना हो रहा है या वक्ता जिसे अवांछनीय समझता है, उदाहरणार्थ : ऐसा मत कर बैठना विमल, नहीं तो तुम माँ से कहीं ज़्यादा अत्याचार भाभी पर कर बैठोगे (59, 42), दुर्भाग्य से मैं एक नाग औरत को रख बैठी थी (36, 116), ···मैं अपना दिल तुझे दे बैठी (25, 68), ···एक नौजवान···उसकी नौजवान लड़की को छेड़ बैठा (75, 58), मुझसे शरारत करोगे तो मार बैठूँगा (65, 85), आगे बढ़कर पूछ ही तो बैठी···(103, 187), ···उसकी हिम्मत उसका साथ छोड़ बैठी (59, 16)।

'बैठना' क्रिया जब क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से जो 'उठना' क्रिया से बनती है, मिलती है तो व्यापार की तात्कालिकता की छाया देती है, उदाहरणार्थ : मफ़तलाल उठ बैठा (143, 16), एक क्षण के बाद वह उठ बैठा (66, 96), कजरी बैठी हुई कुछ सोच रही थी। आवाज़ सुनते ही चौंककर उठ बैठी (103, 191)।

कई बार जब 'बैठना' क्रिया 'उठना' क्रिया के साथ मिलती है तो मुख्य क्रिया के व्यापार की अपूर्णता की छाया देती है। तब यह पक्ष-सम्बन्धी क्रिया 'थोड़े उठने', या 'लेटी हुई स्थिति से उठकर बैठने' की छाया देती है, उदाहरणार्थ : सबसे छोटा सूर्यभानू चारपाई पर उठ बैठा (66, 137), यह सोचते हुए वह उठ बैठा, गजधर भी आग के पास पड़े हुए थे। कृष्णचन्द्र चुपके से उठे और गंगा-तट की ओर चले (73, 162), मुकाबला कीजिये—'वह उठकर बैठ गयी' (103, 53), और 'तू उठकर तो बैठ···' (103, 66)।

'बैठना' विशेषक क्रिया जब 'चढ़ना' क्रिया के साथ मिलती है तो अपना अर्थ सुरक्षित रखती है, उदाहरणार्थ : ···तो भूमि में धँसे हुए गन्ने के बेलन पर चढ़ बैठे और निकट ही पड़े वृक्षों के तने पर बैठ गये (75, 24-25), ···वह···मेरे सिर पर चढ़ बैठेगा (59, 19)।

(10) **'डालना' विशेषक क्रिया** जब क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से मिलती है तो अपना अर्थ खो बैठती है और मुख्य क्रिया को व्यापार की पूर्णता और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम की छाया के अलावा व्यापार की असीम अवधारणता की छाया प्रदान करती है, जो कि व्यावहारिक तौर पर पल भर में होता है। 'डालना' क्रिया इस प्रकार्य को सबसे ज़्यादा काल के पूर्णतावाची रूपों में पूर्णतः प्रकट करती है, उदाहरणार्थ : ···लेकिन 'बैंगन का पौधा' तो मैंने एक ही बैठक में लिख डाला (9, 20), ···उसी ने बच्चे को मार डाला (99, 99), उस छोटे सेठ की गर्दन तो मैंने मरोड़ डाली (75, 180), अपने प्यारे का सिर काट डाला (4, 207), ··· सड़कें, पुल, मार्ग सब तोड़ डाले (7, 69), और चेतन ने सारी कहानी अनन्त को सुना डाली (17, 32), ···उसने···कमरे का हर एक कोना-अटारा देख डाला (8, 23)।

'डालना' क्रिया का यही प्रकार्य सामान्य भविष्यत् काल में भी रहता है, उदाहरणार्थ : दरवाज़ा खोलो···नहीं तो तोड़ डालेंगे (75, 112), नहीं तो अभी काट डालूँगा (96, 50), ···वह अपना ईमान बेच डालेगा (69, 179), तुम मुझे पागल कर डालोगे ? (69, 204)।

'डालना' विशेषक क्रिया काल के अपूर्णतावाची रूपों में व्यापार के करने की तात्कालिकता की छाया प्रदान नहीं करती, उदाहरणार्थ : थोड़े से स्वार्थ के लिए भाई भाई की हत्या कर डालता है, बेटा बाप की हत्या कर डालता है (64, 26), ···वही दाँव, जिससे पहाड़ी लोग···पेड़ की मोटी डाल एक हाथ में काट डालते हैं (96, 49)।

जैसा कि उदाहरणों से विदित है, 'डालना' क्रिया सिर्फ़ सकर्मक क्रियाओं के साथ आती है।

अविधेय रूपों में यह पक्ष-सम्बन्धी क्रिया बहुत कम आती है और मुख्यतः तुमर्थ क्रिया के रूप में आती है। उदाहरणार्थ : वह एक दस्ती बम ले जाकर उनको मार डालने की बात सोचता है (116, 56)।

(11) **'निकलना' विशेषक क्रिया** जब क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से मिलती है तो अपना अर्थ व्यावहारिक तौर पर खो बैठती है, और मुख्य क्रिया को व्यापार की पूर्णता और परिणाम की छाया के अलावा व्यापार की तीव्र शुरुआत की छाया देती है। यह बात विशेषकर स्पष्टतः काल पूर्णतावाची रूपों में प्रकट होती है, उदाहरणार्थ : ···आँखों से आँसू बह निकले (142, 10), ···वह चोर-दरवाज़े से भाग निकला (2, 112), दुकान चल निकली (1, 125), पर अब तो मेरा यही नाम चल निकला है (8, 14), ···नगर-गाँव में हैज़ा फूट निकला (4, 227)।

जैसा कि दिये गये उदाहरणों से विदित है, 'निकलना' विशेषक क्रिया मुख्यतः दिशासूचक अकर्मक क्रिया के साथ मिलती है।

अविधेय रूपों में यह पक्ष-सम्बन्धी क्रिया बहुत कम आती है और ज़्यादातर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमर्थ क्रिया के रूप में आती है, उदाहरणार्थ : यहाँ से भाग निकलना तो असम्भव था (103, 438)।

(12) **'चलना' विशेषक क्रिया** जब क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से मिलती है तो कुछ हद तक अपना अर्थ सुरक्षित रखती है, और मुख्य क्रिया को व्यापार की पूर्णता और परिणाम की छाया के अलावा व्यापार की तीव्र शुरुआत या सातत्य की छाया भी देती है जो कि काल के पूर्णतावाची रूपों में विशेषकर स्पष्टतः प्रकट होती है, उदाहरणार्थ : नैकस भाग चला (103, 174), कार ठण्डी हवा को चीरती हुई दौड़ चली (96, 10), ···वह गन्तव्य स्थान की ओर उड़ चला (99, 11), क्योंकि सिर से खून की धारें बह चलीं (83, 15), गीत गुंजार बनकर डूब चले···(103, 241), ···आखिर जी में मरने की टंकार मेरे साथ लग चली (24, 129)।

'चलना' विशेषक क्रिया जब 'होना' क्रिया के साथ मिलती है तो सिर्फ़ व्यापार की पूर्णता या परिणाम की छाया प्रदान करती है, उदाहरणार्थ : वह जोश अब ठण्डा हो चला है (69, 86), काले बाल अब सफ़ेद हो चले (24, 8), तुरैया की बात पर अब मुझे विश्वास हो चला था (69, 203)।

जैसा कि दिये गये उदाहरणों से विदित है 'चलना' क्रिया मुख्यतः दिशासूचक या स्थानान्तर की अकर्मक क्रियाओं के साथ मिलती है। सकर्मक क्रियाओं में से सिर्फ़ 'लेना' ही से वह मिलती है। उदाहरणार्थ : ···मुझे उसी ओर ले चलें (69, 191), उसने झपटकर मुझे अपने पंजों में दबोचा और···ले चला घोंसले की तरफ़ (107, 29)।

यह पक्ष-सम्बन्धी क्रिया अविधेय रूपों में द्वितीय कृदन्त या तुमर्थ क्रिया के रूप में काफ़ी कम पायी जाती है, उदाहरणार्थ : क्षण-भर के लिए वे अपनी फूल चली साँस को दम लेने के लिए रुके···(59, 23), जड़ हो चली आँखों से वह···देखती रही···(59, 9), कैकेयी, भरत, मंत्री तथा गुरु आदि ने राम से घर लौट चलने की प्रार्थना की···(28, 89), तो यहाँ से क्या-क्या ले चलने को आवश्यकता होगी (73, 105)।

(13) **'मारना' विशेषक क्रिया** क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु के साथ मिलकर अपना अर्थ (क) सुरक्षित रख सकती है, और (ख) खो भी सकती है।

'मारना' क्रिया जब अपना अर्थ सुरक्षित रखती है तो मुख्य क्रिया को व्यापार के परिणाम या पूर्णता की छाया देती है, उदाहरणार्थ : पोघर ने खिसियाकर जूता खींच मारा (17, 76), ···इस अत्याचारी ने मुझ पर खड़ाऊँ फेंक मारी (69, 147), ···माँ ने मेरे किशोर गालों पर थप्पड़ दे मारा···(8, 77)।

'मारना' क्रिया अपना अर्थ खोकर व्यापार के परिणाम या पूर्णता की छाया के अलावा मुख्य क्रिया को नकारात्मक छाया देती है, उदाहरणार्थ : आपने अखबार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में यह क्या लिख मारा है ? (42, 82), मैंने भी देवीजी को दस मन अपशब्द कह मारे (76, 36)।

जैसा कि दिये गये उदाहरणों से विदित है, 'मारना' क्रिया सिर्फ़ सकर्मक क्रिया के साथ मिलती है।

(14) **'मरना' विशेषक क्रिया** जब क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से मिलती है तो बहुधा अपना अर्थ सुरक्षित रखती है और मुख्य क्रिया को व्यापार की पूर्णता तथा परिणाम की छाया प्रदान करती है, उदाहरणार्थ : ···जो प्रथम विश्वयुद्ध में गाजर-मूली की तरह कट मरे (142, 115), स्त्रियाँ अपनी मानरक्षा के लिए कभी-कभी सैकड़ों की संख्या में एक साथ जल मरती थीं (2, 85), वे···छोटी-छोटी बात पर लड़ मरते हैं (129, 72-73), इससे तो कहीं उत्तम यही है कि डूब मरूँ (73, 155)।

'मरना' विशेषक क्रिया जब 'आना' और 'जाना' क्रियाओं के साथ मिलती है तो मुख्य क्रिया को व्यापार की अवांछनीयता की छाया या हो चुके व्यापार के लिए क्षमा की छाया प्रदान करती है, उदाहरणार्थ: हाय मैं कहाँ आ मरी (96, 37)।

अविधेय रूपों में यह पक्ष-सम्बन्धी क्रिया बहुत कम आती है और मुख्यत: तुमर्थ क्रिया के रूप में आती है, उदाहरणार्थ : ···ऐसी अनजानी जगह आ मरने की अपनी मूर्खता पर पछताने लगा (96, 48), लोगों में क्रोध और जूझ मरने के भाव भरे हुए थे (4, 85), ···उनका जल मरना ठीक नहीं (25, 106), तुम्हें चुल्लू-भर पानी में डूब मरना चाहिए (73, 159)।

जैसा कि दिये गये उदाहरणों से विदित है 'मरना' विशेषक क्रिया सिर्फ़ अकर्मक क्रियाओं के साथ आती है जो कि मुख्यत: एक दशा से दूसरी दशा में परिवर्तन व्यक्त करती हैं।

(15) **'छोड़ना' विशेषक क्रिया** क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु के साथ मिलकर अपना अर्थ सुरक्षित रखती है और व्यापार के परिणाम और पूर्णता की छाया के साथ-साथ इस व्यापार से पूर्ण स्वतन्त्रता की भी छाया देती है। 'छोड़ना' क्रिया आम तौर पर 'रखना', 'लाना' सकर्मक क्रियाओं के साथ आती है और फिर ऐसा लगता है कि वह पक्ष-सम्बन्धी क्रिया और दो स्वतन्त्र पक्ष-रहित क्रियाओं के बीच का स्थान लेती है, उदाहरणार्थ : इसलिए इसके सूखे पत्ते को लोग अलमारियों या बक्सों में रख छोड़ते हैं (50, 125), अपनी गलती से कहानी का मसौदा उपन्यास में रख छोड़ा है (13, 182), ···छाया ने तुम्हें ऐसी जगह ला छोड़ा है··· (107, 22)।

(16) **'ले जाना' विशेषक क्रिया** क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से मिलकर अपना अर्थ (क) सुरक्षित रख सकती है, और (ख) खो भी सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ले जाना' क्रिया जब अपने अर्थ को सुरक्षित रखती है तो व्यापार के परिणाम और पूर्णता के साथ-साथ मुख्य व्यापार के स्थानान्तर की भी छाया देती है, उदाहरणार्थ : ···रत्तू की घरवाली को एक पंजाबी भगा ले गया (96, 52), वह ···भारी-से-भारी भैंस को खींच ले जाता है (150, 23), ···सिपाही उसे··· लड़ाई के मैदान से बाहर निकाल ले गया (2, 110), वह उसे इस रण-भूमि से हटा भी ले गये (69, 159), यह नट पहले चुरा ले गया था (103, 382)।

'ले जाना' अपना अर्थ खोकर, मुख्य क्रिया को व्यापार के परिणाम तथा पूर्णता के साथ-साथ इस व्यापार के सफलतापूर्वक पूरे होने की भी छाया देती है, उदाहरणार्थ : पर मैं होशियारी से अपनी हार को भी जीत में बदल ले गया (103, 37), कभी-कभी क्रोधित शेर हाथी पर भयंकर आक्रमण करता है और माथे से मांस नोच ले जाता है (150, 25), क्या आप उन लोगों को बाजी जीत ले जाने देंगे ? (69, 38), पिछले 14 वर्षों में तीन पश्चिमी तेल कम्पनियाँ··· 1048 करोड़ रुपये मार ले गयीं (IV, 12-11-1972), ···जो द्वार से बारात लौटा ले गये (73, 154)।

यहाँ 'ले जाना' क्रिया के साथ-साथ 'ले चलना' क्रिया भी विशेषक क्रिया के प्रकार्य में आ सकती है, उदाहरणार्थ···मुझे अपने साथ भगा ले चलो (75, 184), प्रभो, आज उठा ले चलो (73, 155), मुझे पकड़ ले चलो···(69, 189)।

'लाना' क्रिया विशेषक क्रिया और स्वतन्त्र क्रिया के बीच का स्थान रखती है जो अपना अर्थ स्वतन्त्र रखती है और 'ले जाना' क्रिया का पर्याय शब्द होती है, उदाहरणार्थ : एक दिन कोई महात्मा चेतू को पकड़ लाये (73, 8)—मुकाबला कीजिये, 'बड़ी मुश्किल से पकड़कर लायी हूँ' (103, 202), और 'पुलिस सबको पकड़कर ले जायेगी' (103, 194),—कजरी पत्थर बटोर लायी (103, 354), लौटी तो बटेर मार लायी (103, 205), एक डोल पानी खींच ला न कुएँ से (103, 237), उसे कन्धों में से भर लाया (103, 268)।

× × ×

एक ही क्रिया कई रंजक क्रियाओं के साथ मिल सकती है, यह इस पर निर्भर करता है कि एक क्रिया कितने अर्थ दे सकती है, या वक्ता (या लेखक) की इच्छा पर क्रिया को किस अर्थ की छाया देनी है।

सकर्मक क्रियाएँ, जो कि व्यापार की दिशा को स्पष्टतः व्यक्त नहीं करती विशेषक क्रियाओं 'लेना' और 'देना' से मिल सकती हैं। जब निजवाचक व्यापार को व्यक्त करना होता है तो वे 'लेना' क्रिया से मिलती हैं और जब व्यापार कर्म की ओर संकेत करता है या व्यापार कर्ता से दूर चला जाता है तो 'देना' के साथ मिलती हैं :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेना	देना
उसने दोनों हाथों से मुँह ढाँप लिया (4, 61),	उन्होंने···शवों को ढाँप दिया (4, 64),
तिलोत्तमा ने सुना तो सिर पीट लिया (69, 294),	···यों ही बच्चे को पीट दिया (7, 92),
···पेटियाँ बाँध लीजिये (99, 11)	और घाव पर पट्टी बाँध दी (4, 76),
बन्दूक की आवाज़ें सुनकर कानों पर हाथ रख लेती थी (69, 13),	इब्राहम की पीठ पर घोड़े ने टाप रख दी थी (69, 53),
मेरा भी नाम लिख लो (69, 77),	मैंने अपनी सारी जायदाद अपने भांजे जुम्मन के नाम लिख दी थी (69, 155),
उसे खींचकर अपने वक्ष पर डाल लिया (4, 194),	उसने अपने को चौला के गोद में डाल दिया (4, 207),
वर को साँप ने काट लिया (69, 291),	हमने इसी कूचे में उम्र कांट दी है (73, 60),
देवीजी ने रास्ता रोक लिया (69, 45)।	अब्दुल लतीफ़ ने घोड़ा रोक दिया (73, 60)।

क्रियाएँ जो व्यापार की दिशा को रखती हैं, मुख्यतः ऊपर उल्लेखित क्रियाओं में से एक से मिलती हैं :

'लेना' क्रिया के साथ 'पकड़ना', 'छीनना', 'खींचना', 'समझना', 'सुनना', 'पाना', 'अपनाना', 'हथियाना', 'लूटना' आदि क्रियाएँ मिलती हैं जिनमें व्यापार की स्पष्ट अभिव्यक्त आत्मार्थकता होती है, उदाहरणार्थ : दो सिपाहियों ने बढ़कर कोदई की बाँह पकड़ ली (69, 74), ···बन्दूक उसके हाथ से छीन ली (69, 178), इन लोगों ने···रस्सी खींच ली (69, 191), घोघाबापा के मंसूबे को उसने समझ लिया (4, 60), यदि तुमने उनकी बातें चुपचाप न सुनी ली होतीं ···(69, 88), ···इस बीच में चरखे ने खूब प्रचार पा लिया है (69, 96), ···वह स्वयं कई बार लूट लिया गया था (2, 78)।

'देना' क्रिया के साथ भी ऐसी क्रियाएँ मिलती हैं, जैसे, 'भेजना', 'फेंकना', 'छोड़ना', 'बेचना', 'भगाना', 'गिराना', 'सौंपना', 'पटकना' आदि, जो कर्ता की ओर से व्यापार का स्पष्टतः अभिव्यक्त झुकाव रखती हैं, उदाहरणार्थ : खुदा का हुक्म हमने तुझे भेज दिया (4, 47), उसने लाठी फेंक दी···(69, 68), ···जुम्मन पर अपना घर छोड़ देते थे (69, 159), ···जिसने अपने को स्वार्थ के हाथों बेच दिया (69, 71), स्कन्दगुप्त ने उसको भी हराकर भगा दिया (2, 68), तो क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ ने जान-बूझकर गिरा दिया ? (73, 95), चौधरी ने बोतल ज़मीन पर पटक दी (69, 37), ···लोगों को सूचनाएँ दे दी गयीं (99, 35)।

अकर्मक क्रियाएँ और कुछ सकर्मक क्रियाएँ जो वक्ता की ओर या वक्ता की ओर से व्यापार का स्पष्टतः अभिव्यक्त झुकाव नहीं रखतीं, 'आना' और 'जाना' विशेषक क्रियाओं से मिल सकती हैं। अगर व्यापार वक्ता की ओर संकेतित हो तो ये क्रियाएँ 'आना' क्रिया के साथ मिलती हैं, अगर वक्ता (लेखक) से हटकर जाता है तो वे 'जाना' क्रिया से मिलती हैं :

आना	जाना
नाश्ता करके जल्दी से बाहर निकल आया···(73, 96),	···कोठरी से बाहर निकल गया (7, 72),
जवान सैनिक गढ़ में घुस आये (4, 64),	वे तीनों··जंगल में घुस गये (103, 340),
प्रो. साहब चुप से लौट आये (69, 296),	दूत चुपचाप पीछे लौट गया (4, 59),
इतने में विट्ठलदास ऊपर से उतर आया (73, 94),	मुझे उतर जाने दीजिये (73, 60),
नाश्ता करके मैं पहले उठ आया (99, 24),	···बेग़म रशीद उठ गयीं···(7, 96),
···पत्नी बच्चे को उठाकर आया के पास छोड़ आयी···(7, 88),	···इसलिए हम अपना सारा सामान उसी में छोड़ गये (99, 25),
साईकल का लैम्प तो वह घर पर ही भूल आये हैं (7, 117),	···वह उन्हें एकदम भूल गया (7, 116),
नहीं, वचन दे आयी हूँ (73, 82)।	देखिये, वही औरत यह सोने की तावीज़ दे गयी है (69, 200)।

एक ही क्रिया का विभिन्न विशेषक क्रियाओं से मिलना व केवल व्यापार के झुकाव के साथ सम्बन्धित है, बल्कि व्यापार की भिन्न स्तर की पूर्णता से भी सम्बन्ध रखता है। सकर्मक क्रिया से बने क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु का 'डालना' विशेषक क्रिया के साथ मिलना 'देना' और 'लेना' विशेषक क्रियाओं की अपेक्षा व्यापार को पूरी तरह हो चुकने की छाया लेकर व्यापार की उच्चतर स्तर की पूर्णता ज़ाहिर करता है। जब शारीरिक प्रभाव की क्रियाएँ आती हैं तो उनको व्यापार को नीचे की ओर जाने की छाया प्रदान की जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देना	लेना	डालना
साहब ने उस पर लिख दिया…(69, 28),	सचिव ने डायरी में लिख लिया (143, 95),	हमने…एक मौलिक नाटक लिख डाला (142, 153),
…यों ही बच्चे को पीट दिया (7, 92),	तिलोत्तमा ने सुना तो सिर पीट लिया (69, 298),	…अपने प्यारे का सिर काट डाला (4, 207),
इन लोगों ने…ज़ख्मी बना दिया (69, 46),	…उनको ब्राह्मणों ने सहर्ष हिन्दू बना लिया (2, 91),	…जूता व्यापारियों ने बहुत जूते बना डाले (143, 71),
उन्होंने…पुल तोड़ दिया (4, 65),		…पुल, मार्ग सब तोड़ डाले (4, 69),
जान से मार दिया है? (75, 214),		…उसी ने बच्चे को मार डाला (99, 99),
…जिन्होंने अपने को स्वार्थ के हाथों वेच दिया (69, 21)।		अपने सारे शहर में मेरा नाम बेच डाला (73, 49),
	उन्होंने पुस्तक देख ली (69, 81),	…मैंने वे अमूल्य ग्रन्थ देख डाले हैं (5, 50),
	उसने बहुत-सी मिट्टी खोद ली (4, 214)।	…उसके गुण्डों ने… समूचे गर्भगृह खोद डाले (4, 189)।

अकर्मक क्रिया से बने क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु के साथ 'पड़ना' विशेषक क्रिया के मिलने से 'जाना' विशेषक क्रिया की अपेक्षा व्यापार की अधिक पूर्णता व्यक्त होती है, उसकी अन्त्य पूर्णता की छाया होती है, हालाँकि दोनों विशेषक क्रियाओं में अन्तर न्यूनतम होता है :

जाना	पड़ना
वे तीनों जंगल में घुस गये (102, 340),	वह सेना…महारण में घुस पड़ी (4, 233),
…तुर्क सवार…द्वार में धँस गये (4, 176),	वे…अमीर की सेना में धँस पड़े (4, 73-86),
…गाड़ी छूट गयी (73, 98),	बन्दूक भी हाथ से छूट पड़ी (69, 177),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूत चुपचाप पीछे लौट गया (4, 59),	तुरैया···लौट पड़ी (69, 197),
···कोठरी से बाहर निकल गया (7, 72)।	वह···घर से निकल पड़ा (69, 42)।

सकर्मक क्रिया से बनी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु जिसमें स्पष्टतः निजवाचक व्यापार अभिव्यक्त है, उसका 'लेना' के स्थान पर 'जाना' विशेषक क्रिया के साथ मिलन व्यापार के परिणाम तथा पूर्णता को बताता है और व्यापार की आत्मार्थकता तब थोड़ी प्रकट होती है :

लेना	जाना
कदाचित् मैं विष खा लेता (69, 84),	प्यारी फिर चोट खा गयी (103, 185),
सबने जान लिया कि···(5, 11),	शायद तो किसी प्रकार जान गये हों कि···(75, 117),
घोघाबापा के मंसूबे को उसने समझ लिया (4, 60),	दोनों समझ गये कि···(96, 71),
···इस बीच चरखे ने खूब प्रचार पा लिया है (69, 96)।	अब मैं घर के कुछ काम-काज से छुट्टी पा गयी (69, 86)।

इस तरह व्यापार की विभिन्न छायाओं को व्यक्त करने के लिए विशेषकर उसकी पूर्णता, परिणाम, दिशा की दृष्टि से कुछ क्रियाओं की क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातुएँ चार या ज़्यादा विशेषक क्रियाओं से मिल सकती हैं।

इस तरह 'होना' क्रिया से बनी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु आठ विशेषक क्रियाओं से मिलती है : (1) 'जाना' क्रिया के साथ—इन दिनों खम्भात में बहुत भीड़ हो गयी थी (4, 91); (2) 'आना' क्रिया के साथ—···उन्हें घटना का स्मरण हो आया (4, 170); (3) 'उठना' क्रिया के साथ—लज्जा हो उठी (69, 95); (4) 'बैठना' क्रिया के साथ—अन्त में शान्त मौन हो बैठा! (4, 176); (5) 'चलना' क्रिया के साथ—···द्वार अब टूटा, अब टूटा हो चला था (4, 176); (6) 'लेना' क्रिया के साथ—बच्चू भी उनके साथ हो लिया था (169, 285); (7) 'रहना' क्रिया के साथ—बच्चे···चुप हो रहे (103, 293); (8) 'पड़ना' क्रिया के साथ—बात हो पड़ी कि···(44, 42)।

'करना' क्रिया से बनी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु पाँच विशेषक क्रियाओं से मिल सकती है : (1) 'देना' क्रिया के साथ—दौलत खाँ ने अपने आपको दिल्ली का शासक घोषित कर दिया (2, 148); (2) 'लेना' क्रिया के साथ—उसने प्रायः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारा पंजाब अपने वश में कर लिया (2, 141); (3) 'डालना' क्रिया के साथ—उसने अपनी सेना के कुल तीन भाग कर डाले (4, 72); (4) 'जाना' क्रिया के साथ—अब उसे लगा कि वह गलती कर गया···(103, 226); (5) 'बैठना' क्रिया के साथ—कोई गड़बड़ तो नहीं कर बैठा (103, 279)।

'देना' क्रिया से बनी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु छः विशेषक क्रियाओं से मिल सकती है : (1) 'देना' क्रिया के साथ—उसने किस तरह सब कुछ दे दिया है (96, 23); (2) 'डालना' क्रिया के साथ—···मौलू ने एक अश्लील गाली अपनी लड़की को दे डाली (7, 22); (3) 'मारना' क्रिया के साथ—तभी तीसरे आदमी ने उसे पटक के दे मारा (103, 291); (4) 'रखना' क्रिया के साथ—उसने आज्ञा दे रखी थी कि···(12, 48); (5) 'जाना' किया के साथ—देखिए वही औरत यह सोने की तावीज़ दे गयी थी (69, 200); (6) 'आना' क्रिया के साथ—नहीं, वचन दे आयी हूँ (73, 82)।

'रोना' क्रिया से बनी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु पाँच विशेषक क्रियाओं से मिल सकती है : (1) 'देना' क्रिया के साथ—वह भी रो दिया (103, 490); (2) 'पड़ना' क्रिया के साथ—वह रो पड़ी (103, 75); (3) 'उठना' क्रिया के साथ—नौकरानी रो उठी (116, 127); (4) 'लेना' क्रिया के साथ—रो ले री, रो ले (103, 75); (5) 'आना' क्रिया के साथ—अपनी विपत्ति से सबके आगे रो आयी (69, 154)।

'कहना' क्रिया से बनी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु छः विशेषक क्रियाओं से मिल सकती है : (1) 'देना' क्रिया के साथ—पिताजी ने साफ़ कह दिया है कि···(143, 32); (2) 'उठना' क्रिया के साथ—वह कह उठी (103, 248); (3) 'डालना' क्रिया के साथ—आज मैंने निश्चय कर लिया है कि कह ही डालूँ (69, 93); (4) 'जाना' क्रिया के साथ—आज डाक्टर जाने क्या कह गया ! (116, 116); (5) 'मारना' क्रिया के साथ—मैंने भी···देवी जी को दस मन अपशब्द कह मारे (73, 36); (6) 'बैठना' क्रिया के साथ—जिसमें वह माता को कुछ कह न बैठे (73, 102)।

'बोलना' क्रिया से बनी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु चार विशेषक क्रियाओं से मिल सकती है : (1) 'उठना' क्रिया के साथ—मफ़तलाल बोल उठा···(143, 37); (2) 'देना' क्रिया के साथ—···उसने···धावा बोल दिया (4, 232); (3) 'लेना' क्रिया के साथ—अंग्रेज़ी मज़े में बोल लेती थी (99, 22); (4) 'जाना' क्रिया के साथ—और इस पर भी तुम्हारी पिद्दी बोल गयी (75, 85)।

'देखना' क्रिया से बनी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु चार विशेषक क्रियाओं से मिल सकती है : (1) 'लेना' क्रिया के साथ—उन्होंने पुस्तक देख ली (69, 81);

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) 'डालना' क्रिया के साथ—···मैंने वे अमूल्य ग्रन्थ देख डाले हैं (5, 50); (3) 'रखना' क्रिया के साथ—मैंने यह नाटक देख रखा है (142, 42); (4) 'पड़ना' क्रिया के साथ—बाबूजी सन्तुष्ट देख पड़ते हैं (69, 95)।

'चलना' क्रिया से बनी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु चार विशेषक क्रियाओं से मिल सकती है : (1) 'देना' क्रिया के साथ—मैं तुरैया के साथ चल दिया (69, 196); (2) 'पड़ना' क्रिया के साथ—हातिम···कोहकाफ़ की तरफ़ चल पड़ा (25, 69); (3) 'निकलना' क्रिया के साथ—दुकान चल निकली (1, 125); (4) 'जाना' क्रिया के साथ—हैदराबाद में उर्दू से काम चल गया (99, 103)।

'लौटना' क्रिया से बनी क्रियविशेषणात्मक कृदन्त-धातु चार विशेषक क्रियाओं से मिल सकती है : (1) 'जाना' क्रिया के साथ—दूत चुपचाप पीछे लौट गया (4, 59); (2) 'आना' क्रिया के साथ—प्रो. साहब चुपके से लौट आये (69, 296); (3) 'चलना' क्रिया के साथ—अमीर के सैनिक लौट चले (4, 235); (4) 'पड़ना' क्रिया के साथ— तुरैया···लौट पड़ी (69, 197)।

'भागना' क्रिया से बनी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु चार विशेषक क्रियाओं से मिल सकती है : (1) 'जाना' क्रिया के साथ—राजा···भाग गया (4, 52); (2) 'आना' क्रिया के साथ—कच्चा-पक्का खाना बनाकर फिर भाग आती···(73, 28); (3) 'चलना' क्रिया के साथ—नैकस भाग चला (103, 174); (4) 'निकलना' क्रिया के साथ—एक दिन चुपके से भाग निकले (67, 97)।

'बनाना' क्रिया से बनी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु चार विशेषक क्रियाओं से मिल सकती है : (1) 'देना' क्रिया के साथ—इन लोगों ने···ज़ख्मी बना दिया (69, 40); (2) 'लेना' क्रिया के साथ—उनको ब्राह्मणों ने सहर्ष हिन्दू बना लिया (2, 91); (3) 'डालना' क्रिया के साथ—···जूता-व्यापारियों ने बहुत जूते बना डाले (173, 71); (4) 'रखना' क्रिया के साथ—कारीगरों ने भी अपने गान बना रखे थे (2, 57)।

'लिखना' क्रिया से बनी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु चार विशेषक क्रियाओं से मिल सकती है : (1) 'लेना' क्रिया के साथ— सचिव ने डायरी में लिख लिया (143, 95); (2) 'देना' क्रिया के साथ—साहब ने ऊपर लिख दिया··· (69, 28); (3) 'डालना' क्रिया के साथ—हमने···मौलिक नाटक लिख डाला ···(142, 153); (4) 'मारना' क्रिया के साथ—आपने अखबार में यह क्या लिख मारा है ? (142, 82)।

'रखना' क्रिया से बनी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु चार विशेषक क्रियाओं के साथ मिल सकती है : (1) 'देना' क्रिया के साथ—इब्राहीम की पीठ पर घोड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने टाप रख दी थी (69, 53); (2) 'लेना' क्रिया के साथ—बन्दूक की आवाज़ें सुनकर कानों पर हाथ रख लेती थी (69, 13); (3) 'रखना' क्रिया के साथ—कपड़ों के ढेर के नीचे मिस पाल ने अपने बनाये हुए खाके रख रखे हैं (52, 137); (4) 'बैठना' क्रिया के साथ—दुर्भाग्य से मैं एक नाग औरत को नौकर रख बैठी थी (36, 166)।

'मारना' क्रिया से बनी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु चार विशेषक क्रियाओं के साथ मिल सकती है : (1) 'डालना' क्रिया के साथ—कल मैं मार डाला जाऊँगा (69, 194); (2) 'देना' क्रिया के साथ—-जान से ही मार दिया है ? (75, 214); (3) 'बैठना' क्रिया के साथ—मुझसे शरारत करोगे तो मार बैठूँगा (65, 85); (4) 'लेना' क्रिया के साथ—···ये शेर को तो मार ही लेते हैं (150, 48)।

(11) व्यापार का निश्चयबोधक पक्ष

यह पक्ष विश्लेषणात्मक क्रियाओं से व्यक्त होता है, जो कि सरल द्वितीय क्रियाविशेषण कृदन्त (आम तौर पर सकर्मक क्रियाओं से बने) और 'देना', 'लेना', 'डालना' विशेषक क्रियाओं के मिलन से बनती हैं, और ये आम तौर पर पुरुष-वाचक रचनाओं में आती हैं। 'देना', 'लेना', 'डालना' क्रियाएँ काल-प्रक्रिया की अपूर्ण रूपतालिका को रखती हैं : वे वर्तमान तथा भूतकाल के अपूर्णतावाची और संतत रूपों में आती हैं।

ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ उन क्रियाओं से मिलती हैं जो कि व्यापार के अवधारणबोधक पक्ष को व्यक्त करती हैं, लेकिन इन दोनों में भिन्नता यह है कि एक तरफ़ तो वे निकट भविष्य में होने वाले व्यापार की अवश्यम्भावी कार्यान्विति की ओर संकेत देती हैं, और दूसरी तरफ़ घटमान व्यापार की नित्यता और अपूर्णता बताती हैं, जो भूतकाल में शुरू हो चुका था और अभी भी जारी है।

व्यापार जो कि निकट भविष्य में होगा उसको व्यक्त करते समय, उल्लेखित विशेषक क्रियाएँ वर्तमान काल के अपूर्णतावाची और संतत रूपों में आती हैं, उदाहरणार्थ : अभी नहीं किया तो एक क्षण में किये लेता हूँ (65, 174), सादे लिफ़ाफ़े और पैड आपको दिये दे रहा हूँ (59, 114), बैठने की जगह मैं अभी बनाये देती हूँ (52, 137), अरे ठहरो, मैं पकड़े लेता हूँ, ज़रा कुर्ता उतार लूँ (75, 137), ···मैं कल ही···साइनबोर्ड बनवाये डालता हूँ (1, 157)।

व्यापार की नित्यता और अपूर्णता को व्यक्त करते हुए ये विशेषक क्रियाएँ वर्तमान तथा भूतकाल के अपूर्णतावाची तथा संतत रूपों में आती हैं, उदाहरणार्थ : ···यह पथ्य मुझे मारे डालता है (63, 188), ···एक भारी बड़ा पत्थर मेरे सीने को दबोचे डाल रहा है (80, 77), चिन्ता और ग्लानि उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय को कुचले डालती थी (65, 27), ···लेकिन तुम अभी से चेतावनी दिये देती हो (65, 185), फाँसी लगेगी कहे देती हूँ···(147, 92), मेंढकों की भैरव···उस एकान्त को अत्यन्त शब्दपूर्ण किये दे रही थी (69, 78), वायु की यह शीतलता जो सैकड़ों मुसाफ़िरों के प्राण खींचे ले रही है, सेठी को फुर्ती दे रही थी (69, 7), ···लेकिन एक ताक़त थी जो मुझे उस तरफ़ खींचे लिए जा रही थी (31, 113-114)।

जैसा कि दिये गये उदाहरणों से विदित है, निकट भविष्य के अर्थ में अकसर 'लेना' और 'देना' क्रियाएँ ही आती हैं और नित्यता तथा अपूर्णता के अर्थ में 'डालना' क्रिया आती है।

'देना' और 'लेना' विशेषक क्रियाएँ व्यापार के इस पक्ष में वही भिन्नता सुरक्षित रखती हैं जो कि व्यापार का अवधारणबोधक पक्ष रखता है, हालाँकि यहाँ यह भिन्नता कम स्पष्ट होती है, उदाहरणार्थ : '···मैं अभी सारे बर्तनों को साफ़ किये देती हूँ' (59, 36), और '···मैं तब तक इन बर्तनों को साफ़ किये लेती हूँ' (59, 36)।

(12) व्यापार का योग्यताबोधक पक्ष

व्यापार के इस पक्ष को उन विश्लेषणात्मक क्रियाओं से व्यक्त करते हैं जो कि सरल प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त और 'बनना' विशेषक क्रिया के साथ मिलने से बनती हैं और सिर्फ़ पुरुषवाचक रचनाओं में आती हैं। इन पक्ष-सम्बन्धी क्रियाओं का व्यापार का कर्ता यहाँ हमेशा परसर्गीय अप्रत्यक्ष कारक में प्रयोग में आता है जो 'से' और 'को' परसर्ग से आता है, इसलिए 'बनना' क्रिया की काल-प्रक्रिया की अपूर्ण रूपतालिका होती है, चूँकि वह व्यापार के कर्म के साथ समानाश्रित होती है, जो कि वाक्य का उद्देश्य होता है और जब उद्देश्य नहीं होता तो भाववाचक रचना में आती है। 'बनना' क्रिया इन कारणों से हालाँकि व्यावहारिक तौर पर लगभग सभी नियमित काल रूपों में प्रयोग होती है, वह विशेषकर सिर्फ़ कर्म-सम्बन्धी रचना में एकवचन तथा बहुवचन अन्य पुरुष में और भाववाचक रचना में एकवचन अन्य पुरुष में ही आती है।

ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ कर्ता के व्यापार होने की गुप्त सम्भावना को व्यक्त करती हैं और निषेधात्मक वाक्यों में कर्ता के व्यापार होने की गुप्त असम्भावना को व्यक्त करती हैं। ये क्रियाएँ व्यापार को करने की विवश आवश्यकता की ओर कम ही संकेत देती हैं।

जब व्यापार करने की गुप्त सम्भावना (असम्भावना) व्यक्त होती है तो व्यापार का कर्ता 'से' परसर्ग के साथ आता है, उदाहरणार्थ : साले और ससुर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो भी करते बना उन्होंने किया (83, 43), तुमसे अदा करते नहीं बनता (51, 94), ···घूर लेंगे जितना उनसे घूरते बनेगा (66, 138), ब्रजनाथ से कोई जवाब न देते बन पड़ा (68, 130), ···जितना खाते बने खाओ (73, 224)।

जब वाक्य में कर्ता नहीं होता तब आम तौर पर वाक्य का उद्देश्य होता है, उदाहरणार्थ : लेकिन ये दोनों बातें करते न बन पड़ीं (142, 52), ···जितना परिश्रम करते बनता है, करता हूँ (95, 78), ···पर आपकी बात नहीं टालते बनती (65, 60)।

व्यापार का कर्ता 'को' परसर्ग के साथ आता है जब व्यापार के करने की विवश आवश्यकता व्यक्त होती है, उदाहरणार्थ : उसे क्लर्क को छुट्टी देते ही बनी (32, 116), उसकी डाँट खाकर बुढ़िया को वहाँ से हटते ही बना (58, 77), ···यदि वे लड़ भी पड़ें तो उन्हें भागते ही बनेगी (75, 168)।

बहुत कम स्थितियों में इस रचना में प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त की जगह सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त आता है, उदाहरणार्थ : ज़िन्दा से अब कुछ कहे न बन आता था (75, 146)।

(13) व्यापार का इच्छाबोधक पक्ष

व्यापार का यह पक्ष विश्लेषणात्मक क्रियाओं द्वारा व्यक्त होता है, जो कि 'चाहना' विशेषक क्रिया के साथ सरल द्वितीय कृदन्त की समाकार कृदन्तपरक संज्ञा से मिलकर बनती हैं, और सिर्फ़ पुरुषवाचक रचनाओं में आती हैं। 'चाहना' क्रिया की काल-प्रक्रिया की अपूर्ण रूपतालिका होती है : वह मुख्यतः वर्तमान तथा भूतकाल के अपूर्णतावाची रूपों में आती है।

ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ इस बात का संकेत देती हैं कि व्यापार निकट भविष्य में होना चाहिए था, उसके होने की इच्छा है, उदाहरणार्थ : बुढ़िया···औंधे मुँह गिरा चाहती थी कि कोदई ने लपककर उसे सम्भाल लिया (69, 73), राम··· घर से निकला ही चाहता था कि जालपा आयी (65, 115), ···समझ गयी कि आग भड़का ही चाहती है···(73, 24), दर्शकों ने देखा कि जयराम पर मार पड़ा चाहता है (69, 40)।

जब व्यापार को करने की इच्छा व्यक्त करते हैं तो 'चाहना' क्रिया मुख्यतः वर्तमान काल के अपूर्णतवाची रूप में आती है, उदाहरणार्थ : बसरे का सफ़र किया चाहता हूँ (24, 41), क्या तुम एक सम्भ्रान्त वर की महिला का सर्वनाश किया चाहते हो ? (5, 63), ···अब तू जान-बूझकर कुएँ में गिरा चाहता है तो तेरी मर्ज़ी (24, 142)। यहाँ भूतकाल के अपूर्णतावाची और संतत रूप कम ही आते हैं, उदाहरणार्थ : देवप्रकाश उससे यही कहलाया चाहते थे कि पहले सत्यप्रकाश का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह करना उचित है···(70, 88), यह महत्वाकांक्षी विद्वान राजा सिंघनाद के मुहाने तक समुद्र को छूता हुआ अपना साम्राज्य स्थापित किया चाह रहा था (4, 88)।

(14) व्यापार का गुणार्थक पक्ष

व्यापार का यह पक्ष विश्लेषणात्मक क्रियाओं द्वारा व्यक्त होता है जो कि सकर्मक क्रिया के सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त तथा एकमूलीय अकर्मक क्रिया के मेल से बनती हैं और सिर्फ़ पुरुषवाचक रचनाओं में आती हैं। विशेषक क्रिया की काल-प्रक्रिया की पूर्ण रूपतालिका होती है परन्तु यह अकसर वर्तमान तथा भूतकाल (कम) के अपूर्णतावाची रूपों में आती है।

ये पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ हमेशा निषेधात्मक वाक्यों में आती हैं और उस अभ्यासबोधक व्यापार को व्यक्त करती हैं जो कि उसकी कार्यान्विति के सब प्रयत्नों के बावजूद पूर्ण नहीं हो सकता, उदाहरणार्थ : लेकिन उस तरह की वारदातें छिपाये नहीं छिपती हैं (83, 115), यह···इतनी बड़ी पहेली है कि सुलझाये नहीं सुलझती (20, 137), बोरा बहुत भारी था, उठाये न उठा (80, 39), क्रोध सम्भाले नहीं सम्भलता (142, 10), उस गाय की याद तो अलग हटाये नहीं हटती (116, 97)।

द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त का कर्ता व्यक्त हो सकता है : (क) संज्ञाओं या सार्वनामिक संज्ञा से जिसके साथ 'से' परसर्ग आता है, उदाहरणार्थ : वह दिन उससे काटे नहीं कटता (5, 44), सोना तो यों ही पड़ा है कि उससे उठाये न उठा (103, 105); (ख) 'के' परसर्ग के साथ संज्ञा से, उदाहरणार्थ : ईश्वर के बचाये भी नहीं बचते (51, 78), ···रंजा भाइयों के मनाये नहीं मानता···(140, 18); (ग) सम्बन्धवाचक सार्वनामिक विशेषण द्वारा, उदाहरणार्थ : जो भाव मन में है उसके लिए संज्ञा मेरे जुटाये जुटती नहीं (44, 125), साड़ी की चुन्नट गरारा-सा बनकर हवा में उड़ रही थी और हमारे सम्भाले नहीं सम्भल रही थी (123, 11)।

बहुत ही कम स्थितियों में इन पक्ष-सम्बन्धी क्रियाओं के सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त के स्थान पर सरल द्वितीय कृदन्त आते हैं, उदाहरणार्थ : ऐसा बन्धन है जो उखाड़े नहीं उखड़ता (31, 23)।

(15) व्यापार के मिश्रित पक्ष

व्यापार के मिश्रित पक्ष अन्य (तीसरे) विशेषक क्रिया द्वारा व्यक्त होते हैं जो पक्ष-सम्बन्धी क्रिया के साथ मिलकर व्यापार के एक और अतिरिक्त पहलू को बताती है। अन्य विशेषक क्रिया के तौर पर व्यापार के सम्भाव्य, अभ्यासबोधक और घटमान-पूर्णपरिणामी पक्ष की क्रियाएँ होती हैं तथा व्यापार के अवधारण-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोधक पक्ष की विशेषक क्रियाएँ भी हो सकती हैं जो कि ऊपर बयान की गयी विशेषक क्रियाओं के विपरीत मुख्य क्रिया तथा विशेषक क्रिया दोनों से मिल सकती हैं। इस तरह व्यापार के मिश्रित पक्षों को संरचनात्मक तौर पर इस जैसे बता सकते हैं : (मुख्य क्रिया + विशेषक क्रिया) + विशेषक क्रिया; मुख्य क्रिया + विशेषक क्रिया + विशेषक क्रिया)। आइये, अब क्रमशः इन बहुघटकीय रचनाओं का अध्ययन करें :

(1) अन्य क्रिया—व्यापार के सम्भाव्य पक्ष की विशेषक क्रिया—···इच्छा को मैं कैसे रोके रख पाया···(108, 53), और राजकन्या क्या सचमुच खूब-खूब खेलती रह सकी ? (44, 10), बिलकुल मुमकिन है कि मुख्यमन्त्री उस पद पर चिपके रह सकना मुश्किल पायें (IV, 17-6-1973);

(2) अन्य क्रिया—व्यापार के अभ्यासबोधक पक्ष की विशेषक क्रिया : कभी-कभी मिलते रहा करो हेम (112, 38), मैं थोड़ी देर बैठी रहा करूँगी··· (65, 239), तुम माँ को मार-पीटकर उसके गहने छीन ले दिया करते थे, उन्हें जुए या शराब में फूँक डाला करता होगा (107, 15)।

(3) अन्य क्रिया—व्यापार के घटमान-पूर्णपरिणामी पक्ष की विशेषक क्रिया—वे उस औरत को किसी गाँव से पकड़े लिये जा रहे थे (54, 37), माता ने उसको और भी चिमटा लिया, मानो कोई उसके हाथ से उसे छीने लिये जाता था (66, 145), इन लेडियों की रीति-नीति में एक आकर्षक शक्ति थी जो मुझे खींचे लिये जाती थी (69, 37)।

(4) पक्ष-सम्बन्धी क्रिया के घटकों में से एक व्यापार के अवधारणबोधक पक्ष की विशेषक क्रिया से जटिल हो जाता है—कुम्हार घर छोड़कर भाग जाया करता था (69, 55), ब्रजनाथ से कोई जवाब न देते बन पड़ा (69, 130)।

आधुनिक हिन्दी में जब व्यापार के पक्ष की श्रेणियों का निचोड़ रखते हैं तो यह कहना उचित होगा कि कुछ विशेषक क्रियाएँ अपने द्रव्यवाचक अर्थों को पूर्णतः नहीं खोतीं और सम्पूर्ण विश्लेषणात्मक पक्ष-सम्बन्धी क्रिया अपने स्वतन्त्र शब्द-समुदाय के साथ, जिससे वे बनती हैं, स्पष्ट आनुवंशिक सम्बन्ध रखती हैं। परिणामस्वरूप आधुनिक हिन्दी में ऐसी रचनाएँ मिलती हैं, जो कि संरचनात्मक तौर पर विश्लेषणात्मक पक्ष-सम्बन्धी क्रियाओं के समान होती हैं, जो दूसरे घटक के द्रव्यवाचक अर्थ को पूर्णतः सुरक्षित रखती हैं। यही कारण है कि उनको स्वतन्त्र वाक्यात्मक शब्द-समुदायों (वाक्यांशों) की तरह देख सकते हैं।

'कृन्दत' + 'आना' रचनाएँ दूसरे घटक की अधिकतम स्वतन्त्रता में भिन्न होती है। यह बात निम्नलिखित उदाहरणों से प्रमाणित होती है : जो कभी नकदी के रूप में आते हैं, कभी आभूषणों के रूप में आते हैं, कभी मकान, दुकान या ज़मीन के रूप में आते हैं, जो कभी रोते आते हैं, गिड़गिड़ाते आते हैं, पैर पकड़ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आते हैं, पर आते रहते हैं (161, 28), बहुत से आँसू आते हैं। वे झड़ी लगाये आते हैं और बाढ़ की तरह उमड़ते आते हैं (151, 64), ···लच्छमा को साथ ही लेते आये (17, 118)।

दूसरे घटक में कम स्वतन्त्रता उस रचना की होती है, जिसमें कृदन्त+'जाना' आता है, चूँकि 'जाना' क्रिया बहुत-सी स्थितियों में अपने द्रव्यवाचक अर्थ को खो बैठती है, किन्तु ऐसा भी होता है कि द्रव्यवाचक अर्थ सुरक्षित रहता है, उदाहरणार्थ: ···बाबूजी ने हेमी की ड्यूटी लगा दी कि वह यूनिवर्सिटी जाता हुआ रास्ते में हमें छोड़ता जाये (13, 17), दिल्ली तक सोता गया था (12, 30), इसे घर लेते जाइये (59, 21)।

'पड़ना' क्रिया भी अपने द्रव्यवाचक अर्थ को सुरक्षित रख सकती है, जब वह 'कृदन्त'+'पड़ना' के दूसरे घटक की हैसियत से आती है, उदाहरणार्थ : ···किवाड़ों के बीच में ठेकेदार की देह बिंधी पड़ी थी (69, 64), ···पेड़ गिरा पड़ा था (17, 235), ···कोठरी में खून से भीगा हुआ माधो मरा पड़ा था (102, 132)।

'चाहना' क्रिया भी अपने द्रव्यवाचक अर्थ को सुरक्षित रखती है जो कि कृदन्तपरक संज्ञा के साथ की रचना में आती है और उस व्यापार के करने की इच्छा व्यक्त करती है, जो कृदन्तपरक संज्ञा द्वारा व्यक्त होता है। यह रचनाएँ विश्लेषणात्मक पक्ष-सम्बन्धी क्रियाओं और स्वतन्त्र वाक्यात्मक पदबन्ध के बीच का स्थान रखती हैं चूँकि कृदन्तपरक संज्ञा आधुनिक हिन्दी में अपने आप प्रयोग नहीं हो सकती। यह हमेशा विशेषक क्रिया के साथ आती है जो कि पूर्णतया अपने द्रव्यवाचक अर्थ को खो बैठती है ('करना' विशेषक क्रिया व्यापार के अभ्यास-बोधक पक्ष में) और अपने अर्थ को आंशिक रूप से सुरक्षित रखती है ('चाहना' विशेषक क्रिया जब किसी व्यापार को करने की इच्छा व्यापार के इच्छाबोधक पक्ष में व्यक्त करते हैं), उदाहरणार्थ : ···हम मित्रता किया चाहते हैं (4, 9), तलवार खींचकर सिर पर आ पहुँचा चाहता था कि हमला करे···(24, 33)।

जब घटकों का स्थानीय विभाजन होता है तो उनकी स्वतन्त्रता अर्थात् दोनों घटकों द्वारा अपने द्रव्यवाचक अर्थ को सुरक्षित रखना पूर्ण रहता है, उदाहरणार्थ : बीच आसमान में लटकता मैं चला जा रहा था (107, 28), बस, सिरकी, काँस-पतवार पानी में बड़ी तेज़ी के साथ भागते भँवरों में नाचते आगे बढ़े चले जा रहे हैं (1, 251)।

घटकों की पूर्ण स्वतन्त्रता उन शब्द-समुदायों द्वारा वर्णित होती है जो कि 'जाना' और 'आना' क्रियाओं की क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु तथा कुछ दूसरी क्रियाओं के मेल से बनते हैं। ऐसे शब्द-समुदायों के बारे में पहले ही उल्लेख हो चुका है जब व्यापार के अवधारणबोधक पक्ष के बारे में बताया गया था। यहाँ, इसीलिए सिर्फ़ ऐसे शब्द-समुदायों के दूसरे घटकों को गिनवाएँगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आना' और 'जाना' क्रियाओं के साथ अकर्मक क्रियाओं में से मिलती हैं :

(1) 'पहुँचना' क्रिया—···वे···साहब को सलाम करने आ पहुँचे (7, 54), आज ही वह अपने अफ़सर के यहाँ हाज़िरी देने जा पहुँचा था (1, 33);

(2) 'जमना' क्रिया—···राजपूत योद्धा भी···अपने-अपने मोर्चों पर जा जमे···धीरे-धीरे अमीर की सेना का सारा भार मध्य द्वार पर आ जमा (4, 152);

(3) 'बैठना' क्रिया—···सेठजी आ जाते, ज़ोहरा के पास जा बैठते (7, 87), ···अपनी पत्नी के साथ आ बैठा (7, 23);

(4) 'टिकना' क्रिया—उसकी दृष्टि···उसके पाँवों पर आ टिकी (7, 45), क्षण-भर में ही दृष्टि···नीचे मैदानों पर जा टिकती है (161, 54);

(5) 'डटना' क्रिया—लोग···निर्धारित मोर्चों पर जा डटे (4, 132);

(6) 'डूबना' क्रिया—वह गीत न जाने विस्मृति के किस गर्त में जा डूबा था (7, 125);

(7) 'रहना' क्रिया—···तुम यहाँ रहोगे, तो हम वहाँ जा रहेंगे (107, 47);

(8) 'धमकना' क्रिया—वे सिंह की भाँति घोड़ा उड़ाते अमीर के सम्मुख जा धमके (4, 77), जूनागढ़ के राव···पटना में आ धमके (4, 100);

(9) 'मिलना' क्रिया—महाराज···उनसे जा मिले हैं (4, 195), ···साठ हज़ार सैन्य···उससे आ मिले (4, 248);

(10) 'लगना' क्रिया—मैं अपने अधूरे चित्र पर जा लगा (116, 121), ···एक पत्थर उसकी छाती में आ लगा (4, 76);

(11) 'गिरना' क्रिया—···तुर्क के साथ दद्दा भी खाई में जा गिरे (4, 175), ···सिर काटकर उसके चरणों में आ गिरा (4, 206);

(12) 'जुटना' क्रिया—···सैनिक···महाराज के चारों ओर आ जुटे (4, 82);

(13) 'चढ़ना' क्रिया—···अमीर के कन्धे पर जा चढ़ा (4, 202);

(14) 'रुकना' क्रिया—···सन्दानी सुरसागर के तीर पर जा रुकी (4, 246);

(15) 'लेटना' क्रिया—···उसकी इच्छा हो रही थी कि···बिस्तर में जा लेटे (7, 89), यही लड़की स्वप्न में उसके साथ आ लेटी थी (7, 69);

(16) 'टकराना' क्रिया—···उसका सिर ऊपर छत पर जा टकराया (7, 167);

(17) 'पड़ना' क्रिया—इस बात की भनक ज़िंदों के कान में जा पड़ी (75, 192), ···अमीर घोड़े पर से नीचे आ पड़ा (4, 76)—मुकाबला कीजिये —पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ जब 'पड़ना' विशेषक क्रिया के साथ आती हैं जो कि संलीन व्यापार करती हैं;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(18) 'घुसना' क्रिया—महमूद···अजमेर की सीमा में आ घुसा (4, 69);

(19) 'फँसना' क्रिया—आप यहाँ कैसे आ फँसे ? (73, 94);

(20) 'छिपना' क्रिया—···सब···अपने-अपने घरों में··जा छिपे (103, 444);

(21) 'निकलना' क्रिया—···इतने में हुस्नबानो का पुराना मुनीम···उधर से आ निकला (25, 13), ···रसोईघर में जा निकला (24, 22);

(22) 'लटकना' क्रिया—···बेशुमार कटे सिर···पेड़ की अलग-अलग डालों से जा लटके···(25, 82);

(23) 'बसना' क्रिमा—···मुसलमान भी फिर भारत में आ बसे (2, 372);

(24) 'अटकना' क्रिया—···तेरी कसम जान गले में आ अटकती है (103, 102);

(25) 'टपकना' क्रिया—···यह विचार मेरे दिमाग़ में आ टपका कि··· (136, 58);

(26) 'जुड़ना' क्रिया—···साँस फिर से आ जुड़ने पर कहा···(103, 95);

(27) 'जूझना' क्रिया—···जो राजपूत बचे थे वही आ जूझे···(4, 82)।

सकर्मक क्रियाओं के साथ 'आना' और 'जाना' क्रियाओं के मेल से :

(1) 'दबाना' क्रिया—रास्ते में लड़कों को बुखार ने आ दबाया (7, 33), ···बच्चों को काली खाँसी ने आ दबाया (117, 73);

(2) 'लेना' क्रिया—हमने आगे जाने वाली बस को जा लिया था (9, 119);

(3) 'सुनना' क्रिया—महात्मा ने···सारा विवरण उन्हें···जा सुनाया (4, 169);

(4) 'घेरना' क्रिया—डाकुओं ने उन्हें आ घेरा (17, 47);

(5) 'दबोचना' क्रिया—उसने उछलकर उन दोनों को जा दबोचा (25, 25);

(6) 'बिठाना' क्रिया—परन्तु जो बात उसे अलौकिक उच्चता पर जा बैठाती है···(161, 54);

(7) 'गिराना' क्रिया—परन्तु जो बात इसे···नर्क या पाताल में जा गिराती है।

घटकों की पूर्ण स्वतन्त्रता उन शब्द-समुदाय (वाक्यांशों) से भी वर्णित होती है जो कि 'लेना' क्रिया की क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु से तथा दूसरी अकर्मक दशासूचक तथा गतिसूचक क्रियाओं से बनते हैं, उदाहरणार्थ :···शोभना भी महाराजा के चरणों को गोद में ले बैठी (4, 193), जूनागढ़ के राव तो पहले ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले जमे थे (4, 103), वे उसे···ले दौड़े (4, 92), चुने हुए सरदार अमीर को पालकी में डालकर शिविर में ले भागे (4, 77), उसका घोड़ा···उसे ले उड़ा (4, 243), यह अभागिनी सुमन बेचारी शान्ता को भी ले डूबी (73, 115)।

ये शब्द-समुदाय एकल सकर्मक विश्लेषणात्मक क्रिया नहीं होते, जैसा कि 'लेना' से बनी क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु 'जाना', 'आना' और 'चलना' विशेषक क्रियाओं के मिलन में होता है। वे कर्मवाच्य नहीं बना सकते, जबकि 'ले जाना', 'ले आना' और 'ले चलना' विश्लेषणात्मक पक्ष-सम्बन्धी क्रियाएँ कर्मवाच्य सब सकर्मक पक्ष-सम्बन्धी क्रियाओं की तरह बनाती हैं, उदाहरणार्थ : ···हातिम को भी महल में ले जाया गया···(25, 45), ये निमंत्रण गज़नी के प्रधान मुल्लाओं द्वारा ले जाये गये थे (4, 42), ···सरकार को वहाँ से उठाकर मार्च सन् 1918 में मास्को ले आया गया (79, 36)।

घटकों की पूर्ण स्वतन्त्रता उन शब्द-समुदायों द्वारा भी व्यक्त होती है जो कि दो सकर्मक क्रियाओं द्वारा बनते हैं, जिनमें से एक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त-धातु के रूप में आता है, उदाहरणार्थ : युवकों ने···कहानी कह सुनायी (4, 139), इसका बेटा अमीर को मार भागा (4, 68), ···सुलतान महमूद को उसने खोज निकाला (4, 245), नन्दीदत्त ने बड़े यत्न से धोधाराना का शव शवों के ढेर से ढूँढ़ निकाला (4, 64), ···जिन्होंने उपनिवेशिक···जुए को उतार फेंका है (141, 41)। ये शब्द-समुदाय पदबन्धित प्रकृति की स्थिर शाब्दिक रचनाएँ ज़्यादा होते हैं बनिस्बत व्याकरणिक इकाइयों के—विश्लेषणात्मक, पक्ष-सम्बन्धी क्रियाओं के।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रियाविशेषण

क्रियाविशेषण का मुख्य संवर्गात्मक लक्षण यह है कि वह प्रक्रिया, द्रव्य या गुण की प्रतिबद्ध विशेषता व्यक्त कर सकता है परन्तु रूपबद्ध तौर पर इससे कोई सम्बन्ध नहीं रखता है। इसी कारण क्रियाविशेषण अविकारी व्याकरणिक कोटि है। वाक्य के स्तर पर उसके लिए सन्निधि की स्थिति एकमात्र स्वाभाविक है।

अपनी व्युत्पत्ति और शब्दनिर्माण विषयक सम्बन्धों की दृष्टि से क्रियाविशेषण सार्वनामिक और अर्थपूर्ण में विभक्त होते हैं।

सार्वनामिक क्रियाविशेषणों में शुद्ध हिन्दी के क्रियाविशेषण आते हैं जो संकालिक दृष्टि से अनुत्पादक होते हैं पर जो कालक्रमिक दृष्टि से हिन्दी के लिए अब अनुत्पादक परप्रत्ययों की सहायता से बने हैं :

		परप्रत्यय			
सर्वनाम	सार्वनामिक तत्त्व	न-काल	हाँ-स्थान	धर-दिशा	यों-कार्य-रीति
यह	य, इ, अ	अब	यहाँ	इधर	यों
वह	व, उ	—	वहाँ	उधर	—
कौन/क्या	क	कब	कहाँ	किधर	क्यों
जो	ज	जब	जहाँ	जिधर	ज्यों
तिस/तिन	त	तब	तहाँ	तिधर	त्यों

सब सार्वनामिक क्रियाविशेषण 'ही' बलात्मक निपात अपना सकते हैं :

अभी	यहीं	इधर ही	यों ही
—	वहीं	उधर ही	—
कभी	कहीं	किधर ही	—
जभी	जहीं	जिधर ही	ज्यों ही
तभी	तहीं	तिधर ही	त्यों ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वनामिक क्रियाविशेषण 'कब' एवं 'कहाँ' बलात्मक 'ही' जोड़ते हुए नये शाब्दिक अर्थ सहित क्रियाविशेषण बनाते हैं : कभी—किसी समय को, कहीं—किसी स्थान को।

प्रायः सभी सार्वनामिक क्रियाविशेषण 'से' एवं 'तक' परसर्गों को जोड़ सकते हैं—अब से (तक), यहाँ से (तक), किधर से (तक), जहाँ से (तक) इत्यादि।

इसके अतिरिक्त स्थानवाचक सार्वनामिक क्रियाविशेषण 'पर' परसर्ग जोड़ सकते हैं, यहाँ-वहाँ-कहाँ-जहाँ पर।

कालवाचक, स्थानवाचक और दिशावाचक सार्वनामिक क्रियाविशेषण 'क' परसर्ग जोड़ते हुए विशेषणीकृत हो जाते हैं और परसर्गीय विशेषणों की भूमिका निभाने लगते हैं, जैसे, अबकी वर्षा (67, 33), यहाँ का अनुभव (72, 113), कहाँ का न्याय (143, 14)।

सार्वनामिक क्रियाविशेषण पुनरुक्त हो सकते हैं। तब वे (क) अपना अर्थ और बल पूर्ण करते हैं, जैसे, कभी-कभी, जब-जब, ज्यों-ज्यों, त्यों-त्यों; (ख) अपना अर्थ विस्तारित करते हैं जो विशेष रूप से 'का' परसर्ग और 'न' निपात सहित पुनरुक्तियों से जुड़ा हुआ है, जैसे, इधर-उधर, ज्यों-त्यों, ज्यों का त्यों, जहाँ का तहाँ, कभी-न-कभी, कुछ-न-कुछ। सार्वनामिक क्रियाविशेषणों की पुनरुक्ति सार्वनामिक क्रियाविशेषणों से सार्वनामिक क्रियाविशेषणों की शाब्दिक-वाक्यविन्यासात्मक निर्माण-पद्धति के साथ सम्बन्ध रखती है।

स्वतन्त्र अर्थपूर्ण क्रियाविशेषण व्युत्पति और बनावट की दृष्टि से शुद्ध हिन्दी एवं आगत (गृहीत) में विभक्त होते हैं। बनावट की दृष्टि से क्रियाविशेषण रूढ़ एवं साधित में विभक्त होते हैं।

शुद्ध हिन्दी के क्रियाविशेषण कुछ आपवाद छोड़कर (ऊपर, भीतर, बाहर, झट) साधित होते हैं जो शब्द-निर्माण विषयक एवं शाब्दिक दृष्टि से अन्य शब्द-भेदों से जुड़े हुए हैं क्योंकि शब्द-भेद के रूप में क्रियाविशेषण अन्य शब्द-भेदों के बाद ही बनने लगा था। आधुनिक हिन्दी में क्रियाविशेषण इस तरह बनते आ रहे हैं :

(1) सम्पूर्ण संज्ञा-रूप प्रणाली में अप्रत्यक्ष परसर्गीय रूप के पृथक्करण के द्वारा जिसमें प्रथम कारक-रचना की संज्ञाओं का विभक्त-प्रत्यय अपरिवर्तित एवं रूढ़िगत हो जाता है, जैसे :

संज्ञा	क्रियाविशेषण
···बर्फ़ीली रातें याद आने लगीं (103, 525),	बस, कल **रात** चलेंगे (103, 425),
सवेरा हुआ (73, 90)।	अब तो **सवेरे** ही उठेगा (103, 66)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रियाविशेषणों के निर्माण की इस रूपात्मक-वाक्यविन्यासात्मक रीति की सहायता से क्रियाविशेषण क्रियाविशेषणवाचक कृदन्तों से बनते हैं, जैसे, कृष्णचन्द्र उड़कर घर पहुँचना चाहते थे (73, 10), पत्नी···झपटके उठी (44, 71), तुमने मुझे जानकर गिराया (73, 94)।

(2) प्रत्यययोजन के द्वारा अर्थात् रूपात्मक रीति से, जैसे, (क) परप्रत्यय लगा कर विशेषणों से क्रियाविशेषणों का निर्माण : धीमा-धीमे, नीचा-नीचे, कैसा-कैसे, अकेला-अकेले ('ए' परप्रत्यय धातु से जुड़ जाता है : नीचा-नीच+ए=नीचे); (ख) पूर्वप्रत्यय लगाकर संज्ञाओं से क्रियाविशेषणों का निर्माण : बे+ढब=बेढब, बे+धड़क=बेधड़क, नि+धड़क=निधड़क, निर+उद्देश्य=निरुद्देश्य, जैसे, कच्चे योद्धा बेढब तलवार फेंक रहे थे (4, 155); (ग) मिश्रित निर्माण-रीति, यानी परप्रत्यय एवं पूर्वप्रत्यय दोनों लगाकर जब सरल द्वितीय कृदन्तों से क्रियाविशेषण बनते हैं : जाना-अनजाने, खटका-बेखटके, देखा-देखे, जैसे, मैंने **अनजाने** किया था (47, 12), वह इसी तरह चुपचाप **बे-हिले-डुले** लेटा रहा (17, 16)।

(3) अर्थपूर्ण शब्दों के सम्मिलन के द्वारा अर्थात् शाब्दिक-वाक्यविन्यासात्मक रीति के द्वारा, जैसे, प्रतिदिन, एकदम, एकसाथ, आये दिन, उदाहरणार्थ : वह··· **एकटक** माया के मुख को ताकता रहा (3, 57), नाच भी शहर में **आये दिन** हुआ ही करते हैं···(73, 88)।

क्रियाविशेषणों की इस निर्माण-रीति में पदों के सम्मिलन या उनको द्विरुक्ति की रीति भी आती है। प्रथम पद अप्रत्यक्ष परसर्गीय कारक का रूप धारण किए हो सकता है, जैसे, दिन-रात, दिनों-दिन, हाथों-हाथ, पहले-पहल, उदाहरणार्थ : गंगाजली की अवस्था **दिनों-दिन** बिगड़ने लगी (73, 102), राजपूतों ने···**हाथों-हाथ** युद्ध करने की ठान ली (4, 76)।

इस श्रेणी में परसर्ग सहित शब्दों से बने क्रियाविशेषण आते हैं, जैसे, अन्त में, **इतने में**, रात को, उदाहरणार्थ : अभी तक **अकेले में**···गाती और नाचती थी (103, 425), अन्त को वह अधीर हो गया (73, 97)।

(4) समध्वनियों में एक ही शब्द के विखण्डन के द्वारा अर्थात् शाब्दिक-आर्थिक रीति द्वारा, जैसे, (क) संज्ञा—क्रियाविशेषण : अन्धाधुन्ध—···वे **अन्धाधुन्ध** रुपया कमा रहे थे (II, 5-7-1966, 6); (ख) विशेषण-क्रियाविशेषण : अच्छा—तुम **अच्छा** गाते हो (44, 106); (ग) संख्यांक-क्रियाविशेषण : प्रथम—इस कार्य से **प्रथम** तो राजपूत सैन्य में घबराहट···फैली (4, 73); (घ) क्रिया (क्रियाविशेषण-वाचक कृदन्त)-क्रियाविशेषण : जानकर—मैंने जानकर ही दाढ़ी जला दी तो (73, 92); (च) क्रियाविशेषण—क्रियाविशेषण : कहीं—फिर **कहीं** जाएगा क्या? (103, 433) और स्त्री-पुरुष से **कहीं** ज्यादा संयमशील होती है (66, 109);

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे—अबुलवफ़ा ने···मुँह आगे बढ़ाया···(72, 132) और कहीं यही सुपना आगे शुरू हो गया तो ? (103, 53)।

संस्कृत, अरबी एवं फ़ारसी से गृहीत क्रियाविशेषण आधुनिक हिन्दी में अनुत्पादक प्रतीत होते हैं हालाँकि कालक्रमिक दृष्टि से वे रूढ़ एवं साधित में विभाजित हैं। परन्तु कुछ कम अपवादों को छोड़कर गृहीत क्रियाविशेषणों के प्रत्यय आधुनिक भाषा में मृत समझे जाते हैं जिसके कारण इन क्रियाविशेषणों को रूढ़ समझना सम्भव होता है।

उपर्युक्त क्रियाविशेषणों के साथ-ही-साथ जिन्हें कोटिगत व्याकरणिक क्रियाविशेषण माना जा सकता है हिन्दी में तथाकथित अव्याकरणिक वाक्यगत क्रियाविशेषण भी प्रयुक्त होते हैं। इनमें सार्वनामिक एवं शुद्ध विशेषण आते हैं जो निश्चित वाक्यगत स्थितियों में क्रियाविशेषण का प्रकार्य अपनाते हैं, पर रूपपरिवर्तन की क्षमता बचाये रखते हैं, उदाहरणार्थ : ज़रा **ऊँचा** बोलो, मैं **कम** सुनता हूँ (27, 40), ···गोली सीधी दीवान जी के सीने में घुसकर निकल गयी (103, 443), तू **कितनी** बदल गयी है (103, 75)। परन्तु कुछ ऐसे प्रकार्यात्मक क्रियाविशेषण पुल्लिग के प्रत्यक्ष कारक के स्थिर रूप में प्रयुक्त हैं भले ही वे स्त्रीलिंग के शब्द से सम्बन्ध क्यों न रखें, उदाहरणार्थ : वह **थोड़ा** हँसी···(12, 14), शुरू में वह घर देर से आते बड़ा घबराती थी (151, 96)।

प्रकार्यात्मक क्रियाविशेषणों की श्रेणी में कुछ मुख्यतः गृहीत विशेषण आते हैं जो व्याकरणिक क्रियाविशेषणों के साथ-ही-साथ गुण में विभिन्न परिमाणात्मक लक्षण जोड़ते हैं या प्रक्रिया की गतिशीलता का दर्जा इंगित करते हैं, उदाहरणार्थ : ···यह समस्या अब अत्यन्त भयंकर हो गयी थी (66, 85), ···**अत्यधिक** गम्भीर होकर बोला···। इन विशेषणों के अर्थ-विधान और व्याकरणिक अपरिवर्तिता के कारण वे संज्ञा-संलग्न विशेषण के प्रकार्य में प्रातः प्रयुक्त नहीं होते।

अपने अर्थ के अनुसार आधुनिक हिन्दी के सब क्रियाविशेषणों के तीन भेद हैं : (1) विशेषणवाचक, (2) विशेषणवाचक-क्रियाविशेषकवाचक और (3) क्रियाविशेषणवाचक।

विशेषणवाचक क्रियाविशेषण प्रक्रिया के गुणवाचक एवं परिमाणवाचक लक्षण व्यक्त करते हैं अतः इनके दो भेद हैं : विशेषणवाचक-गुणवाचक और विशेषणवाचक-परिमाणवाचक।

विशेषणवाचक-गुणवाचक क्रियाविशेषण प्रक्रिया के विभिन्न गुणवाचक लक्षण का भार अपनाते हैं, इनमें हिन्दी के और गृहीत दोनों के क्रियाविशेषण हैं।

शुद्ध हिन्दी के गुणवाचक-क्रियाविशेषण गुणवाचक विशेषणों से बने हैं और वे मुख्यतः प्रक्रिया की विशेषता जताते हैं, उदाहरणार्थ : शोकातुरा सुधा **अकेले** कैसे रहती ! (66, 160), वह···अपने बाल **छोटे** कटाती थी (52, 131), शायद मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने दिल के भीतर बहुत गहरे न उतरी थी (28, 201)।

गृहीत गुणवाचक क्रियाविशेषण कालक्रमिक दृष्टि से रूढ़ एवं साधित में विभक्त होते हैं। साधित क्रियाविशेषणों में बहुधा संस्कृत से गृहीत गुणवाचक क्रियाविशेषण आते हैं जो 'पूर्वक' परप्रत्यय की सहायता से संज्ञाओं से बने हैं तथा अरबी एवं फ़ारसी के गुणवाचक क्रियाविशेषण हैं जो 'अन' परप्रत्यय से विशेषणों से बने हैं, उदाहरणार्थ : डॉक्टर ने **नम्रतापूर्वक** कहा···(3, 67), रुस्तमखाँ··· **फौरन** समझ गया···(103, 327), वायु **व्यर्थ** ही चल रही थी (4, 108), लेकिन तुम्हारी आज्ञा से **मजबूरन** जाता हूँ···(24, 10)।

क्रियाविशेषणों की द्विरुक्ति के कारण उनका अर्थ और भी स्पष्ट हो जाता है, उदाहरणार्थ : पर **धीरे-धीरे** अवस्था बिगड़ती गयी (44, 114), सरिता **हौले-हौले** हँसने लगी (30, 52), मौलवी अफ़ज़ल अली ने···**जल्दी-जल्दी** सारा काम निबटाया (113, 18)।

'से' निपात सहित गुणवाचक क्रियाविशेषण व्यापार के गुणवाचक लक्षण को कुछ हद तक सुदृढ़ या दुर्बल कहते हैं: उसने···**धीरे से** द्वार खोल दिया (4, 131), धीरे-धीरे मैंने अपना अड्डा **ठीक से** जमा लिया (30, 21)।

'से' परसर्ग सहित गुणवाचक क्रियाविशेषण की द्विरुक्ति जो रूप की दृष्टि से विशेषणों की उत्तम अवस्था के सदृश है, व्यापार की सर्वोत्तम कोटि व्यक्त करती है। अमीर ने **जल्द-से-जल्द** घाटी को पार करने की···ताकीद की (4, 92)।

विशेषणवाचक-परिमाणवाचक क्रियाविशेषण प्रक्रिया या द्रव्य को विभिन्न परिमाणवाचक लक्षण प्रदान करते हैं अर्थात् द्रव्य में सन्निहित गुण को कोटि और और रीति और व्यापार की गतिशीलता का दर्जा व्यक्त करते हैं। यहाँ शुद्ध हिन्दी या गृहीत क्रियाविशेषण में उनका विभाजन महत्त्वहीन है, उदाहरणार्थ : ···यह कथन **प्रायः पूर्णतया** असत्य सिद्ध हो चुका है (115, 438), ···वह **लगभग** अकेला रह गया (106, 28), मुंशीजी ने खुशी तो **बहुत** दिखायी···(66, 161), सुनने वाले **जरा** हट गये (103, 426), वस्तुओं का प्रचार भी **खूब** बढ़ गया (115, 50)।

आधुनिक हिन्दी में वास्तव में एक ही गणनावाचक परिमाणवाचक क्रियाविशेषण है—दुबारा, उदाहरणार्थ : मैंने **दुबारा** चाय मँगायी···(59, 32), मैंने वहाँ **दुबारा** जाना ठीक न समझा (30, 36)।

परिमाणवाचक क्रियाविशेषण नियमतः पुनरुक्त नहीं होते, उन्हें 'और' तथा 'बहुत' के परिमाणवाचक क्रियाविशेषण से अधिक बल मिलता है, उदाहरणार्थ : ···**और** भी ज़्यादा मिलने की आशा होगी (66, 27), उसे वेतन भी **बहुत** कम मिलेगा (143, 25)।

विशेषणवाचक-क्रियाविशेषणवाचक क्रियाविशेषण व्यापार को विभिन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुणात्मक-मात्रात्मक लक्षण प्रदान करते हैं, परन्तु वे बहुधा व्यापार की रीति पर बल देते हैं और इस तरह व्यापार का गुणवाचक लक्षण धूमिल करते हैं।

उपर्युक्त क्रियाविशेषण की श्रेणी में वे सब क्रियाविशेषण आते हैं जो सार्वनामिक विशेषणों से बने हैं, 'यों, ज्यों, त्यों' के सार्वनामिक क्रियाविशेषण तथा अनेक स्वतन्त्र अर्थपूर्ण क्रियाविशेषण आते हैं जो गुणात्मक, मात्रात्मक और शुद्ध रीतिवाचक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति से जुड़े नहीं होते, जैसे—कैसे, वैसे, जैसे, तैसे, औंधे, चित, पैदल, एकदम, एकसाथ, गट-गट, एकबारगी, यथाशक्ति, यथासम्भव, एकाएक, सहसा, अचानक, अवाक्, बेखटके, चुपके, बदस्तूर, जस, तस। उदाहरणार्थ : लेकिन सदन को कैसे भूलाऊँगी ? (73, 78), वह वैसे ही बैठा रहा (97, 107), ज्यूँ-त्यूँ खाली हाथ···उसके मकान पर पहुँचा (24, 15), वह परी दरवाज़े से यूँ निकली जैसे चौदहवीं रात का चाँद (24, 25), जंगल पार कर लशकर ने **जैसे-तैसे** एक छोटे-से मैदान में छावनी डाली (4, 92), कई लोग **एक साथ** हँस पड़े (103, 436), ···**एकाएक** व्यक्त भाव से बोली···(44, 19), डाक्टर ने **यथाशक्ति** अपने को संयत रखते हुए कहा···(125, 1), मैं **अवाक्** देखता रहा (103, 492)।

इन क्रियाविशेषणों में क्रियाविशेषणात्मक मुहावरे भी आते हैं, उदाहरणार्थ : अमरकान्त **दबे** पाँव हशीम की दुकान के सामने पहुँचा (71, 131), तस्कर व्यापारी ऐशो-आराम की चीज़ें **चोरी-छिपे** यहाँ ला रहे थे (II, 5-7-1966, 5)।

क्रियाविशेषणवाचक क्रियाविशेषण विभिन्न क्रियाविशेषणवाचक लक्षण व्यक्त करते हैं। इनके कुछ अर्थगत भेद हैं :

(1) स्थानवाचक क्रियाविशेषण व्यापार के होने का स्थान सूचित करते हैं या गति की दिशा इंगित करते हैं जिसके कारण इनके दो उपभेद हैं।

पहले उपभेद के क्रियाविशेषण व्यापार के होने का स्थान सूचित करते हैं। इनमें सरल एवं बलात्मक सार्वनामिक क्रियाविशेषण तथा कुछ स्वतन्त्र अर्थपूर्ण क्रियाविशेषण हैं, जैसे, बाहर, भीतर, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, यत्र-तत्र, बाएँ-दाएँ सर्वत्र, पास जो अवस्थासूचक क्रियाओं से जुड़े होते हैं, उदाहरणार्थ : हम कब तक **यहाँ** बैठे रहे ! (139, 95), हम **वहीं के वहीं** बैठे थे (44, 36), **सामने ही** घोड़े रखे थे (103, 424), **यत्र-तत्र** प्रहरियों की पदचाप सुन पड़ती थी (4, 157), फिर **जहाँ की तहाँ** बैठ गयी (103, 458)।

इन क्रियाविशेषणों के साथ 'पर' परसर्ग जुड़ सकता है, उदाहरणार्थ : **कहीं पर** सीमा नहीं थी ! (74, 37), **वहाँ पर** ज़मीन बहुत नरम थी (30, 72)।

दूसरे उपभेद में दिशा को इंगित करने वाले क्रियाविशेषण आते हैं जो तीन और श्रेणियों में विभक्त होते हैं : (क) गति की सामान्य दिशासूचक; (ख) गति का प्रस्थान बिन्दुसूचक और (ग) गति का गन्तव्य स्थानसूचक। इन क्रियाविशेषणों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पहले उपभेद के प्रायः सभी क्रियाविशेषण आते हैं परन्तु जो गतिसूचक या दिशासूचक क्रियाओं से जुड़े होते हैं।

पहली श्रेणी के क्रियाविशेषण बहुधा परसर्गरहित होते हैं, पर कभी-कभी वे 'को' परसर्ग सहित आते हैं। वे सामान्य दिशा का अर्थ प्रस्तुत करते हैं, उदाहरणार्थ : वह **ऊपर** उठना चाहता था, पर गरीबी उसे **नीचे** धकेल देती थी (16, 146), मैं भी **वहीं** पहुँचा (30, 38), ···बुढ़िया **अन्दर** चली गयी (16, 175), पति···**बाहर को** चल दिया (9, 163), **जिधर को** करवट लेता दिमाग खुशबू से भर जाता (24, 42)।

दूसरी श्रेणी के क्रियाविशेषण सदा 'से' परसर्ग अपनाते हैं, उदाहरणार्थ : तुम **यहाँ से** वहाँ जाओ, **वहाँ से** जहाँ जाओ, **जहाँ से** तहाँ जाओ···(30, 128), **बाहर से** नहीं, वह तो **भीतर से** झाँक उठा (40, 9), **नीचे से** ही भीम पेड़ को हिला देते···(84, 138), यह लेख **दाएँ से बाएँ** चलता है या **बाएँ से दाएँ** ? (30, 46)।

तीसरी श्रेणी के क्रियाविशेषण सदा 'तक' परसर्ग को अपनाते हैं, उदाहरणार्थ : **वहाँ तक** चली चल न ? (103, 348), तुम **कहाँ तक** सदा यकीन कर सकते हो, दोस्त ? **जहाँ तक** एक दोस्त का किया जा सकता है (4, 142)।

(2) कालवाचक क्रियाविशेषण व्यापार के होने का क्षण सूचित करते हैं। वे भी तीन श्रेणियों में विभक्त होते हैं : (क) व्यापार के होने का सामान्य कालसूचक; (ख) व्यापार के होने का आरम्भिक कालसूचक तथा (ग) व्यापार के होने का समाप्ति-कालसूचक।

पहली श्रेणी के क्रियाविशेषण या तो परसर्गरहित होते हैं या 'को' परसर्ग अपनाते हैं, उदाहरणार्थ : **अब** देवी बोलेगी (130, 427), **रोज-रोज प्रातः** स्वयं मैं उसे धो देती हूँ (44, 8), **आज ही रात को** यान जा रहा है (4, 133), **दोपहर को** सुमन ने खाना खाया (103, 511)।

दूसरी श्रेणी के क्रियाविशेषण सदा 'से' परसर्ग को अपनाते हैं, उदाहरणार्थ : **आज से** नहीं, **सदा ही से** मानुस इस कोख की इज्ज़त करता आया है (103, 346), **कल से** पाठशाला बन्द हो जायेगी (69, 107), हीरामन आज **सुबह से** तीन बार लदनी लादकर स्टेशन आ चुका है (52, 68), वह···**कब से** यह बात कहता है ? (25, 7)।

तीसरी श्रेणी के क्रियाविशेषण सदा 'तक' परसर्ग को अपनाते हैं, उदाहरणार्थ : **जब तक** चुप था, **तभी तक** चुप था···(103, 80), **अभी कुछ दिन पहले तक** यह दिल लगाकर पढ़ता था···(66, 65), पुलिस से **आज तक** कोई नहीं बचा (103, 99)।

(3) उद्देश्यवाचक क्रियाविशेषण व्यापार के होने का उद्देश्य सूचित करते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहरणार्थ : मैंने तो इसीलिए चार दिन पहले ही तुम्हें लिख दिया था (73, 105-106), ···अहमक, तू किसलिए रोता है ? (24, 113)। जैसा कि उदाहरणों से स्पष्ट है, उपर्युक्त उद्देश्यवाचक क्रियाविशेषणों के उद्देश्यमूलक हाथ को कारणवाचक छाया प्रदान की जाती है। शुद्ध उद्देश्यवाचक क्रियाविशेषणों में जानबूझकर, जानकर जैसे क्रियाविशेषण आते हैं जिनकी संख्या बहुत कम है, उदाहरणार्थ : वैसे तो यह इसलिए **जानबूझकर** किया गया कि··· (II, 5-7-1966, 6), तुमने मुझे जानकर गिराया (73, 94)।

(4) कारणवाचक क्रियाविशेषण वह कारण सूचित करते हैं जिससे व्यापार का निष्पादन हो जाता है। आधुनिक हिन्दी में इनकी संख्या भी बहुत कम है। यों कहें कि इने-गिने हैं। इनमें से 'क्यों' क्रियाविशेषण सबसे ज़्यादा मिलता है, जैसे, तू **क्यों** नहीं खाती ? (103, 66), मैं **काहे** को पड़ूँ ? (103, 97), ···यह तैयारी क्योंकर हुई (24, 22)।

'क्यों' क्रियाविशेषण उद्देश्यवाचक क्रियाविशेषण का अर्थ भी व्यक्त कर सकता है, जैसे, मुझे **क्यों** ले आया ? (103, 85), तू क्यों आयी ? (103, 92)।

कारणवाचक क्रियाविशेषण की हैसियत से 'कैसे' क्रियाविशेषण आ सकता है, जैसे, कल आप कैसे नहीं आये···(73, 95), कैसे आया ? मुझे एक काम था (103, 434)।

कारणवाचक क्रियाविशेषणों के अर्थ में 'वश' संलग्न संज्ञाएँ आ सकती हैं। 'वश' जो अमल में परसर्ग है विकारी शब्दों को प्रभावित करता है, उदाहरणार्थ : मैं **अपने** स्वाभिमान**वश** घर ही में बैठा रहा (1, 167), रामा संकोच**वश** देवीदीन से कुछ न कह सकता था (65, 258), कुमार ने सहज कुतूहल**वश** प्रश्न किया था (143, 38)—तुलना कीजिये—कहानी-लेखिका एक प्रबल क्रोध के **वश** हो उठी···(9, 184)।

शब्द-समुदाय के स्तर पर क्रियाविशेषण निम्न सम्बन्ध व्यक्त करते हैं : (1) गुणात्मक—आशुतोष ने **धीरे से** कहा (44, 56), फिर सदन ने **शीघ्रतापूर्वक** दो-चार ग्रास खाये···(73, 84); (2) मात्रात्मक—सौदागर ने नौकरों को **बहुत** डराया-धमकाया···(52, 53), ···लड़के शत्रु और मित्र बूढ़ों से **ज्यादा** पहचानते हैं; (3) गुणात्मक-क्रियाविशेषणात्मक—कैसे बोलती है ? (103, 438), **चुपचाप** वे दोनों निकल चले (103, 425); (4) क्रियाविशेषणात्मक जो निम्न श्रेणियों में विभक्त होते हैं : (क) स्थानवाचक—···कोई एक लम्बी कील उसके माथे में **आर-पार** चुभा देता (120, 63), ···**भीतर** घुस गया (103, 424); (ख) कालवाचक—बस, **कल रात** चलेंगे (103, 425), आप···मेरे हृदय को **रोज** जलाते हैं (73, 92); (ग) उद्देश्यवाचक—मैंने **जानकर** ही दाढ़ी जला दी तो ? (73, 92), तुमने **जानबूझकर** समय पर सहायता न पहुँचायी (97, 104);

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(घ) कारणवाचक—**क्यों** न कहूँगी ? (103, 251), रामा संकोचवश देवीदीन से कुछ न कह सकता था (65, 158)।

वाक्य के स्तर पर क्रियाविशेषण विभिन्न क्रियाविशेषणात्मक प्रकार्य निभाता है, जैसे : (1) स्थानवाचक—वे लोग **उधर** ही रहते होंगे (103, 434); (2) कालवाचक—**कल** बारात आएगी (73, 105); (3) उद्देश्यवाचक—तुमने जान-बूझकर ऐसा बम बनाया··· (97, 104); (4) कारणवाचक—तुम उस दिन **क्यों** नहीं आये ? (30, 79); (5) परिमाणात्मक—उसने **बहुत** रोका··· (73, 92), सुनने वाले **ज़रा** हट गये (103, 426); (6) रीतिवाचक—स्त्री **चुपचाप** पीछे-पीछे चल दी (103, 435)···ग़ज़नी का अमीर **ताबड़-तोड़** अजमेर की ओर घुसा चला आ रहा है (4, 68-69)।

कभी-कभार क्रियाविशेषण विधेय की हैसियत से प्रयुक्त हो सकता है, जैसे, मेरी राइफ़ल **ऊपर** है (30, 96), ···वे लड़कपन की बातें अब **कहाँ**··· (69, 108)।

क्रियाविशेषण के लिए एक ही प्रकार का वाक्यविन्यासात्मक सम्बन्ध लाक्षणिक है—सन्निधि जिसमें ये भेद हैं : (1) क्रिया संलग्न—उसने **ऊपर देखा** (103, 438), ···माँ **बाहर** से **आती** दिखाई दी (16, 148), ···लोग स्वयंवर में इस प्रकार उनका आगे बैठना देख आश्चर्यचकित हो रहे थे (84, 72); (2) विशेषण संलग्न—···अन्दर लैंप जला रखना अत्यन्त हानिकारक है (16, 12), सुधार के लिए आप जो कुछ कर सके वह सर्वथा प्रशंसनीय है (72, 270); (3) संज्ञा-संलग्न—गहनों के मामले में मैं बिलकुल अनाड़ी हूँ (65, 58), ···वह सर्वथा सत्य था (67, 45); (4) संख्यांक-संलग्न—**करीब डेढ़ घण्टे** तक पहाड़ों पर उड़ते रहे (99, 24), ठीक साढ़े आठ बजे तर्मेज पहुँचे (99, 24); (5) सर्वनाम-संलग्न—आज मुझ-सा अभागा संसार में **और कौन** है ? (66, 69), ···उधर भयंकर अन्धकार के सिवा और कुछ न सूझता था (72, 110); (6) क्रियाविशेषण-संलग्न—तुम भी **कल** प्रातःकाल वहाँ चलकर घाट पर डेरा डालो (143, 22), ·· यह कथन···प्रायः **पूर्णतया** असत्य सिद्ध हो चुका है (115, 438); (7) क्रियाविशेषणों में व्युत्पन्न परसर्ग-संलग्न—शाही मसजिद के **ठीक** सामने हिन्दुओं का शहर सबसे बड़ा मन्दिर था (113, 16),··· वह उसके **बहुत** निकट की वस्तु अवश्य है (66, 126)।

क्रियाविशेषण क्रियाविशेषणात्मक निर्धारक की हैसियत से प्रयुक्त ही हो सकते हैं, जैसे, **अन्त** को वह अधीर हो गया (73, 205), **एक राज** उमानाथ ने ···कहा··· (73, 114), ···**इतने में** वह स्वयं आ पहुँचे (73, 90)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परसर्ग

परसर्ग का मुख्य कोटिगत लक्षण यह है कि वह वाक्य या शब्द-समुदाय के भीतर अन्य शब्दों से संज्ञाओं, अन्य नामिकीकृत शब्दों और कुछ क्रियाविशेषणों की अधीन अवस्था व्यक्त कर सकता है। इनमें केवल एक अपवाद है 'ने' परसर्ग, जो शब्द की स्वाधीन वाक्यविन्यासात्मक स्थिति सूचित करता है।

आधुनिक हिन्दी में परसर्ग मूल और साधित में विभक्त हैं।

मूल परसर्ग अपने पदार्थवाचक अर्थ खो चुकने वाले अर्थपूर्ण शब्दों या संस्कृत के प्रत्ययों से व्युत्पन्न हुए हैं जिन्होंने परसर्ग में बदलने से पहले विकास का लम्बा मार्ग तय कर लिया है। इसी कारण से मूल परसर्ग के दो भेद हैं : (1) सम्पूर्ण रूप से पदार्थवाचक अर्थ से वंचित (तथाकथित अमूर्त) परसर्ग और (2) अपना शाब्दिक (पदार्थेतर) अर्थ सुरक्षित (तथाकथित ठोस, या मूर्त) परसर्ग।

मूल परसर्गों में से अमूर्त हैं 'का', 'को', 'के', 'ने' परसर्ग। 'में', 'से', 'पर', 'तक' ठोस परसर्ग हैं।

अपनी बनावट से मूल परसर्ग सरल एवं दोहरे होते हैं। दोहरे परसर्गों में दो सरल परसर्गों का समास आता है : में से, पर से, तक का, पर का इत्यादि।

साधित परसर्ग व्युत्पत्ति और बनावट की दृष्टि से अर्थपूर्ण शब्दों से जुड़े हुए हैं। अपवाद के रूप में 'वाला' परसर्ग जो 'वाला' रूपिम का व्याकरणिक समध्वनि है, 'सा' परसर्ग जो 'सा' निपात का व्याकरणिक समध्वनि है और 'बिना' और 'बगैर' परसर्ग आते हैं जो संस्कृत एवं अरबी के पूर्वसर्गों से व्युत्पन्न हुए हैं। 'वाला' छोड़कर शेष साधित परसर्ग ठोस हैं।

अपनी बनावट की दृष्टि से साधित परसर्ग सरल, संयुक्त एवं जटिल में विभक्त होते हैं। सरल परसर्गों में सा, वाला, ऐसा, जैसा, सरीखा, सम्बन्धी परसर्ग आते हैं जो अर्थपूर्ण एवं सहायक शब्दों की व्याकरणिक समध्वनियाँ हैं।

सरल परसर्गों में (मूल एवं साधित) विकारी परसर्ग हैं यानी 'आ' विशेषण-वाचक विभक्ति वाले परसर्ग हैं जो शब्द-समुदाय के मुख्य घटक से लिंग एवं वचन में अन्वित होते हैं, जैसे, पहलवान ऐसे दिखायी देना (17, 185) हिम ऐसे श्वेत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख पर (17, 387), भारतीयों-सा काला (17, 392), मोटे शीशों वाली ऐनक (17, 187) इत्यादि।

संयुक्त परसर्ग 'के' या 'की' योजक तत्त्वों और अर्थपूर्ण भाग के मिलन से बने हैं। जटिल परसर्ग संयुक्त परसर्ग और सरल मूल परसर्ग के मिलन से बने हैं।

अर्थपूर्ण भाग के अनुसार साधित परसर्ग निम्न शब्द-भेदों से बनते हैं :

(1) क्रियाविशेषणों से (क्रियाविशेषणात्मक परसर्ग)—के यहाँ, के उधर, के पीछे, के आगे, के भीतर, के बाहर, के सामने, के आस-पास, के इर्द-गिर्द इत्यादि। क्रियाविशेषणात्मक परसर्ग प्राय: सभी स्थानवाचक सार्वनामिक क्रियाविशेषणों से जो मूल हिन्दी के होते हैं, बन सकते हैं। वे संयुक्त एवं जटिल हो सकते हैं।

(2) संज्ञाओं से (नामधातुज परसर्ग)। पुल्लिग संज्ञाओं के आगे 'के' योजक तत्त्व और स्त्रीलिंग के आगे 'की' योजक तत्त्व रखे जाते हैं, जैसे, के कारण, के साथ, के ज़रिये, के सहारे, पर की ओर, की बदौलत, की तरह, की निस्वत। नामधातुज परसर्ग संयुक्त एवं जटिल हो सकते हैं।

(3) विशेषणों से (विशेषणात्मक परसर्ग) जो (क) सार्वनामिक विशेषणों से जुड़े हुए हैं, जैसा (के जैसा), ऐसा या (ख) अर्थपूर्ण विशेषणों से—समेत (के समेत), सहित (के सहित), के सामान, के अधीन, के योग्य, के लायक बने हैं। इनका योजक तत्त्व केवल 'के' हो सकता है। विशेषणात्मक परसर्ग भी संयुक्त एवं जटिल हो सकते हैं।

(4) क्रियाओं से (क्रियामूलक परसर्ग) जो (क) द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त से—के लिए, के मारे या (ख) प्रथम क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त से—के रहते, के चलते बने हैं। क्रियामूलक परसर्ग केवल संयुक्त हो सकते हैं।

ठोस साधित परसर्गों की बनावट में कुछ अपनी विशेषताएँ हैं।

एक योजक तत्त्व दोनों शब्दार्थसूचक अंशों के लिए आ सकता है, उदाहरणार्थ : शासक पार्टी के **बाहर** और **भीतर** प्रतिक्रियावाद का कुचक्र (IV, 19-11-1972), आज हमारा देश पूँजीपतियों के मुनाफे की सबसे ऊँची दर **के कारण और फलस्वरूप** ···तबाह हो रहे हैं (IV, 11-5-1974), ···कौन से तीन लड़के मूर्ति के दाएँ-**बाएँ** और **सम्मुख** खड़े हों···(30, 92)।

'के' योजक तत्त्व और शब्दार्थसूचक अंश के बीच अर्थपूर्ण शब्द हो सकता है, जैसे, ···तिब्बत के बौद्धों पर कोई नवीनता लादने **के** वह **विरुद्ध** थी (115, 412)।

कुछ नामधातुज एवं विशेषणात्मक परसर्गों में 'के' योजक शब्द छूट सकता है, पर यह लोप अनिवार्य नहीं है, उदाहरणार्थ :

/के/ बाद—लेकिन एक **साल** बाद मरना (30, 79) और **कई दिनों के बाद** पहुँचना (25, 103);

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

/के/ पूर्व—कल्पना···12 वर्ष पूर्व···उत्पन्न हुई थी (115, 22) और **स्वतन्त्रता के पूर्व** आरम्भ करना (115, 388);

/के/ तले—**पेड़ तले** सोना (25, 30) और **पैरों के तले** नाग (228, 39);

/के/ द्वारा—**व्यक्ति द्वारा** व्यक्ति का शोषण (115, 461) और **भाई के द्वारा** माँगना (143, 54);

/के/ पीछे—**महीना पीछा** खोना (102, 118), और सरकारी बस भी **प्राइवेट के पीछे** पहुँची (15, 12);

/के/ पार—**सिन्ध पार** खदेड़ना (2, 13), और **नदी के पार** उतर जाना (25, 65);

/के/ बतौर—बादशाह ने···अशरफ़ियों के थाल **बतौर तोहफ़ा** भेजे (24, 145), और **पेन्शन के बतौर** रुपया (113, 81);

/के/ हेतु—करो का उपयोग साधन **जुटाने हेतु** किया जाता है (II, 10-11-1966, 6) और **आवश्यकता के हेतु** बनाना (115, 302);

/के/ सहित—···ख़्वाजा को इस कुत्ते और **लालों सहित** आपके हुज़ूर में हाज़िर किया (24, 117), और···हनुमान लंका के वैद्य सुषेण को **उसके घर के सहित** उठा लाये (84, 101);

/के/ समेत—उन दिनों की बातें सन् और **तारीखों समेत** उसे याद थीं (13, 101), और···वह शंकर और **पार्वती के समेत** कैलास पर्वत को उठाकर भागने लगा (84, 77);

/के/ वश—मैं अपने **स्वाभिमानवश** घर ही में बैठा रहा (1, 167) और··· कहानी-लेखिका एक प्रबल **क्रोध के वश** ही उठीं (9, 184);

कुछ परसर्गों का शब्दार्थसूचक अंश योजक तत्त्व के आगे आ सकता है। शब्दार्थसूचक अंश बहुधा अरबी और फ़ारसी से गृहीत होता है, उदाहरणार्थ :

के बजाय और बजाय···के—**फ़ायदे के बजाय** नुकसान (II, 15-2-1970, 3), और···जो **बजाय माता के** मेरी ख़ातिर रखती थी (24, 15);

के सिवा और सिवा···के—पेट की **भूख के सिवा** और भूख (27, 19), और **सिवा रोने और आह भरने के** कुछ काम न था (24, 6);

के बतौर और बतौर···के—**पेन्शन के बतौर** रुपया (113, 81) और···दस घोड़े **बतौर तोहफ़े के** दिये (24, 51);

के बाद और बाद···के—थोड़ी-थोड़ी **देर के बाद** चौंकना (66, 98) और **बाद आठ दिन के** बोलना (24, 19);

के बावजूद और बावजूद···के—**मतभेदों के बावजूद** आदर (II, 25-7-1966, 24), और **बावजूद सब बातों के** मालूम होना (44, 20);

के लायक़ और लायक़···के—**बहस के लायक** विद्या (44, 45), और···

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब यह लड़का है, लायक़ सफ़र के नहीं हुआ (24, 107);

के विना और बिना···के-- **नियोजन के बिना** किकास (IV, 13-8-1972), और **बिना किसी लज्जा के** मुसकराना (116, 23);

के मारे और मारे···के—हीरासिंह **शर्म के मारे** कुछ बोल नहीं सका (44, 117), और मारे हंटरों के तेरी खाल उधेड़ दूँगा (54, 64);

की बनिस्वत और बनिस्वत···के—शहरों की बनिस्वत गाँव (II, 10-11-1966, 22) और बनिस्वत इन इम्तहान के ये इम्तहान (II, 20-8-1963, 11);

के अन्दर और अन्दर···के—चादर के अन्दर तड़पकर रहना (66, 56), और···मैं···**अन्दर बाग** के गया (24, 54);

के करीब और करीब···के—महल के करीब हवेली बनवाना (24, 31), और **करीब दो कोस के** जब गया, वह बाग नज़र पड़ा (24, 125);

'के पद' परसर्ग बहुधा प्रतिक्रम में प्रयुक्त होता है, जैसे, **मय लटनी के** आना (52, 45), मय सिपाहियों के आ धमकना (IV, 20-5-1973), **मय सूद के** वापस लेना (29, 35);

'के बिना' और 'के बगैर' परसर्ग सरल द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त से जुड़ते हुए 'के' योजक को सदा खो देते हैं, वे कृदन्त के आगे या पीछे प्रयुक्त हो सकते हैं, जैसे, उसके यहाँ जाये बिना गुज़ारा भी नहीं है (1, 190), रिहर्सल **किये बगैर** उसने भगवान के आदेश की तामील की···(136, 136), पर लड़का इसका **बिना** कुछ जवाब दिये खड़ा था (44, 100), नूरुद्दीन बगैर कुछ कहे-सुने ···एक कुर्सी पर बैठ गया (113, 48-49);

क्रियाविशेषणों और विशेषणों के आधार पर बने कुछ परसर्गों का शब्दार्थ सूचक अंश क्रियाविशेषण जोड़ सकता है, जैसे, शाही मस्जिद के **ठीक** सामने (113, 16) समाप्ति के तुरन्त पश्चात् (115, 408), राष्ट्रपिता के **इतने** निकट (115, 22), माथे के **काफ़ी** आगे (44, 20), मकान हमारे प्रयोजन के **बहुत** अनुकूल था (97, 88), वह गुफा के **सीधे** ऊपर होता·· (88, 21);

संस्कृत के विशेषणों के आधार पर बने कुछ परसर्गों का शाब्दिक अंश तुलना की अवस्थाओं के परप्रत्यय जोड़ सकता है, जैसे, कल्पित वैभव **के समीपतर** आना (157, 23)।

क्रियाविशेषणों के आधार पर बने कुछ परसर्गों का शाब्दिक अंश नामिक क्रियापरक समासों के नामिक अंश के रूप में प्रयुक्त हो सकता है, जैसे, अय्यर ने वापस बटुआ उन्हीं **के आगे** कर दिया (44, 25), ···(लड़का) उसकी दोनों बाँहों को रज़ाई **के अन्दर कर दिया** (44, 112)।

कुछ नामधातुज परसर्ग जो परसर्गीय समासों के आधार पर व्युत्पन्न हुए हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनसे पूरी तरह अपना सम्बन्ध नहीं खो पाये हैं, क्योंकि वे मूल परसर्ग समेत प्रयुक्त हो सकते हैं, उदाहरणार्थ :

के बल और के बल पर--दिलीप **सिर के बल** गिरा (3, 124) और...जो हत्या—**भय के बल पर** दूसरे के वित चरती है (72, 148);

के बदले और के बदले में—श्रद्धा के बदले स्नेह (17, 227) और एक टप **चाय के बदले में** ज़्यादा रुपये (II, 5-7-1966, 7);

के मुकाबले और के मुकाबले में--मिस **रेमाण्ड के मुकाबले** हर्ष (V, दीपावली विशेषांक, 1962, 83) और दोनों **साथियों के मुकाबले में** देबू का व्यक्तित्व (17, 201);

के नाते और के नाते से—**तर्क के नाते** अवरोध (97, 176) और...**प्रेम के नाते से** वह अब भी मेरी है (139, 108);

के मध्य और के मध्य में—धरती और आकाश के मध्य लटकना (7, 20) और **प्रांगण के मध्य में** होना (99, 42)।

कुछ नामधातुज परसर्गों का शाब्दिक अंश विशेषण जोड़ सकता है, जैसे, अमीर ने सिन्धु नदी के उस पार दो दिन विश्राम किया (4, 46), नदी के **इस पार** अमीर का लश्कर विश्राम करने लगा (4, 46), बोल्शाई थियेटर के **दाहिनी ओर** माली थियेटर है (99, 46), रास्ते में रेल के **दोनों तरफ** गेहूँ और चुकन्दर के हरे-भरे क्षेत्र थे (118, 43)।

कुछ नामधातुज परसर्ग मूल सरल परसर्ग जोड़कर मानो फिर से संज्ञाओं की कोटि में लौटते हों, जैसे, लेकिन वे बाज़ार **की ओर को** मुड़े (17, 206), तभी एक बुजुर्ग जिला कचहरी **की तरफ़ को** जाते दिखायी दिए थे (17, 241)।

नामधातुज परसर्गों से परसर्गीय समाज जुड़ जाते हैं जो बनावट की दृष्टि से सामान्यीकृत अर्थ वाले शब्द-समूह हैं जो कुछ साधित (बहुधा नामधातुज) परसर्गों के समानार्थी हैं, जैसे :

परसर्ग	परसर्गीय समास
के कारण, के सबब	की वजह से
के द्वारा, के ज़रिये	के माध्यम से, की सहायता (मदद) से
की बाबत, की निस्बत	के बारे में, के विषय पर (में), के सम्बन्ध में
की अपेक्षा	की तुलना में
के बजाय, की जगह	के एवज में, के स्थान पर (में)
के बतौर	के रूप में, की शक्ल में, की हैसियत से, के तौर पर।

साधित परसर्ग के प्रतिकूल परसर्गीय समाज तीसरा घटक यानी मूल परसर्ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी नहीं छोड़ते, क्योंकि इससे समाज का विखण्डन हो जाता है और वह नाम-मूलक परसर्ग में बदल जाता है।

परसर्गीय प्रकार्य वे स्थिर शब्द-समूह निभा सकते हैं जो तृतीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त और पूर्वस्थित मूल परसर्ग के मेल से बने हैं यानी 'को (से) लेकर' और 'को छोड़कर', उदाहरणार्थ : भाभी पर हाथ **उठाने को लेकर** भाई साहब की ···कटु आलोचना मैंने समय-समय पर की थी (108, 71), **भूवाली से लेकर** डाक बँगले तक सारी सड़कें जाम हो गयीं (52, 97), आखिर **आँखों को छोड़कर** उसका सारा बदन उसमें घुस गया (25, 84), पर इन शब्द-समूहों के ये प्रकार्य केवल निश्चित प्रसंग में व्यक्त होते हैं जिसके बाहर तृतीय क्रियाविशेषण कृदन्त अपना सामान्य अर्थ प्रकट करते हैं, जैसे, उस **रकम को लेकर** मैं अपनी फैमिली समेत दिल्ली आ गया (30, 21), ···हातिम ने जंगल को **सरहद पर छोड़कर** वे परीज़ाद···वापस गये (25, 78)।

मूल परसर्ग

मूल परसर्ग कारक विभक्तियाँ नहीं हैं जो इनके प्रयोग की विशेषता से स्पष्ट हो जाता है :

पहले, एक ही परसर्ग दो या अधिक शब्दों से जुड़ सकता है, जैसे, वनाली **और** लीला **ने**···निलासियाँ ले लीं (96, 63), ···गोविन्द और विजय **में** लड़ाई हो रही है (120, 50), ···प्रजा की उत्सुकता इस भाई-भाई **के** द्वेषहीन युद्ध में बहुत बढ़ गयी थी (46, 18)।

दूसरे, परसर्ग और उस शब्द के बीच जिससे वह सम्बन्ध रखता है कुछ और शब्द हो सकता है, जैसे, (क) निपात—उसी जलन ही में तो मैंने···तय कर डाला कि···(1, 3), मगर तुमने भीतर **तक का** खून पिया है (102, 65); (ख) 'आदि' सहायक शब्द—वृन्दावन लाल वर्मा आदि ने राष्ट्रीय चेतना से हमारे जनमानस को खूब चेताया (1, 235); (ग) कोई अर्थपूर्ण शब्द जो समानाधिकरण के रूप में आता है—हम **लोगों** का पक्ष विजयी हो (139, 136), मुझ **अज़ीज़** को तुमने अपनी दया से सब कुछ दे दिया (24, 5); (घ) आदि वाक्य—जाइलसिंह ने गाँव के भेदी मनोहर कलाल, जिसे सब केवल कलाल कहकर पुकारते थे, **को** सम्बोधित किया (75, 164), ···सामाजिक न्याय के लिए काम करने, जिससे तेज़ी से बढ़ रहे उत्पादन का वितरण समानता के आधार पर हो सके, की दिशा में निरन्तर प्रयत्न करने होंगे (II, 10-2-1970, 27)।

तीसरे, एक ही शब्द से दो मूल परसर्ग सम्बन्ध रख सकते हैं, जैसे, पहाड़ों के **सिर पर की** रोशनियाँ तारा-सी जान पड़ती थीं (44, 36), ···तो कितने किराये **तक का** मकान चाहती हो (73, 42)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'का' परसर्ग। 'का' परसर्ग अमूर्त विकारी परसर्ग है जो सभी परसर्गों में सबसे प्रचलित है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर 'क' निम्नलिखित सम्बन्ध व्यक्त करता है :

(1) विशेषणात्मक जो विशेषणात्मक-द्रव्यवाचक और विशेषणात्मक-गुणात्मक में विभक्त हैं।

'का' परसर्ग सहित द्रव्यवाचक शब्द-समुदायों के ये भेद हैं :

(1) सम्बन्धवाचक (स्वामित्ववाचक) जिसमें मुख्य घटक ठोस द्रव्य (भौतिक पदार्थ) का अर्थ रखता है और 'का' परसर्गसहित आश्रित घटक वह व्यक्ति सूचित करता है जिसे इस पदार्थ का स्वामित्व हो, जैसे, रामदास का अँगोछा (102, 37), सहारा की मोटर (69, 105), इसीला का घोड़ा (103, 24);

(2) गुणात्मक स्वामित्ववाचक जिसमें मुख्य घटक नामिकीकृत गुण का अर्थ रखता है, जैसे, पुरोहित की लोलुपता (69, 128), चंद्रा की सुन्दरता (113, 17), आकाश की नीलिमा (103, 35);

(3) पूर्णतासूचक सम्बन्धवाचक—जिसमें 'का' परसर्ग सहित आश्रित घटक कोई पदार्थ सूचित करता है जिसका अंश मुख्य घटक व्यक्त करता है, जैसे, पहाड़ की चोटी (103, 102), घोड़ों के खुर (4, 58), पति की सूरत (72, 80), घर का दरवाज़ा (14, 28);

(4) स्थानवाचक सम्बन्धवाचक, जैसे, गज़नी का अमीर (4, 54), इस बाग का मालिक (25, 73), अजन्ता और एल्लोरा की गुफाएँ (115, 331);

(5) कालवाचक सम्बन्धवाचक, जैसे, फाल्गुन की पूर्णिमा (72, 29), नये साल का आदर (V, जनवरी, 1963, 4), जेठ की दुपहरियाँ (126, 92)।

(6) पूर्णता विभक्तिसूचक जिसमें आश्रित घटक पूर्ण पदार्थ और मुख्य घटक इसका कोई अंश सूचित करते हैं और दोनों के सम्बन्ध विभक्तिसूचक हैं, जैसे, दही के दो मटके (69, 66), नमक का एक डिब्बा (52, 142), रुपये का सोलहवाँ भाग (146, 445), पृथ्वी का एक-तिहाई भाग (88, 64);

(7) पूर्णता चयनसूचक जिसमें आश्रित घटक सजातीय पदार्थों का समूह और मुख्य घटक इस समूह का एक ही पदार्थ सूचित करते हैं, जैसे, गुरुओं का गुरु (140, 84), गुण्डों का गुण्डा (140, 55), देवों का देव (84, 13), बादशाहों का बादशाह (4, 43)।

'का' परसर्ग सहित गुणात्मक शब्द-समुदायों के ये भेद हैं :

(1) शुद्ध गुणात्मक जिसमें आश्रित घटक मुख्य घटक की गुणात्मक विशेषता व्यक्त करता है, जैसे, तटस्थता की नीति (115, 401), तरुणाई के सपने (103, 498), समानता का आधार (141, 113);

(2) मात्रात्मक-गुणात्मक जिसमें आश्रित घटक मुख्य घटक की मात्रात्मक-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुणात्मक विशेषता व्यक्त करता है, जैसे, दस-ग्यारह साल का लड़का (15, 13), 24 घण्टे का दिन (88, 27), तीन इंच का व्यास (94, 751), सोलह सेर का गुड़ (102, 32);

(3) गुणात्मक-सम्बन्धवाचक जिसमें आश्रित घटक पदार्थ से सम्बन्ध स्थापित करने के ज़रिये मुख्य घटक की गुणात्मक विशेषता व्यक्त करता है, जैसे, आम के फल (50, 16), रुई, ऊन तथा रेशम के कपड़े (115, 112), नारी का जीवन (115, 364);

(4) स्थानवाचक, जैसे, यहाँ की हवा (67, 34), बाहर का बरामदा (44, 14), नीचे आँगन (72, 55);

(5) कालवाचक, जैसे, आज और कल के दृश्य (70, 77), तत्काल के प्राणी (44, 35)।

(2) कर्तृवाचक जो न केवल संज्ञाप्रधान वरन् क्रियाप्रधान शब्द-समुदायों में देखे जा सकते हैं, जैसे :

(i) संज्ञासंलग्न—चन्दा की हँसी (103, 32), महाराज का दबाव (4, 55), औरतों का रुदन (102, 73), अंग्रेजों का आगमन (115, 239);

(ii) क्रियासंलग्न जिसके ये भेद हैं : (क) कृदन्तसंलग्न—रुस्तमखाँ का भेजा हुआ (103, 227), ईश्वर का दिया हुआ (66, 122) और (ख) तुमर्थसंलग्न—पत्नी का कहना (84, 35), दुकानदारों का लेना (69, 119)।

(iii) कर्मवाचक जो संज्ञाप्रधान, क्रियाप्रधान एवं विशेषणप्रधान शब्द-समुदायों में देखे जा सकते हैं, जैसे :

(क) संज्ञासंलग्न—फ़सल की कटाई (88, 22), बीज की बोवाई (120 75), देश का बँटवारा (2, 371);

(ख) क्रियासंलग्न जिसके ये भेद हैं : (क) कृदन्तसंलग्न—हाथ का लिखा हुआ (139, 104), भाग्य का लिखा (140, 44), और (ख) तुमर्थसंलग्न—खज़ान-चन्द का मारा जाना (66, 180), कामदेव का जलाया जाना (84, 120), जूता का रखना (99, 78), चित्र का बनाना (143, 40);

(ग) विशेषणसंलग्न—प्रेम की भूखी (139, 123), कायदे का पाबन्द (66, 101), करार का पक्का (4, 239), ज़बान की तीखी (3, 23)।

(घ) कर्तृवाचक-कर्मवाचक जो भाववाचक क्रियाओं में देखे जा सकते हैं, जैसे, उन गुफाओं का बनना प्रशंसा के योग्य तो है···(2, 49), ···**इंजनों का बनना भी** प्रारम्भ हो गया है (115, 324)।

(ङ) क्रियाविशेषणवाचक जो क्रियाप्रधान और विशेषणप्रधान शब्द-समुदायों में देखे जा सकते हैं, जैसे :

(i) क्रिया (कृदन्त) संलग्न—सुबह की पढ़ी (108, 77), रातों का जगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ (31, 27);

(ii) विशेषणसंलग्न—वर्षों का पुराना (16, 14), दो दिन का भूखा (13, 100)।

(6) विधेयवाचक (बहुत कम), जैसे, ···उसकी उम्र अब चालीस की होने को आयी थी (13, 83)।

वाक्य के स्तर पर 'का' परसर्ग सहित शब्द वाक्य के निम्न अंगों के रूप में आता है :

(i) विशेषण (संज्ञासंलग्न)—मैत्री की नीति (145, 42), प्रासाद का मद्य (4, 31), आस-पास के नौकर-चाकर (44, 23); (2) गौण कर्म जिसके ये भेद हैं : (क) संज्ञासंलग्न—अज़ीज़ की चर्चा छेड़ देना कभी नहीं भूलती (58, 15), ···गोविन्द निश्चित रूप से अपने नये बीज की बोवाई देखने गया होगा (120, 75); (ख) क्रियासंलग्न—मैं रुस्तम खाँ का भेजा हुआ हूँ (103, 227); इस भीष्म प्रण के करने से ही देवव्रत का नाम भीष्म पड़ा (84, 134); (ग) विशेषणसंलग्न—मैं धन की भूखी नहीं हूँ (66, 58), मैं अपने करार का पक्का हूँ (4, 239); (3) क्रियाविशेषण (मुख्यतः कालवाचक)—सीधे जाते तो कभी के पहुँच जाते···(103, 344), अबकी घर चलूँगी तो···(73, 56), दो दिन का भूखा हूँ (13, 100); (4) विधेय—कंगन सात सौ के थे और रिंग डेढ़ सौ के (65, 65), वे 85 वर्ष के थे (IV, 16-12-1972)।

'का' परसर्ग शुद्ध व्याकरणिक प्रकार्य में आ सकता है तब वह निम्नलिखित शब्द निर्माण विषयक प्रक्रिया में भाग लेता है : (क) वाक्यविन्यासात्मक शब्द-समुदाय के आधार पर नये शब्दों के निर्माण में उसकी मज़बूती जैसी की तैसी बनी है (99, 44), सब के सब···जहाँ के तहाँ खड़े रहे (13, 5); (ख) मुहावरों के निर्माण में—बात की बात में हमारा जहाज़···प्रयाण करने लगा (123, 4), ···यात्री ठट के ठट बारहों महीने इस महातीर्थ में आते···(4, 6), आम के आम गुठली का दाम (85, 49), ···और आन की आन में मर गया (84, 115), एक की दस सुनाना (85, 69); (ग) वर्णनात्मकक बलात्म रचनाओं के निर्माण में जिनके ये भेद हैं : (1) समुदायवाचक—सबके सब उठकर रमेश के घर गये (1, 247), लोगों की भीड़ की भीड़ इधर-उधर आ-जा रही थी (99, 29), यात्रियों के झुण्ड के झुण्ड पोर्टसइद की सैर करने चल दिये (123, 29), पूरे का पूरा वाक्य मैंने सोच लिया था (108, 54), वे पाँच-के-पाँच सौ ही खर्च हो जाते हैं (52, 13); (2) विभक्तिवाचक—···गाँव के गाँव ढोल बजाकर लूटते हैं (66, 54), घर के घर में लड़ाई होने लगी (22, 539), सोमवार के सोमवार मेला भरता है (22, 539); (3) व्यापार का पूर्ण विकाससूचक—दिलीप का हाथ उठा का उठा रह गया (3, 125), ···उसका मुँह खुला का खुला रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया (75, 34),...तब से पत्थर पर बैठा का बैठा हूँ; (4) व्यापार की रीतिवाचक विशेषतासूचक—हम वहीं के वहीं बैठे थे (44, 36), मैं बाहर का बाहर खड़ा रह गया (24, 54); (5) पदार्थ की स्थायी गुणात्मक विशेषतासूचक—हाँ, वह पेड़ वैसा का वैसा हरा-भरा खड़ा था (25, 95), बुड्ढा वैसा का वैसा है (17, 38)।

'के' परसर्ग—'के' परसर्ग अमूर्त परसर्गों में आता है। कुछ हद तक उसको 'का' परसर्ग का रूपान्तर समझा जा सकता है जो व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से संलग्न होकर कर्तृवाचक सम्बन्धों को व्यक्त करता है। संज्ञा आश्रित घटक की हैसियत से प्रयुक्त होती है। मुख्य घटक की हैसियत से यहाँ निम्न शब्द आते हैं: (क) निकट रिश्ता सूचित करने वाली संज्ञाएँ—लल्लन के लड़का हुआ (13, 52), ...कान्ति के लड़की हुई थी...(116, 25); (ख) सरल एवं संयुक्त प्रथम एवं द्वितीय क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त—हम लोगों के उतरते-उतरते एक और सज्जन आ गये (99, 67), छोटे भाई के रहते हुए मैं अपना विवाह कैसे करूँ (69, 234), रफी भाइयों के मनाये नहीं माना (140, 18); (ग) क्षणिक पूर्ववर्ती एवं अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त—इन लोगों के जाते ही गीता खाना बनाने में जुट गयी थी (V दीपावली विशेषांक, 1962, 62), मैं शरीर पर इतने कपड़ों के होते हुए भी पतलून के ऊपर कम्बल के ऊपर डालकर गर्म कमरे में बैठा हूँ (16, 13-14); (घ) तुमर्थ वह पिता के विरोध करने पर भी उसे रो-धोकर बनवा लेता है (66, 221), बल्लू के मुँह बनाने पर मिसेज़ मदन ने...कहा... (44, 20)—यह स्पष्ट है कि यदि 'के' की जगह 'का' होता तो वाक्य का अर्थ भी दूसरा होता—पिता का विरोध करने पर भी—इसमें पिता का कर्ता नहीं, कर्म है।

वाक्य के स्तर पर 'के' परसर्ग सहित शब्द गौण कर्म की हैसियत से या कर्ता की हैसियत से आता है: कपड़ों के होते हुए भी और लोगों के जाते ही।

'को' परसर्ग—'को' परसर्ग अमूर्त परसर्गों में आता है जो स्थायी रूप से क्रियाओं से आकर्षित होता है।

क्रियाप्रधान शब्द-समुदायों में शब्द संलग्न 'को' परसर्ग निम्न सम्बन्ध व्यक्त करता है: (1) कर्मविषयक, जिसके ये भेद हैं: (क) गौण कर्मविषयक (सम्प्रदानवाचक संज्ञा संलग्न)—रामशरण को दूध पिलाना (96, 53), बदमाम को सज़ा दिलाना (66, 16); (ख) प्रधान कर्मविषयक जिसकी हैसियत से व्यक्तिवाचक (मुख्यतः) संज्ञाएँ आती हैं—छुन्नू को पीटना (44, 56), रमानाथ को देखना (65, 8), बीवी को जगाना, (15, 6)।

(ii) क्रियाविशेषणात्मक—घर आना (16, 12), खेत को चल देना (5, 6)।

संज्ञाप्रधान शब्द-समुदायों में शब्दसंलग्न 'को' परसर्ग अग्रलिखित सम्बन्ध व्यक्त करता है:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(1) कर्तृवाचक—मर्द को संकोच (66, 138), निर्मला को चिन्ता (66, 165);

(2) कर्मवाचक—अक्लमंद को इशारा मूर्ख को तमाचा (37, 70);

(3) क्रियाविशेषणात्मक—रविवार की छुट्टी (23, 126), इतवार को काम (66, 93), सोमवार को बैठक (IX, 28-3-1972)।

विशेषणप्रधान शब्द-समुदायों में शब्दसंलग्न 'को' परसर्ग मुख्यत: कर्मविषयक सम्बन्ध व्यक्त करता है—कानों को अप्रिय (44, 30), मरने को तैयार (136, 185), करने को राज़ी (44, 19), जानने को उत्सुक (66, 95)।

वाक्य के स्तर पर 'को' परसर्ग सहित शब्द वाक्य के निम्न अंगों के रूप आता है :

(1) प्रधान कर्म जिसमें 'को' परसर्ग का अनिवार्य एवं विकल्पी प्रयोग हो सकता है। यदि प्रधान कर्म की हैसियत से व्यक्तिवाचक संज्ञा आती है तो 'को' का प्रयोग अनिवार्य होता है—मैं तो किसी दंदेकार को नहीं जानता (67, 32), ···और मेम साहब को···इधर भेजना (7, 86), वैद्य को बुलाने की हिम्मत न पड़ी (72, 147)। शेष संज्ञाओं के साथ 'को' का प्रयोग आम तौर पर विकल्पी होता है, पर कुछ स्थितियों में 'को' का प्रयोग प्रायः अनिवार्य होता है, जैसे, (क) जब प्रधान कार्य के साथ निश्चयवाचक सर्वनाम संलग्न होते हैं, जैसे, वह··· उस नाव को पकड़ना चाहती है (66, 7), —तुलना कीजिये—बाबू साहब ने ये पाँचों नाम कई बार सुझाए (66, 80), —इस चेहरे को टक भर देखता ही रहा (40, 76)—तुलना कीजिये—दिन-दिन उसकी वह पुस्तक पढ़ने की रुचि बढ़ने लगी (5, 9); (ख) जब प्रधान कर्म और विधेय असंलग्न (दूरवर्ती) होते हैं, जैसे, उसने कम्बल को अपनी पीठ से कुछ इस तरह बाँध लिया···(15, 17), पंखड़ियों को कीड़े खा रहे हैं (5, 22), वह अपने काम को सेवा और त्याग की भावना से करेगा (143, 25)—तुलना कीजिये—चलते समय कई डिबियाँ सिगरेट उसने झोले में रख ली थीं (96, 46); (ग) जब प्रधान कर्म उन क्रियाओं से प्रयुक्त होता है जो विशेष शाब्दिक-वाक्यात्मक स्थितियों में अपर्याप्त सूचना रखती हैं और जिनके साथ पूरक का प्रयोग अनिवार्य होता है, जैसे, ···उसने दिन को दिन और रात को रात समझा था (96, 4), दारोगाजी ने यथासम्भव इस मामले को गुप्त रखा (7, 9), मेरे एक मित्र अस्पताल को कसाईखाना कहते हैं (9, 114), बालों को उसने पीछे किया (44, 75) —तुलना कीजिये—उस रोग का कारण कुछ डॉक्टरों ने दुर्बलता बतलाया (53, 63), ···मैंने ज़मीन सोना बना लिया··· (69, 207)।

(2) गौण कर्म जिसके ये भेद हैं : (क) क्रियासंलग्न—फिर उसने पत्र और वक्तव्य मुफ़तलाल को सौंपे (143, 16), अमीर ने अवलिया को ऐसा ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्वासन···भेज दिया था (4, 49); (ख) संज्ञासंलग्न—यहाँ न रहने को घर है, न पहनने को वस्त्र, न खाने को अन्न (73, 21), भारत को 3 लाख टन अनाज की सप्लाई से सम्बन्धित एक समझौते पर···दोनों देश हस्ताक्षर करेंगे (IV, 16-12-1974); (ग) विशेषणसंलग्न—वह मरने को तैयार थे (139, 185), आप जैसा कहेंगे, करने को राज़ी हूँ (44, 19)।

(3) क्रियाविशेषण (बहुधा स्थानवाचक एवं कालवाचक)—ड्राइंग हाल से घर को आते, मैंने उससे पूछा···(16, 12), ···माल की सुपुर्दगी किसी आगामी दिवस को दी जायेगी (101, 248), उसके मुख का एक कोना भीतर को खिंच गया (96, 12), ···एक किताब पढ़ने को मँगायी (143, 54)।

(4) निर्धारक जिसके ये भेद हैं: (क) कर्तृवाचक—···सरला को सत्य की याद आयी है (5, 53), मनुष्य को मुझसे मुक्ति पानी चाहिए (39, 126); (ख) क्रियाविशेषणात्मक—···हातिम ने उसे कुछ भी न बताया कि रात को क्या हुआ था (25, 46), मौजूदा समझौते के अन्तर्गत, जो 31 दिसम्बर को समाप्त हो रहा है···(IV, 16-12-1974)।

(5) विधेय—उसका क्रियार्थक अंश जो शामिल होता है: (क) संयुक्त क्रियामूलक विधेय—जाने रात बढ़ने को थी या ढलने को थी (44, 65), लड़ाई शुरू होने को हुई (84, 152), जिस पर गिरने को होता है, उस पर गिरता है (102, 77); (ख) जटिल क्रियामूलक विधेय—मैं अब भी कहने को सोचती हूँ··· (44, 112), अन्दर-ही-अन्दर आपका दिल उन्हें क़त्ल करने को चाहता रहेगा (V, विशेषांक, 1962, 111)।

'में' परसर्ग—'में' परसर्ग ठोस परसर्गों में आता है जो 'किसी द्रव्य या प्रक्रिया के भीतर होने' या 'किसी द्रव्य या प्रक्रिया में घुसने' का अर्थ रखता है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर 'में' परसर्ग निम्न सम्बन्ध व्यक्त करता है:

(1) क्रियाविशेषणात्मक जो स्थानवाचक, कालवाचक, उद्देश्यवाचक और कारकवाचक सम्बन्धों में विभक्त होता है।

स्थानवाचक सम्बन्धों के निम्न भेद हैं: (क) अन्दरस्थ स्थानवाचक—आँखों में आँसू (39, 52), गाँव में रहना (65, 2), पिंजरे में बन्द (72, 35); (ख) अन्तर्भेदी स्थानवाचक—त्रिपुरा में घुसपैठ (XI, 28-9-1966), कमरे में घुस आना (16, 123), ···वे···अन्धकार में विलीन हो गये (16, 77); (ग) प्रतिबन्धक स्थानवाचक—वे बीच में चौड़े और ऊपर नुकीले होते हैं (50, 30), बेल के फल गोल और आकार में काफ़ी बड़े होते हैं (50, 30)।

कालवाचक सम्बन्धों के निम्न भेद हैं: (क) शुद्ध कालवाचक—आध घण्टे में पहुँचना (15, 75), असमय में दिवंगत (125, 233), बचपन में ही मर जाना (139, 13); (ख) मात्रात्मक कालवाचक—साल में दो बार (119, 9), दिन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो-चार घण्टे (1, 62), सप्ताह में तीन या चार दिन (123, 141)।

उद्देश्यवाचक सम्बन्ध केवल क्रियाप्रधान शब्द-समुदायों में (गतिवाचक क्रियाओं के साथ)—खोज में दौड़ना (73, 6), छुट्टी में आना (129, 9)।

कारणवाचक सम्बन्ध केवल विशेषणप्रधान शब्द-समुदायों में—गुस्से में पागल (103, 488), अकड़ में मस्त (4, 49)।

(2) कर्मविषयक जिसके ये भेद हैं: (क) स्पर्शक्षम कर्मसंलग्न सम्बन्ध—बर्फ़ में पाँव गाड़ना (15, 112), चिट्ठियाँ जेब में रखना (65, 54), हाथ में कटार लेना (103, 121); (ख) ओढ़नाक्षम कर्म संलग्न सम्बन्ध—कम्बल में लपेट लेना (96, 50), कागज़ में बाँधना (7, 58); (ग) परिवर्तनसूचक कर्मसंलग्न सम्बन्ध—लगान को नकदी में बदलना (II, 10-2-1970, 12), भैंस को गाय में बदलना (V, दीपावली विशेषांक, 1962, 7); (घ) विभक्तिवाचक कर्मसंलग्न सम्बन्ध—टुकड़ों में बाँटना (115, 288); (च) प्रतिपूर्तिसूचक कर्मसंलग्न सम्बन्ध—एक रुपये में खरीदना (120, 32), एक रुपये में आठ फ़ोटो (34, 14), दो आने में ढाई सेर (103, 38); (छ) विस्तारसूचक कर्मसंलग्न सम्बन्ध—विकास में रुकावट (II, 10-2-1970, 22), संकलन में सहायता (88, 6), भावों में उतार-चढ़ाव (XI, 15-3-1972)।

शुद्ध कर्मविषयक सम्बन्धों के सिवा स्थानवाचक कर्मविषयक और संसर्गसूचक सम्बन्ध भी मौजूद हैं।

स्थानवाचक कर्मविषयक सम्बन्ध शुद्ध स्थानवाचक सम्बन्धों से इसमें भिन्न हैं कि मुख्य घटक की हैसियत से यहाँ भाववाचक संज्ञाएँ आती हैं—आँखों में नींद (39, 100), हृदय में शान्ति (139, 139), मन में श्रद्धा (64, 35)। यदि आश्रित घटक की हैसियत से व्यक्तिवाचक (प्राणिवाचक) संज्ञाएँ आती हैं। कर्म-विषयक सम्बन्धों की जगह कर्तावाचक सम्बन्ध में आते हैं—बहू में आत्मसम्मान (70, 29)।

यहाँ मुख्य घटक के रूप में विशेषणों का प्रयोग भी हो सकता है, जैसे, दम्पति-विज्ञान में कुशल (66, 42), गरज़ में अन्धी (16, 48), काम में चतुर (66, 39)।

संसर्गसूचक सम्बन्धों के दो भेद हैं: (क) समान द्रव्यों संलग्न सम्बन्ध—दोनों पक्षों में सम्पर्क (XI, 9-1-1966), लोगों में गाली-गलौज (65, 42), हरिजनों में वितरण (115, 22), और (ख) विभिन्न द्रव्यों संलग्न सम्बन्ध—संस्कृति और धर्म में अन्तर (115, 292), गोविन्द और विजय में लड़ाई (120, 50)।

(3) विशेषणात्मक जिसके भी दो भेद हैं: (1) शुद्ध विशेषणात्मक (बहुत कम)—ज़नानी पोशाकों में लड़के (4, 43), और विशेषणात्मक क्रिया-विशेषणात्मक—टोलियों में जाना (99, 42), जल्दी में चढ़ना (103, 224),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुस्से में बोलना (116, 60)।

वाक्य के स्तर पर 'में' परसर्ग सहित शब्द निम्न अंगों के रूप में आता है : (1) क्रियाविशेषण जिसके ये भेद हैं : (क) स्थानवाचक—ज़रूर कोई जानवर कुएँ में गिरकर मर गया होगा (71, 67), वह अब संसार में अकेली थी (139, 176); (ख) कालवाचक—···50 वर्षों की अवधि में 42 प्रतिशत वृद्धि हुई है (II, 25-2-1980), एक रुपये में पाँच फ़ोटो और मज़ा यह कि पाँच मिनट में तैयार (34, 14); (ग) उद्देश्यवाचक—वर की खोज में दौड़ने लगे (73, 6), ···लड़के कलकत्ता से छुट्टी में घर आये···(119, 9); (घ) कारणवाचक—वे डर रही थीं कि कहीं लड़का इस गुस्से में पागल न हो जाए (103, 488), पर इस वक्त मैं खुद अपनी गरज़ में अन्धी हो रही थी (16, 42); (2) गौण कर्म जिसके ये भेद हैं : (क) क्रिया-संलग्न—अतएव उसने छुरा उसी के कपड़े में पोंछ लिया 103, 221), यह सहानुभूति उपेक्षा में बदल गयी (16, 126); (ख) संज्ञा-संलग्न—इस प्रेम में करुणा थी (66, 49), मनोभावों में कभी परिवर्तन नहीं होता (64, 237); (घ) विशेषण-संलग्न—कुन्ती सुबह से इन तैयारियों में व्यस्त थी (16, 104), यह भक्ति-काल दो शाखाओं में विभाजित था (115, 175); (3) विशेषण (बहुत कम)—ज़नानी पोशाक में लड़के, नकली बाल लगाये, नाचते-गाते चलते थे···(4, 42); (4) निर्धारक (क्रियाविशेषणात्मक)—सितम्बर, 1969 में दक्षिण भारत में चाय बागानों में लगी हुई कुल श्रम-शक्ति में महिला श्रमिकों का 51.4% था (II, 25-2-1970, 14), केरल राज्य में किसी प्रवृत्ति का पता लगाना सम्भव नहीं है (II, 25-2-1970, 14); (5) विधेय जिसमें : (क) जटिल क्रियामूलक विधेय का क्रियार्थक घटक है—यह भी सुनने में आया था कि···(66, 121), ···मैंने जो काम बताया, करने में लग गयी (44, 86); (ख) संयुक्त नामिक विधेय का नामिक घटक है—बंगला बहुत खस्ता हालत में था (136, 33), मैं इस वक्त आपे में नहीं हूँ (76, 92)।

'से' परसर्ग : 'से' परसर्ग ठोस परसर्गों में आता है। वह 'किसी द्रव्य से मिलने' या 'किसी द्रव्य से अलग होने' का शाब्दिक अर्थ रखता है। साथ ही 'से' करण-वाचक अर्थ भी रखता है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर 'से' परसर्ग संलग्न शब्द निम्न सम्बन्धों को व्यक्त करता है :

(1) क्रियाविशेषणात्मक जिसके ये भेद हैं : स्थानवाचक, कालवाचक, कारण-वाचक, विशेषणात्मक क्रियाविशेषणात्मक और तुलनात्मक।

स्थानवाचक सम्बन्धों के अपने भेद हैं : (क) पृथकतावाचक—पहाड़ से आना (102, 77), गाड़ी से उतरना (73, 27), आकाश से बारिश (102, 3);

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) निष्क्रमणवाचक—घर से निकलना (64, 225), कुएँ से भरना (103, 27), संदूक़ची में से दो चीज़ें निकालना (65, 62); (ग) प्रतिबन्धक—सिर से पाँव तक देखना (65, 234), सिर से पैर तक नंगी (15, 32)।

कालवाचक सम्बन्धों के अपने भेद भी हैं: (क) पृथकतावाचक—उसी दिन से बन्द करना (65, 232), तभी से बेहोश (3, 125) और (ख) प्रतिबन्धक—बहुत दिन से सुनना (103, 26), चार वर्षों से दूर (203, ग)।

कारणवाचक सम्बन्ध, जैसे, लज्जा से गड़ा जाना (65, 152), निर्दयता से दुख (72, 35), लज्जा से लाल (53, 71)।

विशेषणात्मक-क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्ध जो केवल क्रियाप्रधान शब्द-समुदायों में मिलते हैं, जैसे, मुश्किल से पहचानना (72, 17), आराम से रहना (72, 56), ज़ोर से पुकारना (66, 194)।

तुलनात्मक सम्बन्ध जो केवल विशेषणप्रधान शब्द-समुदायों में मिलते हैं, जैसे, रजनी से काली वेदना, समुद्र से विस्तृत दुख (39, 115), पिता से कट्टर औरंगज़ेब (2, 185)।

(2) कर्मविषयक, जिसके ये भेद हैं: (क) कारणवाचक—रस्से से मारना (103, 45), ट्रेन से वापसी यात्रा (115, 334), घी से तर-बतर (16, 112); (ख) पृथकतावाचक—चित्र से हटाना (30, 63), उत्पीड़न से मुक्ति (141, 2), बन्धन से मुक्त (72, 259); (ग) संगमवाचक—बछेड़ों से लड़ना (103, 118), बाप से लड़ाई (65, 162), प्यार से ओत-प्रोत (3, 36); (घ) कर्तावाचक—नौकर से पिटवाना (103, 553), प्यारी से रचवाना (103, 93)।

(3) कर्ताविषयक जो क्रियाप्रधान एवं विशेषणप्रधान शब्द-समुदाय में मिलते हैं, जैसे, छत्रपति से देखा जाना (47, 13), चमारों से पिटना (103, 209), गद्दारों से घिरना (114, 92), नौकर से अछूता (3, 20)।

वाक्य के स्तर पर से परसर्ग सहित शब्द निम्न अंगों के रूप में आता है: (1) क्रियाविशेषण जिसके अपने ये भेद हैं: (क) स्थानवाचक—उसके मुँह से आवाज नहीं निकल रही थी। केवल आँखों से पानी निकल रहा था (103, 546), आकाश से भयानक मूसलधार वर्षा हो रही थी (102, 3); (ख) कालवाचक—उसके पुरखे पुराने ज़माने से ही गाँव में रहते थे (103, 69), चार वर्षों से मैं उन लोगों से दूर हूँ (103, ग); (ग) कारणवाचक—···ख़ुशी से पागल होकर वह चीख उठा···(113, 7), लज्जा से गड़ा जाता था (65, 251); (घ) रीति-वाचक—···मैं शान्ति से मर रही हूँ (15, 177), वह अपना घर मुश्किल से पहचान सकी (72, 17); (च) तुलनात्मक—यह गाँव मुझे इन लोगों से भी प्यारा है (139, 191), तुमने मेरी इस चाँदनी से भी साफ़, मोम से भी नरम औरत को हाथ कैसे लगाया?; (2) गौण कर्म, जैसे, मुझे आपकी आज्ञा से इन्कार नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है (72, 192), वह स्वयं साहित्य से अपरिचित थे (72, 210); (3) निर्धारक (कर्तृवाची), जैसे, रमनी से न रहा गया (5, 26), छत्रपति से यह दृश्य और अधिक न देखा गया (47, 13), साले और ससुर से जो कुछ करते बने उन्होंने किया (83, 43)।

'से' परसर्ग शुद्ध व्याकरणिक प्रकार्य भी निभाता है जब वह विशेषणों की द्विरुक्ति में आकर विश्लेषणात्मक उत्तमावस्था बनाता है, जैसे, अच्छी से अच्छी सिलाई-कढ़ाई (108, 61), साधारण-से-साधारण बहाने पर (83, 7), बड़े-से-बड़े बलिदान (144, 8)।

'से' परसर्ग विश्लेषणात्मक उत्तरावस्था भी बनाता है जिसमें द्विरुक्त विशेषणोंका अन्तिम घटक उत्तरावस्था का परप्रत्यय अपनाये हुए है, जैसे, खेत लघु से लघुतर बनते जा रहे हैं (115, 371), ...उसका विश्वास दृढ़ से दृढ़तर होता जाता (17, 85)।

'पर' परसर्ग। 'पर' परसर्ग ठोस परसर्गों में आता है। वह 'किसी द्रव्य के ऊपर होने' या 'किसी द्रव्य पर रखने' का शाब्दिक अर्थ व्यक्त करता है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर वह निम्न सम्बन्ध प्रकट करता है :

(1) क्रियाविशेषणात्मक जिसके अपने भेद हैं : (क) स्थानवाचक—गालों पर बहना (139, 66), टीले पर झोंपड़ी (126, 59); (ख) कालवाचक—समय पर जाना (44, 58), ईद पर हर साल (7, 20); (ग) उद्देश्यवाचक—दौरे पर निकलना (60, 13), छुट्टी पर जाना (116, 36); (घ) विशेषणात्मक-क्रियाविशेषणात्मक—इशारे पर चलना (103, 139), उँगली पर नाचना (85, 59)।

(2) कर्मविषयक, जिसके अपने ये भेद हैं : (क) शुद्ध कर्मविषयक (स्पर्शक्षम कर्म संलग्न सम्बन्ध)—चूड़ियाँ ज़मीन पर पटकना (65, 275), पेड़ पर चोंच मारना (116, 56), हाथ पर लगाना (116, 72); (ख) प्रतिबन्धक—भूमि पर दबाव (115, 288), दीनों पर दयालु (70, 4), बातों पर सोचना (116, 56); (ग) सम्बन्धवाचक, जो अवस्था और द्रव्य सूचित करते हैं जिसके सिलसिले में यह अवस्था व्यक्त होती है, जैसे, बुराइयों पर पछताना (73, 5), मल्लाहों पर क्रोध (72, 161), कृष्ण पर प्रेम (24, 110); (घ) कारणवाचक—घोड़े पर घूमना (73, 58), रथ पर चलना (39, 136), टाँगे पर चलना (65, 139); (च) स्थानवाचक—साड़ी को सिर पर खींचना (139, 160), सिर पर रूमाल बाँधना (116, 29), मुँह पर प्रकाश (72, 245); (छ) गणनसूचक छाया सहित शुद्ध कर्मविषयक—महीने पर महीना (V, जनवरी, 1963, 66), प्याले पर प्याला (129, 70), औषधि पर औषधि (139, 122)।

वाक्य-स्तर पर 'पर' परसर्ग सहित शब्द अग्रलिखित अंगों के रूप में आता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है : (1) क्रियाविशेषण जिसके ये भेद हैं : (क) स्थानवाचक—झाड़ू फ़र्श पर गिर गया (16, 111), सड़क पर एकत्रित जनसमूह में से एक ने पूछा··· (113, 21), इस नाले पर एक छोटा-सा पुल है (V, जनवरी, 1963, 43); (ख) कालवाचक—मैं इस झंझट में दफ़्तर भी समय पर नहीं जा सका (44, 58),···वह दस्तबन्द नौकर के तनख़्वाह माँगने पर पहले भी कई बार खो चुका है (116, 53); (ग) रीतिवाचक—हिन्दुस्तानी फ़ौज अब जनता के आदेशों पर चलती है (116, 70), कल तक वह प्यारी के इशारे पर चलता था (103, 139); (घ) उद्देश्यवाचक—वह जल्दी ही लाम पर चला जायेगा (116, 29), अगले महीने वह छुट्टी पर घर जाएगा (116, 56); (2) गौण कर्म, जैसे, दारोगा··· द्वार पर ठोकर मारने लगा (65, 239), वह अपने साहस पर प्रसन्न थे (72, 47), चमारों पर पुलिस ने अपना ज़ुल्म शुरू किया (103, 369); (3) निर्धारक (क्रियाविशेषणात्मक)—ईद पर हर साल वह कपड़े बदला करता था (7, 20), दिन-त्यौहार पर इनाम मिलते थे (7, 40); (4) विधेय (संयुक्त नामिक विधेय का नामिक अंश)—मुझसे कहते हैं, मैं गलती पर हूँ (136, 62), साम्प्रदायिक उपद्रव ज़ोरों पर थे (136, 62)।

'भी' निपात से मिलकर 'पर' परसर्ग तुमर्थ के आधार पर बनी अनुमति-वाचक रचनाओं के गठन के लिए आता है, जैसे, लतिका चाहने पर भी उनसे कुछ भी नहीं पूछ पाती···(52, 91), वेतन थोड़ा होने पर भी उसके वस्त्र दूसरों से साफ़ होते थे (139, 25)।

'तक' परसर्ग। 'तक' परसर्ग ठोस परसर्गों में आता है। वह व्यापार और अवस्था के होने की पराकाष्ठा सूचित करने का शाब्दिक अर्थ रखता है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर 'तक' परसर्ग केवल क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करता है जिसके ये भेद हैं : (क) स्थानवाचक—नुक्कड़ तक जाना (66, 196), घुटनों तक कीचड़ (102, 24), तीन इंच तक लम्बा (50, 26); (ख) कालवाचक—सूर्यास्त तक लड़ना (4, 76), लम्बे अरसे तक इलाज (145, 40), आज तक प्रचलित (8, 83)।

वाक्य के स्तर पर 'तक' परसर्ग सहित शब्द क्रियाविशेषण के अंग के रूप में आता है जिसके ये भेद हैं : (क) स्थानवाचक—बाजरे के खेत कन्धों तक लहरा रहे थे (44, 20), कभी-कभी तो हमें कमर-कमर तक पानी वाली छोटी नदिया पार करनी पड़ती हैं (116, 3), गिरजे तक बिलकुल सूनी सड़क है (7, 132); (ख) कालवाचक—वे मरते दम तक आपका नाम रटते रहें (3, 8), गुरुदेव अन्त समय का अविवाहित रहे (53, 50), ज़रा-ज़रा-सी बात पर घण्टों तक तर्क-वितर्क होता है (66, 9)।

'ने' परसर्ग। 'ने' परसर्ग शुद्ध व्याकरणिक प्रकार्य व्यक्त करता है क्योंकि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस कर्ता में संलग्न होता है जिसके विधेय की संरचना में द्वितीय सकर्मक कृदन्त विद्यमान है (सरल एवं संयुक्त) :

मैं, हम
तू, तुम, आप } ने पुस्तक लिखी (है) होती है (थी) होती थी (होती) हो होती
इस, उस | पुस्तक लिखी हुई है (थी)
इन्हों, उन्हों

दोहरे परसर्ग : दोहरे परसर्गों के दो भेद हैं : (क) वे परसर्ग जो दो ठोस परसर्गों के मिलन से बने हैं—'मैं से' और 'पर से' और (ख) वे परसर्ग जो ठोस और अमूर्त परसर्ग 'का' के मिलन से बने हैं—'पर का', 'तक का'। 'का' समेत दोहरे परसर्ग कोटिगत समास नहीं संयोगसूचक समास से अर्थात् वे लेखक के इच्छानुसार प्रयुक्त होते हैं।

'मैं से' परसर्ग। 'मैं से' परसर्ग ठोस परसर्गों में आता है। वह 'किसी द्रव्य से निकालने' या 'किसी द्रव्य के आर-पार जाने' का शाब्दिक अर्थ रखता है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर 'मैं से' परसर्ग निम्न सम्बन्ध व्यक्त करता है: (1) क्रियाविशेषणात्मक (बहुधा स्थानवाचक)—कमरे में से लाना (66, 168), झाड़ियों में से चलना (103, 13); (2) कर्मविषयक जिसके ये भेद हैं: (क) स्थानवाचक—सामान में से बाँसुरी निकालना (44, 103), धरती में से निकालना (103, 24); (ख) पृथकतावाचक—नटों में से कई जवान (103, 370), सिफ़ारिशों में से एक सिफ़ारिश (143, 25)।

कुछ प्रयोगों में 'में से' परसर्ग अपने शब्दार्थ से 'से' परसर्ग का समानार्थक हो सकता है, जैसे, गाड़ी में से उतरना (97, 75), और गाड़ी से उतरना (73, 27)।

वाक्य के स्तर पर 'में से' परसर्ग सहित शब्द निम्न अंगों के रूप में आता है: (1) क्रियाविशेषण (नियत स्थानवाचक)—गाँव में से बदबू उठती रही (102, 77), वे कोठे में से कोठे पार करते गये (103, 608); (2) गौण कर्म—उसके सामान में से बाँसुरी निकालकर रत्नप्रभा से उसे देते हुए कहा··· (44, 103), ···जैसे बादलों में से सूर्य उदय हो रहा हो···(24, 53), ···नटों में से कई जवानों को थाने में पकड़ लिया गया था (103, 370)।

'पर से' परसर्ग। 'पर से' परसर्ग ठोस परसर्गों में आता है। वह 'किसी द्रव्य की सतह से निकालने (उठाने)' या 'द्रव्य के आर-पार जाने' का अर्थ रखता है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर 'पर से' परसर्ग सहित शब्द स्थानवाचक क्रिया-विशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करता है, जैसे, भारतीय प्रदेश पर से विमानों की उड़ान (XI, 12-3-1972), सिर पर से उठाना (44, 94)।

कुछ प्रयोगों में 'पर से' परसर्ग अपने शब्दार्थ से 'पर' परसर्ग का सम्भावनार्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सकता है, जैसे, सड़क पर से चलना (44, 34), और सड़क पर चलना (52, 136)।

वाक्य के स्तर पर 'पर से' परसर्ग स्थानवाचक क्रियाविशेषक के प्रकार्य में आता है, जैसे, ···उसके सामान को मेज पर से उठाकर फेंकती हुई बोली··· (44, 104), उसी समय द्वार पर से नरेश निकला (103, 33)।

दोहरे परसर्गों के मेल में 'का' शब्द-समुदाय के मुख्य एवं आश्रित घटकों के अधिक घनिष्ठ सम्बन्धों को सूचित करता है और मूल (सरल) परसर्ग द्वारा व्यक्त सम्बन्धों को विशेषण की छाया प्रदान करता है, जैसे, पहाड़ों के सिर पर की रोशनियाँ (44, 36), सड़क तक की जगह (97, 72), लंका तक के यात्री (4, 6)।

वाक्य के स्तर पर इस परसर्गों समेत शब्द संज्ञा-संलग्न विशेषण का प्रकार्य निभाते हैं, जैसे, ···उसने तट पर की एक चट्टान पर एक निशान तराशा था (88, 59), ···तो कितने किराये तक का मकान चाहती हो ? (73, 42)।

साधित परसर्ग

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका था 'वाला' परसर्ग को छोड़कर शेष सब साधित परसर्ग ठोस हैं।

'वाला' परसर्ग : यह परसर्ग केवल संज्ञाप्रधान शब्द-समुदायों में मिलता है जहाँ वह 'का' परसर्ग के सरीखे प्रकार्य को व्यक्त करता है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर 'वाला' परसर्ग सहित शब्द निम्न सम्बन्धों को व्यक्त करता है: (1) विशेषणवाचक जिसके दो भेद हैं: (क) गुणात्मक—जायदाद वाली वेवा (66, 29), तेज़ सुर वाला पंखी (102, 3); (ख) कालवाचक—रात वाला साथी (125, 198), कल वाली गोली (137, 11); (2) कर्मविषयक झाँसी वाली सन्धि (126, 130), मिलते-जुलते भाव वाले मुहावरे (114, 174), विमान वाली दुर्घटना (XI, 12-3-1972)।

वाक्य के स्तर पर 'वाला' परसर्ग समेत शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं: (1) विशेषक—···जो काला, मोटा, बड़ी-बड़ी मूँछों वाला आदमी था··· (69, 35), तभी मेरे रात वाले साथी ने मुझे देखा (125, 168); (2) गौण कर्म—···घोषणा से ज़ाहिर है कि पक्के इरादे वाले नेता···क्या कर सकते हैं (XI, 11-1-1966), झाँसी वाली सन्धि में न तो दिवाकर की सौगन्ध और न चन्द्रमा की (126, 130)।

'वाला' परसर्ग विशेषकर बोलचाल की भाषा में विशेषणों एवं संख्यांकों के साथ संलग्न होकर अतिरिक्त परसर्ग के रूप में प्रयुक्त हो सकता है। विशेषणों से संलग्न होकर वह उनका गुणात्मक लक्षण और सुदृढ़ करता है, बाकी प्रयोगों में वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध की छाया प्रदान करता है, जैसे, हम बड़े वाले गाँव गये थे (103, 66), मेरे वाली जगह खाली है (62, 129), एक पैसे की चार वाली सिगरेटें थीं (103, 129)। जैसा कि उदाहरणों से स्पष्ट है विकारी विशेषण 'वाले' के आगे सामान्य परोक्ष कारक का रूप धारण करते हैं।

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, सब ठोस साधित परसर्गों के दो भेद हैं : (क) संयुक्त परसर्ग जो 'के' या 'की' के योजक तत्त्व और परसर्ग के अर्थपूर्ण अंश के मेल से बने हैं; (ख) जटिल परसर्ग, जो संयुक्त परसर्ग और सरल मूल परसर्ग या 'वाला' परसर्ग के मेल से बने हैं।

सब संयुक्त परसर्ग अपने सामान्य अर्थ के अनुसार निम्न अर्थगत श्रेणियों में बँटे हुए हैं :

(1) स्थान के परसर्ग। व्यापार के होने या द्रव्य (या लक्षण) के रहने के स्थान के अनुसार उनके निम्न भेद हैं :

(i) द्रव्य के भीतर होना—के अन्दर, के भीतर।

शब्द-समुदाय के स्तर पर वे निम्न सम्बन्धों को व्यक्त करते हैं : (क) क्रिया-विशेषणात्मक—कोठरी के भीतर जाना (97, 87), बाग के अन्दर चला जाना (25, 62), गुठली के भीतर चीज़ (30, 74); (2) कर्मविषयक—कांग्रेस के भीतर झगड़ा (II, 10-2-1966, 30), अर्थतन्त्र के भीतर विरोधाभास (141, 20)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों में संलग्न शब्द अंगों के रूप में आते हैं : (क) क्रियाविशेषण—साँप चादर के अन्दर तड़पकर रह गया (66, 56), मुसाफ़िरखाने के भीतर भोजन का कमरा था (99, 25); (ख) गौण कर्म—उन्होंने कहा कि निजी पूँजी का कुछ सीमाओं के अन्दर विकास किया जा सकता है (145, 9)।

(ii) द्रव्य के ऊपर होना—के ऊपर।

शब्द-समुदाय के स्तर पर यह परसर्ग निम्न सम्बन्ध व्यक्त करता है : (क) क्रियाविशेषणात्मक—सिर के ऊपर छत (13, 172), बन्दरगाह के ऊपर मँडराना (116, 57); (ख) कर्मविषयक—भाषा के ऊपर बहस (41, 36), दादा के ऊपर ज़ुल्म (102, 25)।

वाक्य के स्तर पर 'के ऊपर' परसर्ग सहित शब्द निम्न अंगों के रूप में आता है : (क) क्रियाविशेषण—वह फ़र्श के ऊपर···पड़ गयी···(6, 48), किसी जंगल में एक पेड़ के ऊपर बाज़ का घोंसला था (6, 46); (ख) गौण कर्म—लड़ाई का खतरा कलकत्ते के ऊपर भी था (119, 51), वहाँ भाषा के ऊपर बड़ी बहस है (42, 36)।

(iii) द्रव्य के नीचे होना—के नीचे, के तले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग निम्न सम्बन्ध व्यक्त करते हैं : (क) क्रियाविशेषणात्मक—पेड़ के नीचे बैठना (25, 65), पैरों के तले नाग (118, 39); (ख) कर्मविषयक—पेड़ के नीचे भाषण (XI, 12-3-1972), छुरी के तले जीवन का अन्त (66, 190)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों सहित शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं : (क) क्रियाविशेषण—पिछली रात एक पहाड़ी बालक सड़क के किनारे पेड़ के नीचे ठिठुर कर मर गया (44, 41), दूर एक पेड़ के नीचे हनुमान जी थे (103, 2); (ख) गौण कर्म—उसके जीवन का अन्त पिंजरे में होगा या व्याध की छुरे के तले, यह कौन जानता है (66, 190)।

(iv) द्रव्य के आगे होना—के आगे, के सामने, के समक्ष, के सम्मुख।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग निम्न सम्बन्ध व्यक्त करते हैं : (क) क्रियाविशेषणात्मक—घर के सामने मैदान (134, 167), आँखों के आगे रहना (44, 117), छत्रपति के समक्ष पहुँचना (47, 11), पति के सम्मुख जाना (66, 149); (ख) कर्मविषयक—लोगों के सामने भाषण (XI, 4-4-1971), देश के आगे उदाहरण (II, 20-11-1965)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों सहित शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं : (क) क्रियाविशेषण—सुमन शीशे के सामने गयी (72, 60), उन एड़ियों के आगे पाँवों में उँगलियाँ होंगी (44, 75); (ख) गौण कर्म—···उन्होंने देश के आगे उदाहरण रखा (II, 20-11-1965, 12), ···मालिकों के समक्ष सदैव यह समस्या बनी रही कि···(II, 20-5-1968, 21)।

इसी अर्थ में परसर्गीय समास 'के हुज़ूर में' जाता है, जैसे, ···दोनों ने बाबा के हुज़ूर में सिर नवाया (15, 53), यह परसर्ग मुख्यतः क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करता है।

(v) द्रव्य के पीछे होना—के पीछे।

शब्द-समुदाय के स्तर पर यह परसर्ग निम्न सम्बन्ध व्यक्त करता है : (क) क्रियाविशेषणात्मक—पत्थर के पीछे छिपना (25, 66), देवालय के पीछे बाग (103, 8); (ख) कर्मविषयक—ज़रा-ज़रा-सी चीज़ के पीछे लड़ाई (103, 156), रुस्तम खाँ के पीछे सरकार (103, 157)।

वाक्य के स्तर पर इस परसर्ग समेत शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं : (क) क्रियाविशेषण—नारायणी सीख़चों के पीछे बैठी थी (102, 139), ··· मेहँदी के पीछे क्यारी में सोसन खिला था (7, 124); (ख) गौण कर्म—सुखराम के पीछे शिक्षा नहीं थी (103, 154), ···आन्दोलन के पीछे एक बहुत बड़ी साज़िश है (IV, 16-12-1974)।

(vi) द्रव्य के बाहर होना—के बाहर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द-समुदाय के स्तर पर यह परसर्ग क्रियात्मक सम्बन्ध व्यक्त करता है जिसके दो भेद हैं : (क) स्थानवाचक—गुफा के बाहर पहुँचना (25, 40), स्कूल के अहाते के बाहर मैदान (17, 127) और (ख) स्थानवाचक-गुणात्मक—घर के बाहर काम (103, 157)।

वाक्य के स्तर पर इस परसर्ग सहित शब्द स्थानवाचक क्रियाविशेषण की हैसियत से आते हैं, जैसे, वह काम करने के सिवा घर के बाहर नहीं जाता था (40, 110), ···शहर के बाहर एक अँधेरी गुफा है (25, 37)।

(vii) द्रव्य के निकट होना—के पास, के निकट, के समीप, के नज़दीक, के क़रीब। यहाँ 'के आसपास' और 'के अगल-बग़ल' परसर्ग और 'के बराबर' ('नज़दीक' के अर्थ में) और 'के सहारे' ('पास होने' के अर्थ में) परसर्ग भी आते हैं।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे, गाँव के पास जंगल (114, 391), घाट के निकट पहुँचना (78, 321), झरने के समीप पगडण्डी (96, 46), महल के नज़दीक आ पहुँचना (25, 109), बाज़ार के क़रीब एक गाँव (49, 69), कोठरी के आसपास ठहरना (4, 8), द्वार के अगल-बग़ल दालान (1, 21), रिक्शा के बराबर आना (7, 36), मेज़ के सहारे बैठना (107, 11)।

वाक्य के स्तर पर ये परसर्ग क्रियाविशेषण की हैसियत से आते हैं।

(viii) द्रव्यों के मध्य में होना—के बीच, के मध्य, के दरमियान, के बीचो-बीच।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग निम्न सम्बन्ध व्यक्त करते हैं : (क) क्रियाविशेषणात्मक—वृक्ष के बीच स्थान (99, 51), धरती और आकाश के मध्य लटकना (7, 20), इस हवेली और उस दुनिया के दरमियान होना (44, 123), गाँव के बीचोबीच मैदान (120, 30); (ख) कर्मविषयक (पारस्परिकता यह सहकारिकता की छाया को लेकर)—देशों के बीच व्यापार (II, 20-9-1965, 25), देशों के मध्य सम्भावना (145, 96)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों सहित शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं : (क) क्रियाविशेषण—वे सीढ़ी के बीच मोड़ पर थे (V, विशेषांक, 1962, 6), धूल जैसे दायीं ओर धरती और आकाश के मध्य जाकर लटक गयी थी (7, 20); (ख) गौण कर्म—दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ जाता है (115, 410), साथ ही वह पहला देश है जो शारीरिक तथा बौद्धिक कार्यों के मध्य अन्तर मिटाने के लिए काम कर रहा है (145, 42), ···दोस्तों के दरमियान इकट्ठे हुए सब बादल जाने कहाँ बिला गये हैं (44, 48)।

(ix) द्रव्य के इर्द-गिर्द होना—के गिर्द, के इर्द-गिर्द, के आस-पास।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, जैसे, पार्क के गिर्द सड़कें (97, 160), बाग के इर्द-गिर्द दौड़ाना (27, 54)।

कभी-कभी यह परसर्ग स्थानवाचक कर्मविषयक सम्बन्ध व्यक्त कर सकते हैं, जैसे, विचार के गिर्द एकत्रित (IV, 21-12-1974)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों सहित शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं : (क) क्रियाविशेषण—हुस्नबानो ने उन्हें···उस हवेली के गिर्द शहर की नींव डालने को कहा···(25, 13), बिल्डिंग के इर्द-गिर्द···बीस-एक फुट चौड़ी खुली जगह थी···(8, 47); (ख) गौण कर्म (बहुत कम—एशिया में शान्ति-प्रेमी शक्तियाँ बड़ी तेज़ी से इस विचार के गिर्द एकत्रित हो रही है (IV, 21-12-1974)।

(x) द्रव्य के किसी ओर को होना—के पार, के परे, के आर-पार।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे नदी के पार गाँव (30, 103), सात समुन्दर पार द्वीप (44, 4), सड़क के परे स्थान (97, 73), विराम-रेखा के आर-पार पड़ना (115, 388)।

कभी-कभी ये परसर्ग कर्मविषयक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे, शक्ति के परे होना (115, 237), रूप के पार आत्मा (107, 85)।

इस श्रेणी में 'के किनारे' और 'के किनारे-किनारे', जैसे, तालाब के किनारे पहुँचना (25, 31), नदी के किनारे-किनारे चलना (25, 116)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों सहित शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं : (क) क्रियाविशेषण—ड्योढ़ी के पार चले जाओगे···(44, 124), सड़क के परे तार-गड़े स्थान की ओर जाने से पहले मैंने भागराम को समझा दिया···(97, 73), कोई 300 बरसों से जहाज़ अटलांटिक के आर-पार आ जा रहे थे (88, 48), गाँव के इस किनारे···उसने एक छोटा-सा कोल्हू लगा रखा था (7, 20); (ख) गौण कर्म—···राजकुमारी, इस नश्वरता के पार अमरता खोजने में, इस अन्धकार के पार प्रकाश खोजने में···लग गयी (107, 74), यह काम व्यक्तिगत शक्ति के परे (115, 237)।

(2) काल के परसर्ग जिनके तीन भेद हैं :

(i) पूर्वकालिक परसर्ग—के पहले, के पूर्व।

शब्द-समुदाय के स्तर पर वे परसर्ग क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे, बृहस्पतिवार के पहले ही आना (V, जनवरी, 1963, 133), स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पूर्व व्यापार-नीति (II, 20-9-1965, 25)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों समेत शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं : (क) क्रियाविशेषणात्मक—पिछले विश्व युद्ध के ठीक पहले सोवियत संघ का उत्पादन 1913 के उत्पादन का नौ गुना था (145, 24), ···लड़की 20 वर्ष की उम्र के पूर्व शादी नहीं कर सके (II, 25-2-1970, 11); (ख) निर्धारक (क्रिया-विशेषणात्मक)—स्वतन्त्रता के पूर्व ही भारत ने अपने भावी संविधान की रचना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का कार्य आरम्भ कर दिया था (115, 388)।

(2) पश्चकालिक परसर्ग—के बाद, के पश्चात्, के उपरान्त।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग निम्न सम्बन्ध व्यक्त करते हैं; (क) शुद्ध कालवाचक—कई दिन के बाद पहुँचना (25, 103), भोजन के पश्चात् नृत्य (123, 21), कथा के उपरान्त नेवता (69, 127); (ख) गणनसूचक कालवाचक —आँकड़े के बाद आँकड़ा (145, 8); (ग) स्थानवाचक—कमरे के बाद कमरा (99, 78)।

पश्चकालिक परसर्ग के रूप में स्थानसूचक परसर्ग 'के पीछे' प्रयुक्त हो सकता है, जैसे, प्राइवेट [बस] के पीछे पहुँचना (15, 12)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों समेत शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं: (1) क्रियाविशेषण—जिसके दो भेद हैं: (क) कालवाचक—'''एक साल बाद वह भी मर गया (30, 79), यहाँ के बाल-रूम में रात के भोजन के पश्चात् हर तीसरे दिन योरोपीय नृत्य होता है (123, 21); (ख) स्थानवाचक विज्ञापन-पृष्ठ के पश्चात् सम्पादकीय लेख होता है (115, 89); (2) निर्धारिक, जैसे, तीन वर्ष के पश्चात् मेरे मित्र ने मुझे पत्र लिखा (30, 117), केस के बाद लेखकों ने उनके सिद्धान्तों में कुछ परिवर्तन किया (II, 20-11-1966, 13); (3) संततकालिक परसर्ग—के समय, के वक्त, के दौरान [में] और साथ ही 'के अन्दर' और 'के भीतर' परसर्ग ('के दौरान में' के अर्थ में)।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे, तूफ़ान के समय आ जाना (84, 28), काम के वक्त काम, बात के वक्त बात (103, 504), संघर्ष के दौरान में हथियाना (XI, 11-1-1966), एक महीने के अन्दर पहुँचना (25, 59), एक महीने के भीतर आना (VI, 19-19-1972)।

संततकालिक परसर्ग की हैसियत से 'के चलते' और 'के रहते' परसर्ग प्रयुक्त होते हैं, जैसे, सूखे के चलते पैदावार (IV, 20-5-1973), छोकड़ा-नाच के चलते सुनना (52, 47), अंग्रेज़ी के रहते हरिजनों की प्रगति सम्भव नहीं (XI, 10-11-1970), अपने मर्द के रहते दूसरे के घर रखैल बनकर बैठी है (103, 127)।

वाक्य के स्तर पर इन सभी परसर्गों समेत शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं: (1) क्रियाविशेषण—तूफ़ान के समय मैं भी वहाँ जाऊँगा (84, 28), मैंने सवेरे के वक्त अपना सामान इकट्ठा किया (103, 115), मैंने इस यात्रा के दौरान कई स्थान देखे (III, मार्च, 1969, 87); (2) निर्धारक (क्रिया-विशेषणात्मक)—भोर के समय क्षितिज पर हमेशा ही कुछ बड़े तारे रहते हैं (81, 22), विवाहित पत्नी के रहते, कुमारी लड़की की बरबादी करने वाला वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नर-पशु है कौन ? (58, 36)।

(3) दिशा के परासर्ग—की ओर, की तरफ़, के इधर, के उधर, के इधर-उधर, के बाएँ, के दाएँ, के बाएँ-दाएँ।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग निम्न सम्बन्ध व्यक्त करते हैं: (क) क्रिया-विशेषणात्मक—चेतन की ओर मुड़ना (16, 88), फुलवारी की तरफ़ हो-हल्ला (103, 122), धोबी की दुकान के इधर ताले-कुंजियाँ बनाने वालों की दुकानें (17, 110), दरवाज़े के उधर कीचड़ (17, 386), डेरे के इधर-उधर दिखायी देना (103, 446), मूर्ति के दाएँ-बाएँ खड़ा होना (30, 92); (ख) कर्मविषयक (नियमत: केवल 'की ओर' और 'की तरफ़' परसर्ग)—लोकतन्त्र की तरफ़ झुकाव (II, 5-12-1965, 5), आख्यायिकाओं की ओर प्रवृत्ति (64, 23)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों सहित शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं: (1) क्रियाविशेषण (स्थानवाचक)—वह बाज़ार की तरफ़ मुड़ा (71, 32), नन्दाराम अपने ऊँट पर घर की ओर चला (39, 18); (2) गौण कर्म—अपने दफ़्तर की ओर तो ध्यान दिया करो (139, 158), लोकतन्त्र की तरफ़ हमारा झुकाव है (II, 5-12-1965, 5); (3) निर्धारक (क्रियाविशेषणात्मक)—सड़क की दायीं ओर फुटपाथ पर···भिखारी सो रहा था (14, 51), रास्ते में रेल की दोनों तरफ़ गेहूँ और चुकन्दर के हरे-भरे क्षेत्र थे (118, 43); (4) संयुक्त नामिक विधेय का नामिक अंश—···श्री नेहरू का संकेत···सैनिक समझौते की ओर था (115, 319)।

(4) उद्देश्य एवं प्रयोजन के परसर्ग—के लिए, के वास्ते, की ख़ातिर।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग निम्न सम्बन्ध व्यक्त करते हैं: (1) विशेषणात्मक—गुणात्मक (प्रयोजन की छाया समेत) जो केवल संज्ञाप्रधान शब्द-समुदाय में आते हैं—प्रति चार व्यक्ति के लिए एक मोटर-कार (115, 489), पंडितजी के वास्ते पानी (66, 24); (2) कर्मविषयक जिसके ये भेद हैं: (क) प्रति-बन्धक—विश्व के लिए ख़तरनाक (XI, 29-7-1958), युवक के लिए सहानुभूति (16, 126), परिसीमित वर्ग के लिए लिखना (64, 85); (ख) उद्देश्यवाचक—युद्ध के लिए तैयार (116, 59), वास्ते ख़र्च के डरकार (24, 19); (3) क्रिया-विशेषणात्मक—जिसके ये भेद हैं: (क) उद्देश्यवाचक—रक्षा के लिए भेजना (72, 131), लड़ाई की ख़ातिर चढ़ना (24, 38); (ख) कालवाचक—एक क्षण के लिए देखना (30, 84), एक निमिष के लिए सहानुभूति (16, 126)।

उद्देश्य एवं प्रयोजन के परसर्गों की हैसियत से कार्य-कारण के परसर्ग 'के हेतु' और 'के निमित्त' प्रयुक्त हो सकते हैं जो क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्धों के अन्तर्गत उद्देश्यवाचक छाया व्यक्त करते हैं, जैसे, आवश्यकता के हेतु क़ाफ़िले बनाना (115, 202), उत्पादन के निमित्त सहायता पाना (II, 5-5-1966, 3)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों सहित शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं: (1) विशेषण (मात्र संज्ञासंलग्न)—···सदन के लिए कहीं स्थान नहीं था (72, 70), पण्डितजी के वास्ते पानी-वानी की फ़िक्र है? (66, 24); (2) गौण कर्म—···सैनिकों के दिल में इस निर्भीक युवक के लिए सहानुभूति चमक उठी··· (16, 126), वह आया भी था इन्दिरा की ख़ातिर (34, 98); (3) क्रिया-विशेषणात्मक जिसके ये भेद हैं: (क) उद्देश्यवाचक—उसने आप लोगों को मेरी रक्षा के लिए भेजा था (72, 131); कालवाचक—वहाँ से उसने एक क्षण के लिए अज़ीज़ और नूरशान की पीठ देखी···(30, 84)।

(5) कार्य-कारण के परसर्ग—के कारण, के मारे, के सबब, की बदौलत, के फलस्वरूप, के परिणामस्वरूप, के हेतु, के निमित्त, के वश, जिनसे परसर्गों के समान 'की वजह से' जुड़ता है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्धों के अन्तर्गत कार्य-कारणों के सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे, भूख के कारण मृत्यु (II, 27-3-1967, 7), गरमी के मारे पसीने 102, 80), शतरंज की बदौलत परिचय (65, 22), विभाजन के फलस्वरूप आना (115, 387), वृद्धि के परिणामस्वरूप उलझनें (II, 25-2-1970, 9), सफ़र की वगह से कमज़ोरी (116, 9), क्रोध के वश हो उठना (9, 184)।

कार्य-कारण के परसर्गों के अर्थ में स्थान का परसर्ग 'के पीछे' और उद्देश्य व प्रयोजन का परसर्ग 'के लिए' प्रयुक्त होते हैं जो कारणसूचक छाया सहित कर्म-विषयक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे, माल के पीछे लड़ना, औरतों के पीछे लड़ना (103, 156), पैसे के पीछे पागल (102, 36), खून के लिए दुश्मनी (119, 30), पच्चीकारी के लिए प्रसिद्ध (2, 221)।

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, कार्य-कारण के परसर्ग 'के हेतु' और 'के निमित्त' वहुधा उद्देश्य एवं प्रयोजन के परसर्गों की हैसियत से प्रयुक्त होते हैं।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों सहित शब्द कार्य-कारण के क्रियाविशेषण की हैसियत से आते हैं।

(6) रीति के परसर्ग—के द्वारा, के ज़रिये, की मारफ़त, के हाथ [के हाथों], के सहारे, के बल, के रास्ते, जिनमें परसर्गीय समास 'के माध्यम से', 'की सहायता से', 'की मदद से' जुट जाते हैं।

शब्द-समुदाय के स्तर पर परसर्ग निम्न सम्बन्ध व्यक्त करते हैं: (1) कर्तृ-विषयक—गुण-दोष द्वारा निर्मित (99, 180), शिव वर्मा की मारफ़त सम्पर्क (67, 5); (2) कर्मविषयक जिसके ये भेद हैं: (क) करणवाचक—धन के ज़रिये पहुँचना (102, 141), रस्सी के सहारे उतरना (3, 12), टिकट द्वारा प्रवेश (99, 43), सरकार के माध्यम से प्राप्ति (115, 251); (ख) कर्तृवाचक—भाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के द्वारा मँगवाना (143, 54), भाभी के ज़रिये कहलवाना (107, 41); (ग) दिशावाचक—पंजाब के रास्ते जाना (97, 22), हिंसा के रास्ते प्रगति (105, 48), विशेषण क्रियाविशेषणात्मक—मुँह के बल गिरना (103, 20), एड़ियों के बल टहलना (44, 75)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों सहित शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं: (1) गौण कर्म—वह अपने क्रूर पिता के हाथों बुरी तरह पिटा था (16, 83), वे···एक स्वर्णकार के द्वारा पाले-पोसे थे (1, 174); (2) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण—वे मुँह के बल गिर पड़ते हैं (103, 20), वैज्ञानिक प्रयोग चलचित्र के माध्यम से समझाये जाते हैं (115, 300)।

(7) सदृशता के परसर्ग—सा, जैसा, ऐसा, सरीखा, [के] सदृश, की तरह, की भाँति, के समान, के बराबर, की मानिन्द, के नाईं, के तुल्य।

शब्द-समुदाय के स्तर पर वे परसर्ग क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्धों के अन्तर्गत सदृशता एवं समानता के सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे, रूई के गालों-सी बर्फ़ (52, 109), चीनियों जैसी मूँछें (107, 124), परियों-ऐसी युवती (17, 284), तारों-सी जान पड़ना (44, 36), छाया की तरह मँडराना (115, 491), हाथी की भाँति लड़ना (4, 77), पुरुष के समान पद (115, 254), अण्डे के बराबर मोटी (25, 134), सूरज, चन्द और ध्रुव की मानिन्द शख़्सियत (60, 35), अग्नि के सदृश दहकना (73, 102), बोलते फूल की नाईं चहकना (44, 85), आकाशवाणी के तुल्य बनाना (73, 90), झील के बाँध सरीखी रोड (15, 39)।

'सा' और 'जैसा' सरल परसर्ग 'का' परसर्ग से जुड़कर आ सकते हैं, पर वह इन्हें कोई अतिरिक्त अर्थगत छाया प्रदान नहीं करता, वह मुख्य एवं आश्रित घटकों के अधिक घनिष्ठ रिश्ते को सूचित करता है, जैसे, हमें पहले की सी आज़ादी नहीं थी। हँसती थी तो पहले-सी हा-हा करके नहीं···(103, 64), वे मर्दों की-सी गालियाँ देतीं (103, 158), उसे तो औरों के-जैसी कोई जल्दी न थी (58, 93)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों सहित शब्द गिम्न अंगों के रूप में आते हैं: (1) क्रियाविशेषण (सदृशतासूचक)—उसका सारा शरीर बाँस के समान काँप रहा था (30, 53), उसका हृदय अग्नि के सदृश दहकता है···(73, 102), उसने फट उसके पातों को मोड़कर प्यालों-जैसा बना डाला; (2) संयुक्त नामिक विधेय का नामिक अंश—ये विकास खण्ड सामुदायिक विकास खण्ड के समान हैं (115, 271), ···जिसकी छत पैगोडों-ऐसी है (9, 157), इस विशाल सृष्टि में ···हमारी पृथ्वी ही की हस्ती कण सरीखी है (17, 364), ···उनकी हालत दासियों-जैसी थी (145, 59)।

(8) विरोध के परसर्ग—के विरुद्ध, के ख़िलाफ़, के विपरीत, के प्रतिकूल, के बावजूद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द-समुदाय के स्तर पर वे परसर्ग निम्न सम्बन्ध व्यक्त करते हैं : (1) कर्म-विषयक—राष्ट्र के विरुद्ध आक्रमण (115, 496), गोरों के खिलाफ़ छोड़ना (116, 63), इच्छा के विपरीत बनाना (30, 60), वायु के प्रतिकूल चलना (72, 116); (2) क्रियाविशेषणात्मक—केवल 'के बावजूद', मतभेदों के बावजूद रहना (115, 490), परिस्थितियों के बावजूद घेरना (IV, 19-11-1972)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों सहित शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं : (1) गौण कर्म—किन्तु उस समय भारतीय समाज एक बाहरी शक्ति साम्राज्य-वाद के विरुद्ध जूझ रहा था (104, 502), आणविक युद्ध के खिलाफ़ दुनिया में ज़बर्दस्त शान्ति आन्दोलन विकसित हो गया (106, 28); (2) क्रियाविशेषण (अनुमतिवाचक)—दोनों गुट अपने सैद्धान्तिक मतभेदों के बावजूद साथ रहना सीख जाएँ (115, 420); (3) निर्धारक (क्रियाविशेषणात्मक)—···इसके विपरीत वैयक्तिक शासन के दोष अधिक और लाभ कम (115, 308)।

(9) अभाव के परसर्ग—के बिना, के बग़ैर।

शब्द-समुदाय के स्तर पर वे परसर्ग निम्न सम्बन्ध व्यक्त करते हैं : (1) कर्म-विषयक—पानी के बिना सूखना (25, 68), दोस्तों के बग़ैर रहना (66, 158); (2) क्रियाविशेषणात्मक—बिना ख़तरे के दिखाना (44, 29), बिना लज्जा के मुस्कराना (116, 23); (3) विशेषणात्मक—बिना नमक के साग (113, 37), मदद के बग़ैर सुधार (71, 21)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों सहित शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं : (1) गौण कर्म—उसमें ईंधन के बिना रोटी सिक जाती (143, 35), ···दोस्तों के बग़ैर कोई ज़िन्दा रह सकता है? (66, 258); (2) क्रियाविशेषण (रीति-वाचक)—आपस में आँखें मिलाकर बिना किसी लज्जा के मुस्करा उठती थीं (116, 23), ···जिसने बिना स्वार्थ के जीवन बिताया (102, 31); (3) विशेषण (संज्ञासंलग्न)—सब के सब रमा के बिना दाम के गुलाम थे (65, 44), जैसे बिना अनुभव के ज्ञान पंगु है वैसे ही बिना वाद के विवाद अर्थ-शून्य है (131, 37); (4) निर्धारिक (अनुमतिवाचक छाया सहित क्रिया-विशेषणात्मक)—उद्योग-धन्धों के केन्द्रीकरण के बिना देश की आर्थिक उन्नति होना असम्भव है (125, 49),···उसकी सहायता के बिना वह काम होना असम्भव था (70, 32)।

(10) सम्बन्ध के परसर्ग—के बारे में, की बाबत, की निस्बत, के प्रति, के नाते, के नाम सम्बन्धी जिनसे परसर्गीय समास, 'के सम्बन्ध में', 'के सिलसिले में', 'के विषय में [पर]' जुट जाते हैं।

सही माने में 'के बारे में' भी परसर्गीय समास है, पर 'बारा' शब्द आधुनिक हिन्दी में अप्रयुक्त है और समास रूढ़ समझा जाता है अतः 'के बारे में' को परसर्ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानना उचित होता है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये भिन्नार्थक परसर्ग गुणात्मक छाया समेत कर्म-विषयक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे, प्यारी के बारे में सोचना (103, 85), स्थिति की बाबत सन्देह (113, 99), खन्दान की निस्बत किस्सा (41, 24), जनता के प्रति कर्त्तव्य (64, 102), पड़ोसी के नाते मैत्री (11, 17), जगत् के रहस्य सम्बन्धी सभी दर्शन (107, 73), द्वीपों के सम्बन्ध में बहस (IV, 6-7-1958), शर्तों सम्बन्धी असमानता (IV, 19-11-1972), काम के सिलसिले में जानना (III, मार्च, 1969, 89), तिब्बत के विषय पर सन्धि (115, 421), गोविन्द के नाम ख़त (120, 121)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों सहित शब्द गौण कर्म के रूप में आते हैं।

(11) सर्ग और संसर्ग के परसर्ग—के साथ, के संग [के] समेत, [के] सहित, के मय।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग निम्न सम्बन्ध व्यक्त करते हैं जैसे, (1) कर्मविषयक जिसके ये भेद हैं: (क) शुद्ध कर्मविषयक—आज़ाद के साथ विश्वासघात (97, 164), दीनदयाल के साथ सलूक (65, 4); (ख) संगवाचक कर्मविषयक—बीवी-बच्चों के साथ आना (7, 34), और अभावों के साथ यह चिन्ता (66, 126), धुरी राष्ट्रों समेत शेष संसार (3, 74), कुत्ते और लालो सहित हाज़िर करना (24, 117), मय सूद के वापस लेना (89, 35); (ग) स्थान-वाचक कर्मविषयक—कुर्सी के साथ लगना (99, 11), दीवार के साथ जा लगना (16, 97); (2) क्रियाविशेषणात्मक—तेज़ी के साथ भागना (116, 31), दावे के साथ कहना (44, 46)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों समेत शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं: (1) गौण कर्म—पराये मर्दों के साथ सोयी हूँ (103, 141), वह शंकर और पार्वती के समेत कैलास पर्वत को उठाकर भागने लगा (84, 77); क्रियाविशेषण (रीतिवाचक)—उसने दरवाज़ा खोला और तेज़ी के साथ भागती हुई झरने की ओर बढ़ गयी (116, 31), ···श्री कर्णैल सिंह ने···साहस के साथ कहा था···साहस के साथ कहा था···(115, 326)।

(12) स्थानान्तरण के परसर्ग—के बदले [में], के बजाय, की जगह, जिनसे परसर्गीय समास 'के एवज़ में', 'के स्थान में [पर]' जुट जाते हैं।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग कर्मविषयक सम्बन्धों के अन्तर्गत स्थानान्तरण के सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे व्यंग्य के बदले भय (7, 136), एक टन चाय के बदले में ज़्यादा रुपये (II, 5-7-1966, 7), सोफ़ों के बजाय पीढ़ियाँ देना (30, 12), प्रेम की जगह चिन्ता (72, 221), बेटी के स्थान पर समझना 113, 39), रुपये के एवज़ में ले लेना (69, 208)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों समेत शब्द शेष कर्म के रूप में आते हैं।

(13) अपेक्षा के परसर्ग—की अपेक्षा, की बनिस्बत, के मुकाबले [में], जिनसे परसर्ग समास 'की तुलना में' जुट जाता है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्धों के अन्तर्गत तुलनात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे, नरेशों की अपेक्षा अच्छा (2, 182), शहरों की बनिस्बत गाँव (II, 10-11-1966, 22), मिस रेमाण्ड के मुक़ाबले हर्ष (V, दीपावली विशेषांक, 1962, 83); प्रथम तीन वर्षों के मुक़ाबले में वृद्धि (II, 10-2-1966, 30), अन्य प्रणालियों की तुलना में उसकी श्रेष्ठता (115, 437)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों सहित शब्द क्रियाविशेषणात्मक निर्धारकों के रूप में आते हैं, जैसे, ···देशी माल की अपेक्षा विदेशी माल ज्यादा महँगा पड़ा (II, 5-7-1966, 6), हमारे देश में शहरों की बनिस्बत, गाँव में हालत बहुत ख़राब है (II, 10-11-1966, 22), मिस रेमाण्ड के मुक़ाबले हर्ष भारी प्रतिद्वन्द्वी है (V, दीपावली विशेषांक, 1962, 83)।

(14) अधीनता के परसर्ग—के अधीन, के मातहत, के अन्तर्गत, के तहत।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग कर्मविषयक सम्बन्धों के अन्तर्गत प्रतिबन्धक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे, पंचायतों के अधीन होना (115, 260), समझौते के मातहत आना (XI, 11-1-1966), सरकारी क्षेत्र और निजी क्षेत्र के अन्तर्गत परिव्यय (II, 10-11-1966, 5), धारा फ़लाँ के तहत चलाना (19, 101)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों समेत शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं: (1) गौण कर्म—···राजा और उसके मातहत कर्मचारी प्रजा के हित का सदा ध्यान रखते थे (2, 70), आप पर धारा फ़लाँ के तहत मुक़दमा चलाया जाएगा (19, 101); (2) निर्धारक (प्रतिबन्धक छाया समेत क्रियाविशेषणात्मक)—आर्थिक योजनाओं के अन्तर्गत औद्योगिक विकास की गति तीव्र हुई है (II, 20-9-1965, 6), पुनर्वास मन्त्रालय के अधीन हमने कई आश्रम-वृद्धाश्रम ···खोल रखे हैं (118, 36)।

अधीनता के परसर्ग के प्रकार्य में 'के नीचे' परसर्ग प्रयुक्त हो सकता है, जैसे, मुझे याद आया कि पुनर्वास मन्त्रालय के नीचे बूढ़े-बुढ़ियों पर केवल 21-22 रु० महीना खर्च होता है (118, 36)।

(15) समावेश/निराकरण के परसर्ग—के अतिरिक्त, के सिवा (सिवाय), के अलावा।

शब्द-समुदाय के स्तर पर इन परसर्गों का प्रयोग नहीं होता।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों समेत शब्द समावेश/निराकरण की छाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहित क्रियाविशेषणात्मक निर्धारकों के रूप में आते हैं, जैसे, इस कोठरी में···उस बुढ़िया और उन चूहों के अतिरिक्त शायद केवल नरक ही रह सकता है (44, 81), पेट की भूख के सिवा और भी भूख लगती है (27, 19), ···रूसी तथा अंग्रेज़ी के अलावा अन्य भाषाओं के गाइड भी मिल जाते हैं (99, 43)।

(16) अनुकूलता के परसर्ग—के अनुसार, के अनुरूप, के अनुकूल, के मुताबिक, के मुआफ़िक़। जिनसे 'के बकौल' परसर्ग मिल आता है।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे, हित के अनुरूप बनाना (II, 20-9-1965, 5), संस्कार के अनुसार चाहना (3, 19), फ़सल के अनुकूल होना (III, मार्च, 1969, 96), वादे के मुताबिक पहुँचना (25, 24)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों सहित शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं: (1) क्रियाविशेषण (रीतिवाचक)—भारत की वित्त और व्यापार नीति ब्रिटेन के उद्योगों की सुविधा और हित के अनुरूप बनायी गयी थी (II, 20-9-1965, 25), यह बस इतना चाहता है कि कबार इसके शहर के रिवाज के मुताबिक बनाया जाए (25, 108); (2) निर्धारक (क्रियाविशेषणात्मक)—···सरकार के आँकड़ों के अनुसार भी 379 आदमी वहीं शहीद हो गये (76, 40), ···स्कूल रजिस्टर के मुताबिक उसकी उम्र चौबीस साल ही होती थी (143, 7), ···बकौल राजीव गांधी···पार्टी मानती है कि···(I, 31-12-1990, 17)।

(17) योग्यता के परसर्ग—के योग्य, के लायक़, के क़ाबिल।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग निम्न सम्बन्ध व्यक्त करते हैं: (1) विशेषणात्मक—अभिव्यक्ति के योग्य गद्य (115, 233), ज़रूरत के लायक़ लाभ (79, 29); (2) पूरक—खेती-योग्य बनाना (II, 25-9-1966, 7), तरस के क़ाबिल होना (3, 100)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों समेत शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं: (1) विशेषण (संज्ञा-संलग्न)—मरम्मत के योग्य स्थलों की मरम्मत प्रारम्भ कर दी (4, 58), बहस के लायक़ विद्या तो मुझमें नहीं है (44, 45); (2) पूरक—अभी यह लड़का है लायक़ सफ़र के नहीं हुआ (24, 107), राष्ट्रों के साहित्यिक मण्डल में हिन्दुस्तानी भाषा की बराबरी की हैसियत से शामिल होने के क़ाबिल हो जाएगी (64, 83)।

(18) रूप एवं तौर के परसर्ग—के बतौर और परसर्गीय समास—के रूप में, की शक्ल में, की हैसियत से, के तौर पर।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे, बतौर हरजाने देना (3, 10), प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करना (XI, 14-10-1957), डिब्बों की शक्ल में आना (96, 14), सहानुभूति के तौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर पूछना (96, 27)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों सहित शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं: (1) क्रियाविशेषण—बादशाह ने···अशरफ़ियों के थाल बतौर तोहफ़े भेजे (24, 103), ···भूत कभी-कभी कुत्तों के रूप में भी आया करते हैं (72, 64); (2) निर्धारक (क्रियाविशेषणात्मक)—गाँव समाज के सचिव की हैसियत से वह मुकदमे लड़ने का काम सँभालता है (115, 248), इधर दिल्ली में परीक्षण के तौर पर टेलीविजन (इटेझ) की स्थापना की गयी (115, 236)।

(19) स्थिति और स्वामित्व के परसर्ग—के पास, के यहाँ, के घर।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्ध (केवल क्रियाप्रधान शब्द-समुदायों में) व्यक्त करते हैं, जैसे, सेठ के यहाँ रहना (44, 117), ससुराल वालों के पास रहना (30, 10), मित्र के घर लेटना (66, 167)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों समेत शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं: (1) क्रियाविशेषण (स्थानवाचक)—···सेठ के यहाँ रहकर गऊ उसकी आँखों के आगे तो रहेगी (44, 117), वह गाँव में अपनी ससुराल वालों के पास ही रहती थी (30, 10), वह पड़ोसी के घर गया (16, 159); (2) निर्धारक (कर्तृ-कर्म-विषयक)—मेरे पिता के पास इतना धन है (143, 19), साल बाद चाचा के यहाँ एक बच्ची ने जन्म लिया (17, 282), ···सुप्रिया के पास अच्छा गला है (111, 100), ···एक सेठ के यहाँ चौकीदारी की नौकरी उसे मिल गयी (44, 116); (3) संयुक्त नामिक विधेय नामिक अंश···नन्ही बछिया थी, तब से वह हीरासिंह के यहाँ थी (44, 115)।

(20) आनुमानिक परिमाण और काल के परसर्ग—के लगभग, के क़रीब।

शब्द-समुदाय के स्तर पर ये परसर्ग कर्मविषयक और क्रियाविशेषणात्मक सम्बन्धों के अन्तर्गत यात्रात्मक सम्बन्ध प्रकट करते हैं, जैसे, पचास के लगभग पहुँचना (66, 105), दोपहर के ही क़रीब पहुँचना (136, 9)।

इन परसर्गों के अर्थ में 'के ऊपर' परसर्ग आ सकता है, जैसे, दो सौ रुपये के ऊपर सात रुपये और देना (44, 119)।

वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों सहित शब्द निम्न अंगों के रूप में आते हैं: (1) गौण कर्म—उनकी अवस्था भी पचास के लगभग पहुँच गयी थी (66, 105); (2) क्रियाविशेषण जिसके ये भेद हैं: (क) कालवाचक—मैं दोपहर के ही क़रीब घर पहुँच गया (136, 9);.(ख) स्थानवाचक—···जो डेढ़ हाथ के लगभग ऊँची थी (4, 32); (3) निर्धारक (क्रियाविशेषणात्मक)—चालीस के ऊपर आयु होती आयी (61, 93); (4) संयुक्त नामिक विधेय का नामिक अंश—सामान्य बासे ढाई हज़ार के लगभग है···(99, 159), ···अब रेल-यात्रियों की संख्या··· 40 लाख के ऊपर है (115, 322)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब जटिल परसर्ग दो भेदों में बँटे हुए हैं: (क) स्वतन्त्र अर्थपूर्ण परसर्ग और (ख) वे परसर्ग जिनका दूसरा तत्त्व मुख्य (प्रथम) परसर्ग का अर्थ और स्पष्ट करता है।

पहली श्रेणी में वे जटिल परसर्ग आते हैं जो 'से' और 'तक' के सरल परसर्गों से जुड़ते हैं। इनमें सबसे प्रचलित हैं स्थान, दिशा और काल के परसर्ग, जैसे, के नीचे से, के पीछे से, के ऊपर से, के भीतर से, के सामने से, के बीच से; की ओर से, की तरफ़ से; के बाद से इत्यादि, उदाहरणार्थ : (क) स्थान के परसर्ग—गाय के नीचे से उतारना (44, 120), चश्मे के पीछे से चमकना (I, 12-1965, 48, 45), पुल के ऊपर से गुज़रना (27, 21), आँखों के सामने से खिसकना (39, 81), रुक्मीनी के भीतर से आना (44, 90), स्वयंसेवकों के बीच से जाना (71, 131); (ख) दिशा के परसर्ग—···राज्य की ओर से ऐसा कोई आदेश नहीं है (143, 19), उसे जवाहर की तरफ़ से सचमुच शंका थी (44, 117); (ग) काल के परसर्ग—लेकिन विवाह के बाद से स्त्री के मिज़ाज को मैं इतना क़ायल हो गया हूँ कि···(44, 19), नौकरी के एक साल बाद तक वह बिलकुल अकेले रहे···(107, 43); (घ) शेष परसर्ग—सुधा की ख़ातिर से बैठना (66, 205), सेठ के यहाँ से आना (66, 38)।

शब्द-समुदायों के स्तर पर ये परसर्ग वही सम्बन्ध व्यक्त करते हैं जो कि संयुक्त परसर्ग (जटिल परसर्ग का मुख्य अंश)। वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों समेत शब्द उन्हीं अंगों के रूप में आते हैं जो कि संयुक्त परसर्ग वाले शब्द हैं।

दूसरी श्रेणी में वे जटिल परसर्ग आते हैं जो 'का' और 'वाला' के सरल परसर्गों से जुड़ते हैं। सरल परसर्ग आश्रित एवं मुख्य घटक के बीच के अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध सूचित करते हैं, परन्तु संयुक्त परसर्ग (यानी मुख्य परसर्ग) का अर्थ जैसा का तैसा रह जाता है। इस श्रेणी में स्थान के परसर्ग सबसे प्रचलित है, जैसे, खिड़की के पास वाली सीट (123, 71), तट के पास का पानी (88, 33), महल के सामने की सड़क (143, 34), झाड़ियों के इर्द-गिर्द की घास (27, 47), मन के भीतर का राग (44, 12), कल्पना के बाहर की बात (64, 15), जाति, वर्ग एवं व्यक्ति की बीच की दूरी (115, 447), सड़क के किनारों की बेंच (44, 34), वर्दी के किनारे वाली डोरियाँ (116, 48)।

इसी श्रेणी में कुछ और अर्थगत वर्गों के परसर्ग आते हैं, जैसे, भीड़ को भड़काने के बाद का असर (113, 24), नेहरू की तरह के देशभक्त (79, 60)।

ये परसर्ग केवल संज्ञाप्रधान शब्द-समुदायों में प्रयुक्त होते हैं, वे यहाँ विभिन्न क्रियाविशेषणात्मक छायाओं समेत विशेषणात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं। वाक्य के स्तर पर इन परसर्गों समेत शब्द संज्ञासंलग्न विशेषण के रूप में आते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुच्चयबोधक

समुच्चयबोधक की मुख्य कोटिगत विशेषता यह है कि उसका प्रयोग वाक्य के सजातीय अंगों या मिश्र वाक्य के संघटक वाक्यों को जोड़ने और सरल वाक्य से अलग शब्दों को मिलाने के लिए होता है। वाक्य के स्तर पर समुच्चयबोधक जोड़े जाने वाले पदों के बीच विभिन्न प्रकार के शब्दार्थी एवं वाक्यगत सम्बन्धों को व्यक्त करते हैं।

आधुनिक हिन्दी में व्युत्पत्ति की दृष्टि से स्वयं समुच्चयबोधक और योजक शब्द देखे जा सकते हैं। योजक शब्दों के ये भेद हैं: (क) समुच्चयबोधक क्रिया-विशेषण (जब, जहाँ, ज्यों, जैसे); (ख) सम्बन्धवाचक सार्वनामिक संज्ञा (जो); (ग) सम्बन्धवाचक सार्वनामिक विशेषण (जो, जैसा, जितना); (घ) परसर्गीय-कारकीय समास (तिस पर भी, इसलिए, इसीलिए, इससे पहले कि)। योजक शब्द समुच्चयबोधक की हैसियत से आते हुए वाक्य के अंग भी रह जाते हैं। सामान्य समुच्चयबोधक वाक्य के अंग नहीं होते।

प्रस्तुत सम्बन्धों की प्रकृति के अनुसार समुच्चयबोधक एवं योजक शब्द **समानाधिकरण तथा व्यधिकरण** में विभक्त होते हैं। समानाधिकरण समुच्चय-बोधक वाक्य के सजातीय अंगों और मिश्र वाक्य के उपवाक्यों के बीच के सम्बन्धों को व्यक्त करते हैं। व्यधिकरण समुच्चयबोधक बहुधा मिश्र वाक्य के उपवाक्यों के सम्बन्धों को प्रकट करते हैं। इनमें से केवल कुछेक वाक्य के अन्दर के शब्दों के बीच के सम्बन्ध व्यक्त कर सकते हैं।

अर्थ की दृष्टि से सब समुच्चयबोधक और योजक शब्द अर्थपूर्ण एक व्याकरणिक (वाक्यगत) में बँटे हुए हैं।

अर्थपूर्ण समुच्चयबोधकों में, जो वाक्य के अंगों एवं उपवाक्य के बीच शब्दार्थी सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, सब समानाधिकरण और प्रबल अधिकांश व्यधिकरण समुच्चयबोधक आते हैं।

वाक्यगत समुच्चयबोधकों में मुख्यत: 'कि' समुच्चयबोधक और योजक शब्द 'जैसे कि', 'जो' (संयोजनात्मक अर्थ में), 'जैसे भी' आते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संरचना की दृष्टि से समुच्चयबोधकों के निम्न भेद हैं: (1) सामान्य जो एकपदीय हैं, जैसे, और, परन्तु, या, यदि, यद्यपि आदि) और (2) संयुक्त जो द्विपदीय या बहुपदीय हो सकते हैं (इसलिए कि, न केवल···बल्कि, यहाँ तक कि··· आदि)। अपनी ओर से संयुक्त समुच्चयबोधकों के अपने भी भेद हैं: (क) सदा पृथक् (दूरवर्ती)—न केवल···बल्कि, यदि···तो; (ख) सदा संलग्न—क्योंकि, जब कि, इसलिए; (ग) पृथक्-संलग्न—इसलिए कि और इसलिए···कि, यहाँ तक कि और यहाँ तक···कि।

सरल और मिश्र वाक्यों की संरचना के भीतर अपनी स्थिति की दृष्टि से समुच्चयबोधक हो सकते हैं: (क) एकहरे (कि, मानो, क्यों); (ख) पुनरुक्त (न··· न, या···या, चाहे-चाहे); (ग) दोहरे (जब-जब, ज्यों-ज्यों, जैसे-जैसे); (घ) नित्य सम्बन्धी (यदि···तो, जब···तब, यद्यपि-तथापि) जो अपनी ओर से दोहरे भी हो सकते हैं (जब जब·· तब तब, ज्यों-ज्यों, त्यों-त्यों)।

समानाधिकरण समुच्चयबोधक

आधुनिक हिन्दी में समानाधिकरण समुच्चयबोधक अर्थ की दृष्टि से निम्न भेदों में बँटे हुए हैं: संयोजक, क्रमानुगत, विरोधदर्शक, विभाजक, परिणामदर्शक और व्याख्यात्मक।

(1) संयोजक समुच्चयबोधक। इनमें 'और', 'तथा', 'व', 'एवं' एकहरे समुच्चयबोधक और 'न···न' दोहरा समुच्चयबोधक आते हैं।

'और' समुच्चयबोधक जोड़ता है: (1) वाक्य के सजातीय अंगों को यानी: (क) सजातीय उद्देश्य—बनाली और लीला ने···गिलासियाँ ले लीं (96, 63); (ख) सजातीय विधेय—···इसलाम के नाम पर मारो और मारो (4, 74); (ग) सजातीय कर्म—उनका कुर्त्ता, बण्डी और जूते भी वे लोग ले गये (96, 82); (घ) सजातीय क्रियाविशेषण—घोड़ों और ऊँटों की हिनहिनाहट और बलबलाहट से कान के परदे फटने लगे (4, 60); (च) सजातीय विशेषण—उसके घने, लम्बे और बंफल बाल ढलके जा रहे थे (75, 42); (घ) सजातीय निर्धारक—मध्य प्रदेश और राजस्थान में कांग्रेस दल अपना बहुमत लगभग खो चुका था (115, 397); (2) संयुक्त समानाधिकरण वाक्य के उपवाक्यों को जिनके बीच निम्न सम्बन्ध देखे जा सकते हैं: (क) सहकालिकता के सम्बन्ध—कविता से प्रेम था और स्वयं अच्छे कवि थे (72, 172); (ख) अनुक्रम के सम्बन्ध—एक हलकी-सी चीख हवा में गूँजी और उसके बाद महताब राय बेसुध हो गये (139, 38); (ग) कार्य-कारण के सम्बन्ध—परन्तु वे अपने व्यक्तिगत रूप में राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकीं और इसलिए संयुक्त रूप में स्वयं ही उनका संयोग और मेल आरम्भ हो गया (64, 84); (घ) संयोजन के सम्बन्ध—[सराफ़]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी वक्त टला जब दयानाथ ने तीसरे दिन बाकी रक़म की चीजें लौटा देने का वादा किया, और यह भी उसकी सज्जनता की थी (65, 14); (च) तुलनात्मक-विरोधसूचक सम्बन्ध---निर्मला तो चिन्तासागर में गोता खा रही थी और सुधा मीठी नींद का आनन्द उठा रही थी (66, 146); (छ) वृत्तिवाचक आनुमानिक सम्बन्ध—आश्रम सारे नगर में बदनाम हो जाएगा, और सम्भव है कि अन्य विधवाएँ भी छोड़ भागें (72, 106)।

'और' समुच्चयबोधक बहुधा बन्द संयोजक पदबन्ध के भीतर आता है। वह खुले संयोजक पदबन्धों में बहुत कम प्रयुक्त होता है, जैसे, उत्तर में बर्फ़ और शीत के और ग्रीष्म के आगमन के रूप थे···(88, 23)।

'तथा' समुच्चयबोधक 'और' का समानार्थक है, हालाँकि वह कहीं कम प्रयुक्त होता है। 'और' की तरह वह जोड़ता है : (1) वाक्य के सजातीय अंगों को यानी : (क) सजातीय उद्देश्य—···सहकारी समितियाँ तथा पंचायत समितियाँ विकास के नाम पर राजनीति के अखाड़े बन चुकी हैं (II, 10-2-1970, 18), (ख) सजातीय विधेय—···कांग्रेस ने जहाँ आक्रमणकारी कार्रवाइयों की निन्दा की है तथा मौक़ा आने पर ऐसी कोशिशों का विरोध किया है··· (II, 10-2-1970, 88); (ग) सजातीय कर्म—युवराज सुमन अपने दोनों भाइयों अशोक तथा तिश्या के साथ···उद्यान में खड़े हैं (38, 7); (घ) सजातीय क्रिया-विशेषण—केरल वा ओड़ीसा में क्रमश: सन् 1959 तथा 1962 में मध्यावधि निर्वाचन हुए थे (115, 395); (च) सजातीय विशेषण—···वह छोटी-सी गढ़ी विविध रणवाजों तथा जयनाद की ध्वनि से गूँज उठी (4, 60); (छ) सजातीय निर्धारक—···1856 में काला सागर में तथा 1863 में आयोनियम द्वीप में असैनिकीकरण द्वारा निरस्त्रीकरण की स्थापना हुई थी (115, 362); (2) संयुक्त समानाधिकरण वाक्य उपवाक्यों को जिनके बीच निम्न सम्बन्ध देखे जा सकते हैं : (क) सहकालिकता के सम्बन्ध—मशीनें अभी तक बक्सों में पड़ी हुई थीं तथा उन्हें आजमाया भी नहीं गया था (IV, 6-7-1956); (ख) अनुक्रम के सम्बन्ध—रक्तपात के भी अवसर आते हैं तथा कभी-कभी निर्वाचन तक स्थगित कर देना पड़ता है (115, 396); (ग) कार्य-कारण के सम्बन्ध—चार्वाक आत्मा, पुनर्जन्म और ईश्वर को नहीं मानता तथा वह ब्राह्मणवाद का घोर विरोधी था (43, 71); (घ) संयोजन के सम्बन्ध—इस बार हमें अच्छी फ़सल की आशा थी तथा हमारी यह आशा फलीभूत भी हो जाती···(XI, 22-10-1957)।

'तथा' समुच्चयबोधक 'और' के साथ-ही-साथ खुले संयोजक पदबन्धों में प्रयुक्त होता है जहाँ वह सजातीय अंगों को एक-दूसरे में अलग करता है, जिनके विशेषक 'और' समुच्चयबोधक से जोड़े गये हैं, जैसे, ···सामाजिक और नैतिक स्वास्थ्य तथा वेश्या-वृत्ति और स्त्रियों के व्यापार को रोकने वाली योजनाओं को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राथमिकता दी गयी है (115, 417), तीसरी समस्या अच्छे बीज और खाद तथा उसके प्रयोग की है (II, 10-2-1970, 17)।

'व' समुच्चयबोधक 'और' एवं 'तथा' का समानार्थक है, परन्तु वह वाक्य के सजातीय अंगों को ही जोड़ता है (मुख्यतः गौण अंगों का) जिनमें हैं : (क) सजातीय कर्म—···जिससे वे सामान स्थिति व अवसर पा सके (II, 10-2-1970, 11); (ख) सजातीय विशेषक—उनमें सही व ताज़ा जानकारी का समावेश किया जाना चाहिए (II, 10-2-1970, 13); (ग) सजातीय क्रियाविशेषक—···मद्रास व मैसूर राज्यों में कांग्रेस ने···कम स्थान प्राप्त किये हैं (115, 397-398); (घ) सजातीय निर्धारक—तीन योजनाओं व दो वार्षिक योजनाओं के पश्चात् भी 70 प्रतिशत किसानों के पास वही पुराने ढंग के हल हैं (II, 10-2-1970, 17)।

'तथा' के साथ-ही-साथ 'व' खुले संयोजक पदबन्धों में प्रयुक्त हो सकता है, जैसे, लोहा व इस्पात तथा सीमेंट उद्योग में ऐसा ही हुआ है··· (II, 10-2-1970, 20)। 'व' स्थिर कोशीय शब्दबन्धों में प्रयुक्त हो सकता है, जैसे, बिहार, जम्मू व कश्मीर एवं राजस्थान राज्य···कम विकासी राज्यों में शामिल किये गये हैं (II, 24-8-1966, 18)।

'एवं' भी 'और', 'तथा' और 'व' का समानार्थक है, परन्तु 'व' की भाँति वह वाक्य के सजातीय अंगों को ही जोड़ता है जिनमें हैं : (क) सजातीय उद्देश्य—इस युग के देनों में व्यावहारिक निष्पक्षता एवं धर्मनिरपेक्षता भी है (115, 84); (ख) सजातीय विधेय—जनता जितनी अधिक सक्रिय एवं सचेत होगी··· (115, 445); (ग) सजातीय कर्म—···हमें···अपने परराष्ट्र नीति एवं अर्थ-व्यवस्था को बचाकर चलना है (II, 10-2-1970, 15); (घ) सजातीय विशेषक—प्रथम एवं द्वितीय योजना की सहायता के मुक़ाबले में तो यह कहीं ज़्यादा है (II, 10-2-1970, 15); (च) सजातीय क्रियाविशेषक—मंगलवार, बुध एवं बृहस्पतिवार के पहले ही आता है (V, जनवरी, 1963, 133); (छ) सजातीय निर्धारक—कृषि एवं उद्योग दोनों क्षेत्रों में हम ने जो प्रगति की है··· (II, 10-2-1970, 14)।

'एवं' समुच्चयबोधक खुले संयोजक पदबन्धों में अन्य समुच्चयबोधकों (मुख्यतः 'और') के साथ प्रयुक्त हो सकते हैं, जैसे, स्वास्थ्य और शिक्षा एवं अन्य समाज-सेवाओं के क्षेत्र में अधिक सुविधाएँ देने की माँग बढ़ती जा रही है (II, 25-8-1966, 5)।

'एवं' संयुक्त समानाधिकरण वाक्य के उपवाक्यों को प्रायः नहीं जोड़ता, इसके उदाहरण बहुत ही कम मिलते हैं, जैसे, क़ानूनों की पेचीदगियाँ हटायी जाएँ एवं कृषि क़ानून इतने सरल हों···(II, 10-2-1970, 18)।

पुनरुक्त समुच्चयबोधक 'न···न' जोड़ते हैं : (1) वाक्य के सजातीय अंगों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(मुख्यत: मुख्य अंगों को) : (क) सजातीय उद्देश्य—न नदी नज़र आयी न गुलज़ार ···(24, 90); (ख) सजातीय विधेय—···सहशिक्षा न तो स्वाभाविक है, न व्यावहारिक और न ही अल्प-व्ययसाध्य है (115, 255); (ग) सजातीय विशेषक —उन पर न तीरों की मार की न तलवार की (4, 553); (घ) सजातीय क्रिया-विशेषक—न इधर बहती थी न उधर (30, 72); (च) सजातीय कर्म—उसे न तो कविता से प्रेम है और न कहानियों से (161, 68); (2) संयुक्त समानाधिकरण वाक्यों के उपवाक्यों को जिनकी समानान्तर रचना है, जैसे, न वह जवान हो सकते हैं, न मैं बुढ़िया हो सकती हूँ (66, 132), महीने भर न टर्लसिंह की आँखें खुलीं, न चिन्ता की आँखें बन्द हुईं (70, 70)।

संयोजक समुच्चयबोधकों में 'फिर' समुच्चयबोधक क्रियाविशेषण आता है। वह संयुक्त समानाधिकरण वाक्य के उपवाक्यों को जोड़ता है जिसमें व्यापारी, अवस्थाओं एवं लक्षणों की अनुक्रमिकता सहकालिक होती है, जैसे, सुनते-सुनते माँ के ओंठों पर गर्वीली मुसकान आ जाती, फिर वह मुसकान विषाद की गहरी रेखाओं में परिणत हो जाती (16, 86) ···जिया तो मरेगा, फिर वह किसके पास फ़रियाद लेकर जाएगा (66, 162)।

'और' समुच्चयबोधक और समुच्चयबोधक क्रियाविशेषण सरल स्वतन्त्र वाक्यों के संयोजक तत्त्व के रूप में आ सकते हैं। इसी प्रकार्य में वे पूर्ववर्ती प्रसंग में होने वाले सम्बन्धों को इंगित करते हैं, जैसे, ['और' पैराग्राफ़ के शुरू में]—और जब सरनो ने उसकी चोटी छोड़ दी, तो रखी···भागने लगी (75, 126); ['फिर' पैराग्राफ़ के शुरू में]—फिर उसने एक और उलझन प्रकट की···(136, 72)।

(2) क्रमानुगत (तुलनात्मक-संयोजक) समुच्चयबोधक। इनमें संयुक्त पृकक् समुच्चयबोधक 'न केवल (सिर्फ़)···बल्कि [वरन्], 'केवल ही नहीं···बल्कि [वरन्]', ही नहीं···बल्कि [वरन्], 'ही नहीं···भी', 'न केवल···अपितु [प्रत्युत]', 'केवल ही नहीं···अपितु', जैसे, न केवल···वरन्—···न केवल कार्य-दिनों की ही हानि हुई है वरन् गतिरोध बढ़ा है (II, 10-2-1970, 20);

न केवल···बल्कि—एक अच्छी शिक्षा-प्रणाली न केवल व्यक्ति की प्राविधिक योग्यता का विकास करती है बल्कि समाज में व्यक्ति की उपयोगिकता को भी स्थापित करती है (II, 25-2-1970, 25);

न सिर्फ़···बल्कि—सम्पूर्णानन्द मन्त्रिमण्डल की···जनविरोधी नीतियों को खोलकर इस आन्दोलन ने न सिर्फ़ सामने रख दिया है बल्कि जनता की बहुत-सी माँगों को मानने के लिए भी उसे मजबूर कर दिया है (IV, 14-9-1958);

केवल ही नहीं···वरन्—औद्योगिक और अन्य मज़दूरों को केवल उचित वेतन ही नहीं, वरन्·····निर्वाह योग्य वेतन भी मिलना चाहिए (II, 10-2-1970, 26);

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल ही नहीं···बल्कि—इस बस्ती में केवल कुत्ते और सूअर ही नहीं बसते बल्कि आपकी तरह के हाथ-मुँह वाले आदमी भी बसते हैं (125, 150);

ही नहीं···वरन्—वह पतनोन्मुखी दर्शन ही नहीं है वरन् प्रतिक्रियावादी भी है (145, 51);

ही नहीं···बल्कि—वह एक स्वप्नद्रष्टा ही नहीं बल्कि एक सेनानी भी थे (II, 25-2-1970, 7);

न केवल···अपितु—इस समारोह ने सहस्रों व्यक्तियों को न केवल वहाँ आने का अवसर दिया, अपितु वहाँ की बहुमुखी प्रगति को स्वयं अपनी आँखों से देखने की सुविधा भी प्रदान की (99, 37);

केवल ही नहीं···अपितु—···महासागर केवल पानी ही नहीं अपितु उष्मा के भी संग्रहालय हैं (88, 54);

ही नहीं···भी—···लोकतन्त्र में जीवन-निर्वाह योग्य वेतन ज़रूरी ही नहीं अनिवार्य भी है (II, 10-2-1970, 19);

केवल ही नहीं···प्रत्युत—इसमें संविधान-निर्माओं का आशय केवल मौलिक शासन-विधान प्रस्तुत करना ही नहीं था, प्रत्युत एक ऐसे संविधान का ढाँचा निर्मित करना था··· (115, 327);

ही नहीं···अपितु—···वहाँ से सकुशल वापस आने की घटनाएँ विश्व के इतिहास की ही नहीं अपितु सकल ब्रह्माण्ड के इतिहास की अविस्मरणीय घटनाएँ हैं (115, 443);

न केवल···प्रत्युत—इसलिए वह दूरदर्शी महाराज से तुरन्त ही न केवल सहमत हो गया, प्रत्युत उसने···योजना भी बना ली (4, 87)।

क्रमानुगत समुच्चयबोधक बहुभाग संयुक्त समानाधिकरण वाक्य के उपवाक्यों को जोड़ते हैं, परन्तु वे वाक्य के सजातीय अंगों को भी जोड़ सकते हैं।

सरल स्वतन्त्र वाक्य में प्रयुक्त होते हुए क्रमानुगत समुच्चयबोधक जोड़ सकते हैं: (क) सजातीय विधेय—यह न केवल 150 सेर वज़न ढो सकता है, वरन् 150 मील तक 65 मील प्रतिघण्टे की गति से निरन्तर उड़ सकता है (115, 352); (ख) सजातीय कर्म—यह चीज़ एकता के लिए ही नहीं बल्कि अल्पसंख्यकों के हितों के लिए भी ख़तरनाक है (II, 10-2-1970, 21); (ग) सजातीय क्रियाविशेषक—कांग्रेस अपनी संगठनात्मक शक्ति के बल पर ही नहीं, बल्कि अपने स्वस्थ सिद्धान्तों और नीतियों के बल पर देश में स्थिरता ला सकी थी (II, 10-2-1970, 24); (घ) सजातीय विशेषक—महासागर केवल पानी ही नहीं अपितु उष्मा के भी संग्रहालय हैं (88, 54); (च) सजातीय पूरक—मारू ग्रामवासी राही को एक प्रिय अतिथि ही नहीं वरन् अपना भाई समझते थे (161, 81)।

क्रमानुगत समुच्चयबोधक सहित समानाधिकरण वाक्य व्यक्त करते हैं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम उपवाक्य का व्यापार द्वितीय उपवाक्य के व्यापार का समानान्तर है और दोनों उपवाक्य अन्योन्याश्रित हैं : प्रथम द्वितीय का अस्तित्व और द्वितीय प्रथम का अस्तित्व पूर्वनिश्चित किया करते हैं, जैसे, यह प्रश्न न केवल हमारे देश के लिए विवादग्रस्त है वरन् संसार के अन्य देशों में भी इस पर मतैक्य नहीं है (115, 254), यह पारिभाषिक शब्द केवल अंग्रेज़ी में ही प्रचलित नहीं है, बल्कि प्रायः सभी उन्नत भाषाओं में उनसे मिलते-जुलते पारिभाषिक शब्द पाये जाते हैं (64, 90)।

(3) विरोधदर्शक समुच्चयबोधक—इस श्रेणी में अनेक समुच्चयबोधक आते हैं, जिनके ये भेद हैं : (1) शुद्ध विरोधदर्शक—पर, परन्तु, किन्तु, लेकिन, मगर; (2) प्रत्यस्थापनासूचक—विरोधदर्शक—वरना, अन्यथा, नहीं तो; (3) अनुमति-सूचक विरोधदर्शक—तथापि, तिस पर भी, तो भी, फिर भी; (4) तुलनासूचक-विरोधदर्शक—बल्कि, वरन्, अपितु (जिनसे 'कि' समुच्चयबोधक जुट जाता है); (5) परिसीमक-विरोधदर्शक—केवल।

शुद्ध विरोधदर्शक समुच्चयबोधक वाक्य के सजातीय अंगों और संयुक्त समानाधिकरण वाक्य के उपवाक्यों को जोड़ने के लिए प्रयुक्त होते हैं।

'पर', 'परन्तु' और 'किन्तु' सजातीय विशेषकों को जोड़ सकते हैं, जैसे, उसकी आँखें छोटी पर लम्बी थीं (103, 64), ···उसकी छोटी-छोटी परन्तु चमकीली आँखें सामने के व्यक्ति के हृदय में उतर जाती थीं (75, 47), ···एक और छोटा-सा किन्तु सुन्दर घर सबसे निराला था (4, 13)।

'पर', 'परन्तु', 'किन्तु', 'लेकिन' और 'मगर' समुच्चयबोधक सजातीय विधेयों को जोड़ते हैं, जैसे, देख तो लोगी, पर सुन न सकोगी (73, 19), वह···अपनी मुग़लकालीन रूपरेखा की झाँकियाँ प्रस्तुत कर सकती हैं, परन्तु क़दरदान निगाहों के लिए कलाकारी का जौहर पेश नहीं कर सकती (136, 32), अब वह केवल नायक-नायिका के संयोग-वियोग की कहानी नहीं सुनाता किन्तु जीवन की समस्याओं पर भी विचार करता है (64, 8), वह स्वयं तो शौकीन न थे, लेकिन अपने घरवालों को आराम देना अपना कर्त्तव्य समझते थे (73, 5), वैसे तो अहसान बहुत दुर्बल क़िस्म के आदमी हैं, मगर अपनी बीवी के मामले में बहुत कठोर साबित हुए हैं (136, 36)।

उपर्युक्त पाँच समुच्चबोधक संयुक्त समानाधिकरण वाक्य के उपवाक्यों को जोड़ते हैं जिनके बीच निम्न सम्बन्ध देखे जा सकते हैं : (क) अननुकूला एवं अनु-मतिसूचक—यह मेरी भूल हो, पर मैं तो उसे स्वीकार कर चुका था (39, 75), बंशीलाल हिन्दुस्तान आ गया, परन्तु अपना स्वास्थ्य वह वहीं छोड़ आया (139, 148), वह सामने से तलवार का वार रोक सकते थे, किन्तु पीछे से सुई की नोक भी उनकी सहनशक्ति से बाहर थी (72, 69), वकील साहब मुक़दमों में तो खूब मीनमेख निकालते थे, लेकिन स्त्रियों के स्वभाव का उन्हें कुछ यों ही सा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान था (66, 12), मैंने कई जगहों पर नौकरी का यत्न किया, मगर कहीं सफलता न हुई (139, 130); (ख) परिसीमक-विरोधसूचक—वह ऊपर उड़ना चाहता था पर गरीबी उसे नीचे धकेल देती थी (16, 146), वह फूटकर रोना चाहता था, परन्तु अन्धकार उसका गला घोंट रहा था (39, 109), ···हिरनों का दल छलाँग मारता हुआ स्रोत लाँघ गया, किन्तु एक शावक चकित-सा वहीं खड़ा रह गया (39, 87), यह कहते-कहते मंसाराम ने कमरे का द्वार बन्द करना चाहा, लेकिन निर्मला किवाड़ों को हटाकर कमरे में चली आयी (66, 78), मैंने क्षमा माँगनी चाही, मगर किसी दैवी शक्ति ने जीभ जकड़ ली (139, 73); (ग) तुलनामूलक विरोधसूचक—रामेश्वर तो चुप रहा, पर जगेश्वर इतना क्षमा-शील न था (70, 5), कान धोखा खा सकते हैं, परन्तु आँखें धोखा नहीं खातीं (139, 166), एकता का आन्दोलन अकबर ने चलाया, किन्तु औरंगज़ेब ने उसे काट दिया (43, 515), शाम तक मैं इन्तज़ार करती रही, लेकिन वह न आये (16, 54), पुरानचन्द का कलेजा धड़क रहा था, मगर जीभ पूरी-पूरी वस में थी (139, 57); (घ) संयोजक—आप विद्वानों का ऐसा नियन्त्रण रख सकते हैं···, पर यह नियन्त्रण केवल पुस्तकों पर हो सकता है (64, 98), माया का हाथ उत्सुकता से फ़ोटो की ओर बढ़ गया था, परन्तु फ़ोटो आँखों के सामने आते ही उसके हाथ से गिर गयी (66, 106), मैं पीछे था, किन्तु स्त्री के मुँह से बे···निकल कर रह गया (39, 30), विट्ठलदास का मनोरथ यहाँ भी पूरा न हुआ, लेकिन यह उनके लिए कुछ नयी बात न थी (72, 108), ···उनकी पहली औलाद लड़का होता है, मगर वह जीवित नहीं रहती (136, 53); (च) वृत्तिवाचक आनुमानिक—उसके लिए वह बकरी का दूध लेती, पर न जाने क्यों चेतन को बकरी के दूध से घृणा थी (16, 81), वे चुप हो गये, परन्तु थोड़ी देर बाद मालूम हुआ कि वे रो रहे हैं (139, 85), पहले विचार था कि ट्रेजेडी होनी चाहिए किन्तु अशोक चाहता था कि कामेडी हो (136, 59), वह स्वयं उसको अपनी ओर से झकझोर कर जगाती थी, मगर ऐसा प्रतीत होता था कि वह लोरी देकर उसे और अधिक गहरी नींद सुला रही थी (136, 34)।

उपर्युक्त पाँच समुच्चयबोधक सरल स्वतन्त्र वाक्यों के संयोजक तत्त्व के रूप में आ सकते हैं, इस प्रयोग में वे पूर्ववर्ती प्रसंग से हुए सम्बन्ध को इंगित करते हैं, (सब समुच्चयबोधक पैराग्राफ़ के शुरू में आते हैं), जैसे, पर इस समय जाऊँ कहाँ? (73, 3), परन्तु माँजी इस सर्वनाश के सम्मुख क्या औचित्य सोचतीं! (96, 38), लेकिन सुमन की जीवन सुख में कटा था (73, 17), किन्तु उसके दिल-व-दिमाग़ की बेचैनी की अनुभूति ने मुझे बहुत ही खिन्न कर दिया (136, 96), मगर तीन घण्टे बाद ही श्याम लौट आया (136, 76)।

जब उपर्युक्त समुच्चयबोधक 'फिर' समुच्चयबोधक क्रियाविशेषण से जुट जाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं तो अंगों के बीच कालसूचक अनुक्रम के सम्बन्ध स्थापित हो जाते हैं, जैसे, पहले तो लाल निश्चल रहे, परन्तु फिर···वे छटपटाकर उठ बैठे (96, 41), छाले पर मक्खन लगने से एक क्षण के लिए कष्ट कम हो जाता है, किन्तु फिर ताप की वेदना होने लगती है (72, 183)।

जब उपर्युक्त समुच्चयबोधक 'फिर भी' समुच्चयबोधक क्रियाविशेषण से जुट जाते हैं तो वाक्य का अनुमतिवाचक पुट और अधिक स्पष्ट हो जाता है, जैसे,···दूर ही बैठा रहा, परन्तु फिर भी उसमें शेष रह ही क्या जाता है ? (96, 23), ···इस समय हाय-हाय मचाने का कोई नतीजा नहीं, लेकिन फिर भी इस समय शान्त बैठना उसके लिए असम्भव था (66, 102)।

प्रत्यस्थापनासूचक-विरोधदर्शक समुच्चयबोधक संयुक्त समानाधिकरण वाक्य के उन उपवाक्यों को जोड़ते हैं जिनका दूसरा उपवाक्य सम्भाव्य परिणाम इंगित करता है जो तब निकल सकता है जब प्रथम उपवाक्य में निहित प्रारम्भिक उपाधि पूरी न हो, जैसे, तुम लोग हट जाओ, वरना मैं फ़ायर कर दूँगा (71, 157), तुम सुमन बाई के पास जाना छोड़ दो, नहीं तो तुम्हारा सर्वनाश हो जाएगा (73, 97), यदि शेरा भाग सकता हो तो ठीक, अन्यथा उसका भी सिर काट लो (75, 179)।

इस श्रेणी के समुच्चयबोधक सरल स्वतन्त्र वाक्यों के संयोजक तत्त्व के रूप में आ सकते हैं, जैसे, वरना मेरे मगज़ में वह क्यों आया नहीं (103, 109), नहीं तो सिर पर चढ़ जाती है (103, 103), अन्यथा दिन भर तो वह नीला को याद भी न रखता था (161, 32)।

कभी-कभी विशेषकर बोलचाल की भाषा में 'तो' निपात, जो 'नहीं तो' के समुच्चयबोधक में आता है, छूट सकता है, जैसे, भय्या, मिठाई रख लो, नहीं रो-रोकर मर जाएगा (66, 67), ···ईश्वर के लिए बचा लीजिये, नहीं मेरा सर्वनाश हो जाएगा (66, 106)।

अनुमतिवाचक विरोधदर्शक समुच्चयबोधक संयुक्त समानाधिकरण वाक्य के उपवाक्यों को ही जोड़ने के लिए प्रयुक्त होते हैं, जैसे, उत्तर में बर्फ़ और शीत के और ग्रीष्म के आगमन के में रूप थे, तथापि···आधी मानवजाति को बर्फ़ का तनिक भी पता न था (88, 23), तुमने मेरी लड़की की जान ले ली, उसका सर्वनाश कर दिया, तिस पर भी तुम मेरे सामने इस तरह बैठे हो, मानो कोई महात्मा हो (72, 233), प्रधानमन्त्री का योजना तन्त्र पर पूरा नियन्त्रण है तो भी उनके मार्गदर्शन में जो योजनाएँ तैयार हुई हैं···(II, 17-2-1970, 23), मंसाराम ने चारपाई पर लेटकर लिहाफ़ ओढ़ लिया, फिर भी सर्दी से कलेजा काँप रहा था (66, 98)।

इस श्रेणी के समुच्चयबोधक सरल स्वतन्त्र वाक्यों के संयोजक तत्त्वों के रूप में आ सकते हैं, जैसे, तथापि छोटी त्सुनामी प्रायः और कभी-कभी तो नित्य आती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहती है (88, 44), तिस पर भी उसने अपना कुर्ता कन्धे तलक खोलकर दिखाया (24, 91), फिर भी 400 करोड़ के लिए कहीं से गुंजाइश नहीं निकली (115, 385)।

तुलनासूचक-विरोधदर्शक समुच्चयबोधक 'बल्कि', 'वरन्' एवं 'अपितु' वाक्य के सजातीय अंगों और संयुक्त समानाधिकरण वाक्यों के उपवाक्यों को जोड़ते हैं। सरल वाक्यों में वे समुच्चयबोधक बहुधा वाक्य के मुख्य सजातीय अंगों को जोड़ते हैं जो नियमत: नकारात्मक निपातों के साथ प्रयुक्त होते हैं, जैसे, (क) सजातीय उद्देश्य—गन्दे स्थलों को साफ़ करने के लिए गन्दा पानी नहीं बल्कि स्वच्छ पानी चाहिए (115, 463), ···उससे अपनी ही पीढ़ी नहीं वरन् आने वाली पीढ़ियाँ भी क्षतिग्रस्त रहती हैं (115, 463); (ख) सजातीत विधेय—···कुछ समुद्रों में ज्वार दिन में दो बार नहीं, बल्कि एक ही बार आते हैं··· (88, 60), हर औद्योगिक इकाई को केन्द्रीय रूप में निर्धारित योजनाओं द्वारा नहीं अपितु मार्केट की आवश्यकताओं की स्थिति में संचलित होना चाहिए (145, 16-17)। (जैसा कि उदाहरणों से स्पष्ट है, एक सजातीय विधेय छूट सकता है); (ग) सजातीय कर्म—व्यक्ति को नहीं बल्कि आदर्श तथ्यों को आदर्श मानना···(15, 448); (घ) सजातीय क्रियाविशेषक—···स्वेच्छा से नहीं वरन् दबाववश कर रहे हैं (115, 24); (च) सजातीय पूरक—विदेशी पूँजी को अब शोषण का एक साधन नहीं, बल्कि प्रगति का एक साधन समझा जाता है (II, 10-2-1970, 5)।

ये समुच्चयबोधक संयुक्त समानाधिकरण वाक्यों के उपवाक्यों को भी जोड़ते हैं परन्तु अपेक्षाकृत कम। प्रथम उपवाक्य सदा नकारात्मक होता है, जैसे, नगरपालिका ने एक प्रमुख सामाजिक-आर्थिक नियम को रद्द कर दिया है, इसलिए नहीं कि संसद को इस प्रकार का नियम बनाने का अधिकार नहीं था, बल्कि इसलिए कि उसे तैयार करने में कुछ गम्भीर दोष रह गये हैं···(II, 25-2-1970, 4), ···इस विषय में उन्हें किसी से कुछ कहते हुए संकोच ही नहीं होता, वरन् जब कोई जयशंकर के व्यवहार की आलोचना करने लगा, तब वह उसका प्रतिवाद करने के बदले उससे सहमत हो जाते थे (67, 26), ···उसके अमरत्व के प्रतीक उनके स्मारक अथवा उनके चित्र नहीं हैं, अपितु वह महान् कार्य है जो उन्होंने पूरा किया (145, 11)।

'बल्कि' समुच्चयबोधक सरल स्वतन्त्र वाक्यों के संयोजक तत्त्व के रूप में प्रयुक्त हो सकता है, जैसे, उनके पिता··नसीम की माँ के पुजारी थे, बल्कि यह कहिए कि एक दृष्टि से वह उसकी दूसरी बीवी थी (136, 27)।

'न कि' समुच्चयबोधक जोड़ता है: (1) वाक्य के सजातीय अंगों (मुख्यत: गौण) को, जिनमें हैं: (क) सजातीय विधेय— ··कुल पूँजी-विनियोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

249, 309), अरब रुपये होना चाहिए, न कि 199.760 अरब रुपये (II, 25-8-1966, 18); (ख) सजातीय विशेषक—काम जोगियों और फ़क़ीरों का है न कि बादशाहों का (24, 9); (ग) सजातीय क्रियाविशेषक—अतिरिक्त ग्रामीण जनसंख्या का उपयोग लाभप्रद ढंग से कृषि क्षेत्र के विस्तार द्वारा हो सकता है न कि उद्योग की स्थापना से (II, 25-12-1966, 16); (2) संयुक्त समानाधिकरण वाक्यों के उपवाक्यों को (दूसरे उपवाक्य में विधेय छुट सकता है), जैसे, शिक्षा सैद्धान्तिक न होकर पूर्णतः व्यावहारिक होनी चाहिए ताकि स्वावलम्बी स्नातक पैदा हो सकें···न कि भारस्वरूप बनकर उसकी स्वाभाविक प्रगति के गले में बँधे भारी पत्थर सिद्ध हों (115, 40), घबराया तो अर्जुन था न कि वह सेना (122, 11)।

परिसीमक-विरोधदर्शक समुच्चयबोधक 'केवल' संयुक्त समानाधिकरण वाक्य के उपवाक्यों को ही जोड़ता है, जैसे, यह हरा-भरा लहलहाता हुआ पौधा जल गया, केवल उसकी राख रह गयी (65, 10), विद्या और बुद्धि है ही नहीं, केवल इसी स्वाँग का भरोसा है (72, 207)।

(4) विभाजक समुच्चयबोधक। इनमें एकहरे 'या', 'अथवा', 'कि', 'वा' तथा पुनरुक्त 'या···या', 'चाहे···चाहे', 'क्या···या', 'चाहे···या', 'चाहे···अथवा' समुच्चयबोधक आते हैं।

'या' समुच्चयबोधक जोड़ता है: (1) वाक्य के सजातीय अंगों को जिनमें हैं: (क) सजातीय उद्देश्य—वह जगह या कोना···एकदम सज जाता (136, 31); (ख) सजातीय विधेय—कुली माल को सिर पर रखकर ले जाते हैं या ठेला या हाथगाड़ी का प्रयोग करते हैं; (ग) सजातीय कर्म—उसके ग्राहक···मूल्य डाकघर या बैंकों को चुका देते हैं (101, 212); (घ) सजातीय विशेषक—यदि ख़रीदार किसी आवश्यक या साधारण शर्त को तोड़ता है···(101, 252); (च) सजातीय क्रियाविशेषक—मूल्य माल की संख्या, तौल या नाप के अनुसार लगाया जाता है (101, 243); (छ) सजातीय निर्धारक—उसके आँखों या शब्दों के बाद में कोई स्थान ख़ाली नहीं छोड़ना चाहिए (101, 303)—क्रियाविशेषणात्मक, पति या एजेण्ट को एक फ़ार्म पर अपने हस्ताक्षर करने होंगे (कर्तृविषयक); (ज) सजातीय समानाधिकरण—कोई भी व्यक्ति—पुरुष या स्त्री—सेविंग्स बैंक में रुपया जमा कर सकता है (101, 188); (2) संयुक्त समानाधिकरण वाक्य के उपवाक्यों को जिनके बीच परस्पर अपवर्जन के सम्बन्ध देखे जा सकते हैं, जैसे, ···वह मेरा भला चाहती है, या उसकी कोई चाल है (143, 79), बात हो पड़ी कि कोयले के भीतर आग है या वह कोयले के बाहर है? (44, 42)।

'अथवा' समुच्चयबोधक जोड़ता है: (1) वाक्य के सजातीय अंगों को जिनमें हैं: (क) सजातीय उद्देश्य—जब प्रत्येक कार्य अथवा मनमुटाव समझौते से सुलझ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते हैं···(115, 463); (ख) सजातीय विधेय—विदेशी बिल वे हैं जो एक देश में लिखे जाएँ और उनका भुगतान दूसरे देश में हो अथवा अन्य देश के निवासी पर लिखे जाएँ (101, 319); (ग) सजातीय कर्म—···कुछ वर्गों अथवा कुछ भागों को केन्द्रीय वित्तीय अनुदान देकर···(II, 10-2-1970, 23); (घ) सजातीय विशेषक—···जो राजनीतिक, सामाजिक अथवा आर्थिक ढाँचे में परिवर्तन होने पर···बदला जा सके (115, 329); (च) सजातीय क्रियाविशेषक—···वह··· अमुक प्रयोगशाला अथवा अमुक विश्वविद्यालय में काम करता है (145, 36); (छ) सजातीय निर्धारक—जब स्वीकारक किसी शर्त के पूरा होने पर अथवा किसी घटना के होने पर बिल का भुगतान करना स्वीकार करे···(101, 332); (2) संयुक्त समानाधिकरण वाक्य के उपवाक्यों को जिनके बीच परस्पर अपवर्जन के सम्बन्ध देखे जा सकते हैं, जैसे, देवी माता की कृपा है, अथवा आपके देवता के प्रभावों का फल है (139, 18), ···तो कदाचित् मैं अपने घर लौट जाती अथवा वह ही मुझे मना ले जाता (72, 112)।

'या' और 'अथवा' समुच्चयबोधक वाक्य के सजातीय अंगों के अलग-अलग पदबन्धों के विभाजन के लिए प्रयुक्त हो सकते हैं, जैसे, खरीदार माल का परिमाण अथवा उसकी मात्रा निश्चित रूप से संख्या, तौल या नाप में विक्रेता को बता देनी चाहिए (101, 241), ···तो वे [क़दम]···कुछ वर्गों अथवा कुछ भागों को केन्द्रीय वित्तीय अनुदान देकर या दूसरे प्रकार के वायदे करके उठाये गये हैं (II, 10-2-1970, 23), यह परमेश्वर की इच्छा थी कि उसकी मृत्यु इसी प्रकार हो अथवा यह उसके पूर्वजन्म के कर्मों का फल था, या उसकी जवान विधवा के नक्षत्रों का अथवा उस नन्हे शिशु के ग्रहचक्र का जिसकी आयु अब एक वर्ष की थी (161, 3-4)।

'या···या' समुच्चयबोधक जोड़ता है : (1) वाक्य के सजातीय अंगों को जिनमें हैं : (क) सजातीय विधेय—या उन्होंने उनसे कोई बहाना करके ठगे होंगे या उठा लाये होंगे (73, 71); (ख) सजातीय कर्म—मानव प्रकृति या संस्थाओं या दोनों में आमूल परिवर्तन लाकर···(II, 25, 2, 1970, 5); (ग) सजातीय क्रिया-विशेषक—बिक्री-पत्र या तो नियत समय के पश्चात् या वस्तु बिक जाने पर भेजा जाता है (101, 222); (2) संयुक्त समानाधिकरण वाक्य के उपवाक्यों को जिनके बीच परस्पर अपवर्जन या परिगणना के सम्बन्ध देखे जा सकते हैं, जैसे, या तो वह किसी सारे काम में फँस गये या जिन लोगों ने सहायता का वचन दिया पलट गये (72, 164), यहाँ या तो अन्धे आते हैं या बातों के वीर (72, 99)—जैसा कि अन्तिम उदाहरण से स्पष्ट है परवर्ती उपवाक्य के विधेय का लोप हो सकता है।

'या···या' समुच्चयबोधक बहुघटकीय संयुक्त समानाधिकरण वाक्य में प्रयुक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सकता है, जैसे, यदि माल उसके आर्डर के अनुसार नहीं होता या ठीक न बँधने के कारण मार्ग में उसमें कुछ टूट-फूट हो जाती है या वस्तु बीजक में लिखी संख्या, तौल या माप के अनुसार नहीं होती या वस्तुओं के सम्बन्ध में कोई अन्य शिकायत होती है तो···(101, 265)।

'चाहे···चाहे' समुच्चयबोधक वाक्य के मुख्य सजातीय अंगों को जोड़ता है जिनके बीच परिगणना सम्बन्ध व्यक्त होते हैं। इनमें हैं: (क) सजातीय उद्देश्य—···जिसके पास कोई आदमज़ाद चाहे औरत हो चाहे मर्द···उसे अपने साथ ले आए (20, 147); (ख) सजातीय विधेय—हम चाहे पार्टी-सदस्य हों, चाहे न हों, सब-के-सब···प्रणाली को अपनी प्रणाली मानते हैं (145, 20)।

'क्या···या' बहुधा संयुक्त समानाधिकरण वाक्य के उपवाक्यों को जोड़ता है जिनके बीच परस्पर अपवर्जक परिघटनाओं, घटनाओं आदि के परिगणनासूचक सम्बन्ध देखे जा सकते हैं। वाक्य सदा ही प्रश्नवाचक होता है, जैसे, यह अपार समूह क्या मुझसे किसी फ़ायदे की आशा रखता है, या उसे मुझसे किसी हानि का भय है? (71, 125), लड़को, क्यों भागते हो? क्या यहाँ नेवता खाने आये थे या कोई नाच-तमाशा हो रहा था? (71, 155)।

'चाहे···या' समुच्चयबोधक बहुधा सजातीय विधेयों को जोड़ता है, जैसे, एक प्रकार का स्नेह-बंधन होता है जो सब प्राणियों को चाहे छोटे हों या बड़े बाँधे रहता है (73, 48), प्रामिसरी नोट चाहे देशी हो या विदेशी एक ही लिखा जाता है (101, 342), ···उनके अधिकार को सभी क्षेत्र के उद्योगों में, चाहे वे निजी उद्योग हों या सरकारी, लागू किया जाना चाहिए (II, 10-2-1970, 26)। जैसा कि उदाहरणों से स्पष्ट है सजातीय विधेय संयुक्त नामिक हैं और दूसरे विधेय की संयोजक क्रिया का लोप होता है।

कभी-कभी 'या' परवर्ती समुच्चयबोधक की जगह 'अथवा' समुच्चयबोधक आता है, जैसे, मनुष्य चाहे नास्तिक हो अथवा आस्तिक (115, 329)।

विभाजक समुच्चयबोधकों में विभाजक-विरोधदर्शक समुच्चयबोधक 'कहाँ···कहाँ' सम्मिलित किया जा सकता है जो वाक्य के सजातीय अंगों और संयुक्त समानाधिकरण वाक्य के उपवाक्यों को जोड़ता है जिनके बीच परिगणना के सम्बन्ध देखे जा सकते हैं और जिनमें परवर्ती उपवाक्य पूर्ववर्ती का विरोध करता है, जैसे, कहाँ तो उनसे अपने पति की सराहना किया करती थी, कहाँ अब उसकी निन्दा करने लगी (73, 21), कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली (77, 78)।

'कि' समुच्चयबोधक जोड़ता है: (1) वाक्य के सजातीय अंगों को (मुख्यतः सजातीय विधेयों को), जैसे, अब उठेगी भी कि वहाँ सारी रात उपदेश ही देती रहेगी (65, 13), चाँदी के होंगे कि सोने के दादी जी (65, 26), तू मिलने चलेगी कि लड़ने? (103, 97); (2) संयुक्त समानाधिकरण वाक्य के उपवाक्यों को,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे, कुआँ प्यासे के पास जाएगा कि प्यासा कुएँ के पास (103, 91)। यहाँ भी परवर्ती विधेय का लोप हो सकता है, जैसा कि अन्तिम उदाहरण से स्पष्ट है।

(5) परिणामदर्शक समुच्चयबोधक। इनमें 'इसलिए', 'अतः', 'अतएव', 'चुनाँचे' और 'सो' समुच्चयबोधक आते हैं।

ये समुच्चयबोधक संयुक्त समानाधिकरण वाक्य के उपवाक्यों को जोड़ते हैं जिनके कार्य-कारण के सम्बन्ध व्यक्त होते हैं, जैसे, टिकट के लिए धन तो पास था नहीं, इसलिए बिना टिकट ही गाड़ी पर सवार हो गया (16, 97), 'स्वयं' और 'अवश्य' से काफ़ी ज़ोर पहुँचता था, अतः इनके साथ 'ही' जोड़ना व्यर्थ है (114, 207), सब हलवाई मुंशी जी को पहचानते थे, अतएव मुंशी जी ने सिर झुका लिया (70, 27), शाहेबदर लोगों पर ज़ोर-ज़्यादती करता है, चुनाँचे इस गरीब की औरत को छीन लिया है (24, 102), पर मैंने ये पैसे कजरी से लिए, सो तू चुका देना (103, 99)।

परिणामदर्शक समुच्चयबोधक सरल स्वतन्त्र वाक्यों के संयोजक तत्व के रूप में आ सकते हैं, जो विशेषक 'अतः' के सिलसिले में विशेष रूप से सही होता है, जैसे ('अतः', 'इसलिए', 'अतएव' पैराग्राफ़ के शुरू में हैं), अतः तत्काल की नसीम बानो तक पहुँचने के रास्ते सोच लिए गये (136, 29), इसलिए गोयनका ने एक दूसरी चाल चली (IV, 25-12-1974), अतएव आशा और आत्मविश्वास के साथ 1956 में दूसरी योजना का समारम्भ किया गया (115, 383), चुनाँचे सुरंग के रास्ते में मैं उस युवक के मकान पर पहुँची (24, 32), सो अब वह वहीं रम गयी? (103, 85)

(6) व्याख्यात्मक समुच्चयबोधक। इनमें 'यानी' और 'अर्थात्' समुच्चयबोधक आते हैं।

'यानी' समुच्चयबोधक जोड़ता है: (1) वाक्य के सजातीय अंगों को (बहुधा मुख्य अंगों को), जिनमें हैं: (क) सजातीय उद्देश्य—दरबार जी यानी ज़मींदार पढ़े-लिखे आदमी लगते थे (103, 37); (ख) सजातीय विधेय—सोना दिन-भर एकान्त में ही रहती यानी हमारे साथ नहीं रहती (103, 36); (2) संयुक्त समानाधिकरण वाक्य के उपवाक्यों की जो व्याख्यात्मकता के सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे, देश की आबादी की औसत वार्षिक वृद्धि 35 लाख है, यानी 17-18 व्यक्ति प्रति हज़ार के हिसाब से आबादी बढ़ रही है (145, 36)।

'अर्थात्' समुच्चयबोधक जो 'यानी' का समानार्थक है जोड़ता है: (1) वाक्य के सजातीय अंगों को जिनमें हैं: (क) सजातीय उद्देश्य—···कोई भी धारक अवधि चैक पाने वाला व्यक्ति उस पर साधारण या विशेष रेखांकन कर सकता है (101, 314); (ख) सजातीय विधेय—कुछ देर 'मुंशी' की हैसियत से इंपीरियल फ़िल्म कम्पनी में काम किया, अर्थात् डाइरेक्टरों के हुक्म के मुताबिक उलटी-सीधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा में फ़िल्मों के संवाद लिखता रहा (136, 27); (ग) सजातीय कर्म—···उसे नयी पास-बुक की फ़ीस, अर्थात् एक रुपया, देनी पड़ती है (101, 191); (घ) सजातीय विशेषक (विधेयवाचक)—औजार आराम से पैने अर्थात् तेज़ धार वाले बनाये जा सकेंगे (115, 355), (विशेषणात्मक)—···जिसमें प्रतिज्ञा करने वाला अर्थात् रकम चुकाने वाला व्यक्ति एक ही हो (101, 345); (च) सजातीय क्रियाविशेषक—चालू मौसम में अर्थात् 27 अक्तूबर, 1972 से जनवरी 1973 तक की अवधि में जमा रकम भी अधिक वृद्धि हुई (153, 9); (2) संयुक्त समानाधिकरण वाक्य के उपवाक्यों को जो व्याख्यात्मकता के सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे, दोनों का उद्देश्य अन्ततः एक ही है—अर्थात् एक सुखी और समृद्ध समाज की स्थापना करना (115, 414)।

'अर्थात्' समुच्चयबोधक सरल स्वतन्त्र वाक्य के संयोजक तत्व के रूप में आ सकता है, जैसे, अर्थात् फुटकर व्यापारी थोड़ी मात्रा में वस्तुएँ खरीदता और बेचता है (101, 204)।

व्यधिकरण समुच्चयबोधक

आधुनिक हिन्दी में व्यधिकरण समुच्चयबोधक अर्थ की दृष्टि से निम्न भेदों में बँटे हुए हैं: (1) स्वरूपसूचक, (2) कालवाचक, (3) स्थानवाचक, (4) संकेत-वाचक, (5) अनुमतिवाचक, (6) कारणवाचक, (7) उद्देश्यवाचक, (8) तुलना-मूलक और (9) परिणामदर्शक।

(1) स्वरूपसूचक समुच्चयबोधक। इनमें एकहरे 'कि' और 'जो' समुच्चय-बोधक आते हैं।

'कि' समुच्चयबोधक बहुधा व्याख्यात्मक व्यधिकरण वाक्य के उपवाक्यों को जोड़ता है यानी मुख्य उपवाक्य से आश्रित उपवाक्य जोड़ता है जिसके ये भेद हैं: (क) कर्मवाचक—तुम समझते हो कि वह तुमसे प्रेम करती है (72, 141); (ख) उद्देश्यवाचक—सम्भव है कि वह···मेम्बरों से आश्रम की प्रशंसा करे (73, 138); (ग) विधेयवाचक—सरकार का हुक्म है कि लगान किराये के साथ वसूल किया जाए (69, 10)।

इसके अतिरिक्त 'कि' सहसम्बन्धी सार्वनामिक मिश्र वाक्यों के उपवाक्यों को जोड़ता है जिनमें आश्रित उपवाक्य मुख्य उपवाक्य के सहसम्बन्धी (संयोजक) शब्द से सम्बन्ध रखता है। संयोजक शब्द की हैसियत से सार्वनामिक विशेषण 'ऐसा', 'इतना', 'कितना', निश्चयवाचक सर्वनाम 'यह' और 'वह' तथा क्रियाविशेषणात्मक समास 'इस प्रकार', 'इस तरह', 'इस कदर' और क्रियाविशेषण 'ऐसे', 'यों' प्रयुक्त होते हैं।

अर्थ की दृष्टि से सहसम्बन्धी सार्वनामिक वाक्य के आश्रित उपवाक्यों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेद ये हैं--(क) उद्देश्यवाचक—**यह**···कि—सबसे जरूरी यह है कि उन लोगों की तेज़ी से तलाश की जाए···(IV, 11-9-1974); (ख) विधेयवाचक—**यह**···**कि**—···सबसे बड़ी बात तो यह है कि भूमि का मूल्य इतना चढ़ा हुआ न था (67, 22); **ऐसा**···**कि**—इस शहर की दशा ऐसी नहीं है कि देवियाँ पिकेटिंग कर सकें (71, 74); **इतना**···कि—गरमी इतनी थी कि दम घुटा जाता था (7, 18); **क्या**···कि—प्यारी को जरूरत क्या है कि वह सुखराम की हर चीज़ में, हर बात में अपना हाथ डालना चाहती है (103, 136); (ग) कर्मविषयक—**यह**···कि—अभी तक उन्होंने यह न सोचा कि शान्ता की क्या गति होगी ? (72, 224); (घ) परिणामसूचक—ऐसा (+संज्ञा)···कि—नाई ने···उसके नखशिख का ऐसा चित्र खींचा कि सदन को इस विषय में कोई सन्देह न रहा (72, 145), **ऐसा (+ विशेषण)**···कि— ···कुछ तो ऐसे नीच निकले कि साफ़ इन्कार कर गये (143, 13), **ऐसा (+क्रिया)**···**कि**—कल ऐसा सोऊँगा कि जागना न पड़ेगा (69, 194); इतना (+संज्ञा)···कि—उसके पास इतना रुपया था कि चाहता तो सादगी से तमाम ज़िन्दगी गुज़ार सकता (16, 157), **इतना (+विशेषण)**···**कि**—···हम हैं इतने बेशरम कि इतनी दुर्दशा होने पर भी कुछ नहीं बोलते (71, 158), इतना (+क्रिया)···कि—और गोविन्द इतना घबरा गया कि उसने झट से पत्रिका बन्द कर दी (52, 17); ऐसे (+क्रिया)···**कि**—तू ऐसे समझा कि मैं तेरे भूरा का पाँव चाट सकती हूँ (103, 92); **यों (+क्रिया)**···**कि**—यों कह कि मेरा बाप धोबी था···(103, 104); **कितना (+संज्ञा)**···**कि**—कितना मन करता है कि नैना को अपने पास बुलाऊँ (109, 105); **इस प्रकार (+क्रिया)**···कि—तुम्हारी चुटिया पकड़कर इस प्रकार घसीटता कि यह मोम की भाँति चमकते सिर घड़ी भर में गंजे हो जाते (161, 11), **इस प्रकार (+विशेषण)**···**कि**—इस प्रकार मौन हो गया कि मानो कुछ सुना नहीं; **इस हद तक (+क्रिया)**···**कि**—अब मैं इस हद तक बढ़ चुकी थी कि पीछे हटना मुश्किल था···(16, 58); **इस तरह (+क्रिया)**···कि—पाली ने टाँगें उठाकर एक ओर शहतीर में पाँव इस तरह फँसा दिये कि उसका बदन छत से लग गया (75, 175)।

'कि' समुच्चयबोधक संज्ञासंलग्न विस्तारक मिश्र वाक्य के उपवाक्यों को भी जोड़ सकता है पर 'कि' का ऐसा प्रयोग बहुत कम मिलता है, जैसे, एक व्यक्ति को अन्दर देखा कि अंग्रेज़ों-जैसे कपड़े पहने हुए कुर्सी पर बैठा है (24, 109), ···एक शहर नज़र पड़ा—बहुत बड़ा शहर कि चारों ओर दीवार घिरी हुई··· (24, 109)।

'कि' समुच्चयबोधक लेखकीय शब्दों के साथ प्रत्यक्ष कथन को जोड़ता है और सारी रचना कर्मवाचक व्यधिकरण वाक्य से मिली-जुली होती है, जैसे कहने लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि अहमक, तू किसलिए रोता है ? (24, 113), ···पुकारा कि आगे आओ (24, 109)।

'कि' समुच्चयबोधक अन्य अर्थगत श्रेणियों के समुच्चयबोधकों एवं संयोजक शब्दों से मिलकर व्याकरण की दृष्टि से अतिरिक्त शैलीगत समुच्चयबोधक की हैसियत से आता है, जैसे, (क) कालसूचक समुच्चयबोधक—···और वह भी तब कि जब वह ग़रीब साथ गाड़े के लिए तैयार रहती है ? (25, 107), ···यहाँ रह जब तक कि रह सके (24, 114), उसे उस समय रोग का पता चलता है जबकि फ़सल बैठ जाती है (II, 10-2-1970, 17); (ख) स्थानसूचक समुच्चयबोधक—···जिसका भुगतान उसी देश में स्थित किसी स्थान पर हो जहाँ कि वह लिखा गया है (101, 327-328), ···एक ऐसे जंगल में पड़ा हूँ कि जहाँ सिवाय पेड़ों के कुछ नज़र नहीं आता···(24, 144); (ग) स्वरूपसूचक 'जो' समुच्चयबोधक—···61.69 प्रतिशत परिवारों के पास 5 एकड़ से भी कम भूमि है जो कि कुल जोत का 19.18 प्रतिशत है (II, 10-2-1970, 16), ऋण सुविधा में सरलता आनी चाहिए जिससे कि छोटे से छोटा कृषक भी उसे प्राप्त कर सके (II, 10-2-1970, 18); (घ) तुलनामूलक समुच्चयबोधक एवं संयोजक शब्द—उसका चेहरा वैसा ही था जैसा कि आम तौर पर दूसरे लोगों का होता है··· (75, 47), क्या सचमुच वहाँ उतनी उन्नति हुई है जितनी कि बतायी जाती है (99, 37); (च) अनुमतिवाचक समुच्चयबोधक 'गो'—और आगे बढ़िये, गोकि बढ़ना आजकल दुशवार है (41, 50)।

'कि' समुच्चयबोधक सम्बन्धसूचक सर्वनाम 'जो' से मिलकर व्याकरण की दृष्टि से अतिरिक्त शैलीगत समुच्चयबोधक की हैसियत से आता है, जैसे, ···वह आदिम मल्लाह·· ऐसे-ऐसे द्वीपों पर पहुँचे कि जिन्हें उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था (88, 35), वहाँ से आगे चला तो एक टीला देखा कि जिसका रंग सुरमे की तरह बिलकुल काला था (24, 109)।

'कि' समुच्चयबोधक निर्माणकारी तत्त्व के रूप में निम्न संयुक्त समुच्चयबोधकों में सम्मिलित होता है : 'इसलिए कि', 'इस वास्ते कि', 'इसके पहले कि', 'यहाँ तक कि' इसके अतिरिक्त 'कि' समुच्चयबोधक गृहीत 'चूँकि' एवं 'हालाँकि' समुच्चयबोधकों में संलग्न तत्त्व के रूप में आता है।

'जो' स्वरूपसूचक सहसम्बन्धी सार्वनामिक वाक्यों के उपवाक्यों को जोड़ता है जिनका मुख्य उपवाक्य प्रश्नार्थक होता है और जिनमें 'क्या' सर्वनाम पूर्वपद के रूप में आता है, जैसे, आख़िर वह बात क्या हुई जो आप उनसे इतने नाराज़ हो गये ? (76, 49), मैं क्या राजा हो गया हूँ, जो ऐसा भय खा रही है ? (143, 127)।

कभी-कभी 'जो' इन वाक्यों का परिणामदर्शक उपवाक्य जोड़ता है, जैसे, सुखराम में इतनी अक्ल कहाँ जो वह यह सब सोच सके (103, 145), सामने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्यों का सामूहिक प्रभाव पहले तो इतना तीव्र था जिससे वह सुलझे हुए ढंग से कुछ भी न सोच सका (75, 9)।

'जो' समुच्चयबोधक मुख्य वाक्य से संयोजक उपवाक्य जोड़ता है, जैसे, ···इस समय भी उन्हीं के पास यह 1000 रुपये लिए जा रहा था जिससे वह कहीं उसका विवाह कर दे (72, 235), इसके बाद एक घटना और हुई जिससे उनकी शोहरत चौगुनी बढ़ गयी (53, 30)।

'जो' समुच्चयबोधक बहुत कम कर्मवाचक वाक्य के उपवाक्यों को जोड़ता है, जैसे, अच्छा ही हुआ जो मैंने···कोई अन्य हरकत नहीं की (75, 77)।

(2) कालवाचक समुच्चयबोधक। इनमें सरल समुच्चयबोधक 'जब', 'जो' एवं 'कि' और संयुक्त समुच्चयबोधक 'जब तक (जब तलक)', 'जब से', 'जबकि', 'जब भी', 'जब कभी', 'ज्यों ही', 'ज्यों-ज्यों', 'जैसे ही', 'जैसे-जैसे', 'इस से [के] पहले [पूर्व] कि', जिनमें से कुछ एकहरे समुच्चयबोधक के रूप में ('कि', 'जब कि', 'जब भी', 'इससे पहले कि') और कुछ एकहरे तथा नित्यसम्बन्धी दोनों समुच्चयबोधकों की हैसियत से ('जब···तो', 'जब···तब', 'जब तक···तब तक', 'जब से···तब से', 'जब कभी···तो', 'ज्यों ही···त्यों ही', 'ज्यों-ज्यों···त्यों-त्यों', 'जैसे ही···वैसे ही', 'जैसे-जैसे···वैसे-वैसे। 'जो' समुच्चयबोधक सदा अपने परपद के साथ ही नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक जैसा प्रयुक्त होता है।

'जब' समुच्चयबोधक यह उपवाक्य जोड़ता है जो (क) मुख्य उपवाक्य से पहले आता है, जैसे, जब सुखराम वहाँ पहुँचा, उसने देखा···(103, 158); (ख) मुख्य उपवाक्य के बाद आ सकता है, जैसे, यह वह ज़माना था जब अपने ऊपर पूर्ण विश्वास था (136, 29); (ग) मुख्य उपवाक्य के भीतर समावेशित हो सकता है, जैसे, उस दिन जब वह यूँही खेलता-खेलता नदी के किनारे चला गया था···तो··· उसने···अपने बहुत से साथी देखे (161, 13)।

अपने परपद 'तो' के साथ नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक के रूप में प्रयुक्त होते हुए 'जो' वह उपवाक्य जोड़ता है जो सदा मुख्य उपवाक्य से पहले आता है, जैसे, जब मैं नीचे आया तो प्यारी ने मुझे छुआ (103, 37), जब वे शेरे के पास पहुँचे तो वह बेतरह तड़प रहा था (75, 179)।

अपने सहसम्बन्धी शब्द 'तब' के साथ प्रयुक्त होते हुए 'जब' वह उपवाक्य जोड़ता है जो (क) मुख्य से पहले आ सकता है, जैसे, जब रात हो गयी तब आँखें खुलीं···(24, 109), और (ख) मुख्य के बाद आ सकता है, जैसे, ···कोई भी विवाद तय तब होता है जब तय करने की इच्छा हो (115, 263)।

'तब' के साथ-साथ उसका बलात्मक रूप 'तभी' आ सकता है, जैसे, अच्छी आमदनी तभी हो सकती है, जब अच्छा ठाट हो (65, 42)।

'जब' समुच्चयबोधक के प्रकार्य में समुच्चयबोधकीय शब्दबन्ध 'जिस समय'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और 'जिस वक्त' आ सकते हैं, जैसे, जिस समय द्रविड़ इस प्रकार भारत में अपना सिक्का जमाये हुए थे, उसी समय आर्य जाति ने भारत पर आक्रमण किया (2, 13), जिस वक्त वह मिले यह सेहत पाये (24, 28), और साथ ही 'जिस दिन (जिन दिनों)' समुच्चयबोधकीय शब्दबन्ध प्रयुक्त हो सकते हैं, जैसे, सन् 1887 ई. में जिस दिन ये लखनऊ पहुँचे उसी दिन अख़बारों के द्वारा वाजिद अली शाह के मटिया बुर्ज में स्वर्गवास होने का समाचार भी पहुँचा था (1, 34)।

'तब' सहसम्बन्धी शब्द के बजाय 'उस समय' एवं 'उस वक्त' जैसे समुच्चय-बोधकीय शब्दबन्ध प्रयुक्त हो सकते हैं, जैसे, जब भारत में धर्म का अधिक प्रचार था, उस समय धर्मशास्त्र की शिक्षा देना अनिवार्य समझा जाता था (115, 339), देखो चिन्तो, गोली···उस वक्त चलाना, जब घर का कोई आदमी लड़ने-मरने पर तैयार हो जाए···(75, 171); साथ ही 'उस दिन (उन दिनों)' जैसे समुच्चय-बोधकीय शब्दबन्ध भी आ सकते हैं, जैसे, आखिरी बार जब मैं मिस पाल के यहाँ गया, उस दिन मैंने उसे बहुत ही उदास देखा था (52, 132)।

'कि' समुच्चयबोधक वह उपवाक्य जोड़ता है, जो सदा मुख्य उपवाक्य के बाद ही आता है, जैसे, विट्ठलदास ऊपर जाकर बैठे ही थे कि पण्डित दीनानाथ आ पहुँचे (72, 137), ···वे प्रेम के मालिक को फ़ोन करने ही वाले थे कि टेलीफ़ोन की घण्टी बज उठी (7, 54)।

'जब तक' समुच्चयबोधक एकहरा समुच्चबोधक के रूप में प्रयुक्त होते हुए वह उपवाक्य जोड़ता है जो (क) मुख्य से पहले आ सकता है, जैसे, जब तक पहुँचोगे सारा लहू निकल जायेगा (103, 170); (ख) मुख्य के बाद आ सकता है, जैसे, मैंने सरल रीति से उतने दिनों तक आश्रय देना उचित समझा जब तक उसके पति का क्रोध शान्त हो जाए (73, 61); (ग) मुख्य में समावेशित हो सकता है, जैसे, आप जब तक चाहें रहें···(73, 115)।

अपने सहसम्बन्धी शब्द 'तब तक' के साथ प्रतुक्त होते हुए 'जब तक' वह उप-वाक्य जोड़ता है जो बहुधा मुख्य उपवाक्य से पहले आता है, जैसे, जब तक वह आनन्द मिलता है तब तक उसे क्यों न भोगूँ (73, 77), जब तक चुप था तब तक चुप था···(103, 80)।

'तब तक' की जगह 'उस समय तक' और 'उस वक्त तक' जैसे, सहसम्बन्धी शब्द आ सकते हैं, जैसे, ···आप मन्दिर उस समय आना जब तक कि मैं न बुलाऊँ (147, 53-54)।

'जब तक' समुच्चयबोधक के रूपान्तर के रूप में 'जब तलक' समुच्चयबोधक आ सकता है, जो एकहरे समुच्चयबोधक के रूप प्रयुक्त होता है और वह उपवाक्य जोड़ता है जो मुख्य उपवाक्य से पहले ही आता है, जैसे, जब तलक जीता हूँ एक टुकड़ा खाने को अपने हाथ से दे देना···(24, 69), जब तलक अपनी फ़रियाद न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुना लूँगा यहाँ से न जाऊँगा (24, 101)।

'जब से' समुच्चयबोधक एकहरे समुच्चयबोधक के रूप में प्रयुक्त होते हुए वह उपवाक्य जोड़ता है जो नियमतः मुख्य उपवाक्य से पहले आता है, जैसे, जब से सुमन का विवाह हुआ, उमानाथ कभी उसके पास नहीं गये थे (73, 111), जब से वह चला आया है, उसे बराबर यह विचार आ रहा था⋯(103, 170)।

परन्तु यदा-कदा 'जब से' जोड़ा जाने वाला उपवाक्य मुख्य उपवाक्य में समावेशित हो सकता है, जैसे, पिछले छः-सात वर्षों में जब से मैं जवान होने लगी, मेरे लिए रिश्ते आने आरम्भ हुए (28, 28)।

अपने सहसम्बन्धी शब्द 'तब से', के साथ प्रयुक्त होते हुए 'जब से' वह उपवाक्य जोड़ता है, जो नियमतः मुख्य उपवाक्य से पहले आता है, जैसे, जब से सुभद्रा ने सदन पर अपने कंगन के विषय में सन्देह किया था तब से पद्मसिंह उससे स्पष्ट हो गये थे (73, 98)।

'जब से' समुच्चयबोधक के प्रकार्य में 'जिस दिन (जिन दिनों) में' समुच्चयबोधकीय शब्दबन्ध आ सकता है, जैसे, जिस दिन से ताया योधराज ने ताकि असीरी से शादी की थी, उस दिन से आज तक वह कुँवारी-की-कुँवारी ही चली आ रही थी (30, 10)।

'जबकि' समुच्चयबोधक ('उस समय जब' के अर्थ में) वह उपवाक्य जोड़ता है जो नियमतः मुख्य उपवाक्य के बाद आता है, जैसे, ⋯1972-73 की पहली छमाही में इन कम्पनियों द्वारा 5,2 करोड़ रुपये की पूँजी जुटाई गयी जबकि 1971-72 में इसी अवधि में 32 करोड़ रुपये की पूँजी जुटायी गयी थी (15, 34), ऑवेन ने हर व्यक्ति द्वारा कुदाल का प्रयोग किये जाने का आह्वान किया था जबकि गांधी जी ने चरखा नये समाज के प्रतीक के रूप में अपनाने की शिक्षा दी थी (II, 25-2-1970, 6)।

'जब भी' समुच्चयबोधक वह उपवाक्य जोड़ता है जो सदा मुख्य उपवाक्य से आगे आता है, जैसे, लेकिन नसीम जब भी देखो तरोताज़ा⋯नज़र आती थी (136, 39), मिस्टर मुखर्जी की मोटी बीवी जब भी गिरती, ठहाकों का तूफ़ान पैदा होता (136, 38)।

'जब कभी' समुच्चयबोधक 'जब भी' का रूपान्तर है। अपने परपद के साथ प्रयुक्त होते हुए वह आश्रित उपवाक्य जोड़ता है जो मुख्य उपवाक्य के पहले आता है, जैसे, हाँ जब कभी इधर से दारोगा जी निकल जाते तो उन लोगों में भी हलहल सी मच जाती (75, 12), जब कभी रुपयों की आवश्यकता होती, तो वे सेठ गिरधारीलाल के यहाँ से बेखटके मँगा लिया करते (70, 54)।

'ज्यों ही' समुच्चयबोधक एकहरा समुच्चयबोधक की हैसियत से आते हुए वह उपवाक्य जोड़ता है जो सदा मुख्य उपवाक्य के आगे प्रयुक्त होता है, जैसे, ज्यों ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्मा जी घर में आये, सुभद्रा ने उनसे रिपोर्ट की (72, 120), सुबह की पहली किरण ने ज्यों ही उसके माथे को छुआ वह आदमी हड़बड़ाकर जागा (22, 13)।

अपने सहसम्बन्धी 'त्यों ही' के साथ प्रयुक्त होते हुए 'ज्यों ही' वह उपवाक्य जोड़ता है जो मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे, ···लशकर ज्यों ही एक दूसरे की दृष्टि मर्यादा में पहुँचे त्यों ही दोनों ओर से बाणों की वर्षा आरम्भ हो गयी (4, 73)।

'त्यों ही' के अलावा परपद के रूप में 'तो' और 'कि' समुच्चयबोधक आ सकते हैं, जैसे, फिर ज्यों ही बाहर निकला तो बैल की पीठ पर प्यार से हाथ फेरा··· (24, 54), ज्यों ही वह उनकी ओर लपका था कि एक गोरे ने उस पर फ़ायर कर दिया (116, 62)।

बहुत कम 'ज्यों ही', 'ही' के बिना प्रयुक्त हो सकता है, जैसे, ज्यों उसने मुझ अपरिचित मुसाफ़िर को देखा···पुकारा (24, 109)।

'ज़ूँ ही' समुच्चयबोधक 'ज्यों ही' का स्वनिक रूपान्तर है, जैसे, ज्यूँ ही मलिका ने यह खुशखबरी सुनी तो दिल में गद्गद हो उठी (24, 50)।

'ज्यों-ज्यों' समुच्चयबोधक एकहरे समुच्चयबोधक के रूप में प्रयुक्त होते हुए वह उपवाक्य जोड़ता है जो सदा मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे, ज्यों-ज्यों गाँव आता था निकट, सदन की व्यग्रता बढ़ती जाती थी (72, 143), ज्यों-ज्यों रेवड़ आगे बढ़ता जाता था, वह लकीर भी बढ़ती जाती थी (7, 20)।

अपने सहसम्बन्धी 'त्यों-त्यों' के साथ प्रयुक्त होते हुए 'ज्यों-ज्यों' वह उपवाक्य जोड़ता है जो मुख्य उपवाक्य के सदा आगे आता है, जैसे, ज्यों-ज्यों गाड़ी बढ़ती थी, त्यों-त्यों वह प्रकाशमाला भी आगे बढ़ती जाती थी (72, 139), ज्यों-त्यों ऊपर पहुँचते जाते थे त्यों-त्यों पूर्व दिशा में फैली हुई सारस झील का विस्तार लच्छू की आँखों में फैलता जाता था (1, 206)।

'जैसे ही' समुच्चयबोधक जो 'ज्यों ही' का समानार्थक है एकहरे या 'वैसे ही' परपद के साथ नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक के रूप में प्रयुक्त होते हुए वह उपवाक्य जोड़ता है जो सदा मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे, वे विमान से जैसे ही उतरे प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने मुसकराते हुए उनकी अगवानी की (IV, 14-10-1974), जैसे ही पकड़ ढीली हुई वैसे ही बुलकासिंह ने एक जोर का फटका दे मास्केट अपने कब्ज़े में ले ली (80, 63)।

बहुत कम 'जैसे ही' समुच्चयबोधक 'ही' के बिना आ सकता है, जैसे, ··· धीरे-धीरे जैसे ही उनका माल बिकता जाए, वे रुपया चुकाते जाएँ (101, 203)।

'जैसे-जैसे' समुच्चयबोधक 'ज्यों-ज्यों' का समानार्थक है। एकहरे या नित्य-सम्बन्धी समुच्चयबोधक की हैसियत से प्रयुक्त होते हुए वह उपवाक्य जोड़ता है जो मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे, जैसे-जैसे वह हँसता गया मेरी बेचैनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ती गयी (26, 8), ···जैसे-जैसे वृत्तियाँ बदलती जाती हैं वैसे-वैसे पहले का धर्म छूटता जाता है (122, 14)।

'तो' समुच्चयबोधक 'तो' 'जैसे-जैसे' का परपद हो सकता है, जैसे, ···परन्तु, जैसे-जैसे समय बीतता जाता है और ग्राहक फिर भी रुपया नहीं चुकाता तो इन पत्रों का रुख दृढ़तर होता जाता है (101, 203)।

'इस से [के] पहले कि' 'समुच्चयबोधक ऐसा उपवाक्य जोड़ता है जो सदा मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे, पर इसके पहले कि वे किसी पर हाथ चलाएँ, सभी लोग हुर्र हो गये (69, 71)।

(3) स्थानवाचक समुच्चयबोधक। इनमें सरल समुच्चयबोधक 'जहाँ', 'जिधर' और संयुक्त समुच्चयबोधक 'जहाँ से', 'जहाँ तक', 'जिधर से', 'जहाँ भी' हैं जो एकहरे या नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक दोनों हो सकते हैं। 'जहाँ···वहाँ', 'जिधर-उधर', 'जहाँ से···वहाँ [से]', 'जिधर से···उधर [से]', 'जहाँ भी···वहाँ'। अपवाद है 'जहाँ तक' समुच्चयबोधक जो एकहरा समुच्चयबोधक है।

'जहाँ' समुच्चयबोधक एकहरे समुच्चयबोधक की हैसियत से प्रयुक्त होते हुए पदसंलग्न व्यधिकरण वाक्यों की प्रणाली में स्थानसूचक उपवाक्य जोड़ता है जो (क) मुख्य वाक्य के आगे आ सकते हैं, जैसे, ···और जहाँ सिपाही देखा, कुत्ते की-सी दुम हिलाता था (103, 151); (ख) मुख्य उपवाक्य के बाद आ सकता है, जैसे, सूखे मरुस्थल हैं, जहाँ प्राणी एक-एक बूँद जल के बिना प्राण त्यागता है (4, 20); (ग) मुख्य वाक्य के भीतर समावेशित हो सकता है, जैसे, जब रात हुई तो उसी मकान, जहाँ दाई से वायदा किया था, जाकर खड़ा रहा (24, 97)।

'जहाँ' समुच्चयबोधक नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक की हैसियत से प्रयुक्त होते हुए सहसम्बन्धी-सार्वनामिक व्यधिकरण वाक्यों की प्रणाली में स्थानवाचक उपवाक्य जोड़ता है जो (क) मुख्य उपवाक्य के आगे आ सकता है, जैसे, जहाँ काम ठीक तरह पूरा होता है, जैसे, उसकी तारीफ़ होती है (IV, 24-12-1974); (ख) मुख्य उपवाक्य के बाद आ सकता है, जैसे, जहाँ जाती तहाँ पुरुष के सिवा और कोई न होता (66, 72); (ग) मुख्य वाक्य के भीतर समावेशित हो सकता है, जैसे, आप जहाँ मैं बताता हूँ, वहाँ खुदवाइये (25, 47)।

'वहाँ' सहसम्बन्धी की जगह 'तहाँ' सहसम्बन्धी आ सकता है, जैसे, जहाँ न पहुँचे रवि तहाँ पहुँचे कवि (37, 99)।

'जहाँ' समुच्चयबोधक की जगह समुच्चयबोधकीय शब्दबन्ध 'जिस जगह' आ सकता है, जैसे, जिस जगह जूतियाँ उतारते हैं वहाँ एक काला टाट पड़ा रहता है (24, 100)।

'जहाँ' समुच्चयबोधक दोहरे समुच्चयबोधक की हैसियत से प्रयुक्त होते हुए अपना अर्थ बनाये रखता है, जैसे, जहाँ-जहाँ सम्भव होता है माल मोटर द्वारा ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेज दिया जाता है (101, 278), जहाँ-जहाँ उनके पाँव पड़ते थे वहाँ आस हट जाने से कुछ गहरे रंग के निशान पड़ते जा रहे थे (75, 158), उसकी आलमदारी वहाँ है जहाँ-जहाँ करनट हैं (103, 368)।

बहुत कम 'जहाँ' समुच्चयबोधक कालसूचक जब समुच्चयबोधक के प्रकार्य में आ सकता है, जैसे, ···100 डालर के मूल्य की वस्तु बेचने के कारण जहाँ 476 रुपये प्राप्त होते थे अब 750 रुपये प्राप्त होंगे (II, 25-8-1966, 15), जहाँ उसका जी चाहेगा वह उस लड़की को ले जायेगा (25, 46)।

'जिधर' समुच्चयबोधक एकहरे समुच्चयबोधक की हैसियत से प्रयुक्त होते हुए पदसंलग्न वाक्यों का आश्रित वाक्य जोड़ता है, जो बहुधा मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे, जिधर देखता हूँ, मुर्दों की हड्डियाँ और सन्दूक जवाहर के ढेर लगे हैं (24, 114), जिधर लिए फिरता फिरती (24, 34)। बहुत कम इस समुच्चय-बोधक द्वारा जोड़ा जाने वाला वाक्य मुख्य उपवाक्य के भीतर समावेशित होता है, जैसे, दस दिन तक हवा और लहरें जिधर चाहती थी लिए जाती थीं (24, 108)। जैसा कि उदाहरणों से स्पष्ट है, 'जिधर' समुच्चयबोधक संज्ञा से नहीं क्रिया से संलग्न होता है।

'जिधर' समुच्चयबोधक नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक के रूप में अपने सह-सम्बन्धी 'उधर' के साथ प्रयुक्त होते हुए सहसम्बन्धी-सार्वनामिक वाक्यों की प्रणाली में स्थानसूचक उपवाक्य जोड़ता है जो बहुधा मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे, जिधर न्याय खींच ले जाता उधर चले जाते (73, 205), जिधर रामेश बैठा था उधर के कड़े में रस्सा और बाँधकर छत पर फेंका गया (1, 308)।

'जिधर' समुच्चयबोधक व्युत्पत्ति की दृष्टि से क्रियाविशेषण होते हुए 'को' परसर्ग जोड़ सकता है, जैसे, जिधर को करवट लेता दिमाग़ ख़ुशबू से भर जाता (24, 42)।

'जहाँ से' समुच्चयबोधक एकहरे समुच्चयबोधक की हैसियत से पदसंलग्न वाक्यों की प्रणाली में स्थानसूचक उपवाक्य जोड़ता है जो बहुधा मुख्य उपवाक्य के बाद आता है, जैसे, ये वे चश्मे हैं जहाँ से जरायम के सोते-से निकलते हैं (73, 119)।

'जहाँ से' समुच्चयबोधक अपने सहसम्बन्धी 'वहाँ [से]' के साथ नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक की हैसियत प्रयुक्त होते हुए सहसम्बन्धी-सार्वनामिक वाक्यों की प्रणाली में स्थानसूचक उपवाक्य जोड़ता है जो आ सकता है: (क) मुख्य उपवाक्य के आगे, जैसे, सुखराम जहाँ से चलता वहीं आ जाता (103, 157); (ख) मुख्य उपवाक्य के बाद, जैसे, वे लोग भी वहीं से आये, जहाँ से आर्य लोग आये थे (22, 661)।

'जहाँ तक' समुच्चयबोधक वह उपवाक्य जोड़ता है जो बहुधा मुख्य उपवाक्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के आगे आता है। यहाँ स्थानसूचक सम्बन्ध धूमिल जान पड़ते हैं और आगे परि-सीमक सम्बन्ध आते हैं, जैसे, लेकिन मुझे जहाँ तक हो सकेगा, मैं तेरी मदद करूँगी (25, 53), जहाँ तक उसे नोचते-खसोटते बने, नोचो-खसोटो (73, 41)।

बहुत कम 'जहाँ तक' से जोड़ा जाने वाला आश्रित उपवाक्य मुख्य उपवाक्य के भीतर समावेशित होता है, परन्तु इस स्थिति में वह निक्षिप्त वाक्य के प्रकार्य में आता है, जैसे, ···फ़िलहाल बारिश के पानी को जहाँ तक मुमकिन हो सके शहर से बाहर निकलने नहीं देते (78, 117)।

'जिधर से' समुच्चयबोधक अपने सहसम्बन्धी के साथ प्रयुक्त होते हुए सह-सम्बन्धी-सार्वनामिक वाक्यों की प्रणाली में स्थानसूचक उपवाक्य जोड़ता है जो आ सकता है : (क) मुख्य वाक्य के आगे—जिधर से निकल जाती उधर बिजली-सी कौंध जाती (52, 34); (ख) मुख्य वाक्य के बाद—हातिम फ़ौरन उठकर उसी तरफ़ जल दिया जिधर से वह आवाज़ आयी थी (25, 36)। जैसा कि अन्तिम उदाहरण से स्पष्ट है, 'उधर [से]' सहसम्बन्धी के बदले 'उस ओर' और 'उस तरफ़' सहसम्बन्धी आ सकते हैं।

'जहाँ भी समुच्चयबोधक वह उपवाक्य जोड़ता है जो सदा मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे, जहाँ भी वह गया उसकी खूब ख़ातिर हुई (25, 50), इस तरह जहाँ भी दो औरतें मिलतीं···, वहीं उनकी चर्चा आप-से-आप अनजाने ही चल पड़ती (125, 41)।

(4) संकेतवाचक समुच्चयबोधक। इनमें 'यदि', 'अगर', 'जो', 'जब' और 'कहीं' समुच्चयबोधक आते हैं। 'यदि', 'अगर' और 'जो' एकहरे और नित्यसम्बन्धी दोनों समुच्चयबोधकों के रूप में (यदि···तो, अगर···तो, जो···तो) और 'कहीं' एवं 'जब' सदा नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधकों के रूप में आते हैं।

'यदि' एवं 'अगर' समुच्चयबोधक समानार्थक हैं। वे संकेतवाचक उपवाक्य जोड़ते हैं जो बहुधा मुख्य उपवाक्य के आगे आते हैं। तब वे नित्यसम्बन्धी समुच्चय-बोधक होते हैं, यदि कोई पशु ही नज़र आता तो उसे धैर्य हो जाता (73, 45), अगर वह माया से ब्याह करे तो तुम्हें ख़ुशी होगी (147, 60)।

कभी-कभी 'तब' क्रियाविशेषण इनके सहसम्बन्धी के रूप में आ सकता है, जैसे, अगर मैं तमाम उम्र यहाँ इसी तरह बैठा रहूँगा तब भी यह मेरा हाथ अपने-आप न पकड़ेगी (25, 33)।

वही उपवाक्य जोड़ते हुए जो मुख्य उपवाक्य के बाद आता है 'यदि' और 'अगर' एकहरे समुच्चयबोधकों की हैसियत से प्रयुक्त होते हैं, जैसे, मैं सब-कुछ स्वयं देखता और कहता हूँ, कदाचित् सहे भी जाता यदि इस बीमारी ने मुझे सचेत न कर दिया होता (69, 95), मेरी आँखें फूट जाएँ, अगर मैंने उनकी तरफ़ ताका भी हो (73, 34)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जो' समुच्चयबोधक 'यदि' और 'अगर' से कहीं कम मिलता है। वह बहुधा वह उपवाक्य जोड़ता है जो मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे, जो कहीं सारा बोझ मुझ पै आ गया होता तो मेरे बाप और बाबा से भी नहीं उठते (103, 103), और जो मैं गद्दी नहीं छोड़ूँ ? तो अच्छा है (4, 120)।

ये उदाहरण बहुत कम मिलते हैं जब 'जो' समुच्चयबोधक वह उपवाक्य जोड़ता है जो मुख्य उपवाक्य के बाद ही आता है। तब वह एकहरा समुच्चयबोधक है, जैसे, मैं तो कभी का मर गया होता, जो मेरी सरला न होती (5, 13)।

'कहीं' समुच्चयबोधक मुख्य उपवाक्य के आगे होने वाले उपवाक्य को जोड़ते हुए नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक के रूप में आता है, जैसे, कहीं कोई मामला खड़ा कर दे तो हम बिना मारे ही मर जाएँ (73, 115), कहीं कुली डिपो वालों के जाल में फँस गये तो फिर छूटना मुश्किल है (73, 46)।

'जब' समुच्चयबोधक वह उपवाक्य जोड़ता है जो मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, साथ ही वह अपना कालसूचक पुट सुरक्षित रखता है, जैसे, जब डाक्टर साहब की नहीं सुनता तो मेरी क्या सुनेंगे ? (66, 119), जब दीदी जी ने आपके लिए उतने कष्ट उठाये हैं तो यही उचित है कि आप भी सदन के लिए कोई बात उठा न रखें (73, 52)।

'जब भी' समुच्चयबोधक 'जब' का रूपान्तर है, उसका वही प्रयोग होता है, जैसे, जब भी मौका मिलता, दोनों उन्हें सँभलकर चलने की सलाह देते थे (17, 287)।

(5) अनुमतिवाचक समुच्चयबोधक। इनमें सरल समुच्चयबोधक 'यद्यपि', 'चाहे', हालाँकि', 'अगरचे', 'गोकि', 'ख़्वाह' और संयुक्त समुच्चयबोधक 'भले ही', 'जो भी', 'जो कुछ भी', 'जैसे भी', 'इस बात के बावजूद कि' आते हैं।

सब सरल समुच्चयबोधक एकहरे या नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधकों के रूप में आ सकते हैं—'यद्यपि···तथापि (पर, परन्तु, किन्तु, लेकिन, फिर भी, तो भी)', 'चाहे···पर (परन्तु, लेकिन, मगर, फिर भी)' 'हालाँकि···पर लेकिन)', 'अगरचे···पर (लेकिन', 'गो···फिर भी'। संयुक्त समुच्चयबोधकों में से केवल 'चले ही' नित्यसम्बन्धी है—'भले ही···पर (लेकिन, किन्तु, तो भी)'। शेष संयुक्त समुच्चयबोधक मुख्यतः एकहरे हैं।

'यद्यपि' समुच्चयबोधक एकहरे समुच्चयबोधक की हैसियत से प्रयुक्त हुए वह उपवाक्य जोड़ा है जो नियमतः मुख्य उपवाक्य के बाद आता है, जैसे, प्रथम पंच-वर्षीय योजना के अन्तर्गत सहकारी खेती की कोई उल्लेखनीय उन्नति नहीं हुई, यद्यपि कृषि समस्या को हल करने वाले सम्भाव्य साधन के रूप में उस पर पर्याप्त चर्चा रही (115, 372), ···अनिश्चितता अभी भी दूर नहीं हो सकी है, यद्यपि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब हम···खाद्यान्नों का निर्यात करने का दावा भी करने लगे हैं (II, 10-2-1970, 15)।

नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक के रूप में प्रयुक्त होते हुए 'यद्यपि' वह उपवाक्य जोड़ता है जो सदा मुख्य वाक्य के आगे जाता है, जैसे :

'यद्यपि···तथापि'—यद्यपि गाल्फ़स्ट्रीम की जानकारी फ्रैंकलिन के समय से है···तथापि उसका पथ अभी तक पूरी तरह से ज्ञात नहीं है (88, 50);

'यद्यपि···पर'—यद्यपि पद्मसिंह यही उत्तर पाने की आशा रखते थे, पर इसे कानों से सुनकर वह अधीर हो गये (72, 80);

'यद्यपि···परन्तु'—यद्यपि अल्प काल में जनहित की उपेक्षा कर व्यक्तिगत लाभ प्राप्त किया जा सकता है, परन्तु दीर्घकाल में व्यक्तिगत हित में हानि होने की सम्भावना अधिक है (II, 25-8-1966, 14);

'यद्यपि···किन्तु'—यद्यपि वह रंभा को नहीं पा सका था, किन्तु प्रतिज्ञा प्रतिज्ञा है (28, 64);

'यद्यपि···लेकिन'—संवाद यद्यपि अस्वाभाविक और थियेटरी टाइप के थे, लेकिन बहुत ज़ोरदार और प्रशंसनीय थे (136, 26);

'यद्यपि···मगर'—यद्यपि महला की हवेली के बड़े द्वार के सामने जो कच्ची पगडण्डी जाती थी, वह गन्ने के उपजाऊ खेतों में से होकर गुज़रती थी···मगर मुझे और शादा को सरकण्डों के झुण्ड ही पसन्द थे (31, 6);

'यद्यपि···फिर भी'—यद्यपि राजपूतों के बीस हज़ार सैनिक खेत रहे थे फिर भी विजय के मद में राजपूत सेना अत्यन्त उत्साहित थी (4, 78);

'यद्यपि···तो भी'—यद्यपि चन्द पैसों के सिवा उनमें से कुछ अधिक ख़र्च न हुआ था, तो भी घास पर तहमद का एक पल्ला बिछाकर उसने उन्हें दोबारा गिना···(7, 24)।

'चाहे' समुच्चयबोधक एकहरे समुच्चयबोधक की हैसियत से वह उपवाक्य जोड़ता है जो (क) मुख्य उपवाक्य के आगे आ सकता है—विज्ञापन चाहे किसी भी प्रकार किया जाये, उसका उद्देश्य जनता का ध्यान आकर्षित करके वस्तु की माँग बढ़ाना है (101, 232); (ख) मुख्य उपवाक्य के बाद आ सकता है—···उन सबमें कोई-न-कोई बात छिपी रहती है चाहे वह आजकल हमारी समस्या में न आएँ (73, 208); (ग) मुख्य उपवाक्य के भीतर समावेशित हो सकता है—पति चाहे जैसे हों, अपनी स्त्री को सुन्दर आभूषण से···सजावें (73, 18)।

नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक की हैसियत से 'चाहे' वह उपवाक्य जोड़ता है जो सदा मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे :

'चाहे···पर'—वह चाहे कितना ही बिगड़ जाये पर आँखों के सामने से न टले (73, 44);

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'चाहे···लेकिन'—···भारत का रुख चाहे कुछ भी हो, लेकिन निकट भविष्य में भारत विदेशी सहायता के बिना नहीं रह सकता (II, 10-2-1970, 7);

'चाहे···मगर'—रौनकी में चाहे लाखों अवगुण थे, मगर वह चोर न था (139, 65);

'चाहे···परन्तु'—···तुमने चाहे इसका अनुभव न किया हो, परन्तु मैं स्वयं कर रहा हूँ (69, 94);

'चाहे···किन्तु'—आप चाहे समझते हों कि आदर और सम्मान की भूख बड़े आदमियों ही को होती है किन्तु दीन दशा वाले प्राणियों को इसकी भूख और भी अधिक होती है (73, 81);

'चाहे···फिर भी'—···चाहे वह हवा में फेंकी वस्तुओं को प्रभावित करने वाले नियम न जानता था, फिर भी उसने यह कुशलता विकसित कर ली कि··· (88, 20)।

'हालाँकि' समुच्चयबोधक एकहरे समुच्चयबोधक की हैसियत से वह उपवाक्य जोड़ता है जो नियमतः मुख्य उपवाक्य के बाद ही आता है, जैसे, ···उसने ज़िन्दा से झूठ ही कह दिया था कि वह ज़मीन ख़रीदेगा, हालाँकि उसकी जेब में फूटी कौड़ी भी नहीं थी (75, 117), ···बेहतर यही है कि अब घर से निकल चले हालाँकि उसके माँ-बात की मर्ज़ी यह नहीं थी (24, 6-7)।

'हालाँकि' समुच्चयबोधक नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक की हैसियत से वह उपवाक्य जोड़ता है जो सदा मुख्य वाक्य के आगे आता है, जैसे।

'हालाँकि···पर'—···पार्टी को हालाँकि गहरा धक्का लगा था पर अब उसका पुनर्निर्माण अत्यन्त संगठित तरीके से किया जा रहा है (IV, 25-12-1974);

'हालाँकि···परन्तु'—हालाँकि कुमांते आज इस बार में पहले ही मुझे मिला था, परन्तु मिलते ही कुछ इस ढंग से···मिला कि···(30, 55);

'हालाँकि····फिर भी'—और हालाँकि मुझे दिन-रात पश्चिमी लोगों से वास्ता रहता है···, फिर भी मेरे विदेशी शिष्टाचार से भिन्न-भिन्न व्यवहार पर उनके कठोर हृदय पर ओस-सी पड़ गयी (30, 35)।

'अगरचे' समुच्चयबोधक मुख्यतः नित्यसम्बन्धी होता है। वह ऐसा उपवाक्य जोड़ता है जो नियमतः मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे—

'अगरचे···पर'—अगरचे शुरू में वह एक बीमार पिल्ले की तरह थी, पर देखते-देखते उसने जो रंग छाँटा तो हुस्न उससे दूर न रहा (125, 243);

'अगरचे···लेकिन'—अगरचे तेरी बात बादशाह है लेकिन तेरी किस्मत में यही बदा था (24, 49);

'अगरचे···फिर भी'—अगरचे संगपरस्त मशहूर हूँ···, फिर भी दिल का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेद किसी से नहीं कहा (24, 74)।

कभी-कभी 'अगरचे' अपने सहसम्बन्धी के बिना प्रयुक्त हो सकता है, जैसे, अगरचे मैंने बहुत मिन्नत की और ज़ोर भी किया कि किसी सूरत उनके हाथ से निकल भागूँ, छुटकारा न हुआ (24, 53)।

'अगरचे' समुच्चयबोधक उस स्वतन्त्र वाक्य का संयोजक तत्त्व हो सकता है जो पहले कथन से परोक्ष रूप से सम्बन्ध रखता है, जैसे, इस हंगामे में दिमाग़ भला क्या काम कर सकता है? अगरचे यह मुझे भी मालूम नहीं कि अगर मौक़े पर दिमाग़ काम भी करे तो क्या तीर मार लेगा? (78, 42)।

'गो [कि]' समुच्चयबोधक एकहरे समुच्चयबोधक की हैसियत से वह उपवाक्य जोड़ता है जो नियमतः मुख्य उपवाक्य के बाद ही आता है, जैसे, और आगे बढ़ाइये गोकि बढ़ना आजकल दुशवार है (47, 56)।

'गो [कि]' नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक की हैसियत से वह उपवाक्य जोड़ता है जो सदा मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे, गो प्यारो ने शराब नहीं पी थी, फिर भी उसकी आँखों में मस्ती-सी नज़र आती थी···(75, 90)।

'ख़्वाह' समुच्चयबोधक आधुनिक हिन्दी में बहुत कम मिलता है, जैसे, ख़्वाह वह कम हो या ज़्यादा (73, 119)।

'भले ही' बहुधा नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक की हैसियत से प्रयुक्त होता है। यह ऐसा उपवाक्य जोड़ता है जो सदा मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे :

'भले ही··पर'— भले ही तेरी नकेल प्यारी की पुच्छ में बँधी हो, पर मेरी नकेल तो तेरी पुच्छ में बँधी है (103, 92);

'भले ही···लेकिन'—मुन्नी बीवी और अम्माजी यों भले ही नाराज़ हों, लेकिन कहती यही हैं कि···(108, 61);

'भले ही···किन्तु'—भले ही उन अधिकारों में प्रजा के प्राण घुटते हों, किन्तु इसकी उन्हें परवाह क्या? (115, 86);

'भले ही···मगर'—हिन्दुस्तानी तवायफ़ें भले ही अपने को बड़ी छत्तीसी समझा करें मगर ये अंग्रेज़ कौम वाली पूरी चालीसी होती हैं (1, 317);

'भले ही···तो भी'—इसके विपरीत भले ही पृथ्वी पर रहना विगुण हो, सूर्य के सामने पृथ्वी बिलकुल तुच्छ हो···तो भी जब तक सूर्य के तेज को सहन करने की सामर्थ्य मुझमें न आ जाएगी, तब तक सूर्य से दूर पृथ्वी पर रहकर भी मुझे अपना विकास कर लेना होगा (122, 15)।

बहुत कम प्रयोगों में एकहरे समुच्चयबोधक के रूप में प्रयुक्त होते हुए, 'भले ही' वह उपवाक्य जोड़ता है जो मुख्य उपवाक्य के बाद ही आता है, जैसे, दूसरों की मज़दूरी करना इन्हें नहीं रुचता, भले ही भूखे रह जायें (115, 367)।

कभी-कभी 'भले ही' का सहसम्बन्धी शब्द लुप्त हो सकता है, जैसे, साँपों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले भले ही डरा करता होऊँ, अब तो, रामा, डर भी नहीं लगता (108, 142)।

'जो भी' समुच्चयबोधक अपने स्थितिपरक समानार्थक 'जो भी हो' के साथ वह उपवाक्य जोड़ता है जो नियमतः मुख्य उपवाक्य के आगे आता है। दोनों समुच्चयबोधक बहुधा एकहरे समुच्चयबोधकों की हैसियत से प्रयुक्त होते हैं, जैसे, ख़ैर जो भी हो अपने पुरखों को यों याद करना अच्छा नहीं लगता (108, 222), जो कुछ भी, मेरा-तुम्हारा साथ जाना नामुमकिन है (59, 84)।

कभी-कभी 'जो भी' नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक की है सियत से आता है, जैसे, हमने जो भी प्रगति और उन्नति की हो, लेकिन हमारे इन तीनों प्रिय सिद्धान्तों के लिए बराबर ख़तरे हुए हैं (II, 10-2-1970, 24)।

'जैसे भी' समुच्चयबोधक नियमतः एकहरे समुच्चयबोधक की हैसियत से प्रयुक्त होता है। वह ऐसा उपवाक्य जोड़ता है जो (क) मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे, जैसे भी हो, चेतन उस फ़िल्म को देखना चाहता था (17, 348); (ख) मुख्य उपवाक्य के भीतर समावेशित हो सकता है, जैसे, लेकिन पाण्डे जैसे भी बन पड़े गद्दी से चिपके रहने की जीतोड़ कोशिश कर रहे हैं (IV, 17-6-1973)।

'इस बात के बावजूद कि' समुच्चयबोधक वह उपवाक्य जोड़ता है जो सदा मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे, अतः इस बात के बावजूद कि केन्द्रीय सरकार के शुद्ध बाज़ार ऋणों की रकम बजट में दी गयी व्यवस्था की रक़म से कहीं अधिक बैठती है···, 1972-73 का कुल मिलाकर बजट सम्बन्धी घाटा बजट में दिखाई गयी 252 करोड़ रुपये की रक़म से अधिक होगा (253, 7)।

'इस बात के होते [हुए] भी कि' समुच्चयबोधकीय पदबन्ध 'इस बात के बावजूद कि' का रूपान्तर है। वह ऐसा उपवाक्य जोड़ता है जो मुख्य उपवाक्य के आगे भी आता है, जैसे, इस बात के होते भी कि हम प्यार की गहराइयों तक उतर गये थे। उन्हें मेरी बात टालने की हिम्मत न हुई (16, 57)।

अनुमतिवाचक समुच्चयबोधकों के प्रकार्य में समुच्चयबोधकीय पदबन्ध 'ही सही', 'न सही' प्रयुक्त होते हैं। वे ऐसा उपवाक्य जोड़ते हैं जो मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे, मैं झेंपा ही सही, पर शादी वहाँ न होगी (66, 28), अरे ठेला न सही मगर भीड़ में सैकड़ों का मजमा तो है (1, 279), स्वार्थ ही सही, पर ये स्वार्थ क्या छोटा है? (1, 30), मैं बुद्धिमान नहीं हूँ न सही, पर इतना जानता हूँ··· (72, 202)।

(6) कारणवाचक समुच्चयबोधक। इनमें सरल समुच्चयबोधक 'क्योंकि' और 'चूँकि' और साथ ही संयुक्त समुच्चयबोधक 'इसलिए कि (इसीलिए कि)', 'इस वास्ते कि (इसी वास्ते कि)'। 'चूँकि' सदा ही नित्यसम्बन्धी होता है, 'क्योंकि' समुच्चयबोधक एकहरा और नित्यसम्बन्धी दोनों हो सकता है, 'इसलिए कि' एवं 'इस वास्ते कि' सदा एकहरे होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकहरे समुच्चयबोधक की हैसियत से 'क्योंकि' वह उपवाक्य जोड़ता है जो सदा मुख्य वाक्य के बाद ही आता है, जैसे, बस के मुसाफ़िर प्रतीक्षा कर रहे थे क्योंकि उनके लिए अभी सड़क बन्द है (96, 9), मुझे इस बात का बहुत दुःख हुआ, क्योंकि अब फिर मुझे एक महीने तक इन्तज़ार करना पड़ा (24, 53)।

बहुत कम प्रयोगों में नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक के रूप में प्रयुक्त होते हुए 'क्योंकि' वह उपवाक्य जोड़ता है, जो मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे, लेकिन क्योंकि उसकी प्राप्ति तुरन्त नहीं होने वाली थी इसलिए गांधी जी ने न्यायोचित वितरण के लिए काम किया (II, 25-2-1970, 7), यह सब होने पर भी, क्योंकि त्रिलोचन तगड़ा ज़मींदार था, इसलिए कभी नीति-स्खलित माना ही नहीं गया (53, 37)।

'चूंकि' समुच्चयबोधक वह उपवाक्य जोड़ता है, जो सदा मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे :

'चूंकि···इसलिए'—चूंकि वह तेरा रिश्तेदार है इसलिए हम इसे आशीर्वाद देते हैं (24, 112);

'चूंकि···अतः'—···अशोक चूंकि फ़िल्म स्वयं प्रोड्यूस करना चाहता है अतः उसकी इच्छा है कि···(136, 58);

'चूंकि इस कारण'—विरोधी दल चूंकि रचनात्मक ढंग से ख़ास योग नहीं दे पाते, इस कारण वे सत्तारूढ़ पार्टी को बदनाम करने के लिए संसदीय प्रणाली के शस्त्रागार के सारे शस्त्रों का उपयोग करते हैं···(145, 99)।

'इसलिए···कि' समुच्चयबोधक पृथकतापूर्वक प्रयुक्त होते हुए वह उपवाक्य जोड़ता है जो सदा मुख्य उपवाक्य के बाद ही आता है, साथ ही समुच्चयबोधक का एक अंश मुख्य उपवाक्य में होता है, जैसे, यह वृद्धि इसलिए सम्भव हुई कि राजस्थान में···1970 में वर्षा हुई थी (153, 4), काफ़िले के आदमी इसलिए नहीं बताते कि तू शर्मिन्दा होगा (24, 77)।

संलग्न रूप में 'इसलिए कि' वह उपवाक्य जोड़ता है जो सदा मुख्य उपवाक्य के बाद ही आता है, जैसे, पर ऐसा नहीं हुआ, केवल इसलिए कि विट्ठलदास ने पहले ही से आग लगा दी थी (73, 61)।

'इस वास्ते कि' समुच्चयबोधक 'इसलिए कि' का रूपान्तर है जो बहुधा संलग्न रूप में प्रयुक्त होता है, जैसे, निरी भक्ति उस रोज़ काम न आएगी, इस वास्ते कि आदमी का दिल ख़ुदा का घर है (25, 9)।

'इस वास्ते कि' संलग्न रूप में 'इसलिए कि' के प्रतिकूल वह उपवाक्य जोड़ सकता है जो मुख्य उपवाक्य के आगे आता है, जैसे, इस वास्ते कि सब आदमी आपस में दरसल एक हैं···मैं भी एक अरसे से शादी करने की इच्छा रखती हूँ (24, 45)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'क्योंकि' और 'इसलिए कि' स्वतन्त्र वाक्यों के संयोजक तत्त्व के रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं, जैसे, मगर जब से त्रिलोचन त्रिपाठी बड़े हुए तब से रामलोचन की संभोजनी में विघ्न पड़ने लगा। क्योंकि साठ ब्राह्मण वह जीमाते और पुत्र के एकाक्ष होने से साठों ब्राह्मण के जीमाने का फल नष्ट हो जाता (53, 36), अब मुसलमान रहने में लोक-परलोक दोनों का नाश दिखायी पड़ता है। इसलिए नहीं कि उस धर्म में कोई विशेषता नहीं है, बल्कि इसलिए कि मेरा और मेरे परिवार का हृदय मुसलमान धर्म के योग्य नहीं (53, 28)।

(7) उद्देश्यवाचक समुच्चयबोधक। इनमें सरल समुच्चयबोधक 'कि', 'जो' और 'ताकि' तथा संयुक्त समुच्चयबोधक 'इसलिए कि' तो केवल एकहरे होते हैं।

कि' और 'ताकि' समुच्चयबोधक वे उपवाक्य जोड़ते हैं जो नियमतः मुख्य उपवाक्य के बाद आते हैं, जैसे, वह जल्दी से उठे कि घड़ी को ठीक कर दे (69, 99), हमने ही अपनी स्वतन्त्रता को मिटाया है ताकि हम अपनी स्वतन्त्रता को भोग सकें (103, 35)।

बहुत कम उद्देश्यवाचक (मनोरथवाचक) उपवाक्य मुख्य उपवाक्य के भीतर समावेशित हो सकता है, जैसे, थाली को बहुत ही धीरे से ताकि प्रभा को बुरा न लगे, सरकाकर मैं उठ खड़ा हुआ (108, 115)।

'इसलिए कि' पृथकतापूर्वक प्रयुक्त होते हुए वह उपवाक्य जोड़ता है जो सदा मुख्य उपवाक्य के बाद ही आता है, साथ ही समुच्चयबोधक का एक अंश मुख्य उपवाक्य में होता है, जैसे, मैंने क्या फ़र्स्ट क्लास में सीट इसलिए रिजर्व करायी है कि गाड़ी में भुनता जाऊँ? (8, 40)।

संलग्न रूप में यह समुच्चयबोधक वह उपवाक्य जोड़ता है जो सदा मुख्य उपवाक्य के बाद ही आता है, जैसे, मछुआ मछली मारने के लिए हर घड़ी मेहनत करता है इसलिए कि उसको मछली का अच्छा मोल मिले (22, 225)।

'इसलिए कि' समुच्चयबोधक का रूपान्तर 'इस वास्ते कि' संलग्न रूप में प्रयुक्त होता है, जैसे, ···दुगुना महसूल इस शहर में भरता हूँ, इसी वास्ते कि यह भेद किसी पर ज़ाहिर न हो (24, 68)।

'जो' समुच्चयबोधक और उसके परसर्गीय-कारकीय रूपान्तर (जिससे, जिसमें) वह उपवाक्य जोड़ते हैं जो सदा मुख्य उपवाक्य के बाद आता है, जैसे, किया क्या जाए जो देहातियों की प्राणरक्षा हो (22, 225), मैंने चट से कैंची खींचकर पेट में भोंक दी जिससे वह किसी तरह ज़िन्दा न बच सके (80, 52), वह अपनी मामी के इशारों पर दौड़ती थी जिसमें वह माता को कुछ कह न बैठे (73, 102)।

(8) तुलनामूलक समुच्चयबोधक। इनमें सरल समुच्चयबोधक 'मानो', 'जैसे', 'गोया', संयुक्त समुच्चयबोधक 'जैसे कि' और समुच्चयबोधकीय शब्द जैसा एवं जितना आते हैं जो एकहरे तथा नित्यसम्बन्धी हो सकते हैं (ऐसा···मानो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे···मानो, इतना···मानो, इस प्रकार (तरह)···मानो, ऐसा···जैसे, इतना··· जैसे, इस प्रकार (तरह)···जैसे, वैसे···जैसे, यों···जैसे; ऐसा···गोया; जैसे कि ···वैसे; जैसा···ऐसा, जैसा···वैसा, जितना···उतना, जितना···इतना)।

'मानो' सरल वाक्य में तुलना की अभिव्यक्ति कर सकता है, जैसे, यह मानो संधि-पत्र था (73, 52), अशोक को मानो कुछ भी सुनायी नहीं देता (38, 85)।

एकहरे समुच्चयबोधक के रूप में 'मानो' इस प्रकार के उपवाक्य जोड़ता है : (क) तुलनात्मक—···वह···इधर-उधर देखने लगे मानो छिपने के लिए कोई बिल ढूँढ़ रहे हों···(73, 80); (ख) व्याख्यात्मक—माया को लगता था मानो समय का चक्र रुक गया हो (140, 61), जो सदा मुख्य उपवाक्य के बाद ही आते हैं।

नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक के रूप में 'मानो' सहसम्बन्धी-सार्वनामिक वाक्यों के उपवाक्यों को जोड़ता है। अर्थ की दृष्टि से उपवाक्य परिणामात्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, जैसे, ऐसा (+ विशेषण)···मानो—महाशय विट्ठलदास इस समय ऐसे खुश थे मानो उन्हें कोई सम्पत्ति मिल गयी हो (73, 66); ऐसा (+संज्ञा)··· मानो—तुम तो ऐसी बातें करते हो मानो इस देश में पैदा ही नहीं हुए··· (73, 107); ऐसा (+ क्रिया)···मानो—···विट्ठलदास को ऐसा जान पड़ा मानो वह किसी निर्जन स्थान में आ गये (42, 95); ऐसे (+ क्रिया)···मानो—नीला ने ऐसे कहा मानो उसे राफ़ी की बात पर विश्वास न हुआ हो (162, 26); इस तरह (+क्रिया)···मानो—सुमन इस तरह कह रहे हैं मानो मेरे साथ बड़ी रियायत कर रहे हैं (72, 138), इतना (+ विशेषण)···मानो···—उसका चित्त इतना उत्साहित था मानो किसी निःसन्तान के बालक हुआ हो (70, 87)।

'जैसे' समुच्चयबोधक सरल वाक्य में तुलना की अभिव्यक्ति कर सकता है, वह दृश्य चेतन की दृष्टि को जैसे चुम्बक की तरह बाँधे था (17, 254), स्त्री की आर्त्त पुकार जैसे रावत के कान में पहुँच नहीं पायी (96, 81)।

'जैसे' समुच्चयबोधक निक्षिप्त पदबन्धों में प्रयुक्त हो सकता है, जैसे, हम शाम तक जैसे बने लड़ना होगा (4, 73)।

एकहरे समुच्चयबोधक के रूप में इस प्रकार के उपवाक्य जोड़ता है : (क) तुलनात्मक—···मैं चौंक गया, जैसे, चोरी करता हुआ पकड़ा गया होऊँ (108, 22); (ख) व्याख्यात्मक—···सुखराम को लगा जैसे पुरवैया के थपेड़ों में बादल झूमकर चमके हों···(103, 134)।

नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक के रूप में 'जैसे' सहसम्बन्धी-सार्वनामिक तथा तुलनात्मक-सदृशतासूचक वाक्यों के उपवाक्यों को जोड़ता है।

सहसम्बन्धी-सार्वनामिक वाक्य में अर्थ की दृष्टि से उपवाक्य हो सकते हैं : (क) विधेयवाचक—उसका व्यवहार उससे ऐसा था, जैसे अपनी छोटी बहनों से था (136, 15); (ख) परिणामदर्शक—ऐसा (+ संज्ञा)···जैसे—ऐसी चीख़-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुकार, भाग-दौड़ मच गयी थी जैसे कहीं भूचाल आ गया हो···(108, 7), ऐसा (+विशेषण)···जैसे, जवान उसको देखते ही ऐसा खुश हुआ जैसे दुनिया—जहाँ की दौलत मिल गयी हो (24, 23), ऐसा (+क्रिया)···जैसे—मुझे ऐसा लगा जैसे मेरी नाव नदी की धार में वेग से बही जाती है (139, 160); कैसा (+संज्ञा)···जैसे, —···कैसी लम्बी-लम्बी आहें भर रही थी जैसे सचमुच उसके हृदय में गिरफ़्तार हैं (136, 16), ऐसे (+क्रिया)···जैसे—अरी तू तो ऐसे खाती है जैसे मेरी तुझसे प्रीत नहीं (103, 86); यों [यूँ] (+क्रिया)···जैसे—··· लड़कियाँ उससे यों मिलतीं जैसे वह उसकी बहुत पुरानी सहेली है (136, 16), यूँ लगा, जैसे स्वर्ग में पहुँच गया हूँ (24, 125-126); इस प्रकार [तरह] (+क्रिया)··· जैसे—इस तरह लौट आऊँगा जैसे कुछ भी न हुआ हो (108, 26)। जैसा कि उदाहरणों से स्पष्ट है, 'जैसे' वे उपवाक्य जोड़ता है जो मुख्य के बाद आते हैं। बहुत कम प्रयोगों में 'जैसे' उन उपवाक्यों को जोड़ता है जो मुख्य उपवाक्य के आगे आते हैं। मुख्य वाक्य में अन्वादेशक 'ऐसा' प्रयुक्त होता है, जैसे, पृथ्वी पर जैसे आग का समुद्र बह रहा हो ऐसा प्रतीत होता था (4, 91), फूल की पत्तियाँ एक-दूसरे पर जैसे पड़ी हुई हों, ऐसी लगती है (50, 89)।

तुलनात्मक-सदृशतासूचक वाक्यों में 'जैसे' समुच्चयबोधक वह उपवाक्य जोड़ता है जो आ सकता है: (क) मुख्य उपवाक्य के आगे—जैसे···वैसे—उनकी ओर से रुपया जैसे दुष्ट डाकुओं के हाथ जाता वैसे ही उस पापिन औरत के हाथ गया (96, 83), —जैसे···उस प्रकार (तरह)—परन्तु जैसे तिनका भँवर में पड़कर टुकड़े-टुकड़े हो जाता है उसी प्रकार तिल-तिल कर वे खेत रहे (4, 184); (ख) मुख्य वाक्य के बाद (अपेक्षाकृत कम)—वैसे···जैसे—ज़रूर जानकी रो रही है, वैसे ही जैसे कुर्बानी के पूर्व गाय रोवे (53, 22), इस तरह [प्रकार]···जैसे— पलंग पर इस तरह बैठ गया, जैसे डर लग रहा हो (108, 14)। जैसा कि अन्तिम दो उदाहरणों से स्पष्ट है मुख्य उपवाक्य के बाद आने वाला उपवाक्य अर्थ की दृष्टि से सहसम्बन्धी-सार्वनामिक वाक्यों से मेल खाता है।

'जैसे' समुच्चयबोधक के प्रकार्य में समुच्चयबोधकीय पदबन्ध 'जिस तरह' आ सकता है, जैसे, जिस तरह धीरे-धीरे उसके साथ झिझक दूर होती है, उसी तरह यहाँ होता है (73, 41)।

दोहरे समुच्चयबोधक के रूप में आते हुए 'जैसे' अपना अर्थ नहीं बदलता, जैसे, जैसे-जैसे कहे करते जाएगा (51, 15)।

'गोया' सरल वाक्य में तुलना की अभिव्यक्ति कर सकता है, जैसे, ···जो··· उस उम्र में गोया सबसे बड़ी थी··(24, 48), पर ऐन वक्त पर गाय गोया उसके बद-इरादे को ताड़ गयी (53, 4)।

एकहरे समुच्चयबोधक के रूप में 'गोया' वह उपवाक्य जोड़ता है जो सदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख्य उपवाक्य के बाद ही आता है, जैसे, और फिर भौंकते हैं चलती मोटर के सामने आकर, गोया उसे रोक ही तो लेंगे (78, 41)।

नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक के रूप में 'गोया' सहसम्बन्धी-सार्वनामिक वाक्य के उपवाक्यों को जोड़ता है जिनका आश्रित वाक्य परिणामसूचक सम्बन्ध व्यक्त करता है, जैसे, ऐसा (+विशेषण)···गोया—ऐसा बदहवास हो गयी गोया मुझ पर क़यामत टूटी···(24, 31), ऐसा (+संज्ञा)···गोया—वहाँ ऐसा समाँ आया गोया पर काटकर परियों को छोड़ दिया है (25, 15), ऐसा (+क्रिया)···गोया—ऐसा लगा, गोया लाल की माँ कराह रही है (53, 22)।

'मानो', 'जैसे' और 'गोया' समुच्चयबोधक सरल स्वतन्त्र वाक्यों के संयोजक तत्त्व के रूप में आ सकते हैं, जैसे, हमसे छिपा-छिपाकर यह रक़म उड़ायी जाती है। मानो हम सरकार के नौकर ही नहीं हैं (73, 11), विमल, पत्तन की लाज रख। किस प्रकार, महाराज? जैसे तू ठीक समझे (4, 102), ···वह अभी तक पहली को भूल नहीं सका है। गोया कजरी अब प्यारी की बन्दी है (103, 135)।

'जैसा कि' समुच्चयबोधक मुख्य वाक्य से विभिन्न निक्षिप्त वाक्यों को जोड़ता है जो (क) मुख्य वाक्य के आगे आ सकते हैं, जैसे, जैसा ही पहले तय हो चुका था, साधुसिंह को इनकी रखवाली करनी थी (75, 166); (ख) मुख्य वाक्य के बाद आ सकते हैं, जैसे, अतः विज्ञापन को व्यर्थ का व्यय न समझना चाहिए जैसा कि कभी-कभी सोचा जाता है (101, 231); (ग) मुख्य वाक्य के भीतर समावेशित हो सकता है, जैसे, सितारा के सम्बन्ध में जैसा कि मैं इस लेख के आरम्भ में कह चुका हूँ, पूरे विस्तार से लिखते हुए झिझकता हूँ (136, 106)।

'जैसा कि' समुच्चयबोधक समुच्चयबोधकीय शब्द 'जैसा' से अलग समझना चाहिए जो अतिरिक्त समुच्चयबोधक 'कि' से जुटता है और जो तुलनात्मक सदृश्यता के सम्बन्ध व्यक्त करता है, जैसे, जैसा कि 1971-72 में हुआ वैसे ही 1972-73 में···खरीफ़ की उपज काफ़ी कम हो गयी (153, 13)।

'जैसा' समुच्चयबोधकीय शब्द एकहरे या नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक के रूप में प्रयुक्त होते हुए तुलनात्मक-सदृशतासूचक वाक्यों की प्रणाली में वह उपवाक्य जोड़ता है जो आ सकता है : (क) मुख्य उपवाक्य के आगे—जैसा सोचा वही हुआ (4, 110), जैसा हमने किया वैसा पाया (24, 34); (ख) मुख्य वाक्य के बाद—···कुटीर उद्योगों का पुनः पुनरुद्धार करना इस यांत्रिक एवं वैज्ञानिक युग में वैसा ही है जैसा मोटर और हवाई जहाज़ के स्थान पर बैलगाड़ी का चलाना (115, 30)।

'जितना' समुच्चयबोधकीय शब्द एकहरे या नित्यसम्बन्धी समुच्चयबोधक के रूप में प्रयुक्त होते हुए सहसम्बन्धी-सार्वनामिक वाक्यों की प्रणाली में वह उपवाक्य जोड़ता है जो आ सकता है : (क) मुख्य उपवाक्य के आगे—जितना चाहिए, मार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीजिए (71, 110), अभिमानी मनुष्य को कृतघ्नता से जितना दुःख होता है उतना और किसी बात से नहीं होता (72, 119), मैं चाचा साहेब का जितना अदब करता हूँ इतना अपने पिता का भी नहीं किया (67, 169); (ख) मुख्य उपवाक्य के बाद (अपेक्षाकृत कम)—साँवले उसका उतना ही प्यार करता था, जितना मौलवी अफ़ज़लबेग़ उसकी बेटी चन्द्रा को (113, 17), ···चाकू से अपना क़लम बनाने में इतना समय लगाना पड़ता है जितना अंगी को आधे खेत में हल चलाने के लिए (161, 79)।

(9) परिणामदर्शक समुच्चयबोधक। इनमें संयुक्त समुच्चयबोधक 'यहाँ तक कि' आता है।

'यहाँ तक कि' जोड़ता है: (1) वाक्य के सजातीय अंगों को (बहुत कम), जैसे, कोई भी विरोधी पार्टी और यहाँ तक कि छोटी-छोटी विरोधी पार्टियाँ···सरकार बना पाने की स्थिति में नहीं हैं (II, 10-2-1970, 24), वह तो प्राकृतिक शक्तियों से और संकटों से—यहाँ तक कि मृत्यु से—टक्कर लेना चाहता है (191, 65); (2) व्यधिकरण वाक्यों के उपवाक्यों को जिनमें आश्रित उपवाक्य सदा मुख्य के बाद आता है और 'यहाँ तक कि' पृथक् अथवा संलग्न रूप में प्रयुक्त हो सकता है, जैसे, शराब का दौर चलता रहा, यहाँ तक कि नशे में आकर वे दोनों आपस में छेड़छाड़ करने लगे (24, 34), ···चंचलता यहाँ तक बढ़ी कि पढ़ना-लिखना सब छूट गया (73, 53-54)।

'यहाँ तक कि' समुच्चयबोधक सरल स्वतन्त्र वाक्यों के संयोजक तत्त्व के रूप में आ सकता है, जैसे, ···वे इतना बिगड़े कि जो कुछ मुँह में आया बकते रहे। यहाँ तक कि वकील साहब से पाप भी लगा दिया (73, 42)।

आधुनिक हिन्दी में जैसा कि प्रस्तुत सामग्री से स्पष्ट है अनेकार्थी समुच्चयबोधक हैं जिनमें सबसे आगे 'कि' और 'जो' समुच्चयबोधक आते हैं।

'कि' आ सकता है: (1) विभाजक समुच्चयबोधक की तरह, (2) स्वरूपसूचक की तरह, (3) कालसूचक की तरह और (4) उद्देश्यवाचक की तरह।

'जो' आ सकता है: (1) स्वरूपसूचक समुच्चयबोधक की तरह, कालसूचक की तरह, (3) संकेतसूचक की तरह और (4) उद्देश्यवाचक की तरह।

अन्य अनेकार्थी समुच्चयबोधकों में आते हैं: 'जब' (कालवाचक एवं संकेतसूचक), 'जैसे' एवं 'मानो' (तुलनामूलक एवं व्याख्यात्मक), 'इसलिए कि' (कारणसूचक एवं उद्देश्यवाचक)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निपात

निपातों की प्रमुख कोटिगत विशेषता यह है कि वे वाक्य और इसमें विभिन्न शब्दों को अतिरिक्त अर्थ-छाया या वृत्ति-छाया प्रदान करते हैं। साथ ही वे रूप-निर्माण एवं शब्द-निर्माण के लिए प्रयुक्त हो सकते हैं।

आधुनिक हिन्दी में शुद्ध निपात (ही, भी, न, नहीं, हाँ इत्यादि) और साधित (यौगिक) निपात हैं जो व्यक्ति की दृष्टि से निम्न शब्द-भेदों से व्युत्पन्न हैं: (क) सर्वनामों से—क्या; (ख) क्रियाओं से—भर, आओ, लो, लाओ आदि; (ग) परसर्गों से—तक, समुच्चयबोधकों से—तो; (घ) विशेषणों से—ज़रा तनिक।

अपने प्रकार्यों की दृष्टि से निपात निम्न भेदों में विभाजित हैं।

(1) मनोगत-वृत्तिवाचक, जिनके अपने-अपने उपभेद हैं : (1) बलात्मक—ही, तो, एक, भी; (2) ध्यानाकर्षक-सीमाबोधक—मात्र, भर, ही, तो; (3) संयोजनात्मक—भी, ही; (4) प्रश्नात्मक—क्या, न; (5) तुलनामूलक—सा; (6) विस्मयादिबोधक—काश, क्या; (7) स्वीकारात्मक—हाँ, जी हाँ, जी; (8) आदरसूचक—जी, श्री; (9) वृत्तिवाचक-आनुमानिक—शायद ही, थोड़े ही, अवश्य, ज़रूर; (10) मृदुतासूचक—ज़रा, तनिक।

(2) नकारात्मक—न नहीं, जी, नहीं, मत।

(3) रूपनिर्माणकारी—ही, भी (देखते ही, देखते हुए भी)।

(4) शब्दनिर्माणकारी—भी, न, ही (फिर भी, कोई-न-कोई, ज्यों ही)।

(5) वाक्यगत—आओ, लो, लाओ, आइये, लाइये (आओ, देखें आदि)।

संरचना की दृष्टि से निपात होते हैं : (1) सरल (एकपदीय)—ही, भी, तो, तक, और (2) संयुक्त (द्विपदीय)—जी हाँ, जी नहीं, शायद ही।

वाक्य में अपनी स्थिति के अनुसार निपात हो सकते हैं : (1) पूर्वस्थानीय जो संलग्न शब्द के बिलकुल आगे लगे होते हैं—न (नकारात्मक), श्री, जरा, तनिक—या जो वाक्य का आरम्भिक तत्त्व हैं—काश, हाँ, आओ, लाओ; (2) परस्थित जो संलग्न शब्द के एकदम बाद लगे होते हैं—जी, सा, मात्र, भर, तक, —या जो वाक्य का अन्तिम तत्त्व हैं—न (प्रश्नात्मक); (3) स्वतन्त्र स्थिति के—नहीं, मत, शायद, जरूर, ही, भी, तो)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आइये, प्रमुख निपातों पर विचार करें।

'ही' निपात सभी शब्दभेदों और वाक्य के सभी अंगों के साथ प्रयुक्त होता है। वह निम्न प्रकार्यों में आता है :

(1) मनोगत-वृत्तिवाचक निपात जिसके ये भेद हैं : (क) बलप्रदायक—सारा खेल ही बिगड़ जाएगा (73, 45), अभी तो तुझे ही और पैसे चाहिए ? (103, 97), कभी सोचा ही नहीं (96, 17), और अकेली ही रहेगी ? (73, 42); (ख) ध्यानाकर्षक-सीमाबोधक—तीन ही पैसे तो हैं (157, 44), संसार में करोड़ों मनुष्य एक ही समय खाते हैं (73, 52), डलहौजी की सड़क सुबह ही खुल गयी थी (96, 25); (ग) संयोजनात्मक—मैं ही तो लड़ाकू हूँ (103, 208)।

(2) रूपनिर्माणकारी निपात, जैसे, फिर दोनों की आँखें मिलीं पर मिलते ही हट गयीं (72, 222), मोटर के चलते ही एक छोटा-सा धक्का लगा (27, 93) —पूर्वकालिक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त का रूप।

(3) शब्दनिर्माणकारी निपात जो निम्न शब्द-भेदों के निर्माण में प्रयुक्त होता है : (क) समुच्चयबोधकों के—ज्यों ही, जैसे ही, ही नहीं···बल्कि; (ख) निपातों के—शायद ही, थोड़े ही; (ग) क्रियाविशेषणों के—देखते-ही-देखते; (घ) समुच्चय-बोधकीय पदबन्धों के—साथ ही।

सार्वनामिक संज्ञा और क्रियाविशेषणों के तथाकथित बलात्मक (अवधारक) रूपों का निर्माण करने में 'ही' रूपनिर्माणकारी एवं शब्दनिर्माणकारी प्रकार्यों के बीच की अवस्था अपना लेता है क्योंकि शुद्ध बलप्रदायक रूपों (वही, तुमही, तभी, अभी) के साथ-ही-साथ नयी शाब्दिक (कोशीय) इकाइयाँ बनती हैं—'कभी' एवं 'कहीं'।

(4) वाक्यगत निपात जो वाक्यगत द्विरुक्तियों के निर्माण के लिए प्रयुक्त होता है। द्विरुक्तियों के दो अर्थ हैं : (क) समुदायवाचक, जैसे···अब वहाँ अँधेरा-ही-अँधेरा था (75, 201), ···जहाँ रेत-ही-रेत, धूल-ही-धूल होगी (136, 20); (ख) बलप्रदायक—···वह नीचे-ही-नीचे गिरता जा रहा हो (28, 62), और फिर गरम-गरम साँसें चादर के भीतर-ही-भीतर भरती हैं (103, 143)।

विधेय की संरचना में आते हुए 'ही' विचित्र वृत्तिवाचक पुट प्रदान करता है जिनमें हैं : (क) कर्ता द्वारा प्रथम कृदन्त में निहित विधेयवाचक लक्षण को आत्म-सात् करने का, जैसे, अधिकारियों को आप जानते ही हैं (73, 75)। जब उद्देश्य के रूप में अप्राणिवाचक संज्ञा आती है तो प्रथम कृदन्त में निहित विधेयवाचक लक्षण के अनिवार्यतः होने का, अर्थात् 'ही' कृदन्त के अर्थ को अधिक सशक्त बनाता है, जैसे, ···जनता बड़ी संख्या में एकत्र होती ही है (XI, 8-1-1962), फिर पहले-पहल तो झिझक होती ही है (73, 41);(ख) द्वितीय कृदन्त द्वारा अभिव्यक्त विधेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में निहित व्यापार के पूर्ण होने का, जैसे, खाना, समाप्त हो ही गया (96, 19), पर अन्त में ठोकर खाकर गिर ही पड़े (73,60); (ग) भविष्यत् काल के रूपों द्वारा अभिव्यक्त विधेय में निहित व्यापार के अधिक संभव होने का, जैसे···मारते-मारते मार ही डालूँगा (24, 76), यहाँ तो मुझसे कोई पूछेगा ही नहीं (73, 72)।

'कि' समुच्चयबोधक सहित कालसूचक व्यधिकरण वाक्यों की प्रणाली में मुख्य उपवाक्य के विधेय के भीतर प्रयुक्त होते हुए 'ही' निपात इंगित करता है कि मुख्य उपवाक्य का व्यापार आश्रित उपवाक्य के व्यापार से क्षणिक पूर्ववर्ती होता है, जैसे, विट्ठलदास ऊपर जाकर बैठे ही थे कि पंडित दीनानाथ आ पहुँचे (72, 137), कलम उठा ही रहा था कि नन्ही अपने छोटे भतीजे अनन्तू को गोद में लेकर आ गयी (1, 238), ···वे प्रेस के मालिक को फ़ोन करने ही वाले थे कि टेलीफ़ोन की घण्टी बजी (7, 54), चिन्तो का आँगन में पाँव रखना ही था कि ज्वालासिंह किंचित् क्रोधित स्वर में बोला···(75, 89)।

'ही' निपात अधिकांश प्रयोगों में परस्थानीय होता है, जैसे, दो ही बजे लौट आये (73, 47), आपके कितने ही मित्र है (73, 56)। विश्लेषणात्मक क्रिया-मूलक विधेय के भीतर प्रयुक्त होते हुए 'ही' मुख्य शब्दार्थक क्रियापद के बाद ही आता है, जैसे, अभी छोड़ ही रहा हूँ (16, 68), कुछ बातचीत होनी ही चाहिए थी (96, 18), घोड़े को रातिब दिया ही क्यों जाए···(73, 51), मेरे होंठों की 'सुर्खी' को देखता ही कौन है ? (161, 35)।

जटिल क्रियामूलक विधेय के भीतर में 'ही' बलप्रदायक शब्द के बाद ही प्रयुक्त होता है, जैसे, अगर तू जाना ही चाहता है तो चल (24, 70), और वह निकलना चाहती ही थी (73, 46)।

यदि 'ही' सहित शब्द परसर्ग के साथ आता है तो 'ही' प्रयुक्त होता है: (क) सरल परसर्ग के बाद—गाना मैंने घर पर ही सीखा था (73, 41); (ख) सरल परसर्ग के आगे—···लेकिन काल ही पर रखिये (73, 77); (ग) संयुक्त परसर्ग के शाब्दिक अंश के आगे—घड़ी अब तक बल्लू के ही पास थी (96, 18); (घ) संयुक्त परसर्ग के बाद—सेठी और ऊर्मिला ने चाय पी लेने के बाद ही चलने का निश्चय किया (96, 21)।

द्विरुक्तियों के संयोजक तत्त्व के रूप में 'ही' इनके बीच प्रयुक्त होता है, जैसे, रात-ही-रात क्या रियासत से दूर हो जाओगे ? (103, 39), चारों तरफ़ आग-ही-आग धाँय-धाँय जलने लगी (4, 94)।

'भी' निपात सभी शब्द-भेदों और वाक्य के सभी अंगों के साथ प्रयुक्त होता है। वह निम्न प्रकार्यों में आता है :

(1) मनोगत वृत्तिवाचक निपात जिसके ये भेद हैं: (क) संयोजनात्मक—सदन भी बाहर चला आया (73, 45), अन्य देशों में भी भिक्षुक मिलते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं (115, 43), बल्लू भी उसी का, मदन भी उसी का है (96, 23); (ख) बल-प्रदायक—यह वारि न भी रुके, आज हम न भी पहुँचे (96, 16) मैं तो मिडिल तक भी नहीं पढ़ी···(73, 56), ऐसा विश्वास कुछ को है और बहुतों को नहीं भी है (115, 25)।

(2) रूपनिर्माणकारी निपात, जैसे, ···जो पीड़ा से तड़पता हुआ भी मुख से आह न निकालता था (161, 47)—अनुमतिवाचक कृदन्त; मैं ज़िन्दा रहते भी मुर्दा-सा बना जा रहा हूँ (80, 74), ···इच्छा न होते हुए भी वह बैठ गया (17, 177), वह सिर से पाँव तक कपड़े पहने हुए भी नंगा था (65, 131), वह मरकर भी मरी नहीं थी (103, 11)—अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त।

(3) शब्दनिर्माणकारी निपात जो निम्न शब्द-भेदों के निर्माण में प्रयुक्त होता है: (क) समुच्चयबोधक कों—जो भी, जब भी, जहाँ भी, जैसे भी, फिर भी, तो भी; (ख) सर्वनामों के—कुछ भी, कोई भी, कैसा भी।

(4) वाक्यगत निपात जो 'पर' परसर्ग के साथ ही अनुमतिवाचक क्रिया-विशेषण पदबन्धों (या अनुमतिवाचक क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त) के निर्माण में भाग लेता है, जैसे, लतिका चाहने पर भी उनसे कुछ नहीं पूछ पाती···(52, 91), मुंशी जी दिल को बहुत समझाने पर भी कचहरी न जा सके (66, 125)।

सम्भावनार्थ एवं संकेतार्थ के रूपों के साथ आते हुए 'भी' व्यापार की काल्पनिकता और अधिक सशक्त एवं स्पष्ट बनाता है, जैसे, बीमार पड़ भी जाता तो एक बहाना मिल जाता (73, 55), कोई तुझे विश्वास नहीं होता? होता भी हो तो मैं कर नहीं सकती (103, 99)।

कुछ विशेषणों एवं क्रियाविशेषणों के साथ आते हुए 'भी' गुण का दर्जा और सशक्त बनाता है, जैसे, गाँठ ज़रा भी हलकी न पड़ी (73, 56), ···तनिक भी अन्तर नहीं आया (115, 21), उसने और भी ऊँचे स्वर में गाना शुरू किया (73, 46)।

द्वितीय कृदन्त द्वारा अभिव्यक्त विधेय के भीतर आते हुए 'भी' विधेय को काल्पनिक-अनुमतिवाचक अर्थ-छाया प्रदान करता है, जैसे, ऐसे करने न करने के लिए उसे कहा भी न गया था (96, 20), दो-चार चोटें छड़ी पर पड़ीं भी तो उचटती हुई (66, 54)।

भविष्यत् काल और आज्ञार्थ के रूपों द्वारा अभिव्यक्त विधेय के भीतर आते हुए 'भी' व्यापार को प्रेरणार्थक पुट प्रदान करता है, जैसे, अब उठेगी भी (65, 13), उठो भी (22, 190), जाइए भी (157, 63)।

'भी' निपात नियमतः परस्थित होता है, जैसे, कुछ पढ़ा-लिखा भी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(24, 75), ऐसा विश्वास कुछ को है और बहुतों को नहीं भी है, छः घण्टे भी हो गये (96, 12)।

विश्लेषणात्मक क्रियामूलक विधेय के भीतर आते हुए 'भी' मुख्य शाब्दिक क्रियापद के बाद ही प्रयुक्त होता है, जैसे, अगर पूछा भी गया तो कह दूँगा··· (73, 72), वह लड़ा भी क्या होगा (103, 207), तुम कहीं बाहर जा भी तो न सकोगी (66, 119)।

यदि 'भी' सहित शब्द परसर्ग के साथ आता है तो 'भी' इसी के बाद लगा होता है, जैसे, कपड़े उतारने की भी सुध न रही (73, 61), नींद किसी को भी नहीं आयी थी (96, 21)। अगर परसर्ग संयुक्त होता है तो 'भी' (क) इसके शाब्दिक अंश के आगे आता है, ···आग पेड़ के भी पास पहुँची (25, 109); (ख) संयुक्त परसर्ग के बाद—···यह उसके पलंग के पास भी न फटकती थी थी (161, 49)।

'तो' निपात सभी शब्द-भेदों और वाक्य के सभी अंगों के साथ प्रयुक्त हो सकता है। वह मनोगत-वृत्तिवाचक निपात के रूप में आता है जिसके ये भेद हैं : (क) बलप्रदायक—बनती तो थी जैसे जानते नहीं (103, 120), चाहिए तो वह था कि···(73, 52); (ख) ध्यानाकर्षक-सीमाबोधक—तुम तो मेरे लिए एक मकान ठीक कर दो (73, 41), हुज़ूर और सवारी तो नहीं बैठेंगी (96, 9), इसी प्रकार्य में 'तो' पुनरुक्त समुच्चयबोधकों के पहले घटक में प्रयुक्त होता है, जैसे, भारत न तो विलायत है और न जर्मनी (115, 30), चकबन्दी का कार्य या तो प्रारम्भ ही नहीं किया गया है या नाममात्र का किया गया है (II, 10-2-1970, 17)।

'नहीं' नकारात्मक निपात के साथ मिलकर 'तो' विरोधदर्शक समुच्चयबोधक 'नहीं तो' गठित करता है।

वाक्य के शुरू में आते हुए 'तो' निक्षिप्त शब्द का प्रकार्य निभाता है, जैसे, तो क्या कहूँगा मैं? (103, 17), तो वे सारा दिन मोटरें चलाते फिरते हैं? (75, 61)।

'तो' निमयतः परस्थित होता है, जैसे, गाना तो बहुत अच्छा नहीं···(73, 47), यहाँ तो सिर्फ़ रईस लोग आते हैं (73, 41), चला तो नौ बजे रात को (73, 47)।

यदि 'तो' सहित शब्द परसर्ग के साथ आता है तो 'तो' नियमतः परसर्ग के बाद ही आता है, जैसे, तुमने अपनी नेकनामी की तो फ़िक्र की (66, 175), ···क्षमा के लिए तो यह तपस्या थी (71, 9)।

विश्लेषणात्मक क्रियामूलक विधेय में प्रयुक्त होते हुए 'तो' मुख्य शाब्दिक क्रियापद के बाद ही लगा होता है, जैसे, बता तो रहा हूँ (103, 313), हाँ, चाहता तो ज़रूर हूँ (96, 14)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तक' निपात मुख्यतः संज्ञाओं के साथ और बहुत कम क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होता है। वह मनोगत-वृत्तिवाचक और बलप्रदायक निपात का प्रकार्य निभाता है, जैसे, ···कभी-कभी निर्वाचन तक स्थगित कर देना पड़ता है (115, 396), ···बेचारी ने जीभ तक नहीं हिलायी (73, 46-47), आ भाँग छूयी तक नहीं (73, 44)।

'तक' नियमतः परस्थित होता है। अगर वह सरल परसर्ग सहित शब्द के साथ आता है तो वह नियमतः शब्द और परसर्ग के बीच लगा होता है, जैसे, फ्रांसीसी क्रान्ति के सबसे आगामी नेताओं तक ने जिस तरह की प्रणाली की कल्पना की थी, उससे भी यह सर्वथा भिन्न है (145, 2), ···मगर तुमने भीतर तक का खून पिया है (102, 65), कितनी ही पुस्तकों का अनुवाद तो अंग्रेज़ी तक में हो गया है (22, 189)।

विश्लेषणात्मक क्रियामूलक विधेय में प्रयुक्त होते हुए 'तक' भी मुख्य शाब्दिक क्रियापद के बाद ही लगा होता है, जैसे, चिन्ता को भय छू तक न गया था (70, 67), मैंने उसे देखा तक नहीं है (22, 189)।

'क्या' निपात सारे वाक्य से सम्बन्ध रखता है। वह तब प्रयुक्त होता है जब अन्य प्रश्नार्थक शब्द नहीं होते और वह लगा होता है : (क) वाक्य के शुरू में—क्या मैं तुम्हारे यहाँ कभी नहीं गया ? (75, 87), क्या तुमसे इतना भी नहीं देखा जाता ? (66, 63)। वाक्य के शुरू में 'क्या' के आगे ये शब्द प्रयुक्त हो सकते हैं : (क) कालवाचक तथा स्थानवाचक क्रियाविशेषक—संसार में क्या मैं मज़दूरी भी नहीं कर सकता ? (66, 75); (ख) निक्षिप्त शब्द एवं समुच्चयबोधक—तो क्या मास्टर ही न मिलते थे ? (73, 50), मगर क्या इन्हें कोई दूसरी शिकायत न सूझी···(66, 75); (घ) वाक्य के अन्त में अपेक्षाकृत कम)—शर्मा जी को आप नहीं ले सके क्या ? (73, 76); (ग) वाक्य के भीतर (बहुत कम)—मैं उसके दिल की बात क्या जानता था ? (66, 70)।

'क्या' वाक्य के शुरू और अन्त में आ सकता है, जैसे, क्या जी अच्छा नहीं क्या (66, 84)।

'क्या' निपात सामान्य प्रश्न की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त हो सकता है, जैसे, ज्ञानप्रकाश भी मुझसे निष्ठुरता करने लगा, नहीं तो क्या मेरे लिए दो-चार दिन के लिए असम्भव था (70, 93), क्या उसके मन में यह प्रश्न उठा होगा कि पिताजी को देखते ही इसकी त्योरियाँ क्यों बदल गयीं। इसका कारण भी क्या उसकी समझ में आ गया होगा (66, 80-81)।

'न' निपात 'क्या' की भाँति सारे वाक्य से सम्बन्ध रखता है। वह विधानार्थक वाक्य में व्यक्त कथन की पुष्टि के लिए प्रयुक्त होता है, जो इसके आगे आता है। स्वीकारार्थक वाक्य में स्वीकारात्मक उत्तर की आशा है, जैसे, तू यहाँ आया करेगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न ?···आऊँगी (103, 57), कुशल से हैं न ?···कुशल से हैं (66, 209)। नकारार्थक वाक्य में नकारात्मक उत्तर की आशा है, जैसे, नहीं सोचता न ?··· 'नहीं मैंने कहा' (103, 69), हमारी रोटी पराई तो नहीं न ?···पराई कौन कहता है। अपना घर है (75, 51)।

कभी-कभी स्वीकारार्थक वाक्य के बाद नकारात्मक उत्तर हो सकता है, जैसे, कल आओगे न ? नहीं, कल मुझे एक मैच में जाना है (66, 93)।

प्रश्नार्थक वाक्य के अतिरिक्त 'न' निपात आ सकता है : (क) विस्मयबोधक वाक्य में, जैसे, मैं यहाँ थी न ! (66, 83), अपने ही हाथों न ! (66, 155); (ख) विधानार्थक वाक्य में, जैसे, नीच जात है न, किसी को बात करने की तमीज़ तो है नहीं (66, 206)।

'न' निपात नियमतः वाक्य के अन्त में आता है, इसके बाद कभी-कभी वाक्य के कुछ गौण अंग हो सकते हैं : (क) क्रियाविशेषण— मेरे बाल तो धुल गये हैं न अच्छी तरह; (ख) कर्म—मैं चलूँगी न तेरे साथ (103, 96)।

'सा' निपात सभी शब्दभेदों और वाक्य के सभी अंगों के साथ प्रयुक्त हो सकता है, वह तुलनात्मक मनोगत-वृत्तिवाचक निपात का प्रकार्य निभाता है।

संज्ञाओं एवं अन्य नामिकीकृत शब्द-भेदों को 'सा' तुलनात्मक पुट प्रदान करता है, जैसे, उसके हृदय में प्रेम-लालसा की एक आग-सी जलती रहती थी (75, 58), सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा···(139, 89), ···उस दिन को जोहने-सी लगी जब उससे कह दिया जाए···(44 88)।

क्रियामूलक विधेय में अवधारक पक्ष के क्रिया-प्रातिपदिक से मिलकर 'सा' व्यापार में संदिग्धता का पुट लाता है, जैसे, मैंने उसका हाथ मरोड़-सा दिया (103, 72)।

विशेषणों एवं कृदन्तों के साथ मिलकर 'सा' निपात विशेष्य शब्द के विशेषणात्मक या विधेयवाचक लक्षण में भी संदिग्धता का पुट लाता है, जैसे, सीधी-सी बात (73, 57), बड़ी-सी इमारत (103, 4); वह मानो चुनौती देता-सा उठा···(44, 66), चिन्ता में पड़ गया-सा लगा (103, 359), फिर वह···भागा हुआ-सा सड़क पर आ खड़ा हुआ (7, 35)।

विस्मयबोधक निपात 'काश' एक 'क्या [ही]' सारे वाक्य के साथ सम्बन्ध रखते हैं। वे नियमतः सम्भावनार्थ एवं संकेतार्थ के सूचक होते हैं, जैसे, काश वह कभी उसे समेटकर अपनी बाँहों में ले सकें···(75, 95), काश, वह अपनी कृति देख पाती (107, 71), क्या ही अच्छा होता यदि वह चित्रकार होता (161, 77)।

विस्मयबोधक निपात 'क्या' निश्चयार्थ में भी प्रयुक्त हो सकता है, जैसे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम जाने की धमकी क्या देते हो (157, 33), हँस क्या रहे होंगे बेचारे! (65, 222)।

स्वीकारात्मक निपात 'हाँ', 'जी हाँ' और 'जी' सारे वाक्य से सम्बन्ध रखते हैं। 'हाँ' स्वीकारात्मक उत्तर के सामान्य रूप के साथ प्रयुक्त होता है, जैसे, डेरे में जलाएगी क्या? हाँ जला दूँगी (103, 276), तो क्या ऐसा बिगड़ हो गया है! हाँ। अब ऐसा ही है (73, 36), जबकि 'जी हाँ' निपात स्वीकारात्मक उत्तर के आदरसूचक रूप के साथ प्रयुक्त होता है, जैसे, घर तो सब कुशल हैं? जी हाँ, सब लोग अच्छी तरह हैं (73, 47), अभी रहोगे यहाँ न? जी हाँ, दो-चार दिन रहूँगा (75, 98)।

'जी'-निपात आदरसूचक उत्तर का संक्षिप्त रूप है। वह उन लोगों को उत्तर देते समय प्रयुक्त होता है जो सामाजिक हैसियत से ऊँचे हैं, जैसे, घर वाली है? जी सरकार (161, 37), आपको इसी बिल्डिंग में फ़्लैट मिला है? जी, यही सामने वाला नम्बर टू (1, 209)। अब यह निपात मात्र आदरसूचक उत्तर देते समय प्रयुक्त होने लगा है।

आग्रहपूर्ण स्वीकरण होते समय 'हाँ' द्विरुक्त होता है, जैसे, हाँ-हाँ, कहो (73, 41), हाँ-हाँ, वही तो डॉक्टर साहब हैं (66, 140), जी हाँ, जी हाँ, वही (1, 129)।

नामिकीकृत होकर 'हाँ' स्त्रीलिंग माना जाता है, जैसे, इंस्पेक्टर साहब ने हाँ में हाँ मिलायी (80, 57)। वाक्य में 'हाँ' कर्म का प्रकार्य निभाता है, जैसे, तुम चेतन से विवाह के लिए हाँ कर लो···(147, 66)।

जब 'जी' प्रश्नात्मक लहजे से बोला जाता है यह इस बात का द्योतक है कि श्रोता सवाल नहीं समझ पाया (कम-से-कम कथन के क्षण में), जैसे, 'और डांस करना आता है?'—'जी? जी नहीं' (1, 215)।

'जी' आदरसूचक निपात नियमतः व्यक्तिवाचक संज्ञाओं में मनोगत-वृत्ति-वाचक निपात के रूप में प्रयुक्त होता है।

संज्ञा के साथ ही प्रयुक्त होते हुए 'जी' इसके एकदम बाद आता है, जैसे, माता जी पिता जी के मन-बहलाव में लगी रहतीं (161, 84), प्रधानमन्त्री जी ने कहा था कि···(115, 33)।

संज्ञा के बिना प्रयुक्त होते हुए 'जी' आ सकता है: (क) वाक्य के शुरू में, जैसे, लाला जी फिर हँसे बोले: '···यहाँ मन्दिर ही बनेगा'—'जी, वहाँ तो नहीं बनेगा' (1, 343), 'जी, देखिये' लड़की बोली (17, 32); (ख) वाक्य के अन्त में, जैसे, यह तुम्हारे काम का नहीं है जी (157, 45), आप भी चलिए जी (147, 63)।

वाक्य के शुरू में 'जी' के आगे स्वीकारार्थक एवं नकारार्थक निपात आ सकते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, जैसे, शाम का समय था ? हाँ जी (147, 37), नहीं, नहीं जी, तू ही जाओ (17, 223)।

'श्री' आदरसूचक निपात नियमतः व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के साथ मनोगत-वृत्तिवाचक निपात के रूप में प्रयुक्त होता है और संज्ञा के सदा आगे, जैसे, अन्य रेडियो नाटककारों में···श्री जैनेन्द्र शरत, श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा तथा श्री केशवचन्द्र वर्मा प्रमुख हैं (215, 236), गीता श्रीकृष्ण ने कही है (122, 10)।

ध्यानाकर्षक-सीमाबोधक निपात 'मात्र' और 'भर' मुख्यतः संज्ञाओं के बाद मनोगत-वृत्तिवाचक निपातों के रूप में आते हैं, जैसे, भूखे व्यक्ति में···पवित्रता की आशा करना दुराशा मात्र है (115, 38), माता-पिता लड़की की शादी करना मात्र अपनी ज़िम्मेदारी समझते हैं (IV, 16-2-1975), ऐसा करके हम केवल मुट्ठी भर व्यक्तियों की रोटी का ही प्रबन्ध कर सकते हैं (115, 31), मेरे पास कपड़ा भर है (22, 189)।

'भर' निपात 'सब' एवं 'सारा' विशेष्य सार्वनामिक विशेषण से मिलते-जुलते अर्थ में प्रयुक्त होता है, जैसे, ···तुम्हें रात-भर नींद नहीं आयी (73, 44), पाँच-छः दिन तक जियाराम ने पेट भर भोजन नहीं किया, (66, 173)।

उपर्युक्त निपातों के अर्थ में 'केवल', 'सिर्फ़' और 'महज़' क्रियाविशेषण प्रयुक्त हो सकते हैं जिनके साथ अक्सर 'ही' निपात आता है। क्रियाविशेषण संलग्न शब्द के आगे और 'ही' इसी शब्द के बाद लगे होते हैं, जैसे, जब तक वह···उससे केवल बात करती रहती···(161, 40), खाली मैं ही आया हूँ (161, 115), महज़ वहाँ की कलाओं ही को आप देखें (41, 22), यहाँ तो सिर्फ़ रईस लोग आते हैं (73, 41)।

वृत्तिवाचक-आनुमानिक निपात 'शायद ही', 'थोड़े ही', 'अवश्य', 'ज़रूर' व्यापार में सत्यता का विभिन्न दर्जा दर्शाते हैं।

समानार्थक निपात 'शायद ही' एवं 'थोड़े ही' व्यापार के होने के सिलसिले में संदिग्धता व्यक्त करते हैं, जैसे, फिर वह शायद ही लौट पाता है (161, 64), प्राण देकर थोड़े ही काम किया जाता है (66, 58)।

समानार्थक निपात 'अवश्य', 'ज़रूर' व्यापार के होने के सिलसिले में विश्वास व्यक्त करते हैं, जैसे, अवश्य ही यह चकोर किसी का पालतू है (161, 64), तुमने ···फल बिकते अवश्य देखे होंगे (50, 18), ज़रूर आऊँगा (27, 81), वापस आकर ज़रूर बता दूँगा (27, 25)।

मृदुतासूचक समानार्थक निपात 'ज़रा' एवं 'तनिक' आज्ञार्थ के साथ प्रयुक्त होते हुए व्यापार के लिए प्रेरणा (या हुक्म) को हलका कर देते हैं। वे आज्ञार्थ के सभी रूपों से आते हैं। 'ज़रा' का प्रयोग 'तनिक' की तुलना में कहीं अधिक होता है, जैसे :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(1) धातु का समाकार—ज़रा सुस्ता लेने दे मुझे (103, 160), अरी तनिक धीरज धर ! (103, 405);

(2) 'ओ' का रूप—ज़रा दम तो ले लो (69, 130), बेटा तनिक इधर तो लाओ (161, 62);

(3) 'इये' (इए) का रूप—ज़रा पता तो लगाइये (59, 106)। यहाँ इस निपात का प्रयोग फालतू है, चूँकि 'ज़रा' किसी भी अतिरिक्त छाया को व्यक्त नहीं करता;

(4) 'इयो' (इओ) का रूप—सरनो, ज़रा अन्दर आइयो (75, 130);

(5) तुमर्थ क्रिया का समाकार—ज़रा इधर आना (65, 212);

(6) 'इयेगा' (इएगा) का रूप—ज़रा दूर रहियेगा (17, 237)।

नकारात्मक निपात 'नहीं' नकार व्यक्त करने का प्रमुख निपात है। वह सभी शब्द-भेदों और प्रायः वाक्य के सभी अंगों से सम्बन्ध रख सकता है, हालाँकि वह मुख्यतः निश्चयार्थ एवं आज्ञार्थ के विधेयों के साथ आता है।

'नहीं' निश्चयार्थ के सभी कालसूचक रूपों के साथ प्रयुक्त होते हुए नकार का प्रमुख साधन है। वर्तमान काल के रूपों के लिए यह एकमात्र नकारात्मक निपात है।

'नहीं' आज्ञार्थ के सभी कालसूचक रूपों के साथ भी प्रयुक्त होता है, गोकि वह यहाँ का एकमात्र निपात नहीं है, क्योंकि यहाँ अधिकतर 'न' का प्रयोग होता है।

विधेय के सिवा 'नहीं' निम्न अंगों से संलग्न हो सकता है: (क) उद्देश्य-संलग्न—मुझसे इस किस्म की शिकायत एक आदमी ने नहीं, कई आदमियों ने की है (66, 61); (ख) कर्म-संलग्न—मोहन रोटी नहीं, आम खाता है (35, 75); (ग) विशेषक-संलग्न—गूलर के फल के एक नहीं सैकड़ों फ़ायदे हैं (50, 49); (घ) क्रियाविशेषक-संलग्न—उसने इन्हीं बालकों की सेवा करने के लिए तुमसे विवाह किया है, भोग-विलास के लिए नहीं (66, 73); (च) पूरक-संलग्न—वह उसे प्रेम की वस्तु नहीं, सम्मान की वस्तु समझती थी (66, 43)।

विधेय में प्रयुक्त होते हुए 'नहीं' कोई निश्चित स्थान नहीं लेता, इसकी स्वतन्त्र स्थिति है। सरल विधेय में 'नहीं' विधेय के आगे या उसके बाद आ सकता है, जैसे :

विधेय	**विधेय के आगे**	**विधेय के बाद**
क्रियामूलक	जूते भी तो नहीं हैं (157, 38),	लेकिन वहाँ सीढ़ी तो है नहीं (75, 172);
	मुझे इनाम नहीं दीजियेगा; (44, 25);	अब आधा मिनट बिलकुल हिलियेगा नहीं (96, 105);

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृदन्तीय	इसकी टाँगें नहीं थीं (161, 163), उनके मन का हाल मैं नहीं जानती (66, 88), तू नहीं थका ? (103, 103), मैं वहाँ नहीं जाऊँगा (66, 100)।	कोई गँवारिन तो थी नहीं (73, 21), आपके हृदय का भाव तो कोई जानता नहीं (96, 23), तूने पूछा नहीं (66, 24), मैं उसकी तरफ़ ताकूँगा भी नहीं (66, 28)।

कृदन्तीय-क्रियामूलक

सरल नामिक विधेय में 'नहीं' वाक्य के अन्त में विधेय के बाद आता है, जैसे, प्रसाद का पता नहीं (157, 34), ···हमें वहाँ करना मंज़ूर नहीं (66, 25)। परन्तु यदि विधेय परसर्गीय तुमर्थ से व्यक्त होता है, तो 'नहीं' विधेय के आगे आता है, जैसे, मैं टस-से-मस नहीं होने का (75, 14), यहाँ तुम्हारी दाल नहीं गलने की (66, 30)।

संयुक्त क्रियामूलक विधेय न 'नहीं' या तो सम्पूर्ण विश्लेषणात्मक विधेय के आगे या संयोजक क्रिया के आगे आता है, जैसे :

विधेय	विधेय के आगे	संयोजक क्रिया के आगे
कृदन्तीय-क्रियामूलक	वह जादू तो नहीं जानती है (59, 144), बच्चे स्कूल से अभी नहीं लौटे है (58, 42);	डरता नहीं हूँ (66, 55), यों तो अभी सोचा नहीं है (112, 86);
कृदन्तीय-कृदन्तीय	···मुँह से और कोई वाक्य नहीं निकलता था (157, 59), ऐसा हाथ नहीं देखा था (103, 111);	······पाँव उठते नहीं थे (103, 42); मैंने क्या देखा नहीं था पहले ? (103, 104)।
कृदन्तीय-क्रियामूलक-कृदन्तीय	यह कल्पना भी पहले से इनके दिमाग में नहीं रही होगी (147, 50)।	

संतत कालरूपों में 'नहीं' निपात या तो सम्पूर्ण विश्लेषणात्मक विधेय के आगे —वह स्कूल नहीं जा रहा है (66, 82), मैडम, छुट्टियों में क्या आप घर नहीं जा रहीं ? (52, 89), या संतत कृदन्त के घटकों के बीच आता है, जैसे, कोचवान सो तो नहीं रहा है (66, 105), रघुनाथ पैसे न मिलने पर कुछ कह तो नहीं रहा था? (149, 39)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त नामिक विधेय में 'नहीं' बहुधा नामिक अंश और संयोजक (अर्द्ध-संयोजक) क्रिया के बीच आता है, जैसे, मैं अपनी राय का मालिक नहीं हूँ (72, 206, ···उसका काम युद्ध करना नहीं था (115, 402), तुझे बुरा तो नहीं लगेगा ! (103, 72), मैं दुर्बल नहीं हूँ (66, 67)। कभी-कभी 'नहीं' संपूर्ण विधेय के आगे आता है, जैसे, ···शान्ति नहीं स्थापित हो सकती है (IV, 25-2-1975), ···उल्लेखनीय प्रभाव नहीं लक्षित हुआ (125, 377)। यह रेखांकित करना चाहिए कि जब नामिक अंश संज्ञा, गुणात्मक एवं सार्वनामिक विशेषणों से व्यक्त होता है तो 'नहीं' उनके आगे नियमतः नहीं आता। संयोजक क्रिया के बाद भी 'नहीं' प्रायः आता नहीं। अपवाद कम मिलते हैं, जैसे हम कोई भेड़-बकरी तो हैं नहीं कि···(73, 40), लेकिन पुलिस का सिपाही कोई साधारण व्यक्ति तो था नहीं (157, 50)।

यदि संयुक्त विधेय में विश्लेषणात्मक क्रियाएँ या क्रियामूलक समास (शुरू होना, शुरू करना, हल होना, हल करना, दिखाई देना, दिखाई पड़ना, नज़र आना आदि) आते हैं तो 'नहीं' लगा होता है : (क) विश्लेषणात्मक क्रिया के आगे—मैं किसी के अनुग्रह का दान नहीं ग्रहण करती (139, 134), एक भी सूरत नहीं नज़र आती···(66, 20); (ख) विश्लेषणात्मक क्रिया के नामिक और क्रिया-मूलक अंशों के बीच, जैसे, समस्या अभी तक हल नहीं हुई है (153, 6), दिखाई तो नहीं देता कोई (75, 175)। दोनों अंशों के बीच 'नहीं' के साथ 'तो' निपात का प्रयोग भी हो सकता है।

जटिल विधेय में, जिसके प्रकार्य में शब्द-समुदाय प्रयुक्त होता है, 'नहीं' निपात आता है : समस्त जटिल विधेय के आगे और शब्द-समुदाय के मुख्य घटक के आगे। पर यह उन्हीं विधेयों के लिए सच है जिनके आश्रित घटक तुमर्थ या सुपाइन से व्यक्त है :

विधेय के आगे	**मुख्य घटक के आगे**
मैं आपको व्यर्थ का आश्वासन नहीं देना चाहता···(66, 107), ···उसे बाहरी संसार की स्वतन्त्र हवा तक नहीं, लगने दी जाती (115, 405)।	क्या तुम मुझे इतना अधिकार देना नहीं चाहते (157, 34), उसने उसे नीचे से निकलने नहीं दिया (17, 221)।

यदि शब्द-समुदाय का आश्रित घटक संज्ञा या विशेषण से व्यक्त होता है तो 'नहीं' मुख्य घटक के आगे बहुधा आता है, जैसे, वे हाथ कोई काम नहीं करते हैं (29, 35), मैंने त्याग नहीं किया हैं ? (157, 33), ···सहायता सम्मिलित नहीं की गयी है (II, 10-2-1970, 7), ···लोगों ने पत्थर का प्रयोग बन्द नहीं किया था (2, 8)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा प्रयोग बहुत कम होता है जब 'नहीं' समस्त ऐसे विधेय के आगे आता हैं, जैसे, मगर साँप पर लाठी नहीं असर करती (66, 55)।

'नहीं' निपात सभी पक्षीय रचनाओं के साथ प्रयुक्त नहीं होता। नियमित रूप से वह संभाव्य, अवधारक, गुणार्थक और योग्यताबोधक पक्षों की क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होता है। जहाँ तक क्रिया के नित्यताबोधक एवं नित्यताबोधक पूर्ण-परिणामी पक्षों का प्रश्न है उनके साथ 'नहीं' का प्रयोग अपेक्षाकृत कम होता है। पक्षगत क्रियाओं के साथ प्रयुक्त करते हुए 'नहीं' आ सकता है: (क) समस्त पक्ष-गत क्रिया के आगे और (ख) रंजक क्रिया के आगे, जैसे:

संभाव्य पक्ष

सम्पूर्ण क्रिया के आगे	रंजक क्रिया के आगे
मैं नहीं चल सकती (103, 99), अभी निश्चय नहीं कर पाया हूँ (112, 116)।	उठ नहीं सकता ऐसी कोई बात नहीं··· (59, 102), वह उसे देख नहीं पाते (16, 159)।

अवधारक पक्ष

सम्पूर्ण क्रिया के आगे	रंजक क्रिया के आगे
तुमने उसका सिर क्यों नहीं नहीं काट (73, 160)।	तुमने उसे मार क्यों नहीं डाला (73, 160)।

गुणार्थक पक्ष

सम्पूर्ण क्रिया के आगे	रंजक क्रिया के आगे
नहीं है	क्रोध सँभाले नहीं सँभलता था (42, 10)।

योग्यताबोधक पक्ष

सम्पूर्ण क्रिया के आगे	रंजक क्रिया के आगे
आपकी बात नहीं टालते बनती (65, 67)।	नीलो से कुछ बोलते नहीं बना (59, 132)।

नित्यताबोधक पूर्णपरिणामी पक्ष

सम्पूर्ण क्रिया के आगे	रंजक क्रिया के आगे
लेकिन भ्रम का पर्दा अधिक दिनों नहीं पड़ा रह सका (59, 38)।	वह देर तक बैठा नहीं रह सका (8, 113)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाक्य के शुरू में आते हुए 'नहीं' व्यक्त करता है : (क) पूर्ववर्ती कथन का नकार 'किसी साधु की होगी'—'नहीं, वह नटिनी की छतरी है' (103, 107), 'आप तो चले जा रहे हैं'—'नहीं, अभी 15-20 मिनट तक रुक सकता हूँ' (65 37); (ख) वाक्य की नकारात्मक प्रकृति पर बल, जैसे, नहीं मालिक, मैंने नहीं सुना (103, 122), नहीं, यह बात नहीं है (71, 41)।

'जी नहीं' निपात नकारात्मक उत्तर का आदरसूचक पुट व्यक्त करता है, जैसे, जो नहीं, चला तो था नौ बजे रात को··· (73, 51), जी नहीं, रोता तो नहीं हूँ (66, 70)।

आग्रहपूर्ण नकार करते समय 'नहीं' की द्विरुक्ति होती है, जैसे, 'नहीं, नहीं', सुखराम ने काँपकर कहा (103, 422), मंसाराम ने झल्लाकर कहा : नहीं, नहीं, सौ बार नहीं (69, 101)।

नामिकीकृत निपात 'नहीं' प्रधान कर्म का प्रकार्य निभा सकता है, जैसे, भाभी ने 'नहीं' में सिर हिलाया (75, 111), अगर···मैं 'नहीं' करने को कहती··· (66, 27)।

'तो' निपात के साथ 'नहीं' विरोधदर्शक समुच्चयबोधक नहीं 'तो' और 'ही' निपात तथा क्रियाविशेषण 'केवल' के साथ संयुक्त समुच्चयबोधक का प्रथम घटक 'केवल ही नहीं' गठित करता है।

'नहीं' निपात 'कोई' और 'कुछ' सर्वनामों और सार्वनामिक क्रियाविशेषणों 'कभी' तथा 'कदापि' के साथ हिन्दी में अनुपस्थित नकारात्मक सर्वनामों एवं क्रियाविशेषणों का अभाव वाक्यगत साधन में पूरा करता है, जैसे, आज क्या है ? कुछ नहीं (69, 127), कौन है पागल ? कोई नहीं, कोई नहीं (103, 408), बिलकुल सामने तुम्हें कहीं नहीं गाँव मिलेगा (30, 128), मेरा बाप इस रास्ते को कभी नहीं कहता था (103, 120),···व्यापारी यह भूल कदापि नहीं करता (12, 352)।

कभी-कभी 'नहीं' सम्भावनार्थ एवं संकेतार्थ के रूपों के साथ आ सकता है, जैसे, धनाढ्य व्यक्तियों को भूमि नहीं बेची जाए (II, 10-2-1977, 18), रोऊँ नहीं ? (103, 85), ···तब भी वह शायद नया नहीं लगता (108, 19), जानता तो उधर ताकता ही नहीं (66, 35)।

'न' निपात सम्भावनार्थ में नकार व्यक्त करने वाला प्रमुख निपात है। 'नहीं' की अपेक्षा आज्ञार्थ में उसका प्रयोग भी अधिक अक्सर होता है।

निश्चयार्थ के वर्तमान काल में 'न' प्रथम एवं संतत कृदन्तों द्वारा अभिव्यक्त रूपों से प्रायः नहीं मिलता। वह बहुधा भूत एवं भविष्यत् काल के रूपों के साथ प्रयुक्त होता है। भविष्यत् काल में उसका प्रयोग 'नहीं' से कम नहीं होता, जैसे :

अपूर्ण भूत—···आदमी कुछ सुनता ही न था (66, 10);

सामान्य भूत—एक बर्तन तक न बचा (157, 41);

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्णतावाची वर्तमान--बाबू जी, विश्वास संसार से न लुप्त हुआ है··· (69, 101);

पूर्ण भूत—विमाता से उसे कोई प्यार मिला न था (66, 71);

अपूर्ण भविष्यत्—···देना न चाहते होंगे (69, 134);

पूर्ण भविष्यत्—···अभी बीस मिनट न गुज़रे होंगे कि···(69, 43);

सामान्य भविष्यत्—लेकिन घर किसी तरह भी न जाऊँगा (66, 100);

सरल विधेय में 'न' विधेय के आगे ही आता है, जैसे, यह नहीं हो सकता था कि वे न आयें (109, 44), मुंशीजी घर न आये (66, 111), महात्मा होता तो लोग मेरे पाँव न पूजते ? (103, 100), अब कभी इस घर में कदम न रखूँगा (66, 90)।

सरल नामिक विधेय में 'न' का प्रयोग नहीं होता।

संयुक्त क्रियामूलक विधेय में 'न' सम्पूर्ण विश्लेषणात्मक विधेय या संयोजक क्रिया के आगे आ सकता है, जैसे :

विधेय	**विधेय के आगे**	**संयोजक क्रिया के आगे**
कृदन्तीय-क्रियामूलक	···कहीं गजाधर न आता हो (73, 39);	···जिसके सम्बन्ध में शर्मा जी ने कुछ-न-कुछ पूछा न हो (73, 48);
कृदन्तीय-कृदन्तीय	सारी रात नींद ही न उतरी थी (58, 52);	भूरा उसे काटता न था (103, 109);
कृदन्तीय-क्रियामूलक कृदन्तीय	अभी बीस मिनट न गुज़रे होंगे कि···(69, 43)।	वे···डिब्बे तक पहुँचे भी न होंगे कि···(8, 36)।

सम्भावनार्थ एवं संकेतार्थ के संतत रूपों में 'न' आ सकता है : (क) सम्पूर्ण विश्लेषणात्मक विधेय के आगे—अगर जब वह इन दोनों कामों में से कोई भी न कर रही होती···(58, 132) और (ख) संतत कृदन्त के घटकों के बीच—···कहीं कोई देख न रहा हो (73, 48)।

संयुक्त नामिक विधेय में 'न' निपात भूत और भविष्यत् काल की संयोजक क्रियाओं से ही प्रयुक्त होता है और वर्तमान काल की संयोजक क्रिया के साथ कभी नहीं आता। 'न' नामिक अंश और संयोजक (अर्द्धसंयोजक) क्रिया के बीच लगा होता है, जैसे, चौथी बाज़ी का रंग अच्छा न था (157, 61), कोई जोगी भी समाधि में इतना एकाग्र न होता (157, 59)। ये उदाहरण जब 'न' सम्पूर्ण विधेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के आगे आता है अपेक्षाकृत कम मिलते हैं, जैसे, वार्षिक कर भी न वसूल होता था (157, 57), हाँ, अगर जगह न खाली हुई तो मजबूरी है (66, 62)।

अगर संयुक्त विधेय में विश्लेषणात्मक क्रियाएँ (क्रियामूलक समास) 'शुरू करना (होना)', 'दिखाई देना (पड़ना)', 'नज़र आना' आदि आती हैं तो 'न' निपात आ सकता है : (क) विश्लेषणात्मक क्रिया के आगे—मैं पाँच हज़ार से अधिक न खर्च करता (66, 11), लाख रुपये तो लाख जन्म में भी न जमा कर पाऊँगा (66, 19); (ख) इस क्रिया के नामिक और क्रियापरक अंशों के बीच—आदमी की सूरत नज़र न आती थी (24, 43), कानों से सुनायी न देता था (69, 66), मैं यह स्वीकार न करता था (24, 43)।

जटिल विधेय में, जो शब्द-समुदाय है और जिसका आश्रित घटक तुमर्थ और सुपाइन से व्यक्त है, 'न' निपात आ सकता है : (क) सम्पूर्ण जटिल विधेय के आगे—लाजवन्ती हेमराज को घर से बाहर न निकलने देती थी (139, 13), वह अपना रूप और यौवन उन्हें न दिखाना चाहती थी (66, 43); (ख) मुख्य घटक के आगे—द्रविड़ों ने···इनको सहसा घुसने न दिया (2, 13), बाबू उदयभानु लाल थे तो वकील, पर संचय करना न जानते थे (66, 3); (ग) मुख्य घटक की संयोजक क्रिया के आगे (बहुत कम), —मोल-तोल तो उसे करने आता न था (7, 9)।

अगर जटिल विधेय का आश्रित घटक संज्ञा या विशेषण द्वारा व्यक्त है तो 'न' निपात मुख्य घटक के आगे आता है, जैसे, ···जिसमें उसका विष समस्त शरीर को नष्ट न कर डाले (72, 106), ···उसका पाठ कभी न करते थे (69, 85)।

'न' निपात सभी पक्षीय रचनाओं में प्रयुक्त नहीं होता। नियमित रूप से वह सम्भाव्य, अवधारक, गुणार्थक और योग्यताबोधक पक्षों की पक्षीय क्रियाओं के साथ आता है। तब वह समस्त पक्षीय क्रिया या इसकी रंजक क्रिया के आगे लगा होता है, जैसे :

सम्भाव्य पक्ष

समस्त क्रिया के आगे	रंजक क्रिया के आगे
मैं ज़्यादा नहीं देख सका (103, 110);	मैं उन्हें पा न सका सच ! (157, 39);

अवधारक पक्ष

···कहीं रास्ते में सवार उसे न पकड़ ले (69, 176);	तूने जगा क्यों न दिया (103, 232);

योग्यताबोधक पक्ष

तुमसे न कहते बने···(69, 133);	कुछ लिखते न बनता कि··· (72, 275);

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुणार्थक पक्ष

नहीं है। बोरा बहुत भारी था, उठाये न उठा (80, 30)।

कभी-कभी नित्यताबोधक पूर्णपरिणामी पक्ष की क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होते हुए 'न' निपात रंजक क्रिया के आगे बहुधा आता है, जैसे, माँ की आवाज़ का दर्द चेतन से छिपा न रहा था (17, 71), दुलहन लेटी न रह सकी (13, 94)।

'न' निपात मुख्य निपात है जो क्रिया के अविधेय रूपों से प्रयुक्त होता है, जो वाक्य के विभिन्न अंगों के रूप में आते हैं, इनमें हैं: (1) तुमर्थ—ऊपर से न रोना लच्छू की पुरानी ज़िद रही है (1, 102); (2) कृदन्त (नियमतः 'वाला' रूपिम कृदन्त)—…अपने को न सँभाल सकने वाली यह औरत दो हज़ार कैसे ठुकराये दे रही है! (66, 29); (3) क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त—मैंने काम न चलते देखकर…कहा (103, 124), बहस का अन्त होना न देखकर…(97, 70), …पर माली के न रहते हुए भी उन्हें तोड़ नहीं सकता (73, 42)।

जहाँ तक सुपाइन का प्रश्न है तो इसके साथ 'न' केवल विधेय में प्रयुक्त होता है, जैसे, मैंने तो इसलिए कहा था कि पीछे से तुम यह न कहने लगो…(69, 67)।

वाक्य के शुरू में 'न' निपात अपेक्षाकृत काम आता है। साथ ही उसकी नकार करने की क्षमता भी कम है, जैसे, न, मैं नहीं चढ़ूँगी (103, 100), न! गोली न मारूँ (65, 268), न बेटा, कचहरी जाना तो अच्छा नहीं (30, 19), न-न, साँझ हो चुकी है (147, 10)।

नामिकीकृत 'न' निपात वाक्य के निम्न अंगों के रूप में आता है: (क) उद्देश्य—अरुणा देवी को दिलीप की 'न' ने तो आहत किया ही था…(3, 71); (घ) कर्म—वह 'न' नहीं कर सकती (161, 46)। जैसा कि उदाहरणों से स्पष्ट है, 'न' स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होती है।

'कि' समुच्चयबोधक के साथ 'न' निपात विरोधदर्शक समुच्चयबोधक बनाता है, 'केवल' (या 'सिर्फ़') क्रियाविशेषणों के साथ 'न' निपात संयुक्त समुच्चयबोधक 'न केवल (सिर्फ़)' का पहला अर्थ गठित करता है। 'न' की पृथक् द्विरुक्ति संयोजक समुच्चयबोधक के रूप में आती है।

'कोई' एवं 'कुछ' सर्वनामों तथा सार्वनामिक क्रियाविशेषणों 'कभी' एवं 'कहीं' के साथ संलग्न होकर आधुनिक हिन्दी में अनुपस्थित नकारात्मक सर्वनामों और क्रियाविशेषणों का अभाव पूरा करता है, जैसे, कोई न खाए तो क्या मुँह में डाल दूँ? (66, 68), मेरी समझ में उस समय कुछ भी न आया (69, 81), अब तुम्हारे घर कभी न जाऊँगी (66, 142), अब कहीं न जाऊँगी (66, 13), किन्तु वहाँ वह कदापि न गयी होगी (73, 46)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'न' निपात सर्वनामों, क्रियाविशेषणों एवं संख्यांकों की द्विरुक्ति में संयोजक तत्त्व के रूप में आता है: कोई-न-कोई, कुछ-न-कुछ, कभी-न-कभी, एक-न-एक, जैसे, हम लोगों में से कोई-न-कोई उसे ज़रूर खा लेता (108, 75), वे चाहते तो कुछ-न-कुछ लूट सकते थे (75, 178), ···एक-न-एक दिन ये गैसें ज़रूर मिलकर पानी बन जाएँगी (78, 118)।

'न' निपात सरल क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों की द्विरुक्ति में प्रयुक्त होता है, जैसे, ···मित्र के पास पहुँचते-न-पहुँचते बोले (20, 10)।

नकारात्मक निपात 'मत' केवल आज्ञार्थ में ही आता है, जैसे, (1) ऐसा मत कर! (103, 463); (2) बको मत (17, 114); (3) हँसिये मत दारोगा जी (65, 224); (4) बिना कहे मत मरियो (44, 79); (5) रास्ते में मत रोना (65, 238); (6) ऐसा मत कीजिएगा (52, 73)। जैसा कि उदाहरणों से स्पष्ट है 'मत' निपात विधेय के आगे और बाद में आ सकता है।

वाक्यगत निपातों में जो व्यापार के लिए प्रेरणा देते हैं या पारस्परिक व्यापार के लिए आमन्त्रण देते हैं वे निपात आते हैं जो 'चलना', 'लेना', 'लाना' और 'आना' के आज्ञार्थक रूपों के समाकार हैं। निपातों के अर्थ में नियमतः आज्ञार्थक के तीन रूप प्रयुक्त होते हैं—धातु का समाकार, 'ओ' और 'इये' के रूप, जैसे :

क्रिया	धातु का समाकार	'ओ' का रूप	'इये' का रूप
चलना	चल हम गाम लौट चलें अपने (103, 45);	चलो बाज़ार होते आयें (65, 169);	चलिए, मैं आपको ले चलूँ (136, 12);
लेना	ले, तो फिर यहीं मर (69, 190);	अच्छा लो, जाती हूँ (73, 35);	तो लीजिये जाता हूँ (65, 217);
लाना	ला मुझे हाथ दे (103, 255);	लाओ तुम्हारे होंठ चूम लूँ (142, 89);	अच्छा तो लाइये मेरे रुपये दिलवाइये (73, 29);
आना	आ मार (103, 439)।	आओ मिस्टर चेतन चलें (17, 54)।	आइये कुछ दूर साथ ही चलिये (73, 59)।

वाक्यगत निपात के रूप में जो व्यापार के सिलसिले में चेतावनी देता है 'देखना' क्रिया के आज्ञार्थक रूपों (प्रायः सब) के समाकार निपात आते हैं, जैसे, देखो, तेज़ टाँगा लायो (54, 6), देखो किसी को मारना नहीं (103, 411), देखिये न, मेरे ऊपर भी तो अफ़सर हैं (147, 50), देख लीजियेगा वह अवश्य धोखा देगी (73, 68), तुम देख लेना, मैं उन्हें खींच लाऊँगी (73, 205)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसा कि उदाहरणों से स्पष्ट है, वाक्यगत निपात सम्भावनार्थ एवं संकेतार्थ के सूचक हैं। निश्चयार्थ के भविष्यत् काल या निकट भविष्य के अर्थ में वर्तमान अपूर्णतावाची काल के रूप कहीं कम आते हैं।

विस्मयबोधक-प्रश्नार्थक निपात 'चलो' व्यापार के होने में संदिग्धता या व्यापार के प्रति नकारात्मक व्यवहार व्यक्त करता है, जैसे, भला हम आप से बहस कर सकते हैं? (80, 59), अजी नहीं, तीन सेर भला क्या खा जाएगा! (66, 32), तू क्या समझेगा भला? (103, 79), वह तुम्हें भला क्या पढ़ाता होगा (66, 65), यह भला कहाँ का इन्साफ़ है? (1, 31)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विस्मयादिबोधक

विस्मयादिबोधकों की मुख्य कोटिगत विशेषता यह है कि वे विभिन्न ऐसे भावों को व्यक्त कर सकते हैं जो उद्घोषित विचार के प्रति वक्ता का दृष्टिकोण दर्शाते हैं या व्यापार के लिए प्रेरणा देते हैं। विस्मयादिबोधक कोई भी व्याकरणिक सम्बन्ध व्यक्त नहीं करते और वाक्यगत बन्धनों से स्वतन्त्र होते हैं।

आधुनिक हिन्दी में व्युत्पत्ति की दृष्टि से शुद्ध (अव्युत्पन्न) विस्मयादिबोधक (ओह, ओ-हो, ऊँहूँ, धत, अरे आदि) और व्युत्पन्न विस्मयादिबोधक हैं जो बने हैं: (क) संज्ञाओं से—राम-राम, बाप रे; (ख) विशेषणों से—अच्छा, ख़ैर; (ग) सर्वनामों से—क्या; (घ) क्रियाओं से—हट यार; (च) क्रियाविशेषणों से—ख़ूब।

संरचना की दृष्टि से विस्मयादिबोधकों के दो भेद हैं: (1) सरल जो एक ही शब्द से बने हैं, जैसे, अरे, वाह, शाबाश, उह और (2) संयुक्त, जो दो शब्दों से बने हैं, जैसे, बाप रे, दैया रे दैया, हाय राम, हे भगवान !

वाक्य में अपनी स्थिति के अनुसार विस्मयादिबोधक हो सकते हैं: (क) एकहरे —अरे, ओफ़, ओहो, हाय और (ख) दोहरे—छिः-छिः, हूँ-हूँ, तोबा-तोबा।

अर्थ के अनुसार विस्मयादिबोधक दो असमान श्रेणियों में विभक्त हैं: (क) वे, जो व्यापार के प्रति भावमय रुख़ व्यक्त करते हैं और (ख) वे, जो व्यापार के लिए प्रेरणा देते हैं (बहुत कम)।

पहली श्रेणी के विस्मयादिबोधकों के अपने भेद हैं जो व्यक्त करते हैं:

(1) विस्मय, आश्चर्य—ओ, ओह, ओहो, हाय, हो, आहा, क्या, वाह, अरे आदि, जैसे: आँय, यह कैसी बात है? (4, 25), अख़्वाह, आप हैं (32, 83), क्या?···पिता ऐसे चीख पड़े कि···(83, 109), हाय-हाय! मर्द होकर डरते हो? (66, 55), हे शंकर! आप ही इंस्पेक्टर साहब हैं (80, 116), बाप रे, बड़ी लड़ाका औरत है (103, 228), वाह, मैं तो मोटा हो गया हूँ (73, 99), 'अरे!' मंगू ने कहा, 'क्या हुआ?' (103, 171-172);

(2) अनुमोदन, हर्ष, उमंग, प्रशंसा—वाह-वाह, शाबाश, आहा, ओहो, ख़ूब,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह रे आदि, जैसे, वाह, क्या कहने इस मुहब्बत के ! (103, 70), शाबाश ! किसी औरत से मत कहना (34, 64), वाह रे कानपुर ! (52, 43), ख़ूब ! अन्धे को भी अँधेरे में दूर की सूझी (61, 120), वाह-वाह ! चतुर्वेदी जी, आपने गज़ब कर दिया ! (61, 70), वाव वा, वाह वा ! किन्ना सच्च आखिवाई, किन्ना सच्च ! (87, 141);

(3) खेद, दुःख, वेदना—ओह, हा, उफ़, ओफ़, शोक, अफ़सोस, हाय, आह आदि, जैसे, आह, आह राम ! तूने यह क्या कर दिया ? (83, 44), हाय रे, भारत के भाग्य (4, 98), आफ़ ! तुमसे तो बात करना मुश्किल है पूजन ! (83, 141), शोक ! आप आँखों से देख रहे हैं कि···(73, 68), अफ़सोस, मैं अधिक दिनों तक आपके यहाँ न रह सका (61, 58), हाँ, मेरी पच्चीस बरस की तपस्या निष्फल हो गयी (66, 15), हाय, कैसे, समझाऊँ ? (66, 77), उफ़, कितनी कटु और कठोर है यह दुनिया (161, 86);

(4) तिरस्कार, घृणा—छि, धिक, थू धिक्कार, उह आदि, जैसे, छिः, क्या कहता है (103, 189), उह ! क्या इसी के कारण उदास हो (1, 54), 'अरे जा', कजरी ने कहा, 'धिक तुझे' (103, 208);

(5) स्वीकार, सहमति—हूँ, अच्छा, खैर, हूँ आदि, जैसे, अच्छा, तो जा हाथ-मुँह धो ले (83, 108), खैर अब सब ठीक हो जाएगा बेटा (83, 108), सब लोगों ने समर्थन किया 'वाह ! ठीक-ठीक !' (96, 64), भाभी ! हूँ (75, 84);

(6) अस्वीकार, असहमति—ऊँहूँ, उह, हुश् आदि, जैसे, ऊँहूँ, उसके जाने की चिन्ता नहीं (83, 142), ऊँहूँ, अब नहीं, मेरा पेट बहुत भरा हुआ है (1, 127), हुश् नाव डूब जायेगी (30, 75);

(7) अभिवाद—नमस्ते, नमस्कार, प्रणाम, आदब अर्ज़, खुदा हाफ़िज़, राम-राम, सलाम आदि, जैसे, नमस्ते, नमस्ते जी (161, 32), नमस्कार अशोक बाबू (61, 119), आदाब अर्ज़, मुझे पहचाना ? (69, 106), 'अच्छा, प्रणाम', चतुर्वेदी जी ने कहा (61, 209), सलाम, साहब, सलाम (161, 36);

(8) धन्यवाद—धन्यवाद, शुक्रिया, जैसे, 'धन्यवाद', प्रभा ने···उत्तर दिया (96, 73), शुक्रिया, आपका एहसान कभी न भूलूंगी (34, 113);

(9) क्षमा की याचना—क्षमा (माफ़) करो (कीजिये), जैसे, क्षमा कीजिए, मैंने आपको पहचाना नहीं (61, 119), माफ़ करिये बाबूजी (61, 101);

(10) उत्तम शिष्टाचार—कृपया, मेहरबानी करके, जैसे, कृपया, अब नोट करें···(92, 374), क्या आप कृपा करके···इसका आधा रुपया हमारे पास भेजने की कृपा कर सकेंगे ? (92, 466-467);

(11) भय, आशंका—तोबा, हे भगवान, हे शंकर, हे राम आदि, जैसे, चोर-बाज़ारी का माल ? तोबा, तोबा (52, 38), भगवान न करे, कहीं ऐसा वक्त आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़े तो (83, 67), हरे शिव···हरे शिव, क्या मैं कभी झूठ शब्द उच्चारण करता हूँ (80, 20), हे शिव, हे शिव ! यह चमकती तलवार ! (80, 116);

(12) भावमय पुकार—ज़िन्दाबाद, मुर्दाबाद, चिरंजीव, जैसे, जुलूस का नारा अब 'ज़िन्दाबाद' या 'मुर्दाबाद' अब नहीं होता (I, 15-12-1990, 52)।

दूसरी श्रेणी के विस्मयादिबोधकों के अपने भेद हैं, जो व्यक्त करते हैं :

(1) सम्बोधन—रे, री, अरे; अजी, हे, अरी, ओ, आदि, जैसे, क्यों रे, तुझे कोई हत्या लगी है क्या···(83, 86), देख री, तू नीचे बैठ (75, 126), और यह क्या हुआ है बे ? (83, 121), अरे भई (83, 36), अरे बहू (83, 47), अरी, तू भी आ (83, 133), री पाली ! (75, 63), अबे क्या बकता है यह ? (103, 224), अजी आपसे एक खास बात कहनी है (73, 59);

(2) निष्कासन—धत्, हट, दुत, जैसे, धत् ! सभी ने एक साथ उसको दुरदुरा दिया (52, 57), दुत ! जाओ भय्या (83, 131), सदन ने ज़ोर से डाँटा, धत् (73, 46), अरे, हट ! (75, 39);

(3) चेतावनी—सावधान, खबरदार, होशियार, जैसे, 'ख़बरदार !' बोहरा ने चिल्लाया (102, 132), खबरदार ! शोर न मचाओ (61, 172);

(4) विभिन्न आह्वान जिनमें हैं : (क) युद्धघोष, जैसे, हर-हर महादेव ! (4, 147), जिहादियों ने 'अल्लाहो अकबर हाँक' लगायी (69, 178); (ख) चुप्पी का आह्वान, जैसे, चुप, लछमा ने उसे डाँट दिया (52, 84), खामोश ! बको मत ! (80, 122), 'चुप-चुप, शी-शी', बद्रीप्रसाद ने अपने मुँह के सामने दाहिने हाथ की अँगुली खड़ी करते हुए कहा (80, 43); (ग) दुहाई की पुकार, त्राहि।

जैसा कि उदाहरणों से स्पष्ट है, विस्मयादिबोधक वाक्यविन्यास की दृष्टि से तटस्थ तत्त्व हैं। वाक्य में इनका प्रकार्य संबोधन से मिलता-जुलता है। अपवाद के रूप में कुछ ऐसे विस्मयादिबोधक हैं जो नामिकीकृत होकर व्यापार के शाब्दिक भरक की हैसियत से प्रयुक्त हो सकते हैं, जैसे, ज़रा-सी बात के लिए आप इतनी हाय-हाय मचा रहे हैं (73, 92), गाँव भर में थू-थू करा दिया (83, 146), ··· ओहो हो करके चिल्ला उठता था (66, 95), खड़े 'हूँ-हूँ' करते रहे (66, 173)। कुछ नामिकीकृत विस्मयादिबोधक उद्देश्य का प्रकार निभा सकते हैं, जैसे, धिक्कार है आपको (2, 443), धिक तुझे (103, 208), तोबा है ऐसी डिमोक्रमी से ! (61, 263)।

कुछ विस्मयादिबोधक सम्पूर्ण उपवाक्यों का स्थान ले सकते हैं, जैसे, कहने लगी कि ख़ैर ! (24, 118), उसने ठण्डी साँस भरी, फिर दिल से अपने विचार किया कि अफ़सोस ! (24, 6)।

अनुकरण शब्द विस्मयादिबोधकों, जो अभिधान प्रकार्य नहीं करते, और संज्ञाओं के बीच का स्थान लेते हैं, जो, एक ओर से, विस्मयादिबोधकों की भाँति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थवाचक अर्थ से वंचित हैं, या जो दूसरी ओर से लिंग की व्याकरणिक कोटि अपनाते हैं। इतना ही नहीं, कुछ अनुकरण शब्द शब्दनिर्माणकारी क्षमता भी रखते हैं।

अनुकरण शब्दों के तीन भेद हैं : (1) शब्द जो ठोस भौतिक पदार्थों की आवाज़ की नकल करते हैं, जैसे, बूँदें टप-टप पड़ने लगीं (96, 50), छप···छप···छप··· गुसाईं पानी के गुल के अन्दर लगा (52, 73), 'फट-फटा-फट !' अचानक एक सिख ने मास्केट से फ़ायर किया (80, 64), 'छक-छक' उसने एकदम चाकू से चित्र को दो-तीन स्थानों से काट डाला (30, 126), 'खट-खट-खट' किसी ने दरवाज़ा खटखटाया (80, 103), उसके दिमाग़ में भी घण्टी की अनवरत ध्वनि टन-टन-टन-टन बज रही थी (80, 102), छिचछिर-छिचछिर की आवाज़ के साथ मथानी पानी को काट रही थी (52, 74); (2) शब्द जो पक्षियों एवं पशुओं की आवाज़ की नकल करते हैं, जैसे, काँव-काँव ! कहीं कौवे बोलने लगे (108, 102), इन वृक्षों की छाया में उनकी बकरियाँ मैं-मैं करतीं या मुरगियाँ कुड़कुड़ातीं (75, 88), उसके बैलों ने बारी-बारी से हूँक-हूँक करके कुछ कहा (52, 48), गुलटुम ने कहा, 'चूँ चूँ चिड़ निड़ चूँ चूँ' (30, 88), गीदड़ों की हुआँ हुआँ कर्कश स्वर में गूँजती (103, 191); (3) पदार्थवाचक अर्थ से वंचित शब्द जो मनुष्य के भाव-व्यंजना से सम्बन्ध रखते हैं, जैसे, हा-हा-हा-हा (4, 57). ही-ही-ही··· साहब···मैं कुछ नहीं जानता (80, 22), गुसाईं 'हो-हो' करके खोखली हँसी हँस रहा था (52, 85)।

जैसा कि ऊपर अंकित था कुछ अनुकरण शब्दों के आधार पर नये शब्द बन सकते हैं। वे सब क्रियाएँ ही क्रियाएँ हैं, जैसे :

किच-किच स्त्री०—किचकिचाना	खटखट स्त्री०—खटखटाना
गुड़-गुड़ स्त्री०—गुड़गुड़ाना	छटपट पु०—छटपटाना
छपछप स्त्री०—छपछपाना	झनझन स्त्री०—झनझनाना
टनटन स्त्री०—टनटनाना	बड़बड़ स्त्री०—बड़बड़ाना
हींस स्त्री०—हींसना	हुआँ-हुआँ—हुआना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट

पारिभाषिक शब्दावली

अन्तरित	distant, non-contiguous
अन्तर्भावी	inclusive
अन्त्यलुप्त	apocopated
अन्त्यलोप	apocope
अंशतः उद्देश्य	quasi-subject
अकर्मक	(1) intransitive, (2) objectless
अकर्मकता	intransitivity
अकार्त्रिक	subjectless
अखण्ड क्रियार्थक इकाई	verbal unit
अचिह्नित	unmarked
अनन्वित	uncoordinated
अनावर्ती	unrepeated
अनाश्रित	independent
अनाश्रितता	autonomy
अनियमित	irregular
अनिर्दिष्ट काल	aorist
अनिश्चित भूत	aorist
अनुक्रम	sequence
अनुमतिवाचक	concessive
अनुवर्ती	consequent
अन्योन्याश्रित	interdependent
अन्वय	(1) agreement, (2) concordance
अन्वादेशक	anaphoric

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्वित	coordinated
अन्विति	(1) agreement, (2) concord
अपूर्ण	incomplete, imperfective
अपूर्णता	incompletability
अपूर्णतावाची	imperfective
अपूर्णसूचक क्रिया	verb of incomplete predication
अप्रचलित	fossilized
अप्रत्यक्ष	indirect
अप्रत्यक्ष कर्तृकारक	ergative (case)
अप्रयुक्त (शब्द)	archaic (word)
अमूर्त	abstract
अर्थ-पूरक	semantic complement (filling)
अर्थपूर्ण	autonomous
अर्थ-लुप्त	desemantised
अर्थ-लोप	desemantisation
अर्थविज्ञान	semantics
अर्थसूचक	semantic indicator
अर्द्धविकारी	semi-inflected
अर्द्धसंयोजक	semi-copula
अर्द्धस्वतन्त्र	semi-independent
अर्द्धसहायक	semi-auxiliary
अवधारक (पक्ष)	intensive (aspect)
अवधारणबोधक (पक्ष)	intensive (aspect)
अवधारणा	intensity
अवश्यकताबोधक	debitive
अवस्था	state
अवास्तविक	(1) unreal, (2) non-actual
अवास्ताविकता	unreality
अविकारी	(1) indeclinable, (2) invariable
अविकारी क्रियात्मक संज्ञा	supine
अविकारी तुमर्थ	supiue
अविधेय क्रियार्थक वाक्यांश (शब्द-समूह)	non-finite verb form
अवैयक्तिक	impersonal
अव्याकरणिक	non-grammatical, agrammar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अव्याकरणिकता	agrammatism
असमापक	non-terminative
असीमित	unlocalized (time)
अस्थानीयकृत	unlocalized
अस्थायी	temporary
आज्ञार्थक उपदेशवाचक	imperative-preceptive
आज्ञार्थक निवेदनवाचक	imperative pleading
आत्मार्थक	reflexive
आत्मार्थकता	reflexity
आदेश (रूप)	substitute
आनुवंशिक	genetic
आभ्यासिक	habitual
आवर्ती	recurrent, recursive
आसन्न भूत	present perfect
इच्छाबोधक	intentive, volitive
उक्ति का क्षण	moment of speech
उत्तरकालीनता	posteriority
उद्देश्यरहित	subjectless
उद्देश्यवाचक	purpose
उद्देश्यहीन (वाक्य)	subjectless
उपसर्ग	prefix
उपलक्षित	implied
उपाधि	condition
उभयलिंग	epicene
एककालिक	synchronic
एक धातु का	same stem
एकमूलीय	single root, cognate
एकरूपता	identity
एकरूपी	non-varying
एकवचन मात्र	singularia tantum
एकांगी	mononuclear, one-member

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथन का क्षण	moment of speech
करण (कारक)	instrumental
(करण) विध्यर्थक (पक्ष)	(instrumental) potential (aspect)
कर्ता	agent
कर्तरि प्रयोग (voice)	active
कर्तृकारक	(1) direct, nominative (case), (2) active (case)
कर्तृगामी	reflexive
कर्तृगामी कर्मवाच्य	passive-reflexive
कर्तृवाचक	(1) agent, (2) active (voice)
कर्तृवाच्य	active (voice)
कर्तृविभक्ति	active (ending)
कर्तृहीन	subjectless
कर्महीन	objectless
कल्पित	implied
कालक्रमिक	diachronic
काल-क्षण	moment of time
काल-खण्ड	piece of time
कालदोष	anachronism
कालदोषी	anachronic
कालनिरपेक्ष	(1) unlocalized (of time), (2) non-temporal
काल-मर्यादा	time limit
कालवाचक	temporal, of time
काल-संकलन	unity of time
कालसापेक्षता	temporality
कालान्तर	interval
कालान्विति	unity of time
कालावधि	period, time limit
काल्पनिक	hypothetical
कृदन्तपरक	participial
कृदन्तीकरण	participialization
कोटि	category

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोटिगत	categoric
कोशगत	lexical
कोशीय	lexical
क्रियाकरण	verbalization
क्रिया-नामिक वाक्यांश	non-finite verb form
क्रियाप्रधान	verbal
क्रियामूलक	verbal
क्रियारूप	conjugation
क्रियार्थक	verbal
क्रियार्थक संज्ञा	infinitive, verbal-noun
क्रियाविशेषणात्मक	adverbial
क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त	adverbial participle
क्रियाविशेषणात्मक विशेषण	adverbial adjunct
क्रियाविशेषणीकरण	adverbialisation
क्रियाविशेषणीकृत	adverbialized
क्रिया-व्युत्पन्न	deverbative
क्रिया-साधित	deverbative
क्षण	moment
गुणवाचक	qualitative
गुणात्मक	qualitative
गुणार्थक	connotative
गौण	secondary
घटक	component
घटकांश	consituent
घटमान	progressive
घटमान-पूर्णपरिणामी	progressive-terminative
चिह्निक	marker
जटिल	complex
तिङन्ती	conjugated

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तद्‌रूप	identical
तिनांगी	three-member
तुमर्थ	infinitive
तुलनात्मक	comparative
त्रिघटकीय	three-component
दुअंगी	two-member
दूरवर्ती	distant, non-contiguous
दो-अंगी	binominal
द्रव्यवाचक	material
द्वि-अंगी	two-member
द्विघटकीय	bicomponental
द्वितत्त्वी	binominal
द्वित्तक	doublet
धातु	stem
धातुरूपी क्रिया	stem verb
नवरचना	innovation
नामजात	deneminative
नामधातुज	denominative
नामबोधक संयुक्त क्रिया	compound denominative
नामिक	nominal
नामिकीकृत	substantivized
नामिकीकरण	substantivization
नासिकीकरण	nasalization
नासिकीकृत	nasalized
निजवाचक	reflexive
निजवाचक कर्मवाच्य	passive reflexive
नित्यताबोधक	continuous
नित्यताबोधक सीमित	continuous limiting
नित्यताबोधक पूर्णपरिणामी	continuous-terminative
नित्यसम्बन्धी	correlative
निपात	particle

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निपात-विशेषक	modifying particle
नियंत्रक	determinative
नियंत्रण	government
नियमन	government
नियमित	(1) regular, (2) strong
नियमित आवर्ती	regular repetition
नियमित रूप से आवर्ती अपूर्ण काल	regular recurrent imperfect
नियमितता	regularity
नियामक	governing member
निरपेक्ष	absolute
निरपेक्ष रचना	absolute construction
निर्णायक	determinant
निर्धारक	determinant
निर्धारित	determined
निश्चयात्मक	affirmative
निषेध	prohibition, negation
निषेधात्मक	negative
निष्पक्ष	non-aspect
निहितार्थ	implieation
पक्ष	aspect
पद	word form, inflected word
पदबन्ध	phrase
पदबन्ध संरचना	phrase structure
पदार्थवाचक	material
परप्रत्यय	postfix
परस्परावाद	traditionalism
परवर्तिता	posteriority
परसर्गरहित	postpositionless
परसर्गहीन	postpositionless
परसर्गीय	postpositional
पूर्ववर्तिता	anteriority
पूर्ववर्ती	anterior
पूर्ववर्ती सर्वनाम	antecedent

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वस्थान	anterior position, anteriority
पूर्वस्थानीय	anterior (of position)
पृथक्कृत	isolated
पौन: पुनिक पक्ष	frequentative aspect
पौन: पुन्य पक्ष	frequentative aspect
प्रकार	aspect
प्रकार-सम्बन्धी	aspectual
प्रकारता	modality
प्रकार्य	fuction
प्रकार्यात्मक	fuctional
प्रक्रिया	process
प्रक्रियात्मकता	processuality
प्रतियोग	opposition
प्रत्यक्ष	direct
प्रत्यक्षीकरण	actualization
प्रत्यय	affix
प्रत्यययोजन	affixation
प्रभावी	resultative
प्रभावी/प्रभावक पक्ष	effective aspect
प्रसंग	context
प्राकारिक	aspectual
प्राकारिकता	aspectuality
प्रातिपदिक	stem
प्रातिबन्धिक	conditional
प्रासंगिक	occasional
फ़ार्मेंट	formant
वहुघटक	multicomponent
बहुप्राकारिक	multi-aspectual
बहुरूपी परिवर्तन	varying change
वहुवचन मात्र	pluralin tantum
बहुविश्लेषणात्मक	polyanalytical
बहुवर्धक	polysemantic

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाववाचक	(1) abstract,
	(2) impersonal
भावबोधक	impersonal
भाववाच्य	impersonal voice
भावार्थक वृत्ति	impersonal mood
भावे प्रयोग	impersonal voice
भाषार्थी	linguistic
भाषागत	linguistic
भाषिक	linguistic
भिन्न मूलों का	of different roots
भिन्न रूप	variant
भिन्नार्थक	of different meaning
मात्रिक	quantitative
मानकित	standardised
मानकीकृत	standardised
मार्कर	marker
मिश्रण	contamination
मूर्त	concrete
मूलाधार	underlying
योग्यताबोधक (पक्ष)	possibilative (aspect)
योजक	copula
रंजक	modifier verb
रचना	(1) structure,
	(2) construction
रचनांतरण	transformation
रचनांतरणपरक	transformational
रूप-तालिका	paradigm
रूपनिर्माणविषयक	formbuilding
रूपप्रक्रिया	(1) accidence, (2) morphology
रूपप्रक्रियात्मक	morphological
रूपबद्ध	formal

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपविज्ञान	morphology
रूपशब्दीय	lexical-morphological
रूपस्वनप्रक्रिया	morphophonology
रूपस्वनप्रक्रियात्मक	morphophonological
रूपान्तर	(1) inflection, (2) variant
रूपात्मक	morphological
रूपात्मक-वाक्यविन्यासात्मक	morphological-syntactical
रूपावली	(1) paradigm, (2) accidence
लक्षण	marker
लक्षणरहित	unmarked
लक्षणान्वित	marked
लाक्षणिक	metaphorical
लुङ्लकार	aorist
लुप्त	elliptical
लोप	ellipsis
वर्णनात्मक	descriptive
वाक्यविन्यासात्मक	syntactic
वाक्यांश	phrase
वाक्यात्मक	syntactic
वास्तविक	actual
वास्तविकीकरण	actualization
विकल्पी	facultative, optional
विकार	modification
विकारक	modificator
विकारी	inflected
विकृत	inflected
विकृति	modification
विखण्डन	splitting
विध्यर्थक	potential
विधेय	predicate
विधेय क्रिया	finite verb
विधेयन	predication

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधेयवाचक	predicative
विभक्ति	inflexion
विभक्तिग्राही	flexible
विभक्तिपरक	inflexional
विभक्ति प्रत्यय	inflectional ending
विरोध	opposition
विवरणात्मक	narrative
विशेषक	(1) attributive, (2) modifier, (3) qualificative
विशेषक विधेय	qualificative predicate
विशेषण	(1) qualitative, (2) adjective
विशेषण-क्रियाविशेषण	adjective-adverb
विशेषता	attributiveness
विशेषणपरकता	attributiveness
विशेषणवाचक	attributive
विशेषणात्मक	attributive
विशेषणवाचक-कालवाचक	attributive-temporal
विशेषणात्मक-गुणवाचक	attributive-qualitative
विशेषणात्मकता	attributiveness
विशेषणीकृत	adjectivized
विशेषणीकरण	adjectivization
विश्लेषणात्मक	analytic
वृत्तित्व	modality
वृत्तिवाचक	modal
वृत्तिवाचक छाया	modal colour
वृत्तिवाचक झुकाव	modal trend
वैकल्पिक	facultative optional
व्यक्तिनिष्ठ वृत्तिवाचक	subjective modal
व्यक्तिवाचक (नाम)	proper (name)
व्याकरणिक	grammatical
व्याकरणिकीकरण	grammaticalization
व्याकरणिकीकृत	grammaticalized
व्याख्यात्मक	explanatory
व्यापार	action

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्युत्पन्न	derivative
शब्द-रूप	word-form
शब्द-समुदाय	word-combination, word-group
शब्द-समूह	word-combination, word-group
शब्दात	lexical
शब्दार्थक	semantic
शब्दार्थक सूचक	semantic indicator
शब्दिम	lexeme
शाब्दिक	lexical
शाब्दिक-आर्थिक	lexical-semantical
शाब्दिक-रूपप्रक्रियात्मक	lexical-morphological
शाब्दिक-वाक्यविन्यासात्मक	lexical-syntactical
शाब्दिक-व्याकरणिक	lexical-grammatical
श्रेणी	category
संकल्प	will
संकालिक	synchronic
संकेतवाचक	conditional, hypothetical
संघटक	component
संज्ञात्मक	substantival
संज्ञापरक	substantivized
संज्ञार्थक	substantival
संज्ञावाचक	nominal
संज्ञा-संलग्न	adnominal
संतत	durative, processive
सम्बन्ध	(1) combination, (2) relation
सम्बन्धवाचक	relative
सम्भवता	possibility
सम्भाव्य	potential
संयुक्त	(1) chmpound, (2) periphrastic

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोग	combination
संयोजक	(1) connecting, (2) copulative (3) conjunctive
संयोजकहीन समन्वय	parataxis
संयोजनक्षमता	valency
संयोजी	connected, conjunctive
संरचना	structure
संरचनात्मक	structural
संवर्ग	category
संश्लिष्ट	synthetic
संश्लेषणात्मक	synthetic
सजातीय	homogeneous
सन्निहित	contiguous
सप्रतिबन्ध	conditional
समक्षणिकता	simultaneity
समगम	homonym
समन्वयी	coordinating
समपाती	coincidental
समयनिरपेक्ष	non-temporal
समस्त	compound
समस्त क्रियार्थक	compound varbal
समस्त नामिक	compound nominal
समाकार	omoform
समानाधिकरण	(1) apposition, (2) coordination
समानाधिकरणिक	appositive
समानाधिकृत	coordinated
समान्येतर काल	secondary tense
समापक (पक्ष)	terminative (aspect)
समापक (रूप)	finite (form)
समापिका क्रिया	finite verb
समावेशक	incorporating
समावेशन	incorporation
समावेशी	inclusive
सम्मिलन	combination

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मिश्र	complex
सर्वसम	identical
सर्वादेश	suppletion
सर्वादेशी (रूप)	suppletive (form)
सहकारिता	simultaneity
सहकारी	formating
सहकालिक	simultaneous
सहकालिकता	simultaneity
सहसम्बन्धी	coorelative
सहायक	(1) accessory, (2) auxiliary
सांतत्य	duration
सांतत्वबोधक (पक्ष)	durative (aspect)
सांदर्भिक	contextual
साधक (कारक)	ergative (case)
साधित	derivative
सापेक्ष	relative
सामान्य भूत	(1) preterite, (2) aorist
सार्वनामिक विशेषण	pronominal adjective
सार्वनामिक संज्ञा	pronominal substantive
साव्यय	flexible
सिन्टेग्मी	syntagme
सुपाइन	supine
सुश्राव्य	suphonic
स्थानाश्रित	positional
स्थानीय	positional
स्थिति	(1) position, (2) situation
स्थितिक	situational
स्थितिपरक	stiuational
स्थैतिक	statical, static
स्वतः पदायोग्य	syncategorematic

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिक कृतियाँ, जिनसे उदाहरण लिये गये हैं

1. अमृतलाल नागर, अमृत और विष, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1966।
2. अवधबिहारी पाण्डेय, भारतवर्ष का इतिहास, नन्दकिशोर एण्ड संस, वाराणसी, 1960।
3. आचार्य चतुरसेन शास्त्री, धर्मपुत्र, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
4. आचार्य चतुरसेन शास्त्री, सोमनाथ, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
5. आचार्य चतुरसेन शास्त्री, हृदय की परख, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
6. ईसप कथा, हेमकुण्ट प्रेस, दिल्ली, 1962।
7. उपेन्द्रनाथ अश्क, 'अश्क' की श्रेष्ठ कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1961।
8. उपेन्द्रनाथ अश्क, आकाशचारी, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1966।
9. उपेन्द्रनाथ अश्क, कहानी लेखिका और जेहलम के सात पुल, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1957।
10. उपेन्द्रनाथ अश्क, काले साहब, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1961।
11. उपेन्द्रनाथ अश्क, गिरती दीवारें, नीलाभ प्रकाशन, प्रयाग, 1957।
12. उपेन्द्रनाथ अश्क, छींटे, भारती भण्डार, इलाहाबाद, संवत् 2006।
13. उपेन्द्रनाथ अश्क, पलंग, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1961।
14. उपेन्द्रनाथ अश्क, पिंजरा, नीलाभ प्रकाशन, प्रयाग, 1957।
15. उपेन्द्रनाथ अश्क, बर्फ़ का दर्द, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
16. उपेन्द्रनाथ अश्क, बैंगन का पौधा, इलाहाबाद, 1952।
17. उपेन्द्रनाथ अश्क, शहर में घूमता आईना, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1963।
18. उपेन्द्रनाथ अश्क, हिन्दी कहानियाँ और फ़ैशन, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1964।
19. कन्हैयालाल कपूर, गरम-गरम, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

20. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', बाजे पायलिया के घूँघरू, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, 1957।
21. कमलाप्रसाद 'कमल', आज के फूल, पंकज प्रकाशन, हैदराबाद, संवत् 2017।
22. कामताप्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संवत् 2009।
23. किशोरीदास वाजपेयी, हिन्दी शब्दानुशासन नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संवत् 2014।
24. किस्सा चार दरवेश, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1961।
25. किस्सा हातिमताई, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1961।
26. कुलभूषण, पगडण्डी और परछाइयाँ, दिल्ली, 1955।
27. कृशन चन्दर, एक गधे की आत्मकथा, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली, 1962।
28. कृशन चन्दर, एक वायलिन समन्दर के किनारे, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1962।
29. कृशन चन्दर, काँच के टुकड़े, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
30. कृशन चन्दर, कृशन चन्दर की श्रेष्ठ कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1961।
31. कृशन चन्दर, गद्दार, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
32. कृशन चन्दर, घूँघट में गोरी जले, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
33. कृष्णचन्द्र शर्मा 'भिक्खु', भंवरजाल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1962।
34. ख़्वाजा अहमद अब्बास, अँधेरा-उजाला, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
35. गुणाकर मुले, गणित की पहेलियाँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1961।
36. गुरुदत्त, वनवासी, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
37. गुलाब राय, हिन्दी लोकोक्तियाँ और मुहावरे, भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली, 1957।
38. चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, अशोक (नाटक), राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली।
39. जयशंकर प्रसाद, इन्द्रजाल, भारती भण्डार, इलाहाबाद, 1957।
40. जयशंकर प्रसाद, कामायनी, भारती भण्डार, इलाहाबाद, संवत् 2018।
41. जवाहरलाल नेहरू, भारत की बुनियादी एकता, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 1962।
42. जानने की बातें, दिल्ली, 1959।
43. जैन ज० च०, संस्कृति के चार अध्याय, नया पथ, अंक 8-9, 1957।
44. जैनेन्द्र कुमार, जैनेन्द्र की श्रेष्ठ कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1960।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

45. जैनेन्द्र कुमार, पूरा संग्रह, भाग 1, बनारस, 1956।
46. जैनेन्द्र कुमार, पूरा संग्रह, भाग 3, बनारस, 1956।
47. ठाकुर घनश्याम नारायण सिंह, पिंडारी, ठग और डाकू, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1962।
48. ताजवर सामरी, एक था शहर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1955।
49. नागार्जुन, बाबा बटेसरनाथ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1960।
50. नारायण सिंह, हमारे वृक्ष, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, दिल्ली, 1960।
51. निराला, काले कारनामे, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, 1960।
52. पाँच लम्बी कहानियाँ (कहानी-संग्रह), संग्रहकर्ता मोहन राकेश, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1960।
53. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', 'उग्र' की श्रेष्ठ कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1961।
54. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', सरकार तुम्हारी आँखों में, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1960।
55. पारिभाषिक शब्दकोश, सम्पादक मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, बनारस, 2010।
56. पारिभाषिक शब्द संग्रह, गवर्नमेंट ऑफ़ इण्डिया, 1962।
57. पूर्ण स्वाधीनता का घोषणापत्र, जनयुग विशेषांक, अंक 13-14, 1958।
58. पौ फटेगी··· (कहानी-संग्रह), भारतीय साहित्य सदन, नयी दिल्ली।
59. प्यारेलाल 'आवारा', दरारें, रूपसी प्रेस एवं प्रकाशन, इलाहाबाद, 1956।
60. प्रकाश दीक्षित, काठ के ताबूत और ज़िन्दा लाशें, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, 1960।
61. प्रतिनिधि हास्य कहानियाँ, सम्पादक—मनमोहन सरल : श्रीकृष्ण, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, 1960।
62. प्राचीन हिन्दी कविता, सम्पादक—गिरिराज किशोर, अम्बाशंकर नागर, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, 1958।
63. प्रेमचन्द, कफ़न, सरस्वती प्रेस बनारस, 1951।
64. प्रेमचन्द, कुछ विचार, सरस्वती प्रेस, बनारस, 1949।
65. प्रेमचन्द, गबन, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद।
66. प्रेमचन्द, निर्मला, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद।
67. प्रेमचन्द, प्रेमाश्रम, सरस्वती प्रेस, बनारस, 1952।
68. प्रेमचन्द मानसरोवर, भाग 4, सरस्वती प्रेस, बनारस, 1955।
69. प्रेमचन्द, मानसरोवर, भाग 7, सरस्वती प्रेस, बनारस, 1955।
70. प्रेमचन्द, सप्त सुमन, नया हिन्द प्रेस, इलाहाबाद, 1954।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

71. प्रेमचन्द, समर-यात्रा, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1953।
72. प्रेमचन्द, सेवा सदन, सरस्वती प्रेस, बनारस।
73. प्रेमचन्द, सेवा सदन, सरस्वती प्रेस, बनारस, 1962।
74. 'बच्चन', सिसिफल बरकस हनुमान, आजकल, अंक 11, 1965।
75. बलवन्त सिंह, रात, चोर और चांद, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1961।
76. बाबूलाल वर्मा, भारतीय जनता के स्वातन्त्र्य आन्दोलन की एक झाँकी, जनयुग विशेषांक, अंक 13-14, 1958।
77. बालमुकन्द 'अर्श' मलसियानी, मुहावरे और कहावतें, विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 1957।
78. बुख़ारी ए. एस., पतरस के मज़ामीन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1961।
79. ब्रजकिशोर नारायण, नाना की नज़र में, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1961।
80. भगवतस्वरूप चतुर्वेदी, चुम्बकों का घर, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1961।
81. भारत के तीर्थ-स्थान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1959।
82. भारत के त्योहार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1957।
83. भैरवप्रसाद गुप्त, गंगा मैया, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1960।
84. भोलानाथ तिवारी, भारतीय पौराणिक कथाएँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1961।
85. भोलानाथ तिवारी, हिन्दी मुहावरा कोश, किताब महल, इलाहाबाद, 1964।
86. भोलानाथ तिवारी, हिन्दी भाषा, किताब महल, इलाहाबाद, 1966।
87. मजुमदार प्र. क., समसामयिक बंगला साहित्य का असन्तुलित विवरण, नया पथ, अंक 8, 1957।
88. मारशौक ए., पृथ्वी और अन्तरिक्ष, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1961।
89. मुल्कराज आनन्द, हिन्दुस्तान की कहानी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1958।
90. मैथिलीशरण गुप्त, भारत भारती, आजकल, अंक 11, 1865।
91. यज्ञदत्त शर्मा, आदर्श पत्र-लेखन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, 1953।
92. यशपाल, जैनेन्द्रजी का जयवर्धन, नया पथ, अंक 2, 1958।
93. यशपाल, पूर्वी जर्मनी में, नया पथ, अंक 10, 1956।
94. यशपाल, उर्दू का विरोधी जिहाद, नया पथ, अंक 7, 1958।
95. यशपाल, यशपाल की श्रेष्ठ कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1960।
96. यशपाल, वे तूफ़ानी दिन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1969।
97. यशपाल, लेखकों की स्वतन्त्रता का प्रश्न, नया पथ, अंक 2, 1957।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

98. यशपाल जैन, रूस में छियालीस दिन, सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली।
99. यामिनीकान्त सोम, बच्चों के रवीन्द्रनाथ, कलकत्ता।
100. रघुवीरशरण गुप्ता, आधुनिक वाणिज्य प्रणाली, प्रथम भाग, दिल्ली, 1962।
101. रांगेय राघव, आग की प्यास, अशोक पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
102. रांगेय राघव, कब तक पुकारूँ? राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली, 1961।
103. राजीव सक्सेना, आधुनिक कविता की समस्याएँ, नया पथ, अंक 8-9, 1957।
104. राजीव सक्सेना, भारतीय जनता का महान् अभियान, जनयुग गणतन्त्र विशेषांक, 1958।
105. राजीव सक्सेना, विश्वशान्ति के संघर्ष की नयी मंज़िल, जनयुग गणतन्त्र विशेषांक, 1958।
106. राजेन्द्र यादव, अभिमन्यु की आत्महत्या, विश्व साहित्य, आगरा, 1959।
107. राजेन्द्र यादव, सारा आकाश, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1960।
108. राजेन्द्र यादव : मन्नू भण्डारी, अकेली, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
109. राजेन्द्र यादव : मन्नू भण्डारी, एक इंच मुस्कान, राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली, 1963।
110. राधाकृष्ण प्रसाद, हम सब गुनाहगार, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
111. रामकुमार, वापिसी, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
112. रामकुमार 'भ्रमर', बेगम और गुलाम, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, 1961।
113. रामचन्द्र वर्मा, अच्छी हिन्दी, साहित्य रत्नमाला, बनारस, 1952।
114. रामप्रसाद किंचलू, आधुनिक निबन्ध, राजकिशोर प्रकाशन, इलाहाबाद, 1963।
115. रामप्रसाद घिल्डियाल 'पहाड़ी', 'पहाड़ी' की श्रेष्ठ कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1961।
116. रामबहोरी शुक्ल : भगीरथ मिश्र, हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास, हिन्दी भवन, जालंधर और इलाहाबाद, 1956।
117. रामेश्वरी नेहरू, मानव-विकास की झलक, साहित्य केन्द्र, वाराणसी, 1962।
118. राहुल सांकृत्यायन, कप्तान लाल, राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली, 1961।
119. लक्ष्मीनारायण लाल, धरती की आँखें, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
120. विद्यानिवास मिश्र, आँगन का पंछी और बनजारा मन, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, 1962।
121. विनोबा, गीता-प्रवचन, सर्व सेवा संघ, वाराणसी, 1964।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

122. विमला कपूर, अजाने देशों में, साधना प्रकाशन, कानपुर, 1955।
123. विल्लम अग्रवाल, अमावस, अग्रवाल प्रिंटिंग प्रेस, फ़र्रुख़ाबाद।
124. विष्णु प्रभाकर, संघर्ष के बाद, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, 1953।
125. वृन्दावनलाल वर्मा, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, दिल्ली।
126. शचीरानी गुर्टू, विश्व की महान् महिलाएँ, अजमेर, 1955।
127. शिवनारायण श्रीवास्तव, हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार, सरस्वती मन्दिर, बनारस, 1949।
128. शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र', बहती गंगा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1961।
129. श्रीमद्भगवद्गीता, साधारण भाषा टीका सहित, गीता प्रेस, गोरखपुर, संवत् 2012।
130. संकेत (कहानी-संग्रह), इलाहाबाद।
131. संक्षिप्त तीसरी पंचवर्षीय योजना, योजना आयोग, भारत सरकार, दिल्ली, 1960।
132. सत्यदेव देराश्री, रघुराज सिंह दीक्षित, सरल अर्थशास्त्र प्रवेशिका, भाग 1, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, 1970।
133. सरल भारतीय अर्थशास्त्र, भारती निकेतन, दिल्ली, 1962।
134. सरहिन्दी आर. जे., हिन्दी मुहावरा-कोश, इलाहाबाद, 1963।
135. सआदत हसन मन्टो, मीना बाज़ार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1962।
136. सिंह आर. के., हास-परिहास, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
137. सिद्धनाथ सिंह, रामराज्य (नाटक), भारती ग्रन्थागार, वाराणसी, संवत् 2014।
138. सुदर्शन, तीर्थ-यात्रा, सरस्वती प्रेस, बनारस, 1951।
139. सैयद वारिस शाह, हीर-राँझा, अशोक पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
140. सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का कार्यक्रम, सोवियत भूमि पुस्तिका, दिल्ली, 1961।
141. हंसराज रहबर, आँके-बाँके, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1960।
142. हरिशंकर परसाई, रानी नागफनी की कहानी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1960।
143. हर्षदेव मालवीय, रूस की यात्रा, भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली, 1959।
144. हुकुम सिंह, आज का रूस, पंजाबी पब्लिशर्स, जालंधर और नयी दिल्ली, 1967।
145. हिन्दी शब्द सागर, मूल सम्पादक : श्यामसुन्दरदास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र-पत्रिकाएँ

I आजकल (पत्रिका)
II आर्थिक समीक्षा (पत्रिका)
III गवेषणा (पत्रिका)
IV जनयुग (समाचारपत्र)
V नई कहानियाँ (पत्रिका)
VI प्रकाशन समाचार
VII भारतीय समाचार (पत्रिका)
VIII भाषा (पत्रिका)
IX समन्वय (पत्रिका)
X स्वास्थ्य सुरक्षा (पर्ची)
XI हिन्दुस्तान (समाचारपत्र)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा-वैज्ञानिक कृतियाँ, जिनसे सहायता ली गयी है

1. अम्बाप्रसाद 'सुमन', आधुनिक ब्रजभाषा में संयुक्त क्रियाओं का स्वरूप, भाषा, अंक 3, 1965।
2. अम्बाप्रसाद 'सुमन', हिन्दी और उसकी उपभाषाओं का स्वरूप, प्रयाग, 1966।
3. अम्बाप्रसाद 'सुमन', हिन्दी की आकारान्त संज्ञाएँ और उनके विकल्प, भाषा, अंक 2, 1961।
4. अम्बाप्रसाद 'सुमन', हिन्दी के अनुस्वार-प्रयोग : सुझाव और समाधान, भाषा, अंक 3, 1968।
5. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, हिन्दी पर फ़ारसी का प्रभाव, प्रयाग, 2005।
6. अभिनव हिन्दी व्याकरण तथा निबन्ध रचना, आशा प्रकाशन गृह, दिल्ली, 1963।
7. आचार्य धर्मेन्द्र, विद्याभास्कर श्रुतिकान्त शास्त्री, आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना, देहरादून, 1951।
8. आनन्द जे. एच., हिन्दी भाषा का प्रथम व्याकरण, भाषा, अंक 1, 1963।
9. उदयनारायण तिवारी, हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास, प्रयाग, 2018।
10. उलत्सिफ़ेरोव ओ. गे., आधुनिक हिन्दी में वाक्यांश और उसके भेद, भाषा, अंक 4, 1963।
11. उलत्सिफ़ेरोव ओ. गे., हिन्दी में संश्लिष्ट समानाधिकरण वाक्य, भाषा, अंक 3, 1964।
12. ओमप्रकाश गुप्त, मुहावरा मीमांसा, पटना, 1960।
13. कपिलदेव द्विवेदी, अर्थविज्ञान और व्याकरणदर्शन, इलाहाबाद, 1951।
14. कमल मोहन, हिन्दी में ने, को, से, के द्वारा, के लिए, में, पर, का, की, के का प्रयोग, भाषा, अंक 4, 1968।
15. कामताप्रसाद गुरु, मध्य हिन्दी व्याकरण, काशी, 2022।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

16. कामताप्रसाद गुरु, संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण, काशी, 2013।
17. कामताप्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण, काशी, 2009।
18. काशीनाथ स्वामी सारंगमठ, 'ने'-दिव्यास्त्र, भाषा, अंक 2, 1963।
19. किशोरीदास वाजपेयी, अच्छी हिन्दी का नमूना, कलकत्ता, 1948।
20. किशोरीदास वाजपेयी, ब्रजभाषा का व्याकरण, प्रयाग, 1948।
21. किशोरीदास वाजपेयी, भारतीय भाषा विज्ञान, वाराणसी, 1959।
22. किशोरीदास वाजपेयी, राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण, इलाहाबाद, 1949।
23. किशोरीदास वाजपेयी, हिन्दी शब्दानुशासन, काशी, 2013।
24. कैलाशचन्द्र भाटिया, हिन्दी में अंग्रेज़ी आगत शब्दों का लिंग-निर्णय, भाषा, अंक 4, 1963।
25. कैलाशचन्द्र भाटिया, हिन्दी में बलाघात और अक्षर का सम्बन्ध, भाषा, अंक 2, 1967।
26. केशवदत्त मिश्र, हिन्दी के भाषाशास्त्रीय शोध-प्रबन्ध, भाषा, अंक 4, 1964।
27. कैरीयरज्ञ आज का हिन्दी व्याकरण तथा निबन्ध रचना, दिल्ली, 1959।
28. गोकुल प्रसाद शास्त्री, सरल संस्कृत व्याकरण, ग्वालियर, 1962।
29. गोपालचन्द्र वैद, व्याकरण-रत्न तथा रचना, जालंधर, दिल्ली, 1960।
30. गोपाललाल खन्ना, हिन्दी का सरल भाषा विज्ञान, बनारस, 2004।
31. गोर्युनोव व्ला. ई. 'जो' योजक शब्द द्वारा जुड़े विशेषण उपवाक्य सहित मिश्र वाक्यों का वर्गीकरण, भाषा, अंक 2, 1968।
32. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, पुरानी हिन्दी, द्वितीय संस्करण, बनारस, 2012।
33. चतुर्भुज सहाय, हिन्दी की क्रियाएं (प्रयोग आवृत्ति तथा रचना), केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 1968।
34. चतुर्भुज सहाय, हिन्दी क्रिया की काल-रचना, गवेषणा, अंक 4, 1964।
35. चतुर्भुज सहाय, हिन्दी के अव्यय वाक्यांश, आगरा, 1970।
36. चेर्नीशोव व्ला. अ. आधुनिक साहित्यिक हिन्दी के नामधातु और नामिक संयुक्त क्रियाएँ, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, अंक 1, 2014।
37. चेर्नीशोव व्ला. अ., समानाधिकरण, हिन्दी-अनुशीलन, अंक 1-2, 1960।
38. चेर्नीशोव व्ला. अ. हिन्दी के साधारण वाक्य में स्वतन्त्र कर्ता और असमापिका क्रिया वाले वाक्यांश, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, अंक 2-3-4, 2018।
39. जगन्नाथ वी. रा., हिन्दी परसर्ग, गवेषणा अंक 13, 1969।
40. जगदेव सिंह, हिन्दी क्रियापद, गवेषणा, अंक 6, 1965।
41. जयकृष्ण विद्यालंकार, हिन्दी क्रिया संरचना, गवेषणा, अंक 13, 1969।
42. जयकृष्ण विद्यालंकार, हिन्दी की क्रियापदों की संरचना, समन्वय, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, 1967-68।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

43. जयकृष्ण विद्यालंकार, हिन्दी में सम्बन्ध प्रत्यय, गवेषणा, अंक 3, 1964।
44. जयकृष्ण विद्यालंकार, हिन्दी व्याकरण ग्रन्थों की एक समीक्षा, गवेषणा, अंक 4 1964।
45. ज्ञानशंकर, हिन्दी की 'बनना' क्रिया, भाषा, अंक 3, 1969।
46. ज्ञानशंकर पाण्डेय, हिन्दी में संयुक्त क्रिया-अभिव्यक्ति की वैकालिक विद्या, भाषा, अंक 2, 1968।
47. दीमशित्स ज़. म., हिन्दी भाषा में आश्रित उपवाक्यों के भेद, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, अंक 1, काशी, 2019।
48. दीमशित्स ज़. म., हिन्दी भाषा में विधेयों का वर्गीकरण, हिन्दुस्तानी।
49. दीमशित्स ज़. म., हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा, दिल्ली, 1966।
50. दुनीचन्द, हिन्दी व्याकरण, होशियार, 1951।
51. देवीप्रसाद शर्मा, हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी, भाषा, अंक 3, 1969।
52. देवेन्द्रकुमार शास्त्री, शब्द-संरचना, भाषा, अंक 2, 1968।
53. द्वारिकानाथ तिवारी, हिन्दी में लिंग व्यवस्था, भाषा, अंक 4, 1966।
54. धीरेन्द्र वर्मा, ग्रामीण हिन्दी, इलाहाबाद, 1956।
55. धीरेन्द्र वर्मा, ब्रजभाषा व्याकरण, इलाहाबाद, 1954।
56. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी भाषा और लिपि, इलाहाबाद, 1962।
57. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी भाषा का इतिहास, पंचम संस्करण, इलाहाबाद, 1958।
58. नामवर सिंह, हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग, इलाहाबाद, 1961।
59. नेने गो. प., द्वारकादास वैद, रामनारायण तिवारी, हिन्दी व्याकरण और रचना (प्रवेशिका), बम्बई, 1966।
60. नेने गो. प. पटेल छ. का., रामनारायण तिवारी, हिन्दी व्याकरण और रचना, भाग 1-2-3-4, बम्बई, 1966।
61. पाण्डे, चन्द्रबली, राष्ट्रभाषा पर विचार, बनारस, 1951।
62. प्राचीन हिन्दी कविता, सम्पादक गिरिराजकिशोर, अम्बाशंलर नागर, अहमदाबाद, 1958।
63. फूलदेवसहाय वर्मा, हिन्दी में अपनाये गये अंग्रेज़ी शब्दों का लिंग-निर्णय, भाषा, अंक 4, दिल्ली, 1962।
64. बच्चूलाल अवस्थी 'ज्ञान', अनुस्वार का स्वरूप और प्रभावित विकार, भाषा, भाषा, अंक 3, दिल्ली, 1969।
65. बाबूराम सक्सेना, दक्खिनी हिन्दी, इलाहाबाद, 1951।
66. बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषा विज्ञान, इलाहाबाद, 1961।
67. बारान्निकोव प. अ., हिन्दी भाषा का इतिहास : काल-निर्धारण की समस्या, भाषा, अंक 2, 1961।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

68. बारान्निकोव प. अ., हिन्दी भाषा में संकर शब्द, भाषा, अंक 4, 1972, अंक 1, 1962।
69. वेस्क्रोवनी, हिन्दी में संयुक्त संज्ञार्थक धातुओं का प्रयोग, हिन्दी अनुशीलन, धीरेन्द्र वर्मा विशेषांक, प्रयाग, 1960।
70. बजरत्नदास, खड़ी बोली हिन्दी साहित्य का इतिहास, बनारस, 2009।
71. ब्रजवासीलाल श्रीवास्तव, विराम चिह्न और हिन्दी में उनका प्रयोग, भाषा, अंक 3, 1963।
72. भगवतीलाल, संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण : रस और अलंकार, वाराणसी, 1956।
73. भगीरथ मिश्र, काव्यशास्त्र, गोरखपुर, 1977।
74. भारत भूषण 'सरोज', श्रीमती सरोज, भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा का इतिहास, दिल्ली, 1961।
75. भिक्षु धर्मरक्षित, पालि व्याकरण, बनारस, 2014।
76. भूषण 'स्वामी' देशराजसिंह भाटी, हिन्दी भाषा का इतिहास, दिल्ली, 1962।
77. भोलानाथ तिवारी, शब्द : परिभाषा और वर्गीकरण, सम्मेलन पत्रिका, भाग 48, संख्या 1, 1883 शक, प्रयाग।
78. भोलानाथ तिवारी, शब्दों का जीवन, दिल्ली।
79. भोलानाथ तिवारी, हिन्दी भाषा, इलाहाबाद, 1966।
80. भोलानाथ तिवारी, हिन्दी भाषा का सरल व्याकरण, दिल्ली, 1958।
81. मनमोहन गौतम, सरल भाषा-विज्ञान, दिल्ली, 1962।
82. मुरारी लाल उप्रेति, हिन्दी में प्रत्यय विचार, आगरा, 1964।
83. मोतीलाल गुप्त, ध्वनि विश्लेषण की यांत्रिक पद्धति, गवेषणा, अंक 8, 1966।
84. रमेशचन्द्र मेहरोत्रा, हिन्दी में गुरुता तथा लघुता के द्योतन का रचना-विज्ञान, भाषा, अंक 2, 1968।
85. रमेशचन्द्र मेहरोत्रा, हिन्दी में चल स्वर, भाषा, अंक 1, 1967।
86. रमेशचन्द्र मेहरोत्रा, हिन्दी-संज्ञा के दस (या ग्यारह?) रूप, भाषा, अंक 4, 1962।
87. राजगोपालन, हिन्दी के पदबन्धात्मक शब्द रूप, गवेषणा, अंक 13, 1969।
88. राजेन्द्र द्विवेदी, भाषाशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश, दिल्ली, 1963।
89. राजेन्द्र सिंह गौड़, हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास, इलाहाबाद, 2013।
90. रामचन्द्र वर्मा, अच्छी हिन्दी, नवाँ संस्करण, बनारस, 2001।
91. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी व्याकरण, वाराणसी, 1961।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

92. रामचन्द्र वर्मा, हिन्दी प्रयोग, बनारस, आठवाँ संस्करण, 2017।
93. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, बनारस, 2009।
94. रामनरेश शर्मा, हिन्दी व्याकरण : सरलीकरण और नवलेखन की समस्याएँ भाषा, अंक 4, 1964।
95. रामप्रकाश कुलश्रेष्ठ, हिन्दी में अव्यय विचार, गवेषणा, अंक 8, 1966।
96. रामबहोरी शुक्ल, भगीरथ मिश्र, हिन्दी साहित्य का उद्गम और विकास, जालंधर और इलाहाबाद, 1956।
97. रामलाल वर्मा, हिन्दी वाक्यगत उद्देश्य भाग का रूपात्मक विश्लेषण, गवेषणा, अंक 13, 1969।
98. रामविलास शर्मा, भाषा और समाज, 1961।
99. रामस्वरूप चतुर्वेदी, आगरा ज़िले की बोली, इलाहाबाद, 1961।
100. लखनलाल सिंह 'प्रत्यय' विश्लेषण, भाषा, अंक 2, 1968।
101. लिपेरोवस्की वी. पी., हिन्दी भाषा में संकेतार्थ, नागरी प्रचारिणी, पत्रिका, 1, 2018।
102. लिपेरोवस्की वी. पी., हिन्दी भाषा में सन्देहार्थ, सम्मेलन पत्रिका, भाग 47, संख्या 1, प्रयाग, 1882 शक।
103. लिपेरोवस्की वी. पी., हिन्दी में सम्भावनार्थ के रूपों का प्रयोग, हिन्दी अनुशीलन, धीरेन्द्र वर्मा विशेषांक, प्रयाग, 1960।
104. लिपेरोवस्की वी. पी., हिन्दी भाषा की एक वाक्य-रचना, भाषा, अंक 2, 1968।
105. वंशीधर, धर्मपाल शास्त्री, सुगम हिन्दी व्याकरण, दिल्ली।
106. वासुदेव शास्त्री, कृष्णचन्द्र 'उम्मीद', रत्न-हिन्दी-व्याकरण, षष्ठ संस्करण, दिल्ली, 1962।
107. विश्वनाथ अय्यर, हिन्दी के विशिष्ट विभक्ति प्रयोग; पुनर्विचार, भाषा, अंक 3, 1965।
108. शमशेर सिंह नरूला, हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं का वैज्ञानिक इतिहास, दिल्ली, 1957।
109. शर्मा बी. बी., नवीन हिन्दी व्याकरण, दिल्ली, 195-।
110. शिवनाथ, हिन्दी कारकों का विकास, काशी, 2005।
111. शिवसागर त्रिपाठी, 'अक्षर' : एक अध्ययन, भाषा, अंक 3, 1968।
112. श्यामसुन्दरदास, पद्मनारायण आचार्य, हिन्दी रहस्य, प्रयाग, 2013।
113. श्यामसुन्दरदास, भाषा-विज्ञान, सप्तम संस्करण, प्रयाग, 2014।
114. श्यामसुन्दरदास, हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण, काशी, 1950।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

115. श्यामसुन्दरदास, हिन्दी भाषा, प्रयाग, 1961।
116. श्यामसुन्दरदास, हिन्दी भाषा का विकास, बनारस, 2007।
117. श्रीप्रकाश कुर्ल, 'चाहिये', भाषा, अंक 3, दिल्ली, 1970।
118. श्रीप्रकाश कुर्ल, हिन्दी में आगत अंग्रेज़ी शब्दों की लिंग व्यवस्था, भाषा, अंक 4, 1969।
119. श्रीवास्तव जी. पी., प्राचीन भारतीय व्याकरण और भाषाविज्ञान, भाषा, अंक 2, 1965।
120. सन्त गोकुलचन्द्र शास्त्री, आदर्श हिन्दी-व्याकरण तथा रचना, देहली, आठवाँ संस्करण।
121. सन्त गोकुलचन्द्र शास्त्री, हिन्दी व्याकरण तथा रचना, दिल्ली, 1960।
122. सत्यदेव चौधरी, वाक्य, भाषा, अंक 1, 1962।
123. सरायू प्रसाद अग्रवाल, प्रकृत-विमर्श, लखनऊ, 2009।
124. सरायू प्रसाद अग्रवाल, भाषा विज्ञान और हिन्दी, इलाहाबाद, 1957।
125. सावित्री वर्मा, अरुण हिन्दी-व्याकरण, दिल्ली, 1961।
126. सिंहासन राय 'सिद्धेश', सुबोध हिन्दी व्याकरण, कलकत्ता, 1962।
127. सिंहासन राय 'सिद्धेश', आदर्श व्याकरण और रचना, कलकत्ता, 195-।
128. सीताराम चतुर्वेदी आचार्य, हिन्दी का अपभ्रंश से कोई सम्बन्ध नहीं है, भाषा, अंक 2, 1962।
129. सुधीर कुमार माथुर, हिन्दी परसर्ग, आगरा, 1968।
130. सुधा, हिन्दी कारक—वाक्यविन्यास, भाषा, अंक 1, 1966।
131. सुधा गुप्त, हिन्दी 'आप', भाषा, अंक 3, दिल्ली, 1969।
132. सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, भारत की भाषाएँ और भाषा सम्बन्धी समस्याएँ, जालंधर और इलाहाबाद, 1957।
133. सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी, दिल्ली, 1957।
134. सूर्यकान्त, टकसाली हिन्दी, दिल्ली, 1950।
135. सूर्यकान्त, सूर्य हिन्दी व्याकरण, दिल्ली, 1962।
136. सोखीलाल झा, हिन्दी रचना, पटना, 1966।
137. स्वर्णलता अग्रवाल, हिन्दी भाषा और नागरी लिपि, इलाहाबाद, 1954।
138. हरदेव बाहरी, ग्रामीण हिन्दी बोलियाँ, इलाहाबाद।
139. हरदेव बाहरी, शुद्ध हिन्दी, इलाहाबाद, 1965।
140. हरदेव बाहरी, हिन्दी उद्भव, विकास और रूप, इलाहाबाद।
141. हरिशंकर शर्मा, हिन्दी के पुरुषवाचक सर्वनाम, भाषा, अंक, 1968।
142. हेमचन्द्र आचार्य, अपभ्रंश-व्याकरण, दिल्ली, 1958।
143. हेमदेव शर्मा, शिवशंकर सारस्वत, भाषाविज्ञान, समीक्षा, दिल्ली, 1963।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

144. Allen W. S., A study in the analysis of Hindi sentence structure (Acta Linguistica, v. VI, Pasc. 2-3, Copenhague).
145. Bahari Hardev, Hindi semantics, Allahabad, 1959.
146. Bailey T. G., Industant (Urdu) grammar, N. Y.
147. Bailey T. G., Studies in North Indian Languages, L. 1938.
148. Bailey T, G., The four classes of Urdu verbs, BSOS, v. VII, p. I, 1934.
149. Bailey T. G., The meaning and usage of casual verbs in Urdu, Hindi and Panjabi, BSOS, v. V, p. 3, 1929.
150. Bailey T. G., Urdu. L. 1950.
151. A Basic grammar of modern Hindi, English version, Delhi, 1958.
152. Basu D. N., The parts of speech, Indian linguistics, Vol. XV, p. 3—8, Calcutta, 1955-56.
153. Beames J., A comparative grammar of the Aryan languages of India, book II, book III, Delhi, 1966.
154. Biese V., Some notes on the formation and use of nominal compounds in the Rigveda, Helsingforsiac, 1945.
155. Bloomfield, L., Language, N. Y., 1933.
156. Burrow T., The Sanskrit language, L., 1955.
157. Burton Page J., Compound and conjunct verbs in Hindi, BSOAS, v. XIX, p. 3, 1957, L.
158. Burton—Page J., The syntax of participial forms in Hindi, BSOAS, v. XIX, p. I., L., 1957.
159. Chapman F. R, H., How to learn Hindustani, L., 1918.
160. Chatterji S. K., Indo-Aryan and Hindi (Eight Lectures). Ahmedabad, 1942, IInd ed. Calcutta, 1960.
161. Chomsky N., On the Notion 'Rule of Grammar', Proceedings of Simposia of Applied Mathematics, v, 12.
162. Chomsky N., Topics in the theory of generative grammar, Mouton, 1966.
163. Chowdhury N. R., Essentials of Hindi grammar and composition, Sindri, 1956.
164. Clair—Tisdal N. S., A conversation grammar of the Hindustani language, L., 1911.
165. Curme G. O., A grammar of the English language, v. 3, Syntax, Boston, 1931.
166. Davane G. V., Nominal composition in middle Indo-Aryan, Poona, 1956.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

167. Eastiwick E. B., A concise grammar of the Hindustani language to which are added selections for reading, IInd ed., L., 1958.
168. Fairbanks G. H., Hindi exercises and readings, Ithaca (NV) 1955.
169. Fairbanks G. H., Misra B. C., Spoken and written Hindi, N. Y. 1966.
170. Forbes D., A grammar of the Hindustani language, L., 1855.
171. Forbes D., The Hindustani Manual, L.
172. Gaeffke P., Untersuchungen Zur Syntax des Hindi, The Hague-Paris, Mouton, 1967.
173. Gilchrist J. B., Dialogues English and Hindoostani, L., 1899.
174. Gilchrist J. B., The oriental linguist. An easy and familiar introduction to the popular language of Hindustan, Calcutta, 1798.
175. Greaves E., Hindi grammar, Allahabad, 1933.
176. Green A., A practical grammar of the Hindustani language, Oxford., 1895.
Grierson G. A., Linguistic survey of India, v. IX, Calcutta, 1966.
177. Grimm J., Deutsche Grammatik, IV Gottingen, 1937.
178. Grimm J. and W., Deutsches Vorterbuch, Bd. I, Leipzig, 1854.
179. de Groote A. W., Classification of World Groups Lingua, v. VI, 2, 1957.
180. de Groote A. W., Structural Linguistics and Syntactic Laws; Word. v. 5, Ny, 1949.
181. Hacker P., On the problem of a Method for Treating the Compound and Conjunct verbs in Hindi, BSOAS, XXIV, p. 3, L., 1961.
182. Haidari, The Munshi, A standard Hindustani grammar, Lekhi, 1932.
183. Harley A. H., Colloquial Hindustani, L., 1955.
184. Hendriksen H., Syntax of the infinite verb-forms of Pali, Copenhagen, 1944.
185. Hoernle R., A comparative grammar of the Gaudian languages, L., 1880.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

186. Yespersen O., A modern English Grammar, p. II, Heidelberg, 1914, p. V, Copenhagen, 1940.
187. Kellogg S. H., A grammar of the Hindi language, IIIrd ed., L., 1955.
188. Kempson M., The syntax and idioms of Hindustani, L., 1922.
189. Khanna J., Current Hindi self taught (Basic), Delhi, 1957.
190. Klemensiewicz Z., Zarys skladni, polskiey, Warszawa, 1957.
191. Kruisinga E., A Handbook of Present Day English, Groningen, 1932, p. II, 2, 3, I.
192. Liehard S., Tempusgebr auch and Aktionsarten Bildung in der modern Hindi, Stockholm, 1961.
193. Lyall C. J., A sketch of the Hindustani language, Edinburg, 1880.
194. Macdonell A. A., A vedic grammar for students, Oxford, 1955.
195. Mathews W. R., The ergative construction in modern Indo-Aryan, dinyua, VIII, N 4.
196. Miltner V., Early Hindi Morphology and Syntax, Academia, Prague, 1966.
Miltner V., The Hindi sentence structure, JAOS, v, 85, N 3, 1965.
197. Mueller Max, Max Muelle's Sanskrit Grammar, L. 1870.
198. Muller D., Studies in modern English syntax, Keller 1957.
199. Narula S. S., Scientific history of the Hindi language Delhi, 1956.
200. Ojha G. K., Universal self Hindi teacher, Delhi, 1955.
201. Pahva Th., The modern Hindustani scholar or the pucca munshi., Calcutta, 1919.
202. Phillott D. C., Hindustani manual, Calcutta, 1918.
203. Phillott D. C., Hindustani stepping stones, Allahabad, 1908.
204. Phillott D. C., Hindustani stumbling blocks, L., 1909.
205. Phillott D. C., Note on the statical and some other participles in Hindustani, BSOS, v, IV, p. I, 1916.
206. Phonemic and morphemic frequencies in Hindi, edited by A. M. Ghatage, Poona, 1964.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

207. Pincott F., Hindi Manual, L., 1890.
208. Platts J., A Grammar of the Hindustani or Urdu Language. 7th ed., L., 1914.
209. Porizka V., Hindi participle used as substantives, Archiv Orientalni, v. XVIII, N. 4, Praha, 1950.
210. Porizka V., Hindustani (Hindi Language Course), p. I, Praha. 1963.
211. Porizka V., The adjectival and adverbial participles in Hindi syntax, Archiv Orientalni, v. XX, N. 3-4, Praha, 1952.
212. Ries Y., Was Syntaz ? Einstkritischer Versuch, Marburg, 1894.
213. Ries Y., Zur Wortgruppenlechre, Prag, 1928.
214. Saighal M. C., Saighal's Hindustani grammar, Simla (II ed.), 1953-54. (II ed.).
215. Sastri S. R., Apte B. Ch., Hindi grammar, Madras, 1960.
216. Scholberg H. C., Concise grammar of the Hindi language, L., 1955.
217. Sen S., Historical syntax of middle Indo-Aryan, Cad., 1953,
218. Shakespeare J., A grammar of the Hindustani Language, L., 1826.
219. Sharma S. N., Hindi grammar and translation, Bombay, 1956.
220. Singh M. J., The Urdu teacher, Amritsar, 1894.
221. Speyer Y. S., Sanskrit syntnx, Brill, 1886,
222. Tagare G. V., Historical grammar of Apabhramsa, Poona, 1948.
223. Thimm C. A., Hindustani grammar selftaught, L., 1916.
224. Travnicek F. T., Mluvnice spisovne cestime, c. II, Skladba, Praha, 1951.
225. Trubetzkoy N. S., Le rappot entre le determine le determinant et le defini, 'Melanges de linguistique offerts a Charles Bally', Geneve, 1939.
226. Tweedie J., Hinnustani as ought to be spoken, Calcutta, 1900.
227. Vale R. N., Verbal composition in Indo-Aryan, Poona, 1948.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

228. Warriner J. E., English grammar and composition, N. Y. Chicago, 1957.
229. Williams M., A practical Hindustani grammar, 2nd ed., L., 1887.
230. Wilson H. H., Introduction to the Grammar of the Sanskrit language, L., 1841.
231. Yates W., Introduction to the Hindoostani Language, Calcutta, 1827.

103931

□□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar